THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180732

UNIVERSAL
LIBRARY

Call No. H83 Accession No. GH 31
O85A
Author
Title
This book should be returned on or before t
last marked below.

अग्नि-दीक्षा

अनुवादक

अमृत राय

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड
आसफ अली रोड, नई दिल्ली

मूल्य ४ रुपया

नवीन प्रेस, फैज बाजार, दिल्ली में मुद्रित और पीपुल्स पब्लिशिंग
हाउस लिमिटेड, आसफ अली रोड, नई दिल्ली की
तरफ से डी० पी० सिनहा द्वारा प्रकाशित।

लाई ऑस्त्रोवस्की के उद्देश्य के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए फ्रांस नीषी श्री रोम्यां रोलां ने लिखा था :

" विप्लव के बीच जिन नये मनुष्यों का जन्म होता है, वे ही मनुष्य विप्लव की सबसे महान रचना होते हैं। कष्टों से पीड़ित पृथ्वी को विदीर्ण करके उसीके भीतर से एक महान, उदात्त संगीत की तरह नवजीवन का विस्फोट होता है। वह एक ऐसे अग्निमय प्राण के समान होता है जो नये विश्वास की घोषणा करके सातों आकाशों को गुंजाता दिखाई देता है। ऐसे मनुष्य जब पृथ्वी से उठ जाते हैं, उसके बहुत दिनों बाद भी उनकी विश्वासभरी वाणी दसों दिशाओं में प्रतिध्वनित होती रहती है। भविष्य में ये ही व्यक्ति महाकाव्यों और वीरचरित गाथाओं के नायक और प्रेरक बनते हैं।

" निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ऐसे ही मनुष्य थे। साहसपूर्ण और उद्दीप्त प्राण के लिये समर्पित मानो उनकी जीवन कहानी एक उदात्तमय गान है।...ऑस्त्रोवस्की का समग्र अस्तित्व कर्ममुख संग्राम की एक अग्निमय शिखा के समान था। मृत्यु की रात्रि उसे जितना ही चारों ओर से घेरती थी, वह शिखा उतनी ही उज्ज्वलतर ज्योति से उद्भासित हो चमक उठती थी।

" ऑस्त्रोवस्की ने एक बार भावनापूर्ण भाषा में मेरे पास अभिनन्दन भेजा था और उसके उत्तर में मैंने लिखा था : ' आपको जीवन के अनेक अन्धकारमय दिनों के बीच से गुजरना पड़ा है, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि आपका वही जीवन आकाशदीप की तरह सहस्रों व्यक्तियों को दिशाओं का निर्देश करायेगा। दुनिया के लिये आप एक उदाहरण हैं। व्यक्तिगत मुसीबतों के आप पर जो छिपे प्रहार हुए, उनके खिलाफ़ आपका जीवन आत्मिक शक्ति की विजय का एक प्रेरणाप्रद उदाहरण है। कारण कि आपने अपना जीवन स्वदेश की महान जनता के साथ एकाकार कर दिया था—उसी जनता के साथ जो अपनी शक्ति के बल पर आज पुनर्जीवित हो दृढ़ता के साथ अधिकारों का उपभोग कर रही है। जनता के उसी शक्तिप्रद आनन्द और दुर्दम्य प्राणशक्ति को आपने अपने जीवन में आत्मसात किया। जनता के साथ आपका वह एकाकार होना पूर्ण रूप से सफल हुआ है। '...."

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की और उनका उपन्यास

सोवियत साहित्य के इतिहास में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के उपन्यास 'अग्नि-दीक्षा' की बहुत महत्त्वपूर्ण जगह है। इस पुस्तक की रचना, और इसी की रचना नहीं, ऑस्त्रोवस्की का समूचा साहित्यिक कृतित्व एक वीर बोल्शेविक के साहस की कहानी है।

ऑस्त्रोवस्की का जन्म १९०४ में रोवनो प्रदेश के ऑस्त्रोज़्स्की ज़िले के विलिया नामक ग्राम में हुआ था। उसका पिता मज़दूर था मगर आमदनी इतनी कम थी कि उसकी माँ और छोटी बहनों को खेत-मज़दूर का काम करना पड़ता था। उसका बड़ा भाई एक लुहार का अप्रेन्टिस था जो अपने मज़दूरों के साथ बहुत बुरा बर्ताव करता था। इस भावी लेखक के बचपन पर बेहद ग़रीबी और कठोरतम शोषण की जो छाया पड़ी थी, उसने उसके हृदय में अपने वर्ग-शत्रुओं के विरुद्ध तीक्ष्ण घृणा का बीज बो दिया था और सामाजिक अन्याय और मनुष्य के अपमान के विरुद्ध प्रतिवाद करने की प्रेरणा भी डाल दी थी। नौ बरस की उम्र में वह गड़ेरिये का काम करता था और ग्यारह बरस की उम्र में उक्रेन के शेपेतोवका नामक नगर के स्टेशन पर एक छोटे से रेस्तोराँ में बावर्चीखाने में काम करता था।

रेस्तोराँ में गन्दगी और गुलामी का जो वातावरण था, उससे बचने के लिए किशोर निकोलाई अपना अधिकांश समय अपने भाई के साथ गुज़ारता था जो रेलवे डिपो में एक मिस्त्री था।

इसी जगह पर उसने मानव अधिकारों के लिए मज़दूरों के संघर्ष की बात सीखी और बोल्शेविकों के मुँह से लेनिन और लेनिन के विचारों की बाबत सुना।

गाँव के स्कूल में किशोर निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने अपना परिचय एक असाधारण मेधावी विद्यार्थी के रूप में दिया। जब वे लोग शेपेतोवका आ गये तो निकोलाई के माता-पिता ने उसको एक-दो साल स्कूल में भेजा। मगर कुछ ही महीनों बाद उसको धर्मशास्त्र पढ़ानेवाले पादरी की सिफ़ारिश पर वहाँ से निकाल दिया गया क्योंकि वह टेढ़े-टेढ़े सवाल करके पादरी साहब को तंग किया करता था।

१९१७ की क्रान्ति ने निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के लिए शिक्षा के दरवाज़े खोले। वह बिजलीघर में आगवाले का काम भी करता था और उसके साथ ही साथ पढ़ता भी था और अपने स्कूल से निकलनेवाले एक साहित्यिक पत्र और अपनी ही स्थापित की हुई एक साहित्यिक गोष्ठी के संचालन में भी योग देता था। किशोरावस्था में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के सबसे पूजनीय वीर गैरीबाल्डी और गैड-फ्लाई जैसे लोग थे। वह बहुत पढ़ता था और उक्रेन के महान क्रान्तिकारी कवि तारस शेवचेन्को की कृतियाँ, गोगोल की रोमानी कहानी 'तारस बुल्बा' और दूसरे महान प्राचीन लेखकों की कृतियाँ किशोर ऑस्त्रोवस्की को सबसे ज़्यादा भाती थीं और उसके मन पर उन्हीं का सबसे ज़्यादा असर था।

स्तालिन के शब्दों में उक्रेन उन दिनों "अन्तर्राष्ट्रीय जीवन का केन्द्र बना हुआ था, वह जगह जहाँ रूस के मज़दूरों की शुरू की हुई क्रान्ति और पश्चिम से आनेवाली साम्राज्यवादी प्रतिक्रान्ति, दोनों की टक्कर होती थी।" गृहयुद्ध इन दिनों सबसे अधिक भीषण रूप में उक्रेन में ही हो रहा था और वह नयी पीढ़ी के लोगों को अपने अन्दर समेट रहा था। किशोर ऑस्त्रोवस्की और उसके अन्य मित्र, आक्रमणकारियों से और देश के साथ विश्वासघात करके जर्मन सेनाओं से मिल जानेवाले उक्रेनी पूँजीपतियों से लड़ने में गुप्त क्रान्तिकारी कमिटी को मदद पहुँचाते थे। शेपेतोवका के मुक्त हो जाने पर नौजवान ऑस्त्रोवस्की ने आगे बढ़कर वहाँ की ज़िन्दगी को व्यवस्थित करने और चोरबाज़ारी करनेवालों और क्रान्ति के दुश्मनों से लड़ने में क्रान्तिकारी कमिटी को मदद पहुँचाई।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की शेपेतोवका के सबसे पहले के पाँच नौजवान कम्युनिस्टों में से एक था। अगस्त १९१९ में वह घर से भाग गया और लाल सेना में दाख़िल हो गया और यहाँ पर उसने अपना परिचय एक बहादुर सैनिक के रूप में दिया। १९२० के ग्रीष्म में वह पहली घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी के साथ, जिसने क्रान्ति-विरोधी पोलों के विरुद्ध संघर्ष में बड़ी कीर्ति अर्जित

की थी, अपने नगर लौटा। मगर युद्ध अभी ख़तम नहीं हुआ था और पन्द्रह वर्षीय ऑस्त्रोवस्की फिर मोर्चे पर जाने के लिए सेना में भर्ती हुआ। लुओव की लड़ाई में वह बुरी तरह घायल हुआ और उसकी दाहिनी आँख की रोशनी जाती रही। अस्पताल में दो महीना गुज़ारने के बाद उसे सेना से छुट्टी दे दी गई और वह शेपेतोवका लौट आया।

१९२१ के ग्रीष्म में ऑस्त्रोवस्की कीव चला गया जहाँ वह एक स्थानीय कोमसोमोल (नौजवान कम्युनिस्ट) संगठन का प्रधान बना और उसके साथ ही साथ रेलवे के कारखानों में एलेक्ट्रीशियन का काम भी करता रहा। ये बहुत कठिन दिन थे। रोटी और ईंधन की सख़्त कमी थी। निकोलाई ऑस्त्रोवस्की नौजवान मज़दूरों की एक टुकड़ी का नेता बना जिसका काम कुछ दूर के एक जंगल से शहर में लकड़ी लाने के लिए नई रेलवे लाइन बिछाना था। यह काम बहुत ही कठिन हालतों में किया गया और गोकि इस काम में कामयाबी मिली मगर इसमें शक नहीं कि निकोलाई ऑस्त्रोवस्की की तन्दुरुस्ती इसमें टूट गई। इसके ठीक बाद ही पतझड़ के दिनों में, जब कि अभी निकोलाई ऑस्त्रोवस्की अपनी बीमारी के बाद ठीक भी नहीं हो पाया था, वह अपने कोमसोमोल साथियों के साथ मिलकर बाढ़ में से लकड़ी के पटरे बचा कर निकालने में लग गया और इस काम के लिए उसे नीपर नदी के बर्फ़ानी पानी में घुटने-घुटने भर पानी में खड़े रहना पड़ता था।

लड़ाई का उसका ज़ख़्म, टाइफस बुखार और भयंकर गठिया—तीनों ने मिल कर ऑस्त्रोवस्की की तन्दुरुस्ती को इस बुरी तरह से तोड़ दिया कि उसे कीव का अपना काम छोड़ना ही पड़ा। मगर यह बात ही उसके गले के नीचे नहीं उतरती थी कि उसे बाक़ायदा रोगी क़रार दिया जाय और देश के राजनीतिक और रचनात्मक जीवन से उसका सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया जाय। वह बराबर आग्रह करता था कि उसको काम दिया जाय और तब फिर मजबूर होकर उसकी इच्छा का पालन करने के लिए उसे बेरोज़दोव भेजा गया। बेरोज़दोव पुरानी पश्चिमी सीमा पर एक छोटा सा उक्रेनी नगर था और वहाँ पहुँचकर ऑस्त्रोवस्की तुरत ही पार्टी और कोमसोमोल के महत्वपूर्ण काम में जुट गया।

१९२४ में ऑस्त्रोवस्की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बना। तब तक उसकी तन्दुरुस्ती इतनी चौपट हो चुकी थी कि उसके लिए कुछ भी काम करना असम्भव था। अच्छे से अच्छे विशेषज्ञों ने उसकी चिकित्सा की और उसे बहुत दिन तक सेनेटोरियम में भी रखा गया, मगर उस सबसे कोई नतीजा

नहीं निकला और उसकी बीमारी बराबर तेज़ी से बढ़ती गई। १९२६ के अन्त तक आते-आते यह बात साफ़ हो गई कि यह वीर नवयुवक इसी तरह आजीवन शैया-ग्रस्त ही रहेगा। तीन साल बाद वह बिलकुल अन्धा हो गया और १९३० में हाथों और कुहनियों को छोड़कर उसका सारा शरीर ऐसा जकड़ गया कि हिल-डुल भी न सकता था।

अब उसके अच्छे होने की कोई उम्मीद न थी और ऐसी हालत में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने एक ऐसी योजना अपने लिए निकाली, "जो उसके जीवन को कुछ सार्थकता दे सके।" उसकी अपनी स्थिति चाहे जितनी करुण रही हो, यह नौजवान बोल्शेविक ऐसे जीवन की कल्पना भी न कर पाता था जो जनता के कार्यों और संघर्षों से अलग हो। उसने लड़नेवालों की क़तार में एक बार फिर शरीक होने का संकल्प किया और इस बार उसके हाथ में एक नया हथियार था—उसकी क़लम। उसको एक ऐसी किताब लिखने की लौ लगी थी जिसमें गुज़रे हुए बहादुर ज़माने की कहानी हो और जो पार्टी की नई पीढ़ी को कम्युनिज़्म की भावना के अनुसार ढालने में मदद पहुँचा सके। पार्टी के प्रति उसकी यही सेवा होगी।

शायद १९२५ या २६ में, अपनी उस भयानक बीमारी के पहले दौर में, यह विचार पहली बार ऑस्त्रोवस्की के मन में आया। बीते हुए सबसे शुरू के दिनों के कोमसोमोल सदस्यों के बहादुरी से भरे कारनामों और उन बीते दिनों के बारे में बातें करना उसे अच्छा मालूम होता था। और जिस तरह वह कहानी सुनाता था, उससे साफ़ पता चलता था कि उसको कहानी कहना आता है। मगर उन दिनों ऑस्त्रोवस्की यह नहीं सोचता था कि वह लेखक बनेगा। वह तो बाद में जब कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय ने चिट्ठी-पत्री के कोर्स के ज़रिए उसको मार्क्सवाद और लेनिनवाद की खूब अच्छी शिक्षा दी, तब वह अपने अनुभवों को एक नई रोशनी में देखने लगा और उसने इस बात को समझा कि उसकी मातृभूमि की आज़ादी में लेनिन और स्तालिन की पार्टी ने क्या योगदान किया है और कम्युनिज़्म के विचारों में वह कौन-सी ताक़त है जिसने उसके देश, देशवासियों को और खुद उसको भी एकदम बदल दिया है।

ऑस्त्रोवस्की बड़े मनोयोग से पुराने रूसी लेखकों—पुश्किन, गोगोल, तुर्गनेव, टालस्टाय, चेख़ोव और, सबसे अधिक गोर्की की कृतियाँ पढ़ता था। गोर्की की कुछ चुनी हुई रचनाओं का एक संग्रह, 'माँ' और ऐसी ही कुछ और किताबें ऑस्त्रोवस्की बराबर पढ़ा करता था। बाद के सालों में जब उसकी आँख की रोशनी चली गई थी, तब वह अपने दोस्तों और सम्बन्धियों से

अनुरोध करता था कि वे उसको गोर्की पढ़कर सुनायें और साहित्य के सम्बन्ध में और मज़दूर वर्ग के लेखक के कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में गोर्की के विचार नक़ल करके उसको दें। उसने गृहयुद्ध के बारे में समस्त राजनीतिक साहित्य बहुत अच्छी तरह पढ़ा और उसमें भी ख़ास तौर पर दिमित्री फुर्मीनोव की दो कृतियाँ 'चपाइयेव' और 'म्युटिनी', सेराफ़िमोविच का 'आयरन फ्लड' और फ़ादियेव का 'डिबेकिल'। इन सभी किताबों में रूस के स्वतन्त्रता संग्राम और नये सोवियत मानव के जन्म की कहानी थी।

इसके बाद प्रथम स्तालिन पंचवर्षी योजना के वर्ष आए। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास कहता है, "इसके पहले कभी भी इतने विशाल पैमाने पर औद्योगिक निर्माण नहीं हुआ था, न नये विकास के लिए ऐसा उत्साह देखा गया था और न लाखों-करोड़ों मज़दूरों ने कभी अपने मन से इतना ज़्यादा और इतना अच्छा काम किया था। इतिहास में यह चीज़ पहली बार हो रही थी।"

अन्य सोवियत नागरिकों की तरह लाखों कोमसोमोल सदस्यों ने भी मेगनिटोगोर्स्क के लोहे के कारखाने, नीपर के लेनिन हाइड्रो-एलेक्ट्रिक स्टेशन, स्तालिनग्राद ट्रैक्टर प्लान्ट और इसी तरह के दूसरे विशाल निर्माण-कार्यों में हाथ बटाया। उसी समय करोड़ों किसानों ने सामूहिक खेती के आन्दोलन में योग दिया।

इन्हीं महान घटनाओं के असर से निकोलाई ओस्त्रोवस्की के नायक का अन्तिम रूप उसके मन में आया, वह नायक जिसे उसका स्रष्टा "हमारे युग का चरित-नायक" पुकारता है।

नवम्बर १९३० में एकदम अन्धे और अशक्त हो जाने पर उसने अपने उपन्यास 'अग्नि-दीक्षा' पर काम करना शुरू किया। इस किताब का कुछ हिस्सा लेखक ने अपने हाथ से लिखा था, बावजूद उन तमाम कठिनाइयों और उस दर्द के जो निश्चय ही उसे महसूस हुआ होगा। बाकी उसने अपनी पत्नी, बहन और सबसे आत्मीय मित्रों को बोलकर लिखाया था। जून १९३३ में यह किताब पूरी हुई।

* * *

'अग्नि-दीक्षा' नये मानव के जन्म की कहानी कहती है, समाजवादी युग के उस नये मनुष्य की जो मानवता के सुख के लिए होनेवाले संघर्ष में सब कुछ करने की योग्यता अपने अन्दर दिखलाता है, जो बड़े-बड़े काम अपने सामने रखता है और उन्हें पूरा करके दिखलाता है।

जिस हालत में यह किताब लिखी गई—इसको लिखने के लिए लेखक को जिस तरह यन्त्रणा से और रोग से लड़ना पड़ा, पार्टी और सोवियत अधिकारियों ने जिस तरह उसकी सहायता की, और जिस तरह अनेकों बार ऐसे लोगों ने उसकी सहायता की जो न तो उसके मित्र थे और न सम्बन्धी—वह खुद इस बात का परिचायक है कि मानव-सम्बन्धों में कितना बड़ा परिवर्तन आ चुका है और नये मनुष्य का जन्म हो गया है।

जीवन की घोषणा करनेवाले जिस सशक्त विचार ने इस युवा लेखक के मन को पकड़ लिया था, और जिस तरह लेखक ने अपने-आपको "संसार की श्रेष्ठतम वस्तु—मानवता की स्वतन्त्रता" के संघर्ष पर अपने-आपको न्यौछावर कर दिया था, यही वह चीज़ थी जो उन सब लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लेती थी जो निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के सम्पर्क में आते थे।

'अग्नि-दीक्षा' लेखक की अपनी ज़िन्दगी की कहानी है मगर वह इससे भी ज़्यादा कुछ है—"वह एक उपन्यास है और केवल कोमसोमोल के सदस्य ऑस्त्रोवस्की का जीवन-चरित्र नहीं है," जैसा कि उसके लेखक ने स्वयं लिखा है। यह बात कि पावेल कोर्चागिन के रूप में हम आसानी से उसके स्रष्टा को पहचान लेते हैं, यह ऑस्त्रोवस्की का एक विशेष गुण है—अपने नायक के साथ उसका अत्यन्त घनिष्ठ सम्पर्क। नायक और लेखक दोनों के निजी, सामाजिक व रचनात्मक जीवन अंगांगि रूप में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और दोनों ही का लक्ष्य जनता की सेवा है। यह गुण सभी सोवियत लेखकों में पाया जाता है और यही कारण है कि उनके विचित्र चरित्रों में सच्चाई और विश्वसनीयता आती है।

अपने जीवन-चरित्र को नये साँचे में ढालते हुए, जो कि बहुत हद तक उसकी समूची पीढ़ी का जीवन-चरित्र है, निकोलाई ऑस्त्रोवस्की अपना उपन्यास अपने नायक के बचपन की एक तस्वीर देकर शुरू करता है और पाठक को दिखलाता है कि किस तरह एक शत्रुता से भरे हुए परिवेश के विरुद्ध संघर्ष करते हुए पावेल कोर्चागिन के मन और चरित्र का निर्माण होता है; कैसे उसके विचार पकते हैं और उसकी इस आवश्यकता की जागृति होती है कि परिवेश और सम्पूर्ण समाज-व्यवस्था को नये सिरे से बनाना है; कैसे समाजवाद के लिए जनता का संघर्ष सामाजिक जीवन की आर्थिक स्थितियों को बदलकर एक नई समाजवादी चेतना को जन्म देता है और सामाजिक और वैयक्तिक आचरण के एक नये मानदंड की स्थापना करता है, जो कि वास्तव में एक मानवीय आचार का आधार है।

समाजवादी प्रणाली में श्रम की प्रकृति, उसका रूप और प्राण दोनों बदल जाते हैं और करोड़ों आदमी निर्माण में लगी हुई एक ही समष्टि के अंग बन जाते हैं जो एक ही योजना के अन्तर्गत अपनी मातृभूमि के लिए एक नये जीवन का निर्माण करते हैं। ये परिवर्तन फिर ऑस्त्रोवस्की के नायकों के विचारों, भावनाओं और उनके आपसी सम्बन्धों को बदल देते हैं।

जहाँ तक पावेल कोर्चागिन की बात है, श्रम और समाजवादी सम्पत्ति के प्रति नया दृष्टिकोण उसके अन्दर लड़ाई के मोर्चे से लौटने के तत्काल बाद ही दिखाई देने लग जाता है। उसके अन्दर इस भावना का जन्म होता है कि वह अपने कारखानों और अपने देश का मालिक है। उत्पादन के नये सम्बन्धों से पैदा होनेवाली यह नई भावना ही कोर्चागिन के उस संघर्ष की अनुप्रेरक शक्ति है जो वह आलसी और स्वार्थी लोगों के ख़िलाफ़ करता है, उन मज़दूरों के ख़िलाफ़ जो अपने औज़ारों के प्रति लापरवाही बरतते हैं और इस बात को भूल जाते हैं कि वे सब अब जनता की मिल्कियत हैं। वही भावना कोर्चागिन को कोमसोमोल का एक कर्मठ कार्यकर्ता बनाती है, तोड़-फोड़ करनेवालों और चोरी-छिपे व्यापार करनेवालों के ख़िलाफ़ डटकर लड़नेवाला सैनिक बनाती है और गाँवों में सामूहिक खेती का एक अत्यन्त उत्साही संगठनकर्ता बनाती है। समाजवादी निर्माण के युग में स्वामित्व की भावना एक नये उच्चतर धरातल पर पहुंच जाती है। करोड़ों आदमी समाजवादी उद्योग-धन्धों और सरकारी व सामूहिक खेतों के सजग निर्माता बन जाते हैं। अपनी जनता के रचनात्मक श्रम में योग देने की अदम्य भावना ही पावेल को अपनी उस अन्तिम रचनात्मक सिद्धि के पास पहुँचाती है।

पावेल कोर्चागिन की वीरता रूस के मज़दूर वर्ग के अन्दर निहित वीरता है। इस वीरता की प्रकृति पावेल कोर्चागिन की जिन्दगी के हर नये दौर के साथ बदलती जाती है। वह लड़का जो जुखराई को पेतल्युरा के सिपाही के चंगुल से छुड़ाती है, अभी पूर्ण रूप से क्रान्तिकारी नहीं है। अपनी जीवन स्थिति के ख़िलाफ़ जो सहज प्रतिवाद पावेल कोर्चागिन करता है, वह उसको वर्ग-संघर्ष के भीतर खींच लाता है और उसी रास्ते पर बढ़ते हुए उसके अन्दर समाजवादी चेतना का उदय होता है। गृहयुद्ध के दिनों में ऊँचे आदर्शों के लिए उसके भीतर जो आत्मोत्सर्ग की भावना रहती है, उसीसे उस सजग कम्युनिस्ट आत्म-अनुशासन का जन्म होता है जो जनता के लिए एक उदाहरण बनता है और फिर धीरे-धीरे उपन्यास के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते एक प्रौढ़ समाजवादी चेतना का रूप ले लेता है, जो कोर्चागिन के चरित्र और आचरण

का नियमन करता है। क्योंकि इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह बीमार और अशक्त नायक जिस तरह से निर्माण के संघर्ष में लगे हुए लोगों की पंक्ति में एक बार फिर से आने के लिए जो अनोखा संघर्ष करता है, उसके लिए वह किसी रूप में बाध्य नहीं है और अगर कोई बाध्यता है तो यही कि वह भी समाजवाद के लिए संघर्ष करनेवाली करोड़ों जनता का एक अंग बनना चाहता है और इसी की अदम्य प्रेरणा उसको निरन्तर आगे बढ़ाती रहती है।

पावेल कोर्चागिन ने शुरू-शुरू में क्रान्ति के प्रति अपने कर्त्तव्य को जिस रूप में समझा था उसमें अपनी व्यक्तिगत ज़िन्दगी के लिए कोई भी जगह न थी, यहाँ तक कि उस प्रेम के लिए भी कोई जगह न थी जो यौवन का एक नैसर्गिक गुण है। पावेल मध्यवर्गी घराने की लड़की तोनिया से अपनी दोस्ती को ख़तम कर देता है और कम्युनिस्ट लड़की रिता उस्तिनोविच के प्रति अपने प्रेम को शुरू में ही दबा देता है। मगर कुछ ही बरसों बाद पावेल कोर्चागिन अपने स्रष्टा की भाँति, अपने वैराग्य को छोड़ता है, अपनी इच्छा-शक्ति का कड़े-से-कड़ा इम्तहान लेने के लिए अकारण ही अपने-आपको कष्ट देना, जो कि उन दिनों कोमसोमोल के पहले सदस्यों में बहुत हुआ करता था, बन्द करता है।

पावेल की माँ और उसकी पत्नी ताया क्रान्तिकारी संघर्ष में उसकी साथिनें हैं। वह खुद उन्हें कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर लाता है और इस तरह उनके ज़रिए निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करता रहता है और उस क्रम को टूटने नहीं देता।

* * *

अपने नायक का चित्रण करने में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की दिखलाता है कि किस तरह पावेल कोर्चागिन के सबसे अच्छे गुण, समाजवाद के लिए जनता के संघर्ष में योगदान करने की क्रिया में पैदा होते, मँजते और निखरते हैं। ऑस्त्रोवस्की के नायक का जो आन्तरिक सौन्दर्य है, जिस चीज़ के लिए वह खड़ा है, उसकी विजय का बीज उन तमाम घटनाओं में है और उनकी ऐतिहासिक सच्चाई में है जिनका चित्रण उपन्यास में हुआ है। यही वह चीज़ है जो पावेल कोर्चागिन को अपनी पीढ़ी का एक प्रतिनिधि नायक बनाती है।

समष्टि से हटकर हम पावेल कोर्चागिन की कल्पना भी नहीं कर सकते। हम उसे अपने ऐसे साथियों से अलग करके देख ही नहीं सकते—जैसे सर्योंजा ब्रुज़ाक जो कि इसलिए युद्ध में जाता है ताकि फिर युद्ध न हो; जैसे सर्योंज़ा की बहन वालिया, वह वीर युवती देशभक्त जिसे क्रान्ति-विरोधी पोल मार

डालते हैं; जैसे ईवान ज़ार्की, वह अनाथ लड़का जिसे लाल सेना की एक कम्पनी गोद ले लेती है; जैसे ज़िला कोमसोमोल का मन्त्री निकोलाई ओकुनेव; जैसे नौजवान जहाज़ी मज़दूर ईवान पांक्रातोव।

अपने साथियों की भाँति पावेल कोर्चागिन ने भी अपने सबसे अच्छे गुण पुराने बोल्शेविकों से पाये हैं, जो क्रान्तिकारी संघर्ष में उन नौजवानों के नेता और शिक्षक हैं। उपन्यास में इस पुरानी बोल्शेविक पीढ़ी का नेतृत्व इस तरह के लोग करते हैं, जैसे वोलोस्त की गुप्त क्रान्तिकारी कमिटी का प्रधान दोलिनिक जो थकना नहीं जानता; जैसे वह बहादुर क्रान्तिकारी क्रियोदार जुख़राई जो पहले मल्लाह था और जो १९१५ से बोल्शेविक पार्टी का सदस्य था; जैसे तोकोरेव जो गुप्त क्रान्तिकारी आन्दोलन का कार्यकर्त्ता था; जैसे फ़ौजी कमिसार क्रेमर और इसी तरह के और भी बहुत से लोग। ये दोनों पीढ़ियाँ आपस में ऐसे धागों से जुड़ी हुई हैं जो दिखाई नहीं देतीं मगर अटूट हैं।

कोर्चागिन के बहादुरी के कारनामे वैसे ही हैं जैसे उसके साथियों के। पावेल कोर्चागिन किसी मतलब में उन हज़ारों लोगों से अलग नहीं है जो उसी रास्ते पर चलते हैं। बिना इस बात की चिन्ता किए कि इसका क्या नतीजा होगा, पावेल गिरफ्तार जुख़राई को पकड़कर ले जाते हुए पेतल्युरा सैनिक पर हमला कर देता है; सर्योज़ा ब्रुज़ाक, जिसके मन में अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह और मानवता के प्रति प्रेम की भावना है, अपने को एक बूढ़े यहूदी के आगे डाल देता है जब एक नशे में चूर पेतल्युरा सैनिक बुड्ढे पर अपनी तलवार चलाता है। पावेल कोर्चागिन पहली घुड़सवार सेना की मशहूर कार्रवाइयों में हिस्सा लेता है; ईवान ज़ार्की क्रान्ति-विरोधियों के हाथ से क्रीमिया को मुक्त कराने की लड़ाई में नाम कमाता है।

रेल की पटरी बिछाने के काम में कोर्चागिन के मित्र भी उसी लगन और निःस्वार्थ सेवा-भाव का परिचय देते हैं जो स्वयं पावेल में पाई जाती है। यह भी ग़ौर करने की बात है कि सर्गेई ब्रुज़ाक का चरित्र भी ऑस्त्रोवस्की ने जीवन से ही लिया है। इस उपन्यास के अनेक चरित्रों में एक से ही मानव-गुण पाये जाते हैं और यही चीज़ उनको उतना सजीव और प्रातिनिधिक बना देती है।

पावेल और उसके मित्रों के सामने प्रेम और मैत्री का एक बहुत ही ऊँचा और नैतिक दृष्टि से अत्यन्त पवित्र मानदण्ड रहता है। समूचे उपन्यास में प्रेम और मैत्री की भावना अजस्र भाव से बहती रहती है और उसको अनेक दृश्यों में विशेष महत्त्व दिया गया है—जैसे पावेल और तोनिया की मुलाक़ात

और सर्योज़ा और रिता की मुलाक़ात, जिसमें कि प्रेम के उदय का वर्णन किया गया है, और पावेल व ताया, उसकी पत्नी और साथिन, के परस्पर सम्बन्ध का चित्रण। रिता उस्तिनोविच, आना बोहार्ट, लिदिया पोलेविख़ और दूसरे नारी पात्र, सभी पवित्र और ऊँचे चरित्र वाले हैं और उन सबसे पता चलता है कि मानव-सम्बन्धों में कितने महान परिवर्त्तन हो चुके हैं।

यह उपन्यास उन सभी बातों की भर्त्सना करता है जो कुत्सित है और मनुष्य का अधःपतन दिखलाती हैं। इस चीज़ का पता बहुत सी बातों से चलता है—जैसे पावेल का रवैया उस पतित त्रात्स्कीपन्थी दुबावा की ओर; उस दुश्चरित्र फ़ाइलो से उसकी मुलाक़ात; और फिर लेखक ने राज़वालिख़िन और लिदा के बीच की बातों का चित्रण जिस प्रकार से किया है, उससे भी इस बात का पता चल जाता है। निकोलाई ऑस्त्रोवस्की दिखलाता है कि किस तरह राजनीतिक ज़िन्दगी में दुरंगी चाल चलने और अपनी निजी ज़िन्दगी में नैतिक रूप से पतित होने का चोली-दामन का साथ है। वह दिखलाता है कि जनता के दुश्मन और पार्टी और कोमसोमोल के क्षणिक अनुयायी किस प्रकार स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को कुत्सित दृष्टि से देखते हैं। इस उपन्यास के भीतर-भीतर चलनेवाला एक सबसे महत्त्वपूर्ण विचार यह है कि बोल्शेविक आदर्श ऊँचे-से-ऊँचे नैतिक मानदण्ड के साथ अभेद्य रूप में जुड़े रहते हैं और दोनों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

इस उपन्यास के अलग-अलग जो व्यक्ति पात्र हैं, वे सब मिलकर जनता की एक विशाल मूर्ति बन जाते हैं और यह कहा जा सकता है कि जनता ही इस उपन्यास की नायक है। पूरे उपन्यास में जनता की सामूहिक कार्रवाइयों के जो चित्र मिलते हैं, उन सबमें जनता का चित्रण बहुत अच्छी तरह किया गया है—जैसे लड़ाई, रेल की पटरियों का बिछाना, पार्टी और कोमसोमोल की मीटिंगें जिनमें त्रात्स्कीपन्थियों को पीछे ढकेला जाता है, सोवियत-पोलिश सीमा पर उत्सव मनाया जाना। ये दृश्य पात्रों के निजी जीवन के साथ जुड़े हुए हैं। इन सभी दृश्यों में वे बड़ी-बड़ी समस्याएँ, जो कि समूचे राष्ट्र के सामने हैं, अपना हल पा लेती हैं। देश से प्रेम, देश के शत्रुओं से दुर्दान्त घृणा, सभी छोटी-बड़ी बातों में वीरता और ऊँचे आदर्श, अन्तर्राष्ट्रीयता की एक गहरी चेतना जो कि मज़दूर वर्ग की अपनी ख़ास चीज़ है और समाजवादी मानवता—ये सब चीजें ऑस्त्रोवस्की के नायकों के वैयक्तिक गुण या विशेषता न होकर एक समूचे राष्ट्र का गुण बन जाती हैं। यह ध्यान देने की बात है कि जहाँ रेल की पटरी बिछाने का वह कमर-तोड़ काम हो रहा था,

वहीं पर ये शब्द बोले गये थे—लोहा इसी तरह आग में तप कर फ़ौलाद बनता है !

कलाकार ऑस्त्रोवस्की जीवन के तीक्ष्ण अन्तर्विरोधों से कावा नहीं काटता और न अत्याचार और शोषण के दम तोड़ते हुए संसार के ख़िलाफ़ एक नये संसार, रचनात्मक श्रम के संसार के निर्माण के लिए होनेवाले संघर्ष की कठिनाइयों को ही कम करके देखता है। वह इस बात को नहीं छिपाता कि वह पिछला अभिशप्त अतीत किस प्रकार मज़दूर वर्ग पर अपना प्रभाव डालता रहता है और किस प्रकार यह प्रभाव नये समाज के निर्माण की क्रिया में ही ख़तम होता है। वह अपने नायक पावेल कोर्चागिन की कमज़ोरियों से भी आँख नहीं चुराता। ऑस्त्रोवस्की के उपन्यास की लोकप्रियता का एक बड़ा कारण यह है कि वह जहाँ यह दिखलाता है कि किस प्रकार एक वीर चरित्र का निर्माण होता है, वहाँ साथ ही यह भी दिखलाता है कि किस प्रकार व्यक्तियों की चेतना में से पूँजीवाद के अवशेषों को दूर किया जा सकता है।

रूसी उपन्यास की यह जो ख्याति रही है कि उसमें भावों की गहराई और सामाजिक अन्तर्विरोधों और सामाजिक संघर्षों के भीतर गहरी अन्तर्दृष्टि मिलती है, रूसी उपन्यास की उसी परम्परा को ऑस्त्रोवस्की आगे ले जाता है। रूसी साहित्य में अब तक जितने भी वीर चरित्रों की सृष्टि हुई है, उन श्रेष्ठतम वीर चरित्रों में से पावेल भी एक है। मगर ऑस्त्रोवस्की ने अपने नायक में एक नये गुण का समावेश किया है जो कि पावेल कोर्चागिन के किसी भी पूर्वज में नहीं था। समाजवाद के निर्माण की क्रिया ने, समाजवादी समाज ने उसके अन्दर इस गुण का समावेश किया और वह गुण था एक आगे बढ़े हुए सामाजिक आदर्श के संघर्ष की क्रिया में व्यक्ति का अभिव्यक्ति-स्वातंत्र्य। १९२८-२९ के आसपास से लेकर १९३३-३४ के आसपास तक की ज़िन्दगी ने ही लेखक को यह बात दिखला दी थी कि सोवियत मनुष्य केवल नेता या सेनापति या संगठनकर्ता नहीं है, बल्कि एक साधारण बोल्शेविक या साधारण कोमसोमोल सदस्य के नाते उसके पास अपनी एक समृद्ध आन्तरिक दुनिया है और अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति अपना नया दृष्टिकोण है, और खुद अपनी निजी ज़िन्दगी है। पावेल कोर्चागिन, जो अपने-आपमें एक बहुत संगठित चरित्र है, सोवियत समाज के विकास के एक पूरे दौर का प्रतिनिधित्व करता है, उस दौर का जिसमें एक नये मनुष्य का, इतिहास के प्रांगण में एक नये प्राणी का आविर्भाव होता है।

जनता समाजवाद के लिए जो संघर्ष करती है, वही इस उपन्यास के

कथानक की पृष्ठभूमि है। लेखक ने जिस प्रकार इस संघर्ष का चित्रण किया है और जिस प्रकार उपन्यास के चरित्रों के अनुभवों, कार्यों और भाग्यों का चित्रण किया है; जिस प्रकार उसने श्रम का चित्रण किया है जो जीवन का रूपान्तर कर देता है और उसके साथ ही श्रम करनेवालों का भी रूपान्तर कर देता है; और सबसे अन्त में जिस प्रकार उसने मनुष्यों के पारस्परिक नये सम्बन्धों का चित्रण किया है—उन सब के कारण ऑस्त्रोवस्की का उपन्यास समाजवादी यथार्थवाद की एक सच्ची कृति बन गया है। दूसरे सोवियत लेखकों की तरह निकोलाई ऑस्त्रोवस्की भी गोर्की की परम्परा का लेखक था। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह केवल अनुसरण करता था। ऑस्त्रोवस्की ने नई बातों का आविष्कार भी किया और एक नये साहित्यिक नायक की सृष्टि की।

आनेवाली अनेक पीढ़ियों तक पावेल कोर्चागिन नवयुवकों का आदर्श रहेगा। हर पीढ़ी पिछली पीढ़ी से ज्यादा बड़ी संख्या में कोर्चागिन की धात के नवयुवकों को जन्म देती है। उसके महान शिक्षक मैक्सिम गोर्की में जो अन्तर्दृष्टि थी, वैसी ही अन्तर्दृष्टि ऑस्त्रोवस्की में भी दिखाई देती है जिसके द्वारा उसने अपने काल की वास्तविकता में से आगे आनेवाले सत्य को पहचान लिया। पावेल कोर्चागिन की वीरतापूर्ण विशेषताएँ सोवियत नवयुवकों में अधिकाधिक मिलती हैं। पिछली लड़ाई ने इस बात को दिखलाया कि ऐसे ही गुण लाखों-करोड़ों सोवियत जनता में भी पाये जाते हैं। आज के रोज़ बहुत से विशाल कारखानों में सबसे अच्छे काम करनेवाले नौजवान मज़दूरों की टोलियों ने अपने नाम निकोलाई ऑस्त्रोवस्की और उसके नायक पावेल कोर्चागिन के नाम पर रखे हैं।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की एक सोद्देश्य कलाकार था जो अच्छी तरह इस बात को जानता था कि उसे क्या करना है। वह जानता था कि उसे एक ऐसे युवा सैनिक के चित्र की सृष्टि करनी है, जिसके उदाहरण पर देश के नवयुवक चलें। इस काम को पूरा करने के लिए यह ज़रूरी था कि उसकी पुस्तक किसी एक सामान्य व्यक्ति का जीवन-चरित्र हो, जो यह दिखला सके कि कोई भी नवयुवक उस रास्ते पर आगे बढ़ सकता है। मगर उसके साथ ही साथ यह भी ज़रूरी था कि वह एक वीरतापूर्ण जीवन-चरित्र हो क्योंकि ऑस्त्रोवस्की प्रतिदिन के जीवन में देश की सामान्य मेहनतकश जनता को जिस प्रकार संघर्ष करते देखता था, उसमें उसको एक गहरा रोमानी गुण मिलता था और ऐसी बहुत सी बातें मिलती थीं जो कि अनुकरणीय थीं और यही वह भावना थी जिसे उसने अपने मुख्य नायक और दूसरे पात्रों के अन्दर डाली। कहानी को

तफ़सीली बातों को उसने अपने और अपने साथियों के तजुर्बों से लिया और उसे चित्रित किया।

यह ध्यान देने की बात है कि उसने अपनी ज़िन्दगी के बहुत से बहादुरी के कारनामों के बारे में सिर्फ़ इसलिए नहीं लिखा कि उसको डर था कि उनके बारे में लिखते समय वह बात को बढ़ा-चढ़ा देगा। उसने कहीं भी इस बात का उल्लेख नहीं किया कि एक बार जब वह अभी छोटा सा लड़का ही था, तब उसने गुप्त क्रान्तिकारी कमिटी के बहुत से इश्तिहार एक जर्मन सन्तरी के ठीक नाक तले दीवार पर चिपकाये थे और इसी घटना का कि जब वह अभी पन्द्रह साल का छोकरा ही था, तभी उसने नोवोग्राद्-वोलिन्स्की के पास एक पुल को बारूद से उड़ा दिया था; और न यही कहानी उसने कहीं पर लिखी कि कैसे वह एक कुलक गिरोह के क़ब्ज़े में आये हुए एक कस्बे के अन्दर गया और वहाँ की सारी बातें, जिनकी क्रान्तिकारी आन्दोलन को ज़रूरत थी, पता लगाकर लौट आया। एक सच्चे कलाकार की भाँति ऑस्त्रोवस्की ने वे सभी चीजें छोड़ दीं जिनके समावेश करने के कारण उसके नायक के जीवन की कहानी असाधारण बन जाती।

जहाँ यह बात सच है कि ऑस्त्रोवस्की ने अपनी पुस्तक में अपने जीवन के कुछ जोखिम के कारनामे लिये हैं, वहाँ यह भी सच है कि वह उनको लेते समय उनके जोखिम को और इनके पीछे काम करनेवाली बहादुरी को कम करके दिखाता है। उदाहरण के लिए जब वह यह वर्णन करता है कि वह कैसे एक जोखिम से भरी हुई सड़क पर होकर बहुत सी बेशक़ीमत चीज़ें बेरेज़-दोव से सूबाई केन्द्र को पहुँचाता है, तब वह सिर्फ़ इतना कहता है कि वे चीज़ें हिफ़ाज़त के साथ पहुँच गईं; जब कि सच बात यह है कि ऑस्त्रोवस्की और उसके साथ के दो सैनिकों के साहस के कारण ही यह यात्रा सफल हुई थी और उन्हें रास्ते में डाकुओं के एक हमले का मुक़ाबला भी करना पड़ा था।

कोर्चागिन के बाद के जीवन में रेडियो एक बहुत महत्व की चीज़ हो जाती है। उपन्यास में जो रेडियो सेट शैया-ग्रस्त पावेल के जीवन में आनन्द का संचार करता दिखलाया गया है, उसके बारे में बताया गया है कि उसके दोस्त बेरसेनेव ने उसको बनाया था। मगर सच बात यह थी कि ऑस्त्रोवस्की ने खुद उसको बनाया था और इस काम में उसको डेढ़-दो महीना लगा था। इस काम को पूरा करने के बाद खुद ऑस्त्रोवस्की ने कहा था :

" ज़रा सोचो ! मैं एकदम अन्धा और उस पर से मैंने एक रेडियो फिट करना शुरू किया और पुर्ज़े भी मुझे कितने गये-गुज़रे मिले कि अच्छी-भली

आँखवाला आदमी भी पसीने-पसीने हो जाता। कैसा मुश्किल काम था वह भी जब कि मुझको केवल स्पर्श ज्ञान का सहारा था! जहन्नुम में जाय! जब यह काम पूरा हुआ और मेरा रेडियो सेट बन कर तैयार हुआ तो मैंने क़सम खाई कि फिर कभी ऐसा कोई काम न करूँगा।"

इसमें सन्देह नहीं कि ऑस्त्रोवस्की के जीवन की सबसे बड़ी वीरता थी उन अत्यन्त कठिन स्थितियों में उपन्यास को लिखना। आज जब हम ऑस्त्रोवस्की के बारे में सोचते हैं तो उसकी इसी वीरता का ध्यान हमको आता है। मगर तब भी उपन्यास में इस वीरता पर ज़ोर नहीं दिया गया है, बल्कि नायक के जीवन की उन बातों पर ही ज़ोर दिया गया है जो कि दूसरों के भी उन्हीं गुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ऑस्त्रोवस्की के जीवन में जिस चीज़ को पाने में बरसों का वीरतापूर्ण संघर्ष लगा था, वह सब कोर्चागिन की कहानी में कुछ महीनों में ही पूरा हो जाता है। सच्चे वीर की सहज विनय-शीलता से ऑस्त्रोवस्की इस पुस्तक की सृष्टि के बारे में केवल दो-तीन पृष्ठ लिखता है।

* * *

१९३५ में जब उसने सुना कि उसको आर्डर आफ़ लेनिन का पदक मिला है, तब निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने जोसेफ स्तालिन को धन्यवाद देते हुए लिखा था :

"मेरा लालन-पालन पार्टी की सच्ची सहायिका कोमसोमोल ने किया है और जब तक मेरी जान में जान है, तब तक मेरा जीवन अपनी समाजवादी मातृभूमि की नई पीढ़ी की बोल्शेविक शिक्षा-दीक्षा के लिए लगा रहेगा।"

इस नौजवान लेखक ने अपने कौल को पूरा किया। जनता के भीतर उसका मान बढ़ा, समाज के निर्माताओं की कतार में वह एक बार फिर और बड़ी शान से शामिल हुआ, उसके उत्साही पाठकों की हज़ारों चिट्ठियाँ उसके पास आईं और सैकड़ों मिलने-जुलने वाले आये जो उसका परिचय प्राप्त करना चाहते थे; उसके देश ने, सोवियत राज्य ने, कम्युनिस्ट पार्टी और कोमसोमोल ने हर तरह से उसकी देख-रेख की और इन सब चीज़ों से ऑस्त्रोवस्की के ज़िन्दगी के आख़िरी साल सुखी जीवन की दीप्ति से भर उठे और उन्होंने उसकी प्रतिभा को और भी पैना बनाया।

अभी जब वह अपने पहले उपन्यास के ही एक नये संस्करण पर काम कर रहा था, तभी निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने एक दूसरी पुस्तक की रचना में भी हाथ लगा दिया था जिसका नाम था "तूफ़ान के बेटे"। उस वक़्त क्षितिज पर दूसरे विश्वयुद्ध के काले-काले बादल मँडरा रहे थे। अंग्रेज-

अमरीकी साम्राज्यवाद की ओर से प्रोत्साहन पाकर जर्मन और जापानी फासिस्ट समाजवाद के देश के ख़िलाफ़ युद्ध की तैयारी कर रहे थे।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने लिखा, "हम सब शान्तिपूर्ण श्रम में लगे हुए हैं। शान्ति ही हमारा झण्डा है। पार्टी और सरकार ने इस झण्डे को ऊपर उठाया है···हम शान्ति चाहते हैं क्योंकि हम कम्युनिज्म की आधार-शिला रख रहे हैं। मगर हम अपने देश के साथ गद्दारी करेंगे अगर हम उन क्रूर दुश्मनों को भूल जायें जो हमें घेरे हुए हैं।"

ऑस्त्रोवस्की ने अपनी नई पुस्तक में अपने सामने यही लक्ष्य रखा था कि नई पीढ़ी को, जो समाजवादी समाज में ही पली और बढ़ी थी, यह दिखलाये कि उसके दुश्मन कौन हैं।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने अपने इस उद्देश्य की व्याख्या करते हुए लिखा, "मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ ताकि अगर आगे चलकर लड़ाई होती है—यानी अगर हमारे ऊपर लड़ाई थोपी ही जाती है—तब उस हालत में किसी नौजवान का हाथ अपनी बन्दूक पर काँपे नहीं।"

अपने इस नये उपन्यास में लेखक का ध्यान पोलैंड की उच्च मध्य-वर्गीय और ज़मींदार श्रेणियों पर जाता है और पोलैंड उस समय फ़ासिज़्म के रास्ते पर है। वह अपनी इस किताब का केवल पहला ही भाग पूरा कर पाया था जब उसकी मृत्यु हो गई। निकोलाई ऑस्त्रोवस्की की मृत्यु २२ दिसम्बर १९३६ को हुई, ठीक उसी दिन जिस दिन उसके दूसरे और अन्तिम उपन्यास "तूफान के बेटे" का पहला भाग प्रकाशित हुआ था।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने कहा, "इससे अच्छी बात किसी आदमी के लिए और क्या हो सकती है कि वह मरने के बाद भी मानवता की सेवा करता रहे।"

इस बोल्शेविक उपन्यासकार की रचनाएँ, उसके उत्साह से भरे हुए लेख और भाषण जो उसने नवयुवकों के सामने दिये थे, आज भी संसार की जनता के उस संघर्ष को उसकी एक अनमोल देन हैं, जो शान्ति के लिए और रचनात्मक श्रम के लिए और जनता के राज के लिए, यानी मानवता के सुख के लिए किया जा रहा है।

—एन. वेन्ग्रोव



पहला भाग

पहला अध्याय

"खड़े तो हो जाओ तुम सब जो ईस्टर की छुट्टियों के पहले इम्तहान देने मेरे घर पर आये थे !"

बोलने वाला, पादरी की पोशाक पहने एक मोटा थुलथुल आदमी था। एक बड़ा सा क्रॉस उसके गले में लटक रहा था। उसने क्लास के लड़कों को गुस्से की निगाहों से देखा।

ऐसा लगता था कि उसकी दो छोटी-छोटी कठोर आँखें उन छः बच्चों को, जिनमें चार लड़के थे और दो लड़कियाँ, आर-पार छेद देंगी। बच्चे सीट पर से उठे और उन्होंने पादरी का चोगा पहने हुए उस आदमी को सहमी-सहमी निगाहों से देखा।

पादरी ने लड़कियों की ओर संकेत करते हुए कहा—"तुम लोग बैठ जाओ।"

लड़कियों ने इतमीनान की सांस ली और तुरन्त आदेश का पालन किया।

फ़ादर वासिली की वे छोटी-छोटी आँखें उन बाकी चार पर गड़ गईं।

"अच्छा भाईजान, अब आप जरा इधर तशरीफ लाइए !"

फ़ादर वासिली उठे, अपनी कुर्सी उन्होंने पीछे सरकाई और उन लड़कों के पास पहुँचे जो एक-दूसरे से बिलकुल सटे खड़े थे।

"तुममें से कौन बदमाश तम्बाकू पीता है ?"

"हम लोग नहीं पीते, फ़ादर," चारों ने डरते-डरते जवाब दिया।

पादरी के चेहरे पर खून उतर आया।

"अच्छा, तो तुम लोग तम्बाकू नहीं पीते, क्यों ? बदमाश कहीं के ! तब फिर मेरे आटे में तम्बाकू किसने मिलाई ? बोलो ! ठहरो अभी पता चल जाता

है कि पीते हो कि नहीं। उलटो, अपने जेब उलटो! देर मत करो, मैं कहता हूँ उलटो, फ़ौरन उलटो!"

तीन लड़कों ने अपने जेब की चीजें निकाल-निकाल कर मेज़ पर रखना शुरू किया।

पादरी ने तम्बाकू के चूरे की तलाश में सीवनों को बड़े ग़ौर से देखा मगर उन्हें कुछ नहीं मिला। और तब वह उस चौथे लड़के की तरफ़ मुखातिब हुए। इस छोकरे की आँखें काली-काली थीं और वह भूरे रंग की कमीज़ और नीला पतलून पहने हुए था जिसके घुटने पर थैगड़ा लगा था।

"तुम ऐसे कैसे खड़े हो पुतले की तरह?"

लड़के ने सवाल करने वाले को खामोश नफ़रत की आँखों से देखा।

उसने आक्रोशपूर्ण स्वर में जवाब दिया—"मेरे कोई जेब-वेब नहीं है।"

"जेब नहीं है, क्यों! तुम समझते हो मुझे मालूम नहीं है कि किसने मेरा आटा खराब किया? कि यह बदमाशी किसकी है? तुम समझते हो कि इस बार भी मैं तुमको छोड़ दूँगा? वह नहीं होने का, तुम्हें इसकी सजा मिलेगी। पिछली बार मैंने तुमको स्कूल में रहने दिया था क्योंकि तुम्हारी माँ मेरे पास आकर रोई गिड़गिड़ाई, मगर अब बस। बाहर निकल जाओ!" उसने लड़के का कान उमेठ कर उसे बरामदे में ढकेल दिया और किवाड़ झटके से बन्द कर लिया।

लड़के खामोश बैठे रहे, सहमे हुए। उन बच्चों में से कोई भी नहीं समझ सका कि क्यों पावेल कोर्चागिन को क्लास से बाहर किया गया। किसी की समझ में यह बात नहीं आई, एक सर्गेई ब्रुज़ाक को छोड़ कर जो पावेल का सबसे गहरा दोस्त था। उसने पावेल को पादरी साहब के बावर्चीखाने में ईस्टर के केक के आटे में मुट्ठी भर घर की उगाई तम्बाकू छिड़कते देखा था—वहीं, पादरी साहब के उसी बावर्चीखाने में, जहाँ क्लास के छः पिछड़े हुए लड़के पादरी साहब का इन्तज़ार कर रहे थे कि वे आयें और उनका सबक सुनें।

क्लास से निकाला जाकर पावेल स्कूल की इमारत की सबसे निचली सीढ़ी पर बैठ गया और परीशान होकर सोचने लगा कि जब वह आज की घटना अपनी माँ को बतायेगा तब वह क्या कहेगी, उसकी ग़रीब, मेहनती माँ जो सवेरे से लेकर रात तक आबकारी के दारोग़ा साहब के यहाँ रसोई में खटती थी।

आँसुओं से उसका गला रुँध गया।

"मैं क्या करूँ अब? यह सब उसी कम्बख्त पादरी के कारण हुआ। मगर मुझे भी क्या सूझी कि गया और उसके आटे में तम्बाकू मिला आया। यह

सर्योजका की सूझ थी। उसने कहा था, आओ जरा इस बूढ़े खूसट की खबर ली जाय। और वही हमने किया। मगर मजा तो देखो, सर्योजका तो साफ़ निकल गया और मेरी शामत आ गई; ठोकर लगा कर बाहर कर दिया जाऊँगा।"

फ़ादर वासिली से उसका झगड़ा बहुत पुराना था। इसकी शुरुआत उस दिन हुई थी जब मिश्का लेव्चुकोव से उसका झगड़ा हुआ था और सजा के तौर पर स्कूल के बाद उसको रोक लिया गया था। खाली कमरे में लड़का कोई शरारत न करे, इस खयाल से मास्टर साहब उसे दर्जा दो में ले गए जहाँ पढ़ाई चल रही थी।

पावेल पीछे की एक सीट पर बैठ गया। मास्टर साहब, जो दुबले-पतले, चुसे हुए से छोटे से आदमी थे और काला कोट पहने हुए थे, क्लास को पृथ्वी के बारे में और आकाश के ग्रहों-नक्षत्रों के बारे में बतला रहे थे और पावेल ने तो मारे अचरज के मुँह बा दिया जब उसे पता चला कि यह पृथ्वी करोड़ों साल से अस्तित्व में है और ये तारे जो दिखाई देते हैं ये भी दुनियाएँ हैं। उसने जो कुछ सुना उससे उसे इतना अचम्भा हुआ कि बड़ी मुश्किल से वह यह कहने से अपने को रोक पाया : "मगर बाइबिल में तो ऐसा नहीं लिखा है।" पर बोला नहीं क्योंकि वह और मुसीबत में नहीं पड़ना चाहता था।

पादरी साहब ने हमेशा पावेल को धर्मशास्त्र में पूरे पूरे नम्बर दिये थे। उसे प्रार्थना की लगभग पूरी किताब कण्ठस्थ थी। और बाइबिल के पुराने और नये टेस्टामेण्ट भी। उसे ठीक-ठीक पता था कि सप्ताह के किस दिन परमात्मा ने क्या बनाया था। अब उसने निश्चय किया कि फ़ादर वासिली से इसके बारे में पूछेगा।

अगले ही दिन क्लास में, इसके पहले कि पादरी साहब ठीक से अपनी कुर्सी पर बैठ पायें, पावेल ने हाथ उठा दिया और बोलने की इजाजत पाते ही सीट पर से उठ खड़ा हुआ।

"फ़ादर! दर्जा दो के मास्टर साहब यह क्यों कहते हैं कि यह पृथ्वी करोड़ों साल पुरानी है, जब कि बाइबिल में लिखा है कि वह पाँच ह—जा—र....."

फ़ादर वासिली की मोटी भारी चीख ने उसकी बात को बीच ही में काट दिया।

"क्या कहा तुमने? बदमाश कहीं के! तो इसी तरह तुम अपनी धर्म-पुस्तक पढ़ते हो।"

इसके पहले कि पावेल समझ पाये कि बात क्या हुई, पादरी साहब ने उसका कान पकड़ा और दीवार से उसका सिर टकराने लगे। कुछ मिनट बाद,

दहशत और दर्द से काँपते हुए उसने अपने-आपको बाहर के बरामदे में खड़ा पाया।

उस बार माँ ने उसको खूब फटकार बताई थी और उसके दूसरे रोज वह स्कूल गई थी और फ़ादर वासिली से उसने विनती की थी कि पावेल को फिर से स्कूल में रख लें। उस दिन से पावेल जी-जान से पादरी साहब से घृणा करने लगा था। वह उनसे घृणा करता था और डरता था। उसका बच्चे का हृदय किसी भी अन्याय के खिलाफ़, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, विद्रोह करता था। वह कभी उस मार के लिए जो उस पर बेजा पड़ी थी, पादरी साहब को माफ़ नहीं कर सका और उसका मन गुस्से और नफ़रत से भर उठा।

उसके बाद पावेल को बराबर फ़ादर वासिली से द्वेषपूर्ण उपेक्षा ही मिली। पादरी साहब बराबर उसे क्लास के बाहर कर देते थे, ज़रा-ज़रा सी ग़लती के लिए उसे लगभग रोज ही कोने में खड़ा कर देते थे और कभी उससे कोई सवाल नहीं पूछते थे। नतीजा यह कि ईस्टर की छुट्टियों के ठीक पहले पावेल को क्लास के दूसरे पिछड़े हुए लड़कों के साथ पादरी साहब के मकान पर दुबारा इम्तहान देने के लिए जाना पड़ा। और वहीं बावर्चीखाने में उसने उनके आटे में तम्बाकू मिला दिया था।

किसी ने उसको ऐसा करते देखा नहीं था, लेकिन पादरी साहब फौरन ताड़ गये कि यह किसकी करतूत होगी।

आखिरकार क्लास खतम हुआ और बच्चे बाहर निकल कर हाते में आये और पावेल को घेर कर खड़े हो गये। पावेल उदास खामोशी में डूबा खड़ा रहा। सर्गेई ब्रुजाक क्लास में ही रुका रहा। वह महसूस कर रहा था कि वह भी अपराधी है। मगर, वह अपने दोस्त की मदद के लिए कुछ नहीं कर सकता था।

हेडमास्टर, एफ्रेम वासीलियेविच ने मास्टरों के कमरे की खुली खिड़की में से सिर बाहर निकाला और आवाज लगाई :

"कोर्चागिन को फ़ौरन मेरे पास भेज दो।" हेडमास्टर साहब की गहरी भारी आवाज सुन कर पावेल चौंक पड़ा और धड़कते हुए दिल से वह उनके पास चला।

रेलवे स्टेशन के रेस्तोरां के मालिक ने, जो पीला सा अधेड़ आदमी था और जिसकी आँखें बेरंग और बुझी-बुझी सी थीं, कनखियों से पावेल को देखा।

"क्या उम्र है इसकी ?"

"बारह।"

"ठीक है। रह सकता है। इसे महीने में आठ रूबल मिलेंगे। और खाना भी, जिन दिनों काम करेगा। एक दिन छोड़ कर हर दूसरे रोज चौबीस घण्टे काम करना होगा। लेकिन हाँ, एक बात अच्छी तरह समझ लो : चोरी-चमारी नहीं चलेगी।"

"अरे नहीं साहब, कैसी बात कहते हैं। वह चोरी नहीं करेगा। मैं इसका जिम्मा लेती हूँ," माँ ने डर कर फ़ौरन उन्हें आश्वस्त करने के लिये कहा।

"तो फिर आज से ही काम शुरू कर दे," मालिक ने आदेश दिया और काउंटर के पीछे खड़ी हुई औरत की ओर मुड़ते हुए कहा : "जीना, इस लड़के को बावर्चीखाने में ले जाओ और फ्रोसिया से कहो कि ग्रिश्का की जगह इसको काम पर लगा दे।"

उस औरत ने अपने हाथ की वह छुरी रख दी जिससे वह गोश्त के टुकड़े कर रही थी, पावेल को इशारा किया और आगे-आगे चलते हुए हॉल को पार करके किनारे के दरवाजे पर पहुँची जो बर्तन धोने की कोठरी में खुलता था। पावेल उसके पीछे पीछे गया। उसकी माँ भागती हुई आई और जल्दी-जल्दी उसके कान में फुसफुसा कर कहा : "देखो बेटा पावलुश्का, खूब जी लगा कर काम करना और कभी कोई गन्दी हरकत मत करना।"

उदास आँखों से माँ ने उसको जाते हुए देखा और फिर वापस चली गई।

भीतर काम जोरों के साथ चल रहा था। रकाबियों, काँटों, छुरियों का ढेर मेज पर लगा हुआ था और बहुत सी औरतें अपने कन्धों पर पड़े तौलिये से उनको पोंछ रही थीं।

एक लड़का जिसके सिर में बड़े-बड़े लाल-लाल बालों का गुच्छा था, और जो पावेल से थोड़ा बड़ा था, दो बड़े-बड़े समोवारों[1] को ठीक कर रहा था।

वह जगह बड़े से कंडाल में खौलते हुए पानी की भाप से भरी हुई थी। उसी पानी से रकाबियाँ धुल रही थीं। भाप के कारण पावेल एकाएक उन औरतों के चेहरों को न देख सका। वह अनिश्चय की हालत में खड़ा रहा कि कोई उसे बतलाए कि क्या करना है।

शराबखाने की नौकरानी जीना ने एक रकाबी धोने वाली के पास जाकर कन्धा छुआ और बोली :

"देखो फ्रोसिया, मैं तुम्हारे लिए ग्रिश्का की जगह एक नया लड़का ले आई हूँ। तुम इसको काम बतला दो।"

१. एक खास तरह का बड़ा चूल्हा जिसके ऊपर सोने की भी जगह होती है।—अनु०

जिस औरत को उसने फ्रोसिया कह कर पुकारा था, उसकी ओर इशारा करते हुए जीना ने पावेल से कहा, "यहाँ का इन्तज़ाम इन्हीं के हाथ में है। यह तुम्हें बतला देंगी कि तुमको क्या करना है।" यह कह कर वह मुड़ी और वापस अपनी जगह पहुँच गई।

"अच्छा," पावेल ने धीरे से कहा और प्रश्न करती हुई आँखों से फ्रोसिया को देखा। फ्रोसिया ने माथे का पसीना पोंछते हुए बड़े ग़ौर से पावेल को सिर से पैर तक देखा जैसे उसे परख रही हो और आस्तीन ऊपर चढ़ाते हुए, जो कुहनी के नीचे आ गई थी, उसने गहरी और बड़ी प्यारी आवाज़ में कहा :

"ऐसा कुछ बहुत काम नहीं है, भैया! मगर फंसे रहोगे खूब। वह ताँबे की जो चीज़ तुम वहाँ देखते हो न, सवेरे से ही उसको सुलगा देना पड़ता है और हमेशा गरम रखना पड़ता है ताकि खौलता हुआ पानी हमेशा तैयार मिले! और फिर लकड़ी चीरनी होती है और समोवार हैं जिनकी फ़िक्र करनी पड़ती है। कभी तुम्हें छुरी-काँटे भी साफ़ करने पड़ेंगे और गन्दे पानी की बाल्टी भी बाहर ले जानी पड़ेगी। काम की यहाँ कोई कमी नहीं है भाई!"

उसका बोलने का ढंग और तमतमाया हुआ चेहरा और उसकी छोटी सी उठी हुई नाक, यह सब पावेल को बहुत अच्छे लगे।

"काफ़ी भली मालूम होती है," उसने अपने मन में कहा। फिर अपनी भौंह को बस में करते हुए बोला, "अब मुझे क्या करना है मौसी?"

रकाबी धोने वाली औरतें ठहाका मार कर हँस पड़ीं :

"हा! हा! देखो तो फ्रोसिया को बैठे-बिठाये एक भानजा मिल गया....."

फ्रोसिया तो दूसरों से भी ज़्यादा ज़ोर से हँस रही थी।

भाप के बादलों के बीच से पावेल ठीक से नहीं देख सका था कि फ्रोसिया जवान लड़की है। उसकी उमर किसी हालत में अठारह से ज़्यादा न थी।

घबरा कर वह उस दूसरे लड़के की तरफ़ मुड़ा और उससे पूछा :

"अब मुझे क्या करना है?"

मगर वह लड़का बेफ़िक्री से खड़ा रहा और बोला : "अपनी इन्हीं मौसी से पूछो, यही तुमको सब बतलायेंगी। मैं तो चला।" यह कहते हुए वह बावर्ची-खाने में खुलने वाले दरवाजे से तीर की तरह निकल गया।

"यहाँ आओ, इन काँटों को पोंछो।" एक रकाबी धोने वाली अधेड़ औरत ने कहा।

"अपनी यह खी-खी बन्द करो," दूसरों को डपटते हुए वह बोली। "लड़के ने ऐसी कोई बात नहीं कही जिससे तुमको हँसी आ रही है। यहाँ आओ, यह

यह लो," कहते हुए उसने पावेल को रकाबी पोंछने का तौलिया दिया, "इसका एक सिरा अपने दाँत से पकड़ लो और दूसरा सिरा हाथ से पकड़ कस कर तानो। यह देखो, काँटा है। इसके दाँतों के बीच-बीच तौलिये को अन्दर-बाहर करो और देखो ज़रा भी मैल न रहने पाये। इन चीज़ों के मामले में यहाँ बड़ी सख़्ती बरती जाती है। गाहक हमेशा काँटों को बड़े ग़ौर से देखते हैं और अगर ज़रा सा भी मैल मिल जाता है तो बड़ा बावेला मचाते हैं। और तब, मालकिन खड़े-खड़े तुमको निकाल बाहर करेगी।"

"मालकिन?" पावेल ने उसकी बात को दुहराते हुए कहा, "मैं तो समझता था कि वह साहब जिन्होंने मुझे रखा वही मालिक हैं।"

रक़ाबी धोने वाली हँसी और बोली, "इस मालिक को तो बस यहाँ की एक सजावट समझो। असली मालिक तो है मालकिन। आज वह यहाँ नहीं है। लेकिन अगर कल दिन यहाँ टिके तो ख़ुद ही देख लोगे।"

[redacted]

उनमें से एक ने जिसकी कनपटी बहुत चौड़ी थी और चेहरा आटे सरीखे सफ़ेद और जबड़े भारी और चौखुटे थे, कहा : "ज़रा तेज़ी से हाथ चलाओ। बारह बजे की गाड़ी आने ही वाली है, और अभी तुम लोग यहाँ खेल ही कर रहे हो।"

उसने पावेल को देखा और पूछा, "यह कौन है?"

"अरे वही नयावाला लड़का है," फ्रोसिया ने कहा।

वह बोला, "अच्छा, वह नयावाला लड़का।....अच्छा ज़रा सुनो तो," कहते हुए उसने अपना भारी हाथ पावेल के कन्धे पर रखा और उसे ठेल कर समोवार के पास ले जाते हुए बोला : "तुम्हारा काम इनको सदा खौलते रखना है। यह देखो, इनमें से एक तो बुझ भी गया और दूसरा किसी तरह आख़िरी साँसें गिन रहा है। आज तो तुम्हें माफ़ किया जाता है, लेकिन कल से ऐसा हुआ तो तुम्हारी मरम्मत होगी।"

पावेल बिना एक शब्द बोले समोवारों को ठीक करने में जुट गया।

और इस तरह उसकी मशक़्क़त की ज़िन्दगी शुरू हुई। आज पहले रोज़ उसे जितना काम करना पड़ा था उतना अपनी ज़िन्दगी में पावलुश्का ने और कभी नहीं किया था। उसने महसूस किया कि यह उसका घर नहीं था जहाँ माँ का हुक्म टाला जा सकता है। उस तिरपट आँख वाले बैरे ने यह बात बिलकुल साफ़ कर दी थी कि अगर वह कहे मुताबिक ठीक-ठीक काम नहीं करेगा तो उसे इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

उसने अपना एक जूता चिमनी के ऊपर रखा और दूसरे से धौंकना शुरू किया। थोड़ी ही देर में उन बड़े-बड़े मटके जैसे समोवारों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। उसने गन्दे पानी की बाल्टी उठाई और जाकर कूड़े के टीन में उलट दी, गरमे में और ईंधन डाल दिया, रकाबी पोंछने वाली गीली तौलियों को गरम समोवार पर सुखाया—ग़रज, उसने वह सब कुछ किया जो उसे करने को कहा गया था। बहुत रात बीत जाने पर जब थका हुआ पावेल बावर्चीख़ाने की तरफ़ चला तो उस अधेड़ रकाबी धोने वाली ने पावेल के पीछे बन्द होते हुए दरवाज़े की ओर देखते हुए कहा :

"उस लड़के में कुछ अजीब सी बात है। देखो, कैसा पागल की तरह दौड़ता है। कौन जाने इसीलिये उसे काम से लगाया गया हो।"

फ्रोसिया ने कहा : "अच्छा काम करने वाला है। उसे ठेलना नहीं पड़ता।"

लूशा की राय थी, "जल्दी ही उसका जोश ठण्डा हो जायगा। शुरू-शुरू में सब इसी तरह ज़ोरों से काम करते हैं…"

दूसरे रोज़ सवेरे सात बजे रात भर खड़े रहने के कारण थक कर चूर पावेल ने खौलते हुए समोवार को उस दूसरे लड़के को सँभलवाया जो उसकी जगह लेने वाला था। इस लड़के ने, जिसके गाल फूले-फूले से थे और आँखों में बड़ी भद्दी सी चमक थी, खौलते हुए समोवारों का मुआइना किया और इस बात का इतमीनान हो जाने पर कि सब कुछ ठीक है, उसने अपने हाथ जेब में डाल लिए और पावेल को नीची नज़र से देखते हुए बड़ी ऐंठ से, दाँत बन्द किये पिच से थूका।

"सुन बे नकचपटे!" उसने चुनौती के स्वर में कहा और पावेल को अपनी बेरंग आँखों से देखा। "देखना कल तुझे ठीक छः बजे अपने काम पर हाजिर हो जाना है।"

"क्यों, छः पर क्यों?" पावेल ने जानना चाहा, "शिफ्ट तो सात बजे बदलती है न?"

"इसकी फ़िकर तू छोड़ दे कि शिफ्ट कब बदलती है, कब नहीं बदलती। तुझे यहाँ पर छः बजे हाजिर हो जाना है। और देख, ज़्यादा बकबक मत करना नहीं तो वह झांपड़ रसीद करूँगा कि मुँह टेढ़ा हो जायगा। ज़रा ढिठाई तो देखो, आज ही काम शुरू किया और अभी से दिमाग़ सिकहर पर।"

रकाबी धोने वाली औरतें, जिन्होंने अभी-अभी अपनी पाली का काम ख़तम किया था, दोनों लड़कों की बातचीत को बड़ी दिलचस्पी से सुन रही थीं। पावेल को उस लड़के के इस तरह गुण्डई के ढंग से बात करने पर गुस्सा आ गया। वह

उस बदमाश की तरफ़ एक क़दम बढ़ा और करीब था कि उस पर हाथ छोड़ दे। लेकिन, यह सोच कर कि नई-नई लगी नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा, वह रुक गया।

उसने गुस्से से स्याह पड़ते हुए कहा : "बन्द करो यह शोर मचाना और मुझसे जरा दूर ही रहना नहीं तो ठीक नहीं होगा। मैं यहाँ कल सात बजे आऊँगा। और जहाँ तक घूँसे की बात है, मैं तुमसे कमज़ोर नहीं हूँ, यह बात याद रखना। या यह चाहते हो कि एक-एक चोट हो ही जाय ? बोलो ? मैं तैयार हूँ।"

उसका दुश्मन डर कर पीछे हटा और गरमे से लग कर खड़ा हो गया। वह आश्चर्य से क्रुद्ध पावेल को देख रहा था। उसे उम्मीद नहीं थी कि पावेल इतना तगड़ा प्रतिवाद करेगा।

"अच्छा-अच्छा देखेंगे," उसने बुदबुदाते हुए कहा।

काम का पहला रोज़ बिना किसी दुर्घटना के बीत गया था इसलिये पावेल जल्दी-जल्दी घर की ओर चला। उसके मन में यह भाव था कि उसने ईमानदारी से मेहनत करके अपने विश्राम के इन घण्टों को अर्जित किया है। अब वह भी एक मज़दूर था। अब कोई उस पर तोहमत नहीं रख सकता था कि वह कुछ नहीं करता और दूसरे पर आश्रित है।

लकड़ी चीरने के कारखाने की छिटपुट फैली हुई इमारतों पर सुबह का सूरज चढ़ने लगा था। थोड़ी ही देर में पावेल का छोटा सा मकान लेशचिन्स्की के बाग़ीचे के पीछे दिखाई देने लगेगा।

"माँ अभी-अभी उठी होंगी और देखो मैं काम पर से लौट रहा हूँ।" पावेल ने सोचा और अपनी रफ्तार तेज कर दी। चलते-चलते वह सीटी बजाता जा रहा था। "स्कूल से निकाला जाना बहुत बुरा नहीं रहा। वह कम्बख्त पादरी किसी तरह मुझे चैन न लेने देता। और अब मुझे क्या, जहन्नुम जाय वह, मेरे ठेंगे से," यही सोचते हुए पावेल घर पहुँचा और दरवाजे को खोला। "जहाँ तक उस नवाब के नाती का ताल्लुक है, मैं ज़रूर किसी दिन उसको ठोकूंगा।"

उसकी माँ ने, जो आंगन में समोवार को सुलगा रही थी, अपने बेटे को आते हुए देखा तो कुछ चिन्ता के स्वर में पूछा :

"कहो, कैसा रहा ?"

"बहुत अच्छा," पावेल ने जवाब दिया।

माँ कुछ कहने ही वाली थी कि खुली हुई खिड़की से पावेल को अपने भाई आर्तेम की चौड़ी पीठ दिखाई दी।

"अच्छा, तो आर्तेम आ गया ?" उसने उद्विग्नता से पूछा।

"हाँ, कल आया था। अब वह यहीं रहेगा और रेलवे यार्ड में काम करेगा।"

कुछ झिझकते हुए उसने सामने का दरवाज़ा खोला।

उस आदमी ने, जो मेज़ के सामने दरवाज़े की ओर पीठ किए बैठा था, कमरे में दाखिल होते हुए पावेल की ओर अपनी विशाल काया को मोड़ा। घनी काली भवों के नीचे उसकी आँखों में कठोरता का भाव था।

"अच्छा, यह आया तम्बाकू वाला लड़का! कहो क्या हालचाल है?"

अब जो सवालों की झड़ी लगेगी उससे पावेल को डर मालूम हो रहा था।

उसने सोचा, "आर्तेम को पहले से ही सब बातों का पता है। लगता है अच्छी खासी झड़प होगी और शायद मरम्मत भी।" पावेल अपने बड़े भाई से कुछ-कुछ डरता हुआ खड़ा रहा।

मगर आर्तेम का कोई इरादा लड़के को डाँटने-डपटने का नहीं था। वह मेज़ पर कोहनी टेके स्टूल पर बैठा रहा और पावेल के चेहरे को कुछ मनोरंजन और कुछ उपेक्षा के मिले-जुले भाव से ध्यानपूर्वक देखता रहा।

"अच्छा तो तुम युनिवर्सिटी से दीक्षित होकर निकल आये, क्यों? जो कुछ लिखना-पढ़ना था लिख-पढ़ चुके और अब रकाबियाँ धोने में लग गये हो, क्यों?"

नीचे फर्श में एक दरार थी। पॉवेल उसी पर आँख गड़ाए, एक कील के सिरे को बहुत बारीकी से देख रहा था। आर्तेम उठा और रसोई घर में चला गया।

इतमीनान की साँस लेते हुए पावेल ने सोचा, "लगता है मार-वार नहीं पड़ेगी।"

बाद में चाय के वक्त आर्तेम ने पावेल से स्कूल वाली घटना के बारे में पूछा। पावेल ने सब कुछ बतला दिया।

"बड़े होकर तुम इतने आवारा निकलोगे तो ज़िन्दगी में क्या करोगे," उसकी माँ ने उदास आवाज़ में कहा। "हम लोग इसके संग क्या करें? मेरी समझ में ही नहीं आता यह लड़का किस पर गया है! हे भगवान, इस लड़के के पीछे मुझे क्या-क्या नहीं भोगना पड़ा," उसने शिकायत के लहजे में कहा।

आर्तेम ने अपना खाली प्याला अलग सरकाया और पावेल की ओर मुड़ा।

"अब तुम मेरी बात सुनो दोस्त," उसने कहा। "जो हो गया सो हो गया। उसका कोई इलाज नहीं। हाँ इतना है कि अब आगे से सावधान रहो और जी लगा कर अपना काम करो। और देखो, कोई शरारत न करना। अगर इस जगह से भी तुम निकाले गये तो याद रखना, मैं तुम्हारी खूब ही मरम्मत करूँगा। तुम माँ को काफ़ी दुख दे चुके हो। जब देखो तब कोई न कोई मुसीबत खड़ी किये रहते हो। मगर अब इस चीज़ को बन्द होना है। तुम यहाँ साल-छः महीना काम कर लो, फिर मैं कोशिश करके तुमको डिपो में अपरेण्टिसी पर लगवा दूँगा। क्योंकि इस तरह तमाम जिन्दगी गन्दी रकाबियाँ धोते रहने से तो बेड़ा पार नहीं होगा। तुम्हें कोई न कोई धन्धा सीखना ही होगा। अभी तुम ज़रा छोटे हो। मगर साल भर में मैं कोशिश करूँगा कि तुम्हारा कुछ बन्दोबस्त हो जाय और शायद वे लोग तुमको लगा भी लें। अब मैं यहीं काम करूँगा। माँ को अब काम पर नहीं जाना पड़ेगा। सारी जिन्दगी उन्होंने बहुत काफ़ी गुलामी की, एक से एक हरामज़ादों की। पावका, देखो तुम्हें आदमी बनना है।"

वह उठ खड़ा हुआ। उसकी विशाल काया के आगे आसपास की सारी चीजें बौनी नज़र आती थीं। कुर्सी पर लटकते कोट को पहनते हुए उसने अपनी माँ से कहा, "मुझे घण्टे भर के लिए ज़रा बाहर जाना है," और बाहर निकल गया। दरवाज़े में से निकलने के लिए वह ज़रा झुका।

बाहर के गेट की ओर बढ़ते हुए वह खिड़की के पास से निकला और अन्दर झाँकते हुए उसने पावेल को आवाज़ देकर कहा, "मैं तुम्हारे लिए एक जोड़ा जूते और एक चाकू लाया हूँ। माँ से ले लेना।"

स्टेशन का रेस्तोराँ दिन-रात खुला रहता था।

छः रेलवे लाइनें इस जंकशन पर मिलती थीं और स्टेशन हमेशा मुसाफिरों से खचाखच भरा रहता था; सिर्फ रात को दो-तीन घण्टे के लिये, दो गाड़ियों के दरमियान, वहाँ कुछ शान्ति रहती थी। सभी दिशाओं के लिए सैकड़ों गाड़ियाँ इस स्टेशन से गुजरती थीं। गाड़ियाँ, जो मोर्चे के एक भाग से दूसरे भाग को जाती थीं और एक से भूरे रंग के ओवर कोट पहने हुए नये लोगों को ले जाती थीं और यह आना-जाना अनवरत चलता रहता था।

पावेल ने दो बरस तक उस जगह काम किया—दो बरस, जिनमें उसने सिवा रकाबी धोने की जगह और बावर्चीखाने के और कुछ नहीं देखा। वे बीस -बाईस लोग जो बावर्चीखाने में काम करते थे, दिन-रात पागलों की तरह जुते

रहते थे। रेस्तोरां और बावर्चीख़ाने के बीच दस बैरे बराबर दौड़ लगाते रहते थे।

अब पावेल को आठ के बदले दस रूबल मिलने लगे थे। इन दो सालों में वह और लम्बा और चौड़ा-चकला हो गया था। इन्हीं दो बरसों में उसे बहुत सी परीक्षाओं का सामना भी करना पड़ा था। छः महीने उसने बावर्चीख़ाने में काम किया था, मगर फिर उसे गन्दी रकाबियाँ धोने के काम पर भेज दिया गया। बात यह थी कि सर्व-शक्तिमान खानसामा उससे रुष्ट था—बड़ा ख़तरनाक छोकरा है यह, ज़्यादा मारते डर लगता है, कौन जाने कब वह छुरा भोंक दे। और इसमें सन्देह नहीं कि अब तक न जाने कभी की अपने गुस्सैल मिजाज के कारण पावेल की नौकरी छूट गई होती बशर्ते उसमें कड़ी मेहनत का भी इतना जबरदस्त माद्दा न होता। क्योंकि यह बात सही है कि वह दूसरे किसी आदमी से ज़्यादा काम कर सकता था और थकता तो जैसे कभी था ही नहीं।

जिन घण्टों में काम की बहुत भीड़ होती, वह लदी हुई ट्रे लिये बावर्ची-ख़ाने की सीढ़ी पर ऊपर-नीचे, चार-चार पाँच पाँच सीढ़ियों को एक-एक डग में भरता तूफ़ान की तरह दौड़ता था।

रात को, जब रेस्तोरां के दोनों हॉलों में शोर-गुल मद्धम पड़ जाता, तब बैरे नीचे बावर्चीख़ाने के भण्डारघरों में इकट्ठे होते और सुध-बुध खोकर दीवानों जैसे ताश के जुए खेलने लगते। कई बार पावेल ने बड़ी रक़म के नोटों को एक हाथ से दूसरे हाथ में जाते देखा था। उसे इतना ढेर सा पैसा इस तरह पड़े हुए देख कर अचम्भा नहीं होता था क्योंकि उसे मालूम था कि हर बैरे को रूबल-आधा रूबल की बख़शीश से शिफ्ट के पीछे तीस-चालीस रूबल मिल जाते थे जिनको वे शराब और जुए में खर्च कर देते थे। पावेल को इनसे नफ़रत थी।

"सुअर के बच्चे हैं," उसने सोचा। "एक वह आर्तेम है, आला दरजे का मेकैनिक और उसे महीने में कुल अड़तालीस रूबल मिलते हैं और मुझे मिलते हैं दस। और ये लोग हैं कि दिन भर ही में इतना सारा पैसा बटोर लेते हैं। और किस बात के लिए? सिर्फ इस बात के कि यहाँ से वहाँ ट्रे लाते-ले जाते हैं। और फिर यह सारा पैसा शराब और जुए में खर्च किया जाता है।"

पावेल के लिए ये बैरे भी उतने ही बेगाने और दुश्मन जैसे थे जितना कि मालिक। "ये सुअर यहाँ तो पेट के बल रेंगते हैं मगर वहाँ शहर में इनकी बीवियाँ और बेटे रईसों की तरह इठलाते चलते हैं।"

कभी-कभी वे लोग अपने बेटों को भी लाते जो हाई स्कूल की ठाठदार वर्दियां पहने होते। कभी-कभी वे अपनी बीवियों को भी लाते जो अच्छी आराम

की जिन्दगी के कारण नर्म और मुदाज नजर आतीं। पावेल ने सोचा, "मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि इन लोगों के पास उन रईसजादों से ज़्यादा पैसा है जिनकी मेज पर दौड़-दौड़ कर वे चीजें पहुँचाते हैं।" रात को बावर्चीखाने के अंधेरे कोनों और भण्डारघरों में जो कुछ हुआ करता था उससे भी अब पावेल को कोई आघात न लगता था। उसे अच्छी तरह मालूम था कि कोई भी रकाबी धोनेवाली या शराबखाने की नौकरानी ज़्यादा दिन तक अपनी नौकरी सलामत नहीं रख सकती थी, अगर वह चन्द रूबलों के लिए उन लोगों को अपना शरीर न बेचे जो यहाँ उसके स्वामी थे।

पावेल को जिन्दगी की घिनौनी खन्दक की सबसे निचली तहों की एक झलक मिलती थी और वहाँ से अजीब एक खट्टी बदबू निकल रही थी जो कि सड़ते हुए दलदल की बदबू थी। और यह बदबू पहुँची उसके पास जो हर नई और अनजान चीज को पाने लिए ललक रहा था।

आर्तेम अपने भाई को रेलवे यार्ड में अपरेण्टिसी पर लगाने में नाकामयाब रहा; पन्द्रह साल से कम के आदमी की उनको जरूरत नहीं थी। मगर पावेल धुएँ से काली उस ईंट की इमारत की तरफ़ एक खिंचाव महसूस करता था और उस दिन का इन्तजार कर रहा था जब वह रेस्तोरां से छुट्टी पा सकेगा।

वह अक्सर आर्तेम से मिलने के लिए यार्ड में जाया करता था और तब उसके संग गाड़ियों की देख-भाल पर निकल जाता और जो मदद बन पड़ती देता था।

फ्रोसिया के चले जाने पर उसने खास तौर से अकेलापन महसूस किया। उस खुशदिल हंसती हुई लड़की के चले जाने पर पावेल को इस बात का और भी पैना एहसास हुआ कि उसके संग उसकी दोस्ती कितनी पक्की हो गई थी। अब, जब वह सबेरे काम पर आता और शरणार्थी स्त्रियों के झगड़ों और तेज चीख-पुकार को सुनता तो उसे अपना अकेलापन, अपना खालीपन और भी शिद्दत से महसूस होता।

एक रात गरमे को सुलगाते हुए वह आतिशदान के सामने बैठा लपटों को देख रहा था। स्टोव की गरमी उसे सुख पहुँचा रही थी। इस वक्त वहाँ पर वह अकेला ही था।

न जाने कैसे अनायास वह फ्रोसिया के बारे में सोचने लगा और हाल ही में उसने जो एक दृश्य देखा था, वह उसकी मन की आँखों के आगे घूम गया।

सनीचर की रात फुर्सत के वक्त पावेल नीचे बावर्चीखाने में जा रहा था,

जबकि कुतूहलवश वह लकड़ी के एक ढेर पर चढ़ गया और वहाँ से उसने नीचे भण्डारघर को देखा जहाँ जुआड़ी अक्सर इकट्ठा हुआ करते थे।

खेल पूरे जोर पर था। इस वक्त जालीवानोव नाल इकट्ठा कर रहा था। आवेश से उसका चेहरा लाल हो रहा था।

तभी सीढ़ी पर पैरों की आहट सुनाई दी। घूम कर पावेल ने प्रोखोश्का को नीचे उतरते हुए देखा और सीढ़ी के नीचे छुप गया ताकि वह आदमी बावर्ची-खाने में चला जाय। सीढ़ी के नीचे अँधेरा था और प्रोखोश्का उसको देख न सका।

प्रोखोश्का ने जैसे ही सीढ़ी के मोड़ को पार किया, पावेल ने उसकी चौड़ी पीठ और बड़े से सिर की एक झलक पाई। ठीक तभी कोई और हलके पैरों से भागता हुआ उस बैरे के पीछे-पीछे आया और पावेल ने एक परिचित आवाज को बोलते सुना।

"रुको प्रोखोश्का!"

प्रोखोश्का रुक गया और पीछे घूम कर सीढ़ी के ऊपर की ओर उसने देखा और गुर्रा कर बोला, "क्यों क्या चाहिये?"

कदमों की आहट पास आ गई और फ्रोसिया दिखाई दी।

उसने बैरे की बांह पकड़ ली और टूटती सी रुंधती हुई आवाज में बोली:

"प्रोखोश्का; लेफ्टिनेण्ट साहब ने तुमको जो पैसा दिया है वह कहाँ है?"

आदमी ने झटक कर लड़की से अपनी बांह छुड़ा ली।

"कैसा पैसा? मैंने तुम्हें दे दिया था न?" उसकी आवाज तेज और दुष्टता से भरी हुई थी।

"मगर उसने तो तुम्हें तीन सौ रूबल दिये थे?" फ्रोसिया की आवाज रुंधी हुई सिसकियों में तबदील हो गई।

"कहीं दिया न हो! तीन सौ, हुँः!" प्रोखोश्का ने व्यंग्य के स्वर में कहा। "सबका सब लेना चाहती हो, क्यों! जरा देखिये तो साहबजादी को, धोती तो हैं आप रकाबियाँ और दिमाग आसमान पर है! पचास जो मैंने तुमको दिए, बहुत हैं। तुमसे कहीं ज़्यादा खूबसूरत और पढ़ी-लिखी लड़कियाँ भी इतना नहीं लेतीं। जो कुछ तुम्हें मिला, उसके लिए तुमको मेरा एहसान मानना चाहिए—एक रात के लिए पचास रूबल बहुत होते हैं। मगर खैर, तुम कहती हो तो तुम्हें दस और दे दूँगा, बीस भी दे सकता हूँ, मगर और नहीं। और, तुम अगर बेवकूफ न होगी तो कुछ और भी कमा लोगी। मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।" यह

कह कर प्रोखोश्का घूमा और बावर्चीखाने में पहुँचकर आंख से ओझल हो गया।

"बदमाश! सुअर!" फ्रोसिया ने चीखते हुए कहा और लकड़ी के ढेर से टिक कर जोर-जोर से सिसकियाँ लेने लगी।

पावेल के उस वक्त के मनोभावों को शब्द नहीं बयान कर सकते जब सीढ़ी के नीचे अंधेरे में खड़े-खड़े उसने फ्रोसिया को पागलों की तरह लकड़ी के कुन्दों पर सर पटकते देखा। मगर वह सामने नहीं आया; सिर्फ़ उसकी उँगलियाँ रह-रह कर ज़ीने के लोहे के खम्भों को पकड़ लेती थीं।

"अच्छा तो उन्होंने इसको भी बेच डाला, खुदा ग़ारत करे! हाय फ्रोसिया, फ्रोसिया···"

प्रोखोश्का के लिए उसकी नफ़रत उसके दिल को पहले से कहीं ज़्यादा सुलगाने लगी और अपने चारों तरफ़ वह जो कुछ भी देखता था, उसीसे उसको नफ़रत और घिन मालूम होती थी। "अगर मुझ में ताकत होती तो मैं उस हरामज़ादे को पीट-पीट कर उसका हलुआ बना देता! मैं आर्तेम की तरह लम्बा चौड़ा और मज़बूत क्यों नहीं हूँ।"

गरमे के नीचे लपटें उठीं और बुझ गईं, उनकी कांपती हुई लाल जीभ एक लम्बी नीली रेखा के संग लिपटी हुई थी। पावेल को ऐसा लगा कि जैसे कोई नन्हा सा शरारती भूत उसे जीभ दिखला-दिखला कर उसका मज़ाक बना रहा हो।

कमरे में ख़ामोशी थी। सिर्फ़ आग के चटकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी और बम्बे से पानी रुक रुक कर टपक रहा था।

क्लिम्का ने आखिरी बर्तन, जो इतना मांजा गया था कि चमक रहा था, आलमारी पर रखा और अपने हाथ पोंछे। बावर्चीखाने में और कोई नहीं था। ड्यूटी पर का रसोइया और उसका मददगार गुसलखाने में सो रहे थे। रात के तीन घण्टों के लिए बावर्चीखाने पर ख़ामोशी छा गई। यह घण्टे क्लिम्का, पावेल के संग ऊपर गुज़ारा करता था क्योंकि उस बावर्चीखाने के छोकरे और इस काली आंख वाले पावेल में, जो गरमे की देख-रेख करता था, गहरी दोस्ती हो गई थी। ऊपर क्लिम्का ने पावेल को खुले हुए आतिशदान के आगे पालथी मारे बैठा पाया। पावेल ने एक परिचित, झबरे बालों वाली आकृति की छाया दीवाल पर पड़ते देखी और बिना उस ओर मुड़े बोला:

"बैठ जाओ, क्लिम्का।"

लड़का लकड़ी के ढेर पर चढ़ गया, और इतमीनान के साथ लेट कर, ख़ामोश पावेल को देखने लगा।

"आग में अपना भाग्य पढ़ रहे हो, क्यों ?" उसने मुस्कराते हुए पूछा।

पावेल ने ज़ोर लगा कर अपनी दृष्टि लपटों की उन ललिहान जिह्वाओं से फेरीं और क्लिम्का को अपनी उन दो बड़ी-बड़ी चमकती हुई आँखों से देखा जो एक अव्यक्त व्यथा से भरी हुई थीं। क्लिम्का ने कभी अपने दोस्त को इतना उदास नहीं देखा था।

थोड़ी देर की खामोशी के बाद क्लिम्का ने पूछा, "आज तुम्हें क्या हुआ है पावेल ? कोई ख़ास बात हो गई है क्या ?"

पावेल उठा और जाकर क्लिम्का के पास बैठ गया।

उसने धीरे से जवाब दिया, "नहीं, कुछ हुआ नहीं है। बस यह है क्लिम्का कि मेरा यहाँ रहना कठिन है।" और घुटनों पर टिके हुए उसके हाथों की मुट्ठियाँ बंध गईं।

"क्या हो गया है तुम्हें आज ?" क्लिम्का ने कुहनियों का सहारा लेकर उठते हुए जानने के लिए आग्रह किया।

"आज ? आज की बात नहीं है। जिस दिन से मैं इस काम पर आया उसी दिन से मुझे ऐसा लग रहा है। ज़रा देखो कैसी जगह है यह ! हम खच्चरों की तरह काम करते हैं और हमें मिलता क्या है ? शुक्रिया नहीं, लात-घूँसे ! कोई भी तुम्हें मार सकता है, फिर कोई नहीं मिलेगा जो तुम्हारी तरफ़दारी करे। मालिक लोग हमको रखते हैं नौकरी करने के लिए, मगर कोई भी आदमी जिसके बदन में ताक़त हो, बड़े अधिकार के साथ हमको पीट सकता है। भले तुम दौड़ दौड़ कर अपनी जान ही क्यों न दे दो, तुम कभी सबको खुश नहीं कर सकते और जिसको खुश न कर सको, वही तुम्हारी ख़बर लेने के लिये तैयार रहता है। तुम चाहे कितनी कोशिश इस बात की क्यों न करो कि हर काम ठीक से हो ताकि कोई ग़लती न निकाल सके। मगर फिर भी, कोई न कोई ऐसा आदमी निकल ही आता है जिसका काम उसकी मनचाही मुस्तैदी से नहीं हो सका और बस फिर तो तुम्हारी मरन रखी ही है, कुछ भी करो, ऐसे भी वैसे भी....।"

"इस तरह चिल्लाओ मत, कोई यहाँ चला आयेगा और सुन लेगा !" क्लिम्का ने डरते हुए उसको टोका।

पावेल उछल कर खड़ा हो गया।

"सुनने दो, मैं तो काम छोड़ने जा ही रहा हूँ। यहाँ इस चाँइयों, बद-माशों के अड्डे पर काम करने से अच्छा बेलचा भर-भर कर बरफ़ फेंकने का काम होगा। देखो तो इनके पास कितना पैसा है। हमको तो वे धूल समझते हैं और लड़कियों के संग जो मन आए करते हैं। भली लड़कियाँ, जो उनके इशारों पर

नहीं नाचतीं, ठोकर मार कर बाहर कर दी जाती हैं और उनकी जगह भूख से मरती हुई शरणार्थी औरतें लगा ली जाती हैं जिन्हें दुनिया में और कहीं जगह नहीं है। और फिर वे सब जरूर यहाँ टिक जाती हैं क्योंकि यहाँ उन्हें कम से कम दोनों वक्त खाने को तो मिल जाता है और इतनी बदहाल होती हैं वे कि एक टुकड़ा रोटी के लिये कुछ भी कर सकती हैं।"

वह इतने आवेश में बोल रहा था कि क्लिम्का को डर लगा कि कहीं कोई सुन न ले। बावर्चीखाने में खुलने वाले दरवाजे को बन्द करने के लिए वह जल्दी से उठ खड़ा हुआ। पावेल बदस्तूर अपनी आत्मा में भरे हुए तीखेपन को उंडेलता रहा।

"और तुम क्लिम्का, पिटते हो और कभी कुछ नहीं बोलते। यह ठीक नहीं है!"

पावेल मेज के सहारे एक स्टूल पर बैठ गया और थकान के मारे उसने अपना सिर हथेली पर टिका लिया। क्लिम्का ने आग में कुछ लकड़ी डाल दी और वहीं आकर बैठ गया।

उसने पावेल से पूछा, "आज हम लोग पढ़ेंगे नहीं क्या?"

"कुछ नहीं है पढ़ने को," पावेल ने जवाब दिया, "बुकस्टाल बन्द है।"

क्लिम्का ने आश्चर्य से पूछा, "क्यों? आज क्यों बन्द है?"

पावेल ने जवाब दिया, "पुलिस वालों ने बुकसेलर को गिरफ़्तार कर लिया। उसके यहाँ उनको कुछ मिला है।"

"गिरफ़्तार कर लिया? काहे के लिये?"

"कहते हैं कोई सियासी बात है।"

पावेल की बात का मतलब समझने में असमर्थ क्लिम्का उसे आँख फाड़े देखता रहा।

"सियासी बात? वह क्या होती है?"

पावेल ने कन्धे उचका दिए :

"पता नहीं क्या। जार के खिलाफ़ जाओ, तो वही सियासी बात कहलाती है, ऐसा लोग कहते हैं।"

क्लिम्का अचम्भे से देखता रहा :

"लोग क्या ऐसा करते हैं?"

पावेल ने जवाब दिया, "मैं क्या जानूँ।"

दरवाजा खुला और ग्लाशा कमरे में दाखिल हुई। उसकी आँखें नींद के कारण सूजी हुई थीं।

"तुम दोनों सो क्यों नहीं रहे हो ? अगली गाड़ी आने के पहले घण्टे भर की नींद निकाल लेने का वक़्त है। तुम ज़रा आराम कर लो पावेल और मैं तुम्हारी तरफ़ से अंगीठी को देख लूँगी।"

जितनी जल्दी सोचा था उससे भी पहले ही पावेल ने काम छोड़ दिया। और इस तरह छोड़ा जिसकी उसने कल्पना भी न की थी।

जनवरी के महीने में एक दिन जब खूब पाला गिर रहा था और पावेल अपना काम खतम करके घर जाने की तैयारी कर रहा था तो उसने देखा कि उसकी जगह लेने वाला लड़का नहीं आया है। पावेल मालिक की स्त्री के पास गया और उसने उसको बतलाया कि जो भी हो वह तो घर जायगा ही। मालिक की स्त्री यह सुनने को भी तैयार नहीं थी। लिहाज़ा पावेल को मजबूरन काम पर लगे रहना पड़ा, गोकि पूरे एक दिन और एक रात की मेहनत के बाद वह थक कर चूर हो गया था। शाम होते-होते उसकी यह हालत हो गई थी कि लगता था कि थकान के मारे वहीं ढेर हो जायगा। रात में फ़ुर्सत के वक़्त उसे गरमे को भरना पड़ा और तीन बजे वाली गाड़ी के लिए समय से पानी खौला कर तैयार रखना पड़ा।

पावेल ने बम्बा खोला मगर उसमें पानी नहीं था। ज़ाहिर था कि पम्प काम नहीं कर रहा है। बम्बे को खुला छोड़ कर वह लकड़ी के ढेर पर लेट गया; मगर थकान ने उस पर काबू पा लिया और थोड़ी ही देर में वह गहरी नींद में डूब गया।

कुछ ही मिनट बाद बम्बे में गुर्र-गुर्र सूँ-सूँ की आवाज़ होने लगी और गरमे में पानी भरने लगा। थोड़ी ही देर में गरमा लबालब हो गया और फिर पानी बह कर कोठरी के फ़र्श पर फैलने लगा। हस्ब मामूल कोठरी इस वक़्त वीरान थी। पानी बहता रहा, बहता रहा—यहाँ तक कि फ़र्श डूब गया और पानी दरवाज़े के नीचे से बह कर रेस्तोराँ में पहुँचने लगा।

ऊँघते हुए मुसाफ़िरों के बिस्तरों और बक्सों के नीचे छोटे-छोटे चहबच्चे तैयार हो गए, मगर किसी का ध्यान इस चीज़ की तरफ़ तब तक नहीं गया जब तक कि पानी फ़र्श पर सोये हुए एक आदमी के पास नहीं पहुँचा और वह घबरा कर चीख कर जल्दी से उठ नहीं खड़ा हुआ। तब तो फिर सामान को बचाने के लिए बड़ी रेल-पेल मची और ग़ज़ब का हो-हल्ला हुआ।

पानी बह कर लगातार अन्दर आता रहा।

प्रोखोश्का, जो दूसरे हॉल में मेज़ों की सफ़ाई कर रहा था, शोर सुन कर

अन्दर दौड़ा। पानी के ढेर पर से छलांग लगाते हुए वह दरवाज़े की ओर लपका और तेज़ी से धक्का देकर उसे खोला। दरवाज़े का खुलना था कि वह रुका हुआ पानी तेज़ी से हॉल में बह निकला।

तब तो फिर और शोर मचा। ड्यूटी पर के बैरे भाग कर गन्दे बर्तनों वाली कोठरी में पहुँचे। प्रोखोश्का सोते हुए पावेल पर टूट पड़ा।

लड़के के सिर पर लात-घूँसे बरसने लगे। वह हक्का-बक्का रह गया।

अभी भी वह आधी नींद में था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है। उसे सिर्फ आँख के आगे टूटती हुई बिजलियों की तेज़ चमक, और जिस्म भर में दौड़ते हुए दर्द की ऐंठन की चेतना थी।

पावेल को तो इस बुरी तरह मार पड़ी थी कि बड़ी मुश्किल से, लड़खड़ाते हुए, वह घर पहुँच पाया।

सवेरे, गुस्से में भरे आर्तेम ने छोटे भाई से पूछा कि क्या बात हुई।

पावेल ने उसे सब कुछ बतला दिया।

आर्तेम ने भारी फटी हुई आवाज़ में पूछा, "तुमको किसने मारा?"

"प्रोखोश्का ने।"

"अच्छा अब तुम चुपचाप पड़े रहो।"

बिना और एक शब्द बोले आर्तेम ने अपना कोट चढ़ाया और बाहर निकल गया।

"बैरा प्रोखोर कहाँ है?" उसने एक रकाबी धोने वाली से पूछा। ग्लाशा ने अपने सामने खड़े हुए मज़दूर की पोशाक पहने इस अजनबी को देखा।

उसने जवाब दिया, "अभी आता है।"

यह भारी-भरकम आदमी दरवाज़े के हैंडिल से टिक कर खड़ा हो गया।

"अच्छा, मैं यहीं इन्तज़ार करता हूँ," उसने कहा।

एक ट्रे में रकाबियों का एक पहाड़ लादे प्रोखोर पैर से दरवाज़े को धक्का देता हुआ कोठरी में दाख़िल हुआ।

ग्लाशा ने बैरे की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "यही प्रोखोर है।"

आर्तेम आगे बढ़ा और प्रोखोर के कन्धे पर ज़ोर से हाथ मारते हुए उसकी आँखों में आँखें डाल कर देखा।

"तुमने मेरे भाई पावका को क्यों मारा?"

प्रोखोर ने अपने कन्धों को उसकी गिरफ्त से छुड़ाने की कोशिश की लेकिन एक घूंसा जो कस कर पड़ा तो वहीं फर्श पर लम्बा हो गया। उसने उठने की कोशिश की। मगर पहले से भी ज्यादा भयानक दूसरा घूंसा पड़ा तो लेटा का लेटा ही रह गया।

डर के मारे रकाबी धोने वाली औरतें इधर-उधर जा खड़ी हो गईं।

आर्तेम घूमा और दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा।

प्रोखोश्का फ़र्श पर पड़ा रहा, उसके घायल चेहरे से खून बह रहा था।

उस शाम, आर्तेम रेलवे यार्ड से घर नहीं लौटा।

उसकी माँ को पता चला कि पुलिस ने उसको पकड़ रखा है।

छः दिन बाद बहुत रात गए आर्तेम घर लौटा जब उसकी माँ सो गई थी। वह पावेल के पास गया जो अपने बिस्तर पर बैठा हुआ था और बड़ी नरमी से उसने पूछा :

"अब कैसी तबियत है भैये?" आर्तेम पावेल के पास बैठ गया। "मामला और भी बिगड़ सकता था।" फिर एक मिनट की खामोशी के बाद उसने कहा : "कोई बात नहीं, तुम बिजली घर में काम करने जाना। मैंने उनसे तुम्हारे बारे में बात की है। वहाँ तुम सचमुच ढंग का काम सीख सकोगे।"

पावेल ने आर्तेम के मज़बूत हाथ को अपने दोनों हाथों में थाम लिया।

दूसरा अध्याय

इस छोटे से कस्बे में एक तूफ़ान की तरह यह जबरदस्त खबर फैल गई कि "ज़ार का तख्ता उलट दिया गया!"

कस्बे वालों ने इस खबर को मानने से इनकार किया।

उन्होंने इस ख़बर को तब माना जब एक गाड़ी तूफ़ान में धीरे-धीरे रेंगती हुई सी स्टेशन में दाखिल हुई और उसमें से फ़ौजी बरानकोट पहने और कन्धों पर राइफिलें लटकाए दो विद्यार्थी और लाल-लाल फीते बाँहों में बांधे हुए क्रान्तिकारी सैनिकों का एक दस्ता प्लेटफार्म पर उतरा और उसने स्टेशन के फ़ौजी सिपाहियों, एक बूढ़े कर्नल और गैरिसन के प्रधान को गिरफ़्तार कर लिया। बर्फ़ से ढंकी सड़कों पर चलते हुए हजारों आदमी कस्बे के चौक में आ पहुँचे।

आज़ादी, बराबरी और भाईचारा — ये लफ्ज़, जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुने थे, अब सुने और उन्हें प्यासों की तरह पी गए।

उसके बाद तूफ़ानी दिन आए, हलचल और खुशी से भरे हुए दिन। फिर एक ठहराव सा आ गया, और उस टाउन हॉल पर लहराता हुआ लाल झण्डा ही होने वाले परिवर्तन की अकेली निशानी रह गया। उसी टाउन हॉल में मेन्शेविकों

और बुन्द के मानने वालों ने अपनी क़िलेबन्दी की थी। उस पर फहराते हुए लाल झण्डे के अलावा और सब कुछ ज्यों का त्यों रहा।

जाड़े के अन्त में एक घुड़सवार रेजिमेण्ट उस कस्बे में ठहराई गई। सवेरे ये घुड़सवार, दस्ते बना कर दक्खिनी-पच्छिमी मोर्चे से भागने वाले सैनिकों की तलाश में रेलवे स्टेशन पहुँचते थे।

ये सैनिक बहुत मोटे-ताजे थे और उनके चेहरों से ज़ाहिर था कि उन्हें खाने-पीने का आराम है। उनके ज़्यादातर अफ़सर बड़े-बड़े काउण्ट और राजकुमार थे; उनके कन्धों पर सुनहली पट्टियाँ थीं और बिरजिसों पर पतली-रुपहली गोट लगी हुई थी, ठीक वैसी ही जैसी कि ज़ार के जमाने में—गोया क्रान्ति नाम की कोई चीज़ हुई ही न हो।

पावेल, क्लिम्का और सर्गेई ब्रुज़ाक के लिए कुछ भी नहीं बदला था। मालिक लोग अब भी बदस्तूर क़ायम थे। नवम्बर के महीने में पहुँच कर ही कुछ असाधारण बातें शुरू हुईं। स्टेशनों पर एक नई तरह के लोग नज़र आने लगे जिन्होंने व्यवस्था में कुछ हलचल पैदा करनी शुरू की। इनमें से ज़्यादातर लोग मोर्चे पर से लौटे हुए सैनिक थे और उन्हीं की संख्या बराबर बढ़ती जा रही थी। उनका नाम कुछ अजीब सा था—"बोल्शेविक।"

किसी को नहीं मालूम था कि यह तगड़ा और वज़नदार लफ़्ज़ कहाँ से आया।

मोर्चे से भागे हुए सैनिकों को रोक कर रखना इन सैनिकों के लिए उत्तरोत्तर मुश्किल होता जा रहा था। स्टेशन पर राइफिलें दगने और शीशे टूटने की आवाज़ें बराबर बढ़ती जा रही थीं। ये लोग दल बांध कर मोर्चे से आते थे और जब उन्हें रोका जाता तो संगीनों से लड़ते थे। दिसम्बर के शुरू में गाड़ी भर-भर कर ये लोग आने लगे।

सन्तरी लोग अपनी पूरी ताक़त से स्टेशन पर आए, इस इरादे से कि उन सैनिकों को रोक रखेंगे। मगर उन्होंने अपने को मशीनगनों की बौछार का सामना करते पाया। रेल के डिब्बों से निकलने वाले इन सैनिकों के लिए मौत मानो एक खिलवाड़ थी।

मोर्चे पर से लौटे, भूरे रंग के कोट पहने इन लोगों ने सन्तरियों को वापिस क़स्बे के अन्दर ढकेल दिया और फिर स्टेशन पर लौट आए और गाड़ियाँ भर-भर कर अपनी अगली मंज़िल के लिए रवाना हो गए।

१९१८ के वसन्त में एक रोज़ तीन दोस्त सर्गेई ब्रुज़ाक के घर से लौटते हुए, जहाँ पर वे ताश खेल रहे थे, कोर्चागिन के बाग़ीचे में आए और घास पर लेट गए। वे लोग ज़िन्दगी से ऊबे हुए थे। अब तक जो काम वे करते आ रहे थे, उनसे उनको उकताहट मालूम हो रही थी और वे अपने दिन ज़्यादा उमंग और उत्साह से बिताने का तरीक़ा खोजने के लिए परेशान होने लगे थे और तभी उन्होंने अपने पीछे घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी और एक घुड़सवार को तेज़ी से अपनी तरफ़ आते हुए देखा। एक छलांग में घोड़े ने सड़क और बाग़ीचे की नीची सी बाड़ी के बीच का गढ़ा पार कर दिया और घुड़सवार ने अपनी चाबुक से पावेल और क्लिम को इशारा किया।

"ओ छोकरो, ज़रा यहाँ आओ!"

पावेल और क्लिम उचक कर खड़े हो गए और दौड़ कर बाड़ी के पास गए। घुड़सवार धूल से भरा हुआ था; धूल की एक मोटी सी परत उसकी टोपी पर जमी हुई थी जिसे वह माथे से दूर पीछे की ओर सरका कर पहने हुए था। उसके ख़ाकी ब्लाउज़ और बिरजिस पर भी धूल की परत जमी हुई थी। उसके भारी फ़ौजी कमरबन्द से एक रिवाल्वर और दो जर्मन दस्ती बम लटक रहे थे।

घुड़सवार ने उनसे पूछा, "क्यों लड़को, तुम मुझे पानी पिला सकते हो?"

पावेल पानी लेने के लिए घर की तरफ़ भागा तो घुड़सवार अपनी ओर घूरते हुए सर्गेई की तरफ़ मुड़ा। "बतलाओ तुम्हारा क़स्बा किसके क़ब्ज़े में है?"

सर्गेई ने आगन्तुक को एक सांस में सारी मुक़ामी ख़बरें सुना डालीं।

"दो हफ़्तों से यहां पर किसी का क़ब्ज़ा नहीं है। आजकल तो होम-गार्डों की ही सरकार है। यहाँ के सारे रहने वाले रात को शहर की गश्त करते हैं। मगर तुम कौन हो?" सर्गेई ने पूछा।

घुड़सवार मुस्कराया और बोला, "देखो अभी से बहुत ज़्यादा जानने की कोशिश मत करो - सब बात अभी से जान जाओगे तो जल्दी बूढ़े हो जाओगे।"

पावेल एक मग्गे में पानी लिये घर से भागता हुआ आया।

घुड़सवार ने एक घूँट में मग्गे को खाली कर दिया और उसे वापस पावेल को पकड़ा दिया। इसके बाद लगाम को झटका देते हुए वह तेज़ी से चीड़ के जंगलों की तरफ़ निकल गया।

पावेल ने क्लिम से पूछा, "वह कौन था?"

क्लिम ने कन्धे उचकाते हुए जवाब दिया, "मुझे क्या मालूम।"

"लगता है कि फिर सरकार में रद्दोबदल होगी। इसीलिए लेशचिन्स्की लोग कल ही यहाँ से चले गए। और अमीर लोग भाग रहे हैं, तो इसका मतलब

कि छापेमार आ रहे हैं।" सर्गेई ने ऐलान किया, और दृढ़ता के साथ इस राजनीतिक सवाल को यूँ हल कर दिया जैसे अब उसमें और कुछ कहने-सुनने को बाक़ी न रह गया हो।

इस बात का तर्क इतना प्रबल था कि पावेल और क्लिम को झट विश्वास हो गया और उन्होंने फ़ौरन सर्गेई की बात मान ली।

अभी इन लड़कों की बहस ख़तम भी नहीं हुई थी कि बड़ी सड़क से आती हुई घोड़ों के टापों की आवाज़ सुन कर वे तीनों फिर दौड़ कर बाड़ी के पास आ गए।

उधर जंगल के हाकिम के बंगले के पास, जो पेड़ों की झुरमुट में इस तरह छिपा हुआ था कि मुश्किल से ही दिखाई देता था, उन्होंने जंगल में से आदमियों और गाड़ियों को निकलते देखा और निकटतर, बड़ी सड़क पर, उन्होंने लगभग पन्द्रह घुड़सवारों के एक दल को देखा जिनके घोड़ों की काठी से राइफ़िलें लटक रही थीं। घुड़सवारों के आगे-आगे एक अधेड़ आदमी अपने घोड़े पर सवार चला आ रहा था। वह खाकी फ़ौजी कोट पहने और अफ़सरों का कमरबन्द लगाए हुए था। दूरबीन उसके गले से लटक रही थी। उस आदमी के ठीक पीछे था वह जिससे अभी-अभी लड़कों की बात हुई थी। उस अधेड़ आदमी के सीने पर एक लाल फ़ीता टंका हुआ था।

सर्गेई ने पावेल की पसली में उंगली गड़ाते हुए कहा, "मैंने क्या कहा था तुमसे? उस लाल फ़ीते को देखते हो? ये लोग छापेमार हैं, चाहे शर्त बद लो ....।" और खुशी से नाचते हुए वह कूद कर बाड़ी के पार सड़क पर जा खड़ा हुआ।

दूसरों ने भी ऐसा ही किया और तीनों सड़क के किनारे खड़े हो गए और ग़ौर से अपने क़रीब आते घुड़सवारों को देखते रहे।

जब ये घुड़सवार काफ़ी पास आ गए तब उस आदमी ने जिससे उनकी मुलाक़ात पहले हो चुकी थी, उनको इशारा किया और लेशचिन्स्की के मकान को अपनी चाबुक से दिखलाते हुए पूछा,

"उसमें कौन रहता है?"

पावेल घुडसवार के संग-संग चलने लगा।

"लेशचिन्स्की वकील। वह कल भाग गया। ज़रूर आप लोगों का डर लगा होगा उसे....।"

"तुम्हें क्या मालूम कि हम लोग कौन हैं?" अधेड़ आदमी ने मुस्कराते हुए पूछा।

पावेल ने फीते की ओर इशारा करते हुए कहा, "क्यों, वह क्या है ? कोई भी बतला सकता है....।"

शहर में दाखिल होती हुई फ़ौजी टुकड़ी को देखने के लिए कुतूहल के मारे लोगों की भीड़ सड़क पर जमा हो गई। हमारे ये तीन नौजवान दोस्त भी इन गर्द से ढंके हुए, थक कर चूर लाल सैनिकों को वहाँ से गुजरते हुए देखते रहे। और जब उस टुकड़ी की अकेली तोप और मशीनगनों की गाड़ियाँ सड़क के पत्थर पर आवाज करती हुई आगे बढ़ीं तो लड़कों की क़तारें भी छापेमारों के पीछे हो लीं और लोग तब तक अपने घर नहीं गए जब तक कि यह टुकड़ी शहर के बीचोबीच रुक नहीं गई और सिपाहियों को लोगों के घरों पर ठहराने का काम शुरू नहीं हो गया।

उस शाम को लेशचिन्स्की के मकान में, उसके लम्बे-चौड़े बैठकखाने में उस नक्काशीदार पायों वाली लम्बी-चौड़ी मेज़ के इर्द-गिर्द चार लोग बैठे हुए थे : टुकड़ी के कमाण्डर कामरेड बुल्गाकोव, जो एक अधेड़ आदमी थे और जिनके बाल पकने शुरू हो गए थे और उनके तीन सहायक।

बुल्गाकोव ने उस सूबे का नक़्शा मेज़ पर फैला रखा था और उनकी उंगलियाँ उस पर चल रही थीं।

"कामरेड एरमाचेंको, तो तुम्हारा कहना यह है कि हम लोग इस जगह पर पैर जमाएँ," उन्होंने अपने सामने बैठे हुए उस आदमी को सम्बोधित करते हुए कहा जिसके गाल की हड्डियाँ बहुत चौड़ी और दाँत बहुत मजबूत थे। "मगर मेरा तो ख़याल है कि सवेरे ही हमको यहाँ से चल देना चाहिए। रात ही को चल दें तो और अच्छा हो। मगर वह शायद मुमकिन न हो, हमारे जवानों को आराम की ज़रूरत है। हमारा काम है जर्मनों के यहाँ पहुँचने के पहले खुद पीछे हट कर कज़ातिन पहुँच जाना। अपनी मौजूदा ताक़त से उनका मुक़ाबला करना बेवकूफ़ी की बात होगी। एक तोप और तीस गोले, दो सौ पैदल सिपाही और साठ घुड़सवार ! क्या कहने हैं, बड़ी दुर्दान्त सेना है न, जब कि जर्मन लोग फौलाद का एक पहाड़ लेकर आगे बढ़ रहे हैं। जब तक हम लोग पीछे हटती हुई दूसरी लाल टुकड़ियों के संग मिल नहीं जाते तब तक हम लोग मोर्चा नहीं ले सकते। इसके अलावा कॉमरेड, हमको यह भी याद रखना चाहिए कि जर्मनों के अलावा दूसरे क्रान्ति-विरोधी दस्ते भी होंगे जिनका मुक़ाबिला हमें करना होगा। मेरा प्रस्ताव है कि हम लोग कल सवेरे स्टेशन के उस पार वाले रेलवे पुल को उड़ाने के बाद पीछे हट जायँ। उसकी मरम्मत करने में जर्मनों को दो-तीन दिन लग जायेंगे और इस बीच रेलवे लाइन से उनका आगे बढ़ना रुक जायगा। क्यों,

तुम्हारा क्या ख़याल है साथियो ? हम लोगों को ही निश्चय करना है....।" इतना कह कर वह मेज़ के चारों ओर बैठे हुए दूसरे लोगों की ओर मुड़े।

स्तुज़कोव, जो बुल्गाकोव के ठीक सामने बैठा हुआ था, अपने ओठों को चूस रहा था। उसने पहले नक़शे को और फिर बुल्गाकोव को देखा और अन्त में अपनी राय दी :

"मैं बुल्गाकोव से सहमत हूँ।"

उनमें जो सबसे कम उम्र का आदमी था और जो मज़दूरों के कपड़े पहने हुए था, उसने भी अपनी सहमति प्रकट की। बोला :

"बुल्गाकोव ठीक कहते हैं।"

लेकिन एरमाचेंको ने सिर हिलाया। एरमाचेंको वही आदमी था जिसने लड़कों से पहले बात की थी।

"अगर यही था तो हम लोगों ने फिर टुकड़ी बनाई ही क्यों ? बिना लड़े जर्मनों को पीठ दिखाने के लिए ? मैं समझता हूँ कि हम लोगों को इसी जगह पर जर्मनों से मोर्चा लेना चाहिए। भागते-भागते मैं तो थक गया। अगर मुझे तय करना हो तो मैं ज़रूर इसी जगह पर उनसे मोर्चा लूं....।" उसने तेज़ी से अपनी कुर्सी पीछे को सरकाई, उठा और कमरे में टहलने लगा।

बुल्गाकोव ने असहमति प्रकट करते हुए उसकी ओर देखा।

"एरमाचेंको ! हमको अपनी अक़्ल से काम लेना चाहिए। हम अपने आदमियों को किसी ऐसी लड़ाई में नहीं झोंक सकते जिसका अन्त हार और तबाही में होगा। यह बहुत बेवक़ूफ़ी की बात होगी। हमारे ठीक पीछे बड़ी-बड़ी तोपें और बख्तरबन्द गाड़ियों की एक पूरी डिवीज़न है....कामरेड एरमाचेंको, यह लड़कपन का वक़्त नहीं है कि हम झूट-मूट बहादुरी दिखलाएं....," दूसरों की ओर मुड़ते हुए उसने बात जारी रखी : "अच्छा तो यह तय हो गया; कल सवेरे हम लोग यहां से जा रहे हैं....और अब आइए अगले सवाल को तय करें। दूसरी फ़ौजी टुकड़ियों के साथ अपना सम्बन्ध क़ायम करने का सवाल है।.... चूंकि हम लोग इस जगह को छोड़ने वाले आख़िरी लोग हैं, इसलिए यहां जर्मन पांतों के पीछे काम के संगठन की ज़िम्मेदारी हमारी है। यह बहुत बड़ा रेलवे जंकशन है और शहर में दो स्टेशन हैं। रेलवे में काम को जारी रखने के लिए हमें एक बहुत भरोसे का कॉमरेड चाहिए। हमको यहीं पर फ़ैसला करना होगा कि काम को शुरू करने के लिए हम किस को पीछे छोड़ जायें। क्या तुम्हारे ज़ेहन में कोई आदमी है ?"

एरमाचेंको ने मेज़ के पास आते हुए कहा : "मेरा ख़याल है कि मल्लाह

फ़ियोदोर जुखराई को यहां पर रहना चाहिए। पहली बात तो यह कि वह यहीं के आदमी हैं! दूसरी बात यह कि वह फ़िटर और मेकैनिक हैं और उनको स्टेशन पर काम मिल सकता है। और किसी ने फ़ियोदोर को हमारी टुकड़ी के संग देखा भी नहीं है। आज रात को वह यहां पर आयेंगे। वह काफ़ी समझदार आदमी हैं और काम को अच्छी तरह चला सकेंगे। मैं समझता हूँ कि इस काम के लिए वही सबसे माकूल आदमी हैं।"

बुल्गाकोव ने हामी भरते हुए सिर हिलाया :

"ठीक है, मैं तुम से सहमत हूँ एरमाचेंको। साथियो, किसी को कोई आपत्ति तो नहीं है?" उन्होंने दूसरों की ओर मुड़ते हुए पूछा। "कोई नहीं। तो यह मामला भी तय। हम लोग जुखराई के लिए कुछ पैसा छोड़ जायेंगे और कुछ परिचय-पत्र जिनकी उसको जरूरत पड़ेगी"...। अच्छा, अब तीसरा और आखिरी सवाल साथियो। इस शहर में जो हथियार जमा हैं उनका क्या हो? यहां पर हथियारों का अच्छा खासा स्टाक है, बीस हजार राइफिलें, जो जार के खिलाफ़ लड़ाई के वक्त यहां पर छूट गई थीं और जिनके बारे में सब लोग भूल चुके हैं। वे सब एक किसान के शेड में जमा हैं। शेड के मालिक ने यह ख़त मुझे लिखा है। वह जल्दी ही उनसे अपना पीछा छुड़ाना चाहता है। हम लोग खामखा जर्मनों के लिए उनको नहीं छोड़ जायेंगे। मेरी राय में उनको आग लगा देनी चाहिए, और फ़ौरन, ताकि सवेरे तक यह काम खतम हो जाय। डर सिर्फ़ इस बात का है कि आग कहीं आस-पास के मकानों तक न फैल जाय। ग़रीब किसान शहर के एक छोर पर रहते हैं।"

स्त्रुजकोव अपनी कुर्सी में हिला। वह बहुत मजबूत, पुख्ता आदमी था और उसके चेहरे पर जंगल ही तरह दाढ़ी उगी हुई थी, क्योंकि एक अर्से से उसने उस्तरे की शकल नहीं देखी थी।

"मगर राइफिलों को आग क्यों लगाई जाय? मेरी राय में तो उन्हें लोगो में बांट देना चाहिए।"

बुल्गाकोव तेजी से उसकी ओर मुड़ा :

"क्या कहा तुमने, बांट देना चाहिए?"

एरमाचेंको ने बड़े उत्साह के साथ उस बात की तसदीक करते हुए कहा, "सचमुच बहुत अच्छा खयाल है। हमें उनको मजदूरों को दे देना चाहिए और और भी जो लोग लेना चाहें उन सब को। जब जर्मन उनकी जिन्दगी दूभर कर देंगे उस वक्त उनके पास पलट कर हमला करने के लिए कुछ होगा तो। लाजिम बात है कि वे लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा सतायेंगे। और, जब यह चीज लोगों की

बर्दाश्त से बाहर हो जायगी तो प्रतिकार के लिए उनके पास ये हथियार होंगे। स्त्रुजकोव ठीक कहता है; राइफिलें ज़रूर बांट देनी चाहिए। उनमें से कुछ को गांव में ले जाना भी बुरा नहीं होगा। किसान उन्हें छिपा कर रख सकेंगे और जब जर्मन सभी कुछ हथियाने लगेंगे, उस वक्त राइफिलें बहुत कारगर साबित होंगी।"

बुल्गाकोव मन ही मन मुस्कराया।

"बात तो तुम लोग ठीक कहते हो। मगर भूलो मत कि जर्मन ज़रूर यह हुक्म निकालेंगे कि सारे हथियार जमा कर दिए जायें और फिर सभी उनकी आज्ञा का पालन करेंगे।"

एरमाचेंको ने आपत्ति की : "सब ऐसा नहीं करेंगे। कुछ लोग करेंगे, और बहुत से लोग नहीं करेंगे।"

बुल्गाकोव ने मेज़ के इर्द-गिर्द बैठे लोगों को प्रश्न करती हुई आँखों से देखा।

"मैं राइफिलों को बांट देने के पक्ष में हूँ," जवान मज़दूर ने भी एरमाचेंको और स्त्रुजकोव की बात का समर्थन किया।

बुल्गाकोव मान गया। "अच्छा तो यह बात भी तय हो गई," अपनी कुर्सी से उठते हुए उसने कहा, "इस वक्त तो इतने ही सवाल थे। अब हम लोग सवेरे तक आराम कर सकते हैं। जुखराई आए तो उसे मेरे पास भेजना, मैं उससे बात करना चाहता हूँ। एरमाचेंको, तुम जाकर ज़रा सन्तरियों की चौकियाँ देख लो।"

जब सब चले गए तो बुल्गाकोव बैटकखाने के बग़ल में अपने सोने के कमरे में गया, गद्दे पर उसने अपना बरानकोट फैलाया और लेट रहा।

दूसरे रोज़ सुबह पावेल बिजली घर से अपने घर लौट रहा था। वह पिछले एक साल से वहाँ फायरमैन के मददगार के रूप में काम कर रहा था।

उसे फौरन पता चल गया कि आज शहर में असाधारण खलबली है। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया उसे और-और लोग मिलते गए जो एक, दो और कोई-कोई तो तीन-तीन राइफिलें लिए चले जा रहे थे। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा है। वह तेज़ी से अपने घर की ओर लपका। लेशचिन्स्की के बाग़ीचे के सामने उसे कल के अपने परिचित लोग मिले। ये लोग अपने घोड़ों पर सवार हो रहे थे।

पावेल भाग कर घर के अन्दर गया, जल्दी-जल्दी मुँह-हाथ धोया और माँ

से यह मालूम करके कि आर्तेम अब तक घर नहीं लौटा है, फिर तेज़ी से बाहर निकला और जल्दी-जल्दी सर्गेई ब्रुज़ाक के घर की ओर चल दिया जो कि शहर के दूसरे छोर पर था।

सर्गेई का पिता इंजन ड्राइवर का सहायक था और उसका अपना एक छोटा सा मकान और थोड़ी सी जमीन थी।

सर्गेई घर में नहीं था और उसकी माँ ने जो एक मोटी सी पीले चेहरे की स्त्री थी, पावेल को अरुचि की निगाहों से देखा।

"पता नहीं वह कहाँ है! सवेरे-सवेरे जो पहली चीज़ उसने की वह यही थी कि ऐसे भाग निकला जैसे भूत सवार हो। कहता था, कहीं पर राइफिलें बँट रही हैं। मेरा ख़याल है वहीं गया होगा। तुम सब जो चपटी-चपटी नाक वाले योद्धा हो न, उनको ज़रूरत इस बात की है कि उनकी जरा अच्छी तरह कुन्दी की जाय—बिलकुल कहे में नहीं रहे अब तुम लोग। अभी दूध के दाँत भी तो तुम्हारे टूटे नहीं और चले हैं राइफ़िलों के पीछे। तुम उस आवारे को बतला देना कि अगर घर में एक भी कारतूस लाया तो उसकी खाल उधेड़ लूँगी। कौन जाने वह क्या उठा लाए और फिर मुझको तो उसकी जवाबदेही करनी पड़ेगी। तू भी तो कहीं उसी जगह नहीं जा रहा, क्यों?"

अभी सर्गेई ब्रुज़ाक की बातूनी माँ अपनी बात ख़तम भी न कर पाई थी कि पावेल उधर सड़क पर दौड़ता चला जा रहा था।

बड़ी सड़क पर उसे एक आदमी मिला जो दोनों कन्धों पर एक-एक राइफिल लिये हुए था। पावेल भाग कर उस आदमी के पास पहुँचा।

"काका! काका! ज़रा मुझे भी बता दो तो कि ये कहाँ मिली हैं?"

"वहाँ वेर्खोवीना में लोग बाँट रहे हैं।"

पावेल जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ चला। दो सड़कें पार करने पर वह एक दूसरे लड़के से टकरा गया जो एक भारी सी संगीन लगी राइफिल घसीटता आ रहा था। पावेल ने उसको रोका।

"तुम्हें यह बन्दूक कहाँ से मिली?"

"वहाँ स्कूल के सामने फ़ौजवाले बाँट रहे हैं। मगर अब तो एक भी नहीं बची। सब ख़तम। रात भर बाँटते रहे और अब तो सिर्फ खाली बक्से रह गए हैं। यह मेरी दूसरी है।" लड़के ने गर्व के साथ बतलाया।

इस ख़बर से पावेल को बहुत गहरी निराशा हुई।

सोचते-सोचते उसका मन तीखेपन से भर उठा: "छिः, मैं भी कितना बेवकूफ हूँ। मुझे सीधे वहीं जाना चाहिए था। मैं कैसे ग़फ़लत कर गया?"

एकाएक उसके मन में एक विचार आया। घूम कर उसने दो-तीन छलांगों में उस लड़के को जा पकड़ा और उसके हाथ से राइफिल छीन ली।

"तुम्हारे लिए एक काफ़ी है। यह मेरी है।" उसने अधिकार के स्वर में कहा।

दिन दहाड़े इस डकैती से गुस्सा होकर वह लड़का पावेल पर टूट पड़ा। मगर पावेल कूद कर पीछे हट गया और अपने दुश्मन पर संगीन साधी और चिल्लाया :

"जरा सम्भल कर रहना नहीं तो चोट खा जाओगे।"

वह लड़का खीझ के मारे रोने लगा और बेबस गुस्से में बकता-झकता भाग गया। अपने से बेहद खुश पावेल ठाठ से घर आया, छलांग लगा कर बाड़ी को पार करते हुए भाग कर शेड में गया, ऊपर चढ़ कर अपनी यह दौलत छत की बल्लियों पर टिका कर रख दी और खुशी से सीटी बजाता हुआ घर के अन्दर दाखिल हुआ।

उक्रेन की गर्मी की शामें बड़ी प्यारी होती हैं। शेपेतोवका जैसे छोटे शहरों में, जो कि सच पूछिए तो मुफ़स्सिल के गाँवों जैसे होते हैं, गर्मी की ये स्तब्ध रातें तमाम नौजवानों को जैसे अपने जादू से घर के बाहर आने पर मजबूर कर देती हैं। आप उनको टोलियों में और जोड़ों में देख सकते हैं—मकानों के सायबानों में, घर के सामने की छोटी सी बगिया में, या सड़क के किनारे पड़ी हुई इमारती लकड़ी के ढेरों पर आराम के साथ बैठे हुए। उनकी खुशी से उबलती हुई हँसी और गाने शाम की निस्तब्धता में गूँजते रहते हैं।

हवा फूलों की खुशबू से भारी है और काँप रही है। आसमान की गहराइयों में नन्हें-नन्हें तारे चमक रहे हैं और आवाजें हवा के पंखों पर दूर-दूर जा रही हैं····

पावेल को अपने अकार्डियन[1] से बहुत प्यार था। वह उस सुरीले बाजे को बहुत प्यार से अपने घुटने पर लिटा लेता और उसके परदों की दोनों पंक्तियों पर बड़ी कोमलता से अपनी उंगलियों को ऊपर-नीचे दौड़ाने लगता। और कभी एक भारी आह और कभी उमंग और खुशी के संगीत का इन्द्रधनुषी झरना···

जब धौंकनी चल रही हो और अकार्डियन में से नर्म-नर्म संगीत, पागल कर देने वाले सुर निकल रहे हों, तब भला कोई चुप कैसे बैठ सकता है। इसके

१. एक तरह का बाजा।—अनु०

पहले कि आप जानें कि क्या हो रहा है आपके पैर उस संगीत का आदेश मान कर नाचने लग जाते हैं। आह, जिन्दगी भी कितनी अच्छी चीज है, कितनी प्यारी, कितनी सुन्दर !

आज की शाम खास तौर से खुशी में डूबी हुई है। पावेल के मकान के सामने लकड़ी के मोटे-मोटे कुन्दों का जो ढेर है, उस पर नौजवानों और नवयुवतियों की एक मस्त भीड़ इकट्ठी है। और उनमें भी सबसे ज्यादा मस्ती में है गालोचका, पावेल के बगल के मकान वाले राजमिस्त्री की लड़की। गालोचका को लड़कों के संग नाचना-गाना बहुत ही अच्छा लगता है। उसकी अच्छी बुलन्द आवाज बहुत गहरी और मखमली और मीठी है।

पावेल को उससे थोड़ा डर लगता है। वजह यह है कि गालोचका ज़बान की तेज़ है। वह पावेल के बग़ल में बैठ जाती है और हँसते हुए अपनी बाँह उसके गले में डाल देती है।

कहती है : "कितने सजते हो तुम इस अकार्डियन के साथ ! सचमुच बड़े दुख की बात है कि तुम अभी जरा छोटे हो, वर्ना तुम से अच्छा आदमी मेरे लिए दूसरा न होता। मैं अकार्डियन बजाने वाले आदमियों पर जान देती हूँ। उनके सामने मेरा यह नन्हा दिल जैसे पिघल जाता है।"

पावेल लाज के मारे लाल पड़ जाता है—ग़नीमत है कि बहुत अंधेरा है और कोई देख नहीं सकता। वह उस चंचल छोकरी से दूर खिसक जाता है, मगर वह उसका पीछा छोड़ने वाली नहीं।

वह हँसते हुए कहती है : "प्यारे, अब क्या तुम मुझे छोड़ के भाग जाना चाहते हो, कैसे बेदर्दी हो ! तुम तो लड़कियों को भी मात करते हो !"

उसकी अच्छी कसी हुई छातियाँ पावेल के कन्धे से छू जाती हैं और वह एक अजीब ढंग से अनायास अपने को आन्दोलित होता महसूस करता है, और टोली के दूसरे लोगों की जोरदार हँसी खामोशी को तोड़ती है, जो कि उस गली की हमेशा की साथिन है।

पावेल ने उसके कन्धे को हलका सा धक्का देते हुए कहा : "जरा सरक कर बैठो न, मुझे बजाने में दिक्कत होती है।"

इस पर हँसी का एक और कहकहा फूट पड़ता है, मजाकों के नये तीर छूटने लगते हैं।

मरुसिया पावेल की रक्षा करती है : "कोई दर्दीली चीज बजाओ पावेल, जो दिल के तारों को खींच कर झनझना दे।"

अकार्डियन की धौंकनी धीरे-धीरे फैलती है। पावेल की उंगलियाँ बड़ी

नरमी और बड़े प्यार से परदों को सहलाती हैं और एक बहुत जानी-पहचानी और सबकी प्यारी धुन हवा में भर उठती है। सबसे पहले गालीना गाना शुरू करती है, फिर मरुसिया और फिर बाक़ी सब :

एक जगह पर जमा हुए मल्लाह सभी मस्ताने
कितने अच्छे, कितने मीठे लगते दुख के गाने····

गाने वालों की गूँजती हुई जवान आवाज़ें हवा की लहरों पर दूर जंगलों तक पहुँच रही थीं।

"पावका"—यह आर्तेम की आवाज़ थी।

पावेल ने अपने अकार्डियन की धौंकनी दबा कर उसकी हवा निकाली और फीता लगा दिया।

"घर पर लोग मुझे बुला रहे हैं। मुझे जाना होगा।"

मरुसिया ने रुकने के लिए उससे आग्रह करते हुए कहा : "उंह्, जाना, मगर थोड़ी देर तो और बजाओ। ऐसी जल्दी तुम्हें किस बात की है?"

मगर पावेल जाने का निश्चय कर चुका था।

"नहीं; अब और नहीं रुक सकता। कल फिर और गाना-बजाना करेंगे, मगर अब तो मुझे जाना ही होगा। आर्तेम बुला रहा है।" यह कहते हुए वह दौड़ कर सड़क के उस पार अपने छोटे से मकान में घुस गया।

उसने दरवाज़ा खोला और कमरे में आर्तेम के अलावा और भी दो आदमियों को पाया जिनमें से एक आर्तेम का दोस्त रोमान था और दूसरे को पावेल नहीं जानता था। वे सब मेज़ के सामने बैठे थे।

पावेल ने पूछा : "तुमने मुझे बुलाया?"

आर्तेम ने सिर हिला कर हामी भरी और उस नये आदमी की तरफ मुड़ते हुए कहा :

"यही मेरा भाई है, जिसके बारे में अभी हम लोग बात कर रहे थे।"

उस नये आदमी ने अपना गठीला हाथ पावेल की तरफ़ बढ़ाया।

आर्तेम ने भाई से कहा : "सुनो पावका, तुमने मुझे बतलाया था कि बिजली घर का एलेक्ट्रीशियन बीमार है। अब मैं चाहता हूँ कि तुम कल पता लगाओ कि उन्हें उस आदमी की जगह क्या किसी दूसरे आदमी की ज़रूरत है। अगर हो तो तुम आकर मुझे बतलाना।"

उस नये आदमी ने आर्तेम को टोकते हुए कहा :

"नहीं, उसकी कोई ज़रूरत नहीं। ज़्यादा अच्छा होगा कि मैं ही खुद

इसके संग चला जाऊँ और बड़े साहब से खुद बात कर लूँ।"

"यह भी कोई पूछने की बात है। जरूरत तो उन्हें होगी ही। आज बिजली घर सिर्फ़ इसलिए बन्द रहा कि स्टेंकोविच बीमार है। बड़े साहब दो बार आए—उन्हें बड़ी तलाश थी ऐसे आदमी की जो उसकी जगह ले सके। मगर कोई मिला नहीं। सिर्फ़ एक फ़ायरमैन के भरोसे बिजली घर चालू करने में उन्हें डर मालूम हुआ। एलेक्ट्रीशियन को टाइफस[1] हुआ है।"

उस नये आदमी ने पावेल से कहा, "अच्छा तो बात तय हो गई। मैं कल तुम्हारे पास आऊँगा और फिर हम लोग साथ चलेंगे।"

"अच्छा।"

पावेल की आँखें उस नये आदमी की शान्त भूरी आँखों से मिलीं। वह ग़ौर से पावेल को देख रहा था। उसकी दृढ़ अपलक दृष्टि से पावेल को उलझन सी महसूस हुई। आगन्तुक भूरे रंग का एक कोट पहने था जिसके बटन ऊपर से नीचे तक बन्द थे—जाहिर था, कोट उसके लिए जरूरत से ज़्यादा चुस्त था क्योंकि उसकी मजबूत चौड़ी पीठ पर की सीवनें बहुत तनी हुई और उधड़ने के क़रीब थीं। उसके सिर और कन्धों को जोड़नेवाली चीज थी उसकी बैल की जैसी, मोटी, कसी हुई गर्दन। उसके पूरे शरीर को देख कर किसी पुराने शाहबलूत के दरख्त की मजबूती का खयाल आता था।

आर्तेम ने दरवाजे तक उनको पहुँचाते हुए कहा, "अच्छा जुखराई, सलाम, खुदा तुम्हें कामयाब करे। कल तुम मेरे भाई के साथ जाना और वहां उस नौकरी को ठीक कर लेना।"

इस टुकड़ी के जाने के तीन दिन बाद जर्मन शहर में दाखिल हुए। उनके आने की घोषणा काफ़ी दिनों से उजाड़ स्टेशन के एक इंजन की सीटी ने की।

क़स्बे भर में खबर फैल गई कि जर्मन आ रहे हैं।

क़स्बे में छेड़े गये दीमक के मिटे जैसी खलबली थी, क्योंकि गो शहर वाले कुछ दिनों से जानते थे कि जर्मन आने वाले हैं, तब भी उन्हें जैसे इस बात का यक़ीन न आता था। और अब वे ही भयानक जर्मन रास्ते में नहीं, यहीं, इसी क़स्बे में थे।

क़स्बे वाले अपने बागीचों की बाड़ियों और छोटे-छोटे लकड़ी के फाटकों की हिफ़ाजत में लगे हुए थे। उन्हें बाहर सड़क पर निकलने में डर लगता था।

---

१. एक तरह का बुखार।—अनु०

बड़ी सड़क के दोनों तरफ़ एक-एक की क़तार में मार्च करते हुए जर्मन आए। वे हलके जैतूनी रंग की वर्दी पहने हुए थे और अपनी राइफिलें साधे चल रहे थे। उनकी राइफिलों में चौड़े छुरे जैसी संगीनें लगी हुई थीं। वे भारी-भारी लोहे के टोप लगाए थे और उनकी पीठ पर बड़े-बड़े फ़ौजी थैले लटके थे। एक अनन्त प्रवाह के रूप में वे स्टेशन से क़स्बे में आए। वे सतर्क होकर चल रहे थे और किसी भी हमले का जवाब देने के लिए बिलकुल मुस्तैद थे, गोकि उनपर हमला करने की बात किसी की कल्पना में भी न थी।

आगे-आगे माउज़र [1] हाथ में लिए दो अफ़सर चल रहे थे। सड़क के बीचोबीच दुभाषिया चल रहा था। यह दुभाषिया हेटमैन के नीचे काम करने वाला एक सार्जेण्ट-मेजर था जो नीले रंग का उकेनी कोट पहने था और ऊँची-सी फ़र की टोपी लगाए था।

शहर के बीचोबीच चौक में जर्मन क़तार बांध कर खड़े हो गए। नगाड़े बज रहे थे। क़स्बे के कुछ अधिक साहसी लोगों की एक छोटी-सी भीड़ इकट्ठा हो गई थी। उकेनी कोट पहने हुए वह हेटमैन का आदमी दवाइयों की दूकान के सायबान पर चढ़ गया और वहाँ से उसने कमाण्डैण्ट मैजर कार्फ़ का जारी किया हुआ हुक्मनामा ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना शुरू किया :

(१) मैं हुक्म जारी करता हूँ कि

शहर के सारे लोग चौबीस घण्टे के अन्दर-अन्दर सारी बन्दूकें और दूसरे खतरनाक हथियार जो उनके पास हों जमा कर दें। जो इस हुक्म को नहीं मानेगा उसे गोली मार दी जायगी।

(२) शहर में मार्शल-लॉ जारी किया जाता है और लोगों को मनाही की जाती है कि आठ बजे रात के बाद सड़कों पर न निकलें।

मेजर कार्फ़, शहर कमाण्डैण्ट।

पहले जिस इमारत में म्युनिसिपैलिटी और क्रान्ति के बाद सोवियत शासन का केन्द्र था, उसी में जर्मन कमाण्डैण्ट ने अपना क्वार्टर क़ायम किया। इमारत के फाटक पर एक सन्तरी तैनात था जो सिर पर लोहे का टोप लगाए था। इस टोप पर जर्मनी का राज-चिह्न, एक बड़ा-सा गिद्ध बना हुआ था। उसी इमारत के पीछे वह मालगोदाम था जहाँ शहर वालों को अपने हथियार जमा करने थे।

गोली मारे जाने के डर के मारे सारे दिन शहर वालों ने अपने हथियार

१. एक तरह का पिस्तौल।—अनु०

ला-लाकर जमा किये। अधेड़ उम्र वाले लोग तो आये नहीं; हथियार लाकर वापिस किये नौजवानों और बच्चों ने। जर्मनों ने किसी को पकड़ा नहीं।

जो लोग खुद नहीं आना चाहते थे वे रात को अपने हथियार सड़क पर फेंक गए। सवेरे जर्मन सिपाहियों ने उन्हें बटोर लिया, अपनी फ़ौजी गाड़ी में लादा और कमाण्डैण्ट के दफ्तर ले गए।

एक बजे दोपहर, जब हथियार जमा करने की मियाद ख़त्म होती थी, जर्मन सिपाहियों ने बन्दूकों की गिनती शुरू की। चौदह हज़ार राइफिलें। इसका मतलब हुआ कि छः हज़ार नहीं जमा की गईं। उनके लिए उन्होंने बड़ी ज़बर्दस्त तलाशियाँ लीं। मगर कुछ खास माल बरामद नहीं हुआ।

दूसरे रोज़ सवेरे दो रेलवे मज़दूरों को, जिनके घर में छिपाई हुई राइफिलें पाई गईं, शहर के बाहर पुराने यहूदी कब्रिस्तान के पास गोली मार दी गई।

कमाण्डैण्ट के हुक्म के बारे में सुनते ही आर्तेम बड़ी तेज़ी से घर की ओर चला। बाहर हाते में ही पावेल मिल गया। उसका कन्धा पकड़ते हुए उसने धीरे से, मगर मज़बूत आवाज़ में, पावेल से पूछा :

"तुम भी कोई हथियार घर लाए थे ?"

पावेल का इरादा राइफिल के बारे में किसी को कुछ बतलाने का नहीं था। मगर अपने भाई से ही कैसे झूठ बोलता। उसने साफ़-साफ़ सब बात बतला दी।

दोनों साथ-साथ शेड में गए। आर्तेम ने बल्ली पर से, जहाँ वह छिपा कर रखी गई थी, राइफिल को उतारा, उसके बोल्ट और संगीन को अलग किया और बन्दूक की नली पकड़ कर अपनी पूरी ताक़त से एक खम्भे पर उसको दे मारा। बन्दूक का कुन्दा चूर-चूर हो गया। और फिर उस राइफिल का अवशेष बागीचे के उस पार, दूर, घूरे में फेंक दिया गया। संगीन और बोल्ट को आर्तेम ने सण्डास में डाल दिया।

इस काम को खतम करके आर्तेम अपने भाई की तरफ़ मुड़ा।

"अब तुम बच्चे नहीं रहे पावका, और तुम्हें समझना चाहिए कि बन्दूकों के संग खिलवाड़ नहीं किया जा सकता। तुम्हें घर के अन्दर ऐसी कोई चीज़ नहीं लानी चाहिए। यह बहुत ही खतरनाक बात है। आज-कल ऐसी चीज़ के लिए तुम्हें अपनी जान तक की क़ीमत अदा करनी पड़ सकती है। और देखो, कोई चालबाज़ी करने की भी कोशिश न करना, क्योंकि अगर ऐसी कोई चीज़ घर लाए

और उनको पता चल गया तो सबसे पहले मुझको गोली मारी जायगी। तुम्हारे जैसे छोकरों से वे हाथ नहीं लगायेंगे। अच्छी तरह समझ लो। यह बहुत ही बुरा ज़माना है, बहुत ही बुरा।"

पावेल ने वादा किया।

हाता पार करके जब दोनों भाई घर के अन्दर जा रहे थे तब एक गाड़ी लेशचिन्स्की के फाटक पर रुकी और उसमें से वह वकील और उसकी बीबी और दो बच्चे, नेली और विक्टर, बाहर निकले।

आर्तेम उनको देख कर गुस्से में बड़बड़ाया, "अच्छा तो यह नाज़ुक चिड़ियाँ अपने घोंसले पर वापिस आ गईं। अब असल तमाशा शुरू होगा। खुदा ग़ारत करे इन हरामज़ादों को!" कहते हुए वह अन्दर चला गया।

सारे दिन पावेल उस राइफिल के बारे में सोच-सोचकर दुखी होता रहा। इसी बीच उसका दोस्त सर्गेई, एक पुरानी बीरान शेड में, दीवाल के पास, ज़मीन में गड्ढा खोदने में जी-जान से लगा हुआ था। आखिर गड्ढा तैयार हो गया। उसके अन्दर सर्गेई ने तीन चमचमाती हुई नई राइफिलों को अच्छी तरह चीथड़ों में लपेट कर रख दिया। उसको भी ये राइफ़िलें उसी वक़्त मिली थीं जब लाल सेना ने जनता को राइफिलें बाँटी थीं। उसका इरादा उनको जर्मनों के हवाले करने का क़तई नहीं था। रात भर उसने उनको हिफ़ाज़त के साथ छिपाने के लिए कड़ी मेहनत की थी।

उसने गड्ढे को पाट दिया, पैर से दाब-दाबकर मिट्टी को बराबर कर दिया और फिर उसके ऊपर बहुत से कूड़े-कचरे का ढेर लगा दिया। अपनी मेहनत के नतीजे को बहुत बारीकी से एक आलोचक की तरह उसने देखा। उसे सन्तोष हुआ। उसने टोपी उतारी और माथे का पसीना पोंछा।

"अब ढूँढ़ने दो उनको, देखें कैसे पाते हैं। मान लो पा भी जायें तो यह नहीं जान सकते कि किसने इनको यहाँ रखा। यह शेड तो लावारिस है।"

पावेल और उस गम्भीर चेहरे वाले एलेक्ट्रीशियन में अनजान में ही धीरे-धीरे दोस्ती पैदा हो गई। बिजली के स्टेशन पर उस आदमी को काम करते अब एक महीना हो गया था।

जुखराई ने आग वाले के सहायक, पावेल को दिखलाया कि डइनमो कैसे बनता है और कैसे चलता है।

उस मल्लाह को इस तेज लड़के से प्यार हो गया। वह अक्सर खाली

दिनों में आर्तेम के घर आता और बहुत धीरज के साथ माँ के घरेलू झंझटों और परेशानियों की कहानी सुनता—ख़ास करके तब, जब वह अपने छोटे लड़के की कारगुज़ारियों का ज़िक्र करती। जुख़राई चिन्तनशील और गम्भीर आदमी था और मारिया याकोवलेवना को उससे बात करके बहुत शान्ति और सान्त्वना मिलती। जुख़राई की संगत में वह अपनी परेशानियों को भूल जाती और बहुत खुश रहती।

एक दिन जब पावेल बिजली स्टेशन के हाते में जलाऊ लकड़ी के ऊँचे-ऊँचे ढेरों के बीच से गुजर रहा था जुख़राई ने उसको रोका।

मुस्कराते हुए जुख़राई ने कहा, "तुम्हारी माँ ने मुझे बतलाया है कि तुम्हें मार-पीट बहुत पसन्द है। वह कहती हैं, 'इस मामले में तो वह लड़ने वाले मुर्ग़े से भी गया-गुज़रा है।'" यह कह कर जुख़राई सहमति-सूचक ढंग से जैसे मन-ही-मन मुस्कराया और बोला, "सच बात यह है कि लड़ना बुरी बात नहीं है, जब तक तुम्हें इस बात का पता हो कि किससे लड़ना है और क्यों लड़ना है।"

पावेल ठीक नहीं समझ सका कि जुख़राई मज़ाक में यह बात कह रहा है या संजीदा तौर पर।

"मैं झूठ-मूठ नहीं लड़ता," उसने जवाब दिया, "मैं हमेशा ठीक बात के लिए और इन्साफ़ के लिए लड़ता हूँ।"

"क्या तुम चाहोगे कि मैं तुम्हें ठीक से लड़ना सिखलाऊँ?" जुख़राई ने अप्रत्याशित ढंग से पूछा।

पावेल ने उसको कुछ आश्चर्य से देखते हुए पूछा, "ठीक से लड़ने का क्या मतलब?"

"तुम्हें आप मालूम हो जायगा।"

और तब उसने पावेल को घूँसेबाज़ी पर एक संक्षिप्त आरम्भिक लेक्चर दिया।

इस कला में पावेल को दक्षता आसानी से नहीं मिली। कई बार जुख़राई के घूँसे से उसके पैर उखड़ गए और उसने अपने को ज़मीन पर लोटते पाया। मगर जो भी हो, पावेल बहुत मेहनती और धीरज वाला शिष्य सिद्ध हुआ।

एक दिन, जब मौसम गर्म और खुशगवार था और वह क्लिम्का के घर से लौट कर आया था और अपने कमरे में इधर-उधर लुढ़कता फिर रहा था क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे, तब पावेल ने निश्चय किया कि अपनी प्रिय जगह पर चढ़ेगा। घर के पिछवाड़े बाग़ीचे के कोने में खड़े हुए शेड की छत उसकी प्रिय जगह थी। पीछे का सहन पार करके वह बाग में आया। वह झोंपड़ी के पास पहुँचा और छत पर चढ़ गया। छप्पर के ऊपर लटकती

हुई चेरी वृक्षों की घनी शाखों के बीच से अपना रास्ता बनाता हुआ वह छत के बीचोबीच पहुँच गया और धूप खाने के लिए वहीं लेट गया।

छप्पर का एक हिस्सा लेशचिन्स्की के बागीचे में बढ़ा हुआ था और छत के सिरे से वह सारा बागीचा और मकान का एक हिस्सा दिखाई देता था। वहाँ, उस किनारे से, अपना सिर बढ़ा कर पावेल ने हाते का एक हिस्सा देखा; एक गाड़ी वहाँ खड़ी हुई थी। लैशचिन्स्की के मकान में टिके जर्मन लेफ्टिनेण्ट का अर्दली अपने मालिक के कपड़ों पर ब्रश कर रहा था।

पावेल ने अक्सर लेफ्टिनेण्ट को फाटक पर खड़े देखा था। वह चौड़ा-चकला, लाल मुँह का आदमी था। उसके चेहरे पर छोटी-छोटी कतरी हुई मूँछें थीं। वह नाक पर ठहरने वाला फैशनेबुल चश्मा लगाता था और एक ऐसी टोपी पहनता था जिसकी चोटी पर लाख का चमकदार काम था। पावेल को यह भी मालूम था कि वह उस बगल वाले कमरे में रहता है जिसकी खिड़की बाग में खुलती है और जो छप्पर की छत से दिखाई देता है।

लेफ्टिनेण्ट साहब इस वक्त मेज पर बैठे कुछ लिख रहे थे। फिर, उन्होंने जो कुछ लिखा था उसे उठाया और कमरे के बाहर चले गए। लिखा हुआ कागज उन्होंने अपने अर्दली को पकड़ाया और फाटक को जाने वाले कच्चे रास्ते पर चल दिये। बागीचे के लता-मण्डप में वह किसी से बात करने के लिए रुके। पल भर बाद, नेली लेशचिन्स्की बाहर आई। लेफ्टिनेण्ट साहब ने उसकी बाँह पकड़ी और फिर दोनों फाटक के बाहर निकल गए।

पावेल अपनी जगह से यह सब कार्यवाही देख रहा था। इस वक्त उस पर आलस्य-सा छा रहा था और वह आँखें बन्द करने वाला ही था कि उसने अर्दली को लेफ्टिनेण्ट साहब के कमरे में घुसते देखा। अर्दली ने एक वर्दी खूँटी पर टाँगी, बाग में खुलने वाली खिड़की को खोला और कमरे की सफ़ाई की। इसके बाद कमरे को बन्द करता हुआ बाहर निकल गया। दूसरे ही पल पावेल ने उसको अस्तबल के पास खड़े पाया, जहाँ घोड़े बँधे थे।

खुली हुई खिड़की में से पावेल कमरे की हर चीज को अच्छी तरह देख सकता था। मेज पर एक फ़ौजी कमरबन्द और कोई चमकदार चीज़ पड़ी थी।

प्रबल कुतूहल के मारे, जिस पर उसका कोई बस न था, पावेल धीरे से वहीं छत पर से चेरी के पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ से फिसल कर लेशचिन्स्की के बाग में उतर गया। झुके-झुके दौड़ कर उसने बागीचे को पार किया और खिड़की से कमरे के अन्दर झाँका। उसके सामने मेज पर एक कमरबन्द शोल्डर-स्ट्रैप समेत

पड़ा हुआ था और रिवाल्वर रखने का चमड़े का केस, जिसमें एक लाजवाब, बारह गोलियों वाला मानलिकर रिवाल्वर रखा हुआ था।

पावेल की तो जैसे साँस रुक गई। कुछ सेकेण्ड उसके भीतर जबर्दस्त अन्तर्द्वन्द्व मचा रहा। मगर, आखीर में जीत साहसिकता की हुई और वह कमरे के अन्दर घुस गया। उसने रिवाल्वर का केस उठाया, उस में से नीले-नीले लोहे का वह हथियार निकाला और खिड़की से नीचे कूद गया। अपने चारों तरफ़ तेज़ी से निगाहें दौड़ाते हुए उसने बहुत सावधानी से पिस्तौल अपनी जेब में डाली और तेज़ी से भाग कर बागीचे को पार करता हुआ चेरी के पेड़ के पास जा पहुँचा। बन्दर की-सी फुर्ती से वह छत पर चढ़ गया। वहाँ क्षण भर रुक कर उसने पीछे को देखा। अर्दली अब भी आनन्दपूर्वक साईस से बात कर रहा था। बागीचा खामोश और वीरान था। पावेल फिसल कर दूसरी ओर उतरा और घर की तरफ़ भाग चला।

उसकी माँ चौके में रात का खाना पकाने में तल्लीन थी। उसने पावेल की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

पावेल ने एक बड़े ट्रंक के पीछे से झटपट एक चीथड़ा उठाया और उसे जेब में डालते हुए फिर से कमरे के बाहर निकल गया, इतने चुपके से कि उसकी माँ को भी उसकी आहट न मिली। वहाँ से उसने दौड़ कर सहन को पार किया, बाड़ी को छलांग लगाई और जंगल को जाने वाली सड़क पर आ निकला। भारी रिवाल्वर को हाथ से पकड़े हुए, ताकि जाँघ से न टकराए, वह पास के ही ईंट के भट्ठे के वीरान खण्डहर की तरफ़ अपनी पूरी ताक़त से भागा।

उसके पैर जैसे ज़मीन पर पड़ ही नहीं रहे थे और कानों में हवा सनसना रही थी।

पुराने भट्ठे के पास नीरव शान्ति थी। वह दृश्य मन को उदास करने वाला था। लकड़ी की छत जहाँ-तहाँ गिरी हुई थी, एक ईंट-गारे का पहाड़ खड़ा था और टूटी-फूटी भट्ठियाँ मुँह बाये थीं। उस जगह तमाम जंगली घास उगी हुई थी; वहाँ कोई कमी नहीं जाता था, सिवा पावेल और उसके दो दोस्तों के जो कभी-कभी वहाँ खेलने पहुँच जाते थे। पावेल को ऐसी बहुत सी जगहें मालूम थीं जहाँ वह अपने इस चोरी के खज़ाने को छिपा सकता था।

एक भट्ठी में दरार थी। उसमें से वह ऊपर चढा और आस-पास अपनी सतर्क आँखें दौड़ाईं। कोई दिखाई न दिया। केवल चीड़ के दरख्त हलकी-हलकी आहें भर रहे थे और धीमी-धीमी हवा सड़क पर धूल उड़ा रही थी। हवा चीड़ के गोंद की गन्ध से भारी थी।

पावेल ने चीथड़े में लिपटा हुआ रिवाल्वर भट्ठी के फ़र्श के कोने में रख दिया और उसे पुरानी ईंटों के एक छोटे से ढेर से ढँक दिया। बाहर आते समय उसने उस पुरानी भट्ठी के दरवाज़े को ईंटों से चुन दिया, उस जगह की ठीक स्थिति दिमाग़ में बिठा ली और धीरे-धीरे घर की ओर चल दिया। उस वक़्त उसे अपने घुटने काँपते मालूम हो रहे थे।

"इस सब का अन्त क्या होगा?"—उसने सोचा और उसका हृदय आशंकाओं से भारी हो गया।

वह घर नहीं जाना चाहता था इसलिए रोज़ से जल्दी ही बिजली घर के लिए चल दिया। उसने चौकीदार से चाभी ली और बिजली घर का विशाल दरवाज़ा खोला। और जब कि वह राख के गड्ढे की सफ़ाई कर रहा था, पम्प से ब्वायलर में पानी पहुँचा रहा था और आग सुलगा रहा था, उस तमाम वक़्त उसका ध्यान इसी बात पर अटका हुआ था कि इस वक़्त लेशचिन्स्की के यहाँ क्या हो रहा होगा।

उस वक़्त करीब ग्यारह बजा था जब जुख़राई आया और उसने पावेल को बाहर बुलाया।

"आज तुम्हारे यहाँ तलाशी क्यों हुई थी?" उसने धीमी आवाज़ में पूछा।

पावेल चौंक पड़ा।

"तलाशी?"

जुख़राई ने ज़रा देर की चुप्पी के बाद फिर कहा, "मुझे आसार अच्छे नहीं नज़र आते। तुम्हें तो कुछ नहीं मालूम कि किस चीज़ की तलाशी लेने वे लोग आए थे?"

पावेल को अच्छी तरह मालूम था कि उन्हें किस चीज़ की तलाश थी, मगर वह रिवाल्वर की चोरी के बारे में जुख़राई को कुछ नहीं बतलाना चाहता था। चिन्ता के मारे काँपते हुए उसने पूछा,

"उन्होंने आर्तेम को गिरफ़्तार कर लिया क्या?"

"नहीं, कोई नहीं पकड़ा गया। मगर, उन्होंने घर की हर चीज़ उलट-पुलट कर रख दी।"

इससे पावेल के मन को कुछ ढाढ़स हुआ, मगर उसकी चिन्ता मिटी नहीं। कुछ देर वह और जुख़राई दोनों अपने-अपने विचारों में डूबे खड़े रहे। उनमें से एक को मालूम था कि तलाशी क्यों हुई थी और वह परेशान था कि इसका जाने क्या नतीजा हो; दूसरे को यह बात नहीं मालूम थी और इसलिए वह चौकन्ना था।

जुखराई ने सोचा : "नास हो हरामज़ादों का ! लगता है उनको मेरा सुराग मिल गया। आर्तेम तो मेरे बारे में कुछ नहीं जानता, मगर फिर सबों ने उसके घर की तलाशी क्यों ली ? ज़रा और सावधानी बरतनी होगी।"

दोनों बिना एक शब्द बोले एक दूसरे से अलग हुए और अपने-अपने काम में जा लगे।

लेशचिन्स्की के मकान पर आफ़त बरपा थी।

लेफ्टिनेण्ट साहब ने रिवाल्वर को ग़ायब पाकर अपने अर्दली को बुलाया। अर्दली ने बतलाया कि ज़रूर उसे कोई चुरा ले गया। इस पर अफ़सर साहब के स्वाभाविक संयम ने उनका साथ छोड़ दिया और उन्होंने पूरी ताक़त से अर्दली के कान पर एक लप्पड़ रसीद किया। लप्पड़ खाकर अर्दली एक बार काँपा; मगर फिर अटेन्शन की मुद्रा में लकड़ी की तरह सीधा खड़ा हो गया और आँखें मुनमुलाते हुए, भीगी बिल्ली बना आगे आने वाले नतीजों का इन्तज़ार करने लगा।

वकील साहब को बुला कर उनसे जवाब तलब किया गया। उन्होंने चोरी के सम्बन्ध में अपने गुस्से का इज़हार किया और लेफ्टिनेण्ट साहब से माफ़ी माँगी क्योंकि यह चीज़ उनके घर में गुम हुई थी।

विक्टर लेशचिन्स्की ने अपने बाप को सुझाया कि बहुत मुमकिन है रिवाल्वर उनके पड़ोसियों ने चुराया हो और खास तौर पर उस बदमाश पावेल कोर्चागिन ने। बाप ने फ़ौरन अपने बेटे की यह सूझ लेफ्टिनेण्ट साहब तक पहुँचा दी और उन्होंने फ़ौरन तलाशी का हुक्म दे दिया।

तलाशी बेकार रही। रिवाल्वर की चोरी वाली घटना से पावेल को इस बात का विश्वास हो गया कि कभी-कभी ऐसी खतरनाक कोशिशें भी कामयाब हो जाती हैं।

तीसरा अध्याय

नताशा खुली हुई खिड़की के सामने खड़ी हो गई और अपने विचारों में डूबे-डूबे उसने अपने परिचित बागीचे को देखा जिसके किनारे-किनारे मज़बूत, दैत्यों जैसे ऊँचे पोपलर के दरख्त लगे हुए थे जो इस वक्त धीमी-धीमी हवा में हौले-हौले डोल रहे थे। उसको इस बात का यकीन नहीं आता था कि यह जगह छोड़े, जहाँ उसका बचपन बीता था, पूरा एक साल हो गया था।

उसको लगता था कि जैसे वह कल गई हो और आज ही सुबह की गाड़ी से लौट आई हो।

कुछ भी नहीं बदला था : रसभरी की झाड़ियों की क़तारें हमेशा की तरह आज भी बहुत सफाई से छँटी हुई थीं और बागीचे के रास्ते अब भी वैसे ही ज्यामिति के अनुसार बाक़ायदा ठीक-ठीक बने हुए थे और उनके किनारे-किनारे पैन्सी की क़तारें लगी हुई थीं जो कि उसकी माँ का बहुत प्यारा फूल था। बागीचे की हर चीज़ बहुत साफ-सुथरी और बाक़ायदा थी। हर चीज पर हर जगह वृक्ष-विज्ञान-वेत्ता के शास्त्रीय हाथ की छाप थी। इन साफ-सुथरे बाक़ायदा झाड़-लगे रास्तों को देख कर तोनिया को बड़ी ऊब मालूम होती थी।

उसने वह उपन्यास उठा लिया जिसे वह पढ़ रही थी, बरामदे में जाने वाला दरवाज़ा खोला और सीढ़ियाँ उतर कर नीचे बागीचे में पहुँच गई। लकड़ी के छोटे से रंगे हुए गेट को उसने धक्का देकर खोला और स्टेशन के पम्प हाउस से लगे हुए तालाब की ओर धीरे-धीरे चली।

पुल पार करके वह सड़क पर आ गई जिसके दोनों ओर पेड़ों की क़तारें थीं। उसके दाहिने हाथ पर था तालाब जिसके किनारे-किनारे विलो और ऐल्डर के दरख़्त लगे हुए थे और बायें हाथ पर जंगल शुरू हो जाता था।

वह पुरानी पत्थर की खान के पास वाली तलैयों की ओर जा रही थी जब मछली पकड़ने की बन्सी को पानी पर डूबते-उतराते देख कर वह रुक गई।

एक टेढ़े-मेढ़े विलो के तने के सहारे बाहर को झुकते हुए उसने सामने की शाखों को हाथ से अलग किया और अपने सामने एक धूप में तपे हुए रंग के नंगे-पैर लड़के को देखा जिसने अपने पतलून की टांगें घुटनों तक मोड़ रखी थीं। उसके पास ही एक जंग लगा टीन का डिब्बा रखा था जिसमें मछली का चारा था। यह लड़का अपने काम में इतना डूबा हुआ था कि इस लड़की की ओर उसका ध्यान नहीं गया।

"तुम समझते हो कि यहाँ मछली पकड़ सकते हो?"

पावेल ने पीछे मुड़ कर गुस्से में देखा।

विलो को पकड़े, पानी पर झुकी हुई थी एक लड़की जिसे पावेल ने पहले कभी नहीं देखा था। वह मल्लाहों जैसा एक सफेद ब्लाउज पहने हुए थी जिसका कालर धारीदार नीला था और एक हलका भूरे रंग का छोटा सा स्कर्ट पहने थी। छोटे-छोटे मोजे, जो सिरों पर रंगीन थे, उसकी खूबसूरत, धूप में तपे हुए रंग की टांगों पर चिपके हुए थे। उसके सुनहरे बाल मोटी वेणी में गुँथे हुए थे।

बन्सी को पकड़े हुए हाथ हलके से काँप गए। बन्सी भी काँप गई और शान्त पानी की सतह पर गोल-गोल घेरे फैल गए।

"देखो-देखो, मछली ने चारा चुगा!" पावेल के पीछे उस आवाज़ ने आवेश के साथ कहा।

अब वह अपने मन का सन्तुलन बिल्कुल खो बैठा और उसने इतने ज़ोर से बन्सी खींची कि चारा-लगा काँटा पानी में से उछल कर बाहर आ गया।

"जहन्नुम में जाय, कोई उम्मीद नहीं है मछली पाने की। यह लड़की यहाँ क्या करने आई है," पावेल ने खीझ के साथ सोचा और अपने फूहड़पन को ढँकने के लिए उसने बन्सी के काँटे को और भी दूर फेंका। मगर वह गिरा ठीक वहाँ जहाँ उसे न गिरना चाहिए था यानी सेवार की दो घनी झाड़ियों के बीच, जहाँ बन्सी का फंस जाना लाज़िमी था।

उसकी समझ में आ गया कि क्या बात हो गई है और बिना पीछे मुड़े हुए उसने वहाँ ऊपर बैठी हुई उस लड़की से गुस्से में दांत पीसते हुए कहा :

"तुमसे चुप नहीं बैठा जाता? इस तरह तो तुम सब मछलियों को भगा दोगी।"

ऊपर से उसकी व्यंगपूर्ण आवाज़ आई :

"तुम्हारी काली शकल देख कर तो मछलियाँ कब की भाग गई हैं! इस तीसरे पहर भला कभी कोई अच्छे घर का आदमी मछली पकड़ने निकलता है!"

पावेल अब तक तो पूरी नम्रता बरतने की कोशिश कर रहा था, मगर यह चीज़ उसकी बरदाश्त के बाहर थी। वह उठा और उसने अपनी टोपी आँख के ऊपर तक खींच ली, जैसा कि वह हमेशा उत्तेजित होने पर किया करता था।

"बहुत अच्छा हो देवी जी अगर आप यहाँ से अपना रास्ता नापें," वह दाँत दबाये-दबाये बोला। स्पष्ट ही उसने अपनी शब्दावली के सभ्यतम शब्दों का इस्तेमाल किया था।

तोनिया की आँखें ज़रा छोटी हो गईं और उनमें हँसी नाचने लगी।

"मैं क्या सचमुच तुम्हारे काम में बाधा पहुँचा रही हूँ?"

चिढ़ाने का स्वर अब मैत्री और समझौते के स्वर में बदल गया और पावेल जो इन "देवी जी" के संग, जो न जाने कहाँ से टपक पड़ी थीं, सचमुच रुखाई से पेश आने की सोच रहा था, अब अपने को निरस्त्र होता महसूस कर रहा था।

"तुम चाहो तो रहो और देखो। मेरे लिए सब बराबर है," उसने अनिच्छापूर्वक कहा और फिर अपनी बन्सी में दत्त चित हो गया। बन्सी सेवार

में फँस गई थी और इसमें शक नहीं कि उसका काँटा सेवार की जड़ों में उलझ गया था। पावेल को बन्सी खींचते डर लगता था। अगर कहीं और फँस गई तो छुड़ाना नामुमकिन हो जायगा। और फिर यह लड़की तो हँसेगी ही। उसकी इच्छा यही थी कि वह चली जाय।

मगर तोनिया तो पानी में हलके-हलके लहराते हुए बिलो के तने पर और भी आराम के साथ बैठ गई थी और अपनी किताब घुटनों पर रख कर वह इस धूप में तपे हुए रंग के, काली-काली आँख वाले उजड्ड-से किशोर को देख रही थी जिसने उसका ऐसा अजीब-सा रूखा स्वागत किया था और अब जान-बूझकर उसकी उपेक्षा कर रहा था।

पावेल तालाब के दरपन जैसे स्वच्छ पानी में लड़की की छाया साफ़-साफ़ देख रहा था और जब उसे लगा कि वह लड़की अपनी किताब में काफ़ी डूबी हुई है तो उसने बहुत सावधानी से उलझी हुई बन्सी को खींचा। बन्सी डूब गई और उसकी डोरी और भी तन गई।

"फँस गई, हरामज़ादी!" बिजली की तरह यह बात उसके मन में आ कौंधी और तभी उसने कनखियों से उस लड़की के हँसते हुए चेहरे को देखा जो पानी के अन्दर से उसकी ओर ताक रही थी।

उसी वक्त दो लड़के, जो स्कूल में सातवीं जमात में पढ़ते थे, पुल पार करके पम्प हाउस आ रहे थे। उनमें से एक था रेलवे यार्ड के बड़े साहब, इंजीनियर सुखार्को, का सत्रह साल का लड़का। उसके बाल सुनहरे थे और उसकी शक्ल आवारों जैसी थी। उसके चेहरे पर तमाम भूरे-भूरे दाग़ थे जिनके कारण उसके स्कूल के साथियों ने उसे "चेचकरू शुर्का" का नाम दे रखा था। वह एक बड़ी खूबसूरत-सी बन्सी लिये था और उसके मुँह के एक कोने में सिगरेट दबी हुई थी। उसके साथ में था विक्टर लेशचिन्स्की, जो एक लम्बा सा जनानी-सी शक्ल का लड़का था।

अपने साथी की तरफ़ झुकते हुए सुखार्को बहुत मानीखेज अन्दाज में उसे आँख मार रहा था, "यह लड़की तो सचमुच पटाखा है। इसका यहाँ पर जवाब नहीं। मैं तुमसे कहता हूँ कि इसके इश्कों की कोई इन्तहा नहीं। मेरी बात का यक़ीन करो। वह छठी जमात में पढ़ती है और कि एफ़ के स्कूल में जाती है। आजकल वह गर्मियाँ बिताने अपने बाप के पास आई है—उसका बाप जंगलात का बड़ा हाकिम है। मेरी बहन लिज़ा इस लड़की को जानती है। एक बार मैंने उसे बहुत भावुक-सा पत्र भी लिखा था। तुम तो जानते ही हो, वही सब बातें, 'मुझे तुमसे बेहद प्यार हो गया है और मैं धड़कते हुए दिल से तुम्हारे

जवाब का इन्तज़ार करूँगा।' इतना ही नहीं मैंने नेडसन की कुछ उपयुक्त कविताएँ भी ढूँढ़ निकालीं।"

"सो तो ठीक, मगर नतीजा क्या निकला?" विक्टर ने कूतूहल से पूछा।

सुखार्को ने भौंप-सी मिटाते हुए धीरे-धीरे बुदबुदाकर कहा, "अरे क्या पूछते हो, बहुत लगाती है अपने आप को! मुझसे कहने लगी, क्यों ख़ामख़ा चिट्ठी लिख कर कागज़ बरबाद करते हो, और भी इसी तरह की बातें। मगर वह तो होता ही है हमेशा शुरू-शुरू में। इस मामले में मैं पुराना घाघ हूँ। और सच बात तो यह है कि मुझे यह सब आशिकी-माशूकी वाली बकवास पसन्द नहीं है—सदियों तक आहें भर रहे हैं, पागलों की तरह घूम रहे हैं। इससे कहीं आसान यह है कि किसी शाम को उठो और मरम्मत करने वालों के बारकों तक चले जाओ। वहाँ तीन रूबल में तुम्हें ऐसी हसीना मिल जायगी कि देख कर मुँह में पानी भर आयेगा। और न झंझट, न खिटखिट। मैं वालका तिखोनोव के संग जाया करता था—तुम जानते हो वालका तिखोनोव को? रेलवे में फोरमैन है।"

नफ़रत से विक्टर का मुँह बिगड़ गया।

उसने कहा, "सच शुरा, तुम ऐसी गन्दी जगहों में भी जाते हो?"

शुरा सिगरेट चबाता रहा, फिर उसने थूका और मज़ाक उड़ाने के अन्दाज में जवाब दिया:

"देखो, इतने पाकसाफ़ न बनो। हमें भी मालूम है कि तुम कहाँ-कहाँ जाते हो!"

विक्टर ने उसकी बात काटते हुए कहा:

"तुम अपनी इस सुन्दरी से मेरा परिचय नहीं कराओगे?"

"वाह, यह भी कोई पूछने की बात है। चलो जल्दी चलें नहीं वह हमें बुत्ता देकर निकल जायगी। कल सवेरे वह अकेले ही मछली पकड़ने गई थी।"

दोनों दोस्त तोनिया के पास पहुँचे तो सुखार्को ने अपने मुँह से सिगरेट निकाल ली और बड़े बांके अन्दाज में झुक कर उसका अभिवादन किया।

"कहिए कुमारी तुमानोवा, कैसे मिजाज हैं? आप भी मछली पकड़ने आई हैं क्या?"

तोनिया ने जवाब दिया—"नहीं, मैं तो सिर्फ़ देख रही हूँ।"

सुखार्को ने विक्टर की बाँह पकड़ कर उसे आगे करते हुए जल्दी से कहा, "आप की इनसे मुलाक़ात है? मिलिए, ये हैं मेरे दोस्त विक्टर लेशचिन्स्की।"

विक्टर ने कुछ अचकचाते हुए तोनिया की तरफ़ हाथ बढ़ाया।

"क्यों आज आप क्यों नहीं मछली पकड़ रहीं हैं?" सुखार्को ने बात-चीत जारी रखने के ख़याल से कहा।

तोनिया ने जवाब दिया, "मैं अपनी बन्सी लाना भूल गई।"

"तो मैं अभी आप के लिए दूसरी लिये आता हूँ। तब तक के लिए आप यह मेरी बन्सी ले लीजिए। मैं अभी एक मिनट में लौटा आता हूँ," सुखार्को ने कहा।

विक्टर से उसने वादा किया था कि उस लड़की से मिला देगा। अपना वादा उसने पूरा कर दिया था और अब दोनों को संग-संग अकेला छोड़ना चाहता था।

तोनिया ने कहा, "नहीं, कोई जरूरत नहीं, मैं नहीं चाहती। मैं खामखा दूसरे का काम बिगाड़ना नहीं चाहती। देखते नहीं, कोई यहाँ पहले से बैठा मछली पकड़ रहा है!"

सुखार्को ने पूछा, "कौन? ओह्, आपका मतलब उससे है।" पहली बार उसने पावेल को देखा जो एक झाड़ी तले बैठा था। उसको देखकर सुखार्को ने कहा, "उँह, उसकी चिन्ता आप न करें, उसको तो मैंने जहाँ दो बार पकड़ कर हिलाया कि वह यहाँ से चलता बनेगा।"

इसके पहिले कि तोनिया उसको रोक सके या कुछ कह सके, वह तेजी से पावेल के पास पहुँचा जहाँ वह बन्सी लगाये बैठा था।

सुखार्को ने आदेश के स्वर में पावेल से कहा, "देखो अपनी बन्सी-वन्सी समेटो और यहाँ से चलते बनो।"

पावेल पर कोई असर न होता देख कर, क्योंकि पावेल पूर्ववत् बैठा हुआ मछली पकड़ता रहा, सुखार्को ने दुबारा कहा, "जल्दी करो....."

पावेल ने आँख ऊपर उठाई और सुखार्को को गुस्से से देखा।

"चुप रहो! क्या बकबक लगा रखी है!"

यह सुनकर सुखार्को फट पड़ा, "क्या! तेरी यह मजाल कि जबान लड़ाता है, बदमाश आवारा कहीं का! चलो भागो यहाँ से," यह कहते हुए उसने जोर से उस टीन के डिब्बे में लात मारी जिसमें मछली का चारा रखा हुआ था। डिब्बा हवा में चक्कर खाता हुआ जाकर तालाब में गिरा जिससे पानी उछल कर तौनिका के चेहरे पर आया।

वह चिल्लाई, "तुम्हें शर्म आनी चाहिए, सुखार्को!"

पावेल उछल कर खड़ा हो गया। उसे मालूम था कि जहाँ आर्तेम काम करता है उसी रेलवे यार्ड के बड़े साहब का बेटा है सुखार्को और अगर पावेल ने उसके उस मोटे थुलथुल चूहे जैसे मुँह पर घुँसा मारा तो वह अपने बाप से जाकर शिकायत कर देगा और आर्तेम की मुसीबत होगी। इसी खयाल ने उसको तुरत-फुरत वहीं मामला तय-तमाम कर डालने से रोका।

सुखार्को को यह अन्दाज हुआ कि अगले ही क्षण पावेल उस पर वार कर देगा। यह खयाल करके वह तेजी से आगे बढ़ा और दोनों हाथों से उसने पावेल के सीने में धक्का दिया। पावेल तालाब के किनारे खड़ा था, क़रीब था कि वह पानी में गिर जाता मगर बड़ी मुश्किल से हाथ हिला कर अपने शरीर को संभालते हुए उसने जैसे-तैसे अपने को पानी में गिरने से रोका।

सुखार्को पावेल से दो साल बड़ा था और गुण्डा मशहूर था।

पावेल के सीने में धक्का लगा तो उसकी आँखों में खून उतर आया।

"अच्छा तो तुम यों नहीं मानोगे! लो फिर!" कहते हुए उसने हाथ घुमा कर एक ज़ोर का घूँसा सुखार्को के मुँह पर मारा और इसके पहले कि सुखार्को अपने आपको सम्भाल सके पावेल ने मज़बूत हाथों से उसका वर्दी का ब्लाउज़ पकड़ा और खींचता हुआ उसे पानी में ले गया।

ताल में घुटनों तक पानी में वह खड़ा था और उसके पालिश किये हुए जूते और पतलून भीग कर भारी हो रहे थे। सुखार्को ने पावेल की मज़बूत पकड़ से अपने आपको छुड़ाने के लिए पूरी कोशिश की। अपने मन की बात कर चुकने पर पावेल कूद कर किनारे पर आ गया। गुस्से से लाल हो रहा सुखार्को उसके पीछे दौड़ा, ऐसा लगता था कि वह पावेल की बोटी-बोटी अलग कर देगा।

अपने दुश्मन का मुक़ाबिला करने के लिए जब पावेल घूमा तो उसे याद आया :

"अपना सारा वज़न बायें पैर पर दो और दायाँ पैर कड़ा रखो, दायें पैर का घुटना मुड़ा हो। अपने जिस्म का सारा वज़न अपने घूँसे में डालो और ठुड्डी के सिरे पर ऐसा घूँसा मारो जो बिछलता हुआ ऊपर को निकल जाय।"

"कटाक्!"

दाँतों के आपस में टकराने की आवाज़ हुई। फिर उस भयानक दर्द से चिल्लाते हुए, जो उसकी ठुड्डी और दांतों के बीच दब गई जीभ में फैल गया था, सुखार्को हाथ फैलाये लड़खड़ाता हुआ वापिस उसी पानी में गिर गया और ज़ोर का छपाका हुआ।

ऊपर वहाँ किनारे पर तोनिया हँसी के मारे दुहरी हुई जा रही थी।

ताली बजाती हुई चिल्लाई, "खूब खूब! खूब किया, हो बहादुर!"

पावेल ने अपनी फँसी हुई बन्सी को इतने ज़ोर से खींचा कि वह टूट गई और भीटे को चढ़ कर पार करते हुए वह सड़क पर आ गया।

जाते-जाते उसने विक्टर को तोनिया से कहते हुए सुना, "यही पावेल कोर्चागिन है, अव्वल नम्बर का बदमाश।"

स्टेशन पर परिस्थिति गम्भीर होती जा रही थी। हवा में खबर गर्म थी कि रेलवे मजदूर हड़ताल करने जा रहे हैं! अगले बड़े स्टेशन के यार्ड के मजदूरों ने कोई बड़ी चीज शुरू कर दी थी। जर्मनों ने दो इंजन ड्राइवरों को पकड़ लिया था जिन पर उन्हें शक था कि वे कोई इश्तिहार लिये जा रहे हैं। और उन मजदूरों में भी, जिनका गाँव से सम्बन्ध था, बड़ी खलबली थी, क्योंकि वसूली की जा रही थी और जागीरदारों को उनकी जागीरें वापिस दी जा रही थीं।

हेटमैन के सन्तरियों के कोड़ों से किसानों की पीठें लहूलुहान हो रही थीं। इस इलाके में छापेमार आन्दोलन बढ़ रहा था; बोल्शेविकों ने अब तक लगभग एक दर्जन छापेमार टुकड़ियाँ संगठित कर ली थीं।

इन दिनों जुखराई के लिए आराम नहीं था। इस शहर में रहते हुए इतने दिनों में उसने बहुत कुछ कर डाला था। उसने बहुत से रेलवे मजदूरों से परिचय किया था, नौजवानों की गोष्ठियों में गया था और रेलवे यार्ड के मैकेनिकों और लकड़ी काटने वाले मजदूरों के बीच एक बहुत मजबूत दल बना लिया था। उसने यह पता लगाने की कोशिश की कि आर्तेम की ठीक स्थिति क्या है और इस सिलसिले में उसने एक बार आर्तेम से पूछा कि बोल्शेविक पार्टी और उसके लक्ष्य के बारे में उसका क्या खयाल है।

उस तगड़े भारी-भरकम मेकैनिक ने जवाब दिया, "देखो फ़ियोदोर, मैं यह सब पार्टी-वार्टी ज़्यादा नहीं समझता। लेकिन हाँ, अगर तुम्हें मदद की जरूरत हो तो तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो।"

फ़ियोदोर को इससे सन्तोष हो गया क्योंकि वह जानता था कि आर्तेम सही धात का बना हुआ आदमी है और अपने कौल को पूरा करेगा। जहाँ तक पार्टी का ताल्लुक है, अभी वह इसके लिए तैयार न था। "मगर कोई बात नहीं," जुखराई ने सोचा, "यह जमाना ही ऐसा है कि सारी बातें जल्दी ही उसकी समझ में आ जायेंगी।"

फ़ियोदोर बिजली घर छोड़ कर रेलवे यार्ड में एक नौकरी पर लग गया। रेलवे यार्ड उसने इसलिए ज़्यादा पसन्द किया कि वहाँ पर अपना काम करना ज़्यादा आसान था। बिजली घर में वह रेलवे वालों से कट गया था।

रेलवे पर आमदरफ्त बहुत ही ज़्यादा थी। जर्मन, लूट की हजारों गाड़ियाँ जौ, गेहूँ, मवेशी वग़ैरह उक्रेन से जर्मनी भेज रहे थे.....

एक दिन हेटमैन के सन्तरियों ने स्टेशन के तारघर के पोनोमारेंको को पकड़

लिया। यह बहुत अप्रत्याशित आघात था। उसे चौकी पर ले जाकर बहुत बेदर्दी से पीटा गया। जाहिर है कि उसी ने आर्तेम के मित्र और सहयोगी रोमान सिदोरें-को का नाम बतला दिया।

दो जर्मन और एक हेटमैन का सन्तरी, स्टेशन कमाण्डेण्ट का सहायक, काम के घण्टों में रोमान को पकड़ने के लिए आये। बिना एक शब्द बोले सहायक कमाण्डेण्ट उस बेंच के पास गया जहाँ रोमान काम कर रहा था और उसने अपनी चाबुक से उसके चेहरे पर चोट की और चाबुक समूचे चेहरे पर एक लकीर बनाती निकल गई।

उसने कहा, "ज़रा हमारे साथ चलो, सुअर का बच्चा कहीं का! हमें तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।" चेहरे पर बड़ा क्रूर दुष्ट-भाव लिये उसने उस मेकैनिक की बाँह पकड़ी और बड़े ज़ोर से उसे मरोड़ा। "चलो हम ज़रा तुम्हें सिखलायें कि कैसे प्रचार किया जाता है, कैसे घूम-घूमकर लोगों को भड़काया जाता है।"

आर्तेम ने, जो रोमान के पास ही खड़ा काम कर रहा था, अपने हाथ की रेती वहीं डाल दी और सहायक कमाण्डेण्ट के पास आया। उस वक़्त उसका विशाल आकार बहुत भयानक दिखाई दे रहा था, जैसे वह कुछ भी कर डालने पर आमादा हो।

आर्तेम ने अपने चढ़ते हुए गुस्से को भरसक संयत करते हुए अपनी सारी फटी हुई आवाज़ में कहा, "अबे ऐ दोग़ले के बच्चे! अपनी खैरियत चाहता हो तो अब उस पर हाथ मत चलाना।"

सहायक कमाण्डेण्ट पीछे हटा और हटते हुए वह अपना रिवाल्वर रखने का केस खोलने लगा। एक चौड़े-चकले गठीले बदन के जर्मन ने अपने कन्धे पर से वह चौड़ी संगीन लगी भारी राइफिल उतार ली और झट से उसका बोल्ट चढ़ाया और चीखा :

"हाल्ट!" जाहिर था कि दूसरे आदमी के हिलते ही वह गोली मार देगा।

उस ज़रा से सिपाही के आगे वह ऊँचा, तगड़ा मेकैनिक असहाय खड़ा था और कुछ नहीं कर सकता था।

रोमान और आर्तेम दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। आर्तेम को घण्टे भर बाद छोड़ दिया गया मगर रोमान को वहीं एक मालगोदाम में बन्द कर दिया गया।

गिरफ्तारी के दस मिनट बाद एक भी आदमी काम पर नहीं रह गया था। डिपो के मज़दूर स्टेशन के पार्क में इकट्ठे हुए और वहीं पर स्विचमैन और

सप्लाई गोदाम में काम करने वाले लोग उनसे आ मिले। लोगों में बड़ा आवेश था और किसी ने रोमान और पोनोमारेंको की रिहाई के लिए एक लिखित माँग का मसविदा तैयार किया।

मज़दूरों में गुस्सा और भी बढ़ा जब सहायक कमाण्डैण्ट सन्तरियों की एक टुकड़ी लेकर, रिवाल्वर चमकाता हुआ पार्क में आया और चिल्लाया :

"सब लोग काम पर वापस जाओ, नहीं तो हम यहीं एक-एक को गिरफ्तार कर लेंगे ! और तुम में से कुछ को गोली मार देंगे !"

गुस्से में भरे हुए मज़दूरों ने एक ज़बर्दस्त हुंकार से उसका जवाब दिया जिसे सुन कर वह स्टेशन की ओर भागा। मगर इसी बीच स्टेशन कमाण्डेण्ट ने शहर से जर्मन सिपाही बुला लिये थे और उनके ट्रक-के-ट्रक स्टेशन की सड़क पर तेज़ी से चले आ रहे थे।

मज़दूर तितर-बितर हो गये और अपने-अपने घरों की ओर तेज़ी से चल दिये और एक भी आदमी काम पर नहीं रहा, यहाँ तक कि स्टेशन मास्टर भी नहीं। जुखराई का काम अब अपना असर दिखला रहा था। यह पहला मौक़ा था जब स्टेशन के मज़दूरों ने कोई सामूहिक क़दम उठाया था।

जर्मनों ने प्लेटफ़ार्म पर एक भारी मशीनगन खड़ी कर दी, वैसे ही जैसे शिकार का पता लगा कर शिकारी कुत्ता खड़ा हो जाता है। मशीनगन के पास ही एक जर्मन कार्पोरल राइफिल के घोड़े पर हाथ रखे बैठ गया।

स्टेशन वीरान हो गया।

रात को गिरफ्तारियाँ शुरू हुईं। पकड़े जाने वालों में आर्तेम भी था। जुखराई बच गया क्योंकि रात को वह घर नहीं गया था।

सभी गिरफ्तार आदमियों को भेड़-बकरियों की तरह मालगोदाम के एक विशाल शेड के नीचे इकट्ठा किया गया और उनसे कहा गया कि या तो काम पर वापस जाओ या कोर्ट-मार्शल का सामना करो।

सारी लाइन के लगभग सभी रेलवे मज़दूर हड़ताल पर थे। एक दिन और एक रात, एक भी गाड़ी नहीं गुज़री और यह भी पता चला कि वहाँ से क़रीब अस्सी मील की दूरी पर एक बहुत बड़ी छापेमार टुकड़ी से लड़ाई चल रही थी जिसने रेलवे लाइन काट दी थी और पुलों को उड़ा दिया था।

रात को जर्मन सिपाहियों की एक गाड़ी स्टेशन पर आई मगर और आगे नहीं जा सकी क्योंकि इंजन ड्राइवर, उसके मददगार और फ़ायरमैन तीनों इंजन छोड़ कर ग़ायब हो गये थे। दो और गाड़ियाँ आगे जाने के इन्तज़ार में स्टेशन की साइडिंग पर खड़ी थीं।

मालगोदाम के शेड का भारी दरवाजा खुला और स्टेशन कमाण्डैण्ट, एक जर्मन लैफ्टिनैण्ट, उसका सहायक और कुछ और जर्मनों की एक टोली अन्दर दाखिल हुई।

"कोर्चागिन, पोलेनताव्स्की, ब्रुजाक," कमाण्डैण्ट के सहायक ने नाम पढ़ कर सुनाते हुए कहा, "तुम्हें आदेश दिया जाता है कि तुम इंजन चलाने वालों का काम करोगे और फ़ौरन एक गाड़ी लेकर चले जाओगे। तुम इनकार नहीं कर सकते, इनकार करने पर तुम्हें यहीं गोली मार दी जायगी। बोलो, तुम्हें क्या कहना है?"

तीनों मज़दूरों ने गुस्से से अन्दर ही अन्दर घुटते हुए सिर हिला कर अपनी स्वीकृति दी। उन्हें सन्तरियों के पहरे में इंजन तक ले जाया गया और कमाण्डैण्ट का सहायक अगली गाड़ी के लिए ड्राइवर, उसके मददगार और फ़ायरमैन का नाम पढ़ने लगा।

इंजन ने गुस्से से फुफकार छोड़ी और चिनगारियों का एक फ़व्वारा-सा ऊपर उठा। भारी-भारी साँस लेता हुआ इंजन रात की गहराइयों में रेलवे लाइन को रौंदता हुआ अंधेरे में आगे बढ़ चला। आर्तेम ने फ़ायर-बाक्स में अभी-अभी कोयला झोंका था। कोयला डाल कर उसने उसके दरवाजे को बन्द किया, औजारों के बक्स पर रखे हुए चरटी टोंटी के टी-पॉट से एक घूँट पानी पिया और बुडढे इंजन ड्राइवर पोलेनताव्स्की की ओर मुड़ा।

"तो क्यों काका, अब हम लोग इसे ले ही जायेंगे क्या?"

पोलेनताव्स्की ने अपनी घनी पलकों के नीचे अपनी आँखें कुछ खीझ और चिड़चिड़ेपन से मुलमुलाईं।

"और करोगे क्या जब पीठ में संगीन चुभी हो!"

ब्रुजाक ने इंजन से लगे हुए कोयले के डिब्बे पर बैठे हुए जर्मन सिपाही को कनखियों से देखते हुए सुझाव दिया, "हम क्यों न सब कुछ ऐसे ही छोड़ कर भाग चलें?"

आर्तेम बुदबुदाया, "मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ, मगर मुझे डर बस उस पीठ में लगी संगीन का है।"

"वह तो है," ब्रुजाक ने खिड़की में से सिर निकालते हुए अनिश्चयपूर्ण ढंग से कहा।

पोलेनताव्स्की आर्तेम के और पास आ गया और फुसफुसाकर बोला, "गाड़ी लेकर हम नहीं जा सकते, समझे हो न? वहाँ आगे लड़ाई हो रही है। हमारे आदमियों ने रेलवे लाइन उड़ा दी है। और हमको देखो, हम इन सुअर

के बच्चों को लेकर जा रहे हैं ताकि वे हमारे आदमियों को गोली से भून दें—नहीं, यह नहीं हो सकता। सच कहता हूँ बेटा, जार के दिनों में भी मैंने हड़ताल के वक्त इंजन नहीं चलाया था और अब भी नहीं चलाऊँगा, यह मेरा निश्चय है। अगर हम अपने ही लोगों की तबाही का कारण बनें तो यह एक ऐसा कलंक का टीका होगा जो सारी जिन्दगी नहीं छूटेगा। इंजन चलाने वाले दूसरे लोग भाग गये कि नहीं! जान का खतरा उनको भी था, मगर तब भी उन्होंने ऐसा किया। हम हरगिज़ गाड़ी लेकर आगे नहीं जायेंगे। क्यों तुम्हारा क्या खयाल है?"

"बात तो तुम ठीक कहते हो काका, मगर उस आदमी को क्या करोगे?" कहते हुए उसने आँख से उस सिपाही की ओर इशारा किया।

इंजन ड्राइवर का चेहरा चिन्ता से स्याह और भारी हो गया। उसने मुट्ठी भर रद्दी कपड़ा लेकर अपने माथे का पसीना पोंछा और लाल-लाल आँखों से प्रेशर-गेज को घूरा जैसे वहीं उसको उस सवाल का जवाब मिल जायगा जो उसे तंग कर रहा था। फिर गुस्से और मायूसी की हालत में वह कुछ बकने लगा।

आर्तेम ने दुबारा टी-पॉट से पानी पिया। दोनों आदमी एक ही चीज़ के बारे में सोच रहे थे। मगर कोई उस कठिन चुप्पी को तोड़ने का साहस अपने में नहीं पा रहा था। आर्तेम को जुखराई की बात का खयाल आया: क्यों भाई, बोल्शेविक पार्टी और कम्युनिस्ट विचार-धारा के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है? और फिर उसे अपने जवाब का खयाल आया: "मैं हमेशा मदद के लिए तैयार हूँ, तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो....."

उसने सोचा, "क्या खूब मदद.....अपने ही लोगों को दबाने के लिए जर्मनों की फ़ौज को ड्राइव करके ले जा रहा हूँ..."

पोलेनताव्स्की आर्तेम के क़रीब रखे हुए औजारों के बक्स के ऊपर इस वक्त झुका हुआ था। उसने भारी आवाज़ में कहा:

"उस आदमी को देखते हो न, उसका तो काम तमाम करना ही होगा, समझे?"

आर्तेम चौंक गया। पोलेनताव्स्की ने दाँत पर दाँत जमाये इतना और कहा:

"दूसरा कोई रास्ता नहीं है। यह तो हमें करना ही होगा। हम उसके सिर पर भरपूर वार करके उसको लिटा देंगे और चोक और लिवर को उठा कर फ़ायर-बाक्स में झोंक देंगे, भाप काट देंगे और भाग निकलेंगे।"

आर्तेम को ऐसा लगा कि जैसे उसके कन्धे से एक बोझ हट गया हो और वह हल्का हो गया हो। उसने कहा:

"ठीक।"

ब्रुजाक की ओर झुकते हुए आर्तेम ने उसे यह निश्चय बतलाया।

ब्रुजाक ने फ़ौरन जवाब नहीं दिया। ये सभी लोग भारी ख़तरा उठा रहे हैं। सबके अपने-अपने परिवार थे जिनकी उन्हें चिन्ता करनी थी। पोलेनताव्स्की का कुनबा तो सबसे बड़ा था : उसके घर में नौ प्राणी थे जिनके लिए उसे आहार जुटाना पड़ता था। मगर इस सबके बाद भी उन तीनों को यह बात अच्छी तरह पता थी कि वे किसी सूरत से गाड़ी को अपनी मंज़िल तक नहीं ले जा सकते।

ब्रुजाक ने कहा, "मैं भी तुम्हारे साथ हूँ। मगर उसको हम क्या करेंगे? उसको कौन....." उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया मगर उसका मतलब आर्तेम के लिए बिल्कुल साफ़ था।

आर्तेम पोलेनताव्स्की की ओर मुड़ा जो इस समय चोक के संग कुछ कर रहा था। आर्तेम ने उसको जैसे यह बताने के लिए कि ब्रुजाक भी उनसे सहमत है, अपना सिर हिलाया। मगर एक सवाल अब तक तय नहीं हो सका था और आर्तेम को बहुत परेशान कर रहा था। उसी के सम्बन्ध में जानने को वह उस बुड्ढे के और पास पहुँचा और पूछा :

"मगर कैसे?"

पोलेनताव्स्की ने आर्तेम की ओर निहारा।

"तुम शुरू करो, तुम्हीं सबसे मज़बूत हो। हम इस लोहे के डण्डे से उसे ढेर कर देंगे और बस फिर काम तमाम समझो।" वह बुड्ढा बहुत उद्विग्न हो रहा था।

आर्तेम के माथे पर बल पड़ गये और वह किसी गहरे सोच में डूब गया।

"नहीं, नहीं मुझसे यह न होगा। ज़रा सोचो न, उस आदमी का भी भला क्या दोष है। उसे भी तो संगीन की नोक पर मजबूर किया गया है इस काम के लिए।"

पोलेनताव्स्की की आँखें अंगारों की तरह चमकने लगीं।

"तुम कहते हो कोई दोष नहीं है? तब फिर हम जो यह काम करने जा रहे हैं, हमारा भी इसमें दोष नहीं। मगर एक चीज़ मत भूलो कि जिस फ़ौजी टुकड़ी को हम लोग ले जा रहे हैं, वह सज़ा देने के लिए भेजी जा रही है। तुम्हारे ये भोले-भाले लोग छापेमारों को गोलियों से भूनेंगे। तब फिर दोष क्या इसमें छापेमारों का है? नहीं भाई नहीं, तुम्हारे शरीर में ताक़त भले सांड़ की हो लेकिन अक़्ल ज़रा कम ही है....."

आर्तेम ने फटी हुई आवाज में कहा, "ठीक, ठीक।" उसने लोहे का डण्डा उठा लिया मगर पोलेनताव्स्की ने उसके कान में धीरे से कहा :

"यह काम मैं करूँगा, ज़्यादा ठीक रहेगा। तुम फावड़ा उठा लो और इंजन से लगी हुई गाड़ी में से कोयला नीचे देने के लिए उस पर चढ़ जाओ। जरूरी समझना तो उसी फावड़े से तुम भी एक हाथ लगा देना। मैं ऐसा दिखलाऊँगा कि जैसे कोयले के ढेर को हलका कर रहा हूँ।"

ब्रुजाक ने इस बातचीत को सुना और सिर हिलाया। "बुढ़ऊ ठीक कहते हैं," उसने कहा और चोक के पास जाकर खड़ा हो गया।

वह जर्मन सिपाही अपनी टोपी लगाये, जिसके चारों तरफ़ लाल-लाल फीता लगा था, उस इंजन के पास वाले डब्बे के सिरे पर बैठा था। उसकी राइफिल उसके पैरों के बीच पड़ी हुई थी और वह सिगार पी रहा था। बीच-बीच में वह इन इंजन चलाने वालों पर निगाह डाल लेता था।

जब आर्तेम उस डब्बे में चढ़ा तो सन्तरी ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। और जब पोलेनताव्स्की ने इस बहाने से कि वह डब्बे के उस सिरे पर रखे हुए कोयले के बड़े-बड़े ढोंकों के पास पहुँचना चाहता है, सिपाही को रास्ते से हटने के लिए इशारा किया तो सिपाही फ़ौरन इंजन के डब्बे में जाने वाले दरवाजे की ओर हट गया।

लोहे के डण्डे से उस जर्मन की खोपड़ी चूर होने की अचानक आवाज आई तो आर्तेम और ब्रुजाक ऐसे उछल गये जैसे किसी ने उन्हें लाल-लाल लोहे से दाग़ दिया हो। जर्मन सिपाही का शरीर बेजान होकर इंजन के केबिन और कोयले के डब्बे के बीच के रास्ते में पड़ा था।

खून तेजी से उसकी भूरे रंग की ऊनी टोपी में से होकर चूने लगा था और उसकी राइफिल डब्बे की लोहे की दीवार से टकरा कर बज रही थी।

पोलेनताव्स्की ने लोहे का डण्डा फेंकते हुए धीरे से कहा, "काम तमाम!" और फिर जोड़ा, "अब हमारे लिए लौटने की राह नहीं है।" उसके चेहरे की नसें तन गई थीं।

उसकी आवाज भर्रा गई। मगर फिर उस भारी निस्तब्धता को, जो उन तीनों आदमियों पर छा गई थी, चीरने के लिए वह एक बार फिर एक चीख़ के रूप में उठी।

वह चिल्लाया, "चोक का पेंच ढीला करो, जल्दी जल्दी!"

दस मिनट में सारा काम हो गया। इंजन के सारे कल-पुरजे ढीले कर दिये गये थे, और उसकी रफ़्तार धीमी होती जा रही थी।

इंजन के आस-पास रोशनी का जो घेरा था उसमें रेलवे लाइन के किनारे खड़े हुए पेड़ों की काली-काली, कुछ सोचती हुई-सी आकृतियाँ जैसे आगे बढ़ आती थीं मगर फिर पीछे हटकर उस अभेद्य अन्धकार में खो जाती थीं। इंजन की हेड-लाइट अपने दस गज़ आगे भी रात की मोटी चादर चीर नहीं पाती थी और धीरे-धीरे उसका वह भारी-भारी साँस लेना भी कम होता जा रहा था, जैसे उसने अपनी ताक़त का आखिरी अणु भी खर्च कर डाला हो।

"कूदो, बेटा!" आर्तेम ने पीछे से पोलेनताव्स्की की आवाज़ सुनी और हैण्डिल छोड़ दिया। गाड़ी की उस तेज़ रफ़्तार में उसका वह तगड़ा शरीर किसी पत्थर की तरह नीचे गिरने लगा, मगर उसके पैर तभी एक धक्के के साथ ज़मीन पर लगे। वह एक-दो क़दम दौड़ा और फिर इतने ज़ोर से गिरा कि गुलांट खा गया।

तभी इंजन के डब्बे के दोनों तरफ़ से एक-एक छायाकृति कूदी।

ब्रुज़ाक के घर पर अंधेरा छा गया था। पिछले चार दिनों में सर्गेई की माँ ऐन्तोनीना वासीलिएव्ना का चिन्ता के मारे बुरा हाल हो गया था। अपने पति का उसे कोई समाचार नहीं मिला था। उसे सिर्फ़ इतनी ही बात मालूम हो सकी थी कि जर्मनों ने उसे कोर्चागिन और पोलेनताव्स्की के साथ-साथ एक इंजन चलाने पर मजबूर किया था। और कल हेटमैन के तीन सन्तरी आये थे और उससे बहुत गाली-गुफ्ता करके उन्होंने बेहूदा सवाल किये थे।

उन्होंने जो कुछ कहा था उससे उसने अन्दाज़ लगाया कि कुछ गड़बड़ हो गई है और जैसे ही सिपाही चले गये उसने बहुत उद्विग्न होकर सिर पर रूमाल डाला और मारिया याकोव्लेव्ना के पास चली गई, इस उम्मीद में कि शायद उसी से अपने पति के बारे में उसको कुछ खबर मिल जाय।

उसकी सबसे बड़ी लड़की वालिया ने, जो रसोईघर की सफ़ाई कर रही थी, उसे घर से बाहर जाते देखा।

लड़की ने पूछा, "कहाँ जा रही हो माँ?"

ऐन्तोनीना वासीलिएव्ना ने सजल आँखों से अपनी बेटी को देखा और जवाब दिया, "कोर्चागिन के यहाँ। मुमकिन है उन्हें तुम्हारे पिता का कुछ हाल मालूम हो। अगर सर्गेई घर आये तो उससे कहना कि स्टेशन जाकर पोलेनताव्स्की के घर वालों से मिल लेगा।"

वालिया ने अपनी माँ को बाँहों में घेर लिया और उसे दरवाज़े तक पहुँचाती हुई बोली, "घबराओ नहीं, मेरी प्यारी माँ।"

मारिया याकोवलेवना ने हमेशा की तरह जी खोल कर ऐन्तोनीना वासीलिएवना का स्वागत किया। दोनों स्त्रियों को एक-दूसरे से उम्मीद थी कि उन्हें कुछ खबर मिलेगी। मगर बातचीत के दौरान में सारी उम्मीदें खतम हो गईं।

कोर्चागिन के घर पर भी रात को तलाशी हुई। सिपाही आर्तेम की तलाश में थे और उन्होंने जाते समय मारिया याकोवलेवना से कहा था कि जैसे ही तुम्हारा लड़का घर आये उससे कहना कि वह फ़ौरन जाकर कमाण्डैण्ट के दफ़्तर में खबर करे।

इन सिपाहियों के आने से कोर्चागिना के होश-हवास गुम हो गये। वह घर पर अकेली थी क्योंकि पावेल रोज की तरह आज भी बिजली घर में रात की पाली पर काम कर रहा था।

पावेल जब खूब सबेरे काम पर से घर लौटा और माँ से तलाशी की खबर सुनी तो उसे अपने भाई की हिफ़ाजत की गहरी चिन्ता सताने लगी। उसके और आर्तेम के स्वभाव में अन्तर था। आर्तेम ऊपर से बहुत शुष्क था, मगर इसके बावजूद दोनों भाई एक-दूसरे को बहुत चाहते थे। दोनों के बीच एक अजीब कठोर सा प्यार था जिसमें दिखावे के लिए कोई जगह न थी, मगर पावेल जानता था कि अपने भाई के लिए कोई भी कुरबानी करने में वह नहीं हिचकेगा।

आराम के लिए बिना रुके पावेल जुखराई से मिलने के लिए भाग कर स्टेशन गया। जुखराई उसे नहीं मिला और जिन मजदूरों को वह जानता था वे उसे फ़रार लोगों के बारे में कुछ नहीं बतला सके। इंजन ड्राइवर पोलेनताव्स्की के घर वाले भी बिल्कुल अन्धकार में थे। पोलेनताव्स्की के सबसे छोटे लड़के बोरिस से, जो उसे बाहर हाते में मिला, सिर्फ़ इतना मालूम हुआ कि कल रात उनके घर पर भी तलाशी हुई थी। सिपाही पोलेनताव्स्की को खोज रहे थे।

पावेल घर लौटा तो अपनी माँ को देने के लिए उसके पास कोई खबर न थी। थक कर चूर, वह बिस्तर पर पड़ रहा और फ़ौरन उखड़ी-उखड़ी सी नींद में डूब गया।

दरवाजे पर दस्तक पड़ी तो वालिया ने आँख उठा कर देखा।

जंजीर खोलते हुए उसने पूछा, "कौन है?"

दरवाजा खुला तो बिलम्का मारचेंको का लाल-लाल बालों वाला सर दिखाई दिया जिसके बाल बिखरे हुए थे। स्पष्ट ही वह दौड़ता हुआ आया था, क्योंकि उसकी साँस फूली हुई थी, और उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था।

उसने वालिया से पूछा, "तुम्हारी माँ घर पर हैं ?"

"नहीं, वह बाहर गई हुई हैं।"

"कहाँ ?"

"मेरा ख़याल है, कोर्चागिन के यहाँ," यह कहते हुए वालिया ने तेज़ी से लौटते हुए क्लिम्का की आस्तीन पकड़ ली।

क्लिम्का ने संकोचपूर्वक लड़की को देखा, फिर बड़ी हिम्मत करके कहा :

"मुझे उनसे कुछ काम है।"

वालिया उसे जाने नहीं देना चाहती थी, बोली, "क्या है ? झट से बोलना क्यों नहीं, लाल सिर वाले भालू, बोल झट से बोल और अब मुझे और सस्पेंस में न रख," लड़की ने आदेश के स्वर में कहा।

क्लिम्का जुख़राई की चेतावनी और उसके इस कठोर निर्देश को कि चिट्ठी एन्तोनीना वासीलिएवना के हाथ में ही देना भूल गया, और उसने अपनी जेब से एक मैला-कुचैला सा कागज़ निकाला और उस लड़की को दे दिया। सर्गेई की इस ख़ूबसूरत, सुनहरे बालों वाली बहन को वह किसी चीज़ के लिए इनकार नहीं कर सकता था, क्योंकि सच बात यह है कि उसे इस लड़की से प्यार था। यह बात अलग है कि वह इतना भोंपू था कि अपने आप से भी इस बात को नहीं मान पाता था कि उसे वालिया पसन्द है। उस लड़की ने झटपट उस कागज़ के टुकड़े को पढ़ डाला।

"प्यारी तोनिया ! घबराओ मत। सब ठीक है। वे लोग हिफ़ाज़त से हैं। जल्दी ही तुम्हें और ख़बर मिलेगी। दूसरों को भी बता दो कि सब ठीक है। घबराने की कोई बात नहीं है। इस चिट्ठी को नष्ट कर डालना।

—*ज़ख़ार*।"

वालिया तेज़ी से क्लिम्का के पास गई।

"यह तुम्हें मिला कहाँ पागल राम ? किसने दिया तुमको ?" यह कहते हुए उसने क्लिम्का को इतने ज़ोरों से झकझोरा कि उसकी तो जैसे अक़्ल ही गुम हो गई और उसने अनजान में ही दूसरी बड़ी भूल कर डाली।

"जुख़राई ने मुझे दिया, स्टेशन पर।" फिर उसे ख़याल आया कि यह बात उसे नहीं कहनी चाहिए थी। तब उसने जोड़ा : "मगर उन्होंने मुझे ताक़ीद की थी कि मैं यह चिट्ठी तुम्हारी माँ के सिवा और किसी को न दूँ।"

वालिया ने हँसते हुए कहा, "ठीक है। मैं किसी से नहीं कहूँगी। और

अब तुम, अच्छे नन्हें भालू की तरह, दौड़ते हुए पावेल के यहाँ जाओ और वहीं तुम्हें माँ मिलेंगी।" यह कहते हुए उसने लड़के को धीरे से पीठ में धक्का दिया।

पल भर बाद क्लिम्का का लाल सर बागीचे के फाटक में से होकर गायब हो गया।

तीनों में से कोई रेलवे मज़दूर घर नहीं लौटा। शाम को जुखराई कोर्चागिन के घर आया और उसने मारिया याकोवलेवना को ट्रेन वाली घटना बतलाई। उसने खौफ़ज़दा माँ को शान्त करने की पूरी कोशिश की और उसे विश्वास दिलाया कि तीनों ब्रुज़ाक के चचा के यहाँ दूर के एक गाँव में बहुत हिफ़ाज़त से हैं। यह ठीक है कि वे लोग अभी लौट कर घर नहीं आ सकते मगर जर्मनों की हालत पतली है और परिस्थिति किसी भी दिन बदल सकती है।

इन तीनों आदमियों के गायब हो जाने से उनके परिवार एक-दूसरे के बहुत पास आ गये, जितना पहले कभी नहीं थे। उनकी चिट्ठियाँ जो कभी-कभास मिल जाती थीं, बड़े आनन्द से पढ़ी जाती थीं मगर उनके बग़ैर घर सूना और वीरान मालूम होता था।

एक दिन जुखराई पोलेनताव्स्की की बीवी से मिलने के लिए आया, कुछ इस तरह से कि जैसे रास्ते में यह घर पड़ गया हो, और उसे कुछ रुपया दिया।

उसने कहा, "तुम्हारे पति ने तुमको यह भेजा है, तब तक इसी से घर चलाओ। मगर हाँ, देखना, किसी से इसका ज़िक्र न करना।"

उस बुड्ढी स्त्री ने कृतज्ञतापूर्वक जुखराई का हाथ पकड़ लिया और बोली, "शुक्रिया! हमें इसकी सख्त जरूरत थी। बच्चों को खिलाने के लिए भी मेरे पास कुछ नहीं है।"

सच बात यह है कि यह पैसा उस फण्ड में से आया था जो बुल्गाकोव छोड़ गया था।

वहाँ से स्टेशन को लौटते हुए जुखराई सोचने लगा, "अब देखो आगे क्या होता है। अगर गोली का डर दिखला कर हड़ताल तोड़ भी दी जाती है और मज़दूर काम पर भी लौट आते हैं तब भी यह समझ लो कि आग सुलग गयी है और अब उसे कोई बुझा नहीं सकता। जहाँ तक उन तीनों का ताल्लुक है, वे मज़दूर हैं, सच्चे प्रोलितारियन।" मन में यह कहते हुए वह उमंग से भर उठा।

वोरोबिओवा बाल्का नामक गाँव के छोर पर एक पुराने, लोहे के कारखाने

में पोलेनताव्स्की सुलगती हुई भट्ठी के आगे खड़ा था। कारख़ाने का अगवाड़ा सड़क पर पड़ता था और धुएँ से काला हो रहा था। भट्ठी की चमक से उसकी आँखें छोटी हो गई थीं और वह एक बहुत लम्बे हैण्डिल की संड़सी से लोहे के एक लाल-लाल टुकड़े को घुमा रहा था।

आर्तेम धरन से लटकती हुई घौंकनी चला रहा था।

"इन दिनों इन गाँवों में कोई कुशल मज़दूर भूखा नहीं मर सकता—जितना काम चाहे पा सकता है," इंजन ड्राइवर ने अपनी दाढ़ी के भीतर से मुस्कराते हुए कहा। "इसी तरह एक-दो हफ़्ता और चला तो हम लोग अपने घर बहुत काफ़ी आटा और रसद वग़ैरह भेज सकेंगे। बेटा, किसान लोहारों की बड़ी इज्ज़त करते हैं। तू देखना हम लोग धीरे-धीरे खा-पीकर पूँजीपतियों जैसे मोटे हो जायेंगे। ज़ख़ार हम लोगों से कुछ दूसरी तरह का है—वह किसानों से चिपका हुआ है, अपने उस चाचा के ज़रिए उस की जड़ें ज़मीन में हैं। मैं उसे दोष नहीं देता। तुम्हारे और मेरे पास आर्तेम, सिवा अपनी मज़बूत पीठ और हाथों के क्या है; न हल, न गाड़ी, न और कुछ। हम लोग तो सदा-सदा के प्रोलितारियन हैं, सच्चे सर्वहारा, मगर बुड्ढा ज़ख़ार जो है न वह तो जैसे दो टुकड़ों में बँटा हुआ है। उसका एक पैर तो इंजन में है और दूसरा गाँव में।" हँसते हुए उसने यह बात कही। फिर अपनी संड़सी से धातु के उस लाल-लाल टुकड़े को हिलाया-डुलाया और फिर कुछ गम्भीर स्वर में बोला: "बेटा, जहाँ तक हमारी बात है, लक्षण बहुत अच्छे नहीं हैं। अगर जल्दी ही जर्मनों का सफ़ाया नहीं किया जाता तो फिर जैसे भी हो हमें एकातेरीनोस्लाव या रोस्तोव पहुँचना पड़ेगा वर्ना हम लोग पकड़ जायेंगे और इस के पहले कि बात हमारी समझ में आये, लटका दिये जायेंगे।"

आर्तेम ने मुँह-ही-मुँह में कहा, "यह तो तुम ठीक कहते हो।"

"काश कि मुझे पता होता कि वहाँ पर हमारे लोगों का क्या हाल-चाल है। मैं तो नहीं समझता कि जर्मनों ने उन्हें वैसे ही छोड़ रखा होगा।"

"हाँ काका, हम लोग काफ़ी मुसीबत में हैं और अच्छा हो कि हम लोग घर के बारे में सोचना बन्द कर दें।"

इंजन ड्राइवर ने भट्ठी में से वह चमकता हुआ गर्म, धातु का नीला टुकड़ा निकाला और सधे हुए हाथों से निहाई पर रख दिया।

"बेटा, अब लगे इस पर!"

आर्तेम ने एक भारी-सा हथौड़ा उठाया, घुमा कर उसे अपने सर के ऊपर ले गया और निहाई पर पटक दिया। चिनगारियों का एक फ़व्वारा हिस् की

आवाज के साथ फैल गया जिससे एक पल के लिए उस लोहारखाने के अन्धेरे-से-अन्धेरे कोने भी आलोकित हो गये।

पोलेनताव्स्की लोहे के उस गर्म लाल टुकड़े को घुमाता रहा, उस पर हथौड़े की जबर्दस्त चोटें पड़ती रहीं और वह गर्म मोम की तरह चपटा हो गया।

लोहारखाने के खुले दरवाजों से अंधेरी रात की गर्म साँस आ रही थी।

नीचे झील फैली हुई थी; अंधेरी, विशाल! उसके चारों ओर चीड के पेड़ खड़े अपने उन्नत शीश हिला रहे थे।

उनकी ओर देखते हुए तोनिया ने सोचा, "जैसे जान हो इनमें।" झील के चट्टानी किनारे पर वह एक घास से ढंकी हुई नीची जगह पर लेटी हुई थी। उसके गड्ढे के उस पार ऊपर जंगल का छोर था और नीचे थी झील। झील पर अपना वजन-सा डालती हुई पहाड़ियों की छाया से पानी की स्याही और भी स्याह हो गई थी।

स्टेशन के पास की यह पत्थर की खदान तोनिया को खास प्यारी जगह थी। जिन गहरी-गहरी खदानों से पत्थर निकाल कर अब छोड़ दिया गया था उनमें पानी के सोते फूट गये थे, और अब वहाँ पर तीन तलैयाँ बनी हुई थीं। झील के किनारे छपाक् की आवाज हुई। आवाज सुन कर तोनिया ने सिर ऊपर उठाया। अपने सामने की शाखों को हाथ से अलग करते हुए उसने उस ओर देखा जिधर से आवाज आई थी। एक चुस्त, फुर्तीला, धूप से तपे हुए रंग का शरीर जोर-जोर से हाथ मारता हुआ किनारे से दूर तैरता चला जा रहा था। तोनिया ने तैराक की तांबे के रंग की पीठ और काला सिर देखा; वह ऊदबिलाव की तरह मुँह से हवा फेंक रहा था, और पानी के अन्दर तेजी से पैर चला रहा था। कभी उलट जाता था, कलैया खाता था और गोते लगाता था, फिर वह पीठ के बल होकर पानी पर लेट गया और बहने लगा। तेज सूरज की चमक से उसकी आँखें चौंधिया रही थीं, बाँहें फैली हुई थीं और शरीर थोड़ा मुड़ा हुआ था।

तोनिया ने शाख छोड़ दी और वापस अपनी जगह पर आ गई।

"इस तरह से झाँकना ठीक नहीं," कहते हुए वह अपने तईं मुस्कराई और फिर अपने पढ़ने में लग गई।

लेशचिन्स्की ने उसे जो किताब दी थी उसमें वह इतनी डूबी हुई थी कि उसने किसी को काले पत्थर की उस चट्टान पर चढ़ते नहीं देखा जो उसके खाले को चीड़ के जंगल से अलग करती थी। वह तो जब एक ढेला, जो इस आदमी ने

अनजान में लुढ़काया था, आकर तोनिया की किताब पर गिरा तब उसने आँख ऊपर उठाई और पावेल कोर्चागिन को अपने सामने खड़ा पाया। पावेल भी इस मुलाकात से अचकचा गया और अपनी घबराहट में पलटने के लिए मुड़ा।

"वही आदमी होगा जिसे मैंने अभी पानी में देखा था," तोनिया ने उसके गीले बालों को देखते हुए अपने मन में कहा।

"तुम डर गईं क्या? मुझे नहीं मालूम था कि तुम यहाँ पर हो," पावेल ने चट्टान के कगार पर हाथ रखते हुए कहा। उसने तोनिया को पहचान लिया था।

"नहीं, ऐसा क्यों कहते हो, तुम्हारे कारण मुझे कोई अड़चन नहीं है। तुम्हारा मन करे तो थोड़ी देर रुको, और फिर हम दोनों बातें करें।"

पावेल ने तोनिया को आश्चर्य से देखा।

"काहे के बारे में बात करेंगे हम?"

तोनिया मुस्कराई।

एक पत्थर की ओर उंगली से इशारा करते हुए उसने कहा, "मिसाल के लिए तो सबसे पहले यही कि तुम यहाँ पर क्यों नहीं बैठते? तुम्हारा नाम क्या है?"

"पावका कोर्चागिन।"

"मेरा नाम तोनिया है। लो अब हम लोगों ने एक-दूसरे को अपना परिचय दे दिया।"

पावेल अपनी उलझन और परेशानी में अपनी टोपी उमेठ रहा था।

तोनिया ने खामोशी को तोड़ते हुए कहा, "अच्छा तो तुम्हारा नाम पावका है। क्यों, पावका क्यों? सुनने में बहुत अच्छा नहीं लगता। पावेल इससे कहीं अच्छा होगा। और मैं तो तुम्हें इसी नाम से पुकारूँगी,—पावेल। तुम क्या यहाँ अक्सर आते हो....." इसके बाद वह कहना चाहती थी "तैरने" मगर चूँकि वह यह जाहिर नहीं होने देना चाहती थी कि उसने पावेल को पानी में देखा है, उसने बात बदल कर कहा, "घूमने?"

पावेल ने जवाब दिया, "नहीं, बहुत नहीं। कभी-कभी जब फुरसत होती है।"

"अच्छा तो तुम कहीं काम करते हो?" तोनिया ने उससे और आगे सवाल किया।

"बिजली के कारखाने में। मैं फ़ायरमैन हूँ।"

"बताओ, तुमने इतनी अच्छी तरह लड़ना कहाँ सीखा?" तोनिया ने अप्रत्याशित ढंग से पूछा।

" मेरे लड़ने से तुमको क्या ?" न चाहते हुए भी पावेल के मुँह से निकल गया।

यह देख कर कि पावेल उसके सवाल से चिढ़ गया है, तोनिया ने जल्दी से कहा, " देखो नाराज़ न हो, कोर्चागिन। मैं सिर्फ़ जानना चाहती थी और क्या। क्या घूँसा था वह भी! तुम्हें इतना बेरहम नहीं होना चाहिए," यह कहते हुए वह ज़ोर से हँस पड़ी।

पावेल ने पूछा, " उसके लिए बड़ा दुःख होता है तुम्हें, क्यों ?"

" नहीं तो, ज़रा भी नहीं। उल्टे, मेरा तो यह खयाल है कि सुखार्को इसी के क़ाबिल था, जो हुआ ठीक हुआ। मुझे तो खूब ही मज़ा आया। मैं सुनती हूँ कि तुम अक्सर किसी-न-किसी से लड़ते-झगड़ते रहते हो।"

पावेल के कान खड़े हुए, " कौन कहता है ?"

" क्यों, विक्टर लेशचिन्स्की का ही यह कहना है कि तुम पेशेवर लड़ाके हो।"

पावेल के चेहरे पर कालौंछ आ गई।

" विक्टर सुअर है और बिलकुल लौंडिया है। उसे अपनी किस्मत सराहनी चाहिए कि उस दिन उसकी भी कुन्दी नहीं हुई। मेरे बारे में उसने जो कुछ कहा था, मैंने सब सुना था। लेकिन मैं अपने हाथ गन्दे नहीं करना चाहता था।"

तोनिया ने उसको टोकते हुए कहा, " ऐसी ज़बान का इस्तेमाल मत करो, पावेल। अच्छा नहीं मालूम होता।"

पावेल को गुस्सा चढ़ने लगा।

उसने अपने मन में कहा, " मैं क्यों यहाँ खड़ा इस छोकरी से बात कर रहा हूँ, आखिर क्यों ? मुझे हुक्म दे रही है! पहले आपको पावका नाम नहीं पसन्द आया और अब मेरी ज़बान में दोष निकाल रही है!"

तोनिया ने पूछा, " लेशचिन्स्की से तुम इतने चिढ़े हुए क्यों हो ?"

" कहा तो, वह लौंडिया है, अपनी अम्मा की बिटिया! उसमें ज़रा सी भी हिम्मत नहीं; ऐसों को देखकर मेरी उंगली खुजलाने लगती है। ऐसा दिखलाता है कि जैसे दूसरा कोई कुछ हो ही नहीं, सब के सिर पर पैर देकर चलने की कोशिश करता है, समझता है कि जो मन में आवे सो कर सकता है, सिर्फ़ इसलिए कि वह अमीर है। मगर मुझे खाक धूल परवाह नहीं उसकी अमीरी की। ज़रा किसी रोज़ मुझे छू भर तो दे, फिर देखो मैं उसकी कैसी मरम्मत करता हूँ। ऐसों की तो बस एक ही दवा है, कस कर एक घूँसा जबड़े पर," पावेल अपने आवेश में बोलता गया।

तोनिया को अफ़सोस हो रहा था कि उसने क्यों खामखा लेशचिन्स्की का जिक्र किया। वह साफ़ देख रही थी कि इस लड़के की उस रंगे-चुंगे, साहबी शान वाले स्कूली छोकरे से पुरानी लड़ाई है। बातचीत का रुख अधिक शांत दिशा की ओर मोड़ने के खयाल से उसने पावेल से उसके घर वालों और काम-काज के बारे में सवाल करना शुरू किया।

पावेल को इस बात का पता भी नहीं चला और वह यह भूल कर कि वह चला जाना चाहता था उस लडकी के सवालों का जवाब बड़ी तफ़सील से देने लगा।

तोनिया ने पूछा, "तुमने पढ़ाई क्यों छोड़ दी?"

"स्कूल से निकाल दिया गया।"

"क्यों?"

पावेल को बताते लाज लगी।

"मैंने पादरी साहब के आटे में थोड़ी तम्बाकू डाल दी थी, इसीसे सबों ने निकाल दिया। अजी बड़ा हरामजादा था वह पादरी, सता-सताकर जान मार डालता था।" और पावेल ने उसको पूरी कहानी सुना दी।

तोनिया बहुत दिलचस्पी से सुनती रही। पावेल की आरम्भिक झेंप अब खतम हो गयी थी और अब वह उस लड़की से ऐसे बात कर रहा था जैसे उसके संग उसकी बहुत पुरानी जान पहचान हो। और बातों के साथ-साथ उसने उसको अपने भाई के ग़ायब हो जाने की बात भी बतला दी। उस नशेब में बैठ कर दोस्ताना बातचीत में वे इस तरह खो गये थे कि उन दो में से किसी को पता ही न चला कि घण्टों पर घण्टे बीतते जा रहे थे। एकाएक पावेल उछल कर खड़ा हो गया।

"अब मेरे काम का वक्त है। इस वक्त मुझे ब्वायलर में आग डालनी चाहिए थी, न कि यहाँ बैठ कर बकबक करना। दानिलो आज जरूर झंझट करेगा।" कुछ बेचैनी सी महसूस करते हुए उसने एक बार फिर कहा, "अच्छा तो विदा! अब मुझे भागते हुए शहर जाना पड़ेगा।"

तोनिया भी उछल कर खड़ी हो गई और अपना जाकट चढ़ाने लगी।

"मुझे भी अब जाना चाहिए। चलो साथ ही चलेंगे।"

"न भाई, वह नहीं होगा। मुझे तो दौड़ना होगा।"

"वह भी सही। मैं तुम्हारे साथ दौड़ लगाऊँगी, देखें कौन वहाँ पहले पहुँचता है।"

पावेल ने उपेक्षा की दृष्टि से देखा!

" मुझसे पहले ? मुझसे पहले पहुँचना तुम्हारे लिए ग़ैरमुमकिन है ।"

"अभी तय हुआ जाता है । पहले यहाँ से तो निकलें हम लोग ।"

पावेल ने पानी में निकले हुए उस चट्टानी टुकड़े को छलाँगा, फिर तोनिया को अपना हाथ पकड़ाया और फिर दोनों धीरे-धीरे जंगल को पार करके उस चौड़ी समतल पगडण्डी पर पहुँच गये जो स्टेशन को जाती थी ।

तोनिया सड़क के बीचोबीच रुक गई ।

" अच्छा तो आओ : एक, दो, तीन ! दौड़ो ! मुझे छूना तो ज़रा !"

वह आँधी की तरह सड़क पर भागती चली जा रही थी, उसके जूतों के तल्ले चमक रहे थे और उसकी नीली जाकट का पिछला हिस्सा हवा में उड़ रहा था ।

पावेल उसके पीछे भाग रहा था ।

" दो छलाँग में अभी मैं उसे पकड़े लेता हूँ ।" पावेल ने उसकी उड़ती हुई जाकट के पीछे भागते हुए अपने मन में कहा । मगर गली के बिल्कुल आखीर में स्टेशन के काफ़ी पास पहुँच कर ही वह उसे पकड़ पाया । एक आखिरी कोशिश करके वह उसके बराबर हो गया और उसने अपने मज़बूत हाथों से उसके कन्धों को पकड़ लिया ।

" छू लिया ! मगर दौड़ती तुम तेज़ हो !" वह हाँफते हुए खुशी से चिल्लाया ।

" हटो ! तुम तो मेरा मलीदा बनाये डाल रहे हो !" तोनिया ने एतराज़ किया ।

वे वहाँ पर हाँफते खड़े थे, उनकी नाड़ी तेज़ चल रही थी । इस दौड़ से हाँफते हुए तोनिया ने एक बार बहुत हलके से पावेल का सहारा लिया और उस एक भागते हुए पल में पावेल को उसके स्पर्श से घनिष्ठता की ऐसी मीठी सुखद अनुभूति हुई जिसे वह जल्दी भूलने वाला नहीं था ।

" तुम्हारे अलावा और कोई मुझे कभी नहीं छू सका," उसने पावेल से अलग होते हुए कहा ।

इसके बाद वे अलग हो गये और विदा में अपनी टोपी हिलाते हुए पावेल शहर की ओर दौड़ा ।

जब पावेल ने ब्वायलर रूम का दरवाज़ा धक्का देकर खोला उस वक़्त वह दूसरा आग वाला दानिलो ब्वायलर में आग डाल रहा था ।

उसने गुर्राकर कहा, " इतनी जल्दी कैसे आ गये, कुछ और देर से आते ! चाहते हो कि तुम्हारा काम मैं करूँ, क्यों ?"

पावेल ने अपने साथी को मनाने के अन्दाज से उसके कन्धे को थपथपाया।

"हम लोग अभी पलक मारते आग को लहका देंगे," उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा और ईंधन को ठीक करने लगा।

आधी रात को जब दानिलो लकड़ी के ढेर पर लेटा जोरों से खर्राटे भर रहा था, तब पावेल ने इंजन में तेल दिया, रद्दी कपड़े से अपना हाथ पोंछा और औजार रखने के बकस में से *गिसेपी गैरिबाल्डी* नाम की किताब का बासठवाँ खण्ड निकाला और नेपुल्स के "लाल कुर्ती वालों" के महान नेता की वीरता और साहस के असंख्य कारनामों का मोहक वृतान्त पढ़ने में डूब गया।

"उसने अपनी खूबसूरत नीली आँखों से ड्यूक को निहारा....."

पावेल ने सोचा, "उसकी भी आँखें नीली हैं, मगर वह दूसरे तरह की है, वह अमीर लोगों की तरह जरा भी नहीं है। और दौड़ती कैसा है!"

तोनिया के संग अपनी दिन की मुलाक़ात की स्मृति में डूबा हुआ पावेल इंजन की तरफ़ से बिल्कुल बेखबर था। बहुत ज़्यादा भाप के दबाव के कारण इंजन सूँ-सूँ कर रहा था; उसका विशाल फ़्लाई-व्हील तेजी से घूम रहा था और इंजन की सीमेण्ट की नींव भी काँपने लगी थी!

भाप का दबाव बतलाने वाले यन्त्र पर नज़र जाते ही पावेल ने देखा कि उसकी सुई खतरा बतलाने वाली लाल रेखा से कई बिन्दु ऊपर है।

"गज़ब हो गया!" पावेल लपक कर सेफ्टी-वाल्व के पास गया, जल्दी-जल्दी उसे दो बार घुमाया और एक्ज़ास्ट पाइप से निकलती हुई भाप तेज़ी से आवाज़ करती हुई ब्वायलर रूम के बाहर निकली। पावेल ने लिवर खींचते हुए ड्राइव-बेल्ट को पम्प की पुली पर फेंका।

उसने दानिलो को एक नज़र देखा, मगर वह गहरी नींद में था, उसका मुँह खुला हुआ था और उसकी नाक डरावनी आवाज़ें निकाल रही थी।

आधा मिनट बाद भाप का दबाव बतलाने वाले यन्त्र की सुई औसत पर आ गई थी।

पावेल से अलग होकर तोनिया घर की ओर चली। उसका मन उस काली आँख वाले नौजवान के संग अपनी मुलाक़ात में डूबा हुआ था, गो उसे खुद इस बात का पता नहीं था कि वह पावेल के संग अपनी मुलाक़ात के कारण कितनी खुश थी।

"क्या जोश है उसमें, क्या हिम्मत! और जरा भी वैसा बदमाश नहीं है

जैसा मैंने सोचा था। और चाहे जो हो वह उन गधे स्कूली छोकरों जैसा ज़रा भी नहीं है।"

पावेल दूसरे ही साँचे का आदमी था। वह एक ऐसे वातावरण से आया था जो तोनिया के लिए नया और अपरिचित था।

तोनिया ने सोचा, "मगर उसका जंगलीपन कम किया जा सकता है, उसे बस में किया जा सकता है, बड़ा दिलचस्प दोस्त होगा वह।"

घर पहुँच कर उसने लिज़ा सुखार्को और नेली और विक्टर लेशचिन्स्की को बागीचे में देखा। विक्टर कुछ पढ़ रहा था। वे स्पष्ट ही तोनिया का इन्तज़ार कर रहे थे।

उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया और फिर तोनिया एक बेंच पर बैठ गई। उस खोखली-खोखली पोच-सी बातचीत के दरम्यान विक्टर आकर उसके पास बैठ गया और उसने पूछा :

"तुमने वह उपन्यास पढ़ा जो मैंने तुमको दिया था?"

"उपन्यास?" तोनिया ने आँख उठा कर ऊपर देखा। "ओह, मैं....."

उसने उसको लगभग बता ही दिया था कि किताब वह झील के किनारे भूल आई है।

"तुम्हें उसकी प्रेम-कहानी अच्छी लगी?" विक्टर ने प्रश्न करती हुई आँखों से उसको देखा।

तोनिया एक पल के लिए अपने विचार में डूबी रही। फिर उसने बालू पर अपने जूते की नोक से उलझी-उलझी रेखाएँ खींचते हुए सिर ऊपर उठाया और विक्टर को देखा।

"नहीं, अब मैंने उससे कहीं ज़्यादा रोचक प्रेम कहानी शुरू कर दी है।"

विक्टर ने चिढ़ते हुए पूछा, "सच? उसका लेखक कौन है?"

तोनिया ने उसको अपनी चमकती, मुस्कराती हुई आँखों से देखा और कहा, "उसका कोई लेखक नहीं है....."

तभी बाजे पर से तोनिया की माँ ने पुकार कर कहा, "तोनिया, अपने मिलने वालों को अन्दर बुला लो। चाय तैयार है।"

दोनों लड़कियों की बाँह पकड़कर तोनिया अपने साथ घर में ले गई। उसके पीछे जाते-जाते विक्टर उसके शब्दों की पहेली को सुलझाने की कोशिश करता रहा, मगर उनका मतलब उसकी समझ में नहीं आता था।

इस नई अपरिचित अनुभूति ने, जिसने अनजान में ही पावेल को छू लिया

था, उसके मन में खलबली पैदा कर दी—मगर कुछ इस तरह कि उसकी रेखाएँ मन में स्पष्ट न थीं; वह उसे समझ नहीं पाता था और उसका विद्रोही मन परेशान था।

तोनिया का बाप जंगलात का बड़ा हाकिम था जिसका मतलब पावेल के लिये यह था कि वह भी लेशचिन्स्की वकील के ही वर्ग का आदमी है।

पावेल ग़रीबी में पला था और शायद इसीलिए जिस किसी को भी वह अमीर आदमी समझता था, उसके प्रति पावेल के मन में दुश्मनी का भाव पैदा हो जाता था और इसीलिए तोनिया के प्रति उसके हृदय में जो भावना थी उसमें शंका और सन्देह मिला हुआ था; तोनिया उन्हीं में से एक नहीं थी, वह वैसी सरल और आसानी से समझ में आ जाने वाली लड़की नहीं थी जैसी कि मिसाल के लिए राजगीर की लड़की गालीना थी। तोनिया के संग वह सदा सतर्क रहता कि उसकी तरफ़ से व्यंग और उपेक्षा का हल्का-सा आभास मिलते ही वह तत्काल उसका जवाब दे सके क्योंकि उसको अपनी जगह यह डर सदा बना रहता था कि उस जैसी सुन्दर और सुसंस्कृत लड़की मुझ जैसे साधारण आग वाले के प्रति व्यंग और उपेक्षा नहीं तो और क्या दिखलायेगी।

पूरे एक हफ़्ते से उसकी मुलाक़ात तोनिया से नहीं हुई थी। आज उसने झील किनारे जाने का निश्चय किया। उसने जान-बूझकर तोनिया के मकान के पास से गुजरने वाला रास्ता पकड़ा, इस उम्मीद से कि मुलाक़ात हो जायेगी। जब वह बाड़ी के पास से धीरे-धीरे टहलता हुआ चला जा रहा था, उसे बागीचे के उस दूर वाले सिरे पर अपना परिचित वह जहाजियों वाला ब्लाउज दिखलाई दिया। उसने सड़क पर पड़ा हुआ चीड़ का एक फल उठा लिया और उस सफ़ेद ब्लाउज का निशाना लेकर फेंका।

तोनिया घूमी और दौड़ती हुई उसके पास आई और बड़ी मीठी घनिष्ठ मुस्कराहट के साथ अपना हाथ बाड़ी के बाहर निकाला।

"तुम आ गये-आखिर," उसने कहा और उसकी आवाज में खुशी थी। "इतने तमाम रोज तुम रहे कहाँ? वह किताब जो मैं भूल आई थी उसे लेने मैं झील किनारे गई थी। मैंने सोचा, शायद तुम भी मिल जाओ। क्यों, अन्दर नहीं आओगे?"

पावेल ने सिर हिलाया :

"नहीं।"

"क्यों?" और उसकी भवें कुछ आश्चर्य से खिंच गईं।

"मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तुम्हारे बाप को यह चीज पसन्द न

होगी। मुझे ताज्जुब न होगा अगर वह मुझ जैसे आवारे को बागीचे में ले आने के पीछे तुम्हें बुरा-भला कहें।"

तोनिया ने गुस्से से कहा, "कैसी बच्चों की-सी बात करते हो, पावेल। फ़ौरन अन्दर आ जाओ। मेरे पिताजी कभी वैसी कोई बात नहीं कहेंगे। तुम खुद देख लोगे। अब आ जाओ अन्दर।"

वह उसके लिए गेट खोलने को दौड़ी और पावेल हिचकते हुए उसके पीछे-पीछे आया।

"तुम्हें किताबें अच्छी लगती हैं?" तोनिया ने पावेल से पूछा जब दोनों बाग़ीचे में पड़ी हुई गोल मेज़ के गिर्द बैठ गये।

पावेल ने उत्साह से जवाब दिया, "बहुत।"

"कौन सी किताब तुमको सबसे अच्छी लगती है?"

पावेल ने थोड़ी देर तक सवाल पर विचार किया फिर बोला: "जीजेपी गैरिबाल्डी।"

तोनिया ने उसका उच्चारण शुद्ध करते हुए कहा, "गिसेपी गैरिबाल्डी। अच्छा तो वह किताब तुम्हें खास तौर पर अच्छी लगती है?"

"हाँ, मैं उसके अरसटों खण्ड पढ़ चुका हूँ। हर बार जिस दिन तनख़ाह मिलती है, मैं जाकर पाँच टौ ले आता हूँ। गैरिबाल्डी, वह है एक सच्चा मर्द!" पावेल ने आवेश के स्वर में कहा, "असल वीर! मैं तो भाई ऐसी चीज़ को असल माल कहता हूँ। वाह, कैसी-कैसी लड़ाइयाँ उसे लड़नी पड़ीं और जीत सदा उसके हाथ रही। और फिर यह भी तो देखो, वह सारी दुनिया घूमा था। वह अगर आज जिन्दा होता तो मैं ज़रूर उसकी सेना में भरती हो गया होता, ज़रूर। वह नौजवान मज़दूरों को अपने दल में लेता था और फिर सब मिल कर ग़रीबों के लिए लड़ते थे।"

"तुम हमारी लाइब्रेरी देखना चाहोगे?" तोनिया ने कहा और उसकी बाँह अपनी बाँह में ले ली।

"अरे नहीं, मैं घर के अन्दर नहीं जाऊँगा।" पावेल ने आपत्ति की।

"तुम इतने जिद्दी क्यों हो? डरने की कौन सी बात है?"

पावेल ने अपने नंगे पाँवों को देखा जिन्हें बहुत साफ़ नहीं कहा जा सकता था और सिर खुजलाने लगा।

"तुम्हें यक़ीन है कि तुम्हारी माँ या पिताजी मुझे घर से निकाल नहीं देंगे?"

यह सुन कर तोनिया बिफर पड़ी, "अगर तुम ऐसी बातें करना बन्द नहीं करोगे तो मैं सचमुच तुमसे नाराज़ हो जाऊँगी।"

"नाराज मत हो! लेशचिन्स्की को ही ले लो, लेशचिन्स्की कभी हम जैसों को अपने घर के अन्दर नहीं घुसने देता। वह बावर्चीखाने में ही हमसे बात करता है। एक बार मुझको किसी चीज के लिए उसके यहाँ जाना पड़ा था और नेली ने मुझको कमरे के अन्दर जाने नहीं दिया—जरूर उसे यही डर होगा कि मैं उसकी कालीनें खराब कर दूँगा या इसी किस्म का और कोई बाँगड़ूपन," पावेल ने तीखी हँसी के साथ कहा।

"चलो चलो," तोनिया ने आग्रह किया और उसका कन्धा पकड़ते हुए उसे हल्का-सा धक्का देती हुई सायबान की ओर ले चली।

खाने के कमरे में से होकर वह उसे एक कमरे में ले गई जिसमें ओक की लकड़ी की बनी, किताब रखने की एक खुली हुई बड़ी-सी आलमारी रखी थी। और जब उसने दरवाजे खोले तो पावेल ने खूबसूरत पाँतों में सजी हुई सैकड़ों किताबें देखीं। उसने अपनी जिन्दगी में ऐसा खजाना नहीं देखा था।

"अच्छा आओ, तुम्हारे लिए एक अच्छी-सी किताब ढूँढ़ी जाय। मगर देखो, तुम्हें वादा करना पड़ेगा कि और किताबों के लिए तुम बराबर आया करोगे। आओगे न?"

पावेल ने खुशी से सिर हिलाया।

उसने कहा, "मुझे किताबों से प्रेम है।"

उस दिन दोनों ने कुछ घण्टे साथ-साथ बहुत अच्छे गुजारे। तोनिया ने उसका परिचय अपनी माँ से कराया। और वह कोई ऐसी कठिन परीक्षा पावेल को न जान पड़ी। सच तो यह कि तोनिया की माँ उसे अच्छी लगी।

तोनिया पावेल को फिर अपने कमरे में ले गई और उसे अपनी किताबें दिखाने लगी।

सिंगार-मेज पर एक छोटा-सा आईना रखा हुआ था। तोनिया पावेल को उसके पास ले गई और जरा हँसते हुए बोली:

"तुम अपने बालों को ऐसे जंगल की तरह बढ़ने क्यों देते हो? तुम कभी उन्हें कटाते या उनमें कंघी नहीं करते क्या?"

पावेल ने सकुचाते हुए कहा, "बाल जब बहुत बढ़ जाते हैं तो मैं उनमें उस्तरा फिरवा देता हूँ। और करूँ भी क्या?"

तोनिया हँसी और सिंगार-मेज पर से एक कंघी उठाते हुए उसने कई बार तेजी से उसे पावेल के जंगली बालों में दौड़ाया।

कंघी कर चुकने पर उसने बहुत गौर से अपनी इस कारीगरी को देखा और बोली, "हाँ, अब कुछ ठीक हुआ। बालों को ठीक से कटाना चाहिए, यह क्या भूतों की तरह शकल बनाये घूमते रहते हो!"

उसने ग़ौर से पावेल की रंग-उड़ी भूरी कमीज़ और भद्दी पतलून को देखा, मगर और कुछ कहा नहीं।

पावेल ने उसकी निगाह को भाँपा और उसे अपने कपड़ों पर शर्म आई।

चलते समय तोनिया ने उसे फिर आने की दावत दी। उसने पावेल से वादा करा लिया कि वह दो दिन बाद आयेगा और उसके साथ मछली पकड़ने जायेगा।

पावेल को खिड़की से कूद कर घर के बाहर जाना ज़्यादा आसान मालूम हुआ; वह सब कमरों में होकर नहीं जाना चाहता था और न तोनिया की माँ से ही फिर मिलना चाहता था।

आर्तेम के चले जाने से कोर्चागिन परिवार की हालत काफ़ी ख़राब हो गई। पावेल की मज़दूरी से पूरा नहीं पड़ता था।

मारिया याकोवलेवना ने पावेल से प्रस्ताव किया कि क्यों न मैं भी कोई काम कर लूँ; और लेशचिन्स्की को एक रसोईदारिन की ज़रूरत भी है। मगर पावेल ने इस प्रस्ताव का विरोध किया :

" नहीं माँ, मैं ही और कुछ काम कर लूँगा। उन्हें लकड़ी चीरने के कारख़ाने में शहतीरों को ठीक से जमा कर रखने के लिए आदमी की ज़रूरत है। आधा दिन मैं वहाँ काम कर लिया करूँगा और फिर उससे हमारा काम चल जायगा। तुम किसी भी हालत में काम पर मत जाना, नहीं तो आर्तेम मुझसे ग़ुस्सा होगा कि मैंने क्यों तुम्हें ऐसा करने दिया और इसकी ज़रूरत ही क्यों पड़ी !"

पावेल की माँ ने आग्रह किया, मगर पावेल नहीं माना।

दूसरे दिन से वह लकड़ी चीरने के कारख़ाने में काम करने लगा, और यह काम था तत्काल कटे हुए लकड़ी के पटरों को सूखने के लिए फैलाना। वहाँ उसे बहुत से अपने जान-पहचानी लड़के मिले—जैसे उसका एक पुराना सहपाठी मिशा लेवचुकोव और वालिया कुलेशोव। मिशा और वह मिल कर काम करने लगे और पीस-रेट के हिसाब से उनको ख़ासे अच्छे पैसे मिल जाते थे। पावेल दिन में लकड़ी चीरने के कारख़ाने में काम करता था और शाम को बिजली घर में।

दसवें रोज़ शाम को पावेल ने अपनी मज़दूरी के पैसे अपनी माँ को दिये।

माँ के हाथ में पैसे देते हुए उसने थोड़ी परेशानी से ज़रा इधर-उधर किया, थोड़ा लजाया और आख़िरकार बोला :

" बात यह है माँ कि मुझे साटन की एक कमीज़ ख़रीद दो, नीली-नीली,

जैसी पिछले साल थी मेरे पास, याद है न ? इसमें क़रीब आधा पैसा लग जायगा, मगर तुम कोई चिन्ता न करो मैं कुछ और कमा लूँगा। मेरी यह कमीज़ काफ़ी भद्दी है," उसने ऐसे कहा जैसे अपनी इस इच्छा के लिए माफ़ी माँग रहा हो।

माँ ने कहा, " ज़रूर-ज़रूर, यह भी कोई कहने की बात है बेटा, मैं ज़रूर ख़रीद दूँगी। मैं आज ही जाकर कपड़ा ले आऊँगी और कल उसे सी दूँगी। तुम्हें सचमुच नई कमीज़ की ज़रूरत है।" यह कह कर माँ ने दुलार भरी आँखों से अपने बेटे को देखा।

पावेल हेयर-कटिंग सेलून के दरवाज़े पर रुका और जेब में पड़े हुए रूबल को उंगली से टटोलते हुए दरवाज़े में दाखिल हुआ।

हज्जाम बहुत साफ़-सुथरा नौजवान आदमी था। उसने पावेल को दूकान में दाखिल होते देखा और सिर के इशारे से उससे खाली कुरसी पर बैठने के लिए कहा।

" अब आप आइए साहब।"

उस गहरी नर्म गद्देदार कुर्सी में बैठते हुए पावेल ने अपने सामने के आइने में एक घबराया हुआ-सा चेहरा देखा।

हज्जाम ने पूछा, " छोटे कर दूँ ?"

" हाँ, यानी नहीं—बात यह है कि मुझे बाल कटाने हैं। क्या कहते हो तुम लोग इस चीज़ को ?" पावेल ने गले का थूक निगलते हुए जैसे-तैसे अपनी बात कही और अपने आशय को स्पष्ट करने के लिए हाथ से इशारा किया।

" मैं समझ गया," हज्जाम ने मुस्करा कर कहा।

पन्द्रह मिनट बाद पावेल हज्जाम के यहाँ से निकला, पसीने में नहाया हुआ और इस कठिन परीक्षा से थक कर चूर, मगर बाल साफ़-सुथरे कटे हुए और कंघी किये हुए। हज्जाम ने उन विद्रोही बालों को वश में करने के लिए बहुत संघर्ष किया और अन्त में पानी और कंघी की विजय हुई और पहले के खड़े हुए बाल अब क़ायदे से अपनी जगह पर जम गए थे।

सड़क पर आकर पावेल ने चैन की साँस ली और अपनी टोपी आँख तक खींची।

उसने अपने मन में कहा, " माँ मुझे देखेगी तो क्या कहेगी !"

पावेल ने तोनिया के संग मछली पकड़ने जाने का वादा किया था और

जब उसने यह वादा पूरा नहीं किया तो तोनिया बहुत नाराज़ हुई और उसने अपने मन में कहा, "इस आग वाले छोकरे को किसी का कोई खयाल नहीं," मगर जब फिर कुछ और रोज़ निकल गये और पावेल नहीं आया तो उसका मन पावेल के साथ के लिए तरसने लगा।

एक रोज़ जब वह टहलने के लिए निकलने ही वाली थी, उसकी माँ ने आकर कमरे में झाँका और कहा :

"तुमसे मिलने के लिए कोई आया है, तोनिया। अन्दर भेज दूँ ?"

पावेल दरवाज़े में दिखाई दिया, मगर वह इतना बदल गया था कि तोनिया एकाएक उसे पहचान नहीं सकी।

वह एकदम नई नीली साटन की कमीज़ और काला पतलून पहने हुए था। जूतों में डट कर पालिश हुई थी, इतनी कि वे चम-चम चमकने लगे थे और इसके अलावा तोनिया ने यह भी देखा कि उसके बाल भी छँटे हुए है ! धूल और धुएँ से अटा हुआ वह नौजवान आग वाला अब बिलकुल बदल गया था।

तोनिया अपना आश्चर्य व्यक्त करने ही वाली थी, मगर रुक गई क्योंकि वह उस लड़के को, जो यों भी काफ़ी परेशान था और भी परेशान करना नहीं चाहती थी। इसलिए उसने ऐसा बहाना किया कि जैसे उसके चेहरे-मोहरे की इस जबर्दस्त तब्दीली को उसने देखा ही न हो, और उसे डाँटने लगी।

"तुम मछली पकड़ने के लिए मेरे साथ आने वाले थे, क्यों नहीं आये ? तुम्हें शर्म आनी चाहिए अपने-आप पर ! इसी तरह वादा पूरा किया जाता है ?"

"मैं आज-कल लकड़ी चीरने के कारखाने में काम करने लगा हूँ और सच कहता हूँ आने का वक्त ही नहीं मिला।"

उसने उसको यह नहीं बतलाया कि अपने लिए यह कमीज़ और पतलून खरीदने के वास्ते वह पिछले कई रोज से बैल की तरह काम करता रहा था।

बहरहाल, तोनिया ने खुद ही सच्चाई को भाँप लिया और पावेल के प्रति उसकी नाराज़गी ग़ायब हो गई।

तोनिया ने प्रस्ताव किया, "चलो हम लोग तालाब घूमने चलें," और फिर दोनों बाग़ीचे से निकल कर सड़क पर पहुँच गये।

थोड़ी ही देर में पावेल तोनिया को बतला रहा था कि उसने कैसे लेफ्टिनेण्ट के यहाँ से रिवाल्वर चुराया। उसने अपनी सबसे बड़ी भेद की बात तोनिया को वैसे ही बता दी जैसे कोई अपने बहुत गहरे दोस्त को बतलाये और उससे यह भी वादा किया कि जल्दी ही किसी रोज वे दोनों घने जंगल में जायेंगे और रिवाल्वर चलायेंगे।

"मगर देखना, तुम मेरी यह बात किसी से कहना मत," पावेल ने एकाएक कहा।

तोनिया ने वचन दिया, "नहीं मैं कभी तुम्हारी बात किसी से नहीं कहूँगी।"

चौथा अध्याय

निर्मम और भयानक श्रेणी-संघर्ष ने उक्रेन को जकड़ रखा था। हथियार उठा कर मैदान में उतरने वालों की संख्या रोज़-ब-रोज़ बढ़ती जा रही थी और हर टक्कर से नये लड़ने वाले पैदा हो रहे थे।

भद्र नागरिकों के लिए शान्ति और सुव्यवस्था के दिन हवा हो चुके थे।

तोपों की तूफ़ानी गरज से छोटे-छोटे कच्चे मकान काँप उठते थे और बेचारा भद्र नागरिक अपने तहखाने की दीवार का सहारा लेकर दुबक कर खड़ा हो जाता था या मकान के पिछवाड़े वाली खाई में आश्रय खोजता था।

पेतल्युरा के सब तरह के, सभी रंगों के, गिरोहों की उस क़स्बे भर में बाढ़ सी आई हुई थी। सभी तरह के छोटे-बड़े सरदार इन गिरोहों के नेता थे, जमाने भर के गोलुब और आर्केन्जिल और एन्जिल और गार्डियस और बीसियों दूसरे लुटेरे!

ज़ारशाही फ़ौज के भूतपूर्व अफ़सर, उक्रेन के दक्षिण-पंथी और वाम-पंथी सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी,—कहने का मतलब यह कि कोई भी दुस्साहसी आदमी जो थोड़े से खूनियों को जमा कर सकता था, अपने को ऐटमन घोषित कर देता था और फिर उन्हीं में से कोई-कोई पेतल्युरा का पीला-और-नीला झण्डा फहराने लगते थे और अपनी ताक़त और मौक़े के हिसाब से जितने इलाक़े में मुमकिन हो, अपनी सत्ता क़ायम कर लेते थे।

इन्हीं छिट-पुट गिरोहों में से आदमियों को लेकर और उनमें कुलकों और ऐटमन कोनोवालेत्स की फ़ौज में से गैलीशियन रेजिमेण्ट को शामिल करके प्रधान ऐटमन पेतल्युरा ने अपनी रेजिमेण्टें और डिवीजनें बनाई थीं। और जब बोल्शेविक छापेमार टुकड़ियों ने इस सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी और कुलक भभ्भड़ पर हमला किया तो सैकड़ों-हज़ारों टांपों और तोपों व मशीनगन खींचने वाली गाड़ियों के पहियों से धरती काँप गई।

उस तूफ़ानी सन् १९१९ के अप्रैल महीने में भद्र नागरिक, डरा और बौखलाया हुआ, सवेरे अपनी खिड़की खोलता था और नींद से भारी आँखें लिए चिन्ताकुल प्रश्न से अपने बगल वाले पड़ोसी का स्वागत करता था, "क्यों भाई आवतोनम पैत्रोविच, तुमको मालूम है आज किसका राज है?"

और आवतोनम पैत्रोविच अपने पतलून की टाँगें ऊपर उठाते हुए डरी निगाहों से इधर-उधर देखने लगता था।

"पता नहीं, अफ़ानस किरीलोविच। रात को कोई शहर में दाखिल तो हुआ था। वह है कौन, यह अभी जल्दी ही मालूम हो जायगा। यहूदियों की लूटपाट शुरू होती है तो हम समझ जायेंगे कि पेतल्युरा के आदमी हैं, और अगर वे 'कामरेड लोग' हुए तो भी झट पता लग जायगा—उनके बातचीत के तरीके से। मैं आँखें खोले हुए हूँ ताकि ठीक समय पर मुझे पता हो जाय कि अब मुझे किसकी तसवीर टांगनी चाहिए। न बाबा, बगल वाले जेरासिम लियोनतियौविच की तरह आफ़त में जान फँसाना मुझे मंजूर नहीं। तुम्हें मालूम है न, उसने जरा असावधानी की और आफ़त में फँस गया। उसने लेनिन की तसवीर लाकर टाँगी थी, तभी तीन आदमी दौड़े हुए घर के अन्दर आये। जैसा कि जल्दी ही पता चल गया, ये पेतल्युरा के आदमी थे। उन्होंने तसवीर पर एक निगाह डाली और जेरासिम पर कूद पड़े—कम से कम बीस कोड़े लगाए होंगे उन्होंने। चिल्लाकर बोले, 'अबे कम्युनिस्ट सुअर के बच्चे, हम जिन्दा ही तेरी चमड़ी उधेड़ लेंगे।' और फिर बेचारा बहुत चीखा-चिल्लाया, रोया-धोया, सफ़ाई दी; मगर कुछ काम नहीं आया।"

हथियारबन्द लोगों के दलों को सड़क पर आता देख कर भद्र नागरिक अपनी खिड़की बन्द कर लेता है और छिप जाता है। बच कर रहना अच्छा होगा!

जहाँ तक मजदूरों का ताल्लुक था, वे पेतल्युरा के लुटेरों के पीले-और-नीले झण्डे को दबी नफ़रत से देखते थे। उक्रेन के पूँजीपतियों की इस साम्राज्यवादी लहर के आगे वे अपने-आपको कमजोर महसूस करते थे, और उनका हौसला तभी बढ़ा जब उधर से गुजरती हुई बोल्शेविक टुकड़ियाँ पीले-और-नीले झण्डे वालों के खिलाफ़ भीषण लड़ाई लड़ते हुए उनकी पाँतों को चीर कर शहर में दाखिल हुईं। एक-दो रोज तक मजदूरों का प्यारा लाल झण्डा टाउन-हॉल पर फहराता रहा। मगर फिर, टुकड़ी आगे बढ़ जाती और अंधेरा लौट आता।

इस वक़्त शहर, ट्रान्सनीपर डिवीजन के "आशा और गौरव" कर्नल बोलुब के हाथ में था।

अभी एक रोज पहले, दो हजार हत्यारों के उसके गिरोह ने जीत के बाद शहर में क़दम रखा था। हुजूर कर्नल साहब सेना के आगे-आगे अपने शानदार

काले घोड़े पर चल रहे थे। अप्रैल महीने की धूप के बावजूद उनकी साज-सज्जा में कोई कमी नहीं थी—काकेशस के लोगों का 'बुर्का', जापोरोजिए के कोसैकों वाली भेड़ की खाल की टोपी, जिसका ऊपरी हिस्सा रसभरी के रंग का लाल था, 'चेरकेस्का', वह सभी कुछ पहने थे। और इस टीम-टाम के साथ के सब हथियार भी बाक़ायदा उनके शरीर पर सुसज्जित थे,—कटार और तलवार, जिनकी मूँठें चाँदी की थीं। उनके दाँतों के बीच एक मुड़ा हुआ तम्बाकू पीने का पाइप दबा था।

हुज़ूर कर्नल गोलुब खूबसूरत आदमी थे, काली-काली भवें और पीला-सा रंग, जिसमें अविराम भोग-विलास के कारण कुछ हरापन भी मिला हुआ था।

क्रान्ति के पहले कर्नल गोलुब एक शक्कर के कारखाने से सम्बद्ध चुकन्दर के खेतों में कृषि-विशेषज्ञ थे। मगर ऐटमन के पद के मुक़ाबिले में वह एक बिल्कुल ही नीरस जिन्दगी थी। इसीलिए ऐसा हुआ कि जब सारे देश को अपनी लपेट में लेते हुए स्याह लहरें बहीं, तो उन लहरों के शिखर पर सवार होकर कृषि-विशेषज्ञ गोलुब "हुज़ूर कर्नल गोलुब" बन गये।

शहर के एकमात्र थिएटर में इन आगन्तुकों के सम्मान में मनोरंजन की तैयारियाँ खूब ठाट-बाट से की गई थीं। पैतल्युरा के समर्थक बुद्धिजीवियों की सारी "विभूतियाँ" अपनी पूरी संख्या में वहाँ उपस्थित थीं : उकेनी अध्यापक, पादरी की दोनों लड़कियाँ, सुन्दरी आनिया और उसकी छोटी बहिन दीना, कुछ उनसे नीचे स्तर की स्त्रियाँ, काउएट पोतोकी के घराने के कुछ पुराने लोग, मुट्ठी भर बड़े व्यापारी और उकेनी सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी पार्टी के कुछ गुण्डे जो अपने आप को "आज़ाद कौसैक" कहते थे।

थिएटर का हॉल खचाखच भरा था। अध्यापकों के इर्द-गिर्द अफ़सर घूम रहे थे जो देखने-सुनने में ऐसे नज़र आते थे जैसे जापोरोजिए के कौसैकों की पुरानी तसवीरों की हूबहू नक़ल हों। उनके अलावा पादरी की लड़कियाँ और बड़े व्यापारियों की स्त्रियाँ भी थीं जो चटख रंगों के काढ़े हुए फूलों और रंग-बिरंगे मनकों और फीतों से अलंकृत उकेनी जातीय परिधानों में सजी हुई घूम रही थीं।

रेजिमेण्ट का बैण्ड बज रहा था। स्टेज पर *नज़र इस्तदोलिया* नामक नाटक की तैयारियाँ ज़ोर-शोर से चल रही थीं। उस शाम यही नाटक खेला जाने वाला था।

मगर हॉल में बिजली नहीं थी, और इस बात की रिपोर्ट कर्नल साहब को उनके सहायक, सब-लैफ्टिनेण्ट पोलियान्तसेव ने हेडक्वार्टर पर दी। पोलियान्तसेव ने अब अपने नाम को उकेनी रूप देकर अपने-आप को खोरूंजी पालियानित्स्या कहना शुरू कर दिया था। कर्नल साहब ने, जो शाम के थिएटर

को अपनी उपस्थिति से सुशोभित करने की सोच रहे थे, पालियानित्स्या की पूरी बात सुनी और बहुत इतमीनान के साथ, पर आदेश के स्वर में, कहा :

"रोशनी जरूर होनी चाहिए। एक एलेक्ट्रीशियन तलाश करो और जैसे भी हो बिजली घर को चालू करो।"

"बहुत अच्छा, हुजूर कर्नल साहब।"

खोरूंजी पालियानित्स्या को आसानी से ही एलेक्ट्रीशियन मिल गये। दो घण्टे के भीतर ही भीतर पावेल, एक एलेक्ट्रीशियन और एक मेकैनिक को हथियार-बन्द सन्तरियों के पहरे में बिजली घर ले जाया गया।

"अगर सात बजे तक लाइट ठीक नहीं हुई तो तुम तीनों को मैं फाँसी पर लटका दूँगा," पालियानित्स्या ने ऊपर लोहे की एक धरन की ओर इशारा करते हुए उनको जतला दिया।

स्थिति को जिस लट्ठमार तरीके से खोल कर रखा गया था उसका असर यह हुआ कि ठीक समय पर रोशनी आ गई।

शाम का उत्सव पूरे रंग पर था जब हुजूर कर्नल साहब अपने साथ एक औरत को लिए हुए पधारे। जिसके घर में कर्नल साहब ठहरे हुए थे, उसी शराबखाने के मालिक की यह लड़की थी। इसका अच्छा गदराया हुआ जिस्म था और बाल पीले थे। लड़की का बाप पैसेवाला था, इसलिए उसकी पढ़ाई सूबे के सबसे बड़े शहर के स्कूल में हुई थी।

जब उन दोनों ने, सम्मानित अतिथि के रूप में, पहली क़तार में आसन ग्रहण कर लिया तो कर्नल साहब ने संकेत किया और पर्दा इतनी जल्दी से उठा कि दर्शकों ने मंच से भागते हुए मंच-निर्देशक की पीठ की झलक देखी।

नाटक के दौरान में अफ़सरों और उनके साथ की स्त्रियों ने अपना वक्त जलपान-गृह में गुजारा और घर पर खींची हुई कच्ची शराब से, जिसका इन्तजाम सर्वशक्तिमान पालियानित्स्या ने किया था, और वसूली से प्राप्त सुस्वादु खाद्यों से अपना पेट भरा। खेल का अन्त होते-होते उनके ऊपर नशा अच्छी तरह चढ़ गया था।

खेल खतम होने पर पर्दा जब आखिरी बार गिरा तो पालियानित्स्या लपक कर मंच पर चढ़ गया। बड़े नाटकीय ढंग से बाँह घुमाते हुए उसने ऐलान किया, "देवियो और सज्जनो, अब फ़ौरन नाच शुरू होगा।"

सबने बहुत हर्ष से इस प्रस्ताव का स्वागत किया। दर्शक लोग बाहर निकल गये ताकि सम्मानित अतिथियों की सुरक्षा के लिए नियुक्त पेतल्युरा सैनिक कुर्सियों को बाहर करके नाच के फ़र्श को खाली कर दें।

आध घण्टे बाद, थिएटर का हॉल मस्तियों का अखाड़ा बना हुआ था।

पेतल्युरा के अफ़सर, संयम और मर्यादा को ताक़ पर रख कर, स्थानीय सुन्दरियों के साथ बड़े जोशोखरोश से होपाक नृत्य कर रहे थे। इस श्रम की गर्मी से सुन्दरियों के चेहरे लाल हो रहे थे और भारी फ़ौजी बूटों की रौंद से थिएटर की कच्ची दीवारें हिल रही थीं।

ठीक इसी दरम्यान हथियारबन्द घुड़सवारों का एक दस्ता आटे की चक्की की तरफ़ से शहर की ओर बढ़ रहा था। शहर की सीमा पर तैनात पेतल्युरा सैनिकों की चौकी वाले घबरा कर अपनी मशीनगनों के पास पहुँचे और रात के सन्नाटे में मशीनगनों में गोले भरने की खट-खट सुनाई दी। अंधेरे में तीखी आवाज़ सुनाई पड़ी :

"हाल्ट! कौन जाता है? कौन है?"

अंधेरे में से दो काली आकृतियाँ बाहर निकलीं। उनमें से एक आगे बढ़ी और भारी आवाज़ में गरज कर बोली :

"ऐटमन पावल्युक, अपनी टुकड़ी के साथ। तुम कौन हो? गोलुब के आदमी?"

"जी हाँ," एक अफ़सर ने आगे बढ़ते हुए कहा।

पावल्युक ने पूछा, "मैं अपने सिपाहियों को कहाँ ठहराऊँ?"

"मैं अभी हेडक्वार्टर को फोन करता हूँ," अफ़सर ने जवाब दिया और सड़क के किनारे की एक छोटी सी झोंपड़ी में अन्तर्ध्यान हो गया।

एक मिनट बाद वह फिर बाहर निकला और हुक्म देता हुए बोला :

"जवानो, मशीनगन को रास्ते से हटा लो! हुज़ूर ऐटमन को गुज़रने दो!"

पावल्युक ने अपना घोड़ा जगमगाते हुए थिएटर के सामने, जहाँ बहुत से लोग खुली हवा में घूम रहे थे, रोका।

"देखता हूँ, बड़ी मस्तियाँ चल रही हैं वहाँ," उसने अपने बगल के एक घुड़सवार की ओर मुड़ते हुए कहा, "आओ गुकमाक, हम भी उतरें और इस नाच-गाने में शरीक हो जायें। हम लोग अपने लिए दो लड़कियाँ चुन लेंगे,—मैं देखता हूँ कि यहाँ लड़कियाँ भरी हुई हैं। अरे एस्तालेज़्को," उसने चिल्लाते हुए कहा, "तुम हमारे जवानों को शहरवालों के यहाँ ठहरा दो। हम लोग यहाँ रुकेंगे। अर्दली, पीछे-पीछे आओ।" और वह घोड़े से उतर पड़ा।

थिएटर के दरवाज़े पर पावल्युक को पेतल्युरा के दो सैनिकों ने रोका।

"टिकट?"

पावल्युक ने उन्हें नफ़रत से देखा और एक को कन्धे से धक्का देता हुआ

हॉल में दाखिल हो गया। उसके साथ के एक दर्जन आदमी भी हॉल में घुस गये। उन सबके घोड़े बाहर बाड़ी से बँधे खड़े थे।

सबकी नजरें नवागन्तुकों की ओर उठीं, विशेष रूप से भीमकाय पावल्युक की ओर। वह एक अच्छे कपड़े का अफ़सरों का कोट, गार्ड्स वाली नीली ब्रिजिस और खूब बालों की फर की टोपी पहने था। कन्धे से लटकते हुए फीते से एक माउज़र पिस्तौल लटक रहा था और जेब से एक दस्ती बम झाँक रहा था।

"यह कौन है?"—यह फुसफुसाहट सारी भीड़ में फैल गई। गोलुब का नायब होश-हवास खोकर मस्ती में नाच रहा था।

पादरी की बड़ी लड़की उसकी साथिन थी। यह लड़की इतनी मस्त होकर चक्कर खा रही थी कि उसका साया खूब ऊँचे उड़ रहा था, इतने ऊँचे कि उल्लसित योद्धागण उसके रेशमी अण्डरवियर को आँखें भर-भर देख रहे थे।

भीड़ को कुहनियों से अलग करते हुए पावल्युक सीधे नाच के फर्श पर जा पहुँचा।

उसने पादरी की लड़की की टाँगों को आँखें फाड़ कर देखा, अपने खुश्क ओंठों पर जीभ फेरी, फिर नाच का फ़र्श पार करके ऑरकेस्ट्रा के प्लेटफार्म पर पहुँचा, रुका और अपनी चाबुक फटकारी।

"सुनो, *होपाक* की धुन बजाओ!"

कण्डक्टर ने आदेश की ओर ध्यान नहीं दिया।

पावल्युक का हाथ तेजी से घूमा और चाबुक सटाक से कण्डक्टर की पीठ पर पड़ी। कण्डक्टर उछल पड़ा, मानो बिच्छू ने काट लिया हो। संगीत भंग हो गया। हॉल निस्तब्धता में डूब गया।

"देखते हो इसकी हिम्मत!" शराबखाने के मालिक की लड़की गुस्से से लाल हो रही थी। उसने अपने बगल में बैठे हुए गोलुब की कुहनी को पकड़ते हुए जोर से कहा, "तुम उससे कुछ कहते क्यों नहीं? तुम्हारी आँख के सामने जो जी चाहे कर रहा है और तुम कुछ बोलते नहीं!"

गोलुब अपना भारी शरीर लिए खड़ा हुआ, ठोकर मार कर एक कुर्सी रास्ते से अलग की, तीन क़दम आगे बढ़ा और पावल्युक के सामने जाकर खड़ा हो गया। उसने फ़ौरन इस नये आगन्तुक को पहचान लिया। उसे अपने इस पुराने प्रतिद्वन्दी से, जो स्थानीय तौर पर उसके हाथ से ताक़त छीन लेना चाहता था, पुराने झगड़े सुलझाने थे। अभी केवल एक हफ्ता पहले पावलुक ने हुजूर कर्नल साहब के साथ बड़ी कमीनी हरकत की थी। उस वक्त जब कि एक लाल टुकड़ी के साथ, जिसने अनेक बार गोलुब की टुकड़ी की अच्छी तरह गत बनाई थी, लड़ाई अपने

शिखर पर थी, पावल्युक ने पीछे से बोल्शेविकों पर हमला करने के बजाय शहर के अन्दर दाखिल होकर और उन थोड़े से सिपाहियों को हरा कर जिन्हें बोल्शेविक छोड़ गये थे, अपनी हिफाजत के लिए कुछ सिपाहियों को तैनात कर दिया और फिर जी खोल कर उस जगह को लूटा। इसमें क्या शक कि सही माने में पेतल्युरा का आदमी होने के नाते उसने यहूदी आबादी को ही अपना खास शिकार बनाया। इस बीच बोल्शेविक गोलुब के दाहने पार्श्व को चीर कर घेरे के बाहर निकल गये थे।

और अब वह घमण्डी, घुड़सवारों का कप्तान यहाँ घुस आया था। और इसकी हिम्मत तो देखो, हुजूर कर्नल के अपने खास बैण्ड-मास्टर को उनकी आँखों के सामने मार रहा था। नहीं, यह तो हद से बाहर की बात हो गई थी। गोलुब समझ गया कि अगर वह इस घमण्डी छुटभैये ऐटमन को ठीक नहीं करता तो रेजिमेण्ट में उसकी धाक खतम हो जायगी।

कई सेकेण्ड तक दोनों आदमी आमने-सामने, एक दूसरे को घूरते हुए, ख़ामोश खड़े रहे।

एक हाथ से अपनी तलवार की मूठ पकड़ते हुए और दूसरे से जेब में अपने रिवाल्वर को टटोलते हुए गोलुब ने डपट कर कहा :

"तेरी यह हिम्मत कैसे कि हमारे आदमियों पर हाथ छोड़े, हरामजादे!"

पावल्युक का हाथ धीरे-धीरे माउज़र के हत्थे की तरफ़ बढ़ रहा था।

"ज़रा ज़बान सँभाल कर बात कीजिए गोलुब साहब, वर्ना मुँह के बल गिरिएगा। मुझसे उलझना नहीं। मैं गुस्से का तेज हूँ।"

गोलुब भला यह कैसे बर्दाश्त कर सकता था!

उसने चिल्लाकर कहा, "इन सबों को बाहर निकाल दो और एक-एक को पच्चीस-पच्चीस कोड़े लगाओ!"

गोलुब के अफ़सर शिकारी कुत्तों की तरह पावल्युक और उसके आदमियों पर झपट पड़े।

एक गोली छूटी और ऐसी आवाज आई कि जैसे किसी ने बिजली का बल्ब फर्श पर पटक दिया हो और दोनों दलों के लोग शिकारी कुत्तों की तरह आपस में गुँथ गये। हॉल में तबाही मच गई। उस मार-धाड़ में सब एक-दूसरे पर तलवारें चला रहे थे, एक-दूसरे के बाल नोच रहे थे और गले दबोच रहे थे। औरतें डर के मारे चीखती हुई लड़ने वालों से छिटक कर दूर चली गई थीं।

कुछ मिनटों के अन्दर पावल्युक और उसके आदमियों के हथियार छीन लिये गए और उन्हें खूब मारा गया, फिर हॉल से घसीट कर वे लोग बाहर ले जाये गए और सड़क पर ले जाकर खड़े कर दिये गए।

इस लड़ाई में खुद पावल्युक अपनी फर की टोपी से हाथ धो बैठा। उसका चेहरा घायल हो गया था और हथियार छीन लिये गए थे। गुस्से के मारे उसका बुरा हाल था। वह और उसके आदमी उछल कर अपने घोड़ों पर बैठे और तेजी से निकल गये।

वह शाम तो बर्बाद हो गई। जो कुछ हुआ था उसके बाद किसी का मन खुशियाँ मनाने का नहीं हो रहा था। स्त्रियों ने नाचने से इनकार कर दिया, और हठ करने लगीं कि उन्हें घर पहुँचा दिया जाय। मगर गोलुब यह सब सुनने को तैयार न था।

उसने हुक्म दिया, "सन्तरी खड़े कर दो! कोई हॉल के बाहर नहीं जायगा!"

पालियानित्स्या ने हुक्म पूरा करने में बहुत तेजी दिखलाई।

"देवियो और सज्जनो, नाच सवेरे तक चलेगा।" गोलुब ने तमाम आपत्तियों-प्रतिवादों को दूर ठेलते हुए हटपूर्वक कहा, "पहला वॉल्ज में खुद नाचूँगा।"

ऑरकेस्ट्रा फिर बजने लगा। मगर इसके बावजूद, उस रात फिर खुशियाँ न मनाई जा सकीं।

कर्नल ने पादरी की लड़की के संग नाच के फ़र्श का अभी एक चक्कर भी पूरा न किया था कि सन्तरी दौड़ते हुए हॉल के अन्दर आये और चिल्ला कर बोले :

"पावल्युक थिएटर को घेर रहा है।"

उसी वक्त सड़क के सामने वाली एक खिड़की टूटी और उसके टूटे फ्रेम के अन्दर से एक मशीनगन की नली अन्दर घुसी। वह पागलों की तरह कभी इधर कभी उधर घूम रही थी, मानो उन भागते हुए लोगों में से किन्हीं खास को चुन रही हो। लोग मशीनगन से घबरा कर ऐसे तितर-बितर होकर भाग रहे थे, गोया वह शैतान हो।

पालियानित्स्या ने छत में लगे एक हज़ार कैण्डिल पावर के लैम्प पर गोली चलाई। वह बम की तरह फूटा। उड़े हुए शीशे के टुकड़े हॉल के अन्दर सभी लोगों पर बरस पड़े।

हॉल अंधेरे में डूब गया। कोई बाहर से चिल्लाया :

"सब लोग बाहर निकलो!" और इसके बाद गालियों की बौछार।

औरतों का वह पागलों की तरह चिल्लाना, वे तमाम हुक्म जो गोलुब हॉल के अन्दर इधर-उधर भागता हुआ अपने घबराये हुए अफ़सरों को बटोरने की कोशिश में जारी कर रहा था, सहन में गोली चलने और चीखने-चिल्लाने

का शोर,—इन सबसे एक अजब जहन्नुमी मन्ज़र पैदा हो गया था, जिसको बयान करना मुश्किल है। इस हंगामे में किसी ने पालियानित्स्या को पीछे के दरवाजे से निकल कर एक वीरान गली में जाते नहीं देखा, जहाँ पहुँच कर वह जी-जान से गोलुब के हेडक्वार्टर की तरफ़ दौड़ा।

आध घण्टे बाद शहर में बाक़ायदा लड़ाई का मोर्चा जमा हुआ था। अनवरत राइफिलें चलने की आवाजें और उनके बीच-बीच मशीनगनों का भारी शोर रात की निस्तब्धता को चीर रहा था। शहर वाले बिल्कुल हैरान थे कि यह क्या हो रहा है। अपने गर्म-गर्म बिस्तरों से उठ कर वे अपनी खिड़कियों के शीशों में मुँह सटाये खड़े थे।

आखिरकार गोलियों का चलना कम हुआ। कहीं दूर, सिर्फ़ एक मशीनगन बीच-बीच में गोले छोड़ती रही,—उसी तरह जैसे रात की तारीकी में कोई कुत्ता भौंक रहा हो।

उधर क्षितिज पर पौ फट रही थी और इधर लड़ाई खतम हुई···

शहर में अफ़वाह फैल गई कि यहूदियों का सफ़ाया करने की तैयारी हो रही है। आखिरकार यह अफ़वाह यहूदियों की उन छोटी-छोटी, नीची छतवाली झोंपड़ियों तक भी पहुँची जिनकी खिड़कियाँ टेढ़ी-मेढ़ी थीं और जो किसी तरह अटकी हुई थीं। इन बुरी तरह गुंजान बस्तियों में, कच्ची खोलाबाड़ियों में, ग़रीब यहूदी रहते थे।

जिस प्रेस में एक साल से ऊपर से सर्गेई ब्रुज़ाक काम कर रहा था, उसके कम्पोज़ीटर और दूसरे मज़दूर यहूदी थे। उनके और सर्गेई के दरम्यान दोस्ती के मज़बूत रिश्ते पैदा हो गये थे। एक सुसम्बद्ध परिवार की तरह वे अपने मालिक, खुशहाल और अपने में मगन मोटे-ताजे मिस्टर ब्लुमस्टाइन, का मुक़ाबिला कर रहे थे। मालिक और प्रेस-मज़दूरों में लगातार संघर्ष चल रहा था। ब्लुमस्टाइन सदा इसी कोशिश में रहता था कि ज़्यादा से ज़्यादा खुद हड़प ले और मज़दूरों को कम से कम पैसा दे। प्रेस के मज़दूरों ने कई बार हड़ताल की थी और प्रेस दो-तीन हफ़्ते बन्द रहा था। कुल चौदह मज़दूर थे। उनमें सबसे छोटा सर्गेई था, जो दिन में बारह घण्टे एक हैण्ड-प्रेस का पहिया घुमाता रहता था।

आज सर्गेई ने मज़दूरों में कुछ ऐसी बेचैनी देखी जिससे उसके मन में शंका हुई। पिछले कई गड़बड़ी के महीनों से प्रेस को "चीफ़ ऐटमन" की तरफ़ से जारी किये हुए ऐलानों को छापने के अलावा और कुछ काम नहीं था।

मेण्डेल नाम का एक कम्पोज़ीटर, जो दिक़ का मरीज़ था, सर्गेई को बुला कर एक कोने में ले गया।

अपनी उदास आँखों से इस लड़के को देखते हुए उसने कहा, "तुमको मालूम है, हमारे क़त्लेआम की तैयारी हो रही है?"

सर्गेई ने आश्चर्य से उसे देखा।

"मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम है।"

मेण्डेल ने अपना पीला मुरझाया हुआ हाथ सर्गेई के कन्धे पर रखा और बड़े-बूढ़े की तरह, राज़ की बात बतलाने के स्वर में कहा :

"हाँ, क़त्लेआम होने वाला है—यह बात सच है। यहूदियों को पीटा जायगा। मैं जानना यह चाहता हूँ कि इस मुसीबत में तुम अपने साथियों का साथ दोगे या नहीं?"

"ज़रूर दूँगा, जहाँ तक मेरे बस में होगा। मगर मैं कर क्या सकता हूँ, मेण्डेल?"

सारे कम्पोज़ीटर इस बातचीत को सुन रहे थे।

"तुम बड़े अच्छे लड़के हो, सर्योज़ा। हमें तुम पर भरोसा है। तुम्हारा बाप भी तो आख़िर हमारी ही तरह मज़दूर है। हम चाहते हैं कि तुम दौड़ कर अपने घर जाओ और अपने बाप से पूछो कि क्या वह कुछ बूढ़ों-बुढ़ियों को अपने घर में छिपा लेगा। उसका जवाब मिलने पर हम लोग तय करेंगे कि किसको कहाँ रखा जाय। अपने घर में तुम यह भी पूछना कि क्या उनकी जान में ऐसा और कोई मिल सकेगा जो यही काम करे। कम से कम रूसी लोग तो इस वक़्त इन डाकुओं के हाथ से बचे ही रहेंगे। फ़ौरन दौड़ जाओ सर्योज़ा, वक़्त बहुत कम है।"

"मेण्डेल, मुझ पर यक़ीन रखो। मैं फ़ौरन जाकर पावका और क्लिम्का से मिलता हूँ—उनके घरवाले ज़रूर कुछ लोगों को रख लेंगे।"

"ज़रा रुको," मेण्डेल ने सर्गेई को रोकते हुए चिन्ता के स्वर में पूछा, "यह पावका और क्लिम्का कौन हैं? तुम उन्हें अच्छी तरह जानते हो?"

सर्गेई ने विश्वास के साथ सिर हिलाया और कहा, "ज़रूर। वे मेरे लंगोटिया यार हैं। पावका कोर्चागिन का भाई मेकैनिक है।"

"अरे कोर्चागिन," मेण्डेल के मन की शंका दूर हो गई। बोला, "मैं उसको जानता हूँ—हम लोग साथ-साथ एक ही घर में रहते थे। हाँ, तुम कोर्चागिन के घर वालों से जाकर बातचीत कर सकते हो। जाओ सर्योज़ा, और जल्द से जल्द जवाब लेकर लौटो।"

सर्गेई बन्दूक से छूटी गोली की तरह सड़क पर जा निकला।

पावल्युक और गोलुब की टुकड़ियों में जो जम कर लड़ाई हुई थी उसके तीसरे रोज क़त्लेआम शुरू हुआ।

शेपेतोवका से खदेड़े जाने पर पावल्युक ने उसके पास-पड़ोस तक की जगह छोड़ दी थी और क़रीब के एक क़स्बे पर दख़ल कर लिया था। शेपेतोवका की उस रात की लड़ाई में उसके बीस आदमी मारे गये थे। गोलुब के भी इतने ही आदमी मारे गये थे।

मुर्दों को गाड़ियों पर लाद कर जल्दी से क़ब्रिस्तान ले जाया गया और बिना किसी समारोह के उसी दिन दफ़न कर दिया गया। समारोह होता भी तो किस बात का; इस समूचे काण्ड में गर्व करने जैसी तो कोई चीज न थी। दो ऐटमनों ने सड़क के कुत्तों की तरह लड़ना शुरू कर दिया था और किसी भी तरह का कोई समारोह बेहूदा मालूम होता। पालियानित्स्या ने जरूर चाहा था कि इसको एक बड़ी शकल दी जाय और पावल्युक को बोल्शेविक लुटेरा घोषित किया जाय, मगर कमेटी ने, जिसके प्रधान पादरी वासिली थे, इस बात का विरोध किया।

इस झगड़े से गोलुब की रेजिमेण्ट के लोग और ख़ासकर उसके अंगरक्षक भुनभुना रहे थे क्योंकि उन्हीं के सबसे ज़्यादा आदमी मारे गये थे। इस असन्तोष को ख़तम करने के लिए और उनके अन्दर फिर से जोश भरने के लिए, पालियानित्स्या ने क़त्लेआम का प्रस्ताव किया और गोलुब से कहा, "अच्छा रहेगा, इससे सिपाहियों का दिल बहल जायगा।" उसने तर्क पेश किया कि सैनिकों में जो आक्रोश है उसको देखते हुए यह चीज जरूरी है। और गो, कर्नल साहब शराबख़ाने वाले की लड़की से अपनी शादी के ठीक पहले शहर की शान्ति भंग नहीं करना चाहते थे, तो भी आख़िरकार उन्होंने अपनी रज़ामन्दी दे दी।

हुज़ूर कर्नल को इस काम में हिचक इसलिए भी थी कि कुछ ही दिन पहले वे सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी पार्टी में दाख़िल हुए थे। ऐसा करने से मुमकिन है उनके दुश्मन फिर से उनको बदनाम करते और उन्हें क़त्लेआम कराने वाला कहते। इसमें तो शक ही नहीं कि वे "चीफ़ ऐटमन" से ख़ूब नमक-मिर्च मिला कर उसकी बुराई करते। मगर यह भी सही है कि गोलुब अब तक "चीफ़" पर कुछ खास निर्भर नहीं था क्योंकि अपना ख़र्च वह खुद उठाता था। इसके अलावा, "चीफ़" को भी यह बात अच्छी तरह पता थी कि उसके नीचे कैसे-कैसे लुच्चे-लफंगे काम करते हैं और उसने खुद कई बार तथाकथित वसूली के पैसों में से डाइरेक्टरी के ख़र्च के लिए पैसे माँगे थे। जहाँ तक इस बात का सवाल था कि वह क़त्लेआम कराने वाला मशहूर हो जायगा, इसमें भी कोई नई बात न थी; इस सम्बन्ध में गोलुब की पहले से बहुत ख्याति थी और बड़े-बड़े कारनामे थे। इस काम से उसमें अब नया कुछ जुड़ने वाला न था।

यहूदियों का क़त्लेआम खूब सबेरे शुरू हुआ।

शहर अभी पौ फटने के ठीक पहले के धुँधलके में लिपटा हुआ था। यहूदी बस्ती के बेतरतीब बने हुए उन छोटे-छोटे घरों के इर्द-गिर्द गीले कपड़े की चिन्दियों की तरह लटकी हुई सूनी-सूनी सड़कें अभी बेजान थीं। चुस्त पर्दों में से बन्द खिड़कियाँ अपनी अन्धी आँखों से घूर रही थीं।

बस्ती को बाहर से देखने से मालूम होता था मानो वह सबेरे की गहरी नींद में हो। मगर, घरों के अन्दर कहीं नींद न थी। समूचे परिवार, पूरे-पूरे कपड़े पहने, आपस में सटे एक कमरे में बैठे हुए थे और आने वाली तबाही के लिए अपने आप को तैयार कर रहे थे। सिर्फ़ बच्चे, जो बहुत छोटे थे और नहीं समझ सकते थे कि यह सब क्या हो रहा है, अपनी माँओं की गोदों में चैन से सो रहे थे।

गोलुब की अंगरक्षक टुकड़ी का प्रधान, सलोमिगा, जिसका जिप्सियों जैसा स्याह रंग था और जिसके गाल पर तलवार के घाव का लाल दाग़ था, गोलुब के सहचर पालियानित्स्या को जगाने की बड़ी कोशिश कर रहा था और पालियानित्स्या उस दुःस्वप्न की पकड़ से अपने-आप को छुड़ा नहीं पा रहा था जिसने सारी रात उसको सताया था : वह अजीब तरह से मुँह बनाए, दाँत निकाले कूबड़वाला राक्षस अब भी उसकी गर्दन को अपने नाखूनी पंजों से दबोच रहा था। आख़िर-कार उसने आँखें खोलीं, अपना दर्द से फटता हुआ सिर उठाया और सलोमिगा को देखा।

सलोमिगा ने कन्धा पकड़ कर उसको हिलाते हुए कहा, "उठ भी, अलाल! काम का वक़्त है और तुम पड़े सो रहे हो। लगता है रात को ज़रा ज़्यादा चढ़ा गए थे।"

पालियानित्स्या अब अच्छी तरह जग गया था। वह उठ बैठा था और सीने में जलन होने से मुँह बना रहा था। अपने मुँह में इकट्ठा कड़वे थूक को उसने थूका।

सलोमिगा को खाली-खाली निगाहों से घूरते हुए उसने पूछा, "क्या काम है?"

"इन यहूदी हरामज़ादों का सफ़ाया जो करना है! भूल गए क्या?"

पालियानित्स्या को सारी बात याद हो आई। सचमुच, वह भूल गया था। फ़ार्म पर शराब का दौर चला था, जहाँ हुज़ूर कर्नल अपनी प्रेयसी और कुछ लंगोटिया यारों को लेकर मौज उड़ाने चले गए थे, वहीं वह सचमुच बहुत चढ़ा गया था।

गोलुब को क़त्लेआम के वक़्त शहर छोड़ कर चले जाना सुविधाजनक

मालूम हुआ क्योंकि तब अगर बाद में कोई बात उठती भी तो वह कह सकता था कि उसकी अनुपस्थिति में किसी ग़लतफहमी के कारण यह चीज़ हो गई है और इस बीच पालियानित्स्या को इस काम में खुल खेलने का पूरा मौक़ा था। इसमें शक नहीं कि "तबियत बहलाने" का प्रबन्ध करने में पालियानित्स्या माहिर था!

पालियानित्स्या ने अपने सिर पर एक बाल्टी पानी डाला जिससे उसके होश-हवास लौट आए। तरो-ताज़ा होकर हुक्म जारी करता हुआ वह हैडक्वार्टर में घूमने लगा।

अंगरक्षक टुकड़ी के सौ लोग अपने घोड़ों पर सवार हो चुके थे। किसी किस्म की कोई गड़बड़ी न हो, इसका विचार करके दूरदर्शी पालियानित्स्या ने ख़ास शहर और मज़दूरों की बस्ती और स्टेशन के बीच सन्तरी तैनात करने का हुक्म दे दिया था। सड़क के सामने लेशचिन्स्की के बाग़ीचे में एक मशीनगन लगा दी गई थी ताकि अगर मज़दूर कुछ गड़बड़ी करें तो उन पर गोली की बौछार की जा सके।

सारी तैयारियाँ पूरी हो जाने पर पालियानित्स्या और सलोमिगा अपने घोड़ों पर सवार हुए।

पालियानित्स्या ने चलते-चलते कहा, "रुको, मैं तो भूल ही गया था। गोलुब के लिए विवाह का उपहार लाने को हमें दो गाड़ियाँ भी तो ले लेनी चाहिए। हाः हाः हाः! हमेशा ही की तरह लूट का पहला माल कमाण्डर साहब के लिए और पहली लड़की····हाः हाः हाः····उनके अनुचर के लिए—यानी मेरे लिए। समझे कि नहीं बुद्धू राम?"

यह अन्तिम बात सलोमिगा को सम्बोधित करके कही गई थी जो अपनी पीली-पीली आँखों से उसे घूर रहा था।

"घबराओ मत, लड़कियों की कोई कमी न होगी, सबके लिए इन्तज़ाम हो जायगा।"

उन्होंने अपने घोड़ों को एड़ लगाई और घुड़सवारों के बेतरतीब गिरोह को लेकर आगे बढ़े।

कुहरा साफ़ हो गया था जब पालियानित्स्या ने एक दुमंज़िले मकान के सामने अपना घोड़ा रोका। मकान पर एक जंग-लगा साइन-बोर्ड लटक रहा था: "फुक्स, कपड़े वाला।"

उसकी पतली-पतली टाँगों वाली, भूरे रंग की घोड़ी गली में लगे हुए पत्थरों पर पैर पटकने लगी।

पालियानित्स्या ने घोड़ी पर से नीचे कूदते हुए कहा, "अच्छा तो अब यहीं से हम शुरू करेंगे, खुदा हाफ़िज़।"

अपने चारों तरफ़ घिरते हुए सिपाहियों की भीड़ को मुखातिब करते हुए उसने कहा, "अपने घोड़ों से उतरो, दोस्तो! अब खेल शुरू हो रहा है। मैं पहले ही तुमको बतला देना चाहता हूँ कि मैं नहीं चाहता कि अभी सिर-विर फोड़े जायें, उसका भी वक्त आयेगा। जहाँ तक लड़कियों की बात है, अगर मुमकिन हो तो शाम तक सब्र करो।"

एक आदमी ने अपने मज़बूत दाँत दिखलाते हुए आपत्ति की :

"और अगर हुज़ूर खोरूँजी, यह चीज़ दोनों की रज़ामन्दी से हो तब?"

बड़े ज़ोर का कहकहा पड़ा। पालियानित्स्या ने प्रशंसा और समर्थन की दृष्टि से उस आदमी को देखा जिसने यह बात कही थी।

"वह बात अलग है—रज़ामन्द हों तब फिर क्या बात है? तब फिर कैसा रुकना-रुकाना! इस चीज़ को कोई भी नहीं मना कर सकता है!"

पालियानित्स्या ने आगे बढ़ कर दूकान के बन्द दरवाज़े पर ज़ोर से ठोकर लगाई। मगर दरवाज़े के मोटे-मोटे मज़बूत ओक के पल्ले हिले तक नहीं।

ज़ाहिर है कि शुरू करने के लिए यह जगह ठीक न थी। पालियानित्स्या घूम कर फुक्स के घर के दरवाज़े की ओर बढ़ा। आगे बढ़ते हुए उसने तलवार को अपने हाथ का सहारा दिया। सलोमिगा उसके पीछे-पीछे था।

घर के अन्दर के लोगों ने बाहर पक्की सड़क पर घोड़ों की टाप की आवाज़ सुनी थी और जब यह आवाज़ दूकान के सामने आकर रुकी और सिपाहियों की आवाज़ें दीवार को भेद कर अन्दर पहुँचीं तो उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके दिल की धड़कन रुक गई हो और उनका शरीर अकड़ कर रह गया हो।

अमीर फुक्स एक रोज़ पहले ही अपनी बीवी और लड़कियों को लेकर शहर के बाहर चला गया था। केवल अपनी नौकरानी रीवा को जायदाद की देख-भाल के लिए वह पीछे छोड़ गया था। रीवा बहुत सीधी-सादी, उन्नीस साल की भीरु-सी लड़की थी। यह देख कर कि वह उस सूने मकान में अकेले रहने से डर रही है, फुक्स ने उससे कहा था कि जब तक वे लोग लौट न आवें तब तक के लिए वह अपने बूढ़े बाप और माँ को अपने संग रहने के लिए बुला ले।

रीवा ने जब डरते-डरते इसका प्रतिवाद करने की कोशिश की तो उस चालाक व्यापारी ने उसके आश्वासन के लिए कहा था कि शायद बहुत करके मार-काट होगी ही नहीं क्योंकि आखिरकार भिखमंगों से उन्हें मिलेगा क्या? और उसने रीवा से यह भी वादा किया कि लौटने पर वह उसकी पोशाक के लिए बहुत अच्छा कपड़ा देगा।

इस वक्त वे तीनों खड़े हुए डर के मारे काँप रहे थे। कोई आस न थी, मगर तब भी वे आस लगाये थे कि शायद घुड़सवार आगे निकल जायें; शायद समझने में उनसे भूल हुई थी, शायद यह उनका भ्रम था कि घोड़े उनके मकान के सामने रुके हैं। मगर दूकान के दरवाजे पर जो ठोकर लगी थी उसकी भारी गूँजों ने उनकी उम्मीदों को चूर कर दिया।

बूढ़ा, चाँदी जैसे बालों वाला पेईसाख, दरवाजे के पास खड़ा था। उसकी नीली-नीली आँखें सहमे हुए बच्चे की तरह माथे पर जा लगी थीं। एक कट्टर आस्तिक की तरह पूरे भावावेश से वह सर्वशक्तिमान जेहोवा की बुदबुदा कर प्रार्थना कर रहा था। वह भगवान् से प्रार्थना कर रहा था कि इस घर को संकट से बचा लो और उसके पास खड़ी हुई उसकी बूढ़ी स्त्री ने थोड़ी देर को, पास आते हुए क़दमों की आहट को नहीं सुना क्योंकि वह प्रार्थना के स्वर में खो गई थी।

रीवा भाग कर सबसे दूर वाले कमरे में चली गई थी और वहाँ ओक की लकड़ी के बड़े साइड-बोर्ड के पीछे छिप गई थी।

दरवाजे पर एक जबरदस्त, दरवाजे को जैसे तोड़ देने वाली चोट पड़ी, जिससे बूढ़े-बुढ़िया काँप गये।

"दरवाजा खोलो!" और फिर दूसरी चोट, पहले से भी ज़्यादा प्रबल, दरवाजे पर पड़ी और फिर गालियों की आवाजें सुनाई दीं।

मगर वे जो अन्दर थे, डर के मारे सुन्न पड़ गये थे और दरवाजे की कुण्डी खोलने के लिए हाथ नहीं उठा सके।

बाहर, दरवाजे पर राइफिल के कुन्दे बरस रहे थे। आखिरकार दरवाजा टूट गया।

मकान हथियारों से लैस आदमियों से भर गया। ये लोग मकान के कोने-कोने को छानने लगे। राइफिल के कुन्दे की एक चोट से दूकान के भीतर खुलने वाला दरवाजा टूट गया और फिर बाहर के दरवाजे की कुण्डियाँ भीतर से खोल दी गईं।

और फिर लूटपाट शुरू हुई।

जब गाड़ियाँ कपड़े की पेटियों, जूतों और लूट के दूसरे सामान से अच्छी तरह भर गईं तो सलोमिगा इनको लेकर गोलुब के क्वार्टर की तरफ़ रवाना हो गया। वहाँ से लौटने पर उसने घर के अन्दर से एक डरी हुई चीख निकलती सुनी।

पालियानित्स्या ने अपने आदमियों को दूकान लूटने के लिए छोड़ दिया था और खुद मालिक-मकान के घर के भीतर घुस गया था। वहाँ पर उसने उन

बूढ़े-बुढ़िया और उनकी लड़की को खड़े पाया। उनको अपनी हरी-हरी, बिल्ली जैसी आँखों से देखते हुए उसने बूढ़े दम्पति को डपट कर आदेश दिया :

"तुम लोग यहाँ से बाहर निकल जाओ !"

माँ-बाप दोनों में से कोई भी न हिला।

पालियानित्स्या एक क़दम आगे बढ़ा और धीरे-धीरे म्यान से अपनी तलवार निकाली।

"माँ !" वह लड़की दिल को हिला देने वाली आवाज़ में चिल्लाई। सलोमिगा ने इसी चीख़ को सुना था।

पालियानित्स्या अपने आदमियों की तरफ़ मुड़ते हुए, जो इस चीख़ को सुन कर वहाँ इकट्ठा हो गए थे, उन दोनों बुड्ढों की तरफ़ इशारा करके भौंक कर बोला :

"इन्हें बाहर फेंक दो !" जब यह काम पूरा हो गया तो उसने वहाँ उपस्थित सलोमिगा से कहा, "तुम यहाँ दरवाज़े पर ज़रा निगरानी रखो तब तक मैं उस छोकरी से दो बातें कर लूँ !"

लड़की दुबारा चिल्लाई। बूढ़ा पेइसाख़ कमरे के दरवाज़े की तरफ़ लपका। मगर उसकी छाती पर एक ज़बर्दस्त चोट लगी और वह पीछे की दीवार से जा टकराया। दर्द से उसका दम घुट रहा था। बूढ़ी माँ तोइबा, जो सदा इतनी शान्त और नम्र रहती थी, अब अपने बच्चे के लिए लड़ती हुई मादा भेड़िये की तरह सलोमिगा पर झपटी।

"मुझे अन्दर जाने दो ! तुम मेरी लड़की को क्या कर रहे हो ?"

वह दरवाज़े के पास पहुँचने के लिए ज़ोर लगा रही थी और सलोमिगा अपनी सारी कोशिश के बावजूद अपने कोट को उसकी बूढ़ी उंगलियों की गिरफ्त से छुड़ा नहीं पा रहा था।

पेइसाख़, जो अपनी चोट और दर्द के बाद अब तक होश में आ गया था, तोइबा की मदद के लिए आया।

"हमें अन्दर जाने दो ! अन्दर जाने दो ! हाय, मेरी बेटी !"

बूढ़े दम्पति ने अपनी मिली-जुली कोशिश से सलोमिगा को किसी तरह दरवाज़े से दूर ढकेल दिया था। सलोमिगा ने ग़ुस्से में आकर झटके के साथ अपना रिवाल्वर कमरबन्द से निकाला और उसके लोहे के हत्थे से बूढ़े के सफ़ेद सिर पर ज़ोर से चोट की। पेइसाख़ वहीं फ़र्श पर ढेर हो गया।

कमरे के अन्दर रीवा चीख़ रही थी।

जब तोइबा घसीट कर घर के बाहर की गई, उसका दिमाग़ काबू से बाहर

था और उसकी पागलों जैसी चीखों और मदद की पुकारों से सड़क गूँज रही थी।

घर के अन्दर पूर्ण शान्ति थी।

पालियानित्स्या कमरे के बाहर आया। सलोमिगा को बिना देखे, जिसका हाथ दरवाज़े के हैण्डिल पर जा चुका था, पालियानित्स्या ने उसको अन्दर जाने से रोका।

"बेकार है—मैंने तकिये से उसका मुँह बन्द करने की कोशिश की तो उसका दम घुट गया।" पेइसाख़ के जिस्म पर पैर रखते हुए उसको किसी स्याह चिपचिपी चीज का एहसास हुआ। यह और कुछ नहीं, पेइसाख का खून था।

बाहर जाते हुए उसने बुदबुदा कर कहा, "बोहनी ठीक नहीं हुई।"

दूसरे भी बिना एक शब्द बोले उसके पीछे-पीछे बाहर निकले और फ़र्श पर और सीढ़ियों पर अपने खून में डूबे पैरों की छाप छोड़ते गए।

शहर में लूट-पाट पूरे ज़ोर पर थी। उसी में कभी-कभी लुटेरे माल के बटवारे को लेकर जंगली जानवरों की तरह आपस में लड़ पड़ते और यहाँ-वहाँ तलवारें चमक उठतीं। घूँसे तो सभी जगह धड़ल्ले से चल रहे थे। बियर के सेलून में से पच्चीस गैलन वाले पीपे बाहर लुढ़का कर सड़क की पटरी पर इकट्ठे किये जा रहे थे।

फिर लुटेरों ने यहूदियों के घरों में घुसना शुरू किया।

कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। वे तमाम कमरों में गये, जल्दी-जल्दी एक-एक कोने को उल्टा-पल्टा और लूट का माल लाद कर चलते बने। अपने पीछे वे कुछ छोड़ गये थे तो कपड़ों के बिखरे हुए ढेर और तलवार की नोक से चिरे हुए गद्दों और तकियों के अन्दर से निकले हुए चिड़ियों के पर। पहले रोज तो सिर्फ़ दो जानें गईं : रीवा की और उसके बाप की; मगर आनेवाली रात अपने साथ मौत का अनिवार्य आतंक लेकर आई।

शाम तक भिश्तियों और भंगियों की जमात नशे में धुत पड़ी थी। पेतल्युरा के पागल सिपाही रात का इन्तज़ार कर रहे थे।

अंधेरे ने उनके रहे-सहे बन्धन भी खोल दिये। घुप्प अंधेरे में आदमी को ख़त्म करना आसान होता है; सियार भी अंधेरे के घण्टों को ज़्यादा पसन्द करते हैं।

शायद ही कोई कभी इन दो भयानक रातों और तीन दिनों को भूल सके। इस बीच न जाने कितनी जिन्दगियाँ पिसीं और लहू-लुहान हुईं, इन खूनी घड़ियों में न जाने कितने जवान सिरों के बाल सफ़ेद हुए, न जाने तीखे दर्द के कितने आँसू बहे! कहना मुश्किल है कि वे जो बच गये थे ज़्यादा सौभाग्यशाली थे—वे जो

ज़िन्दा तो बचे थे मगर जिनकी आत्मा लुट गई थी, वीरान हो गई थी, जिन्हें अपने अपमान और लुटी हुई इज़्ज़त की शर्म की दारुण यन्त्रणा खाये जा रही थी, जिन्हें अवर्णनीय दुःख कीड़े की तरह कुतर रहा था, दुःख अपने उन आत्मीयों और प्रियजनों के लिए जो अब कभी नहीं लौटेंगे। इस सबसे उदासीन, नौजवान लड़कियों के घायल, सताये हुए, टूटे हुए शरीर यन्त्रणा की अनेकानेक मुद्राओं में बाँहें पीछे की तरफ़ फेंके, सँकरी गलियों में पड़े थे।

सिर्फ़ एक जगह, नदी के सामने वाले मकान में जहाँ नाउम लोहार रहता था, उन गीदड़ों को, जो उसकी नौजवान बीवी सारा पर झपटे थे, करारा जवाब मिला। वह लुहार चौबीस साल का जवान मज़बूत आदमी था और उसकी लोहे की जैसी मांस-पेशियाँ वैसी ही थीं जैसी कि अपनी जीविका के लिए भारी हथौड़ा चलाने वाले किसी आदमी की होनी चाहिएँ। उस लोहार ने अपनी बीवी उनके हाथ नहीं पड़ने दी।

उस छोटी-सी झोंपड़ी में संघर्ष हुआ तो थोड़ी ही देर मगर बहुत भयानक। दो पैतल्युरा सिपाहियों का सिर सड़े हुए खरबूज़ों की तरह भुर्ता हो गया था। निराशा के भयानक क्रोध में वह लुहार दो जानों के लिए सिर पर कफ़न बाँध कर लड़ रहा था। बड़ी देर तक नदी किनारे से राइफ़िलें चलने की आवाज़ आती रही। ख़तरे का आभास पाकर तमाम लुटेरे वहाँ आ गये थे। जब उस लोहार के पास सिर्फ़ एक गोली बच रही तो उसने अपनी बीवी को गोली मार दी और सचमुच उस पर एहसान किया, फिर खुद संगीन हाथ में लेकर अपनी मौत का सामना करने बाहर निकल पड़ा। गोलियों की एक बौछार आई और उसका मज़बूत जिस्म अपने सामने वाले दरवाज़े के बाहर धरती पर ढेर हो गया।

आसपास के गाँवों के धनी समृद्ध किसान अपनी घोड़ा-गाड़ियों में, जिन्हें अच्छे तगड़े घोड़े खींच रहे थे, शहर के अन्दर आये। उन्होंने अपनी गाड़ियों में जो कुछ अच्छा लगा, लादा और गोलुब की सेना में काम करने वाले अपने बेटों और सम्बन्धियों के पहरे में जल्दी-जल्दी घर चले ताकि एक-दो फेरे और कर सकें।

सर्योजा ब्रुज़ाक जिसने अपने बाप के साथ प्रेस के आधे साथियों को तहख़ाने में और ऊपर वाली कोठरी में छिपाया था, बाग़ीचा पार करके घर आ रहा था जब उसने एक आदमी को लम्बा-सा, पैबन्द लगा कोट पहने, ज़ोरों से बांहें हिलाते सड़क पर भागते देखा।

यह एक बूढ़ा यहूदी था और इस नंगे-सिर हाँफ़ते हुए आदमी के पीछे-पीछे, जिसके चेहरे को डर के मारे लकवा-सा मार गया था, एक पेतल्युरा सिपाही अपने भूरे रंग के घोड़े पर सवार सरपट चला आ रहा था। उनके बीच का फ़ासला

तेजी से कम होता जा रहा था, यहाँ तक कि घुड़सवार अपने शिकार को तलवार से काट देने के लिए अपनी काठी से आगे की ओर झुका। अपने पीछे घोड़े की टापें सुन कर बूढ़े ने जैसे चोट रोकने के लिए हाथ ऊपर को उठाया। उसी वक्त सर्योंजा कूद कर सड़क पर आ गया और उस बूढ़े को बचाने के लिए उसने खुद को घोड़े के आगे डाल दिया।

"उसे छोड़ दे! कुत्ता, लुटेरा कहीं का!"

घुड़सवार ने नीचे गिरती हुई तलवार को रोकने की कोई कोशिश न की और तलवार अपनी उल्टी तरफ़ से लड़के के सुनहरे बालों वाले सिर पर गिरी।

पाँचवाँ अध्याय

बोल्शेविक फ़ौजें "चीफ़ ऐटमन" पेतल्युरा की टुकड़ियों पर ज़बर्दस्त दबाव डाल रही थीं और इसलिए गोलुब की रेजिमेण्ट को मोर्चे पर बुला लिया गया। शहर में सिर्फ़ कुछ रियरगार्ड टुकड़ियाँ और कमाण्डैण्ट के कुछ खास अपने सिपाही रह गये।

लोगों में हरकत पैदा हुई। इस अस्थायी शान्ति का फ़ायदा उठा कर यहूदी आबादी ने अपने मुर्दा लोगों को दफ़ना दिया और यहूदी बस्ती की छोटी-छोटी झोंपड़ियों में ज़िन्दगी एक बार फिर लौट आई।

खामोश शामों को गोली-गोले चलने की अस्पष्ट आवाज़ दूर से सुनाई पड़ती थी; कहीं पास में ही लड़ाई चल रही थी।

स्टेशन पर रेलवे मज़दूर अपनी नौकरियों को छोड़ कर काम की तलाश में गाँवों की तरफ़ जा रहे थे।

हाई स्कूल बन्द कर दिया गया था।

शहर में मार्शल-लॉ जारी कर दिया गया था।

यह एक काली वीभत्स डरावनी रात थी, ऐसी रात जब चाहे जितना जोर डालो आँखें अंधेरे को चीर नहीं पातीं, ऐसे में आदमी अंधेरे में राह टटोलता हुआ घूमता है और हर वक्त उसे डर बना रहता है कि वह किसी गड्ढे में जा गिरेगा और उसका काम तमाम हो जायगा।

भद्र लोग जानते हैं कि ऐसे समय अँधेरे में घर पर बैठने में ही खैरियत है ! अगर उसका बस चले तो भद्र नागरिक घर में लैम्प भी न जलाये क्योंकि रोशनी से अनचाहे अतिथि खिचकर आ सकते हैं। अंधेरा ही अच्छा है, हिफ़ाजत तो रहती है। होने को ऐसे भी लोग होते हैं जो हमेशा अस्थिर रहते हैं—उनका जी चाहे तो वे बाहर निकलें, मगर भद्र नागरिक को इससे बहस नहीं। वह खुद बाहर जाने का खतरा नहीं उठायेगा—किसी क़ीमत पर नहीं।

यह ऐसी ही एक रात थी। मगर फिर भी, एक आदमी सड़क पर चला जा रहा था।

कोर्चागिन के मकान पर पहुँच कर उसने सावधानी से खिड़की पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं मिला। उसने दुबारा दस्तक दी—इस बार ज़्यादा ज़ोर से और कई बार।

पावेल सपना देख रहा था कि एक अजीब सा प्राणी, जो आदमी तो किसी तरह नहीं है, उसके ऊपर मशीनगन का निशाना साध रहा है; वह भाग जाना चाहता था, मगर भाग कर जाने के लिए कोई जगह न थी और मशीनगन बहुत भयानक स्वर में कड़कड़ा रही थी।

वह जागा तो उसने खिड़की को खड़खड़ाते सुना। कोई दस्तक दे रहा था।

पावेल कूद कर बिस्तर से उतरा और यह देखने के लिए कि कौन है, खिड़की के पास पहुँचा, मगर उसे वहाँ एक धुँधली, काली आकृति के अलावा और कुछ न दिखाई दिया।

वह घर में बिल्कुल अकेला था। उसकी माँ उसकी सबसे बड़ी बहन के यहाँ चली गई थी जिसका पति शकर के कारखाने में मेकैनिक था। आर्तेम पास के गाँव में लुहार का काम कर रहा था; अपनी जीविका के लिए हथौड़ा चला रहा था।

मगर फिर भी आर्तेम के अलावा दूसरा हो भी कौन सकता है।

पावेल ने खिड़की खोलने का निश्चय किया।

उसने अंधेरे में कहा, "कौन है ?"

खिड़की के बाहर कुछ गति हुई और एक रुंधी हुई आवाज़ ने जवाब दिया :

"मैं हूँ, जुखराई।"

खिड़की की देहली पर दो हाथ रखे हुए थे और फिर फ़्योदोर का सिर ऊपर उठा और पावेल के चेहरे की बराबरी में आ गया।

जुखराई ने फुसफुसा कर कहा, "मैं तुम्हारे संग रात गुजारने आया हूँ। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं, कामरेड ?"

पावेल ने आन्तरिक स्नेह से जवाब दिया, "कैसी बात करते हो। तुम जानते हो कि यहाँ पर सदा तुम्हारा स्वागत है। कूद कर अन्दर आ जाओ।"

फ़ियोदोर ने थोड़ी सी खुली हुई खिड़की में से संकस कर अपने विशाल शरीर को अन्दर किया।

उसने खिड़की तो बन्द कर दी, मगर तत्काल वहाँ से हटा नहीं। वह ग़ौर से सुनता खड़ा रहा और जब चाँद बादलों के पीछे से बाहर आया और सड़क दिखने लगी तो उसने बहुत ध्यान से सड़क को देखा। फिर वह पावेल की तरफ़ मुड़ा और बोला :

"तुम्हारी माँ को हम लोग न जगायेंगे, है न ?"

पावेल ने उसे बतलाया कि घर में उसको छोड़ कर और कोई नहीं है। यह सुन कर मल्लाह को और इतमीनान हुआ और वह पहले से कुछ ऊँची आवाज में बोलने लगा।

"अब वे हत्यारे सचमुच जी-जान से मेरे पीछे लगे हैं, दोस्त। स्टेशन पर जो कुछ हुआ था उसी के बाद से सब मेरे पीछे पड़े हैं। अगर कहीं हमारे लोगों ने जरा और हिम्मत दिखलाई होती तो हमने क़त्लेआम के दौरान में उन भूरे कोट वालों को अच्छा मजा चखाया होता। मगर असल बात यह है कि लोग अभी आग में कूदने के लिए तैयार नहीं हैं। इसीलिए, इस सब का कोई नतीजा नहीं निकला। अब सब मेरी तलाश में हैं और मेरे लिए दो बार जाल डाल चुके हैं—आज तो मैं बाल-बाल बचा। पीछे के रास्ते से मैं घर जा रहा था और पीछे मुड़ कर देखने के लिए शेड पर रुका ही था कि एक पेड़ के पीछे से एक संगीन निकली हुई मुझे दिखाई दी। मैं लौट पड़ा और सीधे तुम्हारे यहाँ आया। अगर तुम्हें कोई एतराज न हो तो कुछ दिन के लिए मैं यहीं लंगर डाल दूँ। ठीक है न, दोस्त ? बहुत अच्छा।"

अभी भी जुखराई की साँस भारी चल रही थी। उसने अपने कीचड़ में सने जूते उतारने शुरू किए।

पावेल खुश था कि जुखराई आ गया है। पिछले कई दिनों से बिजली घर काम नहीं कर रहा था और पावेल को अपने वीरान घर में बहुत सूना-सूना लगता था।

दोनों सोने चले गये। पावेल तो फ़ौरन सो गया, मगर फ़ियोदोर बहुत देर तक बिस्तर में लेटा-लेटा सिगरेट पीता रहा। फिर वह उठा और नंगे पैर, पंजों के

बल, खिड़की तक गया और बड़ी देर तक सड़क को देखता रहा। आखिरकार थकान से चूर होकर वह लेट गया और सो गया, मगर उसका हाथ अपने भारी "कोल्ट" पिस्तौल के हत्थे पर ही था जिसे उसने अपने तकिये के नीचे रख लिया था और जिसको उसके शरीर की गरमी मिल रही थी।

जुखराई का उस रात का अप्रत्याशित आगमन और फिर वे आठ दिन जो उसने जुखराई के संग बिताये थे, उन्होंने पावेल की सारी जिन्दगी की धारा पर असर डाला। उस मल्लाह ने उसे सबसे पहले उन अनेक चीजों में अन्तर्दृष्टि दी जो नई थीं, गतिशील थीं, महत्वपूर्ण थीं।

जुखराई के लिए दो बार जो घातें लगाई गई थीं, उन्होंने जुखराई को घर में छिप कर बैठने के लिए मजबूर किया। उसने इस तरह मजबूर होकर बेकार बैठे रहने की स्थिति का सदुपयोग करते हुए, पीले-और-नीले झण्डे वाले लुटेरों के खिलाफ़, जो सारे इलाक़े का गला दबोचे हुए थे, अपना सारा गुस्सा और जलती हुई नफ़रत उत्सुक पावेल के मन में उंड़ेल दी।

जुखराई जो जबान बोलता था वह सीधी थी, साफ़ थी और आँखों के सामने चित्र खड़ा कर देती थी। उसके मन में कोई संशय नहीं थे, उसे अपनी राह अपने सामने साफ़-साफ़ फैली दिखाई पड़ती थी और पावेल की समझ में यह बात आ गई कि यह सब जो बड़े-बड़े नामोंवाली बीसों राजनीतिक पार्टियाँ हैं—सोशलिस्ट रेवोल्यूशनरी, सोशल डेमोक्रैट, पोलिश सोशलिस्ट—सब असल में मजदूरों की जानी दुश्मन ही हैं और अमीरों के खिलाफ़ मजबूती से लड़ने वाली क्रान्तिकारी पार्टी केवल बोल्शेविक पार्टी है।

पहले पावेल का दिमाग़ इन सब चीजों के बारे में बुरी तरह उलझा हुआ था।

और इस तरह इस पक्के, मजबूत दिल वाले बाल्टिक सागर के मल्लाह ने, जो समुन्दरी हवाओं पर पला था, जो पक्का बोल्शेविक था, १६१५ से बोल्शेविक पार्टी का सदस्य था, पावेल को जीवन के कटु सत्य बतलाये और भट्ठी झोंकने वाला लड़का पावेल स्तब्ध होकर सब बातें सुनता रहा।

जुखराई ने कहा, "मैं जब तुम्हारी उम्र का था, दोस्त, तो मैं भी तुम्हारी ही तरह था। मेरी समझ ही में नहीं आता था कि मैं अपनी शक्ति का क्या करूँ, मैं भी एक बेचैन नौजवान था, हर वक़्त सरकशी के लिए तैयार। मैं ग़रीबी ही में पला और बढ़ा। कभी-कभी शहर के रईसों के लाड़ से बिगड़े हुए, मोटे-ताजे लड़कों को देख कर मेरी आँखों में खून उतर आता था। अक्सर मैं उनकी

खूब अच्छी मरम्मत करता। मगर इसका नतीजा कुछ और न निकलता सिवा इसके कि घर आने पर बापजान कस कर मेरी मरम्मत करते। इस तरह से अकेले लड़ने से दुनिया थोड़े ही बदली जा सकती है। तुममें पावलूशा मज़दूर जमात के हक़ में लड़ने वाले सिपाही के तमाम गुण हैं, बस तुम अभी बहुत छोटे हो और वर्ग-संघर्ष के बारे में ज़्यादा नहीं जानते। मगर दोस्त, मैं तुमको ठीक रास्ते पर लगा दूँगा क्योंकि मै जानता हूँ कि तुम अच्छे लड़ाके निकलोगे। मेरी उन लोगों से नहीं बनती जो अपने तुच्छ सुख के पीछे पागल रहते हैं और बस आराम से दिन गुज़ार देना चाहते हैं। इस वक़्त सारी दुनिया में आग लगी हुई है। अब तक के गुलामों ने सिर उठाया है और पुरानी ज़िन्दगी का बेड़ा गर्क करना ही होगा। मगर इसके लिए मज़बूत इरादे के लोगों की ज़रूरत है, कमज़ोर लड़कियों-जैसों की नहीं जो लड़ाई शुरू होने पर झींगुरों की तरह अपने बिलों में घुस जायेंगे। हमें चाहिए मज़बूत लोग जो निर्मम होकर लड़ सकें।"

उसकी बँधी हुई मुट्ठी ज़ोर से मेज़ पर गिरी।

वह उठ खड़ा हुआ। उसकी त्योरियों में बल पड़ गये और वह जेब में खूब अन्दर तक हाथ डाले कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

अपनी बेकारी उसे खल रही थी। उसे इस बात का बड़ा अफ़सोस था कि वह शहर में रुक गया था। उसे यक़ीन हो गया था कि शहर में अब और रुकने में कोई तुक नहीं है और उसने पक्का इरादा कर लिया था कि लाल टुकड़ियों से जा मिलने के लिए वह लड़ाई के मोर्चे को पार करेगा।

तय पाया गया था कि नौ पार्टी मेम्बरों का दल काम को जारी रखने के लिए शहर में रहेगा।

"मेरे बग़ैर उनका काम चल जायगा। मैं अब और बेकार नहीं बैठ सकता। यों ही मैं दस महीने बर्बाद कर चुका हूँ," जुखराई ने खीझते हुए सोचा।

"सच बतलाओ फ़ियोदोर, तुम क्या हो?" पावेल ने एक बार उससे पूछा।

जुखराई उठ खड़ा हुआ और हाथ जेब के अन्दर डाल लिये। इस सवाल का मतलब एकाएक उसकी समझ में नहीं आया।

"तुम नहीं जानते?"

पावेल ने मद्धिम आवाज़ में कहा, "मेरे ख़याल से तुम बोल्शेविक या कम्युनिस्ट हो।"

जुखराई ठठाकर हँस पड़ा और चुस्त, धारीदार जरसी से ढँकी अपनी खूब चौड़ी छाती पर हाथ मारा।

"तुमने ठीक कहा, दोस्त! यह बात उतनी ही ठीक है जितनी यह कि

बोल्शेविक और कम्युनिस्ट एक ही होते हैं।" फिर वह एकाएक गम्भीर हो गया। "लेकिन तुमने जब यह बात समझ ली है तो इसे अपने ही तक रखना। अगर तुम यह नहीं चाहते कि मैं पकड़ा जाऊँ तो इसे किसी से या किसी जगह मत कहना। समझे?"

पावेल ने दृढ़ता से जवाब दिया, "हाँ, मैं समझ गया।"

बाहर सहन में आवाजें सुनाई दीं और किसी ने बिना पहले दस्तक दिये धक्का देकर दरवाजे को खोला। जुखराई का हाथ झट उसकी जेब में चला गया, मगर फिर बाहर आ गया जब उसने कमजोर और पीले सर्गेई ब्रुजाक को सिर में पट्टी बाँधे कमरे में दाखिल होते देखा। ब्रुजाक के पीछे-पीछे वालिया और क्लिम्का थे।

सर्गेई ने पावेल से हाथ मिलाते हुए मुस्करा कर कहा, "कहो प्यारे, क्या हाल-चाल हैं? हम तीनों ने तय किया कि चलें, तुमसे मिल आयें। वालिया मुझे अकेले बाहर निकलने देने के लिए तैयार न थी और क्लिम्का को वालिया के अकेले निकलने से डर लगता है। क्लिम्का का सिर भले लाल हो, मगर वह जानता है कि उसे क्या करना चाहिए!"

वालिया ने खिलएडरेपन से सर्गेई के मुँह पर हाथ रख दिया और हँसते हुए बोली, "किस क़दर बातूनी है! आज इसने क्लिम्का को ज़रा चैन नहीं लेने दिया।"

क्लिम्का भी खुश होकर मुस्कराया और उसके सफ़ेद दाँतों की पाँत दिखाई दी।

"बीमार आदमी के संग और किया ही क्या जा सकता है? देखते हो न, दिमाग में ज़रा ख़लल है!"

सब हँसने लगे।

सर्गेई, जो तलवार की चोट के असर से अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुआ था, पावेल के बिस्तर पर बैठ गया और फिर सब नौजवान दिलचस्प बातचीत में डूब गये। सर्गेई, जो आम तौर पर बड़ा खुशदिल और हँसोड़ था, आज चुप और बुझा-बुझा सा बैठा था। उसने पेतल्युरा सिपाही से अपनी मुठभेड़ की बात जुखराई को बतलाई।

जुखराई इन तीनों नौजवानों को जानता था क्योंकि वह कई बार ब्रुजाक के घर जा चुका था। उसे ये लड़के बहुत पसन्द थे; संघर्ष के भंवर में अभी उन्हें अपनी जगह नहीं मालूम थी, मगर अपने वर्ग की आकांक्षाएँ उनमें कैसी अच्छी रह व्यक्त थीं! उसने बहुत दिलचस्पी से उनके बयानों को सुना कि उन्होंने किस

तरह यहूदी परिवारों को मार-काट से बचाने के लिए उनको शरण देने में मदद पहुँचाई। उस शाम को जुख़राई ने उन लड़कों को बोल्शेविकों और लेनिन के बारे में बहुत कुछ बतलाया और इस तरह होने वाली घटनाओं को समझने में उन्हें मदद पहुँचाई।

पावेल के अतिथि काफ़ी वक्त गये विदा हुए।

जुख़राई हर शाम बाहर निकल जाता था और बहुत रात गये लौटता था। शहर छोड़ने के पहले उसे अपने उन साथियों के संग बहुत सी बातों का फ़ैसला करना था जो शहर में रुकने वाले थे, यानी यह कि क्या काम करना होगा और कैसे करना होगा।

इस ख़ास रात को जुख़राई वापस नहीं आया। पावेल जब सबेरे उठा तो उसने एक झलक में ही देख लिया कि मल्लाह के बिस्तर में रात को कोई सोया नहीं था।

पावेल के मन में अस्पष्ट-सी आशंका जगी। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और घर के बाहर निकल गया। दरवाजे में ताला लगा कर और चाभी को हमेशा की जगह रख कर वह क्लिम्का के घर गया। उसे उम्मीद थी कि क्लिम्का को फ़ियोदोर की कुछ-न-कुछ ख़बर जरूर होगी। क्लिम्का की माँ, जो एक मोटी-सी स्त्री थी और जिसके चौड़े चेहरे पर चेचक के गहरे-गहरे दाग़ थे, कपड़े धो रही थी। पावेल ने उससे पूछा कि क्या उसे मालूम है फ़ियोदोर कहाँ है?

क्लिम्का की माँ ने चिड़चिड़ा कर जवाब दिया, "मुझे क्या और कोई काम ही नहीं है कि मैं बस तुम्हारे फ़ियोदोर पर निगाह रखा करूँ! यह सब उसी के कारण है—नाश हो उसका—उस जोजलिखा ने घर को उलट-पुलट कर रख दिया। उससे तुम्हें क्या काम है? अजीब ही आदमी है, अगर मेरी राय पूछो तो क्लिम्का और तुम और बाक़ी सब, तुम सभी एक से हो....." वह गुस्से के साथ फिर कपड़े धोने में लग गई।

क्लिम्का की माँ बदमिज़ाज औरत थी जो काट खाने दौड़ती थी....

क्लिम्का के घर से पावेल सर्गेई के यहाँ गया। वहाँ भी उसने अपने मन के डर को सामने रखा।

वालिया बोली, "तुम इतने परेशान क्यों हो? हो सकता है वह किसी दोस्त के यहाँ रुक गये हों।" मगर उसके शब्दों में स्वयं ही विश्वास की कमी थी।

पावेल बहुत उद्विग्न हो रहा था और ब्रुज़ाक के घर ज़्यादा देर तक ठहरना उसके लिए मुमकिन न था। वे लोग उसे रोकते ही रहे कि खाना खाकर जाओ, मगर वह चला गया।

वहाँ से वह सीधे घर लौटा, इस उम्मीद में कि यहाँ जुख़राई मिल जायगा।

दरवाजे में ताला बन्द था। पावेल कुछ देर बाहर खड़ा रहा। उसका दिल भारी था। उस सूने वीरान घर में जाने के ख़याल से ही उसे तक़लीफ़ होती थी।

कुछ मिनट तक वह गहरे सोच में डूबा हुआ हाते में खड़ा रहा। फिर एकाएक आवेग से प्रेरित होकर शेड के अन्दर चला गया। वह छप्पर पर चढ़ा और उसके नीचे से मकड़ी के जालों को अलग करते हुए उस गुप्त जगह से चीथड़ों में लिपटा हुआ भारी "मानलिकर" रिवाल्वर निकाला।

वह शेड से बाहर आया और स्टेशन की तरफ़ चला। जेब में रखे हुए रिवाल्वर के स्पर्श से उसे एक अजीब सा आनन्द मिल रहा था।

मगर स्टेशन पर जुखराई की कोई ख़बर न मिली। लौटते हुए जंगलों के हाकिम के बागीचे के पास पहुँच कर, जो कि अब उसका बहुत परिचित था, उसके क़दम धीमे हो गये। न जाने किस उम्मीद से उसने आँख उठा कर घर की खिड़कियों को देखा, मगर यह घर भी बागीचे ही की तरह बेजान था। बागीचा पार कर चुकने पर उसने पीछे मुड़ कर उसके रास्तों पर निगाह डाली। वे रास्ते पिछले साल की झड़ी हुई पत्तियों से ढँके हुए थे। वह जगह उजड़ी हुई और उपेक्षित दिखलाई देती थी—किसी परिश्रमी हाथ की कोई छाप यहाँ पर न थी। उस बड़े से पुराने मकान की मृतवत नीरवता ने पावेल को और भी उदास बना दिया।

तोनिया से उसका आखिरी झगड़ा सबसे तेज़ रहा था। क़रीब एक महीने पहले यों ही अप्रत्याशित रूप से सब कुछ हो गया था।

शहर की तरफ़ धीरे-धीरे लौटते हुए उसने अपने हाथ जेब में डाल लिये। और उस वक़्त पावेल को झगड़े की तमाम बातें याद आने लगीं।

सड़क पर अचानक उनकी मुलाक़ात हो गई थी और तोनिया ने उसे अपने घर आने की दावत दी थी।

"पिताजी और माँ बोलशान्स्की के यहाँ एक सालगिरह की पार्टी में जा रहे हैं और मैं अकेली रहूँगी। तुम क्यों नहीं आ जाते, पावलूशा? मेरे पास एक बहुत रोचक किताब है जिसे हम लोग साथ-साथ पढ़ेंगे—लिओनिद आन्द्रीएव की *साश्का ज़िगुलिओव*। मैं उसे खतम कर चुकी हूँ, मगर तुम्हारे संग बैठ कर दुबारा पढ़ना चाहती हूँ। बड़ी अच्छी शाम रहेगी। आओगे?"

सुनहरे बालों पर पहनी हुई सफ़ेद टोपी के नीचे से उसकी बड़ी-बड़ी पूरी खुली आँखें आतुरता से उसकी ओर देख रही थीं।

"मैं आऊँगा।"

इसके बाद वे अलग हो गये।

पावेल भाग कर अपनी मशीनों के पास गया और इस खयाल से ही कि उसकी एक पूरी शाम तोनिया के संग गुजरेगी, आतिशदान की लपटें और तेजी से जलने लगीं और जलती हुई लकड़ी के कुन्दे हमेशा से ज़्यादा मस्ती से चिटखने लगे।

उस समय जब पावेल ने तोनिया के मकान के दरवाजे पर दस्तक दी और तोनिया ने दरवाजा खोला तो पावेल ने उसे कुछ हैरान और परेशान पाया।

तोनिया ने कहा, "मेरे यहाँ आज मिलने वाले आये हुए हैं। मुझे उनकी उम्मीद नहीं थी, पावलूशा। मगर तुम तो आओ ही।"

पावेल लौट जाना चाहता था और दरवाजे की तरफ़ मुड़ा।

तोनिया ने उसकी बाँह पकड़ते हुए कहा, "चलो न अन्दर। तुमको जानना उनके लिए अच्छा ही साबित होगा। और पावेल की कमर में बाँह डाल कर तोनिया उसको खाने के कमरे में होकर अपने कमरे में ले गई।

कमरे में दाखिल होते हुए वह वहाँ पर बैठे लोगों की तरफ़ मुड़ी और मुस्कराई।

"मैं आप लोगों को अपने दोस्त पावेल कोर्चागिन से मिलाना चाहती हूँ।"

कमरे के बीचोबीच उस छोटी सी मेज के इर्द-गिर्द तीन लोग बैठे थे: लिज़ा सुखार्को, एक खूबसूरत, मद्धिम रंग की हाई-स्कूल की छात्रा जिसका मुँह छोटा सा था और ओंठ खूबसूरत अन्दाज में ज़रा बाहर को निकले हुए थे, बाल खूबसूरती से संवारे हुए; और एक दुबला पतला नौजवान जो अच्छा सिला हुआ काले रंग का कोट पहने था, उसके बाल तेल से चमक रहे थे और उसकी भूरी आँखों में एक अजब खालीपन का भाव था; और इन दोनों के बीच स्कूली यूनिफार्म की छैलों जैसी जाकट पहने विक्टर लेशचिन्स्की बैठा था। तोनिया ने दरवाजा खोला तो पावेल ने सबसे पहले इसी को देखा था।

लेशचिन्स्की ने भी कोर्चागिन को फ़ौरन पहचान लिया और उसकी खूबसूरत कमानीदार भवें कुछ अचरज के साथ उठीं।

कुछ देर तक पावेल दरवाजे पर खामोश खड़ा विक्टर को शत्रुता के भाव से देखता रहा जिसको छिपाने की भी उसने कोई कोशिश नहीं की। तोनिया ने इस भद्दी खामोशी को तोड़ने के खयाल से फ़ौरन पावेल को अन्दर आने के लिए कहा और परिचय कराने के लिए लिज़ा की तरफ़ मुड़ी।

लिज़ा सुखार्को, जो आगन्तुक को बहुत दिलचस्पी से देख रही थी, अपनी कुर्सी से उठी।

मगर पावेल तेजी से घूम पड़ा और अंधेरे-अंधेरे से खाने के कमरे में होता

हुआ सामने के दरवाज़े की तरफ़ चल दिया। वह बरसाती तक पहुँचा था कि तोनिया ने जाकर उसका कन्धा पकड़ लिया।

"तुम भागे क्यों जा रहे हो! मैं ख़ास तौर पर उनको तुम से मिलाना चाहती थी।"

पावेल ने अपने कन्धों पर से उसके हाथ अलग कर दिये और तेज़ स्वर में बोला:

"मैं नहीं चाहता कि उस काठ के पुतले के आगे मेरी नुमायश की जाय। मैं उनमें से नहीं हूँ—तुम्हें भले ही वे अच्छे लगते हों, मुझे तो उनसे नफ़रत है। अगर मुझे मालूम होता कि ये लोग तुम्हारे दोस्त हैं तो मैं आता ही नहीं।"

तोनिया ने अपने उठते हुए गुस्से को दबाते हुए उसको टोका:

"इस तरह मुझसे बात करने का तुम्हें क्या हक़ है! मैं तो तुमसे नहीं पूछती कि तुम्हारे दोस्त कौन हैं और कौन तुमसे मिलने आता है, कौन नहीं आता?"

"मुझे इससे कोई बहस नहीं कि तुम किनसे मिलती हो। मैं तो बस यह कह रहा हूँ कि मैं अब यहाँ कभी नहीं आऊँगा," पावेल ने सामने की सीढ़ियों पर उतरते हुए तड़ाक से जवाब दिया। दौड़ कर वह बागीचे के फाटक पर पहुँच गया।

तभी से तोनिया से उसकी मुलाक़ात नहीं हुई थी। मार-काट के दिनों में जब एलेक्ट्रीशियन के साथ मिल कर उसने एक बिजली के कारखाने के यहूदी परिवारों को शरण दी थी, इसी बीच वह अपने झगड़े की बात भूल गया था और आज उससे मिलना चाहता था।

जुखराई के ग़ायब हो जाने से और इस विचार से कि घर पर कोई नहीं है, पावेल का मन खिन्न और उदास हो गया था। उसके सामने सड़क का भूरा विस्तार फैला हुआ था। बसन्त के दिनों का कीचड़ अभी सूखा नहीं था और सड़क पर तमाम गड्ढे ही-गड्ढे हो गए थे जिनमें बादामी रंग का कीचड़ भरा था। सामने एक घर था जिसकी दीवारों का पलस्तर झड़ रहा था जिससे वह बहुत खस्ताहाल नज़र आता था। वह घर सड़क के पक्के फुटपाथ के सिरे तक आगे को निकला हुआ था। वहीं से सड़क की शाख फूटती थी।

विक्टर लेशचिन्स्की एक टूटी-फूटी दूकान के सामने सड़क के चौराहे पर लिज़ा से विदा ले रहा था। दूकान के दरवाज़े चूर-चूर हो रहे थे और उस पर लेमनेड सोडा का एक साइन-बोर्ड उलटा लटक रहा था।

विक्टर ने लिज़ा का हाथ अपने हाथ में पकड़े हुए और अपनी याचना-भरी आँखों से उसकी आँखों में देखते हुए कहा :

" तुम आओगी न ! धोखा तो नहीं दोगी ?"

लिज़ा ने नख़रे के साथ कहा, " ज़रूर आऊँगी । मेरा इन्तज़ार करना ।"

और उससे विदा होते हुए लिज़ा अपनी धुँधली-धुँधली सुर्खी-मायल बादामी आँखों में वादा भर कर मुस्कराई ।

सड़क पर कुछ गज आगे लिज़ा ने दो आदमियों को एक मोड़ के पीछे से सड़क पर आते देखा । आगे वाला आदमी खूब तगड़ा था, उसका चौड़ा-सा सीना था और वह मज़दूरों के कपड़े पहने हुए था, उसकी खुली हुई जाकट के नीचे धारीदार जर्सी दिखलाई दे रही थी, एक काली टोपी उसके माथे तक नीचे को खिंची हुई थी और उसके पैरों में ब्राउन रंग के जूते थे । उसकी आँख के नीचे एक स्याह दाग़ था ।

वह आदमी मज़बूत क़दमों से, मगर कुछ लुढ़कता हुआ सा, चल रहा था ।

उससे तीन क़दम पीछे भूरे रंग का कोट पहने और अपनी पेटी में कारतूस रखने के दो जेब लगाये एक पेतल्युरा सिपाही चला आ रहा था । उसकी संगीन आगे वाले आदमी की पीठ को लगभग छू रही थी । सिपाही भेड़ के ऊन की खूब बालों वाली टोपी पहने था और टोपी के नीचे उसकी दो छोटी-छोटी सतर्क आँखें अपने क़ैदी के सिर के पिछले हिस्से को देख रही थीं । उसके चेहरे पर पीली-पीली मूँछें थीं जिन पर तम्बाकू के धब्बे थे ।

लिज़ा ने अपनी चाल कुछ धीमी कर दी और सड़क पार करके दूसरी तरफ़ चली गई । ठीक उसी वक़्त उसके पीछे से पावेल निकल कर बड़ी सड़क पर आ गया ।

जैसे ही वह उस पुराने घर के पास से गुज़रा और वहाँ से दाहिने को मुड़ा, उसने भी उन दोनों आदमियों को अपनी तरफ़ आते देखा ।

पावेल चौंककर रुक गया और ऐसे खड़ा रहा जैसे किसी ने उसे ज़मीन में गाड़ दिया हो । गिरफ़्तार आदमी और कोई नहीं जुख़राई था ।

" अच्छा, इसीलिए वह घर नहीं लौटा !"

जुख़राई अधिकाधिक निकट आता जा रहा था । पावेल का दिल ऐसे धड़कने लगा जैसे अभी फट जायगा । उसका दिमाग़-स्थिति को समझने की नाकामयाब कोशिश कर रहा था और इस कोशिश में उसके विचार पागलों की तरह बेतहाशा भाग रहे थे । सोचने के लिए वक़्त नहीं था । सिर्फ़ एक बात साफ़ थी : जुख़राई गया ।

स्तब्ध और चकित होकर पावेल ने उन दोनों आदमियों को अपने क़रीब आते देखा। अब क्या किया जाय?

आखिरी लमहे में उसे अपनी जेब में पड़े पिस्तौल की याद आई। जब वे लोग उसके पास से गुज़रेंगे तो वह राइफिल वाले आदमी की पीठ पर गोली मार देगा और फ़ियोदोर आज़ाद हो जायगा। तत्काल इस निश्चय पर पहुँच जाने से उसके दिमाग़ की धुन्ध साफ़ हो गई। आखिर कल ही तो फ़ियोदोर ने उससे कहा था, "इसके लिए हमें मज़बूत आदमी चाहिए...."

पावेल ने जल्दी से पीछे मुड़ कर देखा। शहर को जानेवाली सड़क सुनसान थी; चिड़िया का पूत भी वहाँ नहीं था। सामने एक औरत हल्का-सा कोट पहने तेज़ी से सड़क पार कर रही थी। वह कोई गड़बड़ नहीं करेगी। दोराहे की दूसरी सड़क को वह नहीं देख पा रहा था। दूर, स्टेशनवाली सड़क पर ज़रूर कुछ आदमी दिखाई दे रहे थे।

पावेल आगे बढ़ कर सड़क के किनारे पर आ गया। जुखराई ने जब उसे देखा तब दोनों के दरम्यान सिर्फ़ कुछ क़दमों का फ़ासला था।

जुखराई ने उसे अपनी कनखियों से देखा और उसकी घनी भवें काँपीं। इस अप्रत्याशित मुलाक़ात के कारण उसकी चाल धीमी हो गई। संगीन उसकी पीठ में चुभी।

"ज़रा तेज़ी से, वर्ना मैं इस कुन्दे से तुम्हें खदेड़ूँगा!" सिपाही ने अपनी फटी हुई तेज़ आवाज़ में कहा।

जुखराई ने क़दम तेज़ कर दिए। वह पावेल से बात करना चाहता था, मगर रुक गया; उसने सिर्फ़ अपना हाथ हिलाया, जैसे अभिवादन कर रहा हो।

इस डर से कि कहीं उस पीली मूँछ वाले सिपाही का ध्यान उस पर न पड़ जाय, पावेल जुखराई के पास से गुज़रने पर अलग हट गया जैसे उसे इस सब से कोई बहस न हो।

मगर उस के दिमाग में यही चिन्ता चक्कर लगा रही थी: "अगर कहीं मेरा निशाना चूक गया और गोली जुखराई के लगी....."

वह पेतल्युरा सिपाही अब एकदम उसके पास आ गया था और सोचने के लिए समय नहीं था।

जैसे ही वह पीली मूँछ वाला सिपाही उसके बराबर आया पावेल झपटकर उस पर कूद पड़ा और राइफिल पकड़ कर उसकी नली झटके से नीचे कर दी।

संगीन एक पत्थर से टकराई और रगड़ लगने की आवाज़ पैदा हुई।

यह हमला एकदम अनचिते में हुआ था जिससे थोड़ी देर को तो सिपाही

सकते में आ गया। फिर उसने जोर से राइफिल अपनी तरफ़ खींची। राइफिल पर अपना पूरा वजन डालते हुए पावेल ने उस पर अपनी जकड़ क़ायम रखी। धाँय से एक गोली छूटी और एक पत्थर से टकराई और छिछलती हुई सूँ की आवाज़ के साथ गड्ढे में जा गिरी।

गोली की आवाज़ सुन कर जुखराई कूद कर अलग हो गया और घूमा। सिपाही पावेल के हाथ से राइफिल को छुड़ाने के लिए पूरी ताक़त लगा रहा था। पावेल की बाँहें बुरी तरह ऐंठ गई थीं, मगर राइफिल पर अपनी पकड़ उसने नहीं छोड़ी थी। गुस्से से पागल पेतल्युरा सिपाही पावेल पर तेज़ी से झपटा और उसने उसे ज़मीन पर गिरा दिया, मगर तब भी राइफिल को उसके हाथ से नहीं छुड़ा सका। पावेल गिर पड़ा, मगर वह सिपाही भी उसके संग गिरा और इस नाज़ुक वक़्त में दुनिया की कोई ताक़त उसके हाथ से राइफिल नहीं छुड़ा सकती थी।

दो डगों में जुखराई इन एक-दूसरे से गुँथे हुओं के पास पहुँच गया। उसकी फ़ौलादी मुट्ठी उठी और सिपाही के सिर पर जाकर गिरी। एक सेकेण्ड में जुखराई ने उस पेतल्युरा सिपाही को खींच कर पावेल से अलग कर दिया और जब दो सीसे की तरह भारी घूँसे उसके चेहरे पर पड़े तो उसका बेजान शरीर वहीं ढेर हो गया और सड़क के पास के गड्ढे में जा गिरा।

जिन मज़बूत हाथों ने वे घूँसे रसीद किये थे उन्हींने पावेल को ज़मीन से उठाया और उसे अपने पैरों पर खड़ा किया।

विक्टर अभी उस दोराहे से क़रीब सौ क़दम गया था। वह एक फ्रांसीसी गाने की धुन सीटी में बजाता चला जा रहा था। लिज़ा के संग अपनी इस मुलाक़ात से और उसके इस वादे से कि वह कल उस वीरान फैक्टरी में उससे मिलेगी, विक्टर का दिल जोश में था।

स्कूल के छँटे हुए बदमाशों में यह अफ़वाह गर्म थी कि इश्क के मामलों में लिज़ा सुखार्को काफ़ी दिलेर है। ढीठ और घमण्डी सेमियन ज़ालीवानोव ने तो एक बार यह कहा भी था कि लिज़ा अपने-आपको उसे समर्पित कर चुकी है और गो विक्टर को सेमियन की बात पर यक़ीन नहीं आता था तो भी इसमें शक़ नहीं कि लिज़ा उसे काफ़ी भेद-भरी मालूम होती थी। कल वह इस बात का पता लगा लेगा कि ज़ालीवानोव की बात सच है या नहीं।

"अगर वह आती है तो मैं व्यर्थ संकोच न करूँगा। और जो हो, इतना

तो ज़रूर है कि वह अपने आपको चूमने तो देती है। और अगर सेमियन सच बोलता है तो....." यहाँ उसके विचार रुक गये जब वह दो पेतल्युरा सिपाहियों को रास्ता देने के लिए एक तरफ़ को हटा। उनमें से एक दुमकटे घोड़े पर सवार था और एक जीन की बाल्टी उसके हाथ में लटक रही थी—स्पष्ट ही वह घोड़े को पानी पिलाने ले जा रहा था। दूसरा सिपाही जो एक छोटा-सा कोट और नीले रंग का ढीला-ढाला पतलून पहने था, उसके संग-संग पैदल चल रहा था। उसका हाथ घुड़सवार के घुटने पर था और वह कोई मज़ेदार कहानी सुना रहा था।

विक्टर ने उन्हें गुज़र जाने दिया और वह फिर अपने रास्ते पर बढ़ने ही वाला था कि बड़ी सड़क पर राइफिल दगने की एक आवाज़ हुई और वह वहीं खड़ा हो गया। वह घूमा और उसने घुड़सवार को गोली की आवाज़ की दिशा में अपने घोड़े को एड़ लगाते देखा। दूसरा सिपाही अपनी तलवार को हाथ का सहारा दिये उसके पीछे-पीछे दौड़ा।

विक्टर भी उनके पीछे-पीछे भागा। वह बड़ी सड़क पर लगभग पहुँच गया था जब दूसरी गोली छूटने की आवाज़ आई और वह घुड़सवार बेतहाशा सरपट घोड़े को दौड़ाता हुआ आया। वह घोड़े को अपनी एड़ी से और जीन वाली बाल्टी से एड़ लगा रहा था और पहले ही फाटक पर पहुँच कर घोड़े से कूदा और चिल्ला कर हाते के अन्दर के लोगों से बोला :

"दौड़ो! उन्होंने हमारे एक आदमी को मार डाला है!"

मिनट भर बाद कई आदमी अपनी राइफिलों में गोली डाल कर बोल्ट चढ़ाते और दौड़ते हुए हाते से बाहर आये।

विक्टर पकड़ लिया गया।

अब तक बहुत से लोग सड़क पर जमा हो गये थे जिन्हें शहादत देने के लिए रोक लिया गया था। उनमें विक्टर और लिज़ा भी थे।

लिज़ा डर के मारे अपनी जगह पर जम सी गई थी, इसीलिए उसने भागते हुए जुखराई और कोर्चागिन को अच्छी तरह देखा था। और उसे इस बात से बहुत अचम्भा हो रहा था कि जिस लड़के ने सिपाही पर हमला किया था वह वही था जिससे तोनिया उसे मिलाना चाहती थी।

पावेल और जुखराई बाड़ी फाँदकर एक बागीचे में पहुँचे ही थे कि वह घुड़सवार उधर से सड़क पर सरपट आता दिखाई दिया। उसने जुखराई को हाथ में राइफिल लिए भागते और उस होश-हवास-गुम सिपाही को खड़े होने की कोशिश करते देखा। घुड़सवार ने बाड़ी की तरफ़ जाने के लिए घोड़े को एड़ लगाई।

जुखराई घूमा। उसने राइफिल उठाई और अपना पीछा करने वाले पर गोली दाग दी। पीछा करने वाला घुड़सवार घूमा और भाग खड़ा हुआ।

वह सिपाही किसी-किसी तरह, अपने कटे-फटे लहू-लुहान ओंठों के कारण बहुत मुश्किल से बतला पा रहा था कि क्या हुआ था।

"अबे गधे, तेरी नाक के नीचे से क़ैदी भाग गया! क्या मतलब है इसका? तेरे चूतड़ पर पच्चीस कोड़े पड़ेंगे।"

उस सिपाही ने गुस्से से जवाब दिया, "बड़े होशियार बन रहे हो! मेरी नाक के नीचे से, हुँः! मुझे क्या पता था कि वह दूसरा हरामी का पिल्ला पागल की तरह मुझ पर कूद पड़ेगा?"

लिज़ा से भी पूछताछ की गई। उसने भी वही कहानी बताई जो उस सिपाही ने बताई थी, मगर उसने यह नहीं बताया कि वह हमला करने वाले को जानती थी। बहरसूरत, उन सबको कमाण्डैण्ट के दफ़्तर ले जाया गया और शाम तक ही कहीं उनको वहाँ से छुट्टी मिली।

कमाण्डैण्ट साहब ने खुद ही लिज़ा को घर तक पहुँचाने का प्रस्ताव किया, मगर उसने इनकार कर दिया। उनके मुँह से वोदका की बू आ रही थी और यह प्रस्ताव खतरे से खाली नहीं था।

विक्टर ने लिज़ा को घर पहुँचाया।

अभी स्टेशन काफ़ी दूर था और लिज़ा की बाँह में बाँह डाले चलते हुए विक्टर इस घटना का भला मना रहा था जिसने उसे यह सुयोग दिया।

अपने घर के काफ़ी पास पहुँचने पर लिज़ा ने पूछा, "तुम्हें कुछ मालूम है किसने उस क़ैदी को छुड़ाया?"

"नहीं तो। मैं क्या जानूँ? जान भी कैसे सकता हूँ?"

"तुम्हें याद है उस शाम तोनिया एक लड़के का हमसे परिचय कराना चाहती थी?"

विक्टर रुक गया।

आश्चर्य से उसने पूछा, "पावेल कोर्चागिन?"

"हाँ, मेरा खयाल है, उसका नाम कोर्चागिन ही था। याद है कैसे अजीब तरीके से वह बाहर निकल गया था? वही लड़का था।"

विक्टर ठगा-सा खड़ा था।

उसने लिज़ा से पूछा, "पक्की तरह कह सकती हो?"

"हाँ, मुझे उसका चेहरा अच्छी तरह याद है।"

"तुमने यह बात कमाण्डैण्ट को क्यों नहीं बतलाई?"

यह सुन कर लिज़ा को क्रोध आ गया।

"तुम सोचते हो कि मैं ऐसी कमीनी हरकत कर सकती हूँ?" उसने कहा।

"कमीनी? सिपाही पर किसने हमला किया, यह बतलाने को तुम कमीनी हरकत कहती हो?"

"और नहीं तो क्या, यह अच्छा काम है? तुम शायद भूल गये हो कि उन्होंने क्या-क्या किया है! तुम्हें कुछ पता है स्कूल में कितने यहूदी लड़के हैं जिनके माँ-बाप मार डाले गए हैं और तब भी तुम चाहते हो कि मैं कोर्चागिन के बारे में बतला देती? मुझे दुःख है, मैं तुमको ऐसा नहीं समझती थी।"

लेशचिन्स्की को लिज़ा के जवाब से बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन चूँकि उसके संग झगड़ा करना उसकी योजना के अनुकूल नहीं था, इसलिए उसने बात का विषय बदल दिया।

"नाराज़ न हो लिज़ा, मैं तो सिर्फ़ मज़ाक कर रहा था। मुझे नहीं मालूम था कि तुम इस क़दर खरी और सच्ची हो।"

"मज़ाक बहुत भद्दा था," लिज़ा ने खुश्की से जवाब दिया।

उसके घर पहुँच कर विदा होते हुए विक्टर ने पूछा, "तो तुम आओगी न लिज़ा?"

लिज़ा ने अस्पष्ट-सा उत्तर दिया, "कह नहीं सकती।"

शहर को वापिस आते हुए विक्टर इस मामले पर ग़ौर करने लगा।

"कुमारी जी, आप भले ही इसे कमीनी हरकत समझें, मगर मेरा तो ख़याल कुछ और ही है। यों जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, किसने किसको छुड़ाया, मेरे लिए सब बराबर है।"

एक पुराने पोलिश परिवार की सन्तान होने के नाते, बहैसियत एक लेशचिन्स्की के, उसको दोनों पक्षों से एकसी नफ़रत थी। एकमात्र सरकार जिसे वह मान्यता दे सकता था, पोलिश थैलीशाहों की सरकार थी और वह जल्दी ही पोलिश फ़ौजों के साथ आने वाली थी। वह तो ख़ैर जब होगा तब होगा, मगर उस हरामज़ादे कोर्चागिन से पिण्ड छुड़ाने का यह अच्छा मौक़ा था। इसमें क्या शक कि उसकी गर्दन तो मरोड़ ही दी जायगी।

विक्टर अपने परिवार का अकेला सदस्य था जो शहर में रुक गया था। वह अपनी एक चची के साथ रह रहा था जो शकर के कारखाने के सहायक संचालक की पत्नी थी। उसके परिवार के लोग कुछ दिनों से वारसा में रह रहे थे जहाँ उसके पिता—सिगिसमण्ड लेशचिन्स्की, एक खासे ऊँचे पद पर नियुक्त थे।

विक्टर कमाण्डैण्ट के दफ्तर तक गया और खुले हुए दरवाजे से अन्दर घुस गया।

थोड़ी देर बाद वह चार पेतल्युरा सिपाहियों के संग कोर्चागिन के मकान की तरफ़ चला जा रहा था।

उसने एक खिड़की की तरफ़, जिससे रोशनी आ रही थी, इशारा करते हुए धीरे से कहा, "वही जगह है। अब मैं जाऊँ?" उसने अपने बगल में खड़े खोरूँजी से पूछा।

"हाँ, अब तुम जा सकते हो, बाकी बातें सब मैं देख लूँगा। यह खबर देने के लिए तुम्हारा शुक्रिया।"

विक्टर पैदल पटरी पर होकर तेजी से घर की ओर चला।

पावेल की पीठ पर आखिरी प्रहार हुआ जिसने पावेल को ढकेल कर उस अंधेरे कमरे में डाल दिया जहाँ पर वे लोग उसे ले गये थे और उसकी फैली हुई बाँहें सामने की दीवार से जा टकराईं। अपने आस-पास टटोलते हुए उसको ओठे जैसी कोई चीज मिली और वह बैठ गया। उसका शरीर और उसका मन दोनों घायल थे और दर्द कर रहे थे।

उसकी गिरफ़्तारी बिल्कुल अप्रत्याशित थी। आखिर उन पेतल्युरा सिपाहियों को उसका पता कैसे चला! यह तो बात पक्की है कि किसी ने उसे देखा नहीं था। अब इसके बाद क्या होगा और जुखराई कहाँ है?

उसने जुखराई को क्लिम्का के घर पर छोड़ा था और फिर वहाँ से सर्गेई के यहाँ चला गया था जब कि जुखराई वहाँ पर ठहर कर शाम होने का इन्तजार कर रहा था ताकि चुपके से शहर से बाहर निकल जाय।

पावेल ने सोचा, "अच्छा हुआ, मैंने रिवाल्वर कौए के घोंसले में छिपा दिया था। अगर कहीं वह चीज उन्हें मिल जाती तो मेरा काम तमाम था। मगर, आखिर उन्हें मेरा पता चला कैसे?" यह सवाल उसे तंग कर रहा था और इसका कोई जवाब उसके पास नहीं था।

पेतल्युरा सिपाहियों ने कोर्चागिन के मकान के कोने-कोने की तलाशी ली थी मगर उन्हें कुछ खास मिला नहीं। आर्तेम अपना सबसे बढ़िया सूट और अकार्डियन बाजा गाँव ले गया था और उसकी माँ अपने साथ एक ट्रंक ले गई थी। लिहाजा, घर में कोई खास चीज बची न थी जिसे सिपाही ले जाते।

बहरहाल, कोतवाली तक का सफ़र एक ऐसी चीज थी जिसे पावेल कभी

नहीं भूलेगा। रात काजल की तरह काली थी, आसमान पर बादल छाये हुए थे और वह चारों तरफ़ से बेरहम ठोकरें खाता हुआ अन्धे और नीम-पागल आदमी की भाँति किसी तरह लुढ़कता चल रहा था।

अगले कमरे में, जिसमें कमाण्डैण्ट के सन्तरी रहते थे, दरवाज़े के पीछे उसे आवाज़ें सुनाई दीं। दरवाज़े के नीचे से प्रकाश की पतली रेखा दिखाई दे रही थी। पावेल उठ खड़ा हुआ और दीवार के सहारे-सहारे रास्ता पहचानता हुआ कमरे का चक्कर लगा आया। ओठे के सामने उसे एक खिड़की मिली जिसमें ठोस लोहे के नुकीले डण्डे लगे हुए थे। उसने उनको अपने हाथ से परखा—वे अपनी जगह पर बहुत मज़बूती से मढ़े हुए थे। ज़ाहिर है, यह जगह पहले माल-असबाब रखने के काम आती होगी।

वह दरवाज़े तक पहुँचा और वहाँ खड़ा होकर पल भर कान लगाये सुनता रहा। फिर उसने हलके से दरवाज़े के हैण्डिल को दबाया। दरवाज़ा चूँ से बोला, जो पावेल को बहुत नागवार मालूम हुआ, और उसने दबी ज़बान में उसको हज़ार गालियाँ दीं।

दरवाज़े की उस ज़रा सी सन्ध में से उसे दो रुखड़े पैर जिनके अँगूठे टेढ़े थे, चबूतरे से नीचे झूलते हुए दिखाई दिये। उसने एक बार और हलके से हैण्डिल को दबाया, पर दरवाज़े ने और भी ज़ोरों से प्रतिवाद किया। तभी एक बिखरे बालों वाली आकृति, जिसका चेहरा नींद के कारण सूजा हुआ था, अपने चबूतरे पर से उठी और अपने गन्दे जूँ भरे सिर को पाँचों उंगलियों से खबर-खबर खुजलाती हुई उसको बेतहाशा गालियाँ सुनाने लगी। गालियों का यह वीभत्स प्रवाह बन्द होने पर उस आदमी ने अपने ओठे के सिरे पर रखी हुई राइफिल की तरफ़ हाथ बढ़ाया और गुस्से से बोला :

"दरवाज़ा बन्द कर दो और अगर दुबारा फिर मैंने तुम्हें बाहर झाँकते देखा तो मैं तुम्हारा....."

पावेल ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। बगल के कमरे से हँसी का कहकहा सुनाई दिया।

उस रात वह बहुत कुछ सोचता रहा। लड़ाई में हिस्सा लेने की उसकी पहली कोशिश का नतीजा उसके लिए बुरा ही हुआ था। अपने पहले क़दम में ही वह पकड़ा गया था और अब चूहेदानी में फंसे हुए चूहे की तरह वहाँ पड़ा था।

तब भी वह उठ कर बैठ गया और धीरे-धीरे बेचैन अर्द्ध-निद्रा की हालत में पहुँच गया और उसकी आँखों के आगे उसकी माँ का हड्डियाँ निकला हुआ

झुर्रीदार चेहरा और आँखें आईं जिन्हें वह प्यार करता था। उसने सोचा, "अच्छा ही है कि वह यहाँ नहीं है—दर्द कम होगा।"

खिड़की में से रोशनी आ रही थी और फ़र्श पर एक भूरे रंग का धुँधला चौकोन बना रही थी।

अंधेरा धीरे-धीरे हट रहा था। पौ फट रही थी।

छठा अध्याय

इस पुरानी हवेली की सिर्फ़ एक खिड़की में रोशनी चमक रही थी; परदे खिंचे हुए थे। बाहर ट्रेसोर, जिसे रात भर के लिए जंजीर लगा दी गई थी, अचानक अपनी भारी गूँजती हुई आवाज़ में भूँका।

नींद के कुहासे में तोनिया ने अपनी माँ को मद्धिम आवाज़ में बोलते हुए सुना।

"नहीं, अभी वह सोई नहीं है। अन्दर आओ, लिज़ा।"

उसकी सहेली के हलके-हलके क़दमों ने और फिर उसके आवेगपूर्ण गर्म आलिंगन ने उसकी नींद भगा दी।

तोनिया के चेहरे पर ज़र्द मुस्कराहट थी।

"मुझे बड़ी खुशी हुई कि तुम आईं, लिज़ा। पापा का संकट कल टल गया और आज वह सारा दिन पक्की नींद में सोते रहे। कई रात जागने के बाद आज माँ को और मुझे भी कुछ आराम करने का मौक़ा मिला। मुझे सारी खबरें बतलाओ।" तोनिया ने अपनी सहेली को खींच कर पास ही कौच पर बिठा लिया।

"ओह, तमाम खबरें ही खबरें हैं, मगर उनमें से कुछ ऐसी हैं जो सिर्फ़ तुम्हारे कानों के लिए हैं।" लिज़ा, एकातेरीना मिखाइलोवना को चंचल मानी-खेज़ नज़रों से देखती हुई मुस्कराई।

तोनिया की माँ भी मुस्कराई। वह छत्तीस साल की प्रौढ़ स्त्री थी, मगर उसकी चाल-ढाल में जवान लड़की का सा फुर्तीलापन था। उसकी भूरी-भूरी समझदार आँखें थीं और उसका चेहरा खूबसूरत तो नहीं, मगर देखने में भला ज़रूर मालूम होता था।

"मैं दो-चार मिनट में ही बहुत खुशी से तुम लोगों को आपस में बा

करने के लिए अकेला छोड़ दूँगी, मगर पहले मैं वे खबरें सुनना चाहती हूँ जो सबके कानों के लिए हैं," उसने दीवान के पास अपनी कुर्सी खींचते हुए मज़ाक किया।

" अच्छा, तो पहली बात तो यह है कि हमारी स्कूल की पढ़ाई ख़तम। बोर्ड ने सातवीं जमात वालों को ग्रेजुएशन सर्टिफ़िकेट देने का फ़ैसला किया है। मैं तो सचमुच खुश हूँ। इस अलजेबरा-ज्योमेट्री के मारे तो नाक में दम हो गया! भला बताओ, इससे किसी का क्या फ़ायदा? लड़के मुमकिन है आगे भी अपनी पढ़ाई जारी रखें, गो उन्हें खुद पता नहीं कि चारों तरफ़ के इस लड़ाई-झगड़े के चलते वे कहाँ और कैसे आगे बढ़ सकेंगे। सचमुच बड़ी भयानक बात है···जहाँ तक हमारी बात है, हमारी शादी हो जायगी और बीवियों को अलजेबरा की ज़रूरत नहीं पड़ती," कह कर लिज़ा हँसी।

थोड़ी देर लड़कियों के संग बैठ कर एकातेरीना मिखाइलोवना अपने कमरे में चली गई।

अब लिज़ा तोनिया के और पास आ गई और उसे अपनी बाँहों में लेकर धीमे-धीमे फुसफुसा कर उसे चौराहे पर की वारदात सुनाई।

" तोनेच्का, तुम मेरे आश्चर्य की कल्पना कर सकती हो जब मैंने देखा कि लड़का जो भागा जा रहा था···बूझो कौन था?"

तोनिया ने, जो बड़े ध्यान से सुन रही थी, कन्धे उचका कर अपनी असमर्थता बतलाई।

" कोर्चागिन!" लिज़ा ने अधीर होकर उगल दिया।

तोनिया चौंक गई और उसे झुरझुरी-सी मालूम हुई।

" कोर्चागिन?"

तोनिया पर उसकी बात का जो असर हुआ था उसे देख कर लिज़ा बहुत खुश हुई और विक्टर के संग अपने झगड़े की बात बतलाने लगी।

अपने किस्से की रौ में लिज़ा ने यह नहीं देखा कि तोनिया का चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी उंगलियाँ रह रह कर बेचैनी से अपने नीले ब्लाउज़ को पकड़ लेती थीं। लिज़ा को क्या पता कि कैसे तोनिया का दिल चिन्ता के मारे घुटा जा रहा था और न वह यही समझ सकी कि तोनिया की खूबसूरत आँखों की लम्बी बरोनियाँ क्यों रह रह कर काँप जाती थीं।

लिज़ा ने नशे में चूर खोरूंज़ी का जो किस्सा सुनाया उसकी तरफ़ तोनिया ने कोई ध्यान नहीं दिया। सिर्फ़ एक विचार उसके दिमाग़ में जैसे कील-सी ठोंक रहा था, " अच्छा, तो विक्टर लेशचिन्स्की को मालूम है कि उस सिपाही पर

किसने हमला किया! ओह लिज़ा, तूने विक्टर को क्यों बतलाया?" और न चाहते हुए भी यह बात उसके मुँह से निकल ही पड़ी।

"क्या कहा तुमने?" लिज़ा एकाएक उसका मतलब नहीं समझ सकी।

"तुमने लेशचिन्स्की को पावलूशा''''यानी कोर्चागिन के बारे में क्यों बतलाया? वह ज़रूर उसके साथ दग़ा करेगा''''"

"अरे नहीं!" लिज़ा ने प्रतिवाद किया, "मैं नहीं समझती कि वह ऐसा नीच काम करेगा। और क्यों करेगा? उसका फ़ायदा?"

तोनिया उठ कर बैठ गई और अपने घुटनों को इतने ज़ोर से दबाया कि उनमें दर्द होने लगा।

"तुम नहीं समझतीं लिज़ा! उसमें और कोर्चागिन में दुश्मनी है, और इसके अलावा कुछ और भी है''''तुमने विक्टर को पावलूशा के बारे में बतला कर बहुत बड़ी भूल की।"

अब तोनिया की उद्विग्नता की तरफ़ लिज़ा का ध्यान गया और जिस तरह तोनिया अनजाने में ही कोर्चागिन को पावलूशा कह रही थी, उससे लिज़ा की आँखें एक ऐसी चीज़ के बारे में खुलीं जिसके सम्बन्ध में वह अब तक सिर्फ़ अटकल लगाया करती थी।

उसने अपने आप को मन ही मन अपराधी महसूस किया और चुप्पी में डूब गई।

उसने सोचा, "अच्छा तो यह बात सही है। मगर कैसी अजीब बात है कि तोनिया''''''''एक मामूली मज़दूर से प्रेम करे।" लिज़ा इस चीज़ के बारे में बहुत बात करना चाहती थी, मगर अपनी सहेली का ख़याल करके रुक गई। किसी तरह अपने अपराध का मार्जन करने के ख़याल से उसने तोनिया के हाथ पकड़ लिये और बोली :

"तुम क्या बहुत चिन्तित हो गईं, तोनिया?"

तोनिया ने खोये-खोये ढंग से जवाब दिया, "नहीं, हो सकता है मेरा ख़याल ग़लत हो और विक्टर मेरे अनुमान से ज़्यादा शरीफ़ हो।"

इसके बाद एक भद्दी सी, दम घोटनेवाली ख़ामोशी छा गई जो उन के एक सहपाठी के आने से टूटी। इस सहपाठी का नाम था देमियानोव। यह एक बहुत झेंपू, हौलू-सा लड़का था।

अपने दोस्तों को विदा करके तोनिया बहुत देर तक फाटक से टिकी शहर को जाने वाली सड़क की काली-काली पट्टी को देखती रही। वह सदा-सदा की घुमक्कड़ हवा, नम और बसन्त की गीली धरती की सीली हुई बू से लदी हुई

उसके चेहरे में लग रही थी। शहर के मकानों की खिड़कियों से मद्धिम लाल-लाल रोशनी झाँक रही थी। वही था शहर जिस की जिन्दगी उसकी अपनी जिन्दगी से अलग थी और वहीं पर, उन्हीं में से किसी एक छत के नीचे या अपने ऊपर आने वाले ख़तरे से बेख़बर उसका अक्खड़ और तेजमिजाज दोस्त पावेल। शायद वह उसके बारे में भूल भी गया हो—उस आख़िरी मुलाक़ात के बाद न जाने कितने दिन गुज़र गए थे। उस बार वही ग़लती पर था, मगर वे सब बातें तो आई-गई हो गईं। कल वह उससे जाकर मिलेगी और उनकी दोस्ती फिर से वापस आ जायगी, ऐसी दोस्ती जिसमें प्राण है, गति है, जो दिल को गरमाती है। वह दोस्ती वापस आयेगी, इसमें तोनिया को ज़रा भी शक न था—बशर्ते यह रात दग़ा न करे, यह रात जो तमाम बुराइयों का घर है, जो पावेल की ताक में बैठी हुई जान पड़ती है····ठण्डक बहुत बढ़ गई थी और सड़क पर आखिरी बार निगाह डालती हुई तोनिया अन्दर चली गई। "बशर्ते रात दग़ा न करे" यही ख़याल उसके दिमाग़ पर छाया हुआ था जब कि वह कम्बल में लिपटी-लिपटी नींद में डूब गई।

तोनिया खूब सबेरे उठी और जल्दी-जल्दी कपड़े पहने। तब तक और कोई नहीं उठा था। वह चुपके से घर से निकल गई ताकि घर में और कोई न जागे, बड़े-बड़े झबरे बालोंवाले ट्रेसोर की जंजीर खोली और उसे साथ लेकर शहर की ओर चलदी। कोर्चागिन के घर पर पहुँच कर वह पल भर को उसके दरवाज़े पर ठिठकी, मगर फिर उसने ठेल कर दरवाजा खोल दिया और भीतर सहन में चली गई। ट्रेसोर दुम हिलाता हुआ तेजी से आगे निकल गया····।

आर्तेम उसी सुबह गाँव से लौटा था। जिस लोहार के यहाँ वह काम करता था वही अपनी गाड़ी पर बिठाल कर उसे शहर तक लाया था। घर पहुँच कर उसने अपनी कमाई का आटे का बोरा कन्धे पर लादा और अन्दर सहन में चला गया। उसके पीछे-पीछे उसकी बाक़ी चीजें लिए वह लुहार था। खुले हुए दरवाजे के आगे आर्तेम ने बोरा जमीन पर रख दिया और पुकारा :

"पावका !"

कोई जवाब नहीं मिला।

"क्यों क्या अड़चन है ? सीधे अन्दर क्यों नहीं चले जाते," लुहार ने उसके बराबर आकर कहा।

अपनी चीजें रसोईघर में रख कर आर्तेम बगलवाले कमरे में गया। वहाँ उसने जो दृश्य देखा उससे वह बिल्कुल स्तब्ध हो गया; वह सारी जगह उलट-पुलट दी गई थी और पुराने कपड़े फ़र्श पर बिखरे पड़े थे।

आर्तेम की समझ में कुछ नहीं आया। वह मुँह ही मुँह में बोला, "यह मामला क्या है?"

"कुछ घोटाला तो जरूर है," लुहार ने उसकी बात की तसदीक करते हुए कहा।

आर्तेम को अब गुस्सा आ रहा था, बोला: "मगर यह छोकरा गया कहाँ?" लेकिन वह जगह वीरान थी और कोई जवाब देने वाला न था।

लुहार ने सलाम किया और चला गया।

आर्तेम बाहर हाते में गया और इधर-उधर देखने लगा।

"कुछ मेरी समझ में नहीं आ रहा है! सारे दरवाजे खुले हैं और पावका का कहीं पता नहीं।"

तभी उसने पीछे से क़दमों की आहट सुनी। घूम कर उसने देखा, एक बड़ा-सा कुत्ता जिसके कान खड़े थे, उसके सामने खड़ा है। एक लड़की दरवाजे में से घर की तरफ़ आ रही थी।

उसने आर्तेम को ग़ौर से देखते हुए धीमे स्वर में कहा, "पावेल कोर्चागिन से मुझे एक जरूरी काम के लिए मिलना है।"

"मिलना तो मुझे भी है। मगर वह गया कहाँ, यह किसे मालूम। मैं यहाँ आया तो घर एकदम खुला हुआ था और पावका का कहीं पता न था। अच्छा तो तुम भी उसी की तलाश में हो?" उसने लड़की से पूछा।

लड़की ने एक और सवाल से जवाब दिया:

"आप कोर्चागिन के भाई आर्तेम हैं?"

"हाँ। क्यों?"

जवाब देने के बजाय वह लड़की भयभीत और त्रस्त होकर खुले हुए दरवाजे को देखती रही। उसने सोचा, "मैं कल रात ही क्यों नहीं आई? यह नहीं हो सकता····यह नहीं हो सकता····" और उसका दिल और भी भारी हो गया।

"आपने दरवाजे को खुला पाया और पावेल नहीं था?" अपनी ओर आश्चर्य से देखते हुए आर्तेम से उसने पूछा।

"और क्या? मैं जान सकता हूँ कि पावेल से तुम्हें क्या काम है?"

तोनिया आर्तेम के और पास आ गई और आसपास निगाह दौड़ाते हुए उसने रुक-रुक कर कहा:

"मैं ठीक नहीं कह सकती मगर मेरा खयाल है कि अगर पावेल घर पर नहीं है तो वह जरूर पकड़ गया।"

आर्तेम चौंक पड़ा। "पकड़ गया? किस बात के लिए?"

"चलिए, हम लोग अन्दर चलें," तोनिया ने कहा।

तोनिया को जो कुछ मालूम था उसने सब बतला दिया और आर्तेम खामोश सुनता रहा। उसकी कहानी खतम होते-होते आर्तेम बहुत खिन्न और परेशान हो गया था।

उसने निराशा के स्वर में धीमे से बुदबुदा कर कहा, "क्या मुसीबत है! जैसे यों ही कम परेशानी थी! अब समझ में आया कि यह जगह क्यों उलटी-पलटी पड़ी है। इस छोकरे को क्या पड़ी थी कि इस सब बखेड़े में जा कूदा···· वह इस वक़्त होगा कहाँ? और तुम कौन हो?"

"मैं जंगल के वार्डेन तुमानोव की लड़की हूँ। मैं पावेल की दोस्त हूँ।"

"अच्छा," आर्तेम ने बिना कुछ ज़्यादा समझे, स्वर को खींच कर कहा। "कहाँ तो मैं इस लड़के को खिलाने के लिए यह आटा लेकर आया और अब यह देखो····"

तोनिया और आर्तेम एक-दूसरे को खामोशी से देखते रहे।

"अब मुझे चलना चाहिए," तोनिया ने जाने के लिए प्रस्तुत होते हुए धीमे से कहा। "मुमकिन है वह आपको मिल जाय। मैं फिर शाम को पता लेने आऊँगी।"

आर्तेम ने बिना कुछ बोले सिर हिला कर हामी भरी।

अपनी जाड़े की नींद से अभी-अभी जागी हुई एक नन्हीं सी मक्खी खिड़की के कोने में भुन-भुन कर रही थी। एक पुराने खस्ताहाल कोच के सिरे पर एक नौजवान किसान औरत बैठी हुई थी। उसकी कुहनियाँ घुटनों पर टिकी थीं और उसकी सूनी आँखें गन्दे फ़र्श पर जमी थीं।

कमाण्डैण्ट मुँह के एक कोने में अटकी हुई सिगरेट को चबा रहा था। उसने अभी एक कागज पर बड़े बांकपन के साथ कुछ लिख कर खतम किया था। और ज़ाहिर था कि वह अपने आप से बहुत खुश था। उसने "शेपेतोवका नगर-कमाण्डैण्ट, खोरूंजी" के नाम से बहुत बना बना कर दस्तखत किया था। दरवाज़े पर अटेंशन की हालत में बूटों के बजने की आवाज़ आई। कमाण्डैण्ट ने आँखें उठा कर देखा।

उसके सामने बाँह में पट्टी बाँधे सलोमिगा खड़ा था।

"क्यों जी, कौन सी हवा तुमको उड़ा लाई?" कमाण्डैण्ट ने उसका स्वागत करते हुए कहा।

"अच्छी हवा नहीं है वह। एक *बोगुनेत्स*[1] ने मेरा हाथ चाक कर दिया।"

उस स्त्री की उपस्थिति का कुछ खयाल न करते हुए सलोमिगा बुरी-बुरी गाली बकने लगा।

"तो फिर यहाँ तुम क्या कर रहे हो? सेहत बनाने आये हो?"

"सेहत बनाने का मौक़ा हमें उस दुनिया में मिलेगा! यहाँ तो उन्होंने मोर्चे पर हमारी नाक में दम कर रखा है।"

कमाण्डैण्ट ने उसकी बात में बाधा दी और उस औरत को देख कर सिर हिलाया।

"उसके बारे में हम लोग बाद में बात करेंगे।"

सलोमिगा धप्प से स्टूल पर बैठ गया और उसने अपनी टोपी उतारी जिसके माथे पर इनामल का बना एक त्रिशूल टँका हुआ था जो कि उक्रेनी राष्ट्रीय प्रजातन्त्र का निशान था।

उसने अपनी मद्धिम आवाज़ में कहना शुरू किया, "गोलुब ने मुझे भेजा है। रेगुलर सैनिकों का एक डिवीज़न जल्दी ही यहाँ आने वाला है। यहाँ नगर में उसके लिए करने को बहुत कुछ रहेगा और उसके सारे इन्तज़ाम को ठीक-ठाक करने का ज़िम्मा मुझे दिया गया है। हो सकता है कि "चीफ़" साहब खुद किसी बड़े विदेशी आदमी के साथ यहाँ पर आयें। इसलिए मेरे "दिलबहलाव" की बात मुँह पर भी नहीं लानी होगी। क्या लिख रहे हो?"

कमाण्डैण्ट ने सिगरेट मुँह के एक कोने से निकाल कर दूसरे कोने में लगा ली।

"यहाँ एक बहुत बदमाश लड़का है। शैतान की आँत ही समझो उसको। तुम्हें उस जुखराई की याद है न, जिसने रेलवे मज़दूरों को हम लोगों के खिलाफ़ भड़काया था? हाँ, तो वह स्टेशन पर पकड़ लिया गया।"

"पकड़ा गया? बड़ी बात! हाँ, तो फिर क्या हुआ?" सलोमिगा ने बात में बहुत गहरी दिलचस्पी लेते हुए अपना स्टूल और पास सरका लिया।

"उसके बाद यह हुआ कि उस स्टेशन कमाण्डैण्ट उल्लू के पट्ठे ओमेलचेन्को ने एक कौसेक के पहरे में उसको रवाना कर दिया और रास्ते में इस लड़के ने जो हमारे यहाँ बन्द है, दिन दहाड़े उस क़ैदी को छुड़ा लिया। उस कौसेक सिपाही के हथियार छीन लिये गए और दाँत तोड़ दिये गए, और क़ैदी नौ दो ग्यारह हो गया। जुखराई तो भाग गया, मगर इस छोकरे को हमने पकड़

१. लाल फ़ौज की बोगुन रेजिमेण्ट के आदमी। १७ वीं शताब्दी में उक्रेनी जनता के स्वाधीनता-संघर्ष के नेता बोगुन के नाम पर इस रेजिमेण्ट का नाम बोगुन रेजिमेंट पड़ा था।

लिया। देखो न इस कागज में सब कुछ लिखा हुआ है," कहते हुए उसने कई कागज सलोमिगा की तरफ बढ़ाये।

सलोमिगा बाँयें हाथ से कागज के पन्नों को पलटता हुआ पूरी रिपोर्ट देख गया।

रिपोर्ट खतम करके उसने कमाण्डैण्ट की तरफ़ देखा।

"गरज उस लड़के से तुम कुछ मालूम नहीं कर सके?"

कमाण्डैण्ट परेशानी से अपनी टोपी के सिरे को खींचने लगा।

"मैं पाँच दिन से उसके पीछे लगा हूँ, मगर वह इसके सिवा कुछ नहीं कहता कि 'मैं कुछ भी नहीं जानता और मैंने उसे नहीं छुड़ाया।' बड़ा मर्दूद लड़का है साहब! उस सिपाही ने, जिस पर यह सब गुजरी थी, उसको पहचान लिया—और लड़के को देखते ही वह तो गुस्से से पागल हो गया और उसका बस चलता तो वहीं उसने उसका गला घोट दिया होता। वह तो बड़ी मुश्किल से मैं उस कौसेक को अलग कर पाया। और भई सच पूछो तो गुस्से के लिए उसके पास कारण भी था क्योंकि ओमेलचेंको ने स्टेशन पर, हाथ से क़ैदी निकल जाने देने के जुर्म में अपनी राइफिल साफ़ करने की छड़ी से पच्चीस छड़ियाँ भी तो उसके लगाईं। अब उसको यहाँ पर और रखने में कोई सार नहीं है इसलिए मैं ये कागजात हेडक्वार्टर भेज कर इजाजत मँगा रहा हूँ ताकि इस हरामजादे को खतम कर दिया जाय।"

सलोमिगा ने नफ़रत से थूका।

"कहीं मेरे हाथ में होता यह लड़का तो तुम देखते, मैं उससे क़बुलवा कर छोड़ता। यह सब पूछ-ताछ वग़ैरह करने के मामले में तुम कुछ यों ही से हो। और भला कभी किसी ने यह भी सुना कि धर्मशास्त्र का विद्यार्थी कमाण्डैण्ट बन जाय! डण्डे का इस्तेमाल किया तुमने?"

कमाण्डैण्ट को गुस्सा आ गया।

"देखो तुम हद से गुजरे जा रहे हो। अपने मजाक अपने ही पास रखो। यहाँ पर मैं कमाण्डैण्ट हूँ और मैं तुम्हारा कोई हस्तक्षेप नहीं चाहता।"

सलोमिगा ने तैश में आये हुए कमाण्डैण्ट को देखा और जोर से ठहाका मार कर हँस पड़ा।

"हा हा हा·····देखो तुम पादरी के बेटे हो, इतना मत फूलो नहीं तो पेट फट जायगा। जहन्नुम में जाओ तुम और तुम्हारे मसले। जरा मुझे यह बतलाओ कि समोगन[1] की दो बोतलें कहाँ से मिल सकती हैं?"

१. एक शराब

कमाएडैण्ट खिसियानी सी हँसी हँसा और बोला :

" इन्तजाम हो सकता है ।"

" जहाँ तक इस चीज का ताल्लुक है," सलोमिगा ने कागजात पर अपनी उंगली गड़ाते हुए कहा, " अगर तुम वाकई उसका काम तमाम करना चाहते हो तो सोलह की जगह उसकी उम्र अठारह दिखलाओ । छः को इस तरह से आठ बना दो नहीं तो मुमकिन है वे लोग पास न करें ।"

उस मालगोदाम वाली कोठरी में तीन लोग थे । एक दढ़ियल बुड्ढा तार-तार कोट पहने ओठे पर करवट लेटा हुआ था, उसकी लकड़ी जैसी टाँगें लिनेन के चौड़े-चौड़े पतलूनों से ढँकी थीं जिन्हें उसने ऊपर समेट लिया था । उसे इसलिए गिरफ़्तार किया गया था कि उसके यहाँ जिन पेतल्युरा सिपाहियों को टिकाया गया था उनका घोड़ा उसके शेड से गुम हो गया था । एक अधेड़ औरत जिसकी छोट-छोटी चपल आँखें थीं और नुकीली-सी ठुड्डी थी, फ़र्श पर बैठी हुई थी । वह समोगन बेच कर अपनी जीविका चलाती थी और उसको इस अभियोग में यहाँ ला पटका गया था कि उसने एक घड़ी और कुछ दूसरी बेशक़ीमत चीजें चुराई हैं । कोचगिन नीमबेहोशी की हालत में खिड़की के नीचे एक कोने में अपनी कुचली हुई टोपी का तकिया लगाये लेटा हुआ था ।

एक नौजवान स्त्री उसी मालगोदाम में लाई गई । वह सिर में एक रंगीन रूमाल बाँधे थी और दहशत के मारे उसकी आँखें निकली पड़ रही थीं ।

वह एक-दो पल खड़ी रही और फिर शराब बेचनेवाली औरत के बगल में बैठ गई ।

शराब बेचनेवाली ने आगन्तुक स्त्री को कुतूहलपूर्ण आँखों से देखा और जल्दी-जल्दी कहा, " पकड़ गई क्यों ?"

कोई जवाब नहीं मिला । मगर शराब बेचनेवाली स्त्री इतनी जल्दी छोड़ने वाली न थी ।

" तुमको क्यों पकड़ा ? समोगन के मामले में तो नहीं ?"

किसान लड़की उठ खड़ी हुई और उसने इस हठीली बुढ़िया को देखा ।

उसने धीमे से जवाब दिया, " नहीं, मुझे तो मेरे भाई के कारण पकड़ा है ।"

"और तुम्हारा भाई कौन है?" उस बुड्ढी स्त्री ने पूछा। वह तो जैसे उसके पीछे ही पड़ गई थी।

अब बुड्ढा बोल उठा।

"तुम क्यों उसे खामखा तंग कर रही हो? वह यों ही कुछ कम परेशान नहीं है। उस पर से तुम बकबक लगाये हुए हो।"

वह स्त्री तेज़ी से ओठे की तरफ़ मुड़ी।

"तुम कौन होते हो मुझको बताने वाले कि मैं क्या करूँ, क्या न करूँ? मैं तुमसे तो बात कर नहीं रही हूँ।"

बुड्ढे ने थूका।

"उसे परेशान मत करो, मैं तुमसे कहता हूँ।"

कोठरी में फिर खामोशी छा गई। उस किसान लड़की ने एक बड़ा-सा शाल बिछाया और अपने हाथ का तकिया लगा कर उस पर लेट गई।

शराब बेचनेवाली ने खाना खाना शुरू किया। बूढ़ा उठ कर बैठ गया, फ़र्श पर पैर रख लिए, धीरे-धीरे अपने लिये एक सिगरेट बनाई और उसे सुलगा लिया। तीखे धुएँ के बादल फैल गये।

"इस बदबू में तो कोई शान्ति से खा भी नहीं सकता।" औरत बड़-बड़ाई, गो उसके जबड़े बदस्तूर काम कर रहे थे। "तुमने तो इस सारी जगह को धुएँ से भर दिया है।"

बूढ़े ने चिढ़ कर मज़ाक बनाते हुए जवाब दिया:

"क्यों, वज़न घटने का डर है क्या? तुम्हारा यही हाल रहा तो जल्दी ही दरवाज़े में से निकलना मुश्किल हो जायगा। तुम इस लड़के को कुछ खाने को क्यों नहीं देतीं? सब का सब अपने ही पेट में ठूँसे जा रही हो!"

उस औरत ने क्रोध का भाव दिखलाया।

"मैंने कोशिश की, मगर उसे कुछ चाहिए ही नहीं। मगर तुम्हें इससे क्या बहस? तुम अपना मुँह क्यों नहीं बन्द रखते—मैं तुम्हारा खाना तो खा नहीं रही हूँ।"

लड़की उस बूढ़ी स्त्री की तरफ़ मुड़ी और अपने सिर से कोर्चागिन की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा:

"तुम्हें मालूम है कि इसे यहाँ पर क्यों लाया गया है?"

बूढ़ी स्त्री इस बात से खुश हो गई कि उसको सम्बोधित किया गया। उसने झट जवाब दिया:

"यहीं का लड़का है—कोर्चागिन का छोटा लड़का। उसकी माँ रसोई-दारिन है।"

फिर लड़की की तरफ़ झुकते हुए उसने उसके कान में कहा :

" उसने एक बोल्शेविक को छुड़ाया था—एक मल्लाह को, जो यहीं मेरे पड़ोसी ज़ोज़लिखा के यहाँ रहता था।"

उस नौजवान स्त्री को वे शब्द याद आये जो उसने बाहर चोरी से सुन लिये थे, " मैं इन कागज़ात को हेडक्वार्टर भेज रहा हूँ ताकि इसका काम तमाम करने की इजाज़त मुझे मिल जाय।"

एक के बाद दूसरी फ़ौजी गाड़ी जंक्शन पर आ रही थी और उनमें से रेगुलर सैनिकों की बटालियन पर बटालियन निकल कर भीड़ की तरह फैल रही थीं। *ज़पोरोज़ेत्स* नाम की बख्तरबन्द गाड़ी बगल की एक रेलवे लाइन पर धीरे-धीरे रेंग रही थी। इस गाड़ी में चार डब्बे थे और उसकी लोहे की दीवारों में तमाम रिविट लगे हुए थे। खुले हुए डब्बों में से तोपें उतारी गईं और माल के बन्द डब्बों में से घोड़े बाहर निकाले गये। घोड़ों पर वहीं जीन कसी गई और घुड़सवार, पैदल दस्तों की उस भीड़ में से अपना रास्ता बनाते हुए, स्टेशन के यार्ड में पहुँचे जहाँ घुड़सवारों की टुकड़ी क़तार बना रही थी।

अफ़सरान अपनी टुकड़ियों के नम्बर पुकारते हुए इधर-उधर दौड़ रहे थे।

स्टेशन में बर्र के छत्ते की सी भनभनाहट गूँज रही थी। धीरे-धीरे उस शोर मचाती और भंवर में पड़ी चक्कर सी खाती बेतरतीब भीड़ को ठोंक-पीट कर उसमें से बाक़ायदा प्लैटून बनाये गए और थोड़ी ही देर में हथियारबन्द सिपाहियों का एक रेला नगर की ओर बढ़ चला। काफ़ी रात तक गाड़ियों की चूँ-चरर-मरर सुनाई देती रही और राइफिल डिवीज़न के पीछे-पीछे चलने वाले लोग सड़क पर चलते रहे।

फुर्ती से मार्च करती हुई हेडक्वार्टर्स कम्पनी के साथ जुलूस खतम हुआ। कम्पनी मार्च करते हुए अपने एक सौ बीस कण्ठों से गाती जा रही थी :

कैसा है यह हो-हल्ला और कैसी सारी बकझक है
पेतल्युरा और उसके चेले हैं, इसमें क्या शक है.....

पावेल कोर्चागिन खिड़की से बाहर झाँकने के लिए उठा। भोर के धुँधलके में उसने सड़क पर गाड़ियों के खड़खड़ाने और बहुत से पैरों के मार्च करने की आवाज़ सुनी और सुना बहुत से कण्ठों को गाना गाते।

उसके पीछे से किसी की नर्म मद्धिम-सी आवाज़ आई :

" शहर में फ़ौज आई है।"

कोर्चागिन घूमा।

बोलनेवाली वही लड़की थी जो एक रोज़ पहले वहाँ लाई गई थी।

कोर्चागिन उसकी कहानी सुन चुका था—उस शराब बेचनेवाली औरत ने खोद-खोद कर सारी बातें उससे मालूम कर ली थीं। वह शहर से क़रीब पाँच मील दूर एक गाँव में रहती थी जहाँ उसका बड़ा भाई ग्रित्स्को, जो अब लाल छापेमार था, सोवियत सत्ता के समय गरीब किसानों की एक कमेटी का प्रधान रह चुका था।

जब बोल्शेविक वहाँ से चले तो ग्रित्स्को ने भी मशीनगन की पेटी अपनी कमर में बाँधी और उनके संग चल दिया। अब मौजूदा अधिकारी उसके घरवालों के पीछे हाथ धोकर पड़े थे। ग्रित्स्को के घर में जो एक अकेला घोड़ा था वह भी छीन लिया गया था। उसका बाप कुछ दिन जेल में भी रहा और वहाँ उसे बहुत-बहुत तकलीफ़ों का सामना करना पड़ा। गाँव का चौधरी—जो उन लोगों में से था जिन पर ग्रित्स्को ने सख़्ती से रोक लगाई थी—अब महज़ उन्हें सताने के लिए हमेशा उनके घर पर अजनबियों को लादता रहता था। परिवार अब बिल्कुल तबाह हो गया था। और अभी एक रोज़ पहले जब कमाण्डैण्ट एक तलाशी के सिलसिले में उस गाँव आया था तो चौधरी उसे लेकर उस लड़की के घर पहुँच गया। लड़की कमाण्डैण्ट साहब की आँख पर चढ़ गई और दूसरे रोज़ सवेरे वह उसको "पूछताछ के लिए" अपने संग शहर ले आया।

कोर्चागिन सो नहीं सका। किसी करवट उसे चैन नहीं आ रहा था। उसके दिमाग़ में एक ही सवाल चक्कर काट रहा था जिसको वह दिमाग़ से हटा नहीं पा रहा था और वह सवाल था : "अब इसके बाद क्या होगा?"

उसका घायल जिस्म बुरी तरह दर्द कर रहा था। उस कौसेक सिपाही ने उसे बड़ी बेदर्दी से मारा था।

उसके दिमाग़ में तमाम बुरे-बुरे विचार भीड़ लगा रहे थे। उनसे बचने के लिए पावेल दोनों स्त्रियों की फुसफुसाहट सुनने लगा।

बहुत ही धीमी आवाज़ में, इतनी कि वह मुश्किल ही से सुनाई देती थी, लड़की बतला रही थी कि कैसे कमाण्डैण्ट ने उसे डराया-धमकाया, फुसलाया-बहलाया और जब इतने पर भी उसने कमाण्डैण्ट को धुड़क दिया तो वह गुस्से से लाल-पीला होता हुआ बोला : "मैं तुम्हें एक तहखाने में बन्द कर दूँगा जहाँ तुम मुझसे नहीं बच सकोगी।"

कोठरी के कोनों-अँतरों में अन्धकार छुपा बैठा था। और एक रात सामने थी—बेचैन दम घोंटनेवाली रात। क़ैद में यह पावेल की सातवीं रात थी। मगर उसको लगता था कि जैसे यहाँ उसको महीनों हो गये हों। फ़र्श बहुत सख़्त था

और उसके शरीर के जोड़-जोड़ में दर्द हो रहा था। अब उस पुराने मालगोदाम में तीन लोग थे। उस शराबवाली औरत को खोरूँजी साहब ने छोड़ दिया था ताकि वह जाकर कहीं से वोदका ले आये। बूढ़े दादा अपने ओठे पर पड़े इतने इतमीनान से खर्राटे भर रहे थे जैसे वह अपने घर की गर्म अँगीठी के ऊपर सो रहे हों; वह अपने दुर्भाग्य को बहुत धीरज और शान्ति के साथ सह रहे थे और रात भर गहरी नींद में सोते थे। खिस्तिना और पावेल लगभग अगल-बगल फ़र्श पर लेटे हुए थे। कल पावेल ने खिड़की में से सर्गेई को देखा था जो बड़ी देर तक सड़क पर खड़ा उदास आँखों से मकानों की खिड़कियों को देखता रहा था।

पावेल ने सोचा था, "उसे पता है कि मैं यहाँ हूँ।"

लगातार तीन दिन तक कोई उसके लिए खट्टीवाली काली रोटी लाया था—मगर कौन, यह पहरेदार न बतलाते थे। और दो दिन तक कमाण्डैण्ट ने बार-बार उससे सवाल पूछे थे।

इस सबका क्या मतलब है?

पूछताछ के दौरान में उसने एक भी बात नहीं बतलाई; उलटे, हर चीज से उसने इनकार किया था। उसे खुद नहीं मालूम था कि वह क्यों चुप रहा। वह उन लोगों की तरह साहसी और मजबूत बनना चाहता था जिनके बारे में उसने किताबों में पढ़ा था। मगर उस रात जब वह जेल ले जाया जा रहा था और उसको क़ैद करने वालों में से एक ने कहा था, "हुजूर खोरूँजी, इसको फ़िजूल अपने साथ घसीटे ले चलने से क्या हासिल होगा? इसका तो बस एक ही इलाज है: पीठ में एक गोली मारिए और खत्म कीजिए झंझट को," तो उसे डर लगा था। सचमुच, सोलह साल की उम्र में मरने का खयाल बड़ा भयानक था! मरने का मतलब होगा कि फिर वह जिन्दा नहीं रहेगा।

खिस्तिना भी सोच रही थी। उसे इस लड़के से ज़्यादा बातें मालूम थीं। बहुत मुमकिन है कि इसे अभी मालूम ही न हो कि आगे इस पर क्या गुजरने वाली है....वही बात जो उसने चुपके से सुन ली थी।

वह रात को बिस्तर में पड़ा बेचैन करवटें बदलता रहा और सो नहीं सका। खिस्तिना को उस पर दया आ रही थी, उसका मन पावेल के लिए करुणा से भरा हुआ था, गो उसकी अपनी स्थिति उसकी छाती पर बोझ बनी हुई थी—कमाण्डैण्ट के इन शब्दों के भयावने अर्थ को भूलना नामुमकिन था: "कल मैं तुम्हें ठीक कर दूँगा, अगर तुम मेरे संग नहीं आतीं तो मैं तुम्हें थाने में बन्द करवा दूँगा और फिर वहाँ के कौसेक पहरेदार तुम्हें छोड़ने से रहे। लिहाज़ा तुम्हारे ही ऊपर है यह चीज, जिसे चाहो चुन लो।"

ओह ! कितनी कठिन बात है यह ! किसी तरफ़ से रहम की कोई उम्मीद नहीं ! इसमें उसकी क्या ग़लती थी कि प्रिस्को बोल्शेविकों से जा मिला ? जिन्दगी भी कितनी बेदर्द चीज़ है !

एक भोंथा दर्द उसका गला घोंट रहा था और असहाय निराशा और भय की यन्त्रणा में वह बड़े ज़ोर-ज़ोर से, मगर निःशब्द, सिसकियाँ ले रही थी जिससे उसका सारा शरीर काँप-काँप जाता था।

दीवार के पास कोने में एक छाया हिल रही थी।

" तुम क्यों रो रही हो ?"

भरे हुए दिल से खिस्तिना ने दबे स्वर में अपने ख़ामोश साथी को अपने दुःख की कहानी सुनाई। वह कुछ बोला नहीं, बस उसने अपना हाथ हल्के से उसके हाथ पर रख दिया।

अपने आँसुओं को पीते हुए डरे हुए स्वर में फुसफुसा कर लड़की ने कहा, " वे लोग मुझे सता सता कर मार डालेंगे। मुझे कोई चीज़ नहीं बचा सकती !"

पावेल इस लड़की से आख़िर क्या कहता ? कहने के लिए कुछ भी नहीं था। ज़िन्दगी दोनों को अपने फ़ौलादी शिकंजे में लेकर पीसे डाल रही थी।

एक चीज़ यह हो सकती है कि कल जब वे लोग इसको लेने के लिए आयें तो वह डट कर उनका मुक़ाबिला करे। मगर उससे होगा क्या। वे लोग मार-मारकर उसका भुर्ता बना देंगे या सिर पर तलवार का एक वार होगा जो काम तमाम कर देगा। मगर इस दुखी लड़की को, चाहे जैसे हो, वह आराम पहुँचाना चाहता था और शायद इसीलिए बड़े प्यार से उसके हाथ को थपथपा रहा था। लड़की का सिसकना बन्द हो गया। बीच-बीच में फाटक पर के सन्तरी का उधर से गुज़रने वाले आदमी से घुड़क कर पूछना सुनाई दे जाता, " कौन जा रहा है ?" और फिर ख़ामोशी छा जाती। बूढ़े दादा गहरी नींद में सो रहे थे। नातमाम मिनट धीरे-धीरे रेंग रहे थे। फिर पावेल ने उस लड़की की बाँहों को अपने इर्द-गिर्द लिपटता महसूस किया और महसूस किया कि वह लड़की उसे अपनी तरफ खींच रही है। पावेल को बड़ा ताज्जुब हुआ।

" सुनो," उसके गर्म ओंठ धीरे-धीरे कह रहे थे, " मेरे लिए कोई बचत नहीं है। अगर यह अफ़सर नहीं तो थाने पर के वे पहरेदार, कोई-न-कोई मुझे ज़रूर ख़राब करेगा। मैं तुमसे विनती करती हूँ मेरे प्यारे, कि तुम मुझे ले लो ताकि वह कुत्ता मेरे शरीर को लेने वाला पहला व्यक्ति न हो।"

" यह तुम क्या कह रही हो, खिस्तिना !"

मगर उन मजबूत बाँहों ने उसे छोड़ा नहीं। उसके भरे-भरे गदराये हुए जलते हुए ओंठ उसके ओंठों से जा लगे—उनसे बचना मुश्किल था। लड़की के शब्द सरल थे, कोमल थे, प्यार में डूबे हुए थे और पावेल को पता था कि वह क्यों ऐसे शब्द बोल रही है।

फिर उसके लिए उसके परिवेश का अस्तित्व मिट गया। दरवाजे पर का ताला, लाल बालों वाला कौसेक, कमाण्डैण्ट, वह बेरहम मार-पीट, वे सात दम घोंटनेवाली बेचैन निद्रा-विहीन रातें—सब कुछ भूल गईं और क्षण भर के लिए केवल वे जलते हुए ओंठ और वह आँसुओं से भीगा हुआ चेहरा रह गया।

तभी एकाएक उसे तोनिया की याद आई।

"उसको मैं कैसे भूल गया? उसकी वे प्यारी-प्यारी आँखें जिनका कहीं कोई जवाब नहीं।"

उसने अपनी इच्छाशक्ति का सारा जोर लगाया और अपने को खिस्तिना के आलिंगन से छुड़ा लिया। शराब पिये हुए आदमी की तरह वह लड़खड़ाते पैरों पर खड़ा हुआ और जाकर सींखचे को पकड़ लिया। खिस्तिना के हाथों ने वहाँ भी उसे पा लिया।

"क्यों, क्या बात है?"

उसके मन का सारा आवेग इस सवाल में भरा हुआ था! पावेल उसकी ओर झुका और उसके हाथों को दबाते हुए बोला:

"नहीं खिस्तिना, मैं नहीं···तुम इतनी···अच्छी हो।" उसे खुद नहीं पता कि इसके अलावा उसने और क्या-क्या कहा।

इस असह्य शान्ति को तोड़ने के लिए वह फिर तनकर खड़ा हुआ और अपने ओठे पर चला गया। उसके सिरे पर बैठते हुए उसने बुड्ढे को जगा दिया।

"दादा, एक सिगरेट दो मुझे।"

वह लड़की अपने शाल में लिपटी हुई कोने में बैठी रोती रही।

दूसरे रोज कमाण्डैण्ट कुछ कौसेक सिपाहियों के साथ आया और खिस्तिना को पकड़ ले गया। जाते-जाते उसकी आँखों ने पावेल की आँखों को खोजा और पावेल ने पाया कि उन आँखों में शिकायत है। और जब वह चली गई और दरवाजा बन्द हो गया तो उसकी आत्मा पहले से कहीं ज़्यादा उदास और सूनी हो गई।

सारे दिन बूढ़े दादा पावेल के मुँह से एक शब्द नहीं निकलवा सके। सन्तरी और कमाण्डैण्ट के गार्ड दोनों बदल गये थे। शाम होते-होते एक नया

क़ैदी लाया गया। पावेल ने उसे पहचान लिया। वह दोलिनिक था, शकर के कारखाने का एक बढ़ई। वह बहुत ठोस, मज़बूत, चौड़ा-चकला आदमी था। एक पुराने, तार-तार हो रहे कोट के नीचे वह उड़े-उड़े से पीले रंग की कमीज़ पहने हुए था। उसने ग़ौर से कोठरी का मुआइना किया।

पावेल ने १६१७ के फरवरी महीने में उसे देखा था, जब क्रान्ति की थरथरी उनके शहर में पहुँची थी। उन दिनों जो शोर-गुल से भरे प्रदर्शन हुए थे उनमें उसने सिर्फ़ एक बोल्शेविक को बोलते सुना था और वह बोल्शेविक था यही दोलिनिक। वह सड़क से लगी हुई एक बाड़ी पर चढ़ गया था और वहाँ से उसने सैनिकों को सम्बोधित करते हुए भाषण दिया था। पावेल को अब भी उसके अन्तिम शब्द याद थे :

" फ़ौजी भाइयो, बोल्शेविकों के पीछे-पीछे चलो, वे तुम्हारे साथ दग़ा नहीं करेंगे !"

तब से उसने उस बढ़ई को नहीं देखा था।

बूढ़े दादा बड़े खुश थे कि उन्हें इस कोठरी में नया साथी मिला, क्योंकि ज़ाहिर है कि दिन भर चुप-चुप बैठे रहना उन पर बहुत भारी गुज़रता था। दोलिनिक ओठे के किनारे पर उनकी बगल में बैठ गया, उनके संग एक सिगरेट पी और सभी चीज़ों के बारे में उनसे पूछ डाला।

इसके बाद आगन्तुक कोर्चागिन के पास आया और उसने पूछा, " कहो मेरे नन्हें दोस्त, *तुम* यहाँ कैसे आए ?"

पावेल ने एक-एक शब्द में जवाब दिया और दोलिनिक ने देखा कि पावेल के मन का सन्देह ही इसका कारण है। दोलिनिक को जब पावेल पर लगाये गये अभियोग की बात मालूम हुई तो उसकी तीक्ष्ण आँखें आश्चर्य से फैल गईं और वह उस लड़के की बगल में जाकर बैठ गया।

" तो तुम्हारा कहना है कि तुमने जुख़राई को छुड़ाया ? बड़ी दिलचस्प बात है। मुझे नहीं मालूम था कि उन्होंने तुमको पकड़ लिया है।"

पावेल को दोलिनिक की बात से अचरज हुआ और वह अपनी कोहनी के सहारे उठ बैठा।

"मैं किसी जुख़राई को नहीं जानता। इन लोगों को क्या, ये जिसको चाहें जो नाम लगा दें।"

दोलिनिक मुस्कराता हुआ उसके और पास आ गया।

" ठीक है, ठीक है, दोस्त। मगर मेरे संग इतना चौकन्ना होने की ज़रूरत नहीं। मुझे तुमसे ज़्यादा बातें मालूम हैं।"

बहुत धीरे से ताकि वह बूढ़ा उनकी बात न सुन सके, दोलिनिक ने कहा :

" मैंने खुद जुखराई को विदा किया है, ग़ालिचन वह अपनी मंज़िल पर पहुँच भी गया होगा। फ़्योदोर ने मुझे उस घटना के बारे में सब कुछ बतला दिया है।"

क्षण भर चुपचाप विचार करने के बाद दोलिनिक ने अपनी बात में इतना और जोड़ा :

" मैं देखता हूँ कि तुम ठीक धात के बने हो, दोस्त। गो यह बहुत बुरा हुआ कि उन्होंने तुमको पकड़ लिया और तुम्हारे बारे में उन्हें सब कुछ मालूम है। यह बुरा हुआ, बहुत बुरा, मैं तो कहूँगा।"

उसने अपना कोट उतारा और उसे ज़मीन पर बिछा कर उस पर दीवाल के सहारे टिक कर बैठ गया और अपने लिए और एक सिगरेट बनाने लगा।

दोलिनिक की आख़िरी बात से पावेल के आगे पूरी स्थिति स्पष्ट हो गई। इसमें कोई शक नहीं कि दोलिनिक ठीक बात कह रहा है। उसने जुखराई को विदा किया था और इसका मतलब है....!

उस शाम को उसे पता चला कि दोलिनिक को पेतल्युरा के कौसेकों के बीच प्रचार करने के जुर्म में पकड़ा गया है। इतना ही नहीं, उसे सूबाई इन्क़लाबी कमेटी की तरफ़ से जारी की हुई एक अपील बाँटते पकड़ा गया था जिसमें सैनिकों से कहा गया था कि हथियार डाल दें और बोल्शेविकों से मिल जायें।

दोलिनिक ने सावधानी के ख़याल से पावेल को ज़्यादा बातें नहीं बतलाईं।

उसने अपने मन में कहा, " कौन जाने सभों ने अगर कहीं इसे डण्डे लगाये तो न जाने क्या हो। आख़िर लड़का ही तो है अभी।"

बहुत रात गए जब वे लोग सोने की तैयारी कर रहे थे तो उसने अपने मन की आशंका इस प्रकार संक्षेप में व्यक्त की :

" तो कोर्चागिन, हम लोग ख़ासे बुरे फँसे हैं, देखें कहाँ जाकर हमारा पानी मरता है।"

दूसरे रोज़ एक और नया क़ैदी लाया गया—बड़े-बड़े कानों और दुबली-पतली मरियल सी गर्दन वाला हज्जाम श्लयोमा ज़ेल्टसर जिसे शहर में हर कोई जानता था।

वह दोलिनिक को बहुत आवेश और भाव-भंगिमा के साथ बतला रहा था, " फुक्स, ब्लुवस्टाइन और ट्रेक्टेनबर्ग नमक-रोटी से उसका स्वागत करने जा रहे थे। मैंने उनसे कहा कि अगर तुम्हारा जी हो तो करो, मगर बाक़ी यहूदी लोग

तुम्हारा साथ देंगे क्या ? नहीं देंगे, मैं तुमसे कहता हूँ। उनको अपना भी तो नफ़ा-नुकसान देखना है। फुक्स के पास अपनी दूकान है और ट्रेक्टेनबर्ग के पास आटे की चक्की है। मगर मेरे पास क्या है ? और बाकी भूखे लोगों के पास क्या है ? कुछ नहीं—भिखमंगे हैं हम सब और क्या। तुम तो जानते हो मुझे अपनी जबान पर क़ाबू नहीं, और आज जब मैं एक अफ़सर की दाढ़ी बना रहा था—और कौन, वही जो नये आये हैं उनमें से एक—तो मैंने कहा : 'आपका क्या खयाल है, ऐटमन पेतल्युरा को इस सब मारकाट के बारे में पता है या नहीं ? क्या वे डेपुटेशन से मिलेंगे ?' अरे बाप रे बाप, कितनी बार मैं अपनी इस निगोड़ी जबान के कारण मुसीबत में न फँसा होऊँगा ! तो जब मैं बहुत क़रीने से उस अफ़सर की दाढ़ी बना चुका और ढंग से चेहरे पर पाउडर-वाउडर लगा दिया तो जानते हो उस अफ़सर ने क्या किया ? वह उठा और मुझे पैसा देना तो दूर रहा, अधिकारियों के खिलाफ़ प्रचार करने के जुर्म में मुझे गिरफ़्तार कर लिया।" जेल्टसर ने अपनी छाती टोंकी और बोला, "अब तुम्हीं बताओ कि यह भी भला कोई प्रचार था ? आखिर मैंने क्या कह दिया ? मैंने उस आदमी से सिर्फ़ एक बात ही तो पूछी और·····इसके लिए उन्होंने मुझे यहाँ लाकर बन्द कर दिया, वाह रे···! "

अपने आवेश में जेल्टसर दोलिनिक की कमीज के एक बटन को मरोड़ने लगा और उसका हाथ पकड़ कर खींचने लगा।

दोलिनिक को बेसाख्ता मुस्कराहट आ गई जब उसने गुस्से में भरे श्ल्योमा की बात सुनी।

हज्जाम की बात खतम होने पर दोलिनिक ने बड़ी गम्भीरता से कहा, " हाँ श्ल्योमा तुम जैसे होशियार आदमी से ऐसी बेवकूफ़ी की उम्मीद नहीं थी। तुमने बड़े बेमौक़े अपनी जबान की लगाम ढीली कर दी। मैं कभी तुम्हें यहाँ आने की सलाह न देता !"

जेल्टसर ने बात को समझने के अन्दाज में सिर हिलाया और हाथ से निराशा की मुद्रा व्यक्त की। तभी दरवाज़ा खुला और वह शराबवाली अन्दर ढकेली गई। वह लड़खड़ाती और अपने पहरेदार कौसेक सिपाही पर गालियों की बौछार करती हुई कोठरी में घुसी।

" तुमको और तुम्हारे कमाडैण्ट को तो धीमी आँच पर कबाब की तरह भूने ! उम्मीद तो करती हूँ कि मेरी उस शराब को पीकर वह टें हो जायगा !"

सन्तरी ने जोर से फाटक बन्द किया। अन्दर के लोगों ने उसको बाहर ताला बन्द करते सुना।

वह औरत ओठे के सिरे पर बैठ गई तो उस बूढ़े ने खुश-खुश उससे कहा :

"अच्छा तो तुम फिर हमारे संग आ गईं, अपनी बकबक की झड़ी लगाने को। बैठ जाओ आराम से।"

उस शराबवाली ने बूढ़े को गुस्से से तरेरा और अपनी पोटली उठा कर दोलिनिक के बगल में फ़र्श पर बैठ गई।

मालूम यह हुआ कि उसको सिर्फ़ इतनी देर के लिए छोड़ा गया था कि वह अपने क़ैद करने वालों के लिए समोगन शराब की कुछ बोतलें ले आये।

एकाएक बगलवाले, सन्तरियों के, कमरे से चीख-पुकार और भागते हुए पैरों की आवाज़ सुनाई दी। कोई कुत्ते की तरह भूँक-भूँककर हुक्म दे रहा था। क़ैदियों ने उस आवाज़ को ठीक से सुनने के लिये अपनी बात बन्द कर दी।

पुराने घण्टाघर वाले उस बदसूरत गिर्जे के सामने वाले मैदान में कुछ अजीब कार्रवाइयाँ हो रही थीं। चौक के तीन तरफ़ फ़ौजें आयताकार खड़ी थीं। ये रेगुलर पैदल फ़ौज के डिवीज़न की टुकड़ियाँ थीं, जो अपने लड़ाई के पूरे साज-सामान के साथ इकट्ठा की गई थीं।

गिर्जाघर के फाटक के सामने पैदल फ़ौजों की तीन रेजिमेण्टें शतरंज के मोहरों की तरह वर्गाकार खड़ी थीं। उनके पीछे स्कूल की चहारदीवारी थी।

पेतल्युरा सैनिकों का यह भूरा-भूरा, गन्दा-सा समूह आराम की मुद्रा में राइफ़िलें लिये खड़ा था। ये सैनिक सिर पर लोहे के अजीब बेहूदा-से टोप औंधाये हुए थे जो देखने में ऐसे लगते थे कि मानो कुम्हड़े के दो बराबर-बराबर हिस्से हों। सैनिक अपनी कारतूस की पेटियों से बुरी तरह लदे हुए थे। डाइरेक्टरी के पास सबसे अच्छी डिवीज़न यही थी।

ये लोग अच्छी वर्दियाँ पहने थे और पुरानी ज़ारशाही सेना के साज-सामान से लैस थे। इनमें खास तौर पर धनी किसान थे जो हर बात को अच्छी तरह समझ-बूझकर सोवियत सत्ता के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे। फ़ौजी दृष्टि से इस अत्यन्त महत्वपूर्ण रेलवे जंक्शन की रक्षा के लिए यह डिवीज़न यहाँ लाई गई थी। शेपेतोवका से पाँच दिशाओं में रेलवे लाइनें फूटती थीं जो देखने में लोहे के चमकदार फ़ीते जैसी जान पड़ती थीं। पेतल्युरा के लिए इस जंक्शन के हाथ से निकल जाने का मतलब था, सब कुछ हाथ से निकल जाना। यों भी स्थिति यह थी कि "डाइरेक्टरी" के हाथ में अब बहुत थोड़ा सा ही इलाक़ा बचा था और विनित्सा नाम का क़स्बा ही अब पेतल्युरा की राजधानी थी।

"चीफ़ ऐटमन" साहब ने खुद फ़ौजों का मुआइना करने का फ़ैसला किया था और इस वक़्त हर चीज़ उनके आने के इन्तज़ार में तैयार खड़ी थी।

पीछे दूर पर एक कोने में, जहाँ उन पर निगाह पड़ने की सबसे कम उम्मीद थी, नये रंगरूटों की एक रेजिमेण्ट खड़ी थी। ये नंगे पैर नौजवान तरह-तरह के बेमेल, भद्दे कपड़े पहने हुए थे। ये सब किसानों के लड़के थे जिन्हें भरती करने वाले दस्तों ने आधी रात को उनके बिस्तरों से उठा कर भर्ती कर लिया था या जिन्हें राह चलते पकड़ लिया था। उनमें से किसी का भी लड़ने का कोई इरादा नहीं था।

वे लोग आपस में कहते, "हमारा सिर नहीं फिर गया है।"

पेतल्युरा के अफ़सर ज़्यादा से ज़्यादा यही कर सकते थे कि इन रंगरूटों को फ़ौजी पहरे में शहर लायें, उनकी कम्पनियाँ और बटालियनें बनाएँ और उनको हथियार दें। इससे ज़्यादा तो वे कुछ नहीं कर सकते थे। मगर होता यह कि दूसरे ही रोज़ इनमें से एक-तिहाई रंगरूट, जो भेड़-बकरियों की तरह इकट्ठा किये गए थे, अचानक ग़ायब हो जाते और इस तरह उनकी तादाद रोज़-ब-रोज़ कम होती जाती।

ऐसी हालत में उन्हें बूट देना तो नासमझी की बात होती और खास तौर पर ऐसी हालत में जब कि बूटों का स्टाक कम ही था। तो भी हुक्म जारी किया गया कि भर्ती किये हुए सब लोग बूटों के लिए अपने-आपको रिपोर्ट करें। फल-स्वरूप धागों और तारों से बाँधे गये फटे-पुराने जूतों की एक अजीबोगरीब बारात लग गई।

उन्हें परेड के लिए नंगे पाँव बाहर निकाला गया।

पैदल सिपाहियों के पीछे गोलुब की घुड़सवार रेजिमेण्ट खड़ी थी।

शहर के तमाम लोग मारे कुतूहल के परेड देखने आये थे। उनकी भीड़ को घुड़सवार रोके हुए थे।

आखिरकार खुद "चीफ़ ऐटमन" साहब तशरीफ़ लाने वाले थे, कोई ऐसी-वैसी बात थोड़े ही थी। इस तरह की घटनाएँ शहर में बहुत कम ही होती थीं। इसलिए कोई भी आदमी इस फोकट के मनोरंजन को हाथ से नहीं जाने देना चाहता था।

गिर्जाघर की सीढ़ियों पर तमाम कर्नल और कप्तान, पादरी की दोनों लड़कियाँ, मुट्ठी भर उक्रेनी स्कूल मास्टर, थोड़े से "आज़ाद कौसेक" और मेयर साहब जिनकी कूबड़ निकली हुई थी—कहने का मतलब यह कि शहर के सभी धनी-मानी लोग जनता के रूप में वहाँ खड़े थे और उन्हीं में थे पैदल सेना के

इन्स्पेक्टर जनरल, जो काकेशस वालों की पोशाक चेरकेस्का पहने हुए थे। वही परेड के आला अफ़सर थे।

गिर्जे के अन्दर, पादरी वासिली साहब अपने ईस्टर के कपड़े पहन रहे थे।

पेतल्युरा का स्वागत करने की बड़ी धूमधाम के साथ तैयारियाँ हो रही थीं। नये भर्ती रंगरूटों को स्वामिभक्ति की शपथ लेनी थी और इसके लिए एक पीला-और-नीला झण्डा बाहर लाया गया था।

डिवीजन कमाण्डर एक पुरानी जर्जर फोर्ड मोटर में बैठ कर पेतल्युरा से मिलने के लिए स्टेशन चले।

उनके चले जाने पर पैदल सेना के इन्स्पेक्टर ने कर्नल चेर्नायक को बुलाया। यह एक तम्बा-तगड़ा अफ़सर था और बहुत बाँकपन से उसने मूँछें ऐंठ रखी थीं।

"किसी को अपने साथ ले लो और जाकर देखो कि कमाण्डैण्ट का दफ्तर और हज्जाम-अर्दली वग़ैरह सब ठीक हैं या नहीं। अगर तुम्हें वहाँ कुछ क़ैदी मिलें तो उन्हें देख लेना और उनमें जो एकदम बेकार हों उनसे छुट्टी पा लेना।"

चेर्नायक ने अटेन्शन की मुद्रा में खड़े होते हुए सलाम किया, टक्क से उसके बूटों की एड़ियाँ बोलीं। सबसे पहले जिस कौसेक कप्तान पर उसकी निगाह पड़ी, उसी को लेकर चेर्नायक सरपट घोड़े पर निकल गया।

इन्स्पेक्टर साहब बड़े तकल्लुफ़ से पादरी की बड़ी लड़की की ओर मुड़े।

"दावत की सब तैयारी ठीक है न?"

"जरूर, जरूर। कमाण्डैण्ट साहब जान लड़ाये दे रहे हैं," लड़की ने खूबसूरत इन्स्पेक्टर को उत्सुकता से एकटक देखते हुए जवाब दिया।

एकाएक भीड़ में खलबली मच गई। एक घुड़सवार, अपने घोड़े की गर्दन पर झुका हुआ, सरपट भागा चला आ रहा था। हाथ हिलाते हुए चिल्लाकर उसने कहा:

"वे लोग आ रहे हैं!"

"फॉल इन!" इन्स्पेक्टर चिल्लाया।

सब अफ़सर अपनी-अपनी जगह के लिए दौड़ पड़े।

फोर्ड मोटर घड़र-घड़र करके गिर्जाघर तक पहुँची ही थी कि बैण्ड ने धुन बजानी शुरू कर दी: *"उक्रेन सदा ज़िन्दा रहेगा!"*

डिवीजन कमाण्डर के बाद "चीफ़ ऐटमन" बड़ी मशक़्क़त से गाड़ी से बाहर निकले। पेतल्युरा मझोले क़द का आदमी था। उसका नुकीला सिर बहुत मज़बूती से जमा कर उसकी लाल, सांड़ जैसी गर्दन पर रखा हुआ था। वह बहुत अच्छे

ऊनी कपड़े की नीली ट्यूनिक पहने था जिस पर एक पीली पेटी लगी हुई थी। एक छोटा सा ब्राउनिंग रिवाल्वर साबड़ के केस में रखा इस पेटी में लगा हुआ था। उसके सिर पर खाकी रंग की छज्जेदार टोपी थी जिसके ऊपर इनेमल का त्रिशूल बना हुआ था।

साइमन पेतल्युरा की आकृति में कोई खास फ़ौजी बात न थी। सच बात तो यह कि वह फ़ौजी आदमी मालूम ही नहीं होता था।

उसने इन्स्पेक्टर की पूरी रिपोर्ट सुनी। उस वक़्त उसके चेहरे पर ऐसा भाव था मानो वह चीज़ उसे बहुत अप्रिय लग रही हो। उसके बाद मेयर ने उसके स्वागत में भाषण दिया।

पेतल्युरा ने उड़े-उड़े ढंग से उसको सुना और मेयर के सिर के पीछे से, सामने खड़ी रेजिमेण्टों को देखता रहा।

उसने इन्स्पेक्टर को इशारा किया, "अब हमें शुरू करना चाहिए।"

झण्डे के पास के छोटे-से मंच पर खड़े होकर अपने सिपाहियों के सामने पेतल्युरा ने दस मिनट की एक तक़रीर की।

इस तक़रीर से किसी पर कोई असर नहीं पड़ा। सफ़र की थकान के कारण पेतल्युरा के बोलने में कोई जोश न था। तक़रीर खतम होने पर सिपाहियों ने *"स्लावा! स्लावा!"* के नारे लगाये और पेतल्युरा रूमाल से माथे का पसीना पोंछता हुआ मंच से उतरा। फिर, इन्स्पेक्टर और डिवीज़न कमाण्डर को साथ लेकर उसने फ़ौजी दस्तों का मुआइना किया।

नये-नये भर्ती रंगरूटों की सफ़ों के पास से गुजरने पर उसके माथे पर बल पड़ गए और उसकी आँखों में उपेक्षा और घृणा का भाव दिखाई दिया। चिढ़ के मारे वह अपने ओंठ चबाने लगा।

जब मुआइना खतम होने आ रहा था और नये रंगरूटों की एक के बाद दूसरी प्लेटून झण्डे तक मार्च करके—जहाँ पादरी वासिली बाइबिल हाथ में लिये खड़े थे—पहले बाइबिल को और बाद में झण्डे को चूम रही थी, एक अप्रत्याशित घटना घटी।

किसी को नहीं मालूम कि ये लोग किस तरह चौक तक पहुँचे जहाँ परेड हो रही थी, मगर सबने देखा कि कुछ लोगों का एक प्रतिनिधि मण्डल पेतल्युरा के पास पहुँचा। इस दल के आगे आगे लकड़ी का धनी व्यापारी ब्लुवस्टाइन था जो रस्मिया तौर पर रोटी और नमक हाथ में लिये हुए था। उसके पीछे और चार लोग थे जिनमें कपड़े का व्यापारी फुक्स भी था।

गुलामों की तरह झुक कर सलाम बजाते हुए ब्लुवस्टाइन ने तश्तरी पेतल्युरा की तरफ़ बढ़ाई। पेतल्युरा के संग खड़े एक अफ़सर ने तश्तरी ले ली।

"राज्याधीश, यहाँ की यहूदी आबादी आपके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करती है। कृपया इस अभिनन्दन-पत्र को स्वीकार कीजिए।"

तेजी से उस कागज पर निगाह दौड़ाते हुए पेतल्युरा ने धीमे से कहा, "अच्छा।"

फुक्स आगे बढ़ा।

"हम आपसे विनती करते हैं कि आप हमें अपना कारबार चालू करने दें। हम आपसे विनती करते हैं कि आप मारकाट से हमारी रक्षा करें।" 'मारकाट' शब्द पर फुक्स थोड़ा लड़खड़ाया।

गुस्से में पेतल्युरा की त्योरियों में बल पड़ गए।

"मेरी फ़ौज मारकाट नहीं करती, यह बात तुम्हें याद रखनी चाहिए।"

फुक्स ने यों बाँहें फैला दीं जैसे कह रहा हो कि आप जो कहते हैं वही ठीक है।

पेतल्युरा के कन्धे हिले। इस प्रतिनिधि-मण्डल के असमय आगमन से उसे चिढ़ मालूम हो रही थी। वह गोलुब की ओर मुड़ा जो पीछे खड़ा अपनी काली मूँछें चबा रहा था।

"कर्नल साहब, यह आपके कौसेकों के खिलाफ़ शिकायत है," पेतल्युरा ने कहा। "इस मामले की छानबीन कीजिए और माकूल कार्रवाई कीजिए।" फिर इन्स्पेक्टर की तरफ़ मुड़ते हुए उसने खुश्क ढंग से कहा :

"अब तुम परेड शुरू कर दो।"

इस अभागे प्रतिनिधि-मण्डल को सपने में भी गुमान नहीं था कि उन्हें गोलुब का सामना करना पड़ेगा। लिहाजा अब उन्होंने पीछे हटने की जल्दी दिखाई।

दर्शकों का सारा ध्यान अब मार्च-पास्ट की तैयारियों पर केन्द्रित था। सैनिकों को तेज स्वर में दिये गए आदेश गूँज रहे थे।

गोलुब का चेहरा ऊपर से बहुत शान्त दिख रहा था। वह ब्लुवस्टाइन की ओर बढ़ा और फुसफुसा कर ही, मगर काफ़ी जोर से, कहा :

"काफ़िरो, यहाँ से भाग जाओ नहीं तो अभी तुम्हारा कीमा बना दूँगा।"

बैण्ड बजने लगा और पहली टुकड़ियाँ स्क्वायर में मार्च करने लगीं। पेतल्युरा के पास पहुँचने पर सैनिकों ने बेजान मशीनों की तरह *"स्लावा"* का नारा लगाया और बड़ी सड़क पर आगे बढ़ते हुए गलियों में गुम हो गए। कम्पनियों के आगे-आगे नई खाकी वर्दी पहने अफ़सर इस तरह चल रहे थे मानो हवाखोरी के लिए निकले हों। उनके हाथ की छड़ियाँ भी इसी तरह हिल रही

थीं। सैनिकों के क्लीनिंग-रॉड की तरह अफ़सरों की इन छड़ियों का भी चलन अभी हाल में शुरू हुआ था।

नये रंगरूट परेड में सबसे पीछे-पीछे आ रहे थे। वे एक अनुशासनहीन भीड़ के समान थे। उनके क़दम नहीं मिल रहे थे और वे एक-दूसरे को धक्का देते हुए चल रहे थे।

इन रंगरूटों को अफ़सर लोग बहुत कोंच रहे थे कि कुछ तो अनुशासन उनके अन्दर दिखाई दे, मगर बेसूद। ये रंगरूट जब गुज़रे तो उनके नंगे पैरों की धीमी सरसराहट सुनाई दी। जिस वक़्त दूसरी कम्पनी गुज़र रही थी, सूती कमीज़ पहने एक किसान लड़का सलामी लेने के चबूतरे के पास ऐसे आश्चर्य से आँख फाड़ कर "चीफ़" ऐटमन को देखने लगा कि उसका पैर सड़क के एक गड्ढे में घुस गया और वह मुँह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी राइफिल ज़ोर से आवाज़ करके सड़क के पत्थर पर लुढ़क गई। उसने उठने की कोशिश की, मगर पीछे से सिपाहियों के धक्के से फिर गिर पड़ा।

दर्शकों में से कुछ खिलखिला कर हँस पड़े। कम्पनी की क़तारें टूट गईं और वह बिल्कुल बदमली की हालत में स्क्वायर में से गुज़री। उस बदक़िस्मत लड़के ने अपनी राइफिल उठाई और दूसरों के पीछे-पीछे दौड़ा।

पेतल्युरा ने इस भद्दे दृश्य से आँखें फेर लीं और परेड के ख़ातमे का इन्तज़ार किये बग़ैर अपनी मोटर की तरफ़ चल दिया। इन्स्पेक्टर ने, जो ऐटमन के पीछे-पीछे चला आ रहा था, कुछ सहमे हुए स्वर में पूछा :

"क्या हुज़ूर ऐटमन साहब डिनर तक नहीं रुकेंगे?"

"नहीं," पेतल्युरा ने तमाचा-सा मारते हुए जवाब दिया।

सर्गेई ब्रुज़ाक, वालिया और क्लिम्का, दर्शकों की भीड़ में, गिर्जे की चहारदीवारी से लगे हुए परेड देख रहे थे। सर्गेई छड़ पकड़े हुए, आँखों में नफ़रत भरे, नीचे खड़े लोगों के चेहरे देख रहा था।

"चलो चलें वालिया, ये लोग अब अपनी दूकान उठा रहे हैं," उसने जान-बूझकर तेज़ और उद्दण्ड स्वर में कहा और चलने के लिए मुड़ा। लोग हैरत से उसकी तरफ़ देखने लगे।

किसी की कुछ परवाह न करते हुए वह फाटक की तरफ़ चल दिया। उसके पीछे-पीछे उसकी बहन और क्लिम्का भी चले गये।

कर्नल चेर्नायक और कप्तान साहब घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए कमाण्डैण्ट

के दफ़्तर तक आये और अपने घोड़ों से उतर पड़े। अपने घोड़ों को फ़ौज की डाक ले जाने वाले सवार को पकड़ा कर वे तेज़ी से सन्तरियों के कमरे में चले गये।

चेर्नायक ने तेज़ आवाज़ में डाक ले जाने वाले सवार से पूछा, "कमाण्डैण्ट साहब कहाँ हैं?"

उस आदमी ने हकलाते हुए कहा, "पता नहीं। कहीं चले गये हैं।"

चेर्नायक ने उस गन्दे कमरे में इधर-उधर नज़र दौड़ाई और उन बिस्तरों को देखा जो अभी उठाये नहीं गये थे और जिन पर कमाण्डैण्ट के अंगरक्षक कौसेक सैनिक इतमीनान के साथ लेटे हुए पड़े थे। अफ़सरों के कमरे में दाखिल होने पर भी उन्होंने उठने की कोई कोशिश न की।

चेर्नायक ने गरज कर कहा, "यह क्या सुअरों का सा बाड़ा बना रखा है? और तुमको किसने इस तरह लोटने की इजाज़त दी है?" उसने चित लेटे हुए उन सिपाहियों को कस कर डाँट बताई।

एक कौसेक उठ बैठा, डकार ली और गुर्राता हुआ बोला :

"क्यों टर्र-टर्र कर रहे हो? इस काम के लिए हमारा अपना आदमी है जो काफ़ी टर्रा लेता है!"

"क्या कहा!" चेर्नायक लपक कर उस आदमी की तरफ़ बढ़ा, "अबे हरामी के बच्चे, जानता है किससे बात कर रहा है? मैं कर्नल चेर्नायक हूँ। सुना, सुअर कहीं के। फ़ौरन उठ कर बैठो तुम सब लोग, वर्ना अभी मैं तुम सबों को कोड़े लगवाता हूँ!" तैश खाया हुआ कर्नल सन्तरियों के कमरे में इधर-उधर तेज़ी से टहलने लगा। "मैं तुमको एक मिनट देता हूँ, यहाँ की सारी ग़लाज़त साफ़ करो, बिस्तरों को ठीक करो और अपने इन सुअर-जैसे चेहरों को भी ज़रा ठीक करो। तुम कौसेक सिपाही थोड़े ही मालूम होते हो। बिल्कुल लुटेरे मालूम होते हो, लुटेरे!"

गुस्से के मारे कर्नल साहब पागल हो रहे थे और उन्होंने रास्ते में पड़ी हुई गन्दे पानी की एक बाल्टी को ज़ोर से एक ठोकर लगाई।

कप्तान साहब भी कुछ कम जोश में न थे और वह अपने गाली-गुफ़्ते को अपना तीन तस्मे वाला चाबुक घुमा-घुमाकर और प्रभावशाली बना रहे थे। इस तरह उन्होंने सिपाहियों को अपनी जगहों पर से उठा दिया।

"चीफ़ ऐटमन साहब परेड का मुलाहिज़ा कर रहे हैं। किसी भी मिनट वह यहाँ आ सकते हैं। जल्दी! जल्दी करो, जल्दी!"

यह देख कर कि मामला संगीन होता जा रहा है और कहीं ऐसा न हो कि उनके वाक़ई कोड़े पड़ने लगें—चेर्नायक की शोहरत उन्हें अच्छी तरह मालूम थी—कौसेक सिपाही दौड़-दौड़कर काम करने लगे।

पलक मारते ही काम पूरे ज़ोर-शोर से होने लगा।

कप्तान ने सुझाव दिया, "हमें ज़रा एक नज़र क़ैदियों पर भी डालनी चाहिए। पता नहीं किस-किस को यहाँ बन्द कर रखा हो। कहीं अगर चीफ़ ने आकर देखा तो हमारी आफ़त आ जायगी।"

"चाभी किसके पास है?" चेर्नायक ने सन्तरी से पूछा। "फ़ौरन दरवाज़ा खोलो।"

एक सार्जेण्ट कूद कर खड़ा हुआ और फ़ौरन उसने जाकर ताला खोला।

"कमाण्डैण्ट कहाँ है? तुम समझते हो कि मैं क़यामत के रोज़ तक उसका इन्तज़ार करता रहूँगा? फ़ौरन उसका पता लगाओ और यहाँ भेजो।" चेर्नायक ने हुक्म दिया, "तमाम सन्तरियों को बाहर चौक में जमा करो! राइफ़िलों में संगीनें क्यों नहीं लगी हैं?"

"अभी कल ही तो हम लोग आये हैं," सार्जेण्ट ने सफ़ाई देने की कोशिश की और तेज़ी से कमाण्डैण्ट की तलाश में चला गया।

कप्तान ने पैर की ठोकर से मालगोदाम का दरवाज़ा खोला। अन्दर के कई लोग फ़र्श से उठ कर खड़े हो गये। बाक़ी लोगों में कोई हरकत नहीं हुई।

चेर्नायक ने हुक्म दिया, "दरवाज़ों को और अच्छी तरह खोल दो। यहाँ तो काफ़ी रोशनी भी नहीं है।"

उसने क़ैदियों के चेहरों को ग़ौर से देखा।

"क्यों जी, तुम यहाँ पर क्यों बन्द हो?" उसने ओठे के सिरे पर बैठे बुड्ढे आदमी से तड़ाक से पूछा।

बुड्ढा आधा उठा और अपने पतलून को ऊपर चढ़ाते हुए इस तेज़ी से पूछे गये सवाल से डर कर धीरे से बुदबुदाया:

"मुझे खुद नहीं मालूम। उन्होंने मुझे यहाँ बन्द कर दिया और तब से बन्द हूँ। हाते में से न जाने कैसे एक घोड़ा ग़ायब हो गया था। मेरा उसमें कोई क़सूर नहीं।"

"किसका घोड़ा?" कप्तान ने उसकी बात को बीच में काटा।

"फ़ौज का घोड़ा, और किसका! मेरे यहाँ जो सिपाही टिकाये गये थे, उन्होंने उसको बेच कर सारी रक़म पी डाली और अब मुझे दोष लगाते हैं।"

चेर्नायक ने तेज़ी से उस बुड्ढे पर निगाह दौड़ाई और अधीरता प्रकट करते हुए कन्धे को उचका कर ज़ोर से चीखा: "उठाओ अपनी चीज़ें और यहाँ से नौ दो ग्यारह हो जाओ!" फिर वह शराबवाली औरत की तरफ़ घूमा।

बुड्ढे को अपने कानों पर यक़ीन नहीं आया। अपनी आँखें, जो दूर की

चीजें नहीं देख सकती थीं, मुलमुलाते हुए वह कप्तान की तरफ़ मुड़ा और बोला :

" क्या सचमुच चला जाऊँ मैं ?"

कौसेक सिपाही ने सिर हिला कर बतलाया कि वह जितनी जल्दी जा सके, अच्छा है।

जल्दी-जल्दी बुड्ढे ने ओठे के सिरे से झूलती हुई अपनी पोटली उठाई और तेजी से दरवाजे से बाहर हो गया।

" और तुम यहाँ क्यों बन्द हो ?" चेर्नायक शराबवाली औरत से पूछ रहा था।

मिठाई के गस्से को निगलते हुए, जिसे वह कुछ देर से चभुला रही थी, औरत ने अपना पहले से ही तैयार जवाब झटपट पेश कर दिया :

" हुजूर, बड़ी बेइन्साफ़ी की बात है जो मुझे यहाँ बन्द कर रखा है। जरा सोचिए तो, एक ग़रीब बेवा की शराब भी पी गये और उसको ख़ामख़ा यहाँ बन्द भी कर दिया।"

चेर्नायक ने पूछा, " तुम्हीं तो नहीं हो वह शराब बेचने वाली ?"

" बेचने वाली ! आप भी कैसी बात करते हैं," उस औरत ने आहत अभिमान के स्वर में कहा, "कमाण्डैण्ट साहब आये, चार बोतलें लीं और एक धेला भी नहीं दिया। यह तो हाल है; आपकी शराब पी जायें और पैसा भी न दें। यह भला बेचना कहलाता है ?"

" अच्छा-अच्छा, बहुत हो गया। अब दफ़ा हो यहाँ से !"

उस औरत ने हुक्म के दोहराये जाने का भी इन्तजार नहीं किया। अपनी टोकरी उठाई और बड़ी कृतज्ञता से झुक कर सलाम करती हुई पीछे हटते-हटते वह दरवाजे से बाहर हो गई।

" खुदा आपको सलामत रखे, हुजूर।"

दोलिनिक आँखें फाड़े इस मजाक को देख रहा था। किसी क़ैदी की समझ में न आ रहा था कि आखिर यह माजरा क्या है। बस, एक बात साफ़ थी, यानी यह कि ये लोग जो आये हैं, कोई बड़े अफ़सर हैं जो उनकी किस्मत का वारा-न्यारा कर सकते हैं।

" और तुम ?" चेर्नायक ने दोलिनिक से पूछा।

" जब हुजूर कर्नल बात करें तो खड़े हो जाया करो !" कप्तान ने कुत्ते की तरह भूँक कर कहा।

दोलिनिक धीरे-धीरे फ़र्श पर से उठ कर खड़ा हो गया।

" तुम यहाँ पर क्यों बन्द हो ?" चेर्नायक ने अपना सवाल दोहराया।

कुछ क्षण तक दोलिनिक की आँखें कर्नल की बाँकी अदा से ऐंठी मूँछों पर और उनके अच्छी तरह हजामत किये साफ़ चेहरे पर, फिर उनकी नई टोपी के छज्जे पर जिसमें इनेमल का चिल्ला लगा हुआ था, ठहरी रहीं। और तभी यह पागल विचार उसके दिमाग़ में कौंध गया : कौन जाने यह तरीक़ा कारगर हो जाय।

"मुझे आठ बजे के बाद सड़क पर पाये जाने के जुर्म में पकड़ा गया था," पहली बात जो उसके मन में आई उसने कह दी।

जवाब के इन्तज़ार में उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था।

"रात को तुम बाहर कर क्या रहे थे ?"

"रात कहाँ थी, बस करीब ग्यारह बजे थे।"

बोलते-बोलते ही उसको जैसे यह विश्वास न रह गया कि अंधेरे में छोड़ा हुआ उसका यह तीर कारगर होगा।

उसके घुटने काँप गए जब उसने यह संक्षिप्त सा आदेश सुना :

"बाहर निकल जाओ !"

दोलिनिक जल्दी-जल्दी दरवाज़े में से बाहर निकल गया। हड़बड़ी में वह अपना कोट लेना भी भूल गया। कप्तान अब दूसरे क़ैदी से बात कर रहा था।

कोर्चागिन से सबसे बाद में पूछा गया। वह फ़र्श पर बैठा इस सारी कार्र-वाई को स्तब्ध होकर देख रहा था। पहले उसे यक़ीन ही नहीं हुआ कि दोलिनिक को रिहा कर दिया गया है। वे लोग सबको इस तरह से छोड़ क्यों रहे हैं ? मगर दोलिनिक···दोलिनिक तो कहता था कि उसे करफ्यू तोड़ने के जुर्म में पकड़ा गया है····। तब यकायक उसे भी कोई बात सूझी।

कर्नल ने दुबले-पतले जेल्टसर से अपना वही हर बार का सवाल दुहराया, "तुम यहाँ पर क्यों बन्द हो ?"

हज्जाम, जो घबराहट के मारे पीला पड़ गया था, बोल पड़ा :

"वे लोग कहते हैं कि मैं आन्दोलन कर रहा था, लेकिन मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि मैं काहे का आन्दोलन कर रहा था।"

चेर्नायक के कान खड़े हो गये।

"क्या कहा ? आन्दोलन ? तुम किस चीज़ का आन्दोलन कर रहे थे ?"

जेल्टसर ने अपनी हैरानी बतलाने के लिए बाँहें फैला दीं। बोला, "मैं खुद नहीं जानता। मैंने सिर्फ़ यह कहा था कि चीफ़ ऐटमन साहब के पास भेजने के लिए लोग एक अर्ज़ी पर यहूदियों से दस्तख़त ले रहे थे।"

"किस तरह की अर्ज़ी ?" चेर्नायक और कप्तान दोनों बहुत डरावने तरीके से जेल्टसर की तरफ़ बढ़े।

"अर्ज़ी यही थी कि मारकाट पर रोक लग जाय। आपको तो मालूम ही है, पिछले दिनों हमारे यहाँ बहुत भयानक मारकाट हुई थी। सारे लोग डरे हुए हैं।"

चेर्नायक ने उसकी बात को बीच में काटते हुए कहा, "बस, बस! इतना काफ़ी है! अबे ग़लीज़ यहूदी, हम लोग अभी तेरी सारी अर्ज़ी निकाले देते हैं!" फिर कप्तान की तरफ़ घूम कर उसने तेज़ आवाज़ में कहा, "इसको ले जाकर ठीक से बन्द कर दो। इसको हेडक्वार्टर पर ले जाने का बन्दोबस्त करो, वहीं पर मैं इससे खुद बातें करूँगा। देखेंगे इस अर्ज़ी वाले मामले के पीछे कौन लोग हैं।"

जेल्टसर ने प्रतिवाद करने की कोशिश की, मगर कप्तान ने अपनी चाबुक से उसकी पीठ पर ज़ोर का वार किया।

"चुप, हरामज़ादे!"

दर्द से उसका चेहरा ऐंठ गया और वह लड़खड़ाता हुआ एक कोने में पहुँच गया। जेल्टसर के ओंठ फड़क रहे थे और वह अपने अन्दर से उठती हुई सिसकियों को बड़ी मुश्किल से दबा पा रहा था। सिसकियों से उसका गला रुंधा हुआ था।

अभी यह सब हो ही रहा था कि पावेल उठ कर खड़ा हो गया। अब मालगोदाम में जेल्टसर के अलावा वही अकेला क़ैदी बचा था।

चेर्नायक लड़के के सामने खड़ा था और अपनी तेज़ काली आँखों से ग़ौर से उसके चेहरे को देख रहा था।

"और तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

कर्नल के सवाल का तुर्त-फुर्त जवाब मिला :

"मैंने घोड़े की ज़ीन से थोड़ा-सा चमड़ा अपने जूते के तल्ले के लिए काट लिया था।"

"किसके घोड़े की ज़ीन थी वह?" कर्नल ने पूछा।

"हमारे यहाँ दो कौसेक सिपाही ठहराये गए थे। मैंने उन्हीं की एक पुरानी ज़ीन से कुछ चमड़ा अपने जूतों के तल्ले के लिए काटा था। इसीलिए कौसेक मुझे यहाँ पकड़ लाए।" शायद मैं रिहा हो सकता हूँ, यह पागल आशा उसमें जागी। उसने इतना और जोड़ दिया, "मुझे मालूम नहीं था कि इसकी मनाही है....।"

कर्नल ने पावेल को चिढ़ कर देखा।

"क्या-क्या इस कमाण्डैण्ट को सूझता है, बड़ा मरदूद है! देखो तो कैसे-कैसे लोगों को उसने क़ैद कर रखा है!" दरवाज़े की ओर मुड़ते हुए उसने चिल्लाकर

कहा, " तुम घर जा सकते हो, मगर अपने बाप से कहना कि वह ज़रा तुम्हारी कुन्दी कर दे। निकलो बाहर !"

अब भी पावेल को अपने कानों पर यक़ीन नहीं आ रहा था। उसका दिल ऐसे धड़क रहा था जैसे अभी फट जायगा। पावेल ने जल्दी से फ़र्श पर से दोलिनिक का कोट उठाया और दरवाज़े की ओर भागा। भाग कर सन्तरियों के कमरे में से होता हुआ वह कर्नल की पीठ-पीछे हाते की खुली हवा में निकल गया। पलक मारते पावेल छोटे फाटक से होकर सड़क पर पहुँच गया था।

बदनसीब जेल्टसर मालगोदाम में अकेला रह गया। उसने परेशान आँखों से अपने इर्द-गिर्द देखा, अनायास दरवाज़े की तरफ़ कुछ क़दम बढ़ाये, मगर तभी एक सन्तरी आ गया। उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया, ताला लगा दिया और दरवाज़े के पास ही एक स्टूल पर बैठ गया।

बाहर बरसाती में अपने आपसे बहुत मगन चेर्नायक ने कप्तान से कहा :

" बड़ा अच्छा हुआ कि हमने इन लोगों को एक नज़र देख लिया। ज़रा सोचो तो कि इस कमाण्डैण्ट ने कैसा-कैसा कूड़ा-करकट भर रखा था वहाँ—लगता है इसको दो-एक हफ़्तों के लिए हमें बन्द करना पड़ेगा। अच्छा चलो, अब हम लोगों को यहाँ से चलना चाहिए।"

सार्जेण्ट ने अपने सिपाहियों को हाते में जमा कर लिया था। उसने कर्नल को देखा तो दौड़ कर आया और रिपोर्ट दी :

" सब कुछ ठीक है, हुज़ूर कर्नल साहब।"

चेर्नायक ने रकाब में एक बूट डाला और बड़ी सफ़ाई से कूद कर घोड़े पर जा बैठा। कप्तान को उसका बददिमाग़ घोड़ा कुछ तंग कर रहा था। अपने घोड़े की रास खींचते हुए कर्नल ने सार्जेण्ट से कहा :

" कमाण्डैण्ट से बतला देना कि उसने जो तमाम कूड़ा-करकट यहाँ भर रखा था, मैंने उस सब को हटा दिया है। और यह भी बतला देना कि यहाँ का काम जिस बेहूदगी से उसने चलाया है उसके लिए मैं उसे दो हफ़्ते गार्ड हाउस में बन्द रखूँगा। और वह आदमी जो अन्दर है उसको फ़ौरन हेडक्वार्टर भेजो। पहरेदारों से कहना, होशियार रहें।"

" बहुत अच्छा, हुज़ूर कर्नल साहब," सार्जेण्ट ने सलाम किया।

अपने घोड़ों को एड़ लगाते हुए कर्नल और कप्तान सरपट उस स्क्वायर में पहुँचे जहाँ पर अब परेड ख़त्म होने आ रही थी।

पावेल ने कूद कर सातवीं बाड़ी पार की और थक कर खड़ा हो गया। अब उससे और नहीं चला जाता था। उस दमघोटू मालगोदाम में बग़ैर खाये बन्द-बन्द उसकी सारी ताक़त ख़तम हो गई थी।

अब कहाँ जाऊँ? घर जाने का सवाल नहीं उठता। ब्रुज़ाक के यहाँ जाता हूँ तो अगर किसी ने वहाँ मुझे देख लिया तो सारे घर वालों पर विपत्ति फट पड़ेगी।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह फिर अन्धों की तरह दौड़ने लगा। शहर के छोर पर के साग-भाजी के खेत और मकानों के पिछवाड़े के बाग़ीचे सब पीछे छूट गये। यकायक वह एक बाड़ी से ज़ोर से जा टकराया, और तब जैसे उसे सहसा होश आया और उसने अपने आस-पास हैरान निगाहों से देखा—उस ऊँची बाड़ी के पीछे जंगलात के वार्डन का बाग़ीचा था। अच्छा तो मेरी थकी हुई टाँगें मुझे यहाँ ले आई हैं! वह कसम खाकर कह सकता था कि उसका कोई इरादा इधर आने का नहीं था। तब फिर वह इधर आ कैसे गया? इस सवाल का उसके पास कोई जवाब नहीं था।

मगर फिर भी कुछ देर उसे आराम तो करना ही है; सारी परिस्थिति पर उसे ग़ौर करना था और अपने अगले क़दम के बारे में तय करना था। उसे याद आया कि बाग़ के छोर पर एक ग्रीष्म-कुंज है। वहाँ पर उसे कोई नहीं देख सकेगा।

ज़ोर लगाकर वह बाड़ी पर चढ़ा और दूसरी तरफ़ नीचे बाग़ में कूद गया। मकान पर उड़ती-उड़ती सी निगाह डालते हुए, जो पेड़ों के बीच से मुश्किल से दिखाई दे रहा था, वह ग्रीष्म-कुंज की तरफ़ बढ़ चला। उसे यह देख कर बड़ी परेशानी हुई कि वह जगह लगभग सभी तरफ़ से एकदम खुली हुई थी। जंगली अंगूर की बेल, जो गरमी के दिनों में घनी होकर उस पर छा जाती थी, सूख कर झड़ चुकी थी और अब वह जगह एकदम नंगी थी।

वह वापस जाने के लिए मुड़ा, मगर इसके लिए अब बहुत देर हो गई थी। उसके पीछे से कुत्ते के ज़ोर-ज़ोर से भूँकने की आवाज़ आ रही थी। वह घूमा और उसने घर से इधर को आने वाले पत्तियों से ढके रास्ते में एक बड़े से कुत्ते को देखा जो उसी पर झपटा आ रहा था। उसकी भीषण गुर्राहट बाग़ की निस्तब्धता को चीर रही थी।

पावेल ने अपने को बचाने की तैयारी की। कुत्ते के पहले हमले को उसने एक ज़ोर की ठोकर से बेकार कर दिया। मगर वह जानवर उस पर दुबारा झपटने की तैयारी कर रहा था। कहा नहीं जा सकता कि इस लड़ाई का क्या अन्त होता

अगर उसी वक़्त एक परिचित कण्ठ ने पुकार कर यह न कहा होता, "इधर आओ ट्रेसोर ! इधर आओ !"

तोनिया भागती चली आ रही थी। उसने ट्रेसोर के गले का पट्टा पकड़ कर उसे पीछे खींचा और बाड़ी के पास खड़े नौजवान से कुछ कहने के लिए उसकी तरफ़ मुड़ी।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? इस कुत्ते ने अभी तुम्हें बुरी तरह ज़ख्मी कर दिया होता। वह तो कहो मैं....."

वह बीच ही में रुक गई। अचम्भे से उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। यह अजनबी, जो उसके बाग़ीचे में चला आया था, कोर्चागिन से कितना ज़्यादा मिलता था !

बाड़ी के पास खड़ी हुई वह आकृति हिली।

"तोनिया !" उस नौजवान ने धीमे से कहा, "क्या तुम मुझे पहचानती नहीं ?"

"पावेल, तुम ?" तोनिया चीख पड़ी और आवेग से उसकी तरफ़ बढ़ी।

ट्रेसोर ने तोनिया के चिल्लाने को अपने लिए हमले का सिगनल समझा और तेज़ी से आगे लपका।

"ट्रेसोर, ट्रेसोर, चुप रहो !" तोनिया ने उसे दो-चार थप्पड़ लगाये और वह आहत अभिमान की मुद्रा में, जैसे उसके साथ बड़ा अन्याय किया गया हो, अपनी दुम टाँगों के बीच दबाये, सिर नीचा किये, धीरे-धीरे मकान की तरफ़ लौट गया।

पावेल के हाथों को बहुत प्यार से पकड़े हुए तोनिया ने कहा, "अच्छा, तो तुम छूट गये ?"

"तो तुम्हें सब पता था ?"

"मुझे सब पता है," तोनिया ने साँस रोके-रोके कहा, "लिज़ा ने मुझको बतलाया था। मगर तुम यहाँ आये कैसे ? क्या उन लोगों ने तुमको रिहा कर दिया ?"

"हाँ, मगर ग़लती से," पावेल ने थके हुए अन्दाज़ में जवाब दिया, "मैं भाग आया। मेरा ख़याल है, अब वे मुझे ढूँढ़ रहे होंगे। मुझे खुद नहीं मालूम कि मैं यहाँ कैसे आ गया। मैंने सोचा कि मैं तुम्हारे ग्रीष्म-कुंज में कुछ देर आराम करूँगा। मैं बेहद थका हुआ हूँ," उसने माफ़ी माँगने के अन्दाज़ में कहा।

तोनिया ने दो-एक पल उसकी ओर एकटक देखा और उसका मन पावेल के प्रति करुणा और प्यार और चिन्ता और खुशी से भर उठा, जैसे एक लहर सी आई और उसके ऊपर होकर बह गई।

"पावेल, मेरे प्यारे पावेल," पावेल के हाथों को मज़बूती से अपने हाथों में थामे-थामे तोनिया ने कहा, "मैं तुम्हें प्यार करती हूँ····सुना तुमने ? मेरे हठीले दोस्त, तुम उस बार चले क्यों गये थे ? अब तुम हमारे हो, मेरे हो। मैं तुम्हें अब किसी तरह न जाने दूँगी। हमारा घर अच्छा है और शान्त है और तुम जितने दिन चाहो हमारे पास रह सकते हो।"

पावेल ने सिर हिलाया।

"अगर उन लोगों ने मुझे यहाँ ढूँढ़ निकाला तो ? नहीं, मैं तुम्हारे घर में नहीं ठहर सकता।"

तोनिया के हाथ उसकी उँगलियों को दबा रहे थे, तोनिया की पलकें फड़क रही थीं और उसकी आँखों में चमक थी।

"अगर तुमने इनकार किया तो मैं तुमसे कभी नहीं बोलूँगी। आर्तेम यहाँ नहीं है, पुलिस के पहरे में उसे इंजन चलाने के लिए ले जाया गया था। सारे रेलवे मज़दूर बटोरे जा रहे हैं। तुम जाओगे कहाँ ?"

पावेल को भी यही चिन्ता थी। मगर यह डर कि वह उस लड़की को जिसे वह इतना प्यार करने लगा था, ख़तरे में डाल देगा, उसको वहाँ ठहरने से रोक रहा था। लेकिन आख़िर उसने तोनिया की बात मान ली क्योंकि अपने भयानक तजुर्बों के कारण वह बहुत थक गया था और भूखा था।

जिस वक़्त वह तोनिया के कमरे में सोफ़े पर बैठा हुआ था उस वक़्त माँ-बेटी के दरम्यान बावर्चीखाने में यह बातचीत चल रही थी :

"सुनो माँ, कोर्चागिन मेरे कमरे में है। तुम्हें याद है न, मैं उसे पढ़ाती थी। मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाना चाहती। उसने एक बोल्शेविक मल्लाह को भाग निकलने में मदद दी थी और इसीलिए उसे गिरफ़्तार कर लिया गया था। अब वह क़ैद से भाग आया है। मगर उसके पास कहीं जाने को जगह नहीं है।" तोनिया की आवाज़ काँप रही थी। "मेरी प्यारी माँ, उसे कुछ समय तक यहाँ ठहर जाने दो।"

माँ ने अपनी बेटी की याचना भरी आँखों को ग़ौर से देखा जैसे उनमें कुछ पढ़ना चाहती हो।

"बहुत अच्छा, मुझे कोई एतराज़ नहीं है। मगर तुम उसे ठहराओगी कहाँ ?"

तोनिया लाज के मारे लाल हो गई, "वह मेरे कमरे में सोफ़े पर सो सकता है," उसने बहुत घबराये-से स्वर में कहा, "फ़िलहाल हम पापा को कुछ भी नहीं बतलाएँगे।"

माँ ने उसकी आँखों में आँखें डाल कर देखा।

"क्या इसी के लिए तुम इधर इतनी परेशान थीं?" उसने पूछा।

"हाँ।"

"मगर अभी तो वह बिल्कुल छोकरा है।"

"मैं जानती हूँ।" तोनिया ने घबराहट में अपने ब्लाउज की आस्तीन पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया। "लेकिन अगर वह भाग न आया होता, तो उसे जरूर गोली मार दी गई होती।"

एकातेरीना मिखाइलोवना को स्पष्ट ही अपने घर में कोर्चागिन के रहने से डर मालूम हो रहा था। उसकी गिरफ़्तारी और फिर अपनी बेटी का एक ऐसे लड़के से स्पष्ट ही इतना प्यार जिसे वह ठीक से जानती भी नहीं, दोनों ही बातों से उसका मन अस्थिर हो रहा था।

मगर तोनिया, मसले को तय समझ कर, अब यह सोच रही थी कि मेहमान के आराम के लिए क्या करना चाहिए।

"माँ, पहले तो उसे नहाना जरूरी है। मैं अभी इसका इन्तजाम करती हूँ। बहुत गन्दा हो रहा है वह—जैसे चिमनी साफ़ करनेवाला हो। उसको नहाये जमाना बीत गया होगा।"

यह कह कर वह नहाने के घर में पानी गरम करने और पावेल के पहनने के लिये साफ़ कपड़ा निकालने चली गई। जब सब कुछ ठीक हो गया तो वह तेज़ी से कमरे में आई, पावेल की बाँह पकड़ी और कुछ समझाने-बुझाने में वक़्त बरबाद किये बिना तेज़ी से उसे गुसलखाने में ले गई।

"तुम्हें अपने कपड़े बिल्कुल बदल डालने चाहिएँ। तुम्हारे पहनने के लिये यह एक सूट रखा है। तुम्हारे कपड़ों को धोना होगा, तब तक तुम इसको पहन सकते हो" कह कर उसने कुर्सी की तरफ़ इशारा किया जिस पर एक नीले रंग का सफ़ेद धारी वाला जहाज़ी ब्लाउज और पतलून रखा हुआ था।

पावेल ने अचम्भे से देखा। तोनिया मुस्कराई।

बात को साफ़ करते हुए उसने कहा, "मैंने उसे एक बार एक फैन्सी-ड्रेस नाच में पहना था। तुम्हारे लिए बिल्कुल ठीक रहेगी वह चीज़, कोई बुराई नहीं। अच्छा अब जल्दी करो। जब तक तुम नहाते हो, मैं तुम्हारे लिये खाने को कुछ ले आती हूँ।"

वह बाहर चली गई और दरवाज़े को बन्द कर दिया। अब पावेल के लिए इसके सिवा चारा न था कि कपड़े उतारे और टब में जा बैठे।

घण्टे भर बाद माँ, बेटी और पावेल, तीनों रसोई में खाना खा रहे थे।

पावेल को बुरी तरह भूख लगी थी और इसके पहले कि उसे इस बात का खयाल भी आये, वह तीन बार रक़ाबी में से खाना ले लेकर खा चुका था। पहले उसे एकातेरीना मिखाइलोवना के सामने कुछ झिझक मालूम हो रही थी, मगर जब उसने उसके बर्ताव में भी सगापन पाया तो पिघल गया और उसकी झिझक दूर हो गई।

खाना खाने के बाद वे तीनों तोनिया के कमरे में आये और एकातेरीना मिखाइलोवना के कहने पर पावेल ने अपनी कहानी सुनाई।

"अब तुम्हारा क्या करने का इरादा है?" पावेल की कहानी खत्म होने पर एकातेरीना मिखाइलोवना ने पूछा।

पावेल ने थोड़ी देर तक सवाल पर विचार किया, फिर बोला, "सबसे पहले मैं आर्तेम से मिलना चाहता हूँ और फिर मुझे यहाँ से चले जाना होगा।"

"मगर तुम जाओगे कहाँ?"

"मेरा खयाल है मैं उमान या हो सकता है कीव पहुँच सकता हूँ। मुझे खुद कुछ ठीक नहीं मालूम, मगर इतना जानता हूँ कि यहाँ से मुझे जल्द से जल्द चले जाना चाहिए।"

पावेल को यक़ीन नहीं आ रहा था कि इतनी जल्दी सब कुछ बदल सकता है। अभी सुबह वह उस गन्दी कोठरी में था और अब यहाँ साफ़-साफ़ कपड़े पहने तोनिया के पास बैठा था। सबसे बड़ी बात यह कि वह आज़ाद था।

उसने सोचा, ज़िन्दगी क्या-क्या अजीब मोड़ लेती है। क्षण भर पहले आसमान रात की तरह अंधेरा नज़र आता है और फिर तभी दूसरे ही क्षण सूरज चमकने लग जाता है। अगर उसे फिर पकड़े जाने का डर न होता तो इस वक़्त वह दुनिया का सबसे खुश आदमी होता।

मगर वह जानता था कि इस वक़्त भी जब वह इस बड़े, शान्त घर में बैठा हुआ है, उसके फिर पकड़ लिये जाने का अन्देशा है। उसे यहाँ नहीं रहना चाहिये, यहाँ से चले जाना चाहिए—चाहे जहाँ। फिर भी, वहाँ से चले जाने का खयाल उसे ज़रा भी अच्छा नहीं मालूम हो रहा था। बहादुर गैरिबाल्डी के बारे में पढ़ने में कितना रोमान्च होता था। मन ही मन वह उससे कितनी ईर्षा करता था। मगर ज़रा ग़ौर करो तो मालूम होता है कि गैरिबाल्डी की ज़िन्दगी कितनी कठिन थी, हर समय यहाँ से वहाँ भागते रहना। उसे, पावेल को, सिर्फ़ सात दिन मुसीबत और तकलीफ़ में गुज़ारने पड़े थे। मगर ऐसा मालूम होता था कि साल भर हो गया।

नहीं नहीं, वीरों की धात कुछ और होती है, उस जैसे नहीं होते वे।

"क्या सोच रहे हो तुम ?" तोनिया ने उसकी तरफ़ झुकते हुए पूछा। उसकी नीली आँखों की गहराई पावेल को असीम मालूम हुई।

"तोनिया, तुम्हें खिस्तिना के बारे में बतलाऊँ ?"

"हाँ हाँ, ज़रूर" तोनिया ने आग्रह करते हुये कहा।

उसने तोनिया को अपने साथ की क़ैदी की दर्दनाक कहानी सुनाई।

पावेल ने जब अपनी कहानी खतम की तो निस्तब्धता में दीवाल पर की घड़ी की टिक्-टिक् और ज़ोर से सुनाई देने लगी। पावेल के शब्द बड़ी मुश्किल से निकल रहे थे, "·····हमारी उससे वही आखिरी मुलाक़ात थी। उसके बाद फिर हमने उसे नहीं देखा।" तोनिया का सिर एक ओर को झूल गया और उसने अपने गले को रूँधने वाले आँसुओं को रोकने के लिए अपने ओंठ को कसकर दाँतों से दबाया।

पावेल ने उसको देखा और अन्तिम निश्चय के स्वर में कहा, "मुझे आज रात चले ही जाना होगा।"

"नहीं, नहीं, आज रात मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूँगी।"

वह उसके रूखे कड़े बालों को अपनी नाज़ुक, गरम उँगलियों से बड़े प्यार से सहला रही थी····।

"तोनिया, तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। किसी को स्टेशन जाना चाहिए और पता लगाना चाहिए कि आर्तेम का क्या हुआ। और सर्योज़ा के पास एक चिट्ठी भी ले जानी है। एक कौए के घोंसले में मैंने एक रिवाल्वर छिपाकर रखा है। मैं उसे जाकर लाने की हिम्मत नहीं कर सकता, मगर सर्योज़ा उसे लाकर मुझे दे सकता है। मेरा इतना काम कर सकोगी ?"

तोनिया उठ खड़ी हुई।

"मैं अभी, इसी वक़्त, लिज़ा सुखार्को के पास जाऊँगी। हम दोनों साथ स्टेशन चले जायेंगे। तुम चिट्ठी लिख डालो, मैं उसे सर्योज़ा के पास ले जाऊँगी। कहाँ रहता है वह ? मान लो वह तुमसे मिलना चाहे, तो क्या मैं उसे बतला दूँगी कि तुम कहाँ हो ?"

पावेल ने जवाब देने के पहले क्षण भर विचार किया। "उससे कहना कि आज शाम को तुम्हारे बाग़ीचे में ले आये।"

तोनिया को लौटने में बहुत देर हो गई। पावेल गहरी नींद में सो रहा था। उसके हाथ के स्पर्श से वह जाग गया और उसने आँखें खोलीं तो तोनिया को खुशी से मुस्कराते हुए अपने पास खड़ा पाया।

"आर्तेम जल्दी ही यहाँ आयेगा। वह अभी-अभी लौट कर आया है। लिज़ा के बाप ने उसका जामिन होना कबूल कर लिया है और वे लोग आर्तेम को

घण्टे भर के लिए छोड़ रहे हैं। इंजन स्टेशन पर खड़ा है। मैं उसे यह तो बतला नहीं सकती थी कि तुम यहाँ हो। मैंने बस इतना कहा कि उससे मुझे कोई बहुत जरूरी बात कहनी है। लो, वह आ भी गया!"

तोनिया दरवाजा खोलने के लिए लपकी। आर्तेम जैसे अपनी आँखों का यक़ीन न करते हुए, स्तब्ध और मूक, दरवाजे पर खड़ा था। उसके अन्दर आ जाने पर तोनिया ने दरवाजा बन्द कर दिया ताकि उसके पिता, जो कि अपने पढ़ाई के कमरे में टाइफ़स से बीमार पड़े थे, उन लोगों की बात न सुन सकें।

एक क्षण और गुजरा कि आर्तेम पावेल को अपनी बाँहों में भर कर कस कर छाती से लगाये हुए था और जोर-जोर से कह रहा था, "पावेल! मेरे नन्हे पावेल! मेरे छोटे भाई!" भारी-भरकम आर्तेम के उस भालू-जैसे आलिंगन पाश में पावेल की तो हड्डियाँ चरमरा रही थीं।

तो यह बात तय हो गई; पावेल को अगले रोज ही वहाँ से चले जाना था। आर्तेम ब्रुजाक से कह देगा कि वह कज़ातिन जाने वाली एक गाड़ी में उसको अपने साथ लेता जाय।

आर्तेम, जो अमूमन बड़ा गम्भीर और खामोश आदमी था, अपने भाई के लिए इतने दिनों तक चिन्तित और परेशान रहने के बाद इस वक्त उसको पाकर खुशी से पागल हो रहा था।

"अच्छा, तो यह बात तय हो गई। कल सबेरे पाँच बजे तुम मालगोदाम के पास रहना। जिस वक्त वे लोग ईंधन लाद रहे हों, तुम चुपचाप घुस जाना। मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं रुकूँ और तुमसे बातचीत करूँ। मगर मुझे लौटना है, जरूरी काम है। मैं कल जाते समय तुमसे मिलूँगा। वे लोग रेलवे मजदूरों की एक बटालियन बना रहे हैं। हम लोग सशस्त्र पहरे में लाये और ले जाये जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे जर्मनों के दिनों में।"

आर्तेम ने अपने भाई से छुट्टी ली और चला गया।

साँझ तेजी से घिरती आ रही थी। सर्गेई थोड़ी देर में पिस्तौल लेकर आता होगा। उसका इन्तजार करते हुए पावेल अँधेरे कमरे में बेचैनी से टहल रहा था। तोनिया और उसकी माँ जंगलों के वार्डन के साथ थीं।

पावेल बाड़ी के पास अँधेरे में सर्गेई से मिला और दोनों दोस्तों ने कस कर एक-दूसरे से हाथ मिलाया। सर्गेई अपने साथ वालिया को भी लाया था। वे लोग धीमे-धीमे बात कर रहे थे।

सर्गेई ने कहा, "मैं अपने साथ बन्दूक नहीं लाया। तुम्हारे पिछवाड़े वाले हाते में पेतल्युरा के तमाम सिपाही भरे हुए हैं। सब जगह गाड़ियाँ खड़ी हैं और उन्होंने बड़ी-सी आग-वाग भी जला रखी है। इसलिए मैं बन्दूक उतारने के लिए पेड़ पर नहीं चढ़ सका। बड़ी शर्म की बात है।" सर्गेई बहुत उदास था।

पावेल ने उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहा, "कोई बात नहीं, शायद अच्छा ही हुआ कि तुम उसे नहीं लाये। अगर मैं बन्दूक के साथ कहीं रास्ते में पकड़ा जाता तो और भी बुरा होता। मगर तुम उसे ले जरूर आना।"

वालिया पावेल के और पास आ गई।

"तुम कब जा रहे हो?"

"कल, भोर होते ही।"

"तुम छूट कैसे आये यह तो बताओ?"

जल्दी-जल्दी, मगर उसी मद्धिम आवाज में, पावेल ने उनको अपनी कहानी सुनाई। उसके बाद उसने अपने साथियों से छुट्टी ली। सर्गेई का असाधारण रूप से गम्भीर चेहरा उसके मन की हलचल का पता दे रहा था।

"खुदा हाफ़िज़ पावेल, हम लोगों को भूलना मत," वालिया ने रुँधी हुई आवाज में कहा।

और इसके बाद वे लोग चले गये। पलक मारते अँधेरा उन्हें निगल गया।

घर के अन्दर पूर्ण शान्ति थी। उस निस्तब्धता में सिर्फ़ घड़ी की नियमित टिक्-टिक् सुनाई दे रही थी।

उस घर के दो रहने वालों के लिए उस रात नींद का कोई जिक्र न था। वे सो भी कैसे सकते थे जब कि छः घण्टों में उन्हें एक दूसरे से अलग हो जाना था—और कौन जाने फिर कभी मुलाक़ात हो न हो। उस थोड़े से वक्त में उनके मन के भीतर जो असंख्य भावनाएँ हलचल मचा रही थीं, उसको वाणी भी कोई कैसे देता?

यौवन, उदात्त यौवन, जब मन की वासना का पता भी ठीक से नहीं होता और खून की धड़कन में ही उसका धुँधला-सा आभास मिलता है; जब तुम्हारा हाथ प्रेयसी की छाती से अकस्मात् छू जाने पर काँप जाता है, जैसे सहम गया हो, और जब तुम्हारे यौवन की पवित्र मैत्री ही तुम्हें आखिरी कदम उठाने से रोक लेती है! उसकी बाँहें तुम्हारे गले में हों और उसका जलता हुआ चुम्बन तुम्हारे ओठों पर—इससे मीठा भला और क्या हो सकता है।

अपनी तमाम दोस्ती के दौरान में यह दूसरी बार दोनों ने एक-दूसरे को

चूमा था। इसके पहले पावेल का दिल बहुत बार धड़का था, मगर अपनी माँ को छोड़ कर और किसी के आलिंगन का स्पर्श उसे नहीं मिला था। और जब यह चीज़ मिली तो जैसे उसे अन्दर-बाहर से समूचा झकझोर गई। अब तक उसे जीवन ने अपना कठोर निर्मम पहलू ही दिखलाया था और उसे नहीं मालूम था कि जीवन इतना रंगीन, इतना मदिर, इतना प्राणदायी भी हो सकता है। अब इस लड़की ने उसे सिखलाया कि सुख किसे कहते हैं।

पावेल ने उसके बालों की सुगन्धि साँस के साथ खींची और उसे लगा कि वह उस अँधेरे में भी उसकी आँखों को देख रहा है।

"मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, तोनिया! तोनिया मैं तुमसे बतला नहीं सकता कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ—बतला नहीं सकता क्योंकि जानता नहीं कैसे बतलाऊँ।"

उसका दिमाग चक्कर खा रहा था। उसका वह लचीला शरीर जो बीन के कसे हुए तार की तरह उसके हलके से स्पर्श से बज सकता था···। मगर जवानी की दोस्ती बड़े पवित्र विश्वास की चीज़ होती है।

"तोनिया, जब यह तूफ़ान खतम होगा, जब ये उलझनें सुलझ जायेंगी तो ज़रूर मुझे मेकैनिक का काम मिलेगा। और अगर तुम्हें सचमुच मेरी ज़रूरत है, अगर तुम सचमुच मुझे चाहती हो और सिर्फ़ मेरे संग खेल नहीं कर रही हो, तो मैं तुम्हारे लिए अच्छा पति बन सकूँगा। मैं कसम खाता हूँ कि मैं कभी तुम्हें नहीं मारूँगा और न कभी कोई ऐसी बात करूँगा जिससे तुम्हारे दिल को चोट लगे।"

कहीं दोनों एक-दूसरे की बाँहों में पड़े-पड़े सो न जायें, कहीं तोनिया की माँ उन्हें देख न ले और उनके बारे में कुछ बुरा खयाल दिल में लाए, इस डर से दोनों अलग हो गये।

पौ फटने ही वाली थी जब उन्होंने एक-दूसरे से वादा किया कि वे कभी एक-दूसरे को न भूलेंगे और सो गये।

एकातेरीना मिखाइलोवना ने पावेल को जल्दी ही जगा दिया। वह बिस्तर छोड़ कर उछल कर खड़ा हो गया। जब वह गुसलखाने में अपने कपड़े और बूट पहन रहा था और अपने कपड़ों पर दोलिनिक का कोट चढ़ा रहा था, तभी एकातेरीना मिखाइलोवना ने तोनिया को जगाया।

सबेरे के भूरे-भूरे से कुहासे में वे लोग जल्दी-जल्दी स्टेशन की ओर चले। जब वे पिछवाड़े के रास्ते से उस जगह पहुँचे जहाँ लकड़ियाँ रखी हुई थीं, उन्होंने आर्तेम को लदे हुए टेण्डर के पास बेचैनी से अपना इन्तज़ार करते पाया।

एक बहुत भारी और मजबूत इंजन भाप के बादल में घिरा हुआ सी-सी करता हुआ धीरे-धीरे पास आया। इंजन में से ब्रजाक ने सिर निकाल कर देखा।

पावेल ने जल्दी से तोनिया और आर्तेम से विदा ली, लोहे का खंभा पकड़ा और कूद कर इंजन में चढ़ गया। पीछे मुड़ कर उसने क्रासिंग पर दो परिचित आकृतियों को देखा—आर्तेम की लम्बी आकृति और उसके बगल में तोनिया की छोटी-सी सुकुमार आकृति। हवा जैसे गुस्से में उसके ब्लाउज के कालर को फाड़े डाल रही थी और उसके सुनहले बाल उड़ रहे थे। तोनिया ने हाथ हिला कर उसको इशारा किया।

आर्तेम ने अपनी आँख की कोर से तोनिया को देखा और यह देख कर कि वह रोने ही वाली है, उसने लम्बी साँस ली।

उसने अपने मन में कहा, "मुझे पचास कोड़े मारो अगर इन दोनों के बीच कोई मामला न हो। और मैं सोचता था कि पावेल अभी बच्चा ही है!"

आगे मोड़ पर पहुँच कर जब गाड़ी आँखों से ओझल हो गई तो आर्तेम तोनिया की तरफ़ मुड़ा और बोला: "क्यों, मुझसे दोस्ती करोगी?" और तोनिया का नन्हा-सा हाथ उसके बड़े-बड़े हाथों में खो गया।

दूर, गाड़ी के तेज रफ़्तार पकड़ने की आवाज सुनाई दे रही थी।

सातवाँ अध्याय

पूरे एक हफ़्ते तक शहर, खाइयों से घिरा और कंटीले तारों में उलझा हुआ, तोपों की गड़गड़ाहट और राइफिलों की तड़तड़ की आवाज में ही रात को सोता था और उन्हीं की आवाज में सबेरे उठता था। सिर्फ़ बहुत भोर ही, बल्कि यूँ कहिए कि जब रात खतम होने को होती थी, तभी यह शोर जरा कम होता था। मगर फिर भी, बीच-बीच में जब चौकियाँ एक-दूसरे का पता लगाने की गरज से गोले छोड़तीं तो वह निस्तब्धता भंग हो जाती थी। सबेरे-सबेरे लोग रेलवे स्टेशन के पास वाली बैटरी में व्यस्त हो जाते थे। तोप का लम्बा स्याह थूथन भयावने तरीके से आग उगलता था और फिर लोग जल्दी-जल्दी उसमें दुबारा लोहा और बारूद भर देते थे। हर बार जब तोपची तोप के पीछे वाली रस्सी को खींचता तो पैरों के नीचे की धरती काँप जाती। शहर से दो मील दूर एक गाँव

पर, जो बोल्शेविकों के कब्जे में था, तोप के गोले डरावनी आवाज करते हुए बरसते रहते थे। उनकी आवाज में दूसरी सारी आवाजें डूब जाती थीं और गोले जहाँ गिरते, धरती में से मिट्टी के फव्वारे फूट निकलते थे।

बोल्शेविकों की तोपें गाँव के बीचोबीच एक ऊँची पहाड़ी पर जमी हुई थीं जहाँ पहले एक पोलिश मठ था।

इस तोपची टुकड़ी के फ़ौजी कमिसार कामरेड जमोस्तिन उचक कर खड़े हो गए। वह एक तोप से अपना सिर टिकाये सो रहे थे। अब उन्होंने अपनी पेटी को कसते हुए, जिससे एक भारी माउज़र पिस्तौल झूल रहा था, उड़ते हुए गोले की साँय-साँय को सुना और धड़ाके का इन्तज़ार करने लगे। और हाता उनकी भारी आवाज से गूँज उठा :

"साथियो, हम लोग कल अपनी नींद पूरी कर लेंगे। अब उठने का वक़्त हो गया।"

तोपची, जो अपनी-अपनी तोपों के पास सो रहे थे, कमिसार की तरह ही जल्दी से उछल कर खड़े हो गये। सिर्फ सिदोरचुक ने अनमने ढंग से सिर उठाया और नींद से भारी आँखों से इधर-उधर देखा।

"सुअर कहीं के—अभी रोशनी भी नहीं हुई, और हरामज़ादों ने गोला-बारी फिर शुरू कर दी। बदमाश चिढ़ाने के लिए ऐसा करते हैं!"

जमोस्तिन हँसा।

"ये सब समाज-विरोधी लोग हैं सिदोरचुक, और नहीं तो क्या! इनको इतना भी ख़याल नहीं रहता कि कोई सोना चाहता है।"

सिदोरचुक बड़बड़ाता हुआ उठा।

कुछ मिनट बाद मठ के हाते की तोपें भी अपना काम करने लगीं। शहर पर गोले बरसने लगे।

शकर के कारखाने की ऊँची चिमनी पर लकड़ी के पटरों का एक चबूतरा बनाया गया था और उस पर पेतल्युरा का एक अफ़सर और एक टेलीफ़ोन वाला बिठाला गया था। चिमनी के भीतर-भीतर लोहे वाली सीढ़ी से वे लोग ऊपर चढ़े थे।

इस जगह से, जहाँ से उनको सारा शहर अच्छी तरह दिखाई देता था, वे तोप चलाने वालों को आदेश दे रहे थे। अपनी दूरबीनों से वे बोल्शेविक सिपाहियों की सारी गति-विधि को देख सकते थे। बोल्शेविक शहर का घेरा डाले हुए थे। आज वे विशेष रूप से सक्रिय थे। एक बख़्तरबन्द गाड़ी धीरे-धीरे पोडोल्स्क स्टेशन में दाख़िल हो रही थी। वह बराबर गोली बरसा रही थी। उसके उस

पांव पैदल दस्ते दिखाई दे रहे थे। कई बार बोल्शेविक फ़ौजों ने शहर पर कब्ज़ा करने की कोशिश की। मगर पेतल्युरा के सिपाही शहर को जाने वाले रास्तों पर मज़बूती से जमे हुए थे। खाइयाँ आग उगल रही थीं जिसके कारण हवा में बेपनाह शोर था और यही शोर हमलों के वक़्त अनवरत गरज का रूप ले लेता था। गोलियों के इस तूफ़ान के आगे बोल्शेविक पाँतें न ठहर सकीं और मैदान में निर्जीव शरीरों को छोड़ कर पीछे हटने पर मजबूर हुईं। उस तूफ़ान को झेलना इन्सान की ताक़त के बाहर की चीज़ थी।

आज शहर पर पहले से ज़्यादा और लगातार हमले किये जा रहे थे। हवा गोला-बारी की गूँज से काँप रही थी। चिमनी की उस ऊँचाई से बोल्शेविकों की पाँतें बराबर आगे बढ़ती हुई देखी जा सकती थीं। लोग ज़मीन पर लेट जाते थे, फिर उठते थे और फिर पूरी ताक़त से आगे बढ़ने लगते थे। अब उन्होंने स्टेशन क़रीब-क़रीब ले ही लिया था। पेतल्युरा की डिवीज़न के पास जो रिज़र्व टुकड़ियाँ थीं, उन्हें मैदान में भेजा गया। मगर वे भी उस दरार को न भर सकीं जो बोल्शेविकों ने पैदा कर दी थी। बोल्शेविक सैनिक अब उस संकल्प से काम कर रहे थे जिसमें आगा-पीछा सोचने की गुंजाइश नहीं होती। उनके हमलावर दस्ते स्टेशन के पास वाली सड़कों पर बाढ़ के पानी की तरह भर उठे थे। स्टेशन की रक्षा करने वाली पेतल्युरा की डिवीज़न की तीसरी रेजिमेण्ट शहर के छोर पर के उद्यानों और फलों के बागीचों की अपनी आख़िरी जगह से निकाली जा कर शहर भर में बिखर गई थी। यह आख़िरी लड़ाई, जिसने उनको वहाँ से निकाल बाहर किया था, बहुत छोटी मगर बहुत भयानक थी। इसके पहले कि वे लोग दुबारा अपने पैर जमा सकें, लाल सेना के सैनिक बड़ी तादाद में सड़कों पर भर उठे और उन्होंने अपनी संगीनों की मार से पेतल्युरा के उन सिपाहियों का सफ़ाया कर दिया जिन्हें उनकी पीछे हटती सेना इसलिए छोड़ गई थी कि वह निर्विघ्न पीछे हट सके।

सर्गेई ब्रुज़ाक को उस तहख़ाने में रोक रखना नामुमकिन था जिसमें उसके घर वालों और क़रीब के पड़ोसियों ने पनाह ली थी। सर्गेई की माँ उससे चिरौरी-विनती करती ही रही, मगर वह उस सर्द तहख़ाने में से कूद कर बाहर आ गया। एक बख़्तरबन्द गाड़ी जिस पर *सगयदाचनी* लिखा हुआ था, अंधाधुंध गोलियाँ बरसाती हुई उसके घर के पास से गुज़री। उसके पीछे-पीछे डरे और घबराये हुए पेतल्युरा सिपाही सिर पर पैर रख कर भाग रहे थे। उनमें किसी तरह की कोई शृंखला बाकी नहीं बची थी। उनमें से एक सर्गेई के हाते में घुस आया। उसने जल्दी-जल्दी अपनी कारतूस की पेटी, अपने सिर पर का हेलमेट और राइफिल नीचे फेंकी और बाड़ी फाँद कर गायब हो गया। सर्गेई ने सड़क पर

निगाह दौड़ाई। पेतल्युरा के सिपाही दक्खिन-पश्चिमी स्टेशन वाली सड़क पर भागे आ रहे थे और एक बख्तरबन्द गाड़ी पीछे से उनकी हिफ़ाज़त कर रही थी। शहर को आने वाली बड़ी सड़क वीरान थी। तभी एक लाल सेना का आदमी दिखाई दिया। वह फुर्ती से जमीन पर लेट गया और सड़क पर गोली चलाने लगा। उसके पीछे एक के बाद एक लाल सेना के दो-एक और सिपाही दिखाई दिये···। सर्गेई ने उनको आते, लेटते, और फिर उठ कर भागते हुए गोली छोड़ते देखा। एक काँसे के रंग का चीनी, जिसकी आँखें लाल-लाल थीं और जो सिर्फ़ एक बनियान पहने हुए था और जिसकी कमर में मशीनगन की पेटी लगी हुई थी, दोनों हाथों में एक-एक दस्ती बम लिये सीधा दौड़ रहा था। और उन सब के आगे एक लाल सेना का आदमी था जिसके हाथ में एक हल्की मशीनगन थी। आदमी भी उसे कैसे कहें, लड़का ही था। शहर में दाखिल होने वाले इन पहले लाल सैनिकों को देख कर सर्गेई का दिल खुशी से भर उठा। वह लपक कर सड़क पर पहुँचा और अपनी पूरी ताक़त से चिल्ला कर बोला :

"जिन्दाबाद साथियो !"

इतने अप्रत्याशित रूप से वह भाग कर सड़क पर पहुँचा था कि उस चीनी से टकरा कर गिरते-गिरते बचा। उस लाल सैनिक की पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि झपट कर उस लड़के का काम तमाम कर दे। मगर लड़के के चेहरे पर खुशी का जो भाव था, उसे देख कर वह रुक गया।

"पेतल्युरा कहाँ है ?" उस चीनी ने ज़ोर से हाँफते हुए चिल्ला कर उससे पूछा।

मगर सर्गेई ने उसकी बात नहीं सुनी। वह दौड़ कर फिर अपने हाते में गया, पेतल्युरा सैनिक द्वारा फेंकी गई कारतूसों की पेटी और राइफिल उठाई और लाल सेना के सैनिकों के पीछे-पीछे दौड़ चला। दक्खिन-पश्चिमी स्टेशन पर क़ब्ज़ा कर लेने के बाद ही उन्होंने इस लड़के को देखा। यहाँ, हथियारों और दूसरे रसद के सामानों की कई गाड़ियों को रोक कर और दुश्मन को जंगल में ठेल कर लाल सेना के सिपाही थोड़ा आराम करने और अपनी टुकड़ियों को ठीक करने के लिये रुके। वह नौजवान तोपची सर्गेई के पास आया और अचरज से पूछा :

"कामरेड, तुम कहाँ के रहने वाले हो ?"

"मैं इसी शहर का हूँ। मैं तुम लोगों के आने का इन्तज़ार कर रहा था।"

देखते-देखते लाल सेना के तमाम सिपाही सर्गेई को घेर कर खड़े हो गये।

"मैं इसे जानता हूँ," उस चीनी ने टूटी-फूटी रूसी में कहा, "इसने "जिन्दाबाद साथियो" का नारा लगाया था। यह बोल्शेविक है, अच्छा आदमी

है, हम लोगों के साथ है !" यह कहते हुए वह मुस्कराया और अपना सद्भाव दिखलाते हुए सर्गेई के कन्धों को थपथपाया।

सर्गेई का दिल खुशी से बल्लियों उछल रहा था। उसको उन लोगों ने तत्काल अपने में शरीक कर लिया था और वह भी संगीनों के उस हमले में उनके साथ था जिसके बाद स्टेशन पर कब्जा हुआ।

शहर में बड़ी हलचल थी। शहर के लोग, जो अब तक की अपनी मुसीबतों से थक चुके थे, अपनी कोठरियों और तहखानों से निकले और अपने फाटकों पर खड़े होकर शहर में दाखिल होती हुई लाल फ़ौज की टुकड़ियों को देखने लगे। तभी सर्गेई की माँ और उसकी बहन वालिया ने सर्गेई को लाल सेना के सिपाहियों के साथ मार्च करते देखा। उसके सिर पर टोप नहीं था, मगर कमर में कारतूसों की पेटी बँधी थी और एक राइफिल कन्धे से लटक रही थी।

ऐन्तोनीना वासीलिएवना को बहुत गुस्सा आ रहा था।

अच्छा ! तो उसका सर्योजा जाकर इस सब लड़ाई-दंगे में फँस गया ! चुकानी पड़ेगी इसकी कीमत। ज़रा इसका कलेजा तो देखो, सारे शहर के सामने राइफिल लेकर परेड कर रहा है ! जरूर आगे चल कर मुसीबत होगी। ऐन्तोनीना वासीलिएवना अपने को अब और काबू में न रख सकी और चिल्लाई :

" सर्योजा ! चल, इसी वक़्त घर चल। आवारा कहीं का ! मैं अभी तुझे बतलाती हूँ ! अभी तेरी सारी लड़ाई निकाले देती हूँ !" और वह इस पक्के इरादे से सड़क पर पहुँची कि लड़के को लौटा लायेगी।

मगर इस बार सर्गेई—उसका सर्योजा—जिसे कई बार उसने थप्पड़ लगाये थे, दूसरा ही आदमी था। उसने कठोर आँखों से माँ को देखा और अन्दर ही अन्दर शर्म से और जिल्लत से जलते हुए पलट कर माँ को जवाब दिया :

" चीखो मत ! मैं जहाँ हूँ वहीं रहूँगा।" और बिना रुके आगे बढ़ गया।

गुस्से के मारे ऐन्तोनीना वासीलिएवना का बुरा हाल था।

" इसी तरह तुमको अपनी माँ से बोलना चाहिए, क्यों ? अच्छा ! मगर अब घर आने की हिम्मत मत करना !"

सर्गेई बिना पीछे मुड़े ज़ोर से चिल्ला कर बोला, " नहीं आऊँगा।"

ऐन्तोनीना वासीलिएवना परेशानी की हालत में सड़क पर खड़ी रह गई। उसके पास से मौसम की मार खाये हुए, गर्द से ढँके हुए सैनिकों की क़तारें गुजरती रहीं।

" रो मत माँ ! हम तुम्हारे बेटे को कमिसार बनाएँगे" एक तगड़े, हँसोड़ गले से निकली हुई आवाज सुनाई दी। प्लेटून के तमाम सिपाहियों में हँसी की

एक लहर-सी दौड़ गई। कम्पनी के आगे-आगे चलने वाले लोगों ने कोरस गाना शुरू किया :

सुनो साथियो बिगुल बज उठे, अब अपनी बन्दूक सम्हालो
आजादी के देश बढ़ चलो, मिल कर अपनी राह निकालो !

सिपाही बड़ी बुलन्द आवाज से यह समवेत गान गा रहे थे और सर्गेई की गूँजती हुई आवाज भी संगीत की इस लहर में मिली हुई थी। उसे एक नया परिवार मिल गया था। इनमें एक संगीन उसकी भी थी, सर्गेई की।

लेशचिन्स्की के मकान के फाटक पर एक छोटी सी सफ़ेद तख्ती लटक रही थी, जिस पर सिर्फ़ इतना लिखा था : 'रेवकोम।'[1] उस के बगल में एक बड़ा आकर्षक पोस्टर था जिस में से एक लाल सैनिक तुम्हें अपनी ओर देखता नज़र आता था और तुम्हारी ओर उंगली से इशारा करता हुआ कह रहा था : "बोलो, *तुम* लाल सेना में भरती हुए हो या नहीं ?"

राजनीतिक विभाग के लोग तमाम शहर में यह पोस्टर लगाने के सिलसिले में रात भर काम करते रहे थे। वहीं पास में शेपेतोवका की मेहनतकश जनता के नाम इन्क़लाबी कमेटी का पहला घोषणा-पत्र भी टँगा हुआ था :

"साथियो ! सर्वहारा फ़ौजों ने इस शहर पर कब्जा कर लिया है। सोवियत सत्ता फिर से क़ायम हो गई है। हम आप से अनुशासन की माँग करते हैं। जनता को चूसने वाले खूनियों को निकाल बाहर किया गया है। लेकिन, अगर आप चाहते हैं कि वे फिर कभी न आयें, अगर आप उन्हें हमेशा के लिए खतम करना चाहते हैं, तो लाल सेना में भरती होइये। मेहनतकशों की राजसत्ता को अधिक से अधिक ताक़त पहुँचाइए। इस शहर की फ़ौजी व्यवस्था गैरिसन के प्रधान के हाथ में है। ग़ैर फ़ौजी शहरी मामलों का प्रबन्ध इन्क़लाबी कमेटी करेगी।

"द० : *दोलिनिक*
"अध्यक्ष, इन्क़लाबी कमेटी।"

लेशचिन्स्की के मकान में अब एक नई तरह के लोग दिखाई देने लगे। एक शब्द "कामरेड"—जिसके लिए कल तक लोगों को अपनी जान की क़ीमत अदा करनी पड़ती थी—आज चारों तरफ़ सुनाई दे रहा था; अनोखा, मर्मस्पर्शी शब्द, "कामरेड !"

---

१. रेवोल्यूशनरी कमेटी, अर्थात् इन्क़लाबी कमेटी।

दोलिनिक के लिए इन दिनों न नींद थी, न आराम। वह बढ़ई इन्क़लाबी सरकार क़ायम करने में लगा हुआ था।

एक छोटे से कमरे में कामरेड इग्नातियेवा बैठी हुई थीं। इस कमरे के दरवाजे पर कागज़ का एक छोटा सा टुकड़ा लगा था, जिस पर पेन्सिल से लिखा हुआ था "पार्टी कमेटी"। वह हमेशा की तरह शान्त और अनुद्विग्न थीं। राजनीतिक विभाग ने उनको और दोलिनिक को सोवियत सत्ता क़ायम करने का काम सौंपा था।

एक दिन और गुज़रा और आफ़िस में काम करने वाले अपनी-अपनी मेज़ों पर बैठ गये और टाइपराइटर ज़ोर-शोर से खटकने लगा। रसद पहुँचाने की एक कमिसारियट, जोशीले, मगर कुछ बौखलाये हुए-से, पिज़ीकी के नेतृत्व में क़ायम की गई। पिज़ीकी पहले शहर की शकर मिल में मेकैनिक का सहायक था। मगर अब उसने शकर के कारखाने के मालिकों के खिलाफ़ जी-जान से कार्रवाई शुरू कर दी। कारखाने के ये मालिक बोल्शेविकों से बेइन्तहा नफ़रत करते थे और इस वक्त सिर झुकाये आने वाले समय का इन्तज़ार कर रहे थे।

कारख़ाने के मज़दूरों की एक सभा में पिज़ीकी ने कठोर, निर्मम शब्दों में स्थिति पर प्रकाश डाला।

पोलिश ज़बान में बोलते हुए, अपने शब्दों को अच्छी तरह लोगों के दिमाग में बिठालने के लिए मेज़ पर ज़ोर से मुट्ठी पटकते हुए, उसने कहा, "पुराना ज़माना बीत गया और अब कभी लौट कर नहीं आयेगा। हमारे बाप-दादों ने और हमने सारी ज़िन्दगी पोटोकियों की गुलामी की है। मगर अब और नहीं! हमने उनके लिए महल बनाये और बदले में राजाधिराज काउण्ट महोदय ने हमें सिर्फ़ इतना दिया कि हम भूख से न मरें।

"कितने बरसों तक पोटोकी के काउण्टों और सानगुज़को के राजकुमारों ने हमारी पीठ पर सवारी की? न जाने कितने पोलिश मज़दूर होंगे जिन्हें पोटोकी ने उसी तरह रौंदा जिस तरह उसने रूसियों और उक्रेनियों को रौंदा। कोई उनकी तादाद बतला सकता है? मगर फिर भी उनकी ढिठाई तो देखो, काउण्ट के दलाल मज़दूरों के बीच यह अफ़वाह फैला रहे हैं कि सोवियत शासन उन सबको अपने फौलादी हाथों से दबा कर रखेगा।

"यह एक सफ़ेद झूठ है, साथियो! आज से पहले अलग-अलग जातियों के मेहनतकशों को कभी ऐसी आज़ादी नहीं मिली थी। सारे मज़दूर, सभी सर्वहारा भाई-भाई हैं। जहाँ तक इन अमीरों की बात है, आप यक़ीन रखिये हम उन्हें सिर नहीं उठाने देंगे।" पिज़ीकी का हाथ एक बार फिर ज़ोर से घूम कर मेज़ पर गिरा। "कौन है वह जिसने भाई-भाई को लड़ा कर उन्हें एक-दूसरे का खून बहाने

पर मजबूर किया ? सदियों तक राजों और नवाबों ने पोलिश किसानों को तुर्कों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए भेजा। उन्होंने हमेशा एक जाति को दूसरी जाति के ख़िलाफ़ उकसाया है। ज़रा सोचिए, कितना ख़ून बहा है और कितनी तबाही बरपा हुई है! और इस सबसे फ़ायदा किसका हुआ? मगर अब और नहीं! अब यह चीज़ जल्दी ही ख़त्म हो जायगी। उन घिनौने कीड़ों का अन्त आ गया है। बोल्शेविकों ने एक ऐसा नारा दिया है जिससे पूँजीशाहों के दिल डर के मारे थरथर काँप रहे हैं। वह नारा है : "दुनिया के मज़दूरो, एक हो!" इसी में हमारी मुक्ति है, इसी में हमारे सुन्दर भविष्य की आशा है—उस दिन की आशा जब दुनिया के सारे मेहनतकश भाई-भाई होंगे। साथियो, कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो।

"एक न एक दिन पोलैण्ड में भी जनतन्त्र क़ायम होगा। मगर वह जनतन्त्र होगा सोवियत जनतन्त्र, जिसमें पोटोकी और उस जैसे दूसरे पूँजीशाह न होंगे। उनकी जड़ें उखाड़ कर फेंक दी जायेंगी और सोवियत पोलैण्ड के मालिक हम लोग होंगे। ब्रोनिक पताशिन्स्की को आप सभी लोग जानते हैं। जानते हैं न? इन्क़लाबी कमेटी ने उन्हें हमारे कारख़ाने का कमिसार बनाया है। 'पहले हम कुछ नहीं थे, अब हम ही सब कुछ होंगे।' और सचमुच यह ख़ुशी मनाने की बात होगी न साथियो! बस एक बात पर ध्यान रखो। उन छिपे हुए साँपों की ज़हरीली फुफकारों को कान मत दो! आओ, हम सब मेहनतकशों के अन्तिम लक्ष्य में अपना विश्वास रखें और इसमें सन्देह नहीं कि हम दुनिया भर की जनता में भाईचारा क़ायम कर लेंगे!"

ये बातें उस सीधे सादे मज़दूर के दिल की गहराइयों से निकल रही थीं, इसलिए उनके शब्द-शब्द में सच्चाई थी, ईमानदारी थी, जोश था। श्रोताओं में जो ज़्यादा नौजवान थे उनके बुलन्द नारों के बीच पिज़ीकी प्लैटफ़ार्म से उतरा। जो ज़रा अधेड़ उम्र के मज़दूर थे वे कुछ बोलने में हिचक रहे थे। कौन जाने कल फिर बोल्शेविकों को शहर छोड़ना पड़े और तब तो भाई हम लोग जो पीछे छूट जायेंगे उन्हें एक-एक लफ़्ज़ की क़ीमत अदा करनी पड़ेगी। इसलिए ज़रा सम्भल कर बोलना चाहिए। उस वक़्त फाँसी से चाहे बच भी जाओ, मगर नौकरी तो हाथ से गई समझो।

शिक्षा का कमिसार, छरहरे कसे बदन का चेर्नोपिस्की उस इलाक़े का अकेला स्कूल-मास्टर था जिसने अब तक बोल्शेविकों का साथ दिया था।

इन्क़लाबी कमेटी जिस इमारत में थी उसके ठीक सामने स्पेशल ड्यूटी कम्पनी थी; उसके आदमी इन्क़लाबी कमेटी में ड्यूटी दे रहे थे। रात को एक

मैक्सिम तोप इन्क़लाबी कमेटी के हेडक्वार्टर के फाटक पर, वहीं बागीचे में, तैयार खड़ी रहती थी। उसके पिछले हिस्से में कारतूसों की मजबूत पेटी लटकी रहती थी। उसके पास ही दो सन्तरी राइफिल लिये खड़े ड्यूटी देते रहते थे।

कामरेड इग्नातियेवा ने हेडक्वार्टर की ओर जाते हुए उन दो सन्तरियों में से एक से, जो नौजवान लाल सैनिक था, पूछा :

"तुम्हारी कितनी उम्र है, कामरेड ?"

"सत्रहवाँ चल रहा है।"

"तुम यहीं रहते हो ?"

लाल सैनिक मुस्कराया और बोला, "हाँ, मैं परसों ही लड़ाई के दौरान में फ़ौज में दाखिल हुआ।"

इग्नातियेवा ने ग़ौर से उसके चेहरे का अध्ययन किया और पूछा :

"तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं ?"

"इंजन ड्राइवर के असिस्टेण्ट हैं।"

उसी वक़्त दोलिनिक वर्दी पहने एक आदमी के साथ वहाँ आया।

इग्नातियेवा ने दोलिनिक की तरफ़ मुड़ते हुए कहा, "अच्छा हुआ तुम आ गये। मुझे कोमसोमोल की जिला कमेटी का चार्ज देने के लिए ठीक वह लड़का मिल गया जिसकी मुझे तलाश थी। यहीं का रहने वाला है।"

दोलिनिक ने तेज़ी से सर्गेई पर नज़र डाली—सर्गेई ही था यह।

"हाँ, बहुत अच्छा है। तुम ज़ख़ार के लड़के हो न ? बहुत अच्छा ! डट कर काम करो और नौजवानों में, अपने बराबर वालों में, आन्दोलन करो।"

सर्गेई ने आश्चर्य से उन लोगों की ओर देखा और पूछा, "मगर कम्पनी का क्या होगा ?"

"वह सब ठीक है, उसकी तुम फ़िक्र न करो," दोलिनिक ने सीढ़ियाँ चढ़ते हुए मुड़ कर जवाब दिया।

दो दिन बाद शाम होते-होते उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग की नगर कमेटी बन गई थी।

सर्गेई इस नई ज़िन्दगी के भंवर में जी-जान से कूद पड़ा,—उस नई ज़िन्दगी के भंवर में जो शहर में एकाएक और इतनी तेज़ी से शुरू हो गई थी। इस काम में सर्गेई ऐसा डूबा कि अपने घर वालों को भूल ही गया गो कि वे लोग इतने पास थे।

हाँ! वह, सर्गेई ब्रुज़ाक, अब एक बोल्शेविक था। सौवीं बार उसने अपनी जेब से वह कागज़ निकाला जो उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की कमेटी ने

उसे दिया था। यह कागज इस बात का सर्टिफ़िकेट था कि वह, सर्गेई, कोमसोमोल है और कोमसोमोल कमेटी का मन्त्री है। और अगर इसमें किसी को कोई शक-शुहबा हो तो उसके पास उसके प्यारे दोस्त पावेल का उपहार वह शानदार मानलिकर पिस्तौल भी था जो जीन के केस में बन्द उसकी ट्यूनिक की पेटी से लटक रहा था। उससे ज़्यादा अच्छा सर्टिफ़िकेट और क्या हो सकता है! कितने अफ़सोस की बात है कि पावलुश्का यहाँ नहीं है।

इन्क़लाबी कमेटी जो काम उसे देती थी उन्हीं में सर्गेई के दिन गुज़र रहे थे। आज भी इग्नातियेवा उसका इन्तज़ार कर रही थी। वे लोग डिवीजन के राजनीतिक विभाग से इन्क़लाबी कमेटी के लिए अख़बार और किताबें लाने के लिए स्टेशन जाने वाले थे। सर्गेई तेज़ी से इमारत में से निकल कर सड़क पर आया जहाँ राजनीतिक विभाग का एक आदमी मोटर लिए उसका इन्तज़ार कर रहा था।

स्टेशन तक के अपने लम्बे सफ़र में, जहाँ पहली सोवियत उक्रेनी डिवीजन का राजनीतिक विभाग और उसका हेडक्वार्टर रेल के डब्बों में क़ायम किया गया था, इग्नातियेवा ने सर्गेई से बहुत से सवाल पूछे।

"तुम्हारा काम कैसा चल रहा है? तुम्हारा संगठन बना कि नहीं? तुम्हें अपने दोस्तों से, दूसरे मज़दूरों के लड़कों से कहना चाहिए कि कोमसोमोल में आयें। हमें जल्दी ही कम्युनिस्ट नौजवानों के एक दल की ज़रूरत होगी। कल हम लोग कोमसोमोलों के लिए एक पर्चा छापेंगे। उसके बाद थिएटर हॉल में नौजवानों की एक बड़ी-सी रैली करेंगे। राजनीतिक विभाग में पहुँच कर मैं उस्तिनोविच से तुम्हारा परिचय कराऊँगी। अगर मेरा ख़याल ग़लत नहीं है तो वह नौजवानों के संग ही काम कर रही है।"

उस्तिनोविच अठारह साल की एक लड़की निकली जिसके बाल काले-काले और बॉब किये हुए थे और जो एक नई-सी खाकी ट्यूनिक पहने थी जिसमें चमड़े की एक पतली-सी पेटी लगी थी। इस लड़की ने सर्गेई को उसके काम के बारे में बहुत सी बातें बतलाईं और उसके काम में मदद देने का वादा किया। वहाँ से चलने के पहले उसने सर्गेई को किताबों और अख़बारों का एक बड़ा-सा बण्डल दिया जिसमें एक ख़ास अहमियत की चीज़ थी—कोमसोमोल के नियमों और उद्देश्यों के बारे में एक पुस्तिका।

उस रोज़ बहुत रात गये जब सर्गेई इन्क़लाबी कमेटी के हेडक्वार्टर पर लौटा तो उसने वहीं बाहर वालिया को अपना इन्तज़ार करते पाया।

उसको देखते ही वह चिल्ला पड़ी, "तुम्हें शर्म आनी चाहिए अपने ऊपर! इसका क्या मतलब कि इस तरह घर से अलग-अलग रहते हो? माँ

का रोते-रोते बुरा हाल है, और पिताजी तुमसे बहुत गुस्सा हैं । घर चलोगे तो देखोगे कैसा झगड़ा होता है ।"

" नहीं, कुछ नहीं होगा," उसने वालिया को समझाते हुए कहा। " सच कहता हूँ, मुझे घर जाने का वक़्त ही नहीं मिलता । आज रात भी नहीं आऊँगा । लेकिन मुझे बड़ी खुशी है कि तुम आ गयीं । मुझे तुमसे कुछ बात करनी है । चलो, अन्दर चलें ।"

वालिया अपने भाई को पहचान ही नहीं पा रही थी । वह बिल्कुल बदल गया था । उसके अन्दर जोश उबला पड़ता था ।

वालिया के बैठते ही सर्गेई ने फ़ौरन काम की बात शुरू कर दी ।

" वालिया, स्थिति यह है : तुम्हें कोमसोमोल में दाख़िल होना है । तुम नहीं जानतीं कि कोमसोमोल क्या है ? नौजवान कम्युनिस्ट लीग । यहाँ पर मैं ही उसका काम चला रहा हूँ । मेरी बात का यक़ीन नहीं आता तुम्हें ? अच्छा तो, यह देखो ।"

वालिया ने उस कागज़ को पढ़ा और अपने भाई की तरफ़ हैरत भरी निगाहों से देखा ।

" मैं कोमसोमोल में क्या करूँगी ?"

सर्गेई ने अपने हाथ फैलाते हुए कहा, " अरे पगली लड़की, करने को काम ही काम है ! मुझी को देखो । मैं काम में इतना फँसा हुआ हूँ कि रात को सोने का वक़्त भी नहीं मिलता । हमें प्रचार करना है । इग्नातियेवा कहती हैं कि जल्दी ही थिएटर हॉल में एक मीटिंग होगी और उसमें सोवियत सत्ता के बारे में बतलाया जायेगा । वे कहती हैं, मुझे भाषण देना होगा । मैं सोचता हूँ, उनकी यह बात ग़लत है । क्योंकि मुझे भाषण देना आता नहीं और मैं सब घोटाला कर दूँगा । अच्छा, अब बताओ कोमसोमोल में दाख़िल होने के बारे मे तुम्हारा क्या ख़याल है ?"

" मेरी समझ में नही आ रहा, क्या कहूँ । अगर मैंने ऐसा किया तो माँ बहुत नाराज़ होंगी ।"

सर्गेई ने ज़ोर देते हुए कहा, " माँ की चिन्ता मत करो, वालिया । वह समझती नहीं हैं । उनको बस एक बात की फ़िक्र है, उनके बच्चे उनके पास रहें । मगर सोवियत सत्ता के ख़िलाफ़ वह नहीं हैं । उल्टे, वह पूरी तरह उसके साथ हैं । लेकिन वह चाहती हैं कि सारी लड़ाई-भिड़ाई दूसरों के लड़के लड़ें । अब तुम्हीं बताओ, यह बात ठीक है ? याद है जुख़राई ने हमसे क्या कहा था ? और पावेल को देखो । वह अपनी माँ के बारे में सोचने के लिए नहीं रुका । वक़्त आ गया है कि

हम सब नौजवान अपने हक़ के लिए लड़ें ताकि हमारी ज़िन्दगी बेहतर बने। मुझे पूरा यक़ीन है कि तुम इससे इनकार नहीं करोगी, क्यों वालिया? ज़रा सोचो कितना अच्छा होगा। तुम लड़कियों में काम करना और मैं लड़कों में। हाँ, मुझे एक बात याद आगई। आज ही जाकर मैं उस लाल-लाल बालों वाले बदमाश क्लिम्का से बात करूँगा। हाँ तो वालिया, क्या कहती हो? तुम हमारे साथ हो या नहीं? यह देखो मेरे पास यह एक छोटी सी पुस्तिका है जिससे तुम्हें इस चीज़ के बारे में सारी बातें मालूम हो जायेंगी।"

कोमसोमोल के नियमों की वह पुस्तिका उसने अपनी जेब से निकाली और वालिया को पकड़ा दी।

"लेकिन अगर पेतल्युरा लौट आया?" वालिया ने अपने भाई के चेहरे पर आँखें गड़ाये धीमी आवाज़ में पूछा।

इस चीज़ का ख़याल अब तक सर्गेई को नहीं आया था और वह क्षण भर के लिए सोच में डूब गया।

"उस हालत में दूसरों के साथ मुझे भी चले जाना होगा, और क्या," उसने कहा, "मगर, तुम्हारा क्या होगा? हाँ, इसमें तो शक नहीं कि इसमें माँ को बड़ा दुःख होगा।" और वह ख़ामोशी में डूब गया।

"सर्योजा, क्या तुम मुझे इस तरह मेम्बर नहीं बना सकते कि माँ को या किसी और को कुछ पता न चले? बस, तुमको और मुझको यह बात मालूम हो? मदद तो मैं तब भी उतनी ही कर सकूँगी। वही सबसे अच्छा तरीक़ा होगा।"

"तुम शायद ठीक कहती हो, वालिया।"

उसी वक़्त इग्नातियेवा कमरे के अन्दर दाख़िल हुई।

"कामरेड इग्नातियेवा, यह मेरी छोटी बहन वालिया है। अभी मैं इससे कोमसोमोल में दाख़िल होने के बारे में बात कर रहा था। यह बड़ी योग्य सदस्य होगी। लेकिन देखिए, बात यह है कि मुमकिन है हमारी माँ अड़चन डालें। क्या ऐसा हो सकता है कि हम वालिया को दाख़िल तो कर लें, मगर किसी को कुछ पता न चले? बात यह है कि हो सकता है हमें फिर शहर छोड़ना पड़े। तो उस हालत में मैं तो फ़ौज के साथ चला ही जाऊँगा, मगर वालिया डरती है कि अगर वह भी चली गई तो माँ की ज़िन्दगी पहाड़ हो जायगी।"

इग्नातियेवा एक कुर्सी के सिरे पर बैठी बड़े ग़ौर से सर्गेई की बात सुन रही थी।

उसने अपनी सहमति देते हुए कहा, "हाँ, वही सबसे अच्छा तरीक़ा होगा।"

शहर भर में जो तमाम इश्तिहार चिपके हुए थे उनको देख कर शहर के नौजवान थिएटर हॉल में भर उठे थे और एक-दूसरे से बड़े जोश में बात कर रहे थे। हॉल उनकी बातचीत से गूँज रहा था। शकर के कारख़ाने के मज़दूरों का एक बैण्ड बज रहा था। श्रोताओं में ज़्यादातर शहर के हाई स्कूल और कालेज के विद्यार्थी थे और उन्हें मीटिंग से ज़्यादा दिलचस्पी उस संगीत-नृत्य में थी जो मीटिंग के बाद होने वाला था।

आख़िरकार, परदा उठा और उएज्द कमेटी के मन्त्री कामरेड राजिन, जो अभी-अभी शहर में आये थे, मंच पर दिखाई दिये।

सब की आँखें इस नाटे से, दुबले-पतले और छोटी सी नुकीली नाक वाले आदमी की ओर मुड़ गईं। सबने उनके भाषण को बड़े ध्यान से सुना। उन्होंने लोगों को उस संघर्ष के बारे में बतलाया जो सारे देश में तूफ़ान की तरह चल रहा था और तमाम नौजवानों को कम्युनिस्ट पार्टी में आने के लिए कहा। वह एक मंजे हुए वक्ता की तरह बोल रहे थे मगर "कट्टर मार्क्सवादी", "अन्ध राष्ट्रवादी", और इसी तरह के दूसरे कुछ फ़िकरे इस्तेमाल कर रहे थे जिन्हें श्रोता नहीं समझ रहे थे। तब भी उनका भाषण जब ख़तम हुआ तो सबने बड़े ज़ोर से ताली बजाई। अपना भाषण ख़तम करने पर उन्होंने अगले वक्ता यानी सर्गेई का परिचय दिया और हट गये।

वही हुआ जिसका सर्गेई को डर था! अब वह श्रोताओं के सामने खड़ा था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह कुछ देर तक शब्दों के लिए अटका। मगर तभी इग्नातियेवा उसकी मदद को आ गई। उसने सभानेत्री की अपनी कुर्सी से धीमे से फुसफुसा कर सर्गेई से कहा—"इनको सेल के बारे में बतलाओ।"

सर्गेई ने बिना किसी भूमिका के फ़ौरन ही काम की बात शुरू कर दी।

"हाँ तो साथियो, जो सारी बातें कहने की थीं आपने सुन ली हैं। अब करने की बात यह है कि हमें पार्टी का एक ऐसा केन्द्र संगठित करना है जिसके इर्द-गिर्द तमाम लोगों को बटोरा जा सके। कौन लोग इससे सहमत हैं?"

उपस्थित लोगों में सन्नाटा छा गया। जो खाई बन गई थी उसको उस्तिनोविच ने भरा। वह उठ खड़ी हुई और उसने लोगों को बतलाया कि किस तरह मास्को में नौजवानों का सगठन हो रहा है। इस बीच सर्गेई बौखलाया हुआ सा अलग खड़ा रहा।

अन्दर ही अन्दर वह तैश खा रहा था कि सेल के संगठन के सवाल पर मीटिंग की प्रतिक्रिया कितनी ख़राब है। उसे श्रोताओं पर मन ही मन बड़ा गुस्सा

आ रहा था। लोग उस्तिनोविच को सुन भी नहीं रहे थे। सर्गेई ने जालीवानोव को उस्तिनोविच की ओर घृणा से देखते हुए लिज़ा सुखार्को के कान में कुछ कहते देखा। सामने की कतार में कालेज की बड़ी लड़कियाँ बैठी थीं। उनके चेहरे पाउडर से पुते थे और वे बड़ी अदा से अपने इर्द-गिर्द देख रही थीं और आपस में फुसफुसा रही थीं। वहाँ उस कोने में दरवाज़े के पास नौजवान लाल सैनिकों की एक टोली बैठी हुई थी। उनमें सर्गेई ने अपने परिचित नौजवान तोपची को देखा। वह स्टेज के सिरे पर बैठा बेचैनी से अपने शरीर को तोड़-मरोड़ रहा था और खुली नफ़रत से, भड़कीले कपड़ों में सजी लिज़ा सुखार्को और ऐना ऐदमोवस्काया को देख रहा था। मगर उनको किसी बात की कोई शर्म नहीं थी और वे अपने नौजवान दोस्त लड़कों से बड़ी चुहल के साथ बातचीत कर रही थीं।

यह देख कर कि कोई उसकी बात नहीं सुन रहा है उस्तिनोविच ने जल्दी से अपनी तक़रीर ख़त्म की और बैठ गई। उसके बाद इग्नातियेवा बोलने के लिए आई और उसके शान्त, गम्भीर अन्दाज़ ने अस्थिर श्रोताओं को अपने वश में कर लिया।

उसने कहा, "साथियो, मैं आप से कहना चाहती हूँ कि आज रात यहाँ जो कुछ कहा गया है उस पर आप ग़ौर करें। मुझे इस बात का पक्का विश्वास है कि आप में से कुछ लोग क्रान्ति में सक्रिय भाग लेने वाले बन जायेंगे—केवल दर्शक ही नहीं बने रहेंगे। आपके लिए दरवाज़े खुले हुए हैं, बाकी बातों का निश्चय आपको करना है। मैं चाहूँगी कि आप लोग अपनी राय दें। जो कोई भी कुछ कहना चाहे मैं उसको दावत देती हूँ कि यहाँ आकर कहे।"

एक बार फिर हॉल में सन्नाटा छा गया। फिर पीछे से एक आवाज़ सुनाई दी :

"मैं बोलना चाहता हूँ!"

मिशा लेव्चुकोव, जो भेंगेपन के कारण आँख से ज़रा तिरछा देखता था और भालू की तरह भारी-भरकम था, मंच की ओर बढ़ा।

"जो मौजूदा हालत है," उसने कहा, "उसमें हमें बोल्शेविकों की मदद करनी ही होगी। मैं इसके हक़ में हूँ। सर्योज़का मुझको जानता है। मैं कोमसोमोल में दाखिल हो रहा हूँ।"

सर्गेई का चेहरा खुशी से चमकने लगा। वह लपक कर मंच के बीचो-बीच पहुँचा और चिल्ला कर बोला, "देखा साथियो! मैं हमेशा कहता था कि मिशा हमीं में से एक है। इसका पिता स्विचमैन था और मोटर से कुचल कर मर गया था और इसीलिए मिशा की पढ़ाई नहीं हो सकी। मगर आज जैसे वक़्त

में किस चीज की जरूरत है यह जानने के लिए उसे किसी कालेज में जाने की जरूरत नहीं पड़ी।"

हॉल में बड़ा शोर मचा। एक नौजवान ने, जिसके बाल बड़े करीने से कढ़े हुए थे, बोलने की इजाजत माँगी। यह ओकूशेव था। वह कालेज में पढ़ता था और नगर के दवाफ़रोश का लड़का था। अपनी ट्यूनिक को तानते हुए उसने कहना शुरू किया :

"आप लोग मुझे माफ़ करेंगे, साथियो। मेरी समझ में नहीं आता कि हमसे क्या चाहा जा रहा है? क्या हमसे यह उम्मीद की जाती है कि हम राजनीति में हिस्सा लें? अगर ऐसी बात है तो मैं पूछता हूँ, हम लोग पढ़ेंगे कब? हमें कालेज की पढ़ाई खतम करनी ही है। अगर यह कोई खेल-कूद की सोसायटी या क्लब के संगठन की बात होती जहाँ हम लोग इकट्ठा हो सकते और पढ़ सकते तो बात दूसरी थी। मगर राजनीति में हिस्सा लेने का तो मतलब है आगे चल कर फाँसी पर टँगने के खतरे को भी उठाना। न भाई, मैं नहीं समझता कोई इस बात से सहमत होगा।"

हॉल में लोग हँस रहे थे। ओकूशेव मंच से कूद कर अपनी जगह पर जा बैठा। उसके बाद वह नौजवान तोपची बोलने के लिए खड़ा हुआ। उसने क्रुद्ध भंगिमा से अपनी टोपी माथे पर और नीची खींच ली और श्रोताओं को तीखी नजरों से देखता हुआ गरज कर बोला :

"तुम लोग हँस किस चीज पर रहे हो कीड़ो!"

उसकी आँखें दो जलते हुए अंगारे थे और वह गुस्से से काँप रहा था। एक गहरी साँस खींच कर उसने कहना शुरू किया :

"मेरा नाम इवान जार्की है। मैं यतीम हूँ। मैंने कभी अपने माँ-बाप को नहीं देखा और न उनके बारे में मुझे कुछ मालूम है। न कभी मेरा कोई अपना घर रहा। मैं सड़कों पर पला और बढ़ा हूँ। मैं रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए भीख माँगता था और अक्सर मुझे भूखे पेट सो जाना पड़ता था। मैं तुम्हें बतला सकता हूँ कि मैं एक कुत्ते की जिन्दगी बिता रहा था। तुम सब, जो अपनी माँओं के लाड़ले यहाँ इकट्ठा हुए हो, तुम्हें इसके बारे में कुछ भी पता न होगा। तब सोवियत सत्ता आई और लाल सेना के लोगों ने मुझे सड़क पर से उठाया और मेरी देख-भाल की। उनकी एक पूरी प्लैटून ने मुझे गोद लिया। उन्होंने मुझे कपड़े दिये। उन्होंने मुझे लिखना-पढ़ना सिखलाया। मगर इन सबसे बड़ी चीज यह कि उन्होंने मुझको सिखाया कि इन्सान बनना किसे कहते हैं। उन्हीं के कारण मैं बोल्शेविक बना और अपनी आखिरी साँस तक बोल्शेविक रहूँगा। मैं खूब अच्छी

तरह जानता हूँ कि हम लोग किस चीज के लिए लड़ रहे हैं। हम लोग लड़ रहे हैं अपने ही जैसे ग़रीबों के लिए। हम लोग मज़दूरों की हुकूमत के लिए लड़ रहे हैं। तुम लोग यहाँ पर बैठे चबर-चबर बातें कर रहे हो। मगर, तुम्हें नहीं मालूम कि इसी शहर के लिए लड़ते हुए हमारे दो सौ साथी मारे गये हैं। उन्होंने अपने जीवन को बलिदान कर दिया....." जार्की की आवाज़ खिंचे हुए तार की तरह गूँज रही थी। " उन्होंने हमारे लिए, हमारे सुख के लिए, हमारी खुशी के लिए हँसते-हँसते अपनी जान दे दी....। देश भर में, तमाम मोर्चों पर, लोग मर रहे हैं और तुम लोग यहाँ बैठे गाल बजा रहे हो!" "साथियो," सभापति मण्डली की ओर तेज़ी से मुड़ते हुए उसने कहा, " आप लोग खामख़ा इन लोगों से बात करने में अपना वक़्त जाया कर रहे हैं," और फिर हॉल की तरफ़ उंगली से इशारा करते हुए बोला, "आप समझते हैं कि ये लोग आप की बात समझेंगे ? नहीं! भरा पेट कभी खाली पेट का साथी नहीं होता। इनमें से सिर्फ़ एक आदमी आगे आया और वह इसलिए आगे आया कि वह भी ग़रीब है, यतीम है। मगर कोई बात नहीं," उसने उपस्थित लोगों पर गुस्से से गरजते हुए कहा, " हम लोग तुम्हारे बिना भी अपना काम चला लेंगे। हम लोग तुमसे भीख नहीं माँगेंगे कि आइये और हममें शरीक होइए। जहन्नुम में जाओ तुम लोग! तुम लोगों से बात करने का अकेला तरीक़ा मशीनगन है!" और इसके बाद वह मंच पर से उतरा और बिना दाँयें-बाँयें देखे सीधे दरवाजे की तरफ़ बढ़ा।

मीटिंग की सदारत जिन लोगों ने की थी उनमें से कोई भी संगीत-नृत्य के लिए नहीं रुका।

इन्क़लाबी कमेटी के हेडक्वार्टर को लौटते हुए रास्ते में सर्गेई ने आक्रोश से कहा, " कैसी मुसीबत है! कैसे अजीब लोग हैं! जार्की बिलकुल ठीक कहता है। यह कालेज की भीड़ किसी काम की नहीं। उनके बारे में सोच कर दिमाग़ गरम हो जाता है!"

इग्नातियेवा ने उसको बीच में टोकते हुए कहा, " इसमें अचरज की कोई बात नहीं है। ये तमाम लोग जो इकट्ठा हुए थे, शायद ही इनमें मज़दूर जमात का कोई नौजवान रहा हो। इनमें ज़्यादातर या तो निचले मध्यम वर्ग के लड़के थे या नगर के बुद्धिजीवियों के। ग़रज़ सब लोग ऐसे थे जो अपने स्वार्थ से आगे नहीं देख पाते। तुम्हें लकड़ी और शकर के कारखाने के मज़दूरों के बीच काम करना होगा। मगर तुम यह न समझना कि मीटिंग एकदम बेकार थी। आगे चल कर तुम देखोगे कि इन्हीं विद्यार्थियों में से कुछ बड़े अच्छे साथी निकलेंगे।"

उस्तिनोविच ने इग्नातियेवा की बात का समर्थन किया।

वह बोली, "सर्योंजा, हमारा काम अपने विचारों को, अपने नारों को, सब लोगों तक पहुँचाना है। पार्टी हर नई घटना पर सभी मेहनतकशों का ध्यान केन्द्रित करेगी। हम लोग बहुत सी सभाएँ, सम्मेलन, और कांग्रेसें करेंगे। राजनीतिक विभाग गर्मियों के दिनों के लिए स्टेशन पर एक नाटकशाला खोल रहा है। कुछ ही दिनों में एक प्रचार-वैन आने वाली है और तब हमारा काम जोर-शोर से चलेगा। याद है लेनिन ने क्या कहा था—जब तक हम लोग जनता को, करोड़ों मेहनतकशों को, अपनी लड़ाई में नहीं ले आते तब तक हम कभी नहीं जीत सकते।"

उसी शाम, काफ़ी देर हो जाने पर, सर्गेई उस्तिनोविच को पहुँचाने स्टेशन तक गया। उससे अलग होते समय उसने उस्तिनोविच के हाथों को मज़बूती से अपने हाथों में लिया और जितनी देर एकदम जरूरी था उससे ज़्यादा देर तक उसके हाथों को अपने हाथों में लिये रहा। उस्तिनोविच के चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कराहट आई।

लौटते समय सर्गेई रास्ते में अपने घर वालों से मिलने के लिए चला गया। उसने खामोशी से अपनी माँ की फटकार को सुन लिया। मगर, जब पिता ने शुरूआत की तो सर्गेई ने जवाबी हमला किया और ज़खार वासीलिएविच की हालत खराब कर दी।

"बापू, आपने जर्मनों के कब्ज़े के दिनों में जब हड़ताल की थी और इंजन पर के उस सन्तरी को मार डाला था उस वक़्त आपको अपने घर वालों का ख़याल आया था न? जरूर आया था। मगर तब भी आपने उस काम को किया, क्योंकि यही आपके मज़दूर के अन्तःकरण का आदेश था। मैंने भी अपने घर वालों के बारे में सोचा है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अगर हमें पीछे हटना पड़ा तो मेरे कारण आप लोगों को सताया जायेगा। और फिर, मैं घर पर बैठ भी तो नहीं सकता था। आप तो खुद सब बातों को जानते हैं, बापू। तो फिर, यह फिजूल का हो-हल्ला क्यों? मैं एक अच्छे लक्ष्य के लिए काम कर रहा हूँ। आपको मुझे सहारा देना चाहिए, न कि इस तरह मेरी टाँग घसीटना। आओ, हम लोग समझौता कर लें बापू, और तब माँ भी मुझे डाटना बन्द कर देगी।" उसने अपने पिता को अपनी साफ़, नीली-नीली आँखों से देखा और प्यार से मुस्कराया। उसे इस बात का विश्वास था कि वह ठीक बात कह रहा है।

ज़खार वासीलिएविच अपनी बेंच पर ज़रा बेचैनी से हिला और उसकी घनी कड़ी मूँछों और छोटी-सी उलझी-पुलझी दाढ़ी के बीच से उसके पीले से दाँत मुस्कराने पर दिखलाई दिये।

"वर्ग चेतना की बात ला रहे हो, क्यों ? बदमाश कहीं का ! तुम सोचते हो कि यह जो रिवाल्वर लिए घूम रहे हो वह मुझको तुम्हारी मरम्मत करने से रोक लेगा ?"

मगर अब उसकी आवाज में गुस्सा नहीं था, उसका हल्का-सा आभास भी नहीं। और उसने अपने मन के आवेग को वश में करते हुए अपना सख्त, गठीला हाथ अपने बेटे की तरफ़ बढ़ाया। "ठीक है सर्योजा, करते चलो। एक बार जब तुमने शुरू कर दिया है तो मैं ब्रेक नहीं लगाऊँगा। मगर हाँ, हम लोगों को एक-दम भूल मत जाना, बीच-बीच में आ जरूर जाया करना।"

रात का वक़्त था। जरा से खुले हुए दरवाजे में से रोशनी की किरण अन्दर आकर सीढ़ियों पर लेट गई थी। उस बड़े-से कमरे में, जिसमें टाटदार फर्नीचर सजा हुआ था, वकील साहब की बड़ी-सी मेज के पीछे पाँच आदमी बैठे हुए थे—दोलिनिक, इग्नातियेवा, खुफ़िया विभाग के अध्यक्ष तिमोशेंको, जो कौसेकों जैसी फ़र की टोपी के कारण किरगिज़ नजर आते थे, वह दैत्याकार रेलवे मजदूर शूदिक और रेलवे के हाते का चपटी नाक वाला ओस्तापचुक। इन्क़लाबी कमेटी की मीटिंग जारी थी।

दोलिनिक ने मेज पर झुकते हुए और इग्नातियेवा को कठोर आँखों से देखते हुए भर्राई हुई आवाज में कहा :

"मोर्चे को रसद पहुँचाना जरूरी है। मजदूरों के लिए खाना जरूरी है। जैसे ही हम लोग आये, दूकानदारों और बाजार के मुनाफ़ाखोरों ने दाम चढ़ा दिये। वे सोवियत मुद्रा लेने से इनकार करते हैं। यहाँ सिर्फ़ पुरानी जारशाही मुद्रा या करेन्स्की के नोट चलते हैं। आज हम लोगों को बैठ कर चीजों के दाम तय कर देने चाहिएँ। हम अच्छी तरह जानते हैं कि कोई भी मुनाफ़ाखोर तय किये हुए दामों पर अपना माल नहीं बेचेगा। उनके पास जो कुछ है उसे वे छिपा लेंगे। उस सूरत में हम लोग तलाशियाँ लेंगे और इन खून चूसने वालों के माल को जब्त कर लेंगे। यह शराफ़त बरतने का वक्त नहीं है। हम मजदूरों को अब और भूखों नहीं मरने दे सकते। कामरेड इग्नातियेवा कहती हैं कि हमें सम्भल कर चलना चाहिए। अगर आप मुझसे पूछिए तो यह एक कातर बुद्धिजीवी की प्रतिक्रिया है। देखो जोया, बुरा न मानो, मैं जानता हूँ मैं क्या कह रहा हूँ। और जो भी हो, यह छोटे-मोटे दूकानदारों का मामला नहीं है। आज मुझे खबर मिली है कि सराय के मालिक बोरिस ज़ोन के घर में एक गुप्त तहखाना है। पेतल्युरा की फ़ौजों के आने से पहले

ही बड़े बड़े दूकानदारों ने वहाँ अपने माल के बड़े-बड़े स्टाक छिपा दिये हैं।" वह रुका और मखौल उड़ाती हुई शरीर आँखों से तिमोशेंको को देखा।

तिमोशेंको ने सकपकाकर पूछा, "तुम्हें इस चीज का पता कैसे चला?" उसे यह बात बुरी लगी कि एक ऐसी खबर जिसको हासिल करने का काम खुद उसका था, दोलिनिक को पहले ही मालूम हो गई।

दोलिनिक ने मगन होते हुए कहा, "मुझे सब बात मालूम रहती है, भाई। तहखाने के बारे में जानने के अलावा मुझे यह भी मालूम है कि कल तुमने और डिवीजन कमाण्डर के मोटर ड्राइवर ने मिल कर आधी बोतल समोगन उड़ाई थी।"

तिमोशेंको अपनी कुर्सी में अस्थिर हुआ और उसका पीला चेहरा शर्म से लाल हो गया।

"खूब!" उसने बेमन से प्रशंसा करते हुए कहा। मगर यह देख कर कि इग्नातियेवा की त्योरियाँ चढ़ती जा रही हैं, उसने और कुछ न कहा। इन्क़लाबी कमेटी के अध्यक्ष दोलिनिक को देखते हुए उसने अपने मन में कहा, "देखते हो, इस बढ़ई के पास अपना निजी खुफ़िया विभाग है।"

दोलिनिक कह रहा था, "सर्गेई ब्रुज़ाक ने मुझे यह सब बतलाया। वह किसी को जानता है जो वहीं रेस्तोराँ में काम करता था। वहीं रसोइयों से इस लड़के को मालूम हुआ कि जिस चीज़ की भी ज़रूरत होती थी और जितनी ज़रूरत होती थी जोन उनको सप्लाई किया करता था। कल सर्गेई ने तहखाने के बारे में पक्की तरह पता लगा लिया। बस अब मालूम यह करना है कि यह तहखाना ठीक है किस जगह पर। तिमोशेंको, फ़ौरन अपने आदमियों को इस काम पर लगा दो! सर्गेई को अपने साथ लेते जाओ। अगर हमारा मामला बैठ गया और हमने काम ठीक से किया तो हम मज़दूरों को और डिवीजन को चीजें दे सकेंगे।"

आधे घण्टे बाद आठ सशस्त्र आदमी सराय के मालिक के घर में घुसे। दो बाहर फाटक पर पहरा देने के लिए रुक गये।

मालिक नाटा-सा, शराब के पीपे की तरह गोल-मटोल आदमी था। उसकी एक टाँग लकड़ी की थी और चेहरे पर लाल-लाल बाल थे। उसने अतिरिक्त नम्रता से आगन्तुकों का स्वागत किया। अपनी मोटी भारी आवाज़ में उसने पूछा:

"क्या बात है, साथियो? इतनी रात गये कैसे आये?"

जोन के पीछे उसकी लड़कियाँ जल्दी में अपने ड्रेसिंग गाउन पहने, तिमोशेंको की टार्च की रोशनी में आँखें मुलमुलाती हुई खड़ी थीं। दूसरे कमरे

से जोन की भरे बदन की सुन्दर पत्नी की आहों और कराहों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह भी जल्दी-जल्दी कपड़े पहन रही थी।

"हम लोग मकान की तलाशी लेने आये हैं," तिमोशेंको ने संक्षेप में अपनी बात कह दी।

फ़र्श की एक-एक इंच ज़मीन का अच्छी तरह मुआइना किया गया। गल्ला भरने के बड़े से कोठे को, जिसमें कटी हुई लकड़ी का अम्बार लगा हुआ था, बहुत से भण्डारघरों को, रसोई को और एक खूब बड़े से तहख़ाने को—सब को बहुत सावधानी से देखा गया। मगर गुप्त तहख़ाने का कहीं पता न चला।

रसोई से हट कर एक छोटी सी कोठरी थी जिसमें नौकरानी सोई हुई थी। वह इतनी गहरी नींद में सो रही थी कि उसको इन लोगों के आने की आहट भी नहीं मिली। सर्गेई ने उसको बहुत हल्के से जगाया।

"तुम यहाँ काम करती हो?" उसने पूछा। उस भौंचक लड़की ने, जिसकी आँखें नींद से भारी हो रही थीं, कम्बल अपने कन्धे तक खींच लिया और अपनी आँखों को रोशनी से बचाने के लिए आड़ की।

"हाँ," लड़की ने जवाब दिया। "तुम कौन हो?"

सर्गेई ने उसको बतलाया कि वह कौन है और यह कह कर कि जल्दी से कपड़े पहन लो, वह कमरे से बाहर आ गया।

खाना खाने के बड़े से कमरे में तिमोशेंको सराय के मालिक से सवाल कर रहा था और मालिक बहुत परेशान होकर बड़बड़ा रहा था:

"आप मुझसे चाहते क्या हैं? मेरे पास और कोई तहख़ाने नहीं हैं। मेरी बात का यक़ीन कीजिये, आप फ़िज़ूल अपना वक़्त बरबाद कर रहे हैं। हाँ, यह सही है कि कभी मैं सराय का मालिक था। लेकिन, अब मैं एक ग़रीब आदमी हूँ। पेतल्युरा के लोगों ने मेरे पास से सब कुछ झाड़ लिया और वह तो कहिए बच गया, वर्ना उन्होंने मुझे मार ही डाला था। मुझे बड़ी खुशी है कि सोवियत राज क़ायम हो गया है। लेकिन मेरे पास जो कुछ है वह तो आपके सामने है, आप देख सकते हैं," कहते हुए उसने अपने छोटे-छोटे मोटे-ताज़े हाथ फैला दिये। पूरे वक़्त उसकी लाल लाल आँखें तिमोशेंको के चेहरे से सर्गेई के चेहरे पर और सर्गेई के चेहरे से कोने में और छत पर दौड़ती रहीं।

तिमोशेंको ने अपने ओठों को चबाते हुए कहा:

"तो तुम बतलाओगे नहीं? आख़िरी बार मैं तुमको हुक्म देता हूँ कि तुम हमको अपना गुप्त तहख़ाना दिखलाओ।"

सराय के मालिक की बीवी ने रोते हुए कहा, "मगर कामरेड अफ़सर, हमारे पास खुद अपने खाने के लिए नहीं है। हमारे पास जो कुछ था सब उन लोगों ने छीन लिया।" उसने रोने की कोशिश की, मगर बेसूद।

सर्गेई ने कहा, "तुम कहती हो कि तुम भूखों मर रही हो। फिर यह नौकरानी तुमने कैसे रखी है?"

"वह नौकरानी नहीं है। एक ग़रीब लड़की है जो हमारे साथ रहती है क्योंकि उसका और कहीं कोई ठिकाना नहीं है। खुद ख़िस्तिना से पूछ कर देख सकते हो।"

अब तिमोशेंको के धीरज का अन्त हो गया और उसने चिल्ला कर कहा, "अच्छा अगर यही तुम्हारी मर्ज़ी है तो फिर अब हम अच्छी तरह अपना काम करेंगे!"

सुबह हुई, मगर तलाशी अब भी जारी थी। तेरह घण्टे की बेकार कोशिश से तंग आकर तिमोशेंको ने अब तलाशी को ख़तम करने का फ़ैसला कर लिया था जब कि सर्गेई ने, जो कि नौकरानी की कोठरी की जाँच के बाद बाहर निकलने ही वाला था, अपने पीछे से उस लड़की की धीमी फुसफुसाहट सुनी : "रसोईघर में अंगीठी के पीछे देखो।"

दस मिनट बाद, उस अंगीठी के तोड़े जाने पर लोहे का एक चोर दरवाज़ा दिखाई दिया। और घण्टे भर के अन्दर दो टन माल ढोने वाली एक भारी ट्रक पीपे और बोरे लाद कर सराय से चली जहाँ बहुत से लोगों की भीड़ आश्चर्य से आँखें फाड़े, मुँह बाये खड़ी थी।

एक रोज़ जब बहुत गरमी पड़ रही थी, मारिया याकोवलेवना कोर्चागिना अपने सामान की एक छोटी-सी पोटली लिये घर आई। जब आर्तेम ने उसे पावेल के बारे में बतलाया तो वह ज़ार-ज़ार रोने लगी। अब उसे अपनी ज़िन्दगी खोखली और नीरस मालूम पड़ती थी। उसे अपने लिए काम की तलाश थी और कुछ दिन बाद उसने लाल सेना के लोगों के कपड़े धोना शुरू कर दिया जिसके बदले में, मज़दूरी के तौर पर, उसे सैनिकों का राशन मिल जाता था।

एक शाम उसने खिड़की के बाहर आर्तेम के पैरों की आहट सुनी। आज आर्तेम और रोज़ से ज़्यादा जल्दी-जल्दी आ रहा था। उसने धक्का देकर दरवाज़ा खोला और देहलीज पर से ही ऐलान किया, "मैं पावका की एक चिट्ठी लाया हूँ।"

पावेल ने लिखा था :

"प्यारे भाई आर्तेम, यह मैं तुम्हें यह बतलाने के लिए लिख रहा हूँ कि मैं जिन्दा हूँ, हालाँकि मेरा हाल बहुत अच्छा नहीं है। मेरे कूल्हे में गोली लगी थी, लेकिन अब मैं अच्छा हो रहा हूँ। डाक्टर का कहना है कि हड्डी को चोट नहीं पहुँची। इसलिए मेरे बारे में परेशान मत होना, मैं ठीक हो जाऊँगा। अस्पताल से रिहाई होने पर शायद मुझे छुट्टी मिल जायेगी, और मैं कुछ रोज के लिए घर आऊँगा। मैं माँ के पास तक नहीं पहुँच सका। हुआ यह कि मैं कामरेड कोतोव्स्की की घुड़सवार ब्रिगेड में भरती हो गया। मैं समझता हूँ, कामरेड कोतोव्स्की के बारे में तुमने जरूर सुना होगा क्योंकि वह अपनी बहादुरी के लिए बहुत मशहूर हैं। मैंने उनके जैसा आदमी पहले कभी नहीं देखा। अपने कमाण्डर के लिए मेरे मन में बहुत श्रद्धा है। क्या माँ घर लौट आईं? अगर लौट आईं हों तो उन्हें मेरा प्यार देना। मैंने तुम्हें जो भी तकलीफ़ दी हो उसके लिए मुझे माफ़ करना। तुम्हारा भाई, पावेल।

"आर्तेम, जरा जंगल के वार्डन के यहाँ चले जाना और वहाँ लोगों को इस खत के बारे में बतला देना।"

पावेल की चिट्ठी सुन कर मारिया याकोवलेवना बहुत रोई। कैसा पागल लड़का है, उसने अपने अस्पताल का पता भी नहीं दिया।

सर्गेई अब स्टेशन की उस हरी रेलवे कोच में अक्सर आया-जाया करता था जिस पर लिखा था : "राजनीतिक विभाग का प्रचार दफ़्तर।" इसी आन्दोलन और प्रचार वाली गाड़ी के एक डब्बे में उस्तिनोविच और इग्नातियेवा का दफ़्तर था। सर्गेई को देख कर इग्नातियेवा, जिसके मुँह में सदा सिगरेट लगी रहती थी, इस अन्दाज से मुस्कराती थी कि मुझे सब कुछ मालूम है।

कोमसोमोल जिला कमेटी का मन्त्री सर्गेई इधर रिता उस्तिनोविच का बड़ा दोस्त हो गया था और जब वह वहाँ से लौटता तो किताबों और अखबारों के बण्डल के अलावा एक अव्यक्त सुख की अनुभूति भी सदा अपने साथ ले आता था।

हर रोज राजनीतिक विभाग के ओपेन एयर थिएटर को देखने बहुत से मजदूर और लाल सैनिक आया करते थे। बारहवीं सेना की प्रचार-वैन रंग-बिरंगे

पोस्टरों से ढँकी साइडिंग में खड़ी रहती थी और उसमें चौबीसों घण्टे जोर-शोर से काम होता रहता था। उसके अन्दर एक छोटा-सा प्रेस भी लगा दिया गया था और अखबार, पर्चे, घोषणाएँ बराबर छप कर वहाँ से निकलती रहती थीं। मोर्चा क़रीब ही था।

एक शाम संयोग से सर्गेई भी थिएटर में पहुँच गया और वहाँ उसने रिता को लाल सैनिकों की एक टोली के साथ पाया। उसी रात जब वह उसे पहुँचाने के लिए स्टेशन जा रहा था—वहीं राजनीतिक विभाग के कर्मचारियों को रहने के लिए जगह दी गई थी—तो उसने कह डाला : "कामरेड रिता, ऐसा क्यों है कि मुझे हमेशा तुमसे मिलने की चाह रहती है ?" फिर बोला, "कितना अच्छा लगता है तुम्हारे साथ रहना ! तुमसे मिलने के बाद मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि मैं बिना थके हुए काम करता रह सकता हूँ।"

रिता रुक गयी। "देखो कामरेड ब्रुजाक," उसने कहा, "अभी इसी वक्त हमें यह बात तय कर लेनी चाहिए कि फिर कभी तुम ऐसी शायरी की बातें मुझसे न करोगे। मुझे यह पसन्द नहीं है।"

सर्गेई शर्म के मारे उसी तरह लाल हो आया जैसे स्कूल का लड़का डाट खाने पर।

"मेरा कोई बुरा मतलब नहीं था," उसने कहा, "मैंने सोचा था कि हम लोग दोस्त तो हैं ही....मैंने कोई क्रान्ति-विरोधी बात तो नहीं कही थी ! या कही थी ? अच्छा कामरेड उस्तिनोविच, अब मैं एक भी शब्द और न कहूँगा !"

उसने जल्दी-जल्दी उससे हाथ मिलाया और लगभग दौड़ता हुआ शहर को लौटा।

सर्गेई कई दिन तक स्टेशन के पास भी नहीं फटका। इग्नातियेवा ने उससे वहाँ आने के लिए कहा तो वह यह कह कर टाल गया कि काम बहुत है, फुरसत नहीं मिलती और सच बात यह है कि उसे था भी बहुत काम।

एक रात जब शूदिक एक ऐसी सड़क से घर आ रहा था जिसमें ज़्यादातर शकर के कारखाने में मैनेजरी करने वाले पोल रहा करते थे, तो उस पर गोली चलाई गई। उसके बाद जो तलाशियाँ हुईं उनमें बहुत सी बन्दूकें और 'स्त्रेलेत्स' नाम के एक पिल्सुडस्की संगठन के कागजात मिले।

इन्क़लाबी कमेटी में एक सम्मेलन बुलाया गया। उस्तिनोविच, जो वहाँ मौजूद थी, सर्गेई को एक तरफ़ ले गई और शान्त गम्भीर स्वर में बोली, "लगता

है तुम्हारे अहम् को ठेस लगी है, है न ? तुम्हारी इन व्यक्तिगत चीज़ों से काम को तो नुकसान नहीं पहुँच रहा है ? नहीं कामरेड, इससे काम नहीं चलेगा।"

इसके बाद सर्गेई ने फिर से स्टेशन पर जाना शुरू कर दिया।

वह एक जिला सम्मेलन में शरीक हुआ और दो दिन तक जारी गरमा गरम बहसों में उसने हिस्सा लिया। तीसरे रोज़ सम्मेलन के अन्य प्रतिनिधियों के साथ-साथ वह भी नदी पार के जंगल में गया और ज़ारूदनी के डाकुओं से लड़ते एक दिन और एक रात बिताई। यह लुटेरों का सरदार ज़ारूदनी पहले पेतल्युर का एक अफ़सर था।

लौटने पर वह इग्नातियेवा से मिलने के लिए गया और उस्तिनोविच को भी वहाँ बैठे पाया। बाद में वह उसे घर पहुँचाने के लिए स्टेशन तक गया और विदा होते समय उसके हाथों को ज़ोर से अपने हाथों में ले लिया। उस्तिनोविच ने गुस्से से अपना हाथ छुड़ा लिया। उसके बाद फिर कई रोज़ तक सर्गेई प्रचार की गाड़ी में नहीं गया और काम होने पर भी रिता से मुलाक़ात टालता रहा। और जब रिता उससे पूछती कि ऐसा क्यों है तो वह बेरुखी से जवाब देता : "आपसे बात करने से फ़ायदा ? आपसे कोई क्या कहे ? आप मुझ पर यही अभियोग लगायेंगी कि मैं व्यक्तिवादी हूँ या मज़दूर वर्ग के साथ विश्वासघात कर रहा हूँ या इसी तरह की और कोई बात।"

.

काकेशस की लाल झण्डा डिवीज़न को लेकर आई रेलगाड़ी स्टेशन पर रुकी। तीन स्याहफाम कमाण्डर इन्क़लाबी कमेटी में आये। उनमें से एक लम्बा छरहरा आदमी था जो नक्काशी की हुई चाँदी की पेटी लगाये हुए था। वह सीधे दोलिनिक के पास गया और ऐसे स्वर में अपनी माँग रखी कि जैसे वह इनकार की बात भी सुनने के लिए तैयार न हो। बोला, "बहस की ज़रूरत हीं। मुझे फ़ौरन सौ गाड़ी सूखी घास चाहिए। मेरे घोड़े मर रहे हैं।"

लिहाज़ा सर्गेई को दो लाल सैनिकों के साथ सूखी घास बरामद करने के लिए जाना पड़ा। एक गाँव में कुलकों के एक गिरोह ने उन पर हमला किया। लाल सेना के लोगों के हथियार छीन लिये गये और उन्हें बहुत बेरहमी से पीटा गया। छोटा होने के कारण सर्गेई को कम मार पड़ी। गरीब किसानों की कमेटी ने उनको गाड़ी पर लाद कर शहर पहुँचाया।

फिर एक सशस्त्र टुकड़ी उसी गाँव में भेजी गई और अगले रोज़ सूखी घास आ गई।

उसके घर वालों को कोई घबराहट या परेशानी न हो, इस ख़याल से सर्गेई अपनी चोट ठीक होने तक इग्नातियेवा के यहाँ ठहरा रहा। रिता उस्तिनोविच वहाँ उससे मिलने के लिए आई और पहली बार उसने ऐसे प्यार से सर्गेई का हाथ दबाया जिसकी वह हिम्मत भी नहीं कर सकता था।

एक दिन तीसरे पहर जब खासी गरमी पड़ रही थी, सर्गेई रिता से मिलने के लिए प्रचार की गाड़ी में गया। उसने रिता को पावेल का ख़त सुनाया और उसे अपने दोस्त के बारे में कुछ बातें बतलाईं। डब्बे में से बाहर आते हुए उसने गर्दन मोड़ कर कहा, "मैं जंगल में जाकर झील में नहाने की सोच रहा हूँ।"

रिता ने अपने काम पर से आँख उठाते हुए कहा, "मेरे लिए रुको। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।"

झील दर्पण की तरह चिकनी और शान्त थी। उसके साफ़ नीले पानी में एक ऐसी ताज़गी थी जो दावत सी देती जान पड़ती थी।

रिता ने उससे आदेश के स्वर में कहा, "वहाँ सड़क पर मेरा इन्तज़ार करो। अब मैं नहाऊँगी।"

सर्गेई पुल के पास एक बड़े पत्थर पर बैठ गया और सूरज की तरफ़ उसने मुह उठाया। उसको पीछे से पानी में छप-छप की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी।

तभी उसने दरख़्तों के बीच से तोनिया तुमानोवा और चुज़ानिन को हाथ में हाथ डाले सड़क पर आते देखा! चुज़ानिन प्रचार की गाड़ी का फ़ौजी कमिसार था। अपनी अच्छी सिली हुई अफ़सर की वर्दी में जिसमें बड़ी खूबसूरत चमड़े की पेटी और न जाने कितने फीते लगे हुए थे और चरमर करते हुए अपने क़ोम के जूतों में चुज़ानिन बड़ा बाँका जवान मालूम हो रहा था। वह तोनिया के साथ बातचीत में डूबा हुआ था।

सर्गेई ने तोनिया को पहचान लिया। वही पावेल का ख़त उसके पास ले गयी थी। पास आने पर तोनिया ने भी सर्गेई को ग़ौर से देखा। वह भी उसे पहचानने की कोशिश कर रही थी। वे दोनों बराबर पर आ गये तो सर्गेई ने अपनी जेब में से पावेल का आखिरी ख़त निकाला और तोनिया की तरफ़ आगे बढ़ा।

"एक मिनट, कामरेड। यह मेरे पास एक ख़त है जिसका कुछ सम्बन्ध आप से भी है।"

अपना हाथ छुड़ाते हुए तोनिया ने वह ख़त लिया। उसे पढ़ते वक़्त कागज़ का वह टुकड़ा उसके हाथ में थोड़ा सा काँपा।

सर्गेई को ख़त वापिस देते हुए तोनिया ने पूछा, " आपके पास पावेल की और भी कोई ख़बर है ?"

सर्गेई ने कहा, " नहीं ।"

उसी वक़्त रिता के पैरों तले कंकड़ों के दबने की आवाज़ सुनाई दी और चुज़ानिन ने, जिसे रिता की उपस्थिति का कोई भान नहीं था, झुक कर धीरे से तोनिया के कान में कहा, " हम लोगों को यहाँ से चले जाना चाहिए ।"

मगर रिता की मखौल उड़ाती हुई, थोड़ी नफ़रत मिली आवाज़ ने उसको रोका :

" कामरेड चुज़ानिन ! आज सारे दिन लोग आपको गाड़ी में तलाश करते रह गये !"

चुज़ानिन ने चिढ़ कर उसे देखा और बदमिज़ाजी से जवाब दिया, " कोई बात नहीं, मेरे बिना भी वे लोग अपना काम चला लेंगे ।"

रिता ने तोनिया और फ़ौजी कमिसार को जाते हुए देखा ।

खुशकी से उसने कहा, " जितनी जल्दी इस बेमसरफ़ आदमी को यहाँ से भगाया जाय उतना ही अच्छा !"

हवा ओक की डालों को हिला रही थी और जंगल में मरमर की आवाज़ गूँज रही थी । झील से हवा के पंखों पर चढ़ कर बड़ी प्यारी ताज़गी आ रही थी । सर्गेई ने पानी में घुसने की सोची ।

जब वह तैर कर लौटा तो उसने सड़क के पास एक पेड़ के तने पर रिता को बैठे पाया । वे दोनों बात करते हुए घने जंगल में घूमने चले गये । जंगल के बीच एक खुले मैदान में, जहाँ ऊँची-ऊँची घनी घास उगी थी, वे आराम करने के लिए रुके । जंगल में बड़ी शान्ति थी । ओक के दरख़्त आपस में सरगोशियाँ कर रहे थे । रिता नर्म घास पर लेट गई और अपने हाथ बाँध कर सिर के नीचे रख लिये । पुराने टाँके-लगे जूतों में उसकी खूबसूरत टाँगें ऊँची-ऊँची घास में छिपी हुई थीं ।

सर्गेई की आँखें इत्तफ़ाक से उसके पैरों पर पड़ीं । उसने उसके सफ़ाई से मरम्मत किये हुए जूते को देखा और फिर अपने जूते को देखा जिसके सूराख में से उसका अँगूठा झाँक रहा था । वह हँस पड़ा ।

" क्यों, किस चीज़ पर हँस रहे हो ?" रिता ने पूछा ।

सर्गेई ने अपने जूते की तरफ़ इशारा किया और कहा, " ऐसे जूतों में भला हम कैसे लड़ेंगे ?"

रिता ने कोई जवाब नहीं दिया । [वह दूब का एक छोटा सा टुकड़ा मुँह में डाले चबा रही थी और स्पष्ट ही उसके विचार कहीं और दौड़ रहे थे ।

आखिरकार उसने कहा, "चुजानिन बहुत जलील पार्टी मेम्बर है, दो कौड़ी का। हमारे दूसरे राजनीतिक कार्यकर्ता तो चीथड़े पहने घूमते हैं, मगर इसको बस अपनी फ़िक्र रहती है। सही बात यह है कि पार्टी में उसके लिए जगह नहीं है....। जहाँ तक मोर्चे की बात है, वहाँ हालत सचमुच बहुत संगीन है। हमारे देश को अभी बहुत लम्बी और कठिन लड़ाई लड़नी है।" वह रुकी और फिर बोली, "हमें शब्दों से भी लड़ना होगा और राइफिलों से भी, सर्गेई। तुमने केन्द्रीय समिति के फ़ैसले के बारे में सुना है कि कोमसोमोल के एक-चौथाई सदस्यों को फ़ौज में भरती कर लिया जाय? सर्गेई, अगर तुम मुझसे पूछो तो मेरा खयाल है कि अब हमें और ज़्यादा दिन यहाँ नहीं रहना है।"

उसकी बात सुनते हुए सर्गेई ने कुछ आश्चर्य के साथ यह लक्ष्य किया कि रिता की आवाज़ में आज कोई नया ही सुर है। रिता की काली-काली, पानी की तरह साफ़ आँखें उसको देख रही थीं और उसके मन में आया कि वह बेखटके उससे कह दे कि उसकी आँखें दर्पण की तरह हैं। मगर उसने अपने-आप को रोक लिया।

रिता ने कोहनी के बल टिकते हुए कहा, "तुम्हारा पिस्तौल कहाँ है?"

सर्गेई ने बड़े दुःख से अपनी पेटी पर उँगली दौड़ाई और कहा, "उन कुलकों ने छीन लिया।"

रिता ने अपनी ट्यूनिक की जेब में हाथ डाला और एक चमचमाता हुआ ऑटोमैटिक पिस्तौल निकाला।

"उस ओक को देख रहे हो, सर्गेई?" कहते हुए उसने पिस्तौल की नली से एक बहुत पुराने पेड़ के तने की ओर इशारा किया जो कि वहाँ से लगभग पच्चीस क़दम पर था। फिर आँख की सीध में पिस्तौल को ले आकर उसने ग़ौर निशाना साधे गोली दाग दी। गोली तने में लगी और छिलके ज़मीन पर बरस गये।

"देखा?" अपने-आप पर बहुत मगन होते हुए उसने कहा। उसने दुबारा गोली दागी और फिर वही हुआ—पेड़ के छिलके घास पर बरस गये।

"यह लो," उसने व्यंगपूर्ण ढंग से मुस्कराते हुए पिस्तौल सर्गेई को पकड़ाया और कहा, "अब तुम्हारा निशाना देखें।"

तीन निशानों में से सर्गेई का एक निशाना चूका। रिता शाबाशी देने के अन्दाज़ में मुस्कराई और बोली, "मैं तो सोचती थी कि तुमसे इतना भी नहीं बनेगा।"

उसने पिस्तौल को नीचे रख दिया और फिर घास पर लेट गई। उसकी ट्यूनिक तनने से उसकी कसी हुई छाती का उभार दिखलाई दे रहा था।

"सर्गेई," उसने धीमे से कहा, "यहाँ आओ!"

सर्गेई और पास खिसक गया।

"आसमान को देखो। देखो, कैसा नीला है। तुम्हारी आँखें भी इसी रंग की हैं। और यह ठीक नहीं। उन्हें भूरा होना चाहिए, फौलाद की तरह। नीला रंग बहुत कोमल होता है।"

एकाएक उसने सर्गेई के सुनहले बालों वाले सिर को अपनी बाँहों में भरा और उसके ओंठों पर अपने ओंठ रख दिये।

दो महीने गुज़र गये। पतझड़ के दिन आ गये।

पेड़ों को अपनी काली चादर में छिपाती हुई रात दबे पैरों से आई। डिवीज़न हेडक्वार्टर्स का तार बाबू अपने टिक्-टिक् टिक्-टिक् करते हुए यन्त्र पर झुका हुआ था और कागज़ के लम्बे पतले फीते साँप की तरह उसकी उंगलियों के इर्द-गिर्द लिपटते जा रहे थे और वह जल्दी-जल्दी उनके डाटों और डैशों को रूपान्तरित करके शब्दों और वाक्यांशों में बदलता जा रहा था :

"चीफ़ आफ स्टाफ़, पहली डिवीज़न। नकल शेपेतोवका इन्क़लाबी कमेटी के चेयरमैन को। इस तार को पाने के दस घण्टे के अन्दर-अन्दर सारे सरकारी दफ़्तर शहर से हटा दो। शहर में एक बटालियन न० रेजिमेण्ट के कमाण्डर के चार्ज में छोड़ दो। वही इस मोर्चे के कमाण्डर हैं। डिवीज़न हेडक्वार्टर्स राजनीतिक विभाग, सारी फ़ौजी संस्थाएँ बरान्चेव स्टेशन में ले जाओ। डिवीज़न कमाण्डर को रिपोर्ट करो कि हुक्म पूरा किया गया।

"(दस्तखत)"

दस मिनट बाद एक मोटर साइकिल शहर की सोती हुई सड़कों पर दौड़ती जा रही थी। उसकी हेडलाइट अंधेरे को चीर रही थी। मोटर साइकिल इन्क़लाबी कमेटी के फाटक के सामने रुकी। उसका सवार जल्दी से अन्दर गया और उसने यह तार चेयरमैन दोलिनिक के हाथ में दिया। फ़ौरन उस जगह हल-चल शुरू हो गई। स्पेशल ड्यूटी की कम्पनी को क़तार में खड़ा किया गया। एक घण्टे बाद इन्क़लाबी कमेटी के माल-असबाब से लदी हुई गाड़ियाँ शहर के बीच होकर पोडोल्स्क स्टेशन की ओर चलीं। वहाँ इस सारे माल-असबाब को रेल के डब्बों में लादा गया।

तार में लिखी बातों का सर्गेई को पता चला तो वह मोटर साइकिल वाले के पीछे भागा।

"कामरेड, तुम मुझे स्टेशन तक पहुँचा दोगे?" उसने सवार से पूछा।

"कूद कर पीछे चढ़ जाओ, मगर जरा जोर से पकड़े रहना।"

प्रचार का डब्बा गाड़ी में लगाया जा चुका था। उससे दस-बारह क़दम पर ही सर्गेई ने रिता को देखा। उसने रिता के कन्धों को पकड़ लिया और इस बात को समझते हुए कि अभी जरा ही देर में वह चीज़, जो उसके लिए इतनी अनमोल थी और जिसे वह इतना प्यार करने लगा था, बिछुड़ जायगी, उसने धीरे से कहा, "अलविदा रिता, मेरी प्यारी कामरेड! हम लोग फिर कभी मिलेंगे। मुझको भूलना मत।"

उसे इस बात से बड़ी घबराहट हुई कि आँसुओं से उसका गला रुँधा जा रहा है। उसे फ़ौरन यहाँ से चले जाना चाहिए। उसे अपने पर भरोसा न था कि अगर बोला तो न जाने क्या बक दे, इसलिए उसने रिता के हाथ को इतने जोर से दबाया कि रिता का हाथ दर्द करने लगा।

सबेरा हुआ तो शहर और स्टेशन वीरान और उजड़े हुए थे। आखिरी गाड़ी जैसे अपनी सीटी से अलविदा कहती हुई स्टेशन के बाहर जा चुकी थी और अब सिर्फ़ पीछे छोड़ दी गई बटालियन रेलवे लाइन के दोनों तरफ़ मुस्तैद खड़ी थी।

पेड़ों से पीली-पीली पत्तियाँ झड़ कर नीचे आ रही थीं और शाखें नंगी हो रही थीं। हवा गिरती हुई पत्तियों को पकड़ लेती थी और अपने साथ उड़ा ले जाती थी।

सर्गेई लाल सेना का बरानकोट पहने कारतूसों की किरमिच की बनी पेटी कन्धे पर लटकाये लाल सेना के बारह सिपाहियों के साथ शकर के कारखाने के सामने वाले चौराहे पर तैनात था। पोल लोग क़रीब थे।

आवतोनम पैत्रोविच ने अपने पड़ोसी जेरासिम लियोनतियौविच के दरवाजे पर दस्तक दी। जेरासिम ने अभी कपड़े नहीं पहने थे लिहाजा उसने दरवाजे में से सिर निकाल कर पूछा:

"क्या बात है?"

आवतोनम पैत्रोविच ने सड़क पर जाते हुए लाल सेना के लोगों की ओर इशारा किया और आँख मार कर कहा, "ये लोग भाग रहे हैं।"

जेरासिम लियोनतियौविच ने चिन्तित मुद्रा से उसकी ओर देखा और बोला, "तुम्हें मालूम है पोलों का कैसा चिह्न है?"

"मेरा खयाल है उनका चिह्न वही एक सिर वाला ईगल है।"

"कहाँ मिलेगा?"

आवतोनम पैत्रोविच ने परेशानी से अपना सिर खुजलाया और दो-एक पल विचार करने के बाद कहा, "उनके लिए तो यह सब ठीक है, बस उठे और चल दिये। मगर मुसीबत तो हम लोगों की होती है जिन्हें नये मालिकान के साथ मेल बैठाना पड़ता है।"

एक मशीनगन की आवाज़ ने खामोशी को भंग कर दिया। अचानक स्टेशन से एक इंजन की सीटी सुनाई दी और उसके ठीक बाद वहीं से तोप दगने की आवाज़ आई। एक भारी बमगोला ज़ोर से सूँ करता हुआ हवा में उड़ा और कारखाने के उस पार सड़क पर गिरा जिससे सड़क के आस-पास की झाड़ियाँ नीले धुएँ के बादल में ढँक गईं। पीछे हटते हुए लाल सैनिक एकदम चुपचाप और गम्भीर, किसी कठोर संकल्प की मूर्ति बने, सड़क पर मार्च करते चले जा रहे थे और रह-रह कर पीछे मुड़ कर देखते जाते थे।

सर्गेई की आँख से गिरा आँसू बर्फ जैसी सर्द राह बनाता उसके गाल पर से लुढ़क कर नीचे आ रहा था। उसने जल्दी से उसे पोंछ डाला और चोरी-चोरी अपने साथियों की ओर देखा, कहीं किसी ने देख तो नहीं लिया। सर्गेई के बगल मे लकड़ी के कारखाने का एक दुबला-पतला मज़दूर आन्तेक क्लोपोतोव्स्की चल रहा था। उसकी उंगली अपनी राइफिल के घोड़े पर ठहरी हुई थी। आन्तेक उदास और अपने-आप में खोया हुआ था। उसकी आँखें सर्गेई की आँखों से मिलीं तो उसने उन विचारों को जो उसे सता रहे थे सर्गेई के साथ बाँटा।

"वे लोग हमारे घर वालों की बड़ी मुसीबत करेंगे, खास कर मेरे क्योंकि हम लोग पोल हैं। वे कहेंगे, तुम पोल होकर पोलिश लीजन का विरोध कर रहे हो! मुझे तो इस में ज़रा भी शक नहीं कि मेरे तुटुंबे बाप को ठोकर मार कर वे लोग कारखाने से निकाल देंगे और कोड़े भी लगायेंगे। मैंने उनसे कहा कि चलिए हमारे साथ चले चलिए, मगर घर वालों को छोड़ने को उनका जी न हुआ। जहन्नुम में जायें हरामज़ादे, मैं तो बेताब हो रहा हूँ कि कितनी जल्दी उनको पाऊँ!" कहते हुए आन्तेक ने अपने टोप को जो उसकी आँखों पर झुक आया था, गुस्से से पीछे सरकाया।

…अलविदा मेरे प्यारे शहर, तुम जो अपनी सारी बदसूरती और गन्दगी के बाद, अपने बदसूरत छोटे-छोटे घरों और टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों के बाद भी

हमें इतने प्यारे लगते हो। विदा, मेरे प्यारो विदा। विदा वालिया और मेरे साथियो, जो गुप्त रूप से काम करने के लिए रुक रहे हो। बेरहम, क्रूर, विदेशी पोलिश ह्वाइट गार्ड दस्ते पास आ रहे हैं।

रेलवे मज़दूरों ने, जो अपनी तेल के धब्बे लगी कमीजें पहने हुए थे, उदास आँखों से लाल फ़ौज के सैनिकों को जाते हुए देखा।

सर्गेई ने दुखते हुए दिल से चिल्ला कर कहा, "हम लोग लौट कर आयेंगे साथियो!"

आठवाँ अध्याय

धुंधलके में ढँकी हुई नदी की कान्ति दब गई है और वह बहती चली जा रही है। किनारों के चिकने कंकड़ों से उसका पानी टकरा रहा है और मद्धिम सी, कोमल सी आवाज़ पैदा हो रही है। किनारों पर उथला पानी शान्त है, उसकी रुपहली सतह पर कहीं कोई लहर नहीं है, मगर वहाँ मझधार में नदी का रंग स्याह है और पानी बेचैन। अपनी उसी बेचैनी में वह तेज़ी से बहता जा रहा है। किसी सम्राज्ञी का सा सौन्दर्य है इस नदी का—जिसे गोगोल ने अमर बना दिया है! नदी की दाहिनी तरफ़ एकदम सीधी कगार है जो आकर सीधे पानी में गिरती है, जैसे किसी आगे बढ़ते हुए पहाड़ को पानी की भीम धारा ने आकर रोक दिया हो। नीचे बाईं तरफ़ का किनारा सपाट है और वह जगह रेत के धुस्सों से घिरी हुई है। बसन्त के दिनों में बाढ़ आई थी; उसका पानी जब लौटा तो रेत के ये छोटे-छोटे टीले छोड़ता गया।

चपटी-सी थूथन वाली मैक्सिम तोप नदी के किनारे एक छोटी सी खाई में रखी हुई थी और पाँच आदमी उसके पास लेटे हुए थे। यह सातवीं राइफिल डिवीजन की एक अगली चौकी थी। तोप के सबसे पास, नदी के ठीक सामने, सर्गेई ब्रुज़ाक लेटा हुआ था।

परसों लड़ाई से थक कर और पोलिश तोपों की तूफ़ानी मार से पीछे ढकेले जाकर उन्होंने कीव छोड़ दिया था, वे पीछे हट कर नदी के बायें किनारे पर आ गये थे और वहीं उन्होंने अपने पैर जमा लिये थे।

पीछे हटना, जान का इतना नुक़सान और फिर कीव का दुश्मन के हाथ में चले जाना, इन सारी चीज़ों से सैनिकों को बड़ा गहरा धक्का लगा था। सातवीं

डिवीज़न दुश्मन के घेरे में पड़ जाने पर भी बड़ी वीरता से लड़ती हुई दुश्मन की पाँतों को चीर कर बाहर निकल आई थी और मालिन स्टेशन की रेलवे लाइन पर पहुँच गई थी। और उसने बड़ा तेज़ हमला करके पोलिश फ़ौजों को पीछे ढकेल दिया था और कीव का रास्ता साफ़ कर दिया था।

मगर उनको वह प्यारा शहर छोड़ना पड़ा था और इसका लाल सेना के सैनिकों को बड़ा दुख था।

लाल टुकड़ियों को दारनित्सा से बाहर खदेड़ कर पोल फ़ौजें अब रेल के पुल के बगल में नदी के बायें किनारे पर एक छोटी-सी पुलिया पर मोर्चा जमा कर बैठ गई थीं। मगर इधर के तेज़ जवाबी हमलों ने उस जगह से आगे बढ़ने की उनकी सारी कोशिशों को नाकाम कर दिया था।

नदी को बहते हुए देख कर कैसे मुमकिन था कि सर्गेई को अभी पिछले रोज़ की बात याद न आती।

कल दोपहर उसकी टुकड़ी ने सख़्त जवाबी हमले से पोलों का सामना किया था; कल दुश्मन से पहली बार उसका गुत्थमगुत्था हुआ था। बिना दाढ़ी का एक पोलिश सिपाही अपनी राइफिल और उसमें लगी हुई लम्बी नुकीली तलवार जैसी फ्रेंच संगीन लगा कर सर्गेई के ऊपर झपटा था। वह न जाने क्या चिल्लाता हुआ खरगोश की तरह सर्गेई पर लपका। क्षण भर को सर्गेई ने अपनी आँखों को बेपनाह गुस्से से फैलते देखा। दूसरे क्षण सर्गेई की संगीन उस पोल की संगीन से बजी और वह चमकती हुई फ्रेंच संगीन एक ओर को हट गई। पोल गिर पड़ा···।

सर्गेई का हाथ नहीं काँपा। वह जानता था कि उसे मारते जाना होगा,—उसे, सर्गेई को, जिसमें इतने गहरे प्यार का माद्दा था, इतनी पक्की दोस्ती का माद्दा था। वह स्वभाव से दुष्ट या क्रूर नहीं था। मगर वह जानता था कि उसे इन भटके हुए सिपाहियों से लड़ना ही होगा जिन्हें दुनिया भर की जोंकों ने उनके अन्दर हैवानी नफ़रत का जोश भर कर उसकी मातृभूमि पर हमला करने के लिए भेजा था। और वह, सर्गेई, क़त्ल करेगा ताकि वह दिन क़रीब आये जब आदमी आदमी का क़त्ल नहीं करेगा।

पारामनोव ने उसके कन्धे को थपकी दी और कहा, "सर्गेई, तुमको अब यहाँ से चलना चाहिए वर्ना वे लोग देख लेंगे।"

पावेल कोर्चागिन को अपने देश भर में चक्कर लगाते अब एक साल हो

गया था। कभी वह मशीनगन की गाड़ियों पर या तोप की गोला-बारूद की गाड़ियों पर सवार होता या कभी एक छोटी-सी घोड़ी पर जिसके कान पर एक निशान था। अब वह एक जवान आदमी था, जिसे तकलीफ़ों और परेशानियों ने अपनी आग में तपा कर सख़्त और पक्का बना दिया था। कारतूस की भारी पेटी की वजह से उसकी मुलायम खाल कभी छिल गई थी, पर उसका घाव कब का भर चुका था और राइफिल के पट्टे के नीचे उसके कन्धे पर का चमड़ा सख़्त हो गया था।

पावेल ने उस साल बहुत सी भयानक चीज़ें देखी थीं। अपने ही जैसे दूसरे हज़ारों सैनिकों के साथ, जो सब उसी की तरह रद्दी-सद्दी कपड़े पहने हुए थे, मगर जिन सब में अपने वर्ग की सत्ता क़ायम करने के लिए लड़ने का अजेय संकल्प था, वह अपनी मातृभूमि पर उत्तर-दक्खिन-पूरब-पच्छिम सभी ओर गया था। और इस दौरान में सिर्फ़ दो बार वह तूफ़ान के साथ नहीं रहा था—एक तो तब, जब उसके कूल्हे में चोट लगी थी और दूसरी बार तब जब सन् १६२० की कड़कड़ाती सर्दी में फ़रवरी के महीने में वह टाइफस बुख़ार की चुभती गरमी से परेशान पड़ा था।

बारहवीं फ़ौज की रेजिमेंटों और डिवीजनों का संहार पोलिश मशीनगनों से कहीं ज़्यादा टाइफस ने किया। तब तक बारहवीं फ़ौज बहुत बड़े इलाक़े में, लगभग पूरे उत्तरी उक्रेन में, काम करने लगी थी और पोलों को आगे बढ़ने से रोके हुए थी।

पावेल अपनी बीमारी से बिल्कुल ठीक भी नहीं हुआ था कि वह अपनी टुकड़ी में लौट आया। उसकी टुकड़ी उस वक़्त कज़ातिन-उमान ब्रांच लाइन के फ्रोन्तोवका स्टेशन में अपने पैर जमाये हुए थी। फ्रोन्तोवका जंगल में था। वहाँ सिर्फ़ एक छोटी-सी स्टेशन की इमारत थी और उसके आस-पास कुछ टूटी-फूटी और उजड़ी हुई झोंपड़ियाँ थीं। तीन साल के अनवरत संग्राम के कारण इस इलाक़े में नागरिक ज़िन्दगी असम्भव हो गई थी। कई बार फ्रोन्तोवका एक से दूसरे हाथ में आया और गया।

फिर से कुछ बड़ी घटनाओं की तैयारी हो रही थी। बारहवीं फ़ौज के बहुत से आदमी मारे गये थे और वह कमोबेश असंगठित हो गई थी। जिस वक़्त वह पोलिश फ़ौजों के दबाव के कारण पीछे हट कर कीव पहुँच रही थी, तभी मेहनतकशों की सरकार विजय के मद से चूर पोलिश फ़ौजों पर करारा हमला करने के लिए अपनी सारी ताक़त जमा कर रही थी।

पहली घुड़सवार फ़ौज की लड़ाई की आग में तपी हुई डिवीज़नें उत्तरी काकेशस से उक्रेन भेजी जा रही थीं और वह एक ऐसी लड़ाई थी जिसकी मिसाल

फ़ौजी इतिहास में नहीं मिलती। एक के बाद एक चौथी, छठीं, ग्यारहवीं, और चौदहवीं घुड़सवार डिवीज़नें उमान के इलाक़े में पहुँच रही थीं। वे मोर्चे की पिछली पाँतों पर अपना सारा ज़ोर लगा रही थीं और निर्णायक लड़ाइयों के घटनास्थल के रास्ते में माखनो के लुटेरों का सफ़ाया करती जा रही थीं।

साढ़े सोलह हज़ार तलवारें, साढ़े सोलह हज़ार सैनिक जिन्हें स्तपी के जलते हुए सूरज ने तपाया और पकाया था।

इस वक़्त दक्खिन-पच्छिमी मोर्चे की कमान और लाल फ़ौज की सर्वोच्च कमान को सबसे ज़्यादा फ़िक्र इस बात की थी कि दुश्मन लाल फ़ौज के इस निर्णायक हमले को रोकने के लिए कुछ न कर सके। ये सारी घुड़सवार फ़ौजें कामयाबी के साथ एक जगह जमा हो जायें, इसी के लिए सब कुछ किया जा रहा था। उमान के इलाक़े में सक्रिय कार्रवाई रोक दी गई थी। मास्को से ख़ारकोव के मोर्चे के हेडक्वार्टर और वहाँ से चौदहवीं और बारहवीं फ़ौजों के हेडक्वार्टर के बीच की सीधी तार की लाइनें अनवरत काम कर रही थीं। तार के आपरेटर फ़ौजी कोड में दिये गये हुक्मनामे बराबर टपटपाते जा रहे थे: "पोलों का ध्यान घुड़सवार फ़ौज को इकट्ठा करने की हमारी कार्रवाई की तरफ़ से हटाओ।" दुश्मन से लड़ाई सिर्फ़ उसी वक़्त ली जाती जब यह ख़तरा होता कि पोलिश फ़ौजों के आगे बढ़ने से बुद्योनी की घुड़सवार डिवीज़नों के लिए ख़तरा पैदा हो जायगा।

कैम्प फ़ायर की आग की लाल-लाल लपटें निकल रही थीं। आग से धुएँ के घुंघराले बादल उठते और भन-भन करते हुए बेचैन कीड़ों की भीड़ें छँटतीं। सैनिक आग के इर्द-गिर्द अर्द्ध-गोलाकार लेटे हुए थे और आग की ताँबे जैसी छाया उनके चेहरों पर पड़ रही थी। हल्की नीली-भूरी राख पर रखे हुए मेस-टिनो में पानी बुदबुदा रहा था।

एकाएक एक जलते हुए कुन्दे के नीचे से लपट की एक अकेली जीभ निकली और उसने किसी के बिखरे हुए बालों वाले सिर को छुआ। उस आदमी ने झट से अपना सिर हटा लिया और गुर्राया: "धत्तेरे की! क्या मुसीबत है!" और आग के इर्द-गिर्द बैठे हुए लोगों की टोली ने कहकहा लगाया।

एक अधेड़ आदमी, जिसकी मूँछें छँटी हुई थीं और जो सर्ज का ट्यूनिक पहने हुए था, आग की रोशनी में अपनी राइफिल की नली का मुआइना कर रहा था। वह बोला:

"इस लड़के के दिमाग़ में किताबी ज्ञान इतना भरा हुआ है कि इसे आग को गरमी नहीं मालूम होती।"

" कुछ हमको भी तो बतलाओ कि क्या पढ़ रहे हो, *कोर्चागिन !*" किसी ने कहा।

नौजवान लाल सैनिक ने अपने जले हुए बालों पर उंगली फेरी और मुस्कराया।

" सचमुच बहुत अच्छी किताब है, कामरेड अन्द्रोश्चुक। कोशिश करके भी इसे छोड़ नहीं पाता।"

" काहे के बारे में है ?" कोर्चागिन के बग़ल में बैठे हुए एक चपटी नाक वाले लड़के ने पूछा जो जी-जान से अपने थैले के फीते की मरम्मत में लगा हुआ था। उसने दाँत से वह मोटा तागा कुतरा, बाक़ी को सुई के इर्द-गिर्द लपेट दिया और फिर उसे अपने हेलमेट में खोंस लिया। " भाई अगर इश्क के बारे में हो, तो मुझे ज़रूर बताना।"

लड़के की इस बात पर ज़ोर का कहकहा पड़ा। मातवेइचुक ने अपना छोटे-छोटे बालों वाला सिर उठाया और उस चपटी नाक वाले लड़के को शरारत से आँख मारी, " इश्क बड़ी अच्छी चीज़ होती है, सेरेदा," उसने कहा, " और तुम इतने खूबसूरत हो, तुमको देखना तो गोया किसी तसवीर को देखना है। जहाँ कहीं हम लोग जाते हैं तुम्हारे पीछे भागते-भागते लड़कियों के जूते घिस जाते हैं। कितनी बुरी बात है कि तुम्हारे जैसे खूबसूरत आदमी में सिर्फ़ एक नुक्स है कि नाक की जगह पाँच कोपेक का सिक्का लटका हुआ है। मगर इसका इलाज आसान है। रात को नाक से एक दस पाउंड का लोवित्स्की हथगोला लटका दो। सवेरे सब ठीक हो जायगा।"

इस मज़ाक पर जो ज़ोर का कहकहा पड़ा तो मशीनगन की गाड़ियों में जुते हुए घोड़े डर कर हिनहिनाने लगे।

सेरेदा ने बोलने वाले की ओर लापरवाही से देखा और कहा, " अजी, चेहरे से कुछ नहीं आता जाता, असल चीज तो दिमाग का गूदा है; " कहते हुए उसने इशारतन अपने माथे को ठकठकाया और कहा, " जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम्हारी ज़बान तो बड़ी तीखी है, मगर किसी भी तरह तुम गधे से अच्छे नहीं हो और तुम्हारे कान टण्डे हैं।"

इन दोनों को, जो एक दूसरे से गुथने ही वाले थे, डाँटते हुए सेक्शन कमांडर ततारिनोव ने कहा, " अरे क्यों झगड़ रहे हो तुम लोग ? इससे अच्छा यह है कि कोर्चागिन से कहो कि अगर सचमुच कुछ सुनने लायक चीज़ हो तो सुनाये।"

" बिलकुल ठीक है। शुरू करो, पावलुश्का।" सभी तरफ़ से लोगों ने आग्रह किया।

पावेल आग के कुछ और पास सरक आया और अपने घुटनों पर पड़ी हुई छोटी-सी मोटी किताब को खोला।

"इस किताब का नाम द गैड-फ्लाई है, साथियो। बटेलियन कमिसार ने मुझे दी है। मुझे तो इस किताब ने बाँध लिया है, साथियो। तुम लोग खामोशी से बैठो तो सुनाऊँ।"

"शुरू भी करो! और फिकर न करो, हम किसी को गड़बड़ न करने देंगे।"

कुछ देर बाद रेजिमेंट के कमांडर कामरेड पुज़ीरेव्स्की चुपके से अपने घोड़े पर सवार कैम्प फ़ायर के पास आये। उनके आने का किसी को कुछ पता ही न चला। उन्होंने देखा कि ग्यारह जोड़ा आँखें किताब पढ़ने वाले के चेहरे पर टिकी हुई हैं। उनके साथ कमिसार भी था। कमिसार की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा :

"ये देखो रेजिमेंट के आधे स्काउट हैं," और आग के गिर्द बैठे हुए उन लोगों की तरफ़ इशारा किया। "इनमें से चार नये-नये कोमसोमोल हैं, मगर सब के सब बहुत अच्छे सिपाही हैं। वह जो पढ़ रहा है उसका नाम कोर्चागिन है। और वह जो दूसरा है, जिसकी आँखें भेड़िये के बच्चे जैसी हैं, उसका नाम ज़ार्की है। वे दोनों दोस्त हैं, मगर चुपके-चुपके उनमें आपस में होड़ लगी रहती है। पहले कोर्चागिन मेरा सबसे अच्छा स्काउट था। लेकिन अब उसका एक तगड़ा प्रतिद्वन्दी पैदा हो गया है। इस वक़्त ये लोग जो काम कर रहे हैं, यह भी राजनीतिक काम है और बड़ा उपयोगी काम है। मैंने सुना है कि इन नौजवानों को 'यंग गार्ड' कहते हैं। मेरा खयाल है कि यह बहुत मुनासिब नाम है।"

कमिसार ने पूछा, "जो किताब पढ़ रहा है क्या वही राजनीतिक शिक्षक है?"

"नहीं। राजनीतिक शिक्षक तो कोमर है।" पुज़ीरेव्स्की ने अपने घोड़े को एड़ लगाई।

बाहर ही से वह बोला, "मुबारकबाद साथियो!"

सब लोगों के सिर कमांडर की ओर मुड़े जब वह घोड़े से उतर रहा था। उतर कर वह सीधे टोली के पास गया।

"आग ताप रहे हो दोस्तो, क्यों?" खूब मुस्कराते हुए उसने कहा। उस वक़्त उसकी छोटी-छोटी, कुछ-कुछ मंगोलों जैसी आँखों वाले मज़बूत चेहरे पर कठोरता नहीं थी। सिपाहियों ने दिल खोल कर अपने कमांडर का स्वागत किया, वैसे ही जैसे वे अपने किसी अच्छे दोस्त या साथी का करते। कमिसार अपने घोड़े से नहीं उतरा क्योंकि वह और आगे जाना चाहता था।

अपने पिस्तौल को पीछे सरकाते हुए पुज़ीरेव्स्की कोर्चागिन के बगल में बैठ गया।

"सिगरेट पी जाय तो कैसा रहे?" उसने कहा, "मेरे पास बहुत अच्छी तम्बाकू है।"

उसने एक सिगरेट बनाई, जलाई और कमिसार की ओर मुड़ कर बोला, "तुम जाओ दोरोनिन, मैं यहाँ कुछ देर रुकूँगा। हेडक्वार्टर में अगर मेरी जरूरत हो तो मुझे खबर कर देना।"

दोरोनिन के चले जाने पर पुज़ीरेव्स्की ने कोर्चागिन से कहा, "पढ़ो पढ़ो, मैं भी सुनूँगा।"

पावेल ने अन्त तक पढ़ा फिर किताब अपने घुटनों पर रख ली और आग की ओर देखते हुए किसी सोच में डूब गया। कुछ क्षणों तक कोई कुछ नहीं बोला। सभी लोग गैड-फ्लाई के दर्दनाक नसीब के बारे में सोच रहे थे। पुज़ीरेव्स्की बहस शुरू होने का इन्तजार करते हुए सिगरेट के कश खींचता रहा।

खामोशी को तोड़ते हुए सेरेदा ने कहा, "बड़ी भयानक और दिल हिला देने वाली कहानी है। इसका मतलब यह है कि दुनिया में इस तरह के लोग भी हैं। जो कुछ उसने बर्दाश्त किया उसे कम ही लोग बर्दाश्त कर सकते थे। लेकिन जब आदमी के पास कोई ऐसा विचार होता है जिसके लिए वह लड़े, तो उसमें सब कुछ सहने की ताक़त आ जाती है।" स्पष्ट ही सेरेदा पर किताब का बहुत असर पड़ा था, उसके चेहरे से यह बात जाहिर थी।

"अगर मैं कहीं उस हरामज़ादे पादरी को पा जाऊँ जिसने उसके गले के नीचे क्रास उतारने की कोशिश की थी," बेलाया सेरकोव के एक जूता बनाने वाले के अप्रेंटिस आन्द्रीयूशा फ़ोमीचेव ने बुलन्द आवाज में गुस्से से कहा, "तो वहीं उस सुअर को खतम कर दूँ!"

अन्द्रोश्चुक ने एक छड़ी से एक मेसटिन को आग के और पास ठेलते हुए दृढ़ विश्वास के स्वर में कहा, "आदमी को मरना बुरा नहीं मालूम होता, अगर उसके पास ऐसी कोई चीज है जिसके लिए वह मरे। उसी से आदमी को बल मिलता है। तुम बिना किसी दुख के मर सकते हो अगर तुम्हें मालूम हो कि तुम न्याय पर हो। वीर इसी तरह पैदा होते हैं। बहुत दिन हुए एक लड़का था जिसे मैं जानता था, उसका नाम पोराइका था। ओदेसा में जब ह्वाइटों ने उसे घेर लिया तो उसने अकेले एक पूरी प्लैटून का मुक़ाबला किया और इसके पहले कि वे लोग संगीनों से उसका काम तमाम कर देते, उसने एक दस्ती बम से अपना और उन सब

का काम तमाम कर दिया। और देखने सुनने में वह ऐसा कुछ खास न था। वैसा कुछ नहीं जैसे लोगों के बारे में तुम किताबों में पढ़ते हो, गो इसमें शक नहीं कि उसके बारे में लिखा जरूर जाना चाहिए। वह इस क़ाबिल है। हमारे बीच इस तरह के बहुत से लड़के मिलते हैं।"

उसने एक चम्मच से मेवटिन की चीज़ को हिलाया, चखा और फिर बोला :

"कुछ लोग कुत्ते की मौत मरते हैं, जिल्लत की मौत। इज़ियास्लाव की लड़ाई की एक घटना मैं तुमको बतलाता हूँ। इज़ियास्लाव, गोरिन नदी पर बसा एक पुराना शहर है जो राजों-राजकुमारों के वक़्त बना था। वहाँ पर एक पुराना पोलिश गिरिजाघर था, बिल्कुल क़िले की तरह बना हुआ। हाँ, तो हम लोग उस शहर में दाख़िल हुए और उसकी टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में एक-एक की कतार बनाये हुए आगे बढ़ने लगे। लेटों की एक कम्पनी हमारे दायें बाजू को बचा रही थी। हम लोग जब बड़ी सड़क पर पहुँचे तो हमने तीन ज़ीन कसे घोड़ों को एक मकान की बाड़ी से बँधे देखा। आ हा, हमने सोचा यहाँ पर कुछ पोल हाथ लगेंगे। हममें से करीब दस हाते के अन्दर दौड़े। सबसे आगे उस लेट कम्पनी का कमांडर अपना माउज़र लिये दौड़ा जा रहा था।

"सामने का दरवाज़ा खुला हुआ था। हम लोग दौड़ कर अन्दर पहुँचे। मगर, वहाँ पोलों के बदले हमें अपने ही आदमी मिले। वे घुड़सवार लोग थे। वे लोग हमसे पहले पहुँच गये थे। हम लोगों ने वहाँ जो कुछ देखा वह बहुत अच्छा दृश्य न था। वे लोग एक औरत के साथ बुरा काम कर रहे थे। यह औरत उस पोलिश अफ़सर की बीवी थी जो उस मकान में रहता था। लेट ने वहाँ जो दृश्य देखा तो अपनी ही भाषा में कुछ चिल्लाया। उसके आदमियों ने उन तीनों को जा पकड़ा और घसीटते हुए बाहर ले आये। उनमें सिर्फ़ हम दो ही रूसी थे, बाक़ी सब लेट थे। उनके कमांडर का नाम ब्रेडिस था। मैं उनकी ज़बान नहीं जानता लेकिन यह मैं समझ गया कि उसने उन तीनों को ख़त्म करने का हुक्म दे दिया। बड़े तगड़े लोग होते हैं ये लेट, तरस खाना नहीं जानते। वे उन तीनों को घसीट कर अस्तबल में ले आये। मेरे सामने उनका काम तमाम कर दिया गया। उनमें से एक, जो बड़ा ऊँचा, पूरा आदमी था और जिसका चेहरा देख कर उस पर ईंट मारने की इच्छा होती थी, बहुत हाथ पैर फटकार रहा था। वह चिल्ला रहा था—'सिर्फ एक औरत के पीछे तुम मुझे गोली मार दोगे!' दूसरे भी रहम की भीख माँग रहे थे।

"मेरे शरीर से ठण्डा पसीना छूटने लगा। मैं दौड़ कर ब्रेडिस के पास गया और बोला, 'कामरेड कम्पनी कमांडर, इन्हें फ़ौजी अदालत के सुपुर्द कर दीजिये। आप क्यों ख़ामख़ा इनके ख़ून से अपने हाथ रंगते हैं? अभी शहर में लड़ाई चल ही रही है और हम इन कुत्तों के साथ अपना वक़्त बर्बाद कर रहे हैं।" ब्रेडिस ने शेर की तरह चमकती हुई आँखों से मेरी तरफ़ घूरा। सच कहता हूँ उस वक़्त मुझको लगा कि मैंने क्यों ख़ामख़ा ऐसी बात कही। उसने अपनी बन्दूक मुझ पर तानी। मुझे लड़ते हुए सात साल हो गए, मगर यह मानने में मुझे शर्म नहीं कि उस वक़्त मैं सचमुच बहुत डर गया था। मैंने देखा कि यह तो पहले गोली मारेगा और सवाल बाद में करेगा। उसने अपनी टूटी-फूटी रूसी में चिल्ला कर कुछ कहा, जो अच्छी तरह मेरी समझ में नहीं आया। मगर शायद वह यही कहना चाहता था: 'हमारा झण्डा हमारे ही ख़ून से रंगा हुआ है। ये लोग सारी फ़ौज को ज़लील करते हैं। लुटेरेपन की सज़ा मौत है।'

"मैं अब और इस चीज़ को बर्दाश्त न कर सका और जितनी तेज़ी से हो सकता था हाते में से सड़क की ओर भागा और मैंने अपने पीछे गोली चलने की आवाज़ सुनी। मैं समझ गया कि उन तीनों का काम तमाम हो गया। जब तक हम लोग लौट कर बाक़ी लोगों से मिले, शहर हमारे क़ब्ज़े में आ चुका था।

"कुत्ते की मौत से मेरा मतलब उसी मौत से है जो उन तीनों को मिली। वे लोग उन्हीं में से थे जो मेलितोपोल में आकर हमसे मिले थे। एक ज़माने में वे माख़नो के साथ रह चुके थे। लुच्चे-लफ़ंगे थे वे।"

अन्द्रोश्चुक ने अपना मेसटिन उठा कर अपनी बग़ल में रख लिया और रोटी की पोटली खोलने लगा।

"कभी-कभी ऐसे लोग हम लोगों को अपने बीच भी मिल जाते हैं। सबके बारे में तो पक्की तरह कोई बात कही नहीं जा सकती। देखने में सभी इन्क़लाब के हामी मालूम होते हैं। और ऐसे ही लोगों से हमारी बदनामी होती है; मगर ख़ैर जो भी हो, मैं कहता हूँ वह बड़ी भयानक, बड़ी गन्दी चीज़ थी जो मैंने देखी। मैं उसे जल्दी भूल नहीं सकूँगा।" उसने चाय की चुस्की लेते हुए अपनी बात ख़तम की।

कैम्प के लोगों के सोते-सोते बहुत रात जा चुकी थी। ख़ामोशी में सेरेदा को नाक बजने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। पुज़ीरेव्स्की अपने घोड़े की ज़ीन का तकिया लगाये सो रहा था। राजनीतिक शिक्षक क्रेमर बैठा हुआ था और अपनी नोटबुक में तेज़ी से कुछ लिख रहा था।

अगले रोज़ स्काउटिंग की एक गश्त से लौट कर पावेल ने अपना घोड़ा

एक पेड़ से बाँधा और क्रेमर के पास गया जिसने अभी-अभी अपनी चाय ख़त्म की थी।

"सुनो क्रेमर, कैसा रहे अगर मैं पहली घुड़सवार फ़ौज में चला जाऊँ? क्यों? देखने से लगता है कि वहाँ कुछ बड़ी-बड़ी चीजें होने वाली हैं। इतनी फ़ौजों को जो इकट्ठा किया जा रहा है बड़ी संख्या में, तो क्या यों ही मजाक के लिए? और यहाँ तो लगता है कि कुछ ख़ास लड़ाई-वड़ाई देखने को मिलेगी नहीं।"

क्रेमर ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा।

"चला जाऊँ से क्या मतलब? क्या तुम्हारा ख़याल है कि सिनेमा की सीट की ही तरह अपनी फ़ौज की टुकड़ी भी जब चाहे बदल सकते हो?"

"मगर इससे फर्क़ क्या पड़ता है, लड़ना यहाँ भी है वहाँ भी," पावेल ने कहा, "मैं भाग कर पीछे तो जा नहीं रहा हूँ, मोर्चे को छोड़कर?"

मगर क्रेमर इस बात के बिल्कुल ख़िलाफ़ था। बोला :

"अनुशासन भी तो कोई चीज़ है? कुल मिला कर तुम बुरे लड़के नहीं हो पावेल, मगर कुछ बातों में तुम थोड़े से अराजकतावादी हो। तुम्हारा ख़याल है कि तुम मनमानी कर सकते हो, जब जो तुम्हारे जी में आये? तुम भूल जाते हो मेरे दोस्त कि पार्टी और कोमसोमोल की आधार-शिला लौह अनुशासन है। पार्टी का हित सबसे पहले देखना होगा। और हममें से हर एक को वहाँ होना चाहिए जहाँ उसकी ज़रूरत है, वहाँ नहीं जहाँ वह रहना चाहता है। पुज़ोरेव्स्की ने तुम्हारी बदली की अर्ज़ी रद्द कर दी कि नहीं? बस, तो यही तुम्हारी बात का जवाब है।"

क्रेमर इतने आवेश में बोल रहा था कि उसे खाँसी का दौरा पड़ गया। यह लम्बा दुबला-पतला आदमी प्रेस में काम करता था और सीसे की चूर उसके फेफड़ों पर जम गई थी और अक्सर उसके मोम जैसे फीके जर्द गालों पर बुख़ार की सी ललाई दिखाई देती थी।

क्रेमर के शान्त होने पर पावेल ने धीमी, मगर दृढ़ आवाज़ में कहा :

"तुम जो कहते हो वह ठीक है, मगर फिर भी मैं बुद्योनी की फ़ौज में जा रहा हूँ।"

उसके अगले रोज शाम को पावेल कैम्प फ़ायर में नहीं था।

पास के एक गाँव में बुद्योनी की घुड़सवार टुकड़ी के लोग स्कूल की इमारत

के उस पार एक पहाड़ी पर बड़ा-सा घेरा बनाये बैठे थे। एक भीमकाय सिपाही, मशीनगन को खींचने वाली गाड़ी के पीछे बैठा हुआ था। उसने अपनी टोपी पीछे की ओर सरका दी थी और अकार्डियन बाजा बजा रहा था। वह बाजा उसकी अनाड़ी उंगलियों के निर्देश से बिना किसी ताल-सुर के शोर मचा रहा था जैसे उसे गहरी यातना मिल रही हो और वह रो रहा हो। उसके इस ग़लत-सलत बाजा बजाने से वह बाँका घुड़सवार, जो खूब ही चौड़ी ब्रिर्जिस पहने हुए घेरे के बीचोबीच बड़ी मस्ती से होपाक नाच रहा था, परेशानी में पड़ जाता था।

गाँव के लड़के-लड़कियाँ अपनी उत्सुक आँखें लिये इन सिपाहियों की उछल-कूद को, जिनकी ब्रिगेड अभी-अभी गाँव में दाखिल हुई थी, देखने के लिए तोप खींचने वाली गाड़ी और आस-पास की बाड़ियों पर चढ़ गए थे।

"हाँ, तोप्तालो! यह रही! जमीन खोद कर रख दो! हाँ भाई, यह चीज है। अजी ओ, तुम जो अकार्डियन लिए खड़े हो, जरा जोर से बजाओ, क्या पीं-पीं कर रहे हो!"

मगर बजाने वाले की मोटी-मोटी उंगलियाँ, जो निहायत आसानी से घोड़े की नाल को पकड़ कर मोड़ दे सकती थीं, परदे पर भौंड़े तरीक़े से धप्प-धप्प कर रही थीं।

"कितना बुरा हुआ कि माखनो आफ़ानासी कुल्याबका को ले बीता," काँसे के रंग के एक घुड़सवार ने दुख के साथ कहा, "वह लड़का बहुत अच्छा अकार्डियन बजाता था। अपने घोड़े पर सवार वह हमारे दस्ते के दाँयें बाजू चला करता था। बहुत बुरा हुआ कि वह मारा गया। वह सिपाही भी बहुत अच्छा था और हमारा सबसे अच्छा अकार्डियन बजाने वाला भी था!"

पावेल ने, जो उसी घेरे में खड़ा था, इस आखिरी बात को पीछे से सुन लिया था। वह लोगों को हटाता हुआ मशीनगन खींचने वाली गाड़ी के पास पहुँचा और उसने अपना हाथ अकार्डियन की धौंकनी पर रख दिया। संगीत थम गया।

"क्यों क्या बात है?" अकार्डियन बजाने वाले ने त्योरी चढ़ाते हुए पूछा।

तोप्तालो रुक गया और भीड़ में से गुस्से की एक भुनभुनाहट उठी: "किस बात का झगड़ा है?"

पावेल ने बाजे के लिए हाथ बढ़ाते हुए कहा, "जरा मुझे बजाने दो!"

बुद्योनी के घुड़सवार ने इस बोल्शेविक पैदल सिपाही की ओर अविश्वास से देखा और फिर बेमन से अकार्डियन का पट्टा अपने कन्धे पर से उतार दिया।

पावेल ने जानकार अन्दाज से बाजे को अपने घुटने पर रख लिया, धौंकनी

को पंखे की तरह फैला दिया और अकार्डियन अपने पूरे जोशोखरोश से संगीत की खूब ही मस्त धुन निकालने लगा :

ओ री नन्हीं छबीली
किधर चली ? ओ री.....
बाँके सिपहिया से नैना लड़े तोरे
तू उसके ही प्रेम रली ! ओ री....

तोप्तालो ने इस परिचित धुन को उठा लिया और किसी बड़ी चिड़िया की तरह अपनी बाँहों को झुलाता हुआ, झूमता हुआ घेरे के अन्दर जा पहुँचा और अपने जिस्म को अजीब-अजीब तरह से तोड़-मरोड़ कर और अपनी जाँघों, घुटने, सिर, माथे, जूते के तल्लों और यहाँ तक कि अपने मुँह पर कस-कस के हाथ मारता हुआ संगीत की ताल देने लगा।

अकार्डियन की गति तेज से तेज होती जा रही थी और उससे एक बेहद नशीली, पागल कर देने वाली, स्वर लहरी निकल रही थी और तोप्तालो जोर-जोर से अपनी टाँगों को फटकार कर पूरे घेरे में लट्टू की तरह नाच रहा था—यहाँ तक कि उसकी साँस फूल गयी।

५ जून, १९२० को बुद्योनी की पहली घुड़सवार फ़ौज दो-चार छोटी, मगर भयानक, लड़ाइयों के बाद तीसरी और चौथी पोलिश फ़ौजों के बीच के पोलिश मोर्चे को चीरने में कामयाब हुई। उसने जेनरल सावित्की की घुडसवार ब्रिगेड को, जो उसके रास्ते में पड़ी, चकनाचूर कर दिया और सैलाब की तरह रुज़ीनी की तरफ़ बढ़ी।

पोलिश फ़ौज की कमान ने जल्दी-जल्दी अपनी कुछ फ़ौज जमा की और उससे अपने मोर्चे की दरार को भरने की कोशिश की। पोगरेबिश्चे स्टेशन से पाँच टैंक झटपट लड़ाई के मुकाम पर भेजे गये। पोलिश फ़ौज का इरादा जारुदनित्सी से हमला करने का था, मगर यह घुड़सवार फ़ौज उसको बचा कर बगल से निकल गयी और पोलिश फ़ौजों के पिछाये में जा पहुँची।

पहली घुड़सवार फ़ौज का पीछा करने के लिए जेनरल कौर्निकी की घुड़-सवार डिवीज़न भेजी गयी। पोलिश कमान को यक़ीन था कि बुद्योनी की घुड़सवार फ़ौज कज़ातिन की तरफ बढ़ रही है। पोलिश फ़ौजों के पिछाये में कज़ातिन एक सबसे अहम जंगी मुकाम था। लिहाजा जेनरल कौर्निकी की घुड़सवार डिवीज़न को

बुद्यौनी की फ़ौज पर पीछे से हमला करने का आदेश दिया गया था। मगर इस चाल से पोलों की हालत नहीं सुधरी। यह सही है कि उन्होंने उस दरार को पूर दिया और बुद्यौनी की घुड़सवार फ़ौज को पीछे से काट दिया, मगर यह चीज़ अपने आप में काफ़ी परेशान करने वाली थी कि एक मज़बूत घुड़सवार फ़ौज उनकी पाँतों के पीछे है और उससे उनके पिछाये के अड्डों को खतरा है। इतना ही नहीं, इस बात का भी खतरा था कि वह फ़ौज पोलों की कीव-स्थित फ़ौजी टुकड़ी पर टूट पड़ेगी। आगे बढ़ते हुए लाल घुड़सवार डिवीज़नों ने पोलों के लौटने का रास्ता बन्द करने के लिए छोटे छोटे रेल के पुलों को उड़ा दिया और रेलवे लाइनों को उखाड़ फेंका।

कैदियों से यह बात मालूम होने पर कि पोलों का एक फ़ौजी हेडक्वार्टर ज़िटोमीर में है (और सच बात तो यह थी कि पूरे मोर्चे का उनका हेडक्वार्टर वहीं था), पहली घुड़सवार फ़ौज के कमांडर ने ज़िटोमीर और बर्डीचेव पर क़ब्ज़ा करने का फ़ैसला किया। ये दोनों महत्वपूर्ण रेलवे जंक्शन और शासन केन्द्र थे। ७ जून को सवेरे, भोर में, चौथी घुड़सवार डिवीज़न पूरे वेग से ज़िटोमीर की तरफ बढ़ी जा रही थी।

अब कोर्चागिन एक दस्ते के बायें बाजू में अपने घोड़े पर सवार चल रहा था, उसी जगह जहाँ कुल्याबको चलता था—वह अकार्डियन बजानेवाला जिसके मारे जाने का सबको ग़म था। सभी सिपाहियों के सम्मिलित अनुरोध पर पावेल को उस दस्ते में रखा गया था। वे लोग इतने अच्छे अर्कार्डियन बजाने वाले से हाथ नहीं धोना चाहते थे।

उनके घोड़ों के मुँह से फेंचकुर छूट रहा था, मगर रुकने की ताब उनमें नहीं थी। ज़िटोमीर के पास पहुँच कर वे पंखे की तरह फैल गये और अपनी नंगी, धूप में चमकती तलवारें लिये उन्होंने शहर पर हमला बोल दिया।

घोड़े हाँफ रहे थे, उनकी टापों से धरती कराह रही थी और घुड़सवार अपनी रक़ाबों में पैर दिये खड़े थे।

उनके पैरों के नीचे ज़मीन तेज़ी से उल्टी तरफ भागती चली जा रही थी और उनके सामने वह बागीचों और पार्कों वाला बड़ा शहर था जो तेज़ी से पास आता जा रहा था। घुड़सवारों का यह तूफ़ान बगीचों के बगल से होता हुआ शहर के बीचोबीच जा पहुँचा। लड़ाई के खौफ़नाक नारे और आवाज़ें हवा को चीरने लगीं और एक ऐसा समाँ बँध गया जो मौत की तरह ही भयावना था।

पोल ऐसे किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये थे कि वे कुछ भी मुकाबला न कर सके। उस शहर की उनकी फ़ौज को कुचल दिया गया।

अपने घोड़े की गर्दन पर झुका हुआ कोर्चागिन तेजी से तोप्तालो के बगल में चला जा रहा था। तोप्तालो अपने काले घोड़े पर सवार था जिसकी टाँगें पतली थीं। पावेल ने देखा कि कैसे अचूक निशाने से उस बाँके घुड़सवार ने एक पोलिश सिपाही को, इसके पहले कि वह अपनी राइफिल उठा कर कन्धे से लगा सके, चीर कर रख दिया।

घोड़ों की नालें सड़क के पत्थरों पर बज रही थीं। तभी एक दुराहे पर उन्होंने अपने ठीक सामने सड़क के बीचोबीच एक मशीनगन को देखा। तीन पोलिश सिपाही अपनी नीली वर्दियाँ और आयताकार टोपियाँ लगाये मशीनगन पर झुके हुए थे। एक चौथा आदमी भी था जिसके कालर पर सुनहले गोटे का काम था और जो इन घुड़सवारों पर अपना माउज़र ताने हुए था।

न तोप्तालो, न पावेल, दोनों में से कोई अपने घोड़े को नहीं रोक सका और वे सरपट मशीनगन की तरफ़, सीधे मौत के जबड़ों में, भागते चले गए। उस अफ़सर ने कोर्चागिन पर गोली चलाई, मगर निशाना चूक गया। गोली पावेल के गाल के पास से सन्न से निकल गई और दूसरे ही क्षण उस लेफ्टिनेंट का सिर सड़क के पत्थर पर जा टकराया। घोड़े की टाप ने उसके पैर उखाड़ दिए और उसका निर्जीव शरीर चित होकर सड़क पर बिछ गया।

उसी वक़्त मशीनगन पाशविक डरावनी तेजी से कड़कड़ाई और गोले के एक दर्जन छर्रे आकर तोप्तालो और उसके काले घोड़े को लगे और दोनों वहीं जमीन पर ढेर हो गये।

पावेल का घोड़ा डर कर हिनहिनाता हुआ अपनी पिछली टाँगों पर खड़ा हो गया और अपने सवार को लिये हुए, जमीन पर पड़ी लाशों को फाँदता हुआ मशीनगन चलाने वालों पर जा कूदा। पावेल की तलवार हवा में एक अर्ध-वृत्त बनाती हुई चमकी और एक सिपाही की नीली टोपी को चीरती हुई अन्दर घुस गई।

दूसरे सिर पर टूटने के लिए तलवार दुबारा चमकी, मगर बौखलाया हुआ घोड़ा एक ओर बहक गया।

एक पहाड़ी तूफ़ानी नदी की तरह हरहराता हुआ घुड़सवार दस्ता अब सड़क के दुराहे पर आ गया था और हवा में बीसों तलवारें चमक रही थीं।

जेल के तंग लम्बे गलियारों में आवाजें गूँज रही थीं।

जेलखाने की कोठरियों में एक अजब परेशानी का आलम था। उनमें बन्द मर्दों और औरतों के दुबले, सूखे, मुरझाये हुए, परेशान चेहरे कुछ समझ नहीं पा रहे थे कि आगे क्या होने वाला है। उनको यह मालूम था कि शहर के अन्दर

लड़ाई जारी है, लेकिन इस बात का यक़ीन उन्हें मुश्किल से आ रहा था कि इस चीज़ का मतलब उनकी आज़ादी होगी, कि ये हमला करने वाले, जो अचानक ही शहर पर टूट पड़े थे, उसके अपने आदमी थे।

जेल के हाते में गोली चल रही थी। लोग गलियारों में भाग रहे थे। और फिर वे सदा-सदा के पहचाने, प्यारे, मर्मस्पर्शी शब्द : "अब तुम आज़ाद हो, साथियो!"

पावेल एक बन्द कोठरी की तरफ़ दौड़ा जिसमें ताला लगा हुआ था। इस कोठरी की नन्हीं सी खिड़की में से दर्जनों आँखें बेताबी से झाँक रही थीं, मानो किसी ने उन्हें वहाँ चिपका दिया हो। पावेल अपनी राइफ़िल के कुन्दे से बार-बार ताले पर चोट मार रहा था।

मिरोनोव ने पावेल को एक तरफ़ हटाते हुए अपनी जेब से एक दस्ती बम निकाला और बोला, "रुको, मैं अभी इसे एक बम से तोड़े देता हूँ।"

प्लैटून कमांडर ज़िगारचेंको ने लपक कर उसके हाथ से बम छीन लिया।

"रुको भी, कैसे गधे हो, पागल हो गये हो क्या! अभी पलक मारते ताली आई जाती है। जो कुछ हम तोड़ नहीं सकेंगे, उसे ताली से खोलेंगे।"

जेल के सन्तरी पीछे से रिवाल्वर से ठेल-ठेल कर ले जाये जा रहे थे। उसके बाद रास्ते भर में तमाम मर्द और औरतें भर उठे जो चीथड़े लगाये थे, जिन्होंने न जाने कब से मुँह-हाथ भी नहीं धोया था, मगर जो खुशी से पागल हो रहे थे।

कोठरी के दरवाज़े को धक्का देकर खोलते हुए पावेल अन्दर पहुँचा।

"साथियो, तुम लोग आज़ाद हो! हम लोग बुद्योनी के आदमी हैं—हमारे डिवीज़न ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया है!"

एक औरत, जिसकी आँखों में आँसू छलक रहे थे, दौड़ कर पावेल के पास पहुँची और उसे अपनी बाँहों में भर कर सिसकने लगी जैसे उसे कोई अपना सगा मिल गया हो।

इन पाँच हज़ार एकहत्तर बोल्शेविकों और लाल सेना के दो हज़ार राजनीतिक कर्मियों को, जिन्हें पोलिश क्रान्ति-विरोधियों ने इन पत्थर के तहख़ानों में गोली मारने या फाँसी पर चढ़ाने के लिए बन्द कर रखा था—आज़ादी ही इस डिवीज़न के सैनिकों के लिये सबसे बड़ा पुरस्कार था, जीत से भी बड़ा पुरस्कार। उन सात हज़ार क्रान्तिकारियों के लिए रात्रि का अभेद्य अन्धकार दिन के सुनहले प्रकाश में बदल गया।

एक क़ैदी, जिसकी खाल नीबू की तरह पीली थी, खुशी से पागल होकर पावेल की ओर दौड़ा। यह था सैमुअल लेखर—शेपेतोवका के प्रेस का एक कम्पोज़ीटर।

सैमुअल के मुँह से अपने शहर की खून में डूबी हुई कहानी सुन कर पावेल का चेहरा मुरझा गया और सैमुअल के शब्द पिघले हुए सीसे की बूँदों की तरह उसके दिल को जला रहे थे।

" उन्होंने हम सब को एक साथ रात के वक़्त पकड़ लिया। किसी हरामज़ादे ने हमारे संग ग़द्दारी की और फ़ौजी पुलिस को हमारे बारे में बतला दिया। एक बार हमें अपने पंजों में पाकर उन्होंने हमारे संग फिर किसी तरह का रहम नहीं किया। हमें उन्होंने बहुत बुरी तरह मारा, पावेल। मुझे औरों से कम यातना सहनी पड़ी क्योंकि दो ही चार वारों के बाद मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। लेकिन, दूसरे मुझसे ज़्यादा मजबूत थे।

" हमारे पास छिपाने को कुछ भी नहीं बचा था। उन सिपाहियों को हमसे ज़्यादा अच्छी तरह हमारी बातें मालूम थीं। उनको पता था कि हमने कब-कब कौन से कदम उठाये। और यह कोई ताज्जुब की बात नहीं थी क्योंकि हमारे बीच एक ग़द्दार था! उन दिनों के बारे में मैं तुमको नहीं बतला सकता, पावेल। जो पकड़े गये उनमें से तुम बहुतों को जानते हो। वालिया ब्रुजाक, और रोज़ा ग्रित्समान, कैसी प्यारी लड़की थी। अभी मुश्किल से सत्रह की हुई थी और कैसा विश्वास झलकता था उसकी आँखों में, पावेल! साशा बुनशाफ्ट भी तो पकड़ा गया। उसे तो तुम जानते हो, कम्पोज़ीटर था। कैसा मस्त लड़का था! हमेशा मालिक के कारटून बनाया करता था। उसे और कालेज के दो लड़कों, नोवोसेल्स्की और तुज़ित्स को वे पकड़ ले गये। इन लड़कों की भी तुम्हें याद होगी ही। बाक़ी लोग भी शहर के या जिले के ही थे। कुल मिलाकर उनतीस लोग पकड़े गये थे, जिनमें छः औरतें थीं। उन सभी को एक से एक अमानुषिक यातनाएँ दी गईं। वालिया और रोज़ा के साथ पहले ही रोज़ बलात्कार किया गया। उन सुअरों ने क्या नहीं किया उन लड़कियों के साथ और फिर उन्हें लाकर कोठरी में डाल गये, ज़िन्दा से ज़्यादा मुर्दा। उसके बाद रोज़ा पागलों की तरह बातें करने लगी और कुछ दिन बाद बिल्कुल ही पागल हो गई।

" उनको यक़ीन नहीं आता था कि वह पागल है। उनका कहना था कि वह बन रही है और हर बार जब वे उससे सवाल-जवाब करते तो बड़ी बेरहमी से उसे मारते। कैसी हौलनाक शक्ल थी उसकी जब उसे गोली से मारा गया! उसका चेहरा ज़ख्मों से स्याह हो रहा था, उसकी आँखों में दहशत थी और वह बिलकुल बूढ़ी नज़र आती थी।

वालिया ब्रुजाक ने अन्त तक बड़ी वीरता से काम लिया। वे सब सच्चे सैनिकों की तरह मरे। मैं नहीं जानता कि यह सब सहने की ताक़त उनमें कहाँ से

आ गई थी। आह पावेल, उनकी मौत की कहानी मैं तुम्हें कैसे सुनाऊँ? बड़ी भयानक मौत थी वह।

"वालिया सबसे ख़तरनाक काम कर रही थी। वही पोलिश हेडक्वार्टर के वायरलेस आपरेटरों के साथ सम्पर्क बनाये थी और हमारे जिला केन्द्र के लोगों के सम्पर्क में भी थी। इसके अलावा उन्होंने जब उसके घर की तलाशी ली तो उन्हें दो बम और एक पिस्तौल भी मिला। वे बम उसे उसी खुफ़िया के आदमी ने दिये थे। सारी योजना इस तरह बनाई गई थी कि उन लोगों पर यह इलज़ाम लगाया जा सके कि वे हेडक्वार्टर को बम से उड़ाने का इरादा रखते थे।

"पावेल, उन आख़िरी दिनों के बारे में बात करने से बड़ा दर्द होता है। मगर तुम कहते हो तो मैं तुम्हें सब बतलाऊँगा। फ़ौजी अदालत ने वालिया और दो लोगों को फाँसी की और बाक़ी को गोली से उड़ाने की सज़ा दी। वे पोलिश सिपाही, जो हमारे संग काम कर रहे थे, उन पर दो दिन पहले ही मुक़दमा चलाया जा चुका था। कारपोरल स्नेगुर्को, जो एक नौजवान वायरलेस आपरेटर था और लड़ाई के पहले लोड्ज़ में बिजली का काम करता था, उस पर राजद्रोह का जुर्म लगाया गया और कहा गया कि वह सिपाहियों के बीच कम्युनिस्ट प्रचार करता है और इस इलज़ाम में उसे गोली से उड़ाने की सज़ा सुनाई गई। उसने अपील नहीं की और सज़ा सुनाये जाने के चौबीस घंटे बाद उसे गोली से उड़ा दिया गया।

"उसके मुक़दमे में शहादत देने के लिए वालिया को बुलाया गया। उसने बाद में हमें बतलाया कि स्नेगुर्को ने इस बात का इक़बाल कर लिया था कि उसने कम्युनिस्ट प्रचार किया है, मगर इस बात को मानने से इनकार कर दिया था कि उसने देशद्रोह किया है। उसने कहा, 'मेरी पितृभूमि पोलिश सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र है। हाँ, मैं पोलैंड की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हूँ। मुझे मेरी इच्छा के खिलाफ़ फ़ौज में भरती किया गया और जब मैं फ़ौज में पहुँच ही गया तो मैंने अपनी ही तरह के उन दूसरे सिपाहियों की आँखें खोलने के लिए, जिन्हें जबरन मोर्चे पर भेजा गया था, भरसक उद्योग किया। आप इस जुर्म में चाहें तो मुझे फाँसी पर टाँग सकते हैं, मगर यह जुर्म आप मुझ पर नहीं लगा सकते कि मैंने अपनी पितृभूमि के साथ गद्दारी की है। क्योंकि अपनी पितृभूमि के साथ न तो मैंने कभी गद्दारी की है और न कभी करूँगा। तुम्हारी पितृभूमि मेरी पितृभूमि नहीं है। तुम्हारी पितृभूमि रईसों और नवाबों की पितृभूमि है, मेरी पितृभूमि मज़दूरों और किसानों की पितृभूमि है। और मेरी पितृभूमि में, जो कि अस्तित्व में आयेगी—ज़रूर आयेगी, इसका मुझे पक्का विश्वास है—कोई भी मुझे कभी भी देशद्रोही नहीं कहेगा।"

"मुक़दमे के बाद हम सब लोगों को साथ रखा गया। मौत की सज़ा देने के ठीक पहले हमें जेल भेजा गया। जेल के ठीक सामने, अस्पताल के बग़ल में उन्होंने रात को फाँसी की टिकटियाँ खड़ी कीं। गोली मारने के लिए उन्होंने सड़क से थोड़ी ही दूर पर जंगल के पास एक बड़े से गढ़े के पास एक जगह चुनी। हम सब लोगों के लिए एक बड़ी-सी कब्र खोदी गई।

"हमारी सज़ा की बात शहर भर में इश्तिहार की शक्ल में दीवारों पर चिपका दी गई ताकि सबको उसका पता हो जाय। पोलों ने हमको खुलेआम, पब्लिक के सामने, मौत की सज़ा देने का फैसला किया था ताकि शहरवाले डर जायें। बहुत सवेरे से उन्होंने शहरवालों को टेल-ठेल कर उस जगह भेजना शुरू किया जहाँ हम मौत के घाट उतारे जाने वाले थे। बड़ी भयानक बात है, मगर यह सही है कि कुछ लोग कुतूहल के मारे भी आ गये थे। ज़रा ही देर में जेल की दीवार के बाहर बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गई थी। अपनी कोठरियों से हम आवाज़ों की भनभन सुन सकते थे। उन लोगों ने सड़क पर भीड़ के पीछे मशीनगनें खड़ी कर दी थी और आस-पास के सारे इलाक़े से घुड़सवार और पैदल सिपाही बटोर लाये थे। उनकी एक पूरी की पूरी बटालियन सड़कों और उनके पार साग-भाजी के खेतों को घेरे हुए थी। जिन्हें फाँसी दी जाने वाली थी उनके लिए टिक्टी के पास ही एक गढ़ा खोद रखा गया था।

"हम लोग खामोशी के साथ अपनी मौत का इन्तज़ार कर रहे थे। बीच-बीच में दो-एक शब्द आपस में बोल लेते थे। पिछली रात ही हमने तमाम बातें कर ली थी और एक-दूसरे से विदा भी कह ली थी। सिर्फ़ कोठरी के एक कोने में रोज़ा अपने-आप कुछ बुदबुदा रही थी। तमाम मारपीट और जुल्मों को सहने के बाद, वालिया अब इतनी कमज़ोर हो गई थी कि हिल सकना भी उसके लिए मुमकिन नहीं था और वह ज़्यादा वक्त बिना हिले-डुले निश्चेष्ट पड़ी रहती थी। शहर की ही दो कम्युनिस्ट लड़कियाँ, जो बहनें थीं, जब अन्तिम बार एक-दूसरे से गले मिलीं तो अपने आँसुओं को नहीं रोक सकीं। उन्हें रोता देख कर गाँव के एक नौजवान स्तेपानोव ने, जो अच्छा गबरू जवान था और जिसने दो सिपाहियों को, जो उसको पकड़ने आये थे, ढेर कर दिया था, उन लड़कियों को मना करते हुए कहा, 'आँसू नहीं गिरना चाहिए, साथियो! यहाँ चाहे रो लो, लेकिन बाहर नहीं। हम उन हरामज़ादों को गाल बजाने का मौक़ा नहीं देना चाहते। और रहम तो किसी भी हालत में नहीं किया जायगा। मरना हमें है ही तो क्यों न शान से मरें। हम अपने घुटनों के बल घिसटेंगे नहीं। याद रखो साथियो, हमें अच्छी तरह मरना है।'

" उसके बाद वे हम लोगों को लेने आये। आगे-आगे था ज़्वारकोव्स्की, उनके खुफ़िया विभाग का सबसे बड़ा अफ़सर। दूसरे को तकलीफ में देख कर उसे खुशी होती थी और इस मामले में तो शायद कोई उससे आगे नहीं जा सकता था। जब वह खुद लड़कियों के साथ बलात्कार नहीं करता, तो अपने सिपाहियों से करवाता था और देख-देख कर खुश होता। सड़क के दोनों ओर सिपाहियों की कतारें खड़ी थीं और उनके बीच से हम लोग फाँसी के तख्ते की तरफ ले जाये गये। उन सिपाहियों की वर्दी में कन्धे पर पीले रंग का झब्बा था, जिसके कारण हम लोगों ने उन्हें केनरी[1] नाम दे रखा था। वे लोग अपनी नंगी तलवारें लिये खड़े थे।

" उन्होंने हमारी चार-चार की टोलियाँ बना दी थीं—दो आदमी आगे, दो आदमी पीछे। अपनी राइफिलों के कुन्दों से ठेल-ठेल कर वे हमें तेजी से जेल के हाते के बीच से ले चले। फिर, उन्होंने फाटक खोल दिये और सड़क पर लाकर फाँसी के तख्ते के सामने खड़ा कर दिया ताकि हम अपने साथियों को मरते देखें और खुद अपनी बारी का इन्तज़ार करें। मोटे-मोटे शहतीरों की वे खूब ऊँची-सी टिक्टियाँ थीं। मोटी रस्सी के तीन फन्दे लटक रहे थे और हर फन्दे के नीचे सीढ़ियों समेत एक तख्ता था जिसे ठोकर मार कर अलग किया जा सकता था। आदमियों का वह समुन्दर, जो मचलता और लहरें लेता खड़ा था, उसमें से हलकी मरमर ध्वनि की एक तरंग उठी। सब लोगों की आँखें हमारे ऊपर जमी हुई थीं। हमने उस भीड़ में से अपने कुछ लोगों को पहचाना।

" थोड़ी दूर पर कुछ पोलिश रईस और अफ़सर अपनी दूरबीन लिये खड़े थे। वे बोल्शेविकों को फाँसी लगते देखने आये थे।

" हमारे पैरों के नीचे मुलायम बरफ़ थी। बरफ़ के ही कारण जंगल सफ़ेद हो रहा था, पेड़ों पर रुई के गालों की तरह बरफ़ की मोटी-मोटी परतें जमी हुई थीं। बरफ़ धीरे-धीरे गिर रही थी और हमारे जलते हुए चेहरों पर आकर पिघल जाती थी। फाँसी के तख्ते की सीढ़ियों पर भी बरफ़ की कालीन बिछी हुई थी। हम लोग बहुत थोड़े कपड़े पहने हुए थे, मगर किसी को सर्दी नहीं मालूम हो रही थी। स्तेपानोव को इस बात का भी ध्यान नहीं आया कि वह अपने मोजे पहने-पहने चल रहा था।

" टिक्टियों के पास फ़ौज का सरकारी वकील और बड़े-बड़े अफ़सर खड़े थे। आखिरकार वालिया और दो और साथी जिन्हें फाँसी दी जाने वाली थी, जेल से बाहर लाये गए। वे तीनों बाँह में बाँह डाले चल रहे थे, बीच में वालिया थी

१. पीले रंग के परोंवाली एक चिड़िया।

जिसे बाक़ी दोनों सहारा दिये हुए थे, क्योंकि खुद चलने की ताक़त उसमें नहीं रह गई थी। मगर वह अच्छी तरह तन कर चलने की पूरी कोशिश कर रही थी। उसे स्तेपानोव के ये शब्द याद थे : 'हमें अच्छी तरह मरना है, साथियो!' वह एक ऊनी जाकट पहने थी, मगर उस पर से कोट नहीं था।

"ज़्वारकोव्स्की को स्पष्ट ही यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि वे लोग एक दूसरे की बाँह में बाँह डालकर चलें और वह उन्हें पीछे से धक्का दे रहा था। वालिया ने कुछ कहा और उसके मुँह से बात निकलते ही एक घुड़सवार सिपाही ने ज़ोर से उसके मुँह पर अपनी चाबुक मारी। भीड़ की एक औरत के मुँह से भयानक चीख़ निकली और वह घेरे को तोड़ कर क़ैदियों के पास पहुँचने के लिए पागलों की तरह ज़ोर लगाने लगी, मगर उसे पकड़ लिया गया और घसीट कर पीछे कर दिया गया। ज़रूर वह वालिया की माँ रही होगी। फाँसी के तख़्ते के पास पहुँच कर वालिया ने गाना शुरू किया। मैंने कभी ऐसी आवाज़ नहीं सुनी थी—जो आदमी मौत से गले मिलने जा रहा हो वही इतनी मार्मिक अनुभूति से गा सकता है। वह वार्ज़ावियान्का का गाना गा रही थी और बाक़ी दो ने भी उसके साथ गाना शुरू कर दिया। घुड़सवार सन्तरियों ने ग़ुस्से से अन्धे होकर उन पर चाबुक चलानी शुरू की, मगर उन तीनों को चोट का कोई एहसास ही नहीं होता था। मारते-मारते उन्हें वहीं ढेर कर दिया गया और फिर बोरों की तरह घसीट कर टिक्टी तक पहुँचाया गया। जल्दी-जल्दी उन्हें सज़ा सुनाई गई और फाँसी का फन्दा उनके गले में डाल दिया गया। उसी वक़्त हम लोगों ने गाना शुरू किया :

उठ जाग ओ भूखे बन्दी....!

"सब ओर से सन्तरी हमारे ऊपर लपके और मुझे सिर्फ़ इतना मौक़ा मिला कि मैं राइफिल के कुन्दों से फाँसी के तख़्ते को हटाये जाते और उन तीनों को फाँसी के फन्दे में झटका खाते देखूँ....

"हम में से बाक़ी लोग दीवाल के सहारे खड़े कर दिये गये थे, गोली खाने के लिए, जब कि यह मालूम हुआ कि हममें से दस लोगों की मौत की सज़ा घटा कर बीस साल की क़ैद की सज़ा कर दी गई थी। बाक़ी सोलह को गोली मार दी गई।"

सैमुअल अपनी कमीज़ के कालर को बार-बार खींच रहा था जैसे उसका गला घुटा जा रहा हो।

"तीन दिन तक लाशें अपने फन्दों में फँसी झूलती रहीं। दिन-रात टिक्टी पर पहरा रहता था। उसके बाद क़ैदियों का एक नया जत्था जेल लाया गया और

उन्होंने हमें बतलाया कि जिस फन्दे से कामरेड तोवोल्दिन को, जो उन तीनों में सबसे भारी थे, लटकाया गया था, उसकी रस्सी टूट गई। तब उन्होंने बाकी दो को भी उतारा और तीनों को दफ़न कर दिया।

"मगर टिबिट्याँ ज्यों-की-त्यों खड़ी रहने दी गईं। हम लोग जब इस जगह लाये गए तब भी वे खड़ी थीं। वे खड़ी हैं और उनके फन्दे अपने ताज़े शिकारों का इन्तज़ार कर रहे हैं।"

सैमुअल चुप हो गया और आगे की ओर घूरता बैठा रहा, गो उसकी आँखें कुछ देख नहीं रही थीं। पावेल को इस बात का पता न चला कि कहानी ख़तम हो गई है। उसकी आँखों के सामने वे ही तीनों शरीर झूल रहे थे जिनका सिर एक ओर को लटक गया था।

जब सिपाहियों को बाहर जमा करने के लिए बिगुल बजा, तभी यकायक पावेल होश में आया।

उसने बहुत धीमे से कहा, "आओ चलें सैमुअल।"

सड़क पर दोनों ओर घुड़सवार खड़े थे और उनके बीच से पोलिश कैदी ले जाये जा रहे थे। जेल के फाटक पर खड़ा रेजिमैंटल कमिसार अपने पैड पर कोई आदेश लिख रहा था।

काग़ज़ के उस टुकड़े को एक लम्बे-तगड़े, दस्ते के कमांडर को पकड़ाते हुए उसने कहा, "कामरेड एन्तिपोव, यह लो और इन तमाम क़ैदियों को घुड़-सवारों के पहरे में नोवगोरोद-वोलिन्स्की ले जाओ। जो घायल हैं, उनकी मरहम-पट्टी और डाक्टरी जाँच करवाने का ख़याल रखना। फिर, उनको गाड़ियों में डाल कर शहर से पन्द्रह मील दूर ले जाकर छोड़ देना। उनके साथ माथापच्ची करने का हमारे पास वक़्त नहीं है। मगर हाँ, एक बात का ख़याल रखना कि क़ैदियों के साथ कोई बदसलूकी न हो।"

अपने घोड़े पर सवार होते हुए पावेल सैमुअल की ओर मुड़ा और बोला, "सुनते हो? वे तो हमारे आदमियों को फाँसी पर लटकायें और हम उन्हें हिफ़ाज़त के साथ ले जाकर खुद उनके आदमियों के बीच पहुँचा दें। और इतना ही नहीं,—उनके संग सलूक भी अच्छा करें! कैसे हो सकता है हमसे यह?"

रेजिमैंटल कमांडर मुड़ा और बोलने वाले की तरफ़ कठोर आँखों से देखते हुए बोला, "निहत्थे कैदियों के संग क्रूरता का बर्ताव करने वाले को मौत की सज़ा दी जायगी। हम लोग क्रान्ति-विरोधी ह्वाइट लोग नहीं हैं!" पावेल ने यह बात सुनी तो उसे लगा जैसे उसी को सुनाकर यह बात कही गई हो।

वहाँ से जब पावेल चला तो उसे क्रान्तिकारी फौजी काउंसिल के हुक्मनामे के आखिरी शब्द याद आये जिन्हें रेजिमेंट को पढ़ कर सुनाया गया था :

" मजदूरों और किसानों का देश अपनी लाल सेना को प्यार करता है। उसके ऊपर देश को गर्व है। और उस सेना के झण्डे पर एक भी धब्बा न रहे, यह हमारा व्रत है।"

पावेल के ओठों ने दुहराया, " एक भी धब्बा नहीं।"

जिस वक्त चौथी घुड़सवार डिवीजन ने जिटोमीर पर कब्जा किया, सातवीं राइफिल डिवीजन की बीसवीं ब्रिगेड, जो कामरेड गोलिकोव की सेना का ही अंग थी, ओकूनिनोव्ो गाँव के इलाके में नीपर नदी पार कर रही थी।

कामरेड गोलिकोव की फ़ौज में २५वीं राइफिल डिवीजन और एक बाश्कीर घुड़सवार ब्रिगेड थी। उसको आदेश था कि नीपर नदी पार करे और इरशा स्टेशन पर कीव-कोरोस्तेन रेलवे को अपनी जद में ले ले। इस कार्रवाई से कीव से पीछे हटने का पोलों का आखिरी रास्ता भी कट जायगा।

इस नदी को पार करने के समय शेपेतोव्का के कोमसोमोल संगठन का सदस्य मिशा लेव्चुकोव मारा गया। वे लोग उस हिलते-डुलते पीपे के पुल पर भागे जा रहे थे कि उधर से ऊँचे कगार से एक गोला छूटा और आकर इन लोगों के पास पानी में गिरा और पानी के चिथड़े-चिथड़े कर दिये। उसी वक्त मिशा कहीं किसी पीपे के नीचे चला गया और ग़ायब हो गया। नदी उसको निगल गई और फिर उसने उसको लौटाया नहीं। याकिमेंको ने, जिसके बाल सुनहले और टोपी टूटी हुई थी, चिल्लाकर कहा : " मिश्का ! अरे यह तो मिश्का था ! बेचारा ऐसे डूबा जैसे पत्थर डूब जाय !" क्षणभर वह सिपाही डरी और घबराई हुई आँखों से उस स्याह पानी को देखता रहा, मगर उसके पीछे आते हुए आदमियों ने उसे आगे को धक्का देते हुए कहा, " क्या मुँह बाये खड़े हो, तुम्हारी मत मारी गई है क्या ! भागो-भागो, दौड़ो !" किसी के लिए शोक मनाने या चिन्ता करने का वक्त नहीं था। यह ब्रिगेड उन दूसरी ब्रिगेडों से पीछे रह गई थी जिन्होंने अब तक नदी के दाहिने किनारे पर कब्जा कर लिया था।

चार रोज बाद ही कहीं सर्गेई को मिशा की मृत्यु का पता चला। तब तक ब्रिगेड ने बुचा स्टेशन पर कब्जा कर लिया था और घूम कर कीव का सामना करती हुई खड़ी हो गई थी ताकि पोलों के जबर्दस्त हमले का मुकाबला कर सके। पोल फ़ौजें घेरे को तोड़ कर कोरोस्तेन पहुँचने की कोशिश कर रही थीं।

गोली चलाने वालों की क़तार में याकिमैंको सर्गेई के बग़ल में आकर पड़ गया। वह काफ़ी देर से गोली चला रहा था जिससे उसकी राइफिल बहुत गरम हो गई थी और उसे बोल्ट चढ़ाने में कठिनाई महसूस हो रही थी। दुश्मन की मार से बचने के लिए अपने सिर को सावधानी से झुकाये-झुकाये वह सर्गेई की तरफ़ मुड़ा और बोला, "इसको थोड़ा सुस्ताने का मौक़ा देना होगा। एकदम अंगारा हो रही है।"

गोली-गोले छूटने के उस शोर में सर्गेई ने शायद ही उसकी बात सुनी।

जब शोर कुछ थमा तो याकिमैंको ने बात-बात में कहा, "तुम्हारा साथी नीपर में डूब गया। इसके पहले कि मैं कुछ कर सकूँ वह आँख से ओझल हो हो चुका था।" बस इतनी ही बात उसने कही। और अपनी राइफिल का बोल्ट चढ़ाने की कोशिश की, देखा कि हाँ, अब वैसा करना मुमकिन है, कारतूसों की नई पेटी निकाली और अपनी राइफिल में उसे डालने लगा।

बर्डीचेव लेने के लिए जो ग्यारहवीं डिवीजन भेजी गई थी, उसे पोलों के ज़बर्दस्त मुक़ाबले का सामना करना पड़ा। शहर की सड़कों पर बहुत खूनी लड़ाई लड़ी गई। मशीनगन के गोलों की बौछार में बोल्शेविकों की घुड़सवार फ़ौज आगे बढ़ी। शहर पर कब्ज़ा कर लिया गया और हारी हुई पोलिश फ़ौजों के बाक़ी लोग भाग गए। रेलवे यार्ड में खड़ी हुई गाड़ियाँ बिलकुल ठीक हालत में कब्ज़े में आ गईं। मगर, पोलिश फ़ौजों के लिए सबसे आफ़त की बात यह हुई कि उनके गोले-बारूद के एक बड़े से गोदाम में, जिससे सारे मोर्चे को सामान पहुँचता था, विस्फोट हो गया। लाखों गोले धड़ाके के साथ हवा में उड़े। उस धड़ाके से खिड़कियों के शीशे चूर-चूर हो गये और मकान ऐसे हिलने लगे जैसे दफ़्ती के बने हों।

जिटोमीर और बर्डीचेव पर कब्ज़ा हो जाने से लाल फ़ौजें पोलिश फ़ौजों की पाँतों के पीछे जा पहुँचीं और पोलिश फ़ौजों को मजबूर होकर उस लोहे के घेरे में से बाहर निकलने के लिए कीव से दो धाराओं में निकल कर अपनी जान की बाज़ी लगाकर लड़ना पड़ा।

लड़ाई के तूफ़ानी भँवर में बहते हुए पावेल को इस बात का एहसास ही नहीं रहा कि दिन कैसे आता है और कैसे बीत जाता है। उसका व्यक्तित्व समूह में खो गया और दूसरे सिपाहियों की ही तरह उसके लिए भी "मैं" शब्द बाक़ी

नहीं बचा। उनके लिए बस एक शब्द था, "हम," हमारी रेजिमेंट, हमारा दस्ता, हमारी ब्रिगेड।

घटनाएँ तूफ़ानी वेग से घटित हो रही थीं। हर रोज़ कोई नई बात थी।

बुद्योनी की घुड़सवार फ़ौज बरफ़ की चट्टान की तरह आगे बढ़ रही थी और हमलों पर हमले करती जा रही थी, यहाँ तक कि पोलिश फ़ौजों की पिछली पाँतें तहस-नहस हो गई थीं। अपनी विजयों के उल्लास में चूर ये घुड़सवार डिवीजनें बेइन्तहा जोश और गुस्से से नोवोग्राद-वोलिन्स्की पर टूटीं। पोलिश फ़ौजों के पिछाये में यही सबसे अहम जगह थी। जिस तरह समुन्दर की लहरें चट्टानी साहिल से आकर टकराती हैं, पीछे हटती हैं और फिर आकर टकराती हैं, उसी तरह ये फौजें आगे बढ़ती थीं, पोलिश फ़ौजों से टकराती थीं और लौट कर फिर दूने वेग से आगे बढ़ती थीं। उनके लबों पर बस यही एक आवाज़ थी : "आगे बढ़ो, आगे बढ़ो!"

पोलों को कोई भी शक्ति बचा न सकी—न तो उनके कंटीले तारों के घेरे और न शहर में तैनात उनकी फ़ौज का जान पर खेल कर मुक़ाबला करना। २७ जून को सबेरे बुद्योनी की घुड़सवार फ़ौज ने बिना घोड़ों से उतरे स्लुच नदी को पार किया और नोवोग्राद-वोलिन्स्की में दाखिल हुई और पोलों को मार कर शहर के बाहर कोरेत्स की तरफ़ भगा दिया। उसी वक्त पैंतालीसवीं डिवीजन ने नोवी मिरोपोल में स्लुच को पार किया और कोतोल्स्की की घुड़सवार ब्रिगेड ल्युबार की बस्ती पर टूटी।

पहली घुड़सवार फ़ौज के रेडियो स्टेशन को मोर्चे के प्रधान सेनापति का आदेश मिला कि अपनी सारी घुड़सवार शक्ति को रोवनो पर कब्ज़ा करने के लिए जमा करो। लाल डिवीजनों के जबर्दस्त हमलों के आगे पोलिश फ़ौजें टिक न सकीं और हिम्मत हार कर, आतंकित होकर छोटी-छोटी टोलियों में इधर-उधर बिखर गईं।

इन्हीं तूफ़ानी दिनों में पावेल कोर्चागिन की एक ऐसी मुलाक़ात हुई जिसकी उसे कोई आशा न थी। ब्रिगेड के कमांडर ने उसे स्टेशन भेजा था जहाँ एक बख़्तरबन्द गाड़ी खड़ी हुई थी। दुलकी चाल से घोड़े को दौड़ाते हुए पावेल ने रेल के टलुआ बाँध को पार किया और इस्पात के रंग की भूरी गाड़ी के पास जाकर घोड़े की लगाम खींची और खड़ा हो गया। बख़्तरबन्द गाड़ी के दोनों ओर तोपों के काले-काले थूथन निकले हुए थे जिनके कारण गाड़ी बड़ी भयानक दीख रही थी। तेल के धब्बे लगे कपड़े पहने कई लोग उसके बग़ल में खड़े उसके पहियों पर भारी लोहे का बख़्तर खड़ा करने का काम कर रहे थे।

पावेल ने चमड़े की जाकट पहने हुए एक लाल सैनिक से, जो पानी की एक बाल्टी लेकर जा रहा था, पूछा, " इस गाड़ी के कमांडर कहाँ हैं ? "

उस आदमी ने इंजन की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, " वहाँ।"

पावेल अपने घोड़े पर सवार इंजन तक गया और वहाँ पहुँच कर बोला, " मैं कमांडर से मिलना चाहता हूँ !" एक चेचक-मुँह आदमी, जो सिर से पैर तक चमड़े के कपड़े पहने हुए था, उसकी तरफ़ मुड़ा और बोला, " मैं ही कमांडर हूँ।"

पावेल ने अपनी जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाला।

" यह लीजिए, यह ब्रिगेड कमांडर का एक हुक्मनामा है। लिफ़ाफ़े पर दस्तखत कर दीजिए।"

कमांडर ने लिफ़ाफ़े को अपने घुटने पर रखा और अपने दस्तख़त घसीट दिये। उधर रेलवे लाइन पर एक आदमी तेल की कुप्पी लिए इंजन के बिचले पहिये पर काम कर रहा था। पावेल को सिर्फ उसकी चौड़ी पीठ और उसकी चमड़े की पतलून की जेब से बाहर को निकला हुआ पिस्तौल का हत्था दिखलाई दे रहा था।

रेल के कमांडर ने लिफ़ाफ़ा पावेल को वापस दे दिया और पावेल अपने घोड़े की रास हाथ में लेकर चलने ही वाला था कि तेल की कुप्पी वाला आदमी उठकर सीधा खड़ा हुआ और पावेल की ओर मुड़ा। दूसरे ही क्षण पावेल घोड़े से कूद पड़ा, जैसे हवा के तेज झोंके ने उसे उठाकर नीचे पटक दिया हो।

" आर्तेम !"

उस आदमी के हाथ से तेल की कुप्पी छूट पड़ी और उसने इस नौ-उम्र लाल सिपाही को अपनी बाँहों में इस तरह भर लिया जैसे कोई बड़ा सा भालू किसी को अपनी बाँहों में भर ले।

" पावका ! बदमाश ! तू है !" आर्तेम चिल्लाया, जैसे उसे अपनी आँखों पर यक़ीन ही न आ रहा हो।

बख़्तरबन्द गाड़ी के कमांडर और कई तोपची वहीं पास ही खड़े उनको देख रहे थे और ख़ूब प्रसन्न होकर मुस्करा रहे थे।

" ज़रा सोचो ! दो भाइयों की ऐसी अचानक मुलाक़ात ! क्या ख़ूब !" वे कह रहे थे।

यह घटना लवोव के इलाक़े में हुई एक लड़ाई के दौरान में १६ अगस्त को घटी। लड़ाई के वक़्त पावेल की टोपी ग़ायब हो गई और उसने अपने घोड़े

की रास खींची। अगले दस्ते पोलिश फ़ौजों को काटते हुए उनकी पाँतों में धँस चुके थे। उसी वक़्त नदी की ओर जाने के अपने रास्ते में झाड़ियों के बीच से घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ देमीदोव आया। पावेल के बग़ल से हवा की तेज़ी से गुज़रते हुए उसने चिल्लाकर कहा :

"डिवीज़न कमांडर मारे गये !"

पावेल चौंक पड़ा। लेतुनोव, उसका बहादुर कमांडर, वह अनोखा वीर मारा गया ! पावेल ग़ुस्से से पागल हो उठा।

अपनी तलवार की उलटी तरफ़ से उसने अपने थके हुए घोड़े गनेदको को कोंचा। घोड़े के मुँह की लगाम से ख़ून मिली झाग गिर रही थी। पावेल ने उसको एड़ लगाई और सबको चीरता हुआ उस जगह जा पहुँचा जहाँ लड़ाई सबसे गर्म थी।

"मार डालो इन घिनौने कीड़ों को, मार डालो ! इन पोलिश नवाबों को काट कर रख दो ! इन्होंने लेतुनोव को मार डाला है।" चिल्लाते हुए उसने हरी वर्दी पहने एक आदमी पर ज़ोर से तलवार का वार किया। अपने डिवीज़न कमांडर की मौत से ग़ुस्से में आकर उन घुड़सवारों ने पोलिश सिपाहियों की एक पूरी प्लैटून का सफ़ाया कर दिया।

दुश्मन का पीछा करते हुए वे लड़ाई के मैदान पर सरपट आगे भागे जा रहे थे, तभी एक पोलिश तोप आग उगलने लगी। उसके गोलों ने हवा को चीर दिया और चारों तरफ़ मौत की बरसात होने लगी।

एकाएक पावेल की आँखों के आगे कोई हरी-सी चीज़ इतने ज़ोर से चमकी कि उसने पावेल को अन्धा कर दिया; उसके कानों में बिजली की कड़क का सा शोर हुआ और लाल-लाल लोहा उसकी खोपड़ी को चीरता हुआ अन्दर चला गया। धरती एक अजीब और भयानक तरीक़े से घूमने लगी और फिर उसे ऐसा लगा जैसे वह धीरे-धीरे नीचे से ऊपर हुई जा रही हो।

फूस के एक तिनके की तरह पावेल घोड़े की पीठ पर से नीचे आ गिरा। गोले की मार से वह घोड़े के सिर के ऊपर से धरती पर बोरे की तरह गिर पड़ा।

तभी काली रात घिर आई।

नवाँ अध्याय



केंकड़े की आगे को निकली हुई बिल्ली के सिर के बराबर एक आँख है। यह चिकनी, लाल-लाल सी आँख बीच में हरी है और उसमें एक मद्धिम-प्रकाश दम-दम कर रहा है। केंकड़ा छोटी-छोटी टाँगों का एक घिनौना ढेर है। उसकी टाँगें एक दूसरे में उलझी हुई साँपों की तरह ऐंठती और बल खाती हैं और उस वक़्त उनकी रूखी खाल से बड़ी डरावनी सरसराहट होती है। केंकड़ा हिलता है। वह उसे अपनी आँखों के ठीक बगल में पाता है। और अब वह उसकी टाँगों को अपने शरीर पर रेंगता हुआ महसूस करता है। ये टाँगें ठंडी हैं और कौंटों की तरह उसके शरीर में चुभती हैं। केंकड़ा डंक मारता है और जोंक की तरह उसके सिर के भीतर धँसता है। ऐंठन और मरोड़ के साथ आगे बढ़ते हुए वह उसके खून को चूसने लगता है। उसे लगता है कि उसके शरीर का खून निकल-निकल कर केंकड़े के फूलते हुए शरीर में पहुँचता जा रहा है। केंकड़ा उसका खून पीता रहता है। उसकी पीड़ा असह्य है।

कहीं दूर, बहुत दूर से उसे आदमियों की आवाज़ें सुनाई देती हैं :

"अब इसकी नाड़ी कैसी है?"

और एक दूसरी आवाज़, किसी औरत की आवाज़, धीमे से जवाब देती है :

"इसकी नाड़ी की गति इस वक़्त १३८ है। टेम्परेचर १०३·१ है। पूरे वक़्त इसकी सरसाम की हालत है।"

केंकड़ा ग़ायब हो गया, मगर दर्द जारी है। पावेल ने महसूस किया कि किसी ने उसकी कलाई छुई। उसने आँखें खोलने की कोशिश की। मगर पलकें इतनी भारी थीं कि उनको उठाने की ताक़त उसमें नहीं थी। इतनी गरमी क्यों लग रही है? ज़रूर माँ ने अँगीठी जलाई है। और फिर उसे वे आवाज़ें सुनाई देती हैं :

"अब इसकी नाड़ी की गति १२२ है।"

वह पलकें खोलने की कोशिश करता है। मगर उसके अन्दर एक आग सी जल रही है। उसका दम घुट रहा है।

उसे सख़्त प्यास लगी है। उसे फ़ौरन उठ कर पानी पीना होगा। मगर वह उठता क्यों नहीं? वह उठने की कोशिश करता है, मगर उसके हाथ-पैर हिलने से इनकार कर देते हैं। उसका अपना शरीर उसके लिए अजनबी हो गया

है। माँ इसी वक़्त उसके लिए पानी लायेगी। वह उससे कहेगा, "मैं पानी पीना चाहता हूँ।" कोई चीज़ उसके बगल में हिलती है। कहीं यह वही केंकड़ा तो नहीं जो फिर से उस पर रेंगने की तैयारी कर रहा हो? वह देखो,....वह आ रहा है! उसे उसकी लाल-लाल आँखें दिखाई देती हैं....

दूर से नर्म मद्धिम आवाज़ आती है:

"फ्रोसिया, थोड़ा पानी लाओ!"

"यह किसका नाम है?" मगर याद करने की शक्ति उसके अन्दर नहीं रह गई है और अंधेरा एक बार फिर उसे अपनी चादर में ढाँक लेता है। फिर तत्काल अंधेरे से बाहर निकलने पर उसे याद आता है, "मैं प्यासा हूँ?"

और आवाज़ें कहती सुनाई देती हैं:

"लगता है इसे होश आ रहा है।"

वह कोमल प्यारी आवाज़ उसे अब अपने पास और स्पष्ट सुनाई देती है:

"तुम पानी पीना चाहते हो, कामरेड?"

"क्या मुझसे यह बात कह रही है? क्या मैं बीमार हूँ? अरे हाँ, मुझे टाइफस है। वही तो बात है।" और वह तीसरी बार अपनी पलकों को उठाने की कोशिश करता है। आख़िरकार उसे सफलता मिलती है। अपनी ज़रा सी खुली हुई आँखों के संकीर्ण दृष्टिपथ से जो पहली चीज़ उसकी चेतना में पहुँचती है, वह उसके सिर पर टँगी हुई एक लाल-लाल गेंद है। मगर उस लाल गेंद को एक काली चीज़ पोंछ कर अलग कर देती है—वह काली चीज़ जो उसके ऊपर झुकी हुई है। और उसके ओंठ गिलास के कठोर स्पर्श को और पानी की तरी को, उस प्राणदायिनी तरी को, महसूस करते हैं। उसके अन्दर की आग ठण्डी हो जाती है। सन्तुष्ट होकर वह धीरे से बुदबुदाता है, "अब कुछ अच्छा है।"

"तुम मुझे देख सकते हो, कामरेड?"

यह उसके पास खड़ी हुई आकृति है जो बोली है और बेहोशी की धुन्ध में डूबने के पहले वह किसी तरह इतना कह पाता है, "मैं देख नहीं सकता, सुन सकता हूँ...."

"भला बताओ, कौन सोच सकता था कि यह बच जायगा? मगर देखो कैसे इसकी ज़िन्दगी लौटी आ रही है! बड़ी मज़बूत काठी का आदमी है! नीना व्लादीमिरोवना, यह तुम्हारे लिए गर्व की बात है। सचमुच तुमने इसकी जान बचा ली है।"

और उस औरत की आवाज़, कुछ-कुछ काँपती हुई, जवाब देती है:

"कितनी खुश हूँ मैं आज!"

तेरह दिन की बेहोशी के बाद पावेल कोर्चागिन को होश आया। उसका नौजवान शरीर मरना नहीं चाहता था और धीरे-धीरे उसकी ताक़त लौट आई। यह पुनर्जन्म से कम न था, जैसे वह दुबारा पैदा हुआ हो। हर चीज़ नई और विलक्षण जान पड़ती थी। सिर्फ़ उसका सिर निश्चेष्ट और प्लास्टर में बँधे होने के कारण, असह्य रूप से भारी हो रहा था। उसको हिलाने की ताक़त उसके अन्दर नहीं थी। मगर बाक़ी शरीर में चेतना लौट आई और जल्दी ही वह अपनी उँगलियों को मोड़ने के योग्य हो गया।

फ़ौजी अस्पताल की छोटी डॉक्टर नीना व्लादीमिरोवना अपने कमरे में एक छोटी मेज़ के सामने बैठी हुई थी और अपनी मोटी, हलके गुलाबी और पीले रंग की नोटबुक के पन्ने उलट रही थी जिसमें साफ़-सुथरी तिरछी हैंडराइटिंग में लिखा हुआ था :

२६ अगस्त, १९२०

आज ऐम्बुलेंस की गाड़ी कुछ संगीन केस लाई। उनमें से एक के सिर में बहुत बुरी चोट है। हमने उसे खिड़की के पास कोने में लिटा दिया। अभी वह केवल सत्रह साल का है। उन्होंने मुझे एक लिफ़ाफ़ा दिया जिसमें उसकी जेब में पाये गए कागजात और उसकी केस-हिस्ट्री है। उसका नाम पावेल आन्द्रिएविच कोर्चागिन है। उसके कागजात में उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग की सदस्यता का एक पुराना घिसा हुआ कार्ड (नम्बर ९६७), लाल फ़ौज की एक फटी हुई शिनाख़्त किताब और एक रेजिमेंटल आर्डर की नक़ल है जिसमें लिखा है कि लाल फ़ौज के सैनिक कोर्चागिन को जाँच-पड़ताल का काम बहुत अच्छी तरह पूरा करने के उपलक्ष में पदक देने की माँग की गई है। उसमें एक पुर्जा भी है, जो ज़ाहिर है खुद उसी का लिखा हुआ है—"अगर मैं मर जाऊँ तो कृपया मेरे सम्बन्धियों को सूचना दे दीजिएगा : शेपेतोवका, रेलवे डिपो, मेकेनिक आर्तेम कोर्चागिन।"

१९ अगस्त को उसको गोले के छर्रे लगे थे। तब से वह बराबर बेहोश है। कल अनातोली स्तेपानोविच उसको देखेंगे।

२७ अगस्त

आज हमने कोर्चागिन के ज़ख्म की जाँच की। ज़ख्म बहुत गहरा है, सिर की हड्डी टूट गई है और सिर के पूरे दाहिने हिस्से को लक़वा मार गया है।

दाहिनी आँख की एक रग फट गई है जिसके कारण आँख बुरी तरह सूजी हुई है।

अनातोली स्तेपानोविच आँख निकाल देना चाहते थे ताकि सूजन और न बढ़े। मगर मैंने उन्हें ऐसा करने से रोका क्योंकि अब भी उम्मीद है कि सूजन कम हो जायगी। ऐसा करने में मुझे बस लड़के के चेहरे के बिगड़ने का खयाल था। लड़का ठीक हो सकता है, मगर बड़े दुख की बात होगी अगर उसका चेहरा बिगड़ गया।

पूरे वक़्त उसकी सरसाम की हालत रहती है और वह बेहद बेचैन रहता है। हममें से कोई न कोई हर समय उसके बिस्तर के पास मौजूद रहता है। मैं अपना ज़्यादा वक़्त उसी के पास गुज़ारती हूँ। अभी वह बहुत नौजवान है। यह उसकी मरने की उम्र नहीं है। मैंने संकल्प किया है कि उसकी नौजवान जिन्दगी को मौत के पंजों से छुड़ा लाऊँगी। मुझे सफल होना ही है।

कल अपनी ड्यूटी खतम होने के बाद मैं कई घंटे तक उसके वार्ड में रही। वहाँ जितने घायल आये हैं, उनमें सबसे खराब हालत उसी की है। मैं बैठी हुई उसके पागलों जैसे बकने-झकने को सुनती रही। कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे कोई कहानी सुन रही हूँ। और सचमुच, मुझे उसकी जिन्दगी की बहुत सी बातें मालूम हुई। मगर बीच-बीच में वह बहुत बुरी-बुरी गाली बकता है, बड़ी गन्दी जबान इस्तेमाल करता है। उसको इस तरह गाली बकते देखकर मुझको बड़ी चोट लगती है। अनातोली स्तेपानोविच को यकीन नहीं कि वह ठीक हो जायगा। वह बूढ़ा आदमी अपनी भारी आवाज में गुर्रा कर कहता है, "मेरी समझ में नहीं आता कि ये फ़ौज वाले ऐसे-ऐसे बच्चों को अपने साथ क्यों ले लेते हैं। बड़े शर्म की बात है।"

३० अगस्त

कोर्चागिन अब भी बेहोश है। अब उसे उस वार्ड में भेज दिया गया है जहाँ ऐसे लोग रखे जाते हैं जिनके बचने की उम्मीद नहीं होती। नर्स फ्रोसिया प्रायः पूरे वक़्त ही उसके पास रहती है। लगता है कि वह उसे जानती है। कभी दोनों ने साथ-साथ काम किया था। उसके साथ वह कितनी नरमी से पेश आती है। अब मुझे भी ऐसा लगने लगा है कि उसके बचने की उम्मीद नहीं है।

२ सितम्बर, ११ बजे रात

आज मेरे लिए यह बेहद खुशी का दिन था। मेरे मरीज कोर्चागिन को होश आ गया। खतरा टल गया है। पिछले दो रोज से मैं घर गई ही नहीं, अस्पताल में ही रही।

यह देख कर कि एक और जिन्दगी बच गई, मुझे कितनी खुशी हुई है। यह मैं बयान नहीं कर सकती। हमारे वार्ड में एक मौत कम। मेरे इस थका डालने वाले काम में सबसे राहतबख्श चीज है कि किसी मरीज का बच जाना। वे बिल-कुल बच्चों की तरह हो जाते हैं। उनका प्यार सच्चा और सीधा-सादा होता है और मुझे भी उनसे प्यार हो जाता है। इसीलिए जब वे यहाँ से जाते हैं तो मुझे अक्सर रोना आ जाता है। मैं जानती हूँ कि रोना पागलपन है; मगर मैं क्या करूँ, मुझे अपने ऊपर बस ही नहीं रहता।

१० सितम्बर

आज मैंने कोर्चागिन का पहला खत उसके घरवालों के लिये लिखा। उसने लिखवाया है कि उसका जख्म संगीन नहीं है और वह जल्द ही ठीक हो जायेगा और घर आयेगा। उसके शरीर का बहुत सा खून निकल गया है और वह प्रेत की तरह पीला हो गया है और अब भी बहुत कमजोर है।

१४ सितम्बर

आज पहली बार कोर्चागिन मुस्कराया। उसकी मुस्कराहट बड़ी प्यारी है। अक्सर वह अपनी उम्र से कहीं ज्यादा गम्भीर बना रहता है। उसके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक तेजी से सुधार हो रहा है। उसमें और फ्रोसिया में बड़ी दोस्ती है। मैं अक्सर फ्रोसिया को उसके सिरहाने देखती हूँ। वह जरूर मेरे बारे में उससे बातें करती होगी और स्पष्ट ही मेरा गुणगान करती होगी, क्योंकि अब यह लड़का एक हलकी सी मुस्कराहट से मेरा स्वागत करता है। कल उसने पूछा :

"डाक्टर, तुम्हारी बाँहों पर ये काले-काले निशान किस चीज के हैं?"

मैंने उसको नहीं बतलाया कि सरसाम की हालत में जब वह कसकर मेरी बाँहों को पकड़े हुए था, तो उसकी उंगलियों से ही वह जगह छिल गई थी, और ये निशान बन गए थे।

१७ सितम्बर

कोर्चागिन के माथे का घाव बहुत अच्छी तरह भर रहा है। जिस अनोखी हिम्मत से यह लड़का घाव की मरहम-पट्टी, धोने-धाने वगैरह की तकलीफ को बर्दाश्त करता है, उसको देख कर हम सब डाक्टर हैरान हैं।

अक्सर ऐसे वक्त मरीज बहुत कराहता है और परेशान करता है। मगर यह लड़का चुपचाप लेटा रहता है और जब उसके जख्म को खोल कर उसमें आइ-डिन लगाई जाती है, तो वह अपने को इस कदर जब्त रखता है जैसे वायलिन के

तार को खूब कस दिया गया हो। अक्सर वह बेहोश हो जाता है, मगर एक बार भी उसके मुँह से कराह निकलती नहीं सुनाई दी।

अब हम इस बात को जान गये हैं कि जब कोर्चागिन कराहता है तो इसका मतलब यह है कि वह होश में नहीं है। ताज्जुब है, उसमें इतनी ताक़त, इतनी सहन-शक्ति, आती कहाँ से है?

२१ सितम्बर

आज पहली बार हम लोग कोर्चागिन को उस बड़े वाले बारजे पर ले गये थे। उसका चेहरा कैसा चमक उठा जब उसने बाग़ीचे को देखा! कैसे भूखे की तरह वह ताज़ी हवा को जल्दी-जल्दी अपने फेफड़ों में भरने की कोशिश कर रहा था! उसका तमाम सिर पट्टियों से ढका हुआ है। सिर्फ़ एक आँख खुली है। और वह जानदार चमकती हुई आँख दुनिया को ऐसे देख रही थी जैसे पहली बार उसे देख रही हो।

२६ सितम्बर

आज दो युवतियाँ कोर्चागिन को पूछती हुईं अस्पताल आईं। मैं उनसे बात करने के लिए नीचे वेटिंग रूम में गई। उनमें से एक बहुत खूबसूरत थी। उन्होंने तोनिया तुमानोवा और तातियाना बुरानोव्स्काया के नाम से अपना परिचय दिया। मैंने तोनिया का नाम सुना था। सरसाम की हालत में कोर्चागिन ने तोनिया का नाम लिया था। मैंने उनको कोर्चागिन से मिलने की इजाजत दे दी।

८ अक्तूबर

कोर्चागिन अब अकेले बाग़ीचे में टहलता है। वह अक्सर मुझसे पूछता रहता है कि अस्पताल से उसको कब छुट्टी मिलेगी। मैं उसको बतलाती हूँ—जल्दी ही। वे दोनों लड़कियाँ हर मुलाक़ात के दिन उसको देखने आती हैं। अब मुझे मालूम हो गया कि वह क्यों कभी नहीं कराहता। मैंने उससे पूछा तो उसने जवाब दिया: "*द गैड-फ्लाई* पढ़ो, सारी बात तुम्हें मालूम हो जायगी।"

१४ अक्तूबर

आज कोर्चागिन को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। उसने बड़े स्नेही और आत्मीय व्यक्ति की तरह मुझसे विदा ली। उसकी आँख पर से पट्टी अलग कर दी गई है और अब सिर्फ़ उसका सिर बँधा हुआ है। उस आँख में रोशनी नहीं है, मगर देखने में उसमें कोई गड़बड़ी नज़र नहीं आती। ऐसे प्यारे नौजवान साथी से विदा होते समय बहुत दुख हुआ। मगर यही तो हमेशा होता है—ठीक होते ही वे लोग हमें छोड़ कर चल देते हैं और फिर शायद ही कभी मुलाक़ात होती है।

जाते जाते वह बोला : "कितने दुख की बात है कि चोट बाँयीं आँख में नहीं लगी। अब मैं गोली कैसे चलाऊँगा ?"

वह अब भी मोर्चे के बारे में सोचता रहता है।

अस्पताल से निकलने पर पावेल कुछ रोज़ बुरानोव्स्की के यहाँ रहा जहाँ तोनिया ठहरी हुई थी।

पावेल ने फ़ौरन तोनिया को कोमसोमोल के काम-काज में खींचने की कोशिश की। इसकी शुरुआत उसने तोनिया को शहर के कोमसोमोल की एक मीटिंग में आने के लिए दावत देकर की। तोनिया राज़ी हो गई। मगर जब वह उस कमरे से निकली जहाँ वह मीटिंग के लिए कपड़े पहन रही थी और शृंगार कर रही थी, तो पावेल ने उसे देख कर मारे क्षोभ के अपने ओंठ काट लिये। वह बहुत ही टाट के कपड़े पहने हुए थी और उन कपड़ों की अपनी एक ख़ास शान थी जो पावेल को कोमसोमोल की मीटिंग के लिए, वहाँ पर इकट्ठा हुए लोगों के ख़याल से बिलकुल नामुनासिब मालूम हुई।

यही उनके पहले झगड़े का कारण था। जब उसने तोनिया से पूछा कि उसने इस तरह के कपड़े क्यों पहने, तो तोनिया को बुरा लगा।

"मेरी समझ में नहीं आता कि मैं भी दूसरों ही की तरह क्यों लगूँ। लेकिन अगर मेरे कपड़े तुम्हें नहीं भाते तो मैं नहीं जाऊँगी।"

क्लब में उन फटे-पुराने ट्यूनिकों और मैले-कुचैले ब्लाउज़ों के बीच तोनिया के अच्छे-अच्छे कपड़े इतने भिन्न दिखाई दे रहे थे कि पावेल को बड़ी उलझन मालूम हुई। वे नौजवान अपने बीच तोनिया को ग़ैर समझ रहे थे। और तोनिया ने उन लोगों की असहमति देख कर ऐसा रुख अख़्तियार कर लिया जैसे उसे किसी की परवाह ही न हो और ये सारे लोग उससे हीन हों।

जहाज़ पर माल लादने के घाटों का जो कोमसोमोल संगठन था, उसके मंत्री पांकातोव ने, जो मोटे मारकीन की कमीज़ पहने हुए चौड़े कंधों का एक जहाज़ी था, पावेल को अलग ले जाकर, आँख से तोनिया की ओर इशारा करके नाराज़गी के स्वर में कहा :

"इस गुड़िया को तुम्हीं यहाँ लाये हो ?"

"हाँ," पावेल ने छोटा-सा रूखा जवाब दिया।

पांकातोव ने कहा, "हूँ···उसको देखकर तो ऐसा नहीं लगता कि वह कभी भी यहाँ खप सकती है। उसके रंग-ढंग तो बहुत पैसेवालों जैसे हैं। वह यहाँ आई कैसे ?"

पावेल की कनपटियाँ फड़कने लगीं।

"वह मेरी दोस्त है। मैं उसे यहाँ लाया हूँ। समझे? वह हमारे खिलाफ़ नहीं है, ज़रा भी नहीं, भले उसने बहुत अच्छे कपड़े पहन रखे हों। किसी के कपड़े देख कर ही उसके बारे में फ़ैसला नहीं दिया जा सकता। कामरेड, आप ही को नहीं, मुझको भी यह बात मालूम है कि किसे यहाँ लाना चाहिए और किसे नहीं। इसलिए आप इतने अफ़सरी अन्दाज़ में बात मत कीजिये।"

वह और भी तीखी और लगने वाली बात कहना चाहता था। मगर यह देख कर कि पांक्रातोव जो बात कह रहा है, उसमें बाकी सब लोगों की राय मिली हुई है, वह रुक गया और उसने अपना सारा गुस्सा तोनिया पर उतारा।

"मैंने कहा था न उससे कि यही बात होगी! खुदा जाने ये रुखोतेवर उसे क्यों भाते हैं, यह तड़क-भड़क उसे क्यों अच्छी लगती है?"

वह शाम उनकी दोस्ती के खातमे की शुरुआत की शाम थी। पावेल ने बहुत पीड़ा और मन की कड़ुवाहट से तोनिया के साथ अपने उस सम्बंध को टूटते देखा जो उसे इतना चिरस्थायी मालूम हो रहा था।

कुछ दिन और गुज़रे। और फिर, हर मुलाक़ात, हर बातचीत के साथ वे दोनों एक-दूसरे से दूर होते चले गये। तोनिया की यह घटिया ढंग की खुदपररती पावेल के लिए असह्य हो गई।

दोनों ने समझ लिया कि सम्बंध-विच्छेद अब अनिवार्य है।

आज वे कुपेचेस्की बाग़ में आख़िरी बार एक-दूसरे से मिले थे। रास्ते मुरझाई हुई पत्तियों से ढँके थे। वे पहाड़ की चोटी पर जँगले से टिके खड़े थे और नीचे नीपर के मटमैले नीले पानी को देख रहे थे। उस ऊँचे बेडौल पुल के पीछे से दो बड़े-बड़े बजरे खींच कर लाये जाते दिखाई दिये। डूबते हुए सूरज ने त्रुखानोव टापू पर जैसे सुनहरी कूँची फेर दी थी और मकानों की खिड़कियों में आग लगा दी थी।

तोनिया ने सूरज की सुनहरी किरणों को देखा और गहरी व्यथा के स्वर में कहा:

"हमारी दोस्ती क्या इसी डूबते हुए सूरज की तरह डूब जायेगी?"

पावेल जो तोनिया के चेहरे पर आँख गड़ाये उसकी रूप-सुधा का पान कर रहा था, कठोरता से भवें चढ़ा कर जवाब देते हुए धीमी आवाज़ में बोला:

"तोनिया, हम लोग पहले भी इस बारे में बात कर चुके हैं। तुम्हें मालूम है कि मैं तुमको प्यार करता था और अब भी मेरा प्यार लौट कर आ सकता है। मगर उसके लिए तुमको हमारे साथ आना होगा। मैं अब पहले का पावलुशा नहीं

रहा हूँ। और मैं तुम्हारे लिए अच्छा पति भी नहीं हो सकूँगा अगर तुम मुझसे यह उम्मीद करती हो कि मैं तुमको पार्टी के ऊपर तरजीह दूँगा। वजह यह है कि मैं सबसे पहले पार्टी को देखूँगा और तुमको और उन दूसरे लोगों को, जिनसे मैं प्यार करता हूँ, बाद में।"

तोनिया उदासी से नदी के गहरे नीले पानी को एकटक देख रही थी। उसकी आँखें डबडबाई हुई थीं।

पावेल ने तोनिया की उस पार्श्व छवि को देखा जिसे वह इतनी अच्छी तरह पहचानता था, उसने उसके घने सुनहले बालों को देखा और उसका मन उस लड़की के लिए दुख से कातर हो उठा जो कभी उसके इतने पास थी और उसे इतनी प्यारी थी।

उसने बड़ी कोमलता से उसके कन्धे पर अपना हाथ रखा।

"तोनिया, तुम अपने पुराने वातावरण से नाता तोड़ कर हम लोगों के साथ आ जाओ। आओ, हम लोग साथ मिल कर इन पूँजीशाहों के खातमे के लिए काम करें। हमारे साथ बहुत सी अच्छी-अच्छी लड़कियाँ हैं जो इस कठिन लड़ाई का बोझ उठा रही हैं, जो सारी तकलीफ़ों और मुसीबतों को सह रही हैं। हो सकता है, वे तुम्हारी तरह सुशिक्षित न हों। लेकिन बताओ, तुम क्यों हमारे साथ शरीक नहीं होना चाहती, आखिर क्यों? तुम कहती हो कि चुज़ानिन ने तुमको फुसलाने और खराब करने की कोशिश की। मगर वह तो पतित है ही। वह सैनिक थोड़े ही है। तुम कहती हो कि मेरे साथियों का बर्ताव तुम्हारे साथ दोस्ताना नहीं था। मगर तुम्हीं बताओ कि तुम वहाँ पर ऐसे कपड़े पहन कर क्यों गईं जैसे तुम अमीर लोगों के किसी नाच में जा रही हो? दोष तुम्हारे इस अहंकार का है: मैं वैसा ही गन्दा फटा-पुराना फ़ौजी ट्यूनिक क्यों पहनूँ जैसा सब लोग पहनते हैं, सिर्फ़ इसीलिए कि दूसरे लोग पहने हुए हैं? तुममें एक मजदूर से प्रेम करने का साहस था, मगर तुम एक विचारधारा से प्रेम नहीं कर सकती। मुझे तुमसे अलग होने का दुख है, और मैं तुम्हारी स्मृति को सँजो कर रखना चाहूँगा।"

पावेल ने और कुछ नहीं कहा।

दूसरे रोज उसने एक हुक्मनामा सड़क पर चिपका हुआ देखा जिस पर प्रादेशिक चेका के चेयरमैन जुखराई के दस्तखत थे। उसको देख कर पावेल का दिल बल्लियों उछल पड़ा। बड़ी मुश्किल से वह जुखराई के दफ़्तर में घुसने की इजाजत पा सका। सन्तरी उसे अन्दर जाने नहीं देते थे। और उसने इतना हंगामा खड़ा किया कि यह नौबत आ गयी कि उसे पकड़ लिया जाता। मगर अन्त में उसे कामयाबी मिली।

फ़ियोदोर दिल खोल कर उससे मिला। उसकी एक बाँह कटी हुई थी; तोप के एक गोले से वह उड़ गई थी।

बातचीत फ़ौरन काम के ऊपर आ गई। जुख़राई ने कहा, "जब तक तुम मोर्चे पर जाने के लिए फिर से ठीक नहीं हो जाते, तब तक तुम यहाँ पर क्रान्ति के दुश्मनों को कुचलने में मेरी मदद कर सकते हो। कल से ही काम शुरू कर दो।"

पोलिश क्रान्ति-विरोधियों के साथ लड़ाई ख़तम हो गई। लाल फ़ौजें दुश्मन को वारसा की दीवारों तक खदेड़ ले गईं। मगर चूँकि उनकी शारीरिक और फ़ौजी साज-सामान की ताक़त बहुत खर्च हो चुकी थी और उनके रसद और कुमक के अड्डे बहुत पीछे छूट गये थे, इसलिए वे उस आख़िरी क़िले को फ़तह नहीं कर सकीं और लौट आईं। इस तरह वह बात हुई जिसे पोल 'विश्चुला का चमत्कार' कहते हैं, यानी यह कि लाल फ़ौजें वारसा से लौट आईं और पोलैंड के पूँजीपतियों और जागीरदारों को नई ज़िन्दगी मिली। पोलैंड में सोवियत समाजवादी जनतन्त्र की स्थापना का स्वप्न अभी नहीं पूरा होना था।

ख़ून में भीगी हुई धरती कुछ विश्राम चाहती थी।

पावेल अपने घरवालों से नहीं मिल सका क्योंकि शेपेतोवका फिर पोलिश फ़ौजों के हाथ में आ गया था और फ़िलहाल अस्थायी रूप से उनकी सरहदी चौकी बना हुआ था। सुलह की बातचीत चल रही थी।

पावेल काम के सिलसिले में दिन-रात चेका में रहता था। उसे यह जान कर बड़ी परेशानी हुई कि उसके शहर पर पोलों का क़ब्ज़ा हो गया है।

"क्या इसका मतलब यह है कि अगर सन्धि-पत्र पर दस्तख़त हो जाते हैं तो मेरी माँ सरहद के उस पार रहेगी?" उसने जुख़राई से पूछा।

मगर फ़ियोदोर ने उसे दिलासा दिया।

"बहुत करके सीमा-रेखा नदी के साथ-साथ चल कर गोरिन के बीच से गुज़रेगी जिसका मतलब यह है कि तुम्हारा शहर हमारी तरफ़ होगा। बहरहाल जो भी हो, जल्द ही हमें इस बात का पता चल जायगा," जुख़राई ने कहा।

पोलिश मोर्चे से दक्खिन को डिवीज़नें भेजी जा रही थीं। क्योंकि जिस वक़्त जनतन्त्र पोलिश मोर्चे पर अपनी सारी ताक़त लगा रहा था, उसी वक़्त रैंगेल परिस्थिति का फ़ायदा उठा कर क्रीमिया की अपनी खोह में से निकल आया और

नीपर नदी के किनारे-किनारे उत्तर की ओर बढ़ने लगा। उस वक़्त उसकी निगाह येकातेरीनोस्लाव प्रदेश पर थी।

अब चूँकि पोलों के संग लड़ाई ख़तम हो गई थी, रिपब्लिक ने अपनी फ़ौजें क्रान्ति-विरोधियों के इस अन्तिम अड्डे को ख़तम करने के लिए क्रीमिया भेजी।

रेलगाड़ियाँ भर-भरकर सैनिक, गाड़ियाँ, मैदानी बावर्चीखाने और तोपें दक्खिन के रास्ते में कीव से होकर गुज़र रही थीं। इस इलाक़े के ट्रान्सपोर्ट विभाग का चेका इन दिनों भूत की तरह काम कर रहा था क्योंकि उसे आमद-रफ़्त की बाढ़ से पैदा होने वाली तमाम कठिनाइयों का हर वक़्त सामना करना पड़ता था। स्टेशनों पर रेलगाड़ियाँ अटी पड़ी थीं और अक्सर आमद-रफ़्त रोकनी पड़ती थी क्योंकि रेलवे लाइन खाली न मिलती थी। तार के ऑपरेटर अनगिनत परवाने टपटपा कर ख़बर देते कि किस डिवीज़न के लिए लाइन खाली हो गई है। उनको डिवीज़नों से आये हुए सन्देशों का भी भाष्य करना पड़ता, जो सब इस बात की माँग करते कि सबसे पहले उनकी ज़रूरत को पूरा किया जाय : "सबसे पहले हमें लाइन दीजिए····यह फ़ौजी हुक्म है····फ़ौरन लाइन को खाली कीजिए····।" और हर सन्देश के साथ यह चेतावनी रहती कि अगर हुक्म पूरा नहीं किया गया तो क्रान्तिकारी फ़ौजी अदालत के सामने मामला पेश किया जायगा।

आमद-रफ़्त को बग़ैर किसी रोक-टोक के चालू रखने की ज़िम्मेदारी शहर के यातायात के चेका की थी।

फ़ौजी टुकड़ियों के कमांडर अपनी पिस्तौल चमकाते हुए चेका के हेड-क्वार्टर में आते और माँग करते कि तार नम्बर फलाँ-फलाँ के अनुसार, जिस पर फ़ौज के कमांडर के दस्तख़त हैं, फ़ौरन उनकी गाड़ी रवाना की जाय। कोई भी यह बात मानने के लिए तैयार न होता कि ऐसा करना मुमकिन नहीं है। "तुम्हारी जान पर बनेगी तो गाड़ी को रवाना करोगे।" और उसके बाद गाली-गुफ़्ता शुरू हो जाता। ख़ास तौर पर संगीन मामलों में जुखराई को फ़ौरन बुलाया जाता और तब फिर वे आवेश से पागल आदमी, जो एक-दूसरे को गोली से उड़ा देने के लिए तैयार खड़े रहते, शान्त हो जाते। इस लोहे के आदमी को देख कर, जिसकी आवाज़ बहुत मद्धिम और ठण्डी थी और जो किसी तरह के बहस-मुबाहसे को पसन्द नहीं करता था, पिस्तौलें वापिस अपनी जगह पहुँच जातीं।

कभी-कभी पावेल जब अपने दफ़्तर से लड़खड़ाता हुआ निकल कर बाहर आता तो उसे अपने सिर में ऐसा दर्द मालूम होता जैसे कोई उसे छुरियाँ मार रहा हो। इन दिनों चेका में वह जो काम कर रहा था, उसका उसकी नसों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा था।

एक दिन उसने गोले-बारूद से लदे मालगाड़ी के खुले डब्बे पर सर्गेई ब्रुजाक को देखा। सर्गेई डब्बे से कूद कर पावेल की ओर आया, इतनी तेज़ी से कि पावेल के पैर उखड़ते-उखड़ते बचे, और अपने दोस्त को बाँहों में भर लिया।

"पावका, बदमाश! देखते ही मैं पहचान गया कि तुम्हीं होगे।"

इन दोनों लड़कों के पास एक-दूसरे को बतलाने के लिए इतनी खबरें थीं कि उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि शुरू कहाँ से करें। उनकी आखिरी मुलाक़ात के वक़्त से अब तक दोनों के संग इतनी बहुत सी बातें गुज़री थीं। वे एक-दूसरे से सवाल पर सवाल किये जा रहे थे और जवाब का इन्तज़ार किये बिना बोलते चले जा रहे थे। अपनी बातचीत में वे इतने डूबे हुए थे कि उन्होंने इंजन की सीटी भी नहीं सुनी। वह तो जब गाड़ी स्टेशन से बाहर जाने लगी तब कहीं दोनों अलग हुए।

अब भी उन्हें एक-दूसरे से बहुत सी बातें करनी थी। मगर रेल की रफ़्तार तेज़ होती जा रही थी और सर्गेई चिल्ला कर अपने दोस्त से कुछ कहता हुआ प्लेटफ़ार्म पर दौड़ा और माल के एक डब्बे के खुले दरवाज़े को पकड़ कर गाड़ी पर चढ़ गया। डब्बे के अन्दर के बहुत से हाथों ने उसे पकड़ कर अन्दर खींच लिया। पावेल ने उसको जाते देखा तो यकायक उसे ध्यान आया कि सर्गेई को वालिया की मृत्यु के बारे में कुछ भी मालूम नहीं क्योंकि शेपेतोवका छोड़ने के बाद फिर वह वहाँ नहीं गया था और यह मुलाक़ात ऐसी अचानक थी कि पावेल उसको यह बात बताना भी भूल गया।

"अच्छा ही है कि उसे नहीं मालूम, दिमाग़ पर कोई बोझ न रहेगा," पावेल ने सोचा। उसे नहीं मालूम था कि अब वह फिर कभी अपने दोस्त को नहीं देख सकेगा। न ही सर्गेई को यह मालूम था कि वह अपनी मौत के पास जा रहा है। उस वक़्त वह डब्बे की छत पर खड़ा हुआ था और पतझड़ की हवा आकर उसके खुले हुए सीने से टकरा रही थी।

"वहाँ से उतर आओ सर्योजा," दोरोशेंको ने कहा। दोरोशेंको लाल सेना का आदमी था और उसके कोट के पीछे एक सूराख था जो जलने से बन गया था।

"ठीक है, घबराने की कोई बात नहीं," सर्गेई ने हँसते हुए कहा, "हवा की और मेरी बड़ी दोस्ती है।"

एक हफ्ते बाद अपनी पहली ही लड़ाई में उसको गोली लगी। वह लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा, उसके सीने में भयंकर दर्द हो रहा था जैसे अन्दर से उसे कोई चीरे डाल रहा हो। उसने हवा को पकड़ने की कोशिश की और अपने

सीने को बाँहों से कस कर दबाये, लड़खड़ाया और वहीं ज़मीन पर ढेर हो गया। उसकी बुझी हुई नीली आँखें उक्रेन के स्तेपी के अनन्त विस्तार को एकटक देखती रह गईं।

चेका का काम पावेल को बहुत ही कमज़ोर करता जा रहा था। उसकी तन्दुरुस्ती पर इसका बहुत बुरा असर पड़ रहा था। उसके सिर का तेज़ दर्द अब ज़्यादा बार होने लगा। मगर उसने जुखराई से इस चीज़ के बारे में तब तक कुछ नहीं कहा जब तक कि एक रोज़ दो विनिद्र रातों के बाद वह बेहोश नहीं हो गया।

"फ़ियोदोर, तुम्हारे ख़याल से क्या यह अच्छा न होगा कि मैं कुछ और काम करूँ? सबसे ज़्यादा पसन्द तो मुझे कारखाने में अपने पुराने धन्धे पर काम करना है। मुझे लगता है कि मेरे सिर में कुछ गड़बड़ी है। मेडिकल कमीशन के लोगों ने मुझे बतलाया था कि अब मैं फ़ौजी सर्विस के अयोग्य हूँ। मगर इस तरह का काम तो मोर्चे पर के काम से भी बुरा है। दो दिन जो हम लोग सुतिर के गिरोह के लोगों को पकड़ते रहे, उसने मेरा बिलकुल पटरा कर दिया है। मुझे इन लड़ाइयों से विश्राम लेना ही होगा। देखो न फ़ियोदोर, अगर मैं ठीक से अपने पैरों पर खड़ा भी नहीं हो सकता तो तुम्हारे किस काम का।"

जुखराई ने चिन्तित होकर पावेल के चेहरे को ग़ौर से देखा।

"हाँ, तुम्हारा हाल अच्छा नहीं नज़र आता। यह सब मेरी ही ग़लती है। मुझे बहुत पहले ही तुम्हें छुट्टी दे देनी चाहिए थी। मगर मैं काम में इस तरह डूबा रहा कि मुझे इस बात का ख़याल ही नहीं आया।"

इस बातचीत के बाद पावेल ने कोमसोमोल की प्रादेशिक कमिटी के सामने अपने-आपको इस सर्टिफ़िकेट के साथ पेश किया कि उसे कमिटी के काम के लिए भेजा जा रहा है। एक अफ़सरी ढंग के लड़के ने, जिसने बड़ी बाँकी अदा से अपनी टोपी नीचे नाक तक खींच रखी थी, जल्दी-जल्दी उस काग़ज़ को देखा और पावेल को आँख मारते हुए बोला:

"चेका से आ रहे हो, क्यों? बड़ा मज़ेदार संगठन है वह भी। हम लोग अभी पलक मारते तुम्हारे लिए कोई काम ढूँढ़ निकालेंगे। हमें तो जो लोग भी मिल सकें सबकी ज़रूरत है। कहाँ जाना चाहोगे तुम? कमिसारी विभाग में? नहीं? अच्छा। नीचे घाट पर का प्रचार विभाग कैसा रहेगा? नहीं। तब तो बहुत बुरा हुआ। काम तो अच्छा है, ज़्यादा काम भी नहीं है और ख़ास राशन भी मिलता है।"

पावेल ने उसको बीच में ही टोका।

उसने कहा, "मैं तो कारखाने में काम करना पसन्द करूँगा, लोको में।" लड़के ने आश्चर्य से उसकी तरफ़ देखा और कहा, "लोको में? हूँ···· वहाँ तो शायद हमें किसी की जरूरत नहीं है। मगर तुम उस्तिनोविच के पास जाओ। वह किसी जगह तुम्हें काम पर लगा देगी।"

गन्दुमी रंग की उस्तिनोविच के साथ थोड़ी देर की मुलाक़ात के बाद यह फ़ैसला किया गया कि पावेल को रेल के कारखाने में, जहाँ पर वह काम करने वाला था, कोमसोमोल के संगठन का मन्त्री बनाया जाय।

इस बीच क्रान्ति-विरोधी फ़ौजें क्रीमिया के प्रवेश-मार्ग की क़िलेबन्दी कर रही थीं और अब जमीन के इस छोटे से टुकड़े पर, जहाँ पहले कभी क्रीमिया के तातारों और जापोरोजिये के कौसेकों की बस्तियों की सरहदें मिलती थीं, पेरेकोप की आधुनिक क़िलेबन्दी की क़तारें खड़ी थीं।

और यहाँ क्रीमिया में, पेरेकोप के पीछे, पुरानी दुनिया देश के कोने-कोने से खदेड़ी जाकर शराब के दौरों और नाच-रंग में मस्त थी। उसे आने वाले विनाश का कोई पता न था और नाच-रंग में मस्त वह अपने को बहुत महफ़ूज़ समझ रही थी।

पतझड़ की एक बेहद सर्द, नम रात को हजारों मेहनतकशों के बेटे रात के अन्धेरे में पार उतर कर किले में बन्द दुश्मन पर पीछे से हमला करने के लिए, सिवाश के बर्फ़ानी पानी में खाड़ी पार करने के लिए उतरे। उन हजारों लोगों में इवान जार्की भी था जो अपनी मशीनगन को सिर पर उठाये हुए था ताकि वह भीगे नहीं।

और जब सवेरे क़िलेबन्दियों पर सामने से हमला हुआ और पेरेकोप में खलबली मची तो उसी वक़्त उन पहले दस्तों ने, जो सिवाश नदी में उतरे थे, लितोव्स्की प्रायद्वीप पर नदी के पार उतर कर पीछे से दुश्मन पर हमला किया। और उस चट्टानी साहिल पर चढ़ने वाले पहले आदमियों में इवान जार्की भी था।

बड़ी खूँखार लड़ाई हुई। नदी से बाहर निकलते हुए लाल सैनिकों पर दुश्मन की घुड़सवार फ़ौज ने जोरों से हमला किया। जार्की की मशीनगन मौत उगलने लगी, उसकी मौत की बरसात करने वाली कड़कड़ाहट पल भर को भी न थमती थी। उसकी गोलियों की बौछार से दुश्मन के सिपाही और घोड़े ढेर होते

जा रहे थे। जार्की बला की तेजी से अपनी मशीनगन में कारतूसों की नयी-नयी पेटियाँ लगाता जा रहा था।

पेरेकोप ने सैकड़ों तोपों की गरज से जवाब दिया। उस वक़्त लगता था जैसे धरती रसातल को चली जा रही है और हजारों तोप के गोले कान को फाड़ने वाली चीखों से आसमान को चीर रहे थे। गोलों के कान के पर्दे फाड़ देने वाले धड़ाके हो रहे थे, उनके अनगिनत छर्रे दूर-दूर तक फैल रहे थे और लाशें गिर रही थीं। घायल और विदीर्ण धरती की छाती से काले-काले बादलों के फव्वारे छूट रहे थे जिन्होंने सूरज को भी ढँक लिया था।

दैत्य का सिर कुचल दिया गया था और पहली घुड़सवार फ़ौज की लाल बाढ़ दुश्मन पर आखिरी हमला करने के लिए क्रीमिया में दाखिल हो गई। दहशत के मारे दुश्मन के सिपाही बन्दरगाहों से छूटते हुए जहाजों पर चढ़ने के लिए आपस में धक्कम-धक्का कर रहे थे।

रिपब्लिक ने उन मैली-कुचैली ट्यूनिकों पर, जिनके नीचे भी कभी मर्दों के मजबूत दिल धड़कते थे, 'आर्डर आफ द रेड बैनर' का सुनहला पदक लगा दिया और इन ट्यूनिकों में से एक कोमसोमोल के तोपची इवान जार्की की थी।

पोलों से सन्धि हुई, और जैसा कि ज़ुखराई ने कहा था, शेपेतोवका सोवियत उक्रेन में रहा। शहर से लगभग तीस मील दूर की एक नदी विभाजन रेखा बनी।

दिसम्बर १९२० की एक कभी न भूलनेवाली सुबह को पावेल अपने शहर में आया। वह बरफ से ढँके हुए प्लेटफार्म पर उतरा, स्टेशन का नाम पत्थर की पटिया पर पढ़ा, बाँयी ओर मुड़ा और सीधे डिपो में जाकर आर्तेम का पता लगाया। लेकिन उसका भाई वहाँ नही था। अपने फ़ौजी कोट को और भी कस कर बदन में लपेटता हुआ पावेल लम्बे-लम्बे क़दमों से जंगल के बीच से होकर शहर को चला।

दरवाजे पर दस्तक पड़ी तो मारिया याकोवलेवना मुड़ी और बोली, "चले आओ।" बरफ से ढँकी एक आकृति घर के अन्दर दाखिल हुई और माँ ने अपने प्यारे बेटे के चेहरे को देखा। उसका हाथ अपने सीने पर गया और उसके अन्दर जो खुशी का जोश उमड़ रहा था, उसने उसकी वाणी छीन ली।

वह अपने बेटे के सीने पर गिर पड़ी और उसके चेहरे को अपने चुम्बनों से नहला दिया। खुशी के आँसू उसके गालों पर बह रहे थे। पावेल ने उस दुबले-पतले छोटे से शरीर को कस कर अपने सीने से लगा लिया और खामोशी से अपनी माँ के परेशान चेहरे को देखा जिस पर पीड़ा और चिन्ता की गहरी लकीरें थीं, और माँ के शान्त होने का इन्तजार करने लगा।

एक बार फिर माँ की आँखों में, जिसने इतनी मुसीबतें देखी थीं, खुशी की रोशनी चमकने लगी। मालूम होता था कि अपने बेटे को देखते रहने से, जिसको दुबारा फिर कभी देखने की उसे उम्मीद बाकी नहीं बची थी, उसका जी ही नहीं भरेगा। उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा जब तीन दिन बाद बहुत रात गये आर्तेम भी अपना थैला कन्धे पर डाले उस छोटी सी कोठरी में आ पहुँचा।

कोर्चागिन परिवार के लोग फिर मिल गये। दोनों भाई मौत के मुँह से बच कर निकल आये थे और एक से एक भयानक अग्नि-परीक्षाओं के बाद वे फिर मिल रहे थे।

"अब तुम लोग क्या करने जा रहे हो?" माँ ने अपने बेटों से पूछा।

आर्तेम ने खुश-खुश जवाब दिया, "मेरे लिए तो फिर वही रेल का कारखाना है, माँ!"

जहाँ तक पावेल की बात थी, दो हफ़्ते घर पर गुज़ार कर वह वापिस कीव लौट गया। उसका काम वहाँ उसकी राह देख रहा था।



दूसरा भाग

दसवाँ अध्याय

आधी रात। आखिरी ट्राम गाड़ी अपना थकान से चूर शरीर लिए डिपो में लौट आई है। चाँद की ठण्डी रोशनी खिड़की की चौखट पर पड़ रही है और चमकती हुई दूधिया चादर की तरह बिस्तर पर बिछी हुई है। बाक़ी कमरा अन्धेरा-सा है। कोने में मेज़ पर रिता एक मोटी कापी पर झुकी हुई है, जो कि उसकी डायरी है, और मेज़ पर की बत्ती की रोशनी कापी पर पड़ रही है। पेन्सिल की तेज़ नोक ये शब्द लिखती जा रही है :

"२४ मई

"मैं अपने इम्प्रेशन लिखने की एक बार फिर कोशिश करूँगी। बहुत दिनों से मैंने नहीं लिखा। पिछली बार जब मैंने डायरी में लिखा था, तब से अब तक छः हफ़्ते गुज़र गये हैं। मगर क्या किया जाय, मजबूरी है।

"डायरी लिखने के लिए मुझे वक़्त कहाँ से मिले? आधी रात गुज़र चुकी है और यह देखो मैं बैठी लिख रही हूँ। नींद मुझे नहीं आती। कामरेड सेगल हम लोगों को छोड़कर जा रहे हैं : उन्हें केन्द्रीय समिति में काम करना है। इस ख़बर से हम सबको बड़ा धक्का लगा। बड़े ही लाजवाब आदमी हैं हमारे लज़ार अलेक्ज़ान्द्रोविच। अब तक मैंने इस बात को नहीं समझा था कि हमारे लिए उनकी दोस्ती की इतनी बड़ी अहमियत है। उनके चले जाने पर द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का क्लास नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा। कल बड़ी रात गये तक बैठे बैठे 'शिष्यों' की प्रगति का लेखा-जोखा होता रहा। कोमसोमोल की सूबा कमिटी का मन्त्री अकिम आया था, और बदशकल तुफ़्ता भी। इन सर्वज्ञ महाशय से मुझे बड़ी चिढ़ है! सेगल बड़े खुश हुए जब उनके शिष्य कोर्चागिन ने पार्टी इतिहास

पर होने वाली बहस में तुफ्ता को परास्त कर दिया। हाँ, ये दो महीने बर्बाद नहीं हुए। मेहनत करना बुरा नहीं लगता जब उसका इतना अच्छा नतीजा दिखाई देता हो। उड़ती खबर सुनी है कि जुखराई का तबादला फ़ौजी इलाक़े के स्पेशल डिपार्टमेंट में किया जा रहा है। पता नहीं क्यों।

" लज़ार अलेक्ज़ान्द्रोविच ने अपने शिष्य को मुझे सौंप दिया है। उन्होंने कहा, ' मैंने जो काम शुरू किया है उसको तुम्हें पूरा करना होगा। आधे रास्ते पर न रुक जाना। रिता, तुम और वह दोनों एक-दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उस लड़के में संगठित ढंग से काम करने की अभी ज़रा कमी है। सरकश मिज़ाज का लड़का है और अक्सर भावनाओं के बहाव में बह जा सकता है। मेरा खयाल है कि तुम उसके लिए बहुत अच्छी मार्गदर्शिका बन सकोगी, रिता। मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूँ। मेरे मास्को पहुँचने पर मुझे चिट्ठी लिखना मत भूल जाना।'

" आज सोलोमेंस्की ज़िला कमिटी के लिए केन्द्रीय समिति ने एक नया मन्त्री भेज दिया है। उसका नाम जार्की है। मैं उसे फ़ौज में जानती थी!

" कल दिमित्री दुबावा कोर्चागिन को लायेगा। मैं दुबावा की हुलिया बताने की कोशिश करती हूँ। मँझोला कद, हट्टा-कट्टा और गठीला बदन। १९१८ में कोमसोमोल में आया और १९२० से पार्टी मेम्बर है। वह उन तीन लोगों में से एक है जिन्हें 'मज़दूरों के विरोधी दल' में शरीक होने के कारण कोमसोमोल की सूबा कमिटी से निकाला गया था। उसको सही रास्ते पर लाना आसान काम नहीं रहा है। हर रोज वह सवालों की झड़ी लगाकर हमें मुख्य विषय से दूर खींच ले जाता था और हमारे कार्यक्रम को उलट-पुलट देता था। उसमें और मेरी शिष्या ओल्गा यूरेनेवा में बिलकुल नहीं बनी। अपनी पहली ही मुलाक़ात में दुबावा ने उसको ऊपर से नीचे तक देखा और बोला, ' भाई तुम्हारी सज-धज ज़रा भी ठीक नहीं है। तुम्हें चमड़े की गद्दी वाले पैंट पहनना चाहिए, जूतों में कील लगानी चाहिए, बुयौनी के घुड़सवारों वाला हैट लगाना चाहिए और हाथ में तलवार लेनी चाहिए। इस तरह से कुछ बात ही न बनी, तुम चोंचों का मुरब्बा होकर रह गईं।'

" ज़ाहिर है, ओल्गा को यह बात बहुत बुरी लगी और मुझे बीच-बचाव करना पड़ा। मेरा खयाल है दुबावा कोर्चागिन का दोस्त है। अच्छा आज रात, अब बस। सोने का वक़्त हो गया।"

जलते हुए सूरज की तपन से धरती कुम्हलाई जा रही थी। रेलवे प्लेटफ़ार्म के पुल की रेलिंग इतनी गर्म हो रही थी कि उसको छूते हाथ जलता था। गरमी से थके हुए चूर लोग-बाग धीरे-धीरे पुल पर चढ़ रहे थे। उनमें से ज़्यादातर मुसाफ़िर नहीं थे बल्कि वहीं आस-पास के रहने वाले लोग थे जो शहर पहुँचने के लिए पुल पार करके जाया करते थे।

पुल से नीचे उतरने पर पावेल ने रिता को देखा। वह उससे पहले ही स्टेशन पहुँच गई थी और पुल पर से उतरते हुए लोगों को देख रही थी।

पावेल उससे लगभग तीन गज़ की दूरी पर रुक गया। रिता ने उसको नहीं देखा और पावेल एक नई ही दिलचस्पी से ग़ौर से उसको देखता रहा। वह धारीदार ब्लाउज और किसी सस्ते कपड़े का छोटा सा नीला स्कर्ट पहने हुए थी। उसके कन्धे पर एक मुलायम चमड़े का जाकट पड़ा हुआ था। उसका धूप से तपा हुआ चेहरा था और उस चेहरे को जैसे फ्रेम में जड़ते हुए उसके रूखे बाल उड़ रहे थे। वह अपने सिर को ज़रा पीछे फेंक कर खड़ी हुई थी और सूरज की चमक के कारण उसकी आँखें चौंधिया रही थीं। उसको वैसे खड़ा देखकर कोर्चागिन को पहली बार महसूस हुआ कि उसकी शिक्षक और मित्र रिता कोमसोमोल प्रादेशिक कमिटी के ब्यूरो की मेम्बर ही नहीं, बल्कि....। अपने मन में आये हुए उन 'पापपूर्ण' विचारों के कारण खीझ अनुभव करते हुए उसने रिता को आवाज़ दी।

"मैं पूरे एक घंटे से तुम्हें अपलक देख रहा हूँ मगर तुमने मुझे देखा ही नहीं," वह हँसा, "चलो हमारी गाड़ी आ गई है।"

वे प्लेटफ़ार्म के दरवाज़े पर पहुँचे।

उसके एक रोज़ पहले प्रादेशिक कमिटी ने कोमसोमोल के एक जिला सम्मेलन के लिए रिता को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था और कोर्चागिन को उसके सहायक के रूप में जाना था। उनकी तात्कालिक समस्या थी गाड़ी पर चढ़ना, जिसे हल करना कोई आसान काम नहीं था। गाड़ियाँ कभी ही कभी छूटती थीं और जिन दिनों वे छूटती थीं, उन दिनों रेलवे स्टेशन पर पाँच जनों की एक सर्वशक्तिमान कमिटी का कब्जा हो जाता था जिसके परमिट के बिना कोई प्लेटफ़ार्म पर दाखिल नहीं हो सकता था। प्लेटफ़ार्म के सारे दरवाज़ों और रास्तों पर कमिटी के आदमी पहरा दिया करते थे। पहले से ही बुरी तरह भरी हुई गाड़ियाँ उत्सुक मुसाफ़िरों की भीड़ के बहुत थोड़े से लोगों को ही अपने साथ ले जा पाती थीं। मगर कोई भी पीछे छूटना नहीं चाहता था, क्योंकि इसका मतलब होता था अगली गाड़ी के लिए कई-कई दिन तक इन्तज़ार करना, जो पता नहीं कब आये। इसलिए हज़ारों आदमी रेल के डब्बों तक पहुँचने के लिए प्लेटफ़ार्म के दरवाज़ों

पर आपस में लड़ा-भिड़ा करते थे। उन दिनों स्टेशन की हालत बिलकुल घिरे हुए क़िले की सी रहती थी और कभी-कभी जमकर लड़ाई भी हो जाती थी।

प्लेटफ़ार्म के दरवाज़े पर जो ज़बर्दस्त भीड़ जमा थी, उसके बीच से निकलने की रिता और पावेल ने कोशिश की। लेकिन जब इसमें वे सफल नहीं हुए तो पावेल, जो स्टेशन के अन्दर जाने और स्टेशन से बाहर आने के सारे रास्ते जानता था, रिता को मालघर के अन्दर से ले गया। बड़ी मुश्किल से वे लोग चौथे नम्बर के डब्बे तक पहुँचे। डब्बे के दरवाज़े पर गरमी के मारे पसीने में सराबोर चेका का एक आदमी खड़ा था जो भीड़ को रोकने की कोशिश कर रहा था और बार-बार एक ही बात दुहरा रहा था :

"डब्बा भरा हुआ है और बफ़र या गाड़ी की छत पर चढ़ना क़ायदे के खिलाफ़ है।"

तैश खाये हुए मुसाफिर उस सिपाही पर टूटे पड़ते थे और कमिटी से मिले हुए अपने टिकटों को उसकी नाक के नीचे घुसेड़-घुसेड़कर दिखलाते थे। हर डब्बे के आगे गाली-गुफ्ते, शोर-शराबे, धक्कम-धक्के का बाज़ार गर्म था। पावेल ने समझ लिया कि क़ायदे से गाड़ी में चढ़ना नामुमकिन है। मगर चढ़ना उन्हें है ही, नहीं तो सम्मेलन स्थगित करना पड़ेगा।

रिता को अलग ले जाकर उसने तय किया कि हमें क्या करना चाहिए : पावेल धक्का देकर डब्बे के अन्दर घुस जायगा और खिड़की खोलकर उसमे से रिता को अन्दर खींच लेगा। दूसरा कोई रास्ता नहीं था।

"मुझे ज़रा अपना वह जाकट दे दो। किसी भी परिचय-पत्र से ज़्यादा अच्छा रहेगा वह।"

उसने जाकट पहन लिया और अपना पिस्तौल इस तरह जेब में रखा कि उसका हत्था और उससे लगी हुई रस्सी दिखाई दे रही थी। सामान रिता के पास छोड़ कर वह डब्बे के पास पहुँचा और शोर मचाते हुए मुसाफ़िरों की भीड़ को कोहनियों से चीरता हुआ दरवाज़े पर पहुँच कर उसने उसके डण्डे को पकड़ लिया।

"ए कामरेड, कहाँ चढ़े जा रहे हो?"

पावेल ने पीछे मुड़ कर बहुत लापरवाही से उस भारी-भरकम सिपाही को देखा।

"मैं एरिया स्पेशल डिपार्टमेंट का आदमी हूँ। मैं देखना चाहता हूँ कि इस डब्बे के तमाम मुसाफिरों के पास कमिटी के दिये हुए टिकट हैं या नहीं," उसने ऐसे स्वर में कहा कि किसी को उसके पद के बारे में सन्देह नहीं हो सकता था।

चेका के सिपाही ने पावेल की जेब पर नज़र डाली और आस्तीन से अपने माथे का पसीना पोंछते हुए थके स्वर में कहा :

" घुस सको तो घुस जाओ । "

अपने हाथों, कन्धों और यहाँ-वहाँ अपने घूँसों का अच्छी तरह इस्तेमाल करते हुए, ऊपर वाली बर्थ को पकड़कर और नीचे की फर्श पर अपना सामान फैलाकर उस पर बैठे हुए मुसाफ़िरों को लांघता हुआ, पावेल डब्बे के बीचोबीच जा पहुँचा । चारों तरफ़ से उस पर गालियों की बौछार हो रही थी, मगर इसकी उसे कोई परवाह नहीं थी ।

नीचे फ़र्श पर उतरते हुए कहीं ग़लती से उसका पैर एक मोटी-ताजी औरत के घुटने से छू गया और उसके घुटने का छूना था कि वह औरत ज़ोर से चीखी, " अन्धे हो, दिखाई नहीं देता, कहाँ जा रहे हो ! लेकर मेरा पैर कुचल दिया ! " किसी तरह अपना साढ़े तीन मन का शरीर लिये वह औरत एक सीट के सिरे पर सँकस कर बैठी थी और अपने घुटनों के बीच में बनस्पति तेल का एक बड़ा सा पीपा रखे हुए थी । सामान रखने की सारी जगहें इसी तरह के डब्बों, पीपों, डलियों, पिटारों, बोरों से भरी हुई थीं । डब्बे में दम घुटता था ।

गाली की कुछ परवाह न करते हुए पावेल ने माँग की, " आपका टिकट ! "

" क्या मेरा ! " उस औरत ने इस अनचाहे इन्स्पेक्टर को डपट कर जवाब दिया ।

सबसे ऊपर वाली बर्थ से एक सिर निकला और एक भद्दी भारी सी आवाज़ सुनाई दी : " यास्का, यह हरामज़ादा यहाँ क्या करने आया है । उसे ज़रा बढ़कर जहन्नुम का टिकट तो दे दो ! "

पावेल ने अपने सिर के ठीक ऊपर एक विशाल आकृति और घने बालों से ढँका हुआ सीना देखा और समझ गया कि यही यास्का है । एक जोड़ा लाल-लाल आँखें उसे घूर रही थीं ।

" छोड़ दो, इस महिला को छोड़ दो । टिकट तुम्हें किस बात का चाहिए ? "

बग़ल की एक ऊपर वाली बर्थ से चार जोड़ा टांगें झूल रही थीं और उनके मालिक एक दूसरे के कन्धों में बाँहें डाले कट्ट-कट्ट सूरजमुखी के बीज चबा रहे थे । उनके चेहरों पर नज़र डालते ही पावेल जान गया कि वे कौन हैं । यह ग़ल्ले की चोर-बाज़ारी करने वालों का एक गिरोह था । ये नम्बरी बदमाश थे जो घूम-घूम कर देश भर में ग़ल्ला खरीदते थे और मनमाने दामों पर बेचते थे । पावेल

के पास बर्बाद करने के लिए वक़्त नहीं था। उसे किसी तरह रिता को अन्दर लाना था।

"यह किसका बक्स है?" उसने रेलवे की वर्दी पहने एक अधेड़ आदमी से खिड़की के नीचे रखे हुए बड़े से लकड़ी के बक्स की ओर इशारा करते हुए पूछा।

उस आदमी ने जवाब दिया, "उनका," और भूरे रंग के मोज़े पहने हुए दो मोटी-मोटी टाँगों की तरफ़ इशारा किया।

खिड़की खोलना ज़रूरी था और वह बक्स रास्ते में अड़ा था। चूँकि उसे और कहीं रखने की जगह नहीं थी, इसलिए पावेल ने उसको उठा कर ऊपर की बर्थ पर बैठे हुए उसके मालिक को पकड़ाते हुए कहा :

"ज़रा इसको पकड़े रहिये, मुझे खिड़की खोलनी है।"

उसने बक्स उस चपटी नाक वाली औरत के घुटनों पर रखा तो वह चिल्लाई, "दूसरों के सामान को हाथ मत लगाओ!"

अपने बग़ल में बैठे हुए आदमी से वह बोली, "मोटका, यह छोकरा करना क्या चाहता है?" मोटका ने जूता पहने-पहने पावेल की पीठ में एक ठोकर लगाई और डपट कर बोला :

"अबे सुनता है, यहाँ से नौ-दो-ग्यारह हो जा, वरना अभी तेरी अच्छी तरह कुन्दी हो जायगी!"

पावेल ने चुपचाप ठोकर बर्दाश्त कर ली। वह खिड़की खोलने में लगा हुआ था।

"ज़रा सरक तो जाइये," उसने रेलवे के आदमी से कहा।

एक और पीपे को रास्ते से हटाते हुए पावेल ने खिड़की के सामने की जगह साफ की। रिता वहाँ बाहर प्लेटफ़ार्म पर खड़ी थी। जल्दी से उसने अपना बेग पावेल को पकड़ाया। बेग को वनस्पति तेल के पीपे वाली उस मोटी-ताज़ी औरत के घुटनों पर पटकते हुए पावेल ने बाहर को झुक कर रिता का हाथ पकड़ा और उसे अन्दर खींच लिया। इसके पहले कि सन्तरी नियम के उल्लंघन को देख पाता, रिता डब्बे के अन्दर आ गई थी और सन्तरी बाहर खड़ा गाली बक रहा था; लेकिन अब तो बहुत देर हो गई थी। अन्दर बैठे हुए मुनाफ़ाख़ोरों के गिरोह ने रिता के आगमन का स्वागत इतने हल्ले से किया कि बेचारी ठिठक गई। चूँकि फ़र्श पर खड़े होने की भी जगह नहीं थी, इसलिए उसने किसी तरह अपने पाँव नीचे की बर्थ के सिरे पर टिकाये और सहारे के लिए ऊपर की बर्थ को पकड़ कर खड़ी हो गई। चारों ओर गालियों का मछली बाज़ार गर्म हो गया। ऊपर से वह मोटी भारी-भद्दी आवाज़ फिर टर्राई :

" देखते हो इस सुअर को, पहले तो खुद घुस आया और फिर अपनी लौंडिया को भी अन्दर घसीट लिया। "

ऊपर से एक और आवाज़ सुनाई दी : " मोटका ज़रा दे तो इसकी नाक पर एक घूँसा ! "

वह औरत अपने लकड़ी के बक्स को पावेल के सिर पर टिकाने की कोशिश जी-जान से कर रही थी। इन दो आगन्तुकों के चारों ओर दुष्ट, घिनावने जानवरों जैसे चेहरे थे। पावेल को इस बात का बड़ा दुख था कि रिता को इन चीज़ों का सामना करना पड़ रहा था, मगर इनको बर्दाश्त करने के अलावा और चारा न था।

" महाशय, अपने बारे सीटों के बीच के फर्श से हटा लीजिये ताकि इस कामरेड को खड़े होने के लिए जगह हो जाय," उसने मोटका के नाम से पुकारे जाने वाले आदमी से कहा। मगर उसके जवाब में उसको एक इतनी गन्दी गाली सुनने को मिली कि गुस्से से उसके दिमाग का पारा चढ़ गया। उसकी दाहिनी भौं के ऊपर की नाड़ी दर्द के साथ फड़कने लगी। " ज़रा रुक, बदमाश कहीं का, अभी मैं तुझे बताता हूँ," उसने उस गुण्डे से कहा। मगर जवाब में उसे अपने सिर पर एक ठोकर मिली।

" बहुत अच्छा किया वास्का, एक और ! " चारों ओर से समर्थन की आवाज़ें आने लगीं।

आखिरकार पावेल के धीरज का बाँध टूट गया और जैसा कि हमेशा ऐसे मौकों पर होता था, उसने तेज़ी से और बिना किसी दुविधा के हिम्मत से अमल किया।

" मुनाफ़ेख़ोर हरामज़ादो, तुम्हारा ख़याल है कि तुम ऐसा करके निकल जाओगे ? " वह ज़ोर से चिल्लाया और फुर्ती से ऊपर वाले बर्थ पर चढ़ कर उसने कस कर एक घूँसा मोटका के उस घिनौने हँसते हुए चेहरे पर मारा। घूँसा उसने इतने ज़ोर से मारा था कि वह हरामज़ादा सट्टेबाज़ लुढ़क कर दूसरे मुसाफ़िरों के सिर पर आ गिरा।

" सुअर के बच्चो, तुम सब यहाँ से निकलो वरना अभी मैं तुम सबको गोली मार दूँगा ! " पावेल पागल की तरह चीखा और अपनी पिस्तौल उन चारों की नाक में अड़ा दी।

अब पाँसा पलट गया था। रिता चौकन्नी होकर इस सारी कार्रवाई को देख रही थी और खुद भी गोली चलाने के लिए तैयार थी, अगर कोई कोर्चागिन पर हमला करे तो। ऊपर की बर्थ फौरन खाली हो गई। वे बदमाश जल्दी-जल्दी पास के कम्पार्टमेंट में चले गए।

ऊपर की खाली बर्थ पर चढ़ने में रिता की मदद करते हुए पावेल ने धीरे से कहा :

" तुम यहीं रहो, मैं उन बदमाशों को देखने जाता हूँ । "

रिता ने उसको रोकने की कोशिश की, " तुम उनसे लड़ने तो नहीं जा रहे हो ? "

" नहीं, " पावेल ने रिता को आश्वस्त करते हुए कहा, " मैं ज़रा सी देर में लौट कर आता हूँ । "

उसने फिर से खिड़की खोली और बाहर प्लेटफ़ार्म पर कूद गया । चन्द मिनट बाद वह ट्रान्सपोर्ट चेका के बर्माइस्टर से, जो पहले उसका चीफ़ था, बात कर रहा था । उस लेट ने पावेल की पूरी बात सुनी और फिर आदेश दिया कि सारे डब्बे को खाली करवाया जाय और मुसाफ़िरों के कागजात की जाँच की जाय ।

बर्माइस्टर ने अपनी भारी आवाज़ में गुर्राते हुए कहा, " मैंने यही बात कही थी । गाड़ियों के यहाँ आने के पहले से ही उसमें तमाम मुनाफ़ाखोर और उठेबाज़ भरे रहते हैं । "

चेका के दस सिपाहियों की टोली ने गाड़ी को खाली करवाया । अपने पुराने काम को सँभालते हुए पावेल ने मुसाफ़िरों के काग़ज़ात की जाँच में मदद हुँचाई । चेका के अपने पुराने साथियों से उसने अपने सम्बंध नहीं तोड़े थे और कोमसोमोल के मन्त्री की हैसियत से उसने कोमसोमोल के अपने कुछ बेहतरीन सदस्यों को वहाँ काम करने के लिए भेजा था । छानबीन खत्म हो जाने पर पावेल रिता के पास लौटा । अब डब्बे में बिलकुल दूसरी तरह के मुसाफ़िर थे : लाल सेना के सैनिक और कारखानों और दफ़्तरों में काम करने वाले लोग, जो सब किसी न किसी ज़रूरी काम से सफ़र कर रहे थे ।

डब्बे के एक कोने में सबसे ऊपर की बर्थ पर रिता और पावेल बैठे हुए थे । मगर वहाँ पर अख़बारों के बंडलों ने इतनी जगह घेर रखी थी कि सिर्फ़ रिता के लेटने के लिए जगह थी ।

रिता ने कहा, " कोई बात नहीं, हम लोग किसी तरह काम चला लेंगे । "

आख़िरकार गाड़ी चली । जब वह धीरे-धीरे स्टेशन के बाहर होने लगी तो रिता और पावेल ने प्लेटफ़ार्म पर बोरों के बंडल पर बैठी हुई उस मोटी औरत की ज़रा सी झलक पाई और उसे चिल्लाते सुना, " ए मांका, मेरा झोलेवाला पीपा कहाँ है ? "

अपनी जगह में सँकसकर बैठे हुए, जहाँ अख़बारों के बंडल उनके और

दूसरे मुसाफ़िरों के बीच पर्दे का काम कर रहे थे, पावेल और रिता रोटी और सेब खा रहे थे और हँसते हुए उस घटना की, जो ऐसी हँसने की चीज़ नहीं थी, याद कर रहे थे जिससे उनकी यात्रा शुरू हुई थी।

रेलगाड़ी रेंगती हुई आगे बढ़ती जा रही थी। रेलवे लाइन में हर जोड़ पर रेलगाड़ी के पुराने, टूटे-फूटे और ज़रूरत से ज्यादा लदे हुए डब्बे चरमरा रहे थे और कराह रहे थे और बड़े ज़ोर से हिल रहे थे। गहरी नीली गोधूलि खिड़की में से अन्दर झाँक रही थी। फिर रात आई और गाड़ी को उसने अँधेरे की चादर से ढँक दिया।

रिता थकी हुई थी और अपने बैग का तकिया लगाये ऊँघ रही थी। पावेल बर्थ के सिरे पर बैठा सिगरेट पी रहा था। वह भी थका हुआ था, मगर लेटने को जगह नहीं थी। रात की ताज़ी हवा खुली हुई खिड़की से अन्दर आ रही थी। अचानक एक हिचकोले से जागकर रिता ने अँधेरे में पावेल के सिगरेट की चमक देखी। यह हमेशा से उसकी आदत रही है कि बैठा-बैठा रात गुज़ार देता है, मगर रिता को किसी तरह की तकलीफ़ नहीं होने देता।

रिता ने धीमे से कहा, "कामरेड कोर्चागिन! उन बुर्ज़ुआ तौर-तरीक़ों को छोड़ो और लेट जाओ।"

पावेल उसकी बात मान कर उसके बग़ल में लेट गया और उसने अपनी अकड़ी हुई टाँगों को आराम के साथ फैला लिया।

"कल हमें बहुत सा काम करना है। इसलिए पाशलराम, ज़रा नींद ले लेने की कोशिश करो।" उसने बड़े विश्वास से पावेल के गले में अपनी बांहें डाल दीं और पावेल ने अपने गालों पर उसके बालों का स्पर्श अनुभव किया।

पावेल के लिए रिता एक पवित्र चीज थी। वह उसकी दोस्त थी, कामरेड थी, राजनीतिक पथ-प्रदर्शिका थी। मगर इसके साथ ही साथ वह औरत भी थी। इसकी चेतना उसे सबसे पहले वहाँ पुल पर हुई थी और इसलिए अब उसके आलिंगन ने पावेल को इतना चंचल कर दिया। उसने रिता की गहरी, सम-चाल से चलती हुई साँस को महसूस किया; उसके पास ही कहीं रिता के ओंठ थे। इस सामीप्य से उसके अन्दर उन ओंठों को पाने की लालसा जगी और मन का बहुत ज़ोर लगा कर ही वह इस लालसा को दबा पाया।

जैसे पावेल के मन के भावों को ताड़ते हुए रिता अँधेरे में मुस्कराई। वह इस लालसा के सुख और वियोग की पीड़ा दोनों को जान चुकी थी। उसने दो बोल्शेविकों को अपना प्यार दिया था। ह्वाइट-गार्ड की गोलियों ने दोनों को उससे

छीन लिया था। उनमें से एक बड़ा शानदार डील-डौल का आदमी था, जो ब्रिगेड कमांडर था; दूसरा साफ़ नीली आँखों वाला एक छोकरा था।

थोड़ी ही देर में पहियों की ताल ने थपकी दे-देकर पावेल को सुला दिया और अगली सुबह जब इंजन ने ज़ोर से सीटी दी तभी जाकर उसकी आँख खुली।

रिता हर रोज़ बहुत रात गये तक काम में व्यस्त रहती थी और अपनी डायरी के लिखने लिए उसके पास वक़्त न बचता था। कुछ दिनों के बाद उसने फिर डायरी में थोड़ा-कुछ लिखा :

" ?? अगस्त

" प्रादेशिक सम्मेलन समाप्त हो गया। अकिम, मिखाइलो तथा और कई लोग अखिल उक्रेनी सम्मेलन के लिए खारकोव गये हैं और अपना सारा कागज़ी काम मेरे जिम्मे छोड़ गये हैं। दुबावा और पावेल को प्रादेशिक कमिटी में काम करने के लिए भेजा गया है। दिमित्री को जबसे पेचोर्स्क जिला कमिटी का मन्त्री बनाया गया है, उसने क्लास में आना बन्द कर दिया है। गले तक वह काम में डूबा हुआ है। पावेल कुछ पढ़ने की कोशिश करता है, मगर कुछ खास नतीजा नहीं मिलता क्योंकि या तो मैं बहुत व्यस्त रहती हूँ या उसे किसी काम के सिलसिले में बाहर भेज दिया जाता है। रेलवे में इस वक़्त जो तनाव की हालत चल रही है, उसके कारण कोमसोमोलों को बराबर इस काम में खींचा जा रहा है। कल जार्की मुझसे मिलने आया था। वह शिकायत कर रहा था कि उसके लड़के उससे छीन लिये जाते हैं, जब कि खुद उसे उनकी सख्त जरूरत है।"

" २३ अगस्त

" आज मैं गलियारे में से गुज़र रही थी तो मैंने मैनेजर के दफ़्तर के सामने कोर्चागिन को पांक्रातोव और एक दूसरे आदमी के संग खड़े देखा। मैं जब पास पहुँची तो मैंने पावेल को कहते सुना :

' वहाँ वे लोग जो बैठे हैं, उन्हें गोली मार देनी चाहिए।' वह कहता है, 'तुम्हें हमारे हुक्म को काटने का कोई हक़ नहीं। रेल की ईंधन-कमिटी यहाँ पर मालिक है और तुम कोमसोमोलों को चुपचाप उसकी बात माननी चाहिए, खामखा अपनी टाँग नहीं अड़ानी चाहिए। तुमने उसका चेहरा देखा होता···· और यह जगह इसी तरह के जोंकों से भरी हुई है!' इसके बाद उसने बड़ी गन्दी ज़बान का इस्तेमाल किया। पांक्रातोव ने मुझे देख लिया और उसकी बग़ल

में उंगली गड़ाई। पावेल घूमा और मुझे देखकर पीला पड़ गया और बिना मुझ से आँख मिलाये दूसरी तरफ़ को चला गया। लगता है अब वह काफ़ी दिन मेरे पास नहीं आयेगा। वह जानता है कि मैं गन्दी ज़बान पसन्द नहीं करती।"

"२७ अगस्त

"हमारी ब्यूरो की एक बन्द मीटिंग हुई थी। स्थिति काफ़ी गम्भीर होती जा रही है। मैं अभी इसके बारे में विस्तार के साथ नहीं लिख सकती। अकिम प्रादेशिक सम्मेलन से लौटा तो बहुत परेशान नज़र आ रहा था। कल एक और रसद की गाड़ी उलट दी गई। मैं सोचती हूँ कि अब मैं यह डायरी रखने की और कोशिश नहीं करूँगी। यों भी बहुत बेसिलसिला है यह। मैं कोर्चागिन का इन्तज़ार कर रही हूँ। अभी उस रोज़ मेरी उससे मुलाक़ात हुई थी और उसने मुझे बतलाया कि वह और ज़ार्की मिलकर पाँच लोगों का एक कम्यून बना रहे हैं।"

एक रोज़ जब पावेल रेल के कारखाने में काम कर रहा था, तो उसे टेलीफोन पर बुलाया गया। यह रिता थी। उस शाम वह खाली थी और उसने प्रस्ताव किया कि पैरिस कम्यून की पराजय के कारणवाले अध्याय को खतम कर डाला जाय, जिसे वे दोनों मिलकर पढ़ रहे थे।

उस शाम को जब पावेल यूनिवर्सिटी स्ट्रीट पर रिता के मकान के पास पहुँचा तो उसने ऊपर नज़र उठाई और खिड़की में रोशनी देखी। वह दौड़कर सीढ़ियों पर चढ़ा, हमेशा की तरह दरवाज़े पर दस्तक दी और अन्दर चला गया।

वहाँ पलंग पर, जहाँ किसी नये साथी को क्षण भर बैठने की भी इजाज़त नहीं थी, वर्दी पहने एक आदमी लेटा हुआ था। मेज़ पर एक रिवाल्वर, किटबैग और लाल तारे वाली टोपी रखी हुई थी। रिता उस अजनबी की बग़ल में उसे कसकर अपनी बाँहों में भरे बैठी हुई थी। दोनों अपनी बातचीत में डूबे हुए थे और पावेल के अन्दर दाखिल होने पर रिता ने मुस्कराते हुए चेहरे से उसको देखा।

उस आदमी ने रिता के बाहुपाश से अपने को मुक्त किया और पलंग पर से उठा।

रिता ने पावेल से हाथ मिलाते हुए कहा, "पावेल, यह है····"

उस आदमी ने कसकर कोर्चागिन से हाथ मिलाते हुए रिता के वाक्य को पूरा किया, "डेविड उस्तिनोविच।"

"अचानक ही आ गया," रिता ने खुशी से हँसते हुए बतलाया।

पावेल ने बहुत सर्द तरीक़े से इस आगन्तुक से हाथ मिलाया और उसकी आँखों में क्षोभ की चमक दिखलाई दी। उसने उस आदमी की वर्दी की आस्तीन पर चार क्रास देखे जो कि एक कम्पनी के कमांडर की पहचान थी।

रिता कुछ कहने ही वाली थी कि पावेल बीच में बोल पड़ा, "मैं आपसे सिर्फ़ यह कहने आया था कि आज शाम को मैं घाट पर जहाज़ में लकड़ी लादने के काम में फँसा रहूँगा। और फिर आपके यह अतिथि भी आये हुए हैं। अच्छा तो अब मैं चलूँगा, लड़के नीचे खड़े मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं।"

और वह वैसे ही एकाएक दरवाज़े में से बाहर निकल गया जैसे अन्दर आया था। उन्होंने उसको तेज़ी से सीढ़ी पर से नीचे उतरते सुना। फिर बाहर का दरवाज़ा फटाक से बन्द हुआ और खामोशी छा गई।

"आज उसका हाल कुछ ठीक नहीं था। ज़रूर कोई बात है," रिता ने डेविड की सवाल करती हुई आँखों के जवाब में अटकते हुए कहा।

पुल के नीचे एक इंजन ने गहरी साँस ली और अपने ज़बर्दस्त फेफड़ों से सुनहली चिनगारियों की फुहार छोड़ी। चिनगारियाँ अजीब तरीक़े से नाचती हुई ऊपर को उठीं और धुएँ में खो गईं।

पावेल रेलिंग से टिका खड़ा था और सिगनल की रंगीन रोशनियों का जलना और बुझना एकटक होकर देख रहा था। उसने अपनी आँखें सिकोड़ी।

"कामरेड कोर्चागिन, यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि तुम्हें इस बात से इतनी चोट क्यों लगती है कि रिता का कोई पति है? क्या उसने तुमको कभी बतलाया कि उसका कोई पति नहीं है? और अगर उसने कभी ऐसा कहा भी हो तो क्या? तुमको यह चीज़ इतनी बुरी क्यों लगती है? तुमने सोचा था कामरेड कि यह सब खालिस रूहानी दोस्ती है और कुछ नहीं····। तुमने यह चीज़ कैसे होने दी?" उसने तीखे व्यंग्य के स्वर में अपने-आप से सवाल किया, "और अगर वह उसका पति नहीं हो तो? डेविड उस्तिनोविच उसका भाई भी हो सकता है, चाचा भी हो सकता है····लेकिन अगर ऐसी बात हो तो तुमने अपने गदहपन में उस बेचारे के संग बड़ा अन्याय किया है। तुम किसी से कुछ अच्छे थोड़े ही हो। यह पता लगाना तो काफी आसान है कि वह उसका भाई है या नहीं। मान लो वह उसका भाई या चाचा निकला तो अपने आज के बेहूदा बर्ताव के बाद तुम फिर कैसे रिता से आँख मिला सकोगे? नहीं, अब तो तुम्हें उससे मिलना बन्द करना पड़ेगा!"

एक इंजन की सीटी ने उसके विचारों की धारा भंग की।

"बहुत देर हो रही है। घर चलने का वक्त हुआ। काफ़ी फ़िज़ूलियात हो लीं।"

जिस इलाके में रेलवे मज़दूर रहते थे, उसका नाम सोलोमेंका था। वहीं पाँच नौजवानों ने एक छोटा सा कम्यून क़ायम किया। ये पाँच थे—ज़ार्की, पावेल, सुनहले बालों वाला खुश नौजवान चेक जिसका नाम क्लावीचेक था, रेलवे यार्ड के कोमसोमोल का मन्त्री निकोलाई ओकुनेव और स्तेपान आर्त्युखिन जो ब्वायलर सुधारने का काम करता था और आजकल रेलवे चेका के लिए काम कर रहा था।

उन्होंने एक कमरा ढूँढ़ा और तीन दिन तक अपना सारा खाली वक्त उसको साफ करने, उसमें रंग-रोगन करने और उसकी दीवारों की सफेदी करने में लगाया। वे बाल्टियाँ लिये हुए तेज़ी से इतनी बार इधर-उधर आये और गये कि पड़ोसी लोग सोचने लगे कि घर में आग लग गई है। उन्होंने अपने लिए ओढ़े तैयार किये और पार्क से बटोरी हुई शहतूत की पत्तियाँ भर कर गद्दे तैयार किये और इस सब के बाद चौथे रोज़ वह कमरा, जिसकी दीवार पर पेत्रोव्स्की की एक तस्वीर और एक बड़ा सा नक्शा टँगा था, सफाई से चमक रहा था।

खिड़कियों के बीच में एक आलमारी थी जिसमें ऊपर तक किताबों का ढेर लगा हुआ था। दो बक्सों को दफ़्ती से ढँक कर उनसे कुर्सी का काम लिया जा रहा था और एक ओर बड़ा बक्स बर्तनों की आलमारी का काम दे रहा था। कमरे के बीचोबीच एक बड़ी सी बिलियर्ड की मेज़ थी जिसमें बस यह कमी थी कि उसमें कपड़ा नहीं लगा था। इसको कमरे के निवासी मालगोदाम से अपने कंधों पर उठा कर लाये थे। दिन को उससे मेज़ का काम लिया जाता था और रात को उस पर क्लावीचेक सोता था। पाँचों लड़के अपनी तमाम चीज़ें उठा लाए और व्यवहार कुशल क्लावीचेक ने कम्यून की जायदाद की फेहरिस्त बनाई। वह उस फेहरिस्त को दीवार पर टाँगना चाहता था, मगर दूसरों ने आपत्ति की। कमरे की हर चीज़ सबकी मिली-जुली सम्पत्ति घोषित कर दी गई। कमाई, राशन और बीच-बीच में घर से आनेवाले पार्सल, सबका बराबर-बराबर बँटवारा हो जाता था; निजी सम्पत्ति की बस एक चीज़ थी—उनके अपने-अपने हथियार। सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया कि कम्यून का जो सदस्य साझे की सम्पत्ति के नियम का उल्लंघन करेगा या अपने साथियों के साथ विश्वासघात करेगा, उसे कम्यून से निकाल बाहर किया जायगा। ओकुनेव और क्लावीचेक ने आग्रह किया कि कम्यून

से निकाले जाने के बाद अगली कार्रवाई यह होनी चाहिए कि उसे कमरे से निकाल बाहर किया जाय और यह प्रस्ताव पास हो गया।

ज़िले की कोमसोमोल के सब सक्रिय सदस्य कम्यून के गृह प्रवेश की पार्टी में आये। बगल के पड़ोसी से एक विशाल समोवार उधार लिया गया। चाय पार्टी में कम्यून की सारी शकर खर्च हो गई। चाय के बाद उन्होंने कोरस गाना शुरू किया और उनकी जवान बुलन्द आवाज़ों से दीवार के पटरे हिल उठे :

सारी दुनिया भीज गई आँखों के जल से,
दुख से कड़वे कैसे ये दिन बीत रहे हैं
पर उगता है नव प्रभात नभ के अंचल से

तम्बाकू के कारखाने की वह लड़की तालिया लगुतिना गाने का नेतृत्व कर रही थी। उसके सिर पर का लाल रूमाल एक ओर को खिसक गया था और उसकी आँखें, जिनकी गहराई अब तक किसी ने नहीं पाई थी, शरारत से नाच रही थीं। तालिया की हँसी बहुत ही संक्रामक थी और वह अपने अठारह सालों की रौशन ऊँचाई से दुनिया को देखती थी। अब उसकी बाँह लहर की तरह ऊपर को उठी और नक्कारों की आवाज़ की तरह गाने की धारा बह चली :

उमड़ो मेरे गीत विश्व पर छा जाओ;
विजय गर्व से उन्नत निज केतन लहराओ !
हृदय रक्त की अग्नि-शिखा में जलकर तपकर
रहो प्रज्वलित जगती के उन्मुक्त गगन पर !

बहुत रात गये पार्टी ख़तम हुई और उनकी बुलन्द जवान आवाज़ों की गूँज से खामोश सड़कें जाग पड़ीं।

टेलीफोन की घंटी बजी और जाकीं ने रिसीवर की तरफ़ हाथ बढ़ाया।

"चुप रहो, मैं कुछ सुन नहीं पाता!" उसने शोर मचाते हुए कोमसोमोलों से, जो मन्त्री के दफ़्तर में भीड़ लगाये हुए थे, चिल्ला कर कहा।

हंगामा कुछ कम हो गया।

"हलो ! अच्छा तुम हो। हाँ, अभी अभी। एजेंडे पर क्या-क्या है ?

ओ वही पुरानी चीज़, घाट से ईंधन की लकड़ी घसीट कर लाना। क्या कहा नहीं, उसे कहीं नहीं भेजा गया है। वह यहीं है। उससे बात करना चाहती हो? एक मिनट रुको।"

जार्की ने पावेल को बुलाया।

"कामरेड उस्तिनोविच तुमसे बात करना चाहती हैं," उसने कहा और रिसीवर पावेल के हाथ में पकड़ा दिया।

पावेल ने रिता की आवाज़ को कहते सुना, "मैं सोचती थी तुम शहर में न होगे। आज शाम को मैं खाली हूँ। तुम आ क्यों नहीं जाते? मेरा भाई चला गया है। वह शहर में से गुज़र रहा था और मुझसे मिलने चला आया। हमने एक-दूसरे को दो साल से नहीं देखा था।"

उसका भाई!

पावेल ने और कुछ नहीं सुना। उसको उस बदनसीब शाम की याद आ रही थी और अपने उस निश्चय की याद आ रही थी जो उसने उसी रात को पुल के नीचे किया था। हाँ, उसे आज ही शाम को रिता के पास जाना चाहिए और इस मामले को खत्म कर देना चाहिए। प्रेम के संग पीड़ाएँ और दुश्चिन्ताएँ भी बहुत सी लगी रहती हैं। यह क्या ऐसी चीज़ों का वक़्त है?

उस आवाज़ ने पावेल के कान में कहा, "तुम मुझे सुन नहीं पा रहे हो क्या?"

"हाँ, हाँ मैं सुन रहा हूँ। बहुत अच्छा। मैं ब्यूरो की मीटिंग के बाद आऊँगा," कहते हुए पावेल ने रिसीवर रख दिया।

उसने रिता की आँखों में आँखें डाल कर देखा और ओक की लकड़ी की बनी मज़बूत मेज़ के सिरे को पकड़ते हुए बोला, "मैं अब शायद तुमसे मिलने न आ सकूँगा।"

पावेल ने रिता की घनी बरौनियों को उसकी बात सुन कर ऊपर खिंचते देखा। काग़ज़ पर उसकी पेन्सिल, जो दौड़ रही थी, रुक गई और खुले हुए पैड पर निश्चेष्ट खड़ी रही।

"क्यों?"

"वक़्त नहीं निकाल पाता। तुम्हें तो खुद मालूम है कि हम काफ़ी मुश्किलों से गुज़र रहे हैं। मुझे अफ़सोस है, मगर शायद यह चीज़ हमें बन्द करनी ही पड़ेगी....।"

पावेल को लग रहा था कि उसके आखिरी शब्द कुछ बहुत दृढ़ न लगे होंगे।

"यह द्रविड़ प्राणायाम तुम क्यों कर रहे हो?" वह भीतर ही भीतर तैश खा रहा था। "सीधे-सीधे हमला करने की हिम्मत तुममें नहीं है।"

प्रकट उसने कहा: "इसके अलावा मैं कई दिन से तुमसे यह कहना चाह रहा था कि तुम बात को जिस तरह समझाती हो, उसको समझने में मुझे कठिनाई होती है। जब हम लोग सेगल के संग पढ़ते थे, उस वक़्त हमने जो कुछ सीखा था, वह न जाने कैसे मेरे सिर में टिक गया। मगर तुमसे जो कुछ सीखा, उसके बारे में मैं यह बात नहीं कह सकता। मुझे हर बार सबक़ के बाद तोकारेव के पास जाना पड़ा है, चीज़ को दुबारा ठीक से समझने के लिए। मैं जानता हूँ कि यह मेरी ही ग़लती है—मेरे सिर में बात घुसती ही नहीं। तुम्हें दूसरा कोई शिष्य ढूँढ़ना पड़ेगा, जिसमें कुछ ज़्यादा बुद्धि हो।"

उसने रिता की तेज़ निगाहों से अपनी निगाहें फेर लीं और फिर समझ-बूझ कर, साहस बटोर कर उसने कह ही डाला: "इसलिए मैं तो समझता हूँ कि हमारा इस चीज़ को जारी रखना, वक़्त की बर्बादी ही है।"

फिर वह उठा, सम्भाल कर पैर से कुर्सी सरकाई और रिता के झुके हुए सिर और चेहरे को देखा जो लैम्प की रोशनी में पीला नज़र आ रहा था। उसने अपनी टोपी सिर पर लगा ली।

"अच्छा, चलूँ कामरेड रिता। मुझे दुख है कि मैंने तुम्हारा इतना वक़्त बर्बाद किया। मुझे बहुत पहले तुमको यह बात बतला देनी चाहिए थी। मुझसे यही ग़लती हुई।"

रिता ने यन्त्रवत अपना हाथ उसकी तरफ़ बढ़ा दिया, मगर उसके इस अचानक रूखेपन से वह इतनी स्तब्ध हो गई थी कि दो एक शब्द से ज़्यादा नहीं बोल सकी।

"मैं तुम्हें दोष नहीं देती, पावेल। अगर मैं चीज़ों को तुम्हें ठीक से समझाने का कोई ढंग नहीं निकाल सकी तो सचमुच मुझे यही पुरस्कार मिलना चाहिए था।"

पावेल भारी क़दमों से दरवाज़े की तरफ़ चला। बाहर निकल कर उसने धीरे से दरवाज़ा बन्द किया। सीढ़ी से नीचे उतर कर वह पल भर को रुका और सोचने लगा—अभी भी देर नहीं हुई है, जाकर बात की सफ़ाई की जा सकती है....। मगर फ़ायदा? ऐसा करने से क्या हासिल? उसका उपेक्षापूर्ण जवाब पाकर फिर बाहर चले आने के लिए? नहीं।

साइडिंगों पर बेकार इंजनों और रेल के टूटे-फूटे डिब्बों का कब्रिस्तान बढ़ चला। लकड़ी के वीरान कारखाने में हवा लकड़ी के सूखे बुरादे को इधर-उधर बिखेर रही थी।

और शहर के चारों ओर जंगल की झाड़ियाँ और गहरे-गहरे नालों में ओर्लिक के गिरोह के लोग छिपे हुए थे। दिन को वे लोग आस-पास के गाँवों और जंगली इलाकों में चुपचाप पड़े रहते थे, मगर रात को धीरे से रेल की लाइनों पर निकल आते थे, बेदर्दी से उन्हें उखाड़कर फेंक देते थे और अपना यह दुष्ट काम करके वापस अपनी माँद में पहुँच जाते थे।

रेल की लाइनें उखड़ जाने से न जाने कितने इंजन, लोहे के घोड़े, रेलवे के बाँध पर से लुढ़कते हुए नीचे पहुँच जाते थे। और नतीजा यह होता था कि डब्बे टूट कर चकनाचूर हो जाते, निदासे लोग मलबे के नीचे पिस जाते और बेशक़ीमत अनाज खून और मिट्टी में लिथड़ जाता।

यह गिरोह अचानक किसी छोटे से क़स्बे पर टूट पड़ता और डरी हुई मुर्गियाँ कुड़कुड़ करती हुई सब तरफ़ भागने लगतीं। यों ही कुछ गोलियाँ इधर-उधर चला दी जातीं। बोलोस्त सोवियत की इमारत के सामने राइफिलें थोड़ी देर कड़कड़ातीं और ऐसी आवाज होती जैसे सूखी झाड़ी के पैर के नीचे दबने से होती है और वे डाकू अपने मोटे-ताज़े घोड़ों पर सवार गाँव में यहाँ से वहाँ दौड़ लगाते और जो भी रास्ते में पड़ जाता उसे काट कर रख देते। वे अपने शिकारों को इतने इतमीनान से तलवार चला कर काटते जैसे लकड़ी चीर रहे हों। गोलियाँ वे लोग कम ही चलाते थे क्योंकि गोलियों की कमी थी।

जिस तूफ़ानी तेज़ी से ये डाकू आते उसी तेज़ी से लौट भी जाते। डाकुओं के इस गिरोह की आँखें और कान सब जगह थे। वे आँखें उस छोटे से सफ़ेद मकान की दीवारों को भेद कर, जिसमें बोलोस्त सोवियत था, अन्दर देख लेती थीं क्योंकि पादरी के मकान और कुलकों के घरों से जंगल की झाड़ियों तक अदृश्य सूत्र मौजूद थे। गोले-बारूद के डब्बे, सुअरों के ताज़े गोश्त के ढेर, नीले रंग की कच्ची शराब की बोतलें—सब उसी रास्ते जंगल पहुँच जाती थीं। उसी सूत्र से खबरें भी पहुँच जाती थीं, जो पहले छोटे ऐटमनों के कान में फुसफुसाकर कही जातीं और फिर नाना मार्गों से होकर खुद ओर्लिक के पास पहुँच जातीं।

इस गिरोह में दो-तीन सौ खूनियों से ज़्यादा न रहे होंगे, मगर अब तक उन्हें पकड़ा न जा सका था। वे छोटी-छोटी कई टुकड़ियों में बँट जाते और फिर एक साथ दो-तीन इलाकों में अपनी कार्रवाई करते। उन सबको पकड़ना असम्भव था। पिछली रात का डाकू अगले दिन बहुत शान्तिप्रिय किसान की शक्ल

में दिखाई देता। वह अपने बाग़ीचे में काम करता होता या अपने घोड़े को रातिब देता होता या अपने दरवाज़े पर खड़ा इतमीनान से पाइप पी रहा होता और एकदम शून्य आँखों से घुड़सवार दस्तों को अपने पास से गुज़रते हुए देखता। उस वक़्त उसे देख कर कौन कह सकता था कि कल रात यही आदमी डाकू का काम कर रहा था।

अपनी रेजिमेंट लेकर अलेक्जेंडर पुज़ीरेव्स्की जान लगाकर इन डाकुओं के पीछे लगा हुआ था और तीनों ज़िलों में उन्हें यहाँ से वहाँ खदेड़ता फिर रहा था। कभी-कभी उसे डाकुओं का सुराग़ मिल भी जाता। एक महीने बाद ओलिंक को मजबूर होकर अपने बदमाशों को दो ज़िलों से हटाना पड़ा और अब वह बहुत छोटे से इलाक़े में घिर गया था।

क़स्बे की ज़िन्दगी बदस्तूर गति से धीमे-धीमे चली जा रही थी। शोर करती हुई भीड़ें वहाँ के पाँच बाज़ारों में भरी रहती थीं। उनके मन में बस दो भाव थे—कैसे ज़्यादा से ज़्यादा लूटें और कम से कम दें। यह वातावरण ऐसा था जिसमें तमाम तरह के ठगों और लुटेरों को अपनी योग्यता दिखलाने का अनन्त अवसर मिलता था। भीड़ में सैकड़ों ऐसे लोग घूमते रहते थे जिनकी आँखों में ईमानदारी छोड़ कर और सब कुछ था। जैसे मक्खियाँ गन्दगी के ढेर पर जमा हो जाती हैं, उसी तरह शहर के बुरे से बुरे आदमी यहाँ इकट्ठा हो गये थे और उनका एक ही उद्देश्य था : नादान लोगों को ठगना। दो-एक रेल-गाड़ियाँ जो उधर आतीं, उनमें से तमाम लोग बोरे लादे हुए उतरते और सीधे बाज़ार की ओर चल देते।

रात को बाज़ार उजाड़ हो जाता और जहाँ बैठ कर दूकानदार अपनी चीज़ें बेचते थे, उन दुकानों की क़तारें अंधेरे में डरावनी नज़र आतीं।

बहुत हिम्मती आदमी ही अंधेरा हो जाने पर इस उजड़े हुए बाज़ार से गुज़र सकता था क्योंकि एक-एक दूकान के पीछे से ख़तरा झाँकता रहता था। अक्सर रात को गोली छूटने की आवाज़ सुनाई देती जैसे लोहे पर किसी ने हथौड़ा दे मारा हो, और फिर कोई आदमी अपने ही ख़ून में लथपथ वहीं ढेर हो जाता। और जब तक कि सबसे क़रीब की चौकी से मुट्ठी भर सिपाही उस जगह पहुँचें-पहुँचें (उनको अकेले जाने का साहस न होता), तब तक वहाँ कुछ बाक़ी न रह जाता। उन्हें सिर्फ़ ऐंठी हुई लाश मिलती। ख़ूनी भाग गये होते और उस हंगामे में बाज़ार की चौक के कुछ निशाचर यों ग़ायब हो जाते, जैसे हवा का झोंका उन्हें उड़ा ले गया हो।

बाज़ार के ठीक सामने "ओरियन" सिनेमा था। उसके सामने की सड़क और फुटपाथ बिजली की रोशनी से जगमग करता रहता था और फाटक पर लोगों की भीड़ लगी रहती थी। हॉल में प्रेम के अति-नाटकीय दृश्य पर्दे पर दिखलाये जा रहे होते; बीच-बीच में जब फिल्म कट जाती और ऑपरेटर प्रोजेक्टर को रोक देता तो जनता में असन्तोष-सूचक शोर मच जाता।

शहर के अन्दर और आसपास ज़िन्दगी हस्बेमामूल चलती नज़र आती थी। पार्टी की प्रादेशिक कमिटी में भी, जो कि क्रान्तिकारी सत्ता का केन्द्र थी, पूर्ण शान्ति थी। मगर यह शान्ति सिर्फ़ ऊपरी थी।

शहर के अन्दर एक तूफान पक रहा था। उनमें से बहुतेरे, जो तमाम दिशाओं से आये थे और जिनके लम्बे लबादों के नीचे से उनकी फ़ौजी राइफिलें झाँकती होतीं, समझ रहे थे कि यह तूफान आ रहा है। वे लोग भी इस बात को समझ रहे थे जो गल्ले के मुनाफ़ाखोरों के भेष में रेलगाड़ियों की छतों पर बैठ कर आते थे, मगर अपने बोरे सीधे बाज़ार में न ले जाकर अच्छी तरह से याद किये हुए पतों पर ले जाते थे।

इनको पता था। मगर मज़दूरों की बस्तियों को और यहाँ तक कि बोल्शेविकों को भी इस आनेवाले तूफान का कुछ पता न था।

शहर के सिर्फ पाँच बोल्शेविक साजिश का हाल जानते थे।

पेतल्युरा के गिरोहों को लाल फौज ने श्वेत पोलैंड में खदेड़ दिया था। उन्हींके अवशेष वारसा के विदेशी मिशनों के साथ मिल कर इस विद्रोह में हिस्सा लेने की तैयारी कर रहे थे। पेतल्युरा की रेजिमेंटों के बचे-खुचे लोगों को इकट्ठा कर एक हमलावर दस्ता तैयार किया जा रहा था।

विद्रोहियों की केन्द्रीय कमिटी का एक संगठन शेपेतोवका में भी था। उसमें सैंतालीस सदस्य थे जिनमें से ज़्यादातर पुराने सक्रिय क्रान्ति-विरोधी लोग थे। उन्हें नगर की चेका ने उनका विश्वास करके छोड़ दिया था।

फादर वासिली, एन्साइन विनिक और पेतल्युरा अफसर कुज़मेंको इस संगठन के नेता थे। पादरी की लड़कियाँ, विनिक के बाप और भाई और समोतिन्या नाम का एक आदमी, जो तिकड़म से कार्यकारिणी के दफ़्तर में घुस गया था, जासूसी किया करते थे।

योजना यह थी कि रात को दस्ती बमों से सरहद पर के स्पेशल डिपार्टमेंट पर हमला किया जाय, कैदियों को छुड़ा लिया जाय और अगर मुमकिन हो तो रेलवे स्टेशन पर कब्ज़ा कर लिया जाय।

इसी बीच अफसर गुप्त रूप से शहर में एकत्र किये जा रहे थे क्योंकि वही

विद्रोह का केन्द्र था और लुटेरों के गिरोहों को आस-पास के जंगलों में भेजा जा रहा था। यहाँ से विश्वसनीय दलालों के जरिये रूमानिया और खुद पेतल्युरा से सम्पर्क रखा जाता था।

फ़ियोदोर जुखराई स्पेशल डिपार्टमेंट के अपने दफ्तर में छः रात से नहीं सोया था। वह उन पाँच बोल्शेविकों में से था जिन्हें दुश्मनों की इस साजिश के बारे में मालूम था। उस पुराने मल्लाह जुखराई को उस शिकारी की सी अनुभूति हो रही थी, जिसने अपने शिकार को घेर लिया हो और अब उस जानवर के उछलकर हमला करने का इन्तजार कर रहा हो।

शोर मचाने या दूसरे लोगों को इस खतरे की बात बताने की भी उसे हिम्मत न होती थी। खून के प्यासे इस राक्षस को मारना ही होगा। तभी, केवल तभी, शान्ति के साथ काम करना मुमकिन हो सकेगा और हर वक़्त डर-डर कर हर झाड़ी के पीछे नहीं देखना होगा। मगर ऐसा नहीं करना चाहिए कि जानवर चौकन्ना होकर भाग जाय। जीवन-मरण के ऐसे संघर्षों में अन्त में सहन-शक्ति और दृढ़ता की ही जीत होती है।

क़दम उठाने की घड़ी अब आ गई। शहर में षडयन्त्रकारियों के तमाम गुप्त अड्डों में ही कहीं पर बग़ावत की घड़ी भी तय कर दी गई थी : कल की रात।

मगर जिन पाँच बोल्शेविकों को इस चीज़ का पता था उन्होंने पहले ही हमला करने का फ़ैसला किया। उन्होंने कहा : नहीं, हमें तो *आज ही रात* क़दम उठाना है।

उसी शाम एक बख्तरबन्द गाड़ी चुपके से रेलवे यार्ड से बाहर निकली। उसके बाहर निकलते ही बड़ा सा फाटक उतने ही चुपके से बन्द हो गया।

कोड की भाषा में दिये गए तार उड़ चले और उनकी माँग के जवाब में उन मुस्तैद और चौकन्ने आदमियों ने, जिनके हाथों में जनतन्त्र की सुरक्षा सौंपी गई थी, षडयन्त्रकारियों के अड्डों का सफ़ाया करने के लिए फौरन क़दम उठाये।

अकिम ने जार्की को टेलीफोन किया।

"सेल मीटिंग ठीक चल रही है? बहुत अच्छा। यहाँ पर एक कान्फ्रेंस हो रही है, उसके लिए फौरन यहाँ चले आओ और पार्टी की जिला कमिटी के मन्त्री को भी अपने साथ लेते आओ। ईंधन की समस्या, हमने जितनी सोची थी, उससे भी ज़्यादा गम्भीर है। तुम्हारे यहाँ आ जाने पर हम लोग विस्तार से बातें करेंगे।" अकिम दृढ़ आवाज़ में जल्दी-जल्दी बोल रहा था।

जार्की ने गुर्रा कर रिसीवर के अन्दर कहा, "यह ईंधन की समस्या तो हम सबको पागल कर देगी।"

लित्के बेतहाशा तेज़ी से दोनों मन्त्रियों को हेडक्वार्टर में ड्राइव कर ले गया। दूसरी मंज़िल की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए उन्होंने फौरन इस बात को भाँप लिया कि उन्हें ईंधन की समस्या के बारे में बात करने के लिए नहीं बुलाया गया है।

दफ़्तर के मैनेजर की मेज़ पर एक हल्की मशीनगन रखी हुई थी और उसके बग़ल में स्पेशल टास्क फोर्स के तोपची काम कर रहे थे। नगर की पार्टी और कोमसोमोल संगठनों से आये खामोश सन्तरियों से गलियारे भरे हुए थे। मन्त्री के दफ़्तर में पार्टी की प्रादेशिक कमिटी के ब्यूरो की खास ज़रूरी मीटिंग खत्म होने वाली थी।

दरवाज़े के ऊपर खिड़की में से दो तार निकले हुए थे जो मैदानी टेलीफोनों से जुड़े हुए थे। कमरे में बातचीत की धीमी सी भुनभुनाहट थी। वहाँ अकिम, रिता और मिखाइलो मौजूद थे। रिता लाल सेना के लोगों की हेलमेट लगाये हुए थी, खाकी स्कर्ट और चमड़े की जाकट पहने थी जिसकी पेटी से एक भारी माउज़र पिस्तौल झूल रहा था—यह वही वर्दी थी जो वह मोर्चे पर पहना करती थी जब वह कम्पनी की राजनीतिक शिक्षक थी।

"यह सब क्या हो रहा है?" जार्की ने आश्चर्य से पूछा।

"अलर्ट ड्रिल, वानिया। हम लोग अभी तुम्हारे इलाक़े में जा रहे हैं। पाँचवें इन्फैंट्री स्कूल में प्रैक्टिस रैली है। कोमसोमोल अपनी सेल मीटिंगों से सीधे वहाँ पहुँचेंगे। खास बात यह है कि हम लोग वहाँ पहुँच तो जायँ, मगर किसी का ध्यान हमारी ओर आकर्षित न हो।"

पुराने फौजी स्कूल का मैदान जिसमें ओक के पुराने विशाल पेड़ खड़े थे और जिसके ठहरे हुए पानी की तलैया में सेवार ही सेवार उगी हुई थी और जिसके चौड़े-चौड़े रास्तों की सफाई नहीं हुई थी—सब खामोशी में डूबे थे।

मैदान के बीचोबीच एक ऊँची सी सफेद दीवार के पीछे स्कूल की इमारत थी जिसमें अब लाल फौज के कमांडरों के लिए पाँचवां इन्फैंट्री स्कूल था। बहुत रात बीत चुकी थी। इमारत की ऊपरी मंज़िल पर अंधेरा था। बाहर से सब कुछ खामोश था और उधर से गुज़रने वाला आदमी यही सोचता कि स्कूल के सारे लोग सो रहे हैं। मगर लोहे के फाटक खुले क्यों थे और वे दो अंधेरी आकृतियाँ बड़े-बड़े मेढ़कों की तरह वहाँ फाटक पर खड़ी क्या कर रही थीं? रेलवे इलाक़े के तमाम हिस्सों के लोग, जो यहाँ इकट्ठे हुए थे, अच्छी तरह जानते थे कि

रात का अलर्ट हो जाने पर स्कूल के लोग सो नहीं सकते। उन्होंने अपनी कोमसोमोल और पार्टी की सेल मीटिंगें उस छोटे से ऐलान के बाद फौरन छोड़ दी थीं। वे खामोशी से चले आ रहे थे, कभी अकेले कभी दो, मगर कभी तीन से ज़्यादा नहीं और उनमें से हर एक के पास कम्युनिस्ट पार्टी या कोमसोमोल की सदस्यता का कार्ड था। उसके बिना कोई भी लोहे के फाटक में नहीं घुस सकता था।

सभा भवन, जिसमें काफी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी, रोशनी से जगमग कर रहा था। खिड़कियों पर तम्बू बनाने में इस्तेमाल होने वाले किरमिच के मोटे-मोटे पर्दे टाँग दिये गए थे। बोल्शेविक, जो यहाँ पर बुलाये गए थे, घर की बनी सिगरेटें खामोशी से पी रहे थे और आपस में दिल्लगी कर रहे थे कि देखो ड्रिल के लिए भी कितनी एहतियात बरती जा रही है। कोई भी यह नहीं महसूस कर रहा था कि यह सचमुच का अलर्ट है। लोग समझते थे कि स्पेशल ड्यूटी की टुकड़ियों में अनुशासन कायम रखने के लिए यह चीज़ की जा रही है। मगर तपा हुआ सिपाही स्कूल के कम्पाउंड में दाखिल होते ही सच्चे अलर्ट के लक्षणों को पहचान लेता था। बहुत ही ज़्यादा सावधानी बरती जा रही थी। विद्यार्थियों के कानों में आदेश कहे जा रहे थे और उनकी प्लैटूनें बाहर कतार बनाती जा रही थीं। मशीनगनें कम्पाउंड के भीतर खामोशी से लाई जा रही थीं और इमारत की किसी भी खिड़की से रोशनी की एक हलकी सी किरण भी बाहर झाँकती नहीं दिखाई देती थी।

"मितियाई, मामला कुछ संगीन मालूम होता है?" पावेल कोर्चागिन ने दुबावा से पूछा जो एक खिड़की की चौखट पर एक लड़की के बग़ल में बैठा था और जिसे दो दिन पहले पावेल ने जार्की के घर पर देखा था।

दुबावा ने खुशदिली से पावेल के कंधे पर हाथ मारा।

"डर रहे हो, क्यों? मगर कोई बात नहीं, हम तुम लोगों को लड़ना सिखा देंगे। तुम दोनों एक-दूसरे को नहीं जानते। या जानते हो?" कहते हुए उसने उस लड़की की ओर इशारा किया। "इसका नाम 'आना' है, नाम का दूसरा हिस्सा मुझे नहीं मालूम, मगर इसका पद मैं जानता हूँ, यह आन्दोलन और प्रचार केन्द्र की इन्चार्ज है।"

वह लड़की, जिसका दुबावा ने ऐसे मज़ाक के ढंग से परिचय दिया था, कोर्चागिन को दिलचस्पी से देख रही थी और बालों के अपने एक गुच्छे को पीछे फेर रही थी जो उसके चमकीले गुलाबी रंग के रूमाल के नीचे से खिसककर बाहर आ गया था। कोर्चागिन की आँखें उसकी आँखों से मिलीं और दो-एक क्षण के लिए दोनों में एक मूक प्रतियोगिता सी जारी रही। बड़ी-बड़ी पलकों के नीचे से

उसकी चमकती हुई काली-काली आँखें पावेल की आँखों को चुनौती दे रही थीं। पावेल ने उधर से दृष्टि हटाई और दुबारा को देखने लगा। यह महसूस करके कि शर्म के मारे उसका मुँह लाल हुआ जा रहा है, उसे कुछ चिढ़ सी आई और मुँह कुछ बन गया।

जबरिया मुस्कराते हुए उसने पूछा, "तुम में से कौन प्रचार-आन्दोलन का काम करता है?"

उसी क्षण हॉल में हलचल हुई। एक कम्पनी कमांडर कुर्सी पर चढ़ गया और चिल्लाया: "पहली कम्पनी के लोगो, इधर आकर खड़े हो जाओ! जल्दी करो साथियो, जल्दी!"

प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष और अकिम के साथ जुखराई अन्दर दाखिल हुआ। वे लोग अभी अभी आये थे। हॉल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लोगों की क़तारें खड़ी थीं।

प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष एक ट्रेनिंग मशीनगन पर चढ़ गये और उन्होंने अपना हाथ उठाया।

उन्होंने कहा: "साथियो, आपको एक बहुत ही जरूरी और संगीन मसले के लिए यहाँ बुलाया गया है। इस वक़्त मैं आपको जो कुछ बतलाने जा रहा हूँ, वह कल तक सुरक्षा के ख़याल से नहीं बतलाया जा सकता था। कल रात को यहां पर और उकेन के दूसरे शहरों में एक क्रान्ति-विरोधी विद्रोह शुरू होने वाला है। शहर में ह्वाइट-गार्ड अफ़सर भरे हुए हैं। लुटेरों की टुकड़ियाँ शहर के चारों तरफ़ जमा कर दी गई हैं। इन षड़यन्त्रकारियों में से कुछ लोग बख्तरबन्द गाड़ियों की टुकड़ी में घुस गए हैं और वहाँ पर ड्राइवरों का काम कर रहे हैं। मगर चेका ने समय रहते इस साजिश का पता पा लिया है। हम सारे पार्टी और कोमसोमोल संगठनों को हथियार दे रहे हैं। पहली और दूसरी कम्युनिस्ट बटालियनें, फ़ौजी स्कूल की टुकड़ियों और चेका के साथ मिलकर काम करेंगी। फ़ौजी स्कूल की यूनिटों ने मोर्चा लेना शुरू भी कर दिया है। अब तुम्हारी बारी है, साथियो! अपने हथियार लेकर पन्द्रह मिनट के अन्दर अन्दर मोर्चे पर जाने के लिए तैयार हो जाओ! कामरेड जुखराई इस फ़ौजी कार्रवाई का नेतृत्व करेंगे। यूनिट कमांडर उनसे आदेश लेंगे। परिस्थिति कितनी गम्भीर है, इसके बारे में ज्यादा जोर देना मेरे लिए जरूरी नहीं है। कल की बग़ावत को आज ही कुचल देना होगा।"

पन्द्रह मिनट बाद हथियारों से लैस बटालियन स्कूल के अहाते में क़तार बाँधे खड़ी थी।

जुखराई ने निश्चल खड़े सैनिकों की क़तारों पर निगाह दौड़ाई। उनके

सामने तीन क़दम पर दो आदमी चमड़े की पेटी कमर में बाँधे खड़े थे। एक था बटालियन कमांडर मिनिआइलो जो लोहे के कारखाने का एक मज़दूर था। वह यूराल का रहने वाला और बहुत हट्टा-कट्टा आदमी था। और उसके बग़ल में खड़ा था कमिसार अकिम। उसके बायीं तरफ़ पहली कम्पनी की प्लैटूनें थीं और उनके आगे दो क़दम पर कम्पनी के कमांडर और राजनीतिक शिक्षक खड़े थे। उनके पीछे कम्युनिस्ट बटालियन की ख़ामोश क़तारें खड़ी थीं। इस बटालियन में तीन सौ आदमी थे।

फ़ियोदोर ने सिगनल दिया, "कार्रवाई शुरू करने का वक़्त हो गया।"

वे तीन सौ आदमी उजड़े हुए वीरान सड़कों पर मार्च करने लगे।

शहर सो रहा था।

दिकाया के सामने, लवोव्स्काया सड़क पर बटालियन ने क़तार तोड़ी। यहीं पर उसे अपनी कार्रवाई शुरू करनी थी।

ख़ामोशी से, बिना कोई भी आवाज़ किये उन्होंने इमारतों को घेर लिया। एक दूकान की सीढ़ी पर हेडक्वार्टर क़ायम किया गया।

शहर के चौक की तरफ़ से एक मोटर लवोव्स्काया सड़क पर तेज़ी से इधर आ रही थी और उसकी हेडलाइटों से सामने का रास्ता चमक रहा था। बटालियन की कमांड चौकी के सामने पहुँच कर वह झटके से रुक गई।

इस बार ह्यूगो लित्के अपने पिता को साथ लाया था। कमांडेंट कूद कर गाड़ी से बाहर आया और उसने गर्दन मोड़ कर अपनी लैटिश भाषा में कुछ छोटे-छोटे जुमले अपने लड़के से कहे। मोटर तेज़ी से आगे बढ़ी और पलक मारते मारते सड़क के मोड़ पर जाकर आँख से ओझल हो गई। लित्के भूत की तरह गाड़ी चला रहा था। उसकी आँखें सड़क पर चिपकी हुई थीं और उसके हाथ इस तरह कस कर इस्टियरिंग ह्वील को पकड़े थे जैसे वह उसका ही एक अंग हो।

हाँ, आज रात लित्के के तूफ़ानी रफ़्तार से गाड़ी चलाने की ज़रूरत थी। इस वक़्त तेज़ भगाने के लिए उसको हरगिज़ गार्ड हाउस में दो रात बन्द रहने की सज़ा न मिलेगी!

और ह्यूगो उल्का की तरह सड़क पर तेज़ भागा जा रहा था।

जुखराई को, जिसे नौजवान लित्के पलक मारते शहर के एक छोर से दूसरे छोर पर पहुँचा रहा था, लित्के की प्रशंसा करनी ही पड़ी, "आज रात अगर तुमने किसी को कुचला नहीं, तो कल तुम्हें सोने की एक घड़ी इनाम में मिलेगी।"

ह्यूगो बड़ा खुश था और बोला, "मैं तो सोचता था कि उस मोड़ पर इतनी तेज़ी से गाड़ी मोड़ने के लिए मुझे दस दिन जेल में रहना पड़ेगा....।"

पहले वार षड़यन्त्रकारियों के हेडक्वार्टर पर किये गए। थोड़ी ही देर में क़ैदियों की बड़ी-बड़ी टोलियाँ और कागज़ात के गट्ठर स्पेशल डिपार्टमेंट के हवाले किये जा रहे थे।

दिकाया सड़क पर मकान नम्बर ११ में जुर्बर्ट नाम का एक आदमी रहता था जिसने चेका को मिली हुई सूचना के अनुसार, इस ह्वाइट गार्ड विद्रोह में बहुत आगे बढ़कर हिस्सा लिया था। उन अफ़सर यूनिटों की, जो पोडोल के इलाक़े में काम करने वाली थीं, फ़िहरिस्तें जुर्बर्ट के पास थीं।

लित्के का पिता खुद गिरफ़्तारी करने के लिए दिकाया सड़क पर पहुँचा। जुर्बर्ट के मकान की खिड़कियाँ एक बाग़ीचे में खुलती थीं, और इस बाग़ीचे और पहले के एक स्त्रियों के मठ के बीच सिर्फ़ एक ऊँची दीवार थी। जुर्बर्ट मकान पर नहीं था। उसके पड़ोसियों ने बतलाया कि सारे दिन किसी ने उसे नहीं देखा था। तलाशी ली गई और नाम और पतों की फ़िहरिस्तें और उनके साथ-साथ दस्ती बमों का एक बक्सा भी मिला। लित्के ने जुर्बर्ट को पकड़ने के लिए अपने आदमियों को गुप्त जगहों पर बिठालने का हुक्म दे दिया और उसके बाद उन कागज़ात का मुआइना करने के लिए कमरे में थोड़ी देर ठहरा रहा।

फ़ौजी स्कूल का वह नौजवान विद्यार्थी जिसे नीचे बाग़ीचे में पहरे पर खड़ा किया गया था, बाग़ीचे के उस कोने से जहाँ वह था, खिड़की की रोशनी को देख सकता था। वहाँ उसे अंधेरे में अकेले रहना अच्छा नहीं लग रहा था। कुछ डर भी लग रहा था। उसे दीवार पर निगाह रखने के लिए कहा गया था। मन को ढाढ़स देने वाली वह रोशनी उसकी जगह से बहुत दूर मालूम होती थी। और उससे भी बुरी बात यह हुई कि कमबख़्त चाँद बादलों के पीछे छिप छिप जाता था। रात के अंधेरे में उन झाड़ियों में जैसे अपनी एक अलग डरावनी ज़िन्दगी आ जाती हो। वह नौजवान सिपाही अपनी संगीन अपने चारों ओर के अंधेरे को भोंक रहा था। कुछ नहीं, कहीं कुछ नहीं।

"इन लोगों ने यहाँ मुझे क्यों खड़ा किया? दीवार बहुत ऊँची है, उस पर कोई चढ़ तो सकता नहीं। मैं सोचता हूँ कि खिड़की के पास जाकर अन्दर झाँकूँ।" दीवार पर दुबारा निगाह दौड़ाते हुए वह अपने उस नम और अंधेरे और सड़ी-गली घास और काई की बदबू से भरे हुए कोने से बाहर आया। खिड़की के पास पहुँच कर उसने देखा कि उसी वक्त लित्के ने मेज़ पर से कागज़ात उठाये। उसी क्षण दीवार के ऊपर एक छायाकृति आई। उस दीवार पर से खिड़की के पास का सन्तरी और कमरे के अन्दर का आदमी दोनों साफ़ दिखाई देते थे। बिल्ली जैसी फुर्ती से वह छायाकृति पेड़ की एक शाख पकड़कर झूली और नीचे ज़मीन

पर कूद पड़ी। वह चुपके-चुपके पैर दबाकर अपने शिकार तक आई। एक वार हुआ और सन्तरी ज़मीन पर ढेर हो गया। जहाजियों वाली छुरी सन्तरी की गर्दन में पूरी मूठ तक भुँकी हुई थी।

बाग़ीचे में एक गोली की आवाज़ हुई जिससे इमारत के चारों ओर खड़े हुए लोगों में हरकत आ गई। उनमें से छः लोग मकान की तरफ़ दौड़े। रात की निस्तब्धता में उनके पैरों की आवाज़ ज़ोर से सुनाई दे रही थी। लित्के मुँह के बल मेज़ पर गिरा पड़ा था और उसके सिर के घाव से खून बह रहा था। वह मर चुका था। खिड़की के शीशे चकनाचूर हो गए थे। मगर क़ातिल को कागज़ात हथियाने का वक्त नहीं मिला था।

मठ की दीवार की तरफ और कई गोलियों की आवाजें सुनाई दीं। खूनी सड़क की ओर की दीवार पर चढ़ गया था और अब लुकियानोव मैदान के रास्ते से भाग जाने की कोशिश कर रहा था। वह भागते-भागते गोली चलाता जा रहा था। मगर एक गोली ने आकर उसका काम तमाम कर दिया।

रात भर तलाशियाँ चलती रहीं। सैकड़ों लोग जिनके नाम मकान कमिटियों की किताबों में दर्ज नहीं थे और जिनके पास संदिग्ध कागज़ात और हथियार पाये गए थे, उन्हें चेका में भेज दिया गया। वहाँ एक कमीशन संदिग्ध लोगों की छानबीन कर रहा था।

यहाँ-वहाँ षड़यन्त्रकारियों ने मुक़ाबला करने की कोशिश की। जिलिया-न्स्काया स्ट्रीट के एक मकान की तलाशी लेते वक्त एन्टन लेबेदेव दो क़दम नज़दीक से छोड़ी गई एक गोली से मारा गया।

उस रात सोलोमेंका बटालियन के पाँच आदमी मारे गए और चेका ने उस पक्के बोल्शेविक और जनतन्त्र के वफ़ादार पहरुए जान लित्के से हाथ धोया।

मगर क्रान्ति-विरोधी ह्वाइट गार्ड विद्रोह को उभरने के पहले ही कुचल दिया गया।

उसी रात फ़ादर वासिली, उसकी लड़कियों और उनके गिरोह के दूसरे लोगों को शेपेतोवका में गिरफ़्तार कर लिया गया।

तनाव कम हो गया। मगर जल्द ही एक नया दुश्मन शहर के लिए खतरा बन गया। वह खतरा था रेलवे का बेकार हो जाना—मानो उसे लकवा मार गया हो। इसका मतलब यह था कि लोग भूख से और आने वाले जाड़े में सर्दी से मरते।

अब सब कुछ गल्ले और ईंधन पर निर्भर था।

ग्यारहवाँ अध्याय

फ़ियोदोर ने मुँह से अपना छोटी डंडीवाला पाइप निकाला और कुछ सोचते हुए सतर्कता पूर्वक उँगली से उसकी राख को दबाया। पाइप बुझ चुका था।

एक दर्जन सिगरेटों से निकले हुए भूरे धुँए का एक घना बादल छत के नीचे और उस कुर्सी के ऊपर मँडरा रहा था, जिस पर प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष बैठे हुए थे। कमरे के कोनों से मेज़ के इर्द-गिर्द बैठे हुए लोगों के चेहरे, धुएँ के उस कुहासे में धुँधले नज़र आ रहे थे।

अध्यक्ष के बग़ल में तोकारेव आगे को झुका हुआ बैठा था। वह खीझा हुआ-सा अपनी छोटी दाढ़ी को बार-बार नोच रहा था और जब-तब आँख के कोने से उस नाटे गंजे आदमी को देख लेता था जो अपनी बुलन्द आवाज़ में बराबर बोलता चला जा रहा था जैसे उसकी बात का कोई अन्त ही न हो। मगर उसकी बात खाली अंडे की तरह बेमतलब और खोखली थी।

अकिम ने उस बूढ़े मज़दूर की आँख के भाव को भाँपा और उसे गाँव में अपने बचपन के दिनों में देखे हुए उस मुर्ग़े की याद हो आई जिसकी आँखों में भी अपने दुश्मन पर हमला करने के पहले यही भाव होता था।

पार्टी की प्रादेशिक कमिटी की बैठक को एक घंटे से ज़्यादा हो गया था। वह गंजा आदमी रेलवे की ईंधन कमिटी का अध्यक्ष था।

अपने सामने पड़े हुए कागज़ात के ढेर में अपनी सुबुक उँगलियाँ दौड़ाता हुआ गंजा आदमी बोलता चला जा रहा था :

"....ऐसी हालतों में प्रादेशिक कमिटी और रेलवे की प्रबंध समिति के फ़ैसले को पूरा करना, साफ़ ही बिलकुल नामुमकिन है। मैं फिर अपनी बात को दुहराता हूँ कि अब से एक महीने बाद भी हम चार सौ क्यूबिक मीटर से ज़्यादा ईंधन नहीं दे सकेंगे। जहाँ तक दस लाख अस्सी हज़ार क्यूबिक मीटर की माँग की बात है, वह तो सरासर....." वक्ता ठीक शब्द के लिए अटका, "सरासर.... ख़याली पुलाव है।" उसने अपनी बात ख़त्म की और उसका छोटा-सा मुँह कुछ इस भाव से लटक गया मानो उसे चोट लगी हो।

बड़ी देर तक ख़ामोशी रही।

फ़ियोदोर ने नाखून से अपने पाइप को खोदा और उसकी राख को गिरा दिया। आख़िरकार तोकारेव ने ख़ामोशी तोड़ी।

"फ़िज़ूल बकवास करने से कोई फ़ायदा नहीं," उसने अपनी गूँजती हुई

भारी आवाज में शुरू किया, " रेलवे की ईंधन कमिटी के पास ईंधन नहीं है, कमी नहीं था और आगे भी होने की उसे उम्मीद नहीं····ठीक ? "

गंजे आदमी ने अपना कन्धा उचकाया।

" माफ़ कीजिए कामरेड, हमने काफ़ी ईंधन इकट्ठा किया था लेकिन यातायात के साधनों की कमी के कारण····" उसने अपना थूक निगला और अपनी चमकती हुए खोपड़ी को एक चारखाने रूमाल से पोंछा। उसने अपने रूमाल को जेब में डालने की कई बार बेकार कोशिश की और आख़िरकार परेशान होकर और घबराकर उसे अपने पोर्टफोलियो के नीचे घुसा दिया।

" आख़िर आपने ईंधन की सप्लाई के सिलसिले में क्या किया ? उन बड़े-बड़े विशेषज्ञों को, जिनका षड़यन्त्र में कुछ हाथ था, गिरफ़्तार हुए भी तो कई रोज हो गये," देनेको ने कोने की अपनी जगह से कहा।

वह गंजा आदमी उसकी ओर मुड़ा और बोला, " मैंने रेलवे के प्रबंधकर्ताओं को तीन बार लिखा कि जब तक हमें यातायात की उचित सुविधाएँ नहीं मिलतीं, कुछ भी करना असम्भव···· ।"

तोकारेव ने उसको बीच में ही टोका, " हम इस बात को कई बार सुन चुके हैं," उसने खुश्क आवाज में कहा और उस गंजे आदमी को शत्रुता की आँखों से देखा। " आप क्या हम लोगों को बिलकुल बेवकूफ़ समझते हैं ? "

इन शब्दों को सुनकर तो जैसे गंजे आदमी की रीढ़ की हड्डी में एक सुरसुरी दौड़ गई।

उसने धीमी आवाज में जवाब दिया, " क्रान्ति के दुश्मनों की हरकतों के लिए मैं जवाबदेही नहीं ले सकता। "

" मगर आपको पता था या नहीं कि लकड़ी रेलवे लाइन से बहुत दूर काटकर गिराई जा रही है ? "

" मैंने इस चीज के बारे में सुना था, मगर मैं अपने बड़े अफ़सरों का ध्यान ऐसी गड़बड़ियों की तरफ़ नहीं दिला सकता था क्योंकि वे मेरे क्षेत्र से बाहर हो रही थीं।"

" इस काम के लिए तुम्हारे पास कितने आदमी हैं ? " ट्रेड यूनियन काउंसिल के अध्यक्ष ने पूछा।

" क़रीब दो सौ," गंजे आदमी ने जवाब दिया।

" इसका मतलब है, हर हरामख़ोर के पीछे एक साल में एक क्यूबिक मीटर !" तोकारेव ने साँप की तरह फुफकारते हुए कहा।

" रेलवे की ईंधन कमिटी को ख़ास राशन दिया जाता है। उन्हें वह खाना

दिया जाता है जो मजदूरों को मिलना चाहिए और जरा देखिए कि आप काम क्या कर रहे हैं ! वह दो गाड़ी आटा जो आपको मजदूरों के लिए मिला था, क्या हुआ उसका ?" ट्रेड यूनियन के अध्यक्ष ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

इसी तरह के तेज-तीखे सवाल हर तरफ़ से उस गंजे आदमी पर बरस रहे थे और वह उनका जवाब उसी घबराये हुए अन्दाज में दे रहा था, जिस अन्दाज में कि कर्ज में डूबा हुआ कोई आदमी तंग करने वाले लेनदारों से अपना पीछा छुड़ाने की कोशिश करता है। सीधा-सीदा जवाब देने से बचने के लिए वह अपने आपको बहुत तोड़-मरोड़ रहा था, मगर उसकी घबराई हुई आँखें इधर-उधर दौड़ रही थीं। उसे ख़तरा दिखाई दे रहा था और उसकी कायर आत्मा में सिर्फ़ एक चीज की चाह थी : कैसे जल्द से जल्द यहाँ से भाग जाय और जाकर अपने आरामदेह घोंसले में मुँह छिपा ले और इतमीनान से खाना खाये और अपनी बीबी से, जो अब भी जवान थी और जो शायद इस वक्त पोल दी काक का उपन्यास लिये उसमें रम रही होगी, अपना जी बहलाये।

उस गंजे आदमी के जवाबों को ध्यान से सुनते हुए फ़ियोदोर ने अपनी नोटबुक में जल्दी-जल्दी लिखा : "मैं समझता हूँ कि इस आदमी की ठीक से जाँच होनी चाहिए। यह सिर्फ़ अयोग्यता की बात नहीं है, बल्कि उससे कुछ ज़्यादा गहरा मामला है। मुझे इसके बारे में एक-दो बातें मालूम हैं···बहस को बन्द करो और इस आदमी को जाने दो ताकि हम लोग काम की बातें कर सकें।"

अध्यक्ष ने नोट पढ़ा और फ़ियोदोर को देखकर सिर हिलाया।

जुखराई उठा और किसी से टेलीफ़ोन पर बात करने के लिए गलियारे में निकल गया। वह लौटकर आया तो अध्यक्ष प्रस्ताव पढ़ रहे थे :

"···हम प्रस्ताव करते हैं कि रेलवे ईंधन कमिटी की प्रबंध समिति को, काम को जान-बूझकर बिगाड़ने के जुर्म में अलग कर दिया जाय और ईंधन के इस सारे मामले को छानबीन के लिए अधिकारियों के हाथ में दे दिया जाय।"

उस गंजे आदमी को इससे भी बड़ी सजा पाने का डर था। यह सही है कि तोड़-फोड़ के जुर्म में पद से अलग किये जाने का मतलब होगा कि समग्र रूप से उसकी विश्वसनीयता के बारे में भी सवाल उठेगा। मगर वह छोटी बात है। जहाँ तक उस बोयार्का वाले मामले की बात है, उसकी उसे कोई परेशानी नहीं थी क्योंकि वह उसका इलाक़ा नहीं था। उसने अपने मन में कहा, "मगर बहुत बाल-बाल बचे ! मैंने तो समझा था कि उन्होंने सचमुच मेरे बारे में कोई बात खोद निकाली···।"

अब प्रायः आश्वस्त होकर उसने अपने कागजात को पोर्टफोलियो में

रखते हुए कहा, "स्पष्ट ही मैं एक ग़ैर-पार्टी विशेषज्ञ हूँ और आप जितना चाहें मेरा अविश्वास कर सकते हैं। मगर मेरा अन्तःकरण साफ़ है। अगर मैं वह सब काम नहीं कर सका जो मुझे करना चाहिए था, तो इसकी वजह यही थी कि ऐसा करना नामुमकिन था।"

किसी ने कोई टिप्पणी नहीं की। वह गंजा आदमी कमरे के बाहर निकल गया, जल्दी-जल्दी सीढ़ियों से नीचे उतरा और चैन की साँस लेते हुए उसने बाहर सड़क पर खुलनेवाला दरवाज़ा खोला।

"आपका शुभनाम, महाशय जी?" फ़ौजी कोट पहने एक आदमी ने उससे पूछा।

डूबते हुए दिल से उस गंजे आदमी ने हकलाते हुए जवाब दिया, "चेर··· विन्स्की···।"

इस बाहरी आदमी के हटते ही ऊपर तेरह लोग बड़ी सी कान्फ्रेंस टेबिल पर एक-दूसरे के और क़रीब सरक आये।

जुखराई ने खुले हुए नक़शे पर उँगली गड़ाते हुए कहा, "देखो, यह बोयार्का स्टेशन है। यहाँ से पाँच मील पर पेड़ गिराये जा रहे हैं। इस जगह पर बीस लाख दस हज़ार क्यूबिक मीटर लकड़ी का ढेर लगा है। एक पूरी फ़ौज ने इस लकड़ी को जमा करने के लिए आठ महीने तक दिन-रात काम किया। और इस सबका नतीजा? ग़द्दारी। रेलवे के लिए और शहर के लिए ईंधन नहीं है। इस तमाम लकड़ी को पाँच मील दूर स्टेशन तक ढोने के लिए पाँच हज़ार गाड़ियाँ लगेंगी और एक महीना लगेगा—वह भी तब जब वे दिन में दो बार खेपा लगायें। वहाँ से सबसे पास जो गाँव है वह दस मील दूर है। और इतना ही नहीं, ओर्लिक और उसके गिरोह के लोग इसी इलाक़े में घूम रहे हैं। तुम समझते हो इसका क्या मतलब है? देखो, योजना के अनुसार पेड़ गिराने की शुरुआत ठीक उस जगह से होनी चाहिए थी और वहाँ से फिर स्टेशन की तरफ़ बढ़ना चाहिए था और उन बदमाशों ने किया यह कि उलटी तरफ़ बढ़ते हुए वे लोग घने जंगल में उसे ले गये। ऐसा करने में उनका उद्देश्य यही था कि हम लोग किसी तरह इस ईंधन को रेलवे लाइन तक ढोकर न ले जा सकें। और उनका ख़याल कुछ ग़लत नहीं था। हमें इस काम के लिए एक सौ गाड़ियाँ भी न मिल सकीं। यह बड़ा कमीना वार उन्होंने हमारे ऊपर किया है। उनकी बग़ावत भी इससे ज़्यादा ख़तरनाक नहीं थी।"

जुखराई की बन्द मुट्ठी ज़ोर से नक़शे के ट्रेसिंग पेपर पर गिरी। उन तेरहों लोगों ने परिस्थिति के उन और भी भयानक पहलुओं को समझ लिया जिनका

उल्लेख जुख़राई ने नहीं किया था। जाड़ा आ रहा था। उन्होंने अपनी मन की आँखों से अस्पतालों, स्कूलों, दफ़्तरों और लाखों लोगों को जाड़े-पाले की सर्द गिरफ़्त में पड़ते हुए देखा। उनकी आँखों के आगे नाच गया कि कैसे रेलवे स्टेशनों पर भीड़ लगी है और इस तमाम भीड़ को ले जाने के लिए हफ़्ते में सिर्फ़ एक गाड़ी है।

हर आदमी इस गम्भीर परिस्थिति पर विचार कर रहा था और कमरे में गहरी खामोशी थी।

आखिरकार फ़ियोदोर ने अपनी मुट्ठी ढीली की और कहा :

" साथियो, बचत की अब सिर्फ़ एक राह है। हमें तीन महीने के अन्दर-अन्दर स्टेशन से जंगल तक, जहाँ लकड़ी कटी पड़ी है, पाँच मील लम्बी छोटी रेलवे लाइन बनानी है। जहाँ वह इलाक़ा शुरू होता है, वहाँ तक पहुँचने के लिए रेलवे लाइन का पहला हिस्सा छः हफ़्ते के अन्दर तैयार हो जाना चाहिए। मैं पिछले एक हफ़्ते से इस चीज़ के बारे में सोच रहा हूँ और ताल-मेल बैठा रहा हूँ।" जुख़राई का गला सूख रहा था और उसकी आवाज़ भर्रा रही थी, " इसके लिये हमें तीन सौ पचास मज़दूरों और दो इंजीनियरों की ज़रूरत होगी। पुश्चा-वोदित्सा में काफ़ी रेलवे लाइनें और सात इंजन हैं। कोमसोमोलों ने मालगोदामों में से उन्हें ढूँढ़ निकाला है। लड़ाई से पहले पुश्चा-वोदित्सा से शहर तक छोटी रेलवे लाइन बिछाने की योजना थी। मुश्किल यह है कि बोयार्का में मज़दूरों के रहने के लिए जगह नहीं है, वह जगह बिलकुल खंडहर हो रही है। हमें हर बार पन्द्रह-पन्द्रह दिन के लिए छोटी-छोटी टोलियों में लोगों को भेजना होगा। उससे ज़्यादा वे लोग वहाँ नहीं टिक सकेंगे। कोमसोमोलों को वहाँ भेजना ठीक होगा क्या, अकिम ?" और जवाब का इन्तज़ार किये बग़ैर उसने अपनी बात जारी रखी, "कोमसोमोल संगठन अपने ज़्यादा से ज़्यादा सदस्यों को उस जगह पहुँचायेगा। शुरुआत सोलोमैंका के संगठन से होगी। और कुछ लोग शहर के भी रहेंगे। काम मुश्किल है, बहुत मुश्किल; लेकिन मैं समझता हूँ कि अगर इन लड़कों को यह बतला दिया जाय कि दांव पर क्या चीज़ लगी हुई है और हालत कितनी संगीन है, तो यक़ीनी वे लोग इस काम को करेंगे।"

रेलवे के चीफ़ ने सन्देह से अपना सिर हिलाया।

" मैं समझता हूँ यह कोशिश बेकार है। ऐसी हालत में जब कि पत-झड़ की बारिश शुरू होने वाली है और पाले के दिन आ रहे हैं, जंगल में पाँच मील लम्बी रेलवे लाइन बिछाना....." उसने थके हुए स्वर में कहना शुरू किया। मगर जुख़राई ने उसकी बात बीच में ही काट दी।

"आन्द्रेई वासीलिएविच, आपको ईंधन के मसले पर और ज़्यादा ध्यान देना चाहिए था। वह लाइन तो बनानी ही है, और हम लोग उसे बना कर रहेंगे। यह तो होगा नहीं कि हम लोग हाथ समेटे बैठ रहें और ठिठुर कर मर जायें। आप क्या यह चाहते हैं?"

रेलगाड़ी पर औज़ारों के आखिरी बक्से लाद दिये गए। रेलगाड़ी चलाने वाले अपनी-अपनी जगहों पर पहुँच गये। हल्की सी बूँदाबाँदी हो रही थी। पानी की छोटी-छोटी पारदर्शक बूँदें रिता के चमकते हुए चमड़े के जाकट पर फिसल रही थीं।

रिता ने बड़ी आजिजी से तोकारेव से हाथ मिलाया और धीमे से कहा, "हमारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।"

उस बुड्ढे ने अपनी घनी-घनी सफ़ेद बरौनियों के नीचे से रिता को प्यार से देखा।

"हाँ, अच्छी खासी मुसीबत में डाल दिया उन्होंने हमें, खुदा ग़ारत करे उन लोगों को," उसने अपने ही विचारों का जवाब देते हुए भारी आवाज़ में कहा, "तुम लोग जो यहाँ पर हो, ज़रा खयाल रखना ताकि वहाँ पर अगर कोई अड़चन हो तो तुम लोग जहाँ ज़रूरत हो, दबाव डाल सको। यहाँ पर ये सब जो नाकारे इकट्ठा हैं, बग़ैर नौकरशाही के कुछ कर-धर नहीं सकते। अच्छा बेटी, अब मैं चलूँ।"

उस बुड्ढे आदमी ने अपने जाकट के बटन लगाये। ठीक चलते वक़्त उससे रिता ने यों ही पूछा, "कोर्चागिन नहीं जा रहा है क्या? मैंने इन लड़कों में उसको नहीं देखा।"

"नहीं, वह और जॉब-सुपरिंटेंडेंट कल ही ट्रॉली से वहाँ चले गये, हम लोगों के आने की तैयारी करने के लिए।"

उसी वक़्त जार्की, दुबावा और अपने कन्धों पर लापरवाही से अपनी जाकट डाले और अपनी पतली-पतली उँगलियों में एक सिगरेट दबाये आना बोर्हार्ट प्लेटफ़ार्म पर जल्दी-जल्दी उनकी तरफ़ आये।

औरों के आने से पहले रिता को तोकारेव से बस एक और सवाल करने का वक़्त मिला।

"कोर्चागिन के साथ आपकी पढ़ाई कैसी चल रही है?"

बूढ़े ने आश्चर्य से रिता की ओर देखा।

"कैसी पढ़ाई ? वह लड़का तो तुम्हारी निगरानी में है न ? उसने मुझे तुम्हारे बारे में बहुत सी बातें बतलाई है। तुमको तो वह न जाने क्या समझता है, तुम्हारी तारीफ़ के पुल बाँधा करता है।"

रिता के चेहरे से सन्देह झलक रहा था, "कामरेड तोकारेव, क्या आप ठीक कह रहे हैं ? क्या वह मेरे संग सबक लेने के बाद चीज़ को और सफाई से समझने के लिए आपके पास हमेशा नहीं जाया करता था ?"

बुड्ढा ज़ोर से हँस पड़ा और बोला, "मेरे पास ? मुझसे समझने के लिए तो कभी उसकी परछांई भी नहीं आई।"

इंजन ने सीटी दी। क्लावीचेक एक डब्बे में से चिल्लाया :

"ओ कामरेड उस्तिनोविच, हमारे बुढ़ऊ को हमें वापस दे दो ! उनके बिना हम लोग क्या करेंगे ?"

वह चेक नौजवान और भी कुछ कहने वाला था मगर बाद में आनेवाले उन तीन लोगों को देख कर रुक गया। क्षण भर को उसने आना की आँखों के चिन्तित भाव को देखा, फिर दिल मसोसकर उसने दुबावा से अलग होते समय उसको दी हुई आना की मुस्कान को देखा और तेजी से खिड़की पर से हट गया।

पतझड़ की बारिश मुँह पर तमाचा-सा मार रही थी। सीसे के रंग के और नमी से भारी, झुके हुए बादल धीरे-धीरे उड़ते चले जा रहे थे। यह पतझड़ का अन्त था और चाँदी के रंग की पत्तियाँ तमाम झड़ गई थीं। और पुराने पेड़ ठटरियों की तरह और सिर झुकाये खड़े थे और उनके झुर्रीदार तने बादामी रंग की काई से ढँके हुए थे। निर्मम पतझड़ ने उनके भव्य परिधान लूट लिये थे और वे नंगे और दयनीय खड़े थे।

जंगल के बीचोबीच स्टेशन की छोटी-सी इमारत अकेली खड़ी थी। ताजी खोदी हुई मिट्टी की एक पट्टी माल लादने के प्लेटफार्म से जंगल तक चली गई थी। इस पट्टी के चारों तरफ चींटियों की तरह आदमियों के झुण्ड खड़े थे।

पैर के नीचे दबने पर मिट्टी का वह कीचड़ बहुत बुरा मालूम होता था। बाँध के पास, जहाँ आदमी बेतहाशा मिट्टी खोदे जा रहे थे, फावड़ों और कुदालों की आवाज सुनाई दे रही थी।

बारिश जैसे किसी बड़ी बारीक चलनी में से होकर गिर रही थी और पानी की ठण्डी-बर्फीली बूँदें लोगों के कपड़ों में घुस रही थीं। इस बात का डर था कि

बारिश उनकी मेहनत के सारे नतीजों को, उनके काम को बहा ले जायगी। क्योंकि बाँध पर की मिट्टी पानी में भीग कर धसकती जा रही थी।

काम करने वाले ऊपर से नीचे तक पानी में भीगे हुए थे। उनके कपड़े इतने ठण्डे थे कि सर्दी मालूम होती थी और इसी तरह वे लोग अंधेरा हो जाने के भी बहुत बाद तक काम करते रहते थे।

और इस तरह हर रोज़ खुदी हुई ज़मीन की यह पट्टी जंगल की तरफ़ बराबर बढ़ती जा रही थी।

स्टेशन के पास ही एक डरावना सा कंकाल खड़ा था जो कभी ईंट की एक इमारत थी। हर चीज़ जो हटाई जा सकती थी, उखाड़ी जा सकती थी या गोले से उड़ाई जा सकती थी, उसे लुटेरे कभी के ले जा चुके थे। खिडकियों और दरवाज़ों की जगह बड़े-बड़े सूराख थे और जहाँ कभी अँगीठी के दरवाज़े थे, वहाँ अब काले दाग़ थे। टूटे-फूटे छप्पर के सूराखों के बीच से छप्पर में लगी हुई शहतीरें कंकाल की पसलियाँ जैसी नज़र आती थीं।

सिर्फ़ उन चार बड़े कमरों का सीमेंट का फ़र्श अभी तक साबूत था। रात को चार सौ आदमी अपने गीले और कीचड़ में लिथड़े हुए कपड़े पहने इसी फ़र्श पर सोते थे। अपने कपड़ों को जब वे दरवाज़े पर गारते तो उसमें से कीचड़ मिला पानी निकलता। और वे लोग बारिश और दलदली मिट्टी पर हज़ार लानतें भेजते। वे लोग सीमेंट की फ़र्श पर, जिस पर पुआल की एक पतली सी चादर भर बिछी हुई थी, एक दूसरे से सटे हुए कई क़तारों में सोते थे, सटे हुए ताकि उन्हें उतनी ठण्ड न मालूम हो। उनके कपड़ों से भाप उठती थी मगर कपड़े सूखते न थे। खिड़की के नंगे चौखटों पर बोरे कील से जड़ दिये गए थे। उन बोरों में से होकर बारिश का पानी अन्दर आता था और फ़र्श पर टपकता था। छप्पर में लोहे के जो बचे-खुचे टुकड़े बचे थे, उन पर बारिश का पानी गिरता था तो जोरों से तड़तड़ की आवाज़ होती थी और दरवाज़े की बड़ी-बड़ी दरारों में से अन्दर आती हुई हवा सांय-सांय करती थी।

सवेरे उन्होंने उस खंडहर बारक में, जो रसोईघर का काम देती थी, चाय पी और काम पर चले गये। रात के खाने में रोज़-रोज़ वही उबली हुई मसूर खाते खाते उनकी तबियत उकता गई थी। उसके अलावा उन्हें कोयले की तरह काली तीन पाव रोटियाँ भी मिलती थी।

इससे ज़्यादा देने की सामर्थ्य शहर में न थी।

जॉब सुपरिंटेंडेंट वालेरियन निकोदिमोविच पतोश्किन, जो एक लम्बा, दुबला-पतला बूढ़ा आदमी था और जिसके मुँह पर दो गहरी रेखाएँ थीं, और

टेकनीशियन वाकुलेंको, जो एक दोहरे बदन का, गंवार से चेहरे का और भद्दी मोटी नाक का आदमी था, यह दोनों स्टेशन मास्टर के घर पर रहते थे।

तोकारेव स्टेशन के चेका में काम करने वाले खोलिआवा की कोठरी में रहता था। खोलिआवा नाटा सा तेज-मिज़ाज आदमी था।

ये लोग बड़ी हिम्मत, सब्र और धीरज से तमाम कठिनाइयाँ झेल रहे थे और रेल का बाँध हर रोज़ जंगल की तरफ़ बढ़ता जा रहा था।

यह सच है कि कुछ लोग भाग भी गये थे: पहले नौ लोग और उसके कुछ रोज़ बाद और पाँच लोग।

पहली बड़ी दुर्घटना काम शुरू होने के एक हफ्ते बाद हुई जब कि रात की गाड़ी से रोटी की सप्लाई नहीं आई।

दुबावा ने तोकारेव को जगाया और उसे यह खबर दी। पार्टी ग्रुप के मन्त्री ने बिस्तर पर बैठे-बैठे अपनी घने बालों वाली टांगें झुलाईं और बग़ल को जोर-जोर से खुजलाने लगा।

"तमाशा अब शुरू हो रहा है!" उसने भारी आवाज में कहा और जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा।

खोलिआवा अपनी छोटी-छोटी टांगें लिए लुढ़कता हुआ अन्दर आया।

"ज़रा टेलीफ़ोन पर जाकर स्पेशल डिपार्टमेंट को तो बुला लो," तोकारेव ने उसको आदेश दिया और दुबावा की तरफ़ मुड़ते हुए उससे कहा, "और देखो किसी से इस चीज के बारे में एक लफ़्ज मत कहना।"

रेलवे के टेलीफ़ोन ऑपरेटरों के साथ पूरा एक घंटा झगड़ा करने के बाद कहीं जाकर अदम्य खोलियावा को स्पेशल डिपार्टमेंट का उप-प्रधान जुखराई फ़ोन पर मिला और इस बीच पूरे वक्त तोकारेव पास ही खड़ा बेचैनी से छटपटाता रहा।

"क्या कहा! रोटी नहीं पहुँची? मैं अभी पता लगाता हूँ कि उसके लिए कौन जिम्मेदार है!" जुखराई की आवाज टेलीफ़ोन पर सुनाई दी और उस आवाज में एक गम्भीर गूँज थी।

"हम अपने आदमियों को कल खाने को क्या देंगे?" तोकारेव ने गुस्से से चिल्लाकर कहा।

इसके बाद बड़ी देर तक खामोशी रही। स्पष्ट ही जुखराई कोई तदबीर सोच रहा था।

आखिरकार उसने कहा, "तुमको आज रात को रोटी मिलेगी। मैं लित्के को गाड़ी के साथ भेजूँगा। उसे रास्ता मालूम है। सबेरे तक तुम्हें रोटी मिल जायगी।"

बड़े सवेरे कीचड़ में सनी हुई एक मोटर रोटी के बोरों से लदी हुई स्टेशन पर आई। लित्के थका हुआ मोटर में से बाहर निकला। रात भर मोटर चलाने के कारण नींद और थकान से लित्के का चेहरा खड़िये जैसा हो रहा था।

रेलवे लाइन पर काम करना, बराबर बढ़ती ही जा रही कठिनाइयों के खिलाफ़ एक अविराम संघर्ष था। रेलवे के प्रबंध-कर्ताओं ने कहा कि उनके पास रेल के स्लीपर नहीं हैं। शहर के अधिकारियों के पास कोई जरिया नहीं था कि वे रेल की पटरियों और इंजनों को वहाँ पर ले जा सकते, जहाँ काम लगा हुआ था। और बाद को मालूम हुआ कि खुद इंजनों को भी काफ़ी मरम्मत की जरूरत है। पहली टोली की जगह लेने के लिए नये मज़दूर नहीं आ रहे थे और पहली टोली ने अपने हिस्से का काम कर लिया था और अब वे इतनी बुरी तरह थक चुके थे कि उनको और रोक रखने का सवाल ही नहीं पैदा होता था।

इस परिस्थिति पर विचार करने के लिए पार्टी के पुराने और आगे बढ़े हुए मेम्बर उस खंडहर शेड में मिले, जिसमें बस तेल की ढिबरी का मद्धिम प्रकाश था।

उसके अगले दिन सवेरे तोकारेव, दुगावा और क्लावीचेक शहर गये। इंजनों की मरम्मत और रेल की पटरियाँ लाने के काम को तेज़ करने की गरज़ से वे छः आदमियों को अपने साथ लेते गये। क्लावीचेक को, यों जिसका पेशा केक-बिस्कुट बनाना था, इंस्पेक्टर बनाकर सप्लाई विभाग में भेजा गया और बाकी लोग पुश्चा-वोदित्सा चले गये।

उधर उस जगह जहाँ काम लगा हुआ था, बारिश थमने का नाम ही न लेती थी।

पावेल कोर्चागिन ने जोर लगाकर चिपचिपे कीचड़ में से अपना पैर खींच कर निकाला। उसे अपने पैरों में जोर से सर्दी मालूम हुई जिससे उसने समझा कि उसके जूते का घिसा हुआ तल्ला आख़िरकार अलग हो ही गया। जब से पावेल यहाँ काम पर आया था, उसे अपने फटे हुए जूतों के कारण सख्त तकलीफ़ थी। वे कभी सूखे न रहते और उनमें कीचड़ भर जाती और वह चलता तो कीचड़ पिच्च-पिच्च करती। अब एक तला बिलकुल चला गया था और बर्फ़ की तरह ठण्डा कीचड़ उसके नंगे पैरों को जैसे छुरी से काटता जान पड़ता। पावेल ने तल्ले को कीचड़ में से निकाला और बहुत मायूसी से उसको देखा और अपनी क़सम को भूलकर उसने मुँह से उसके लिए गाली भी निकाली। अब उसका एक पैर

बिलकुल नंगा था और ऐसे भला वह कैसे काम कर सकता था। लिहाज़ा वह भन्नकता हुआ बारक में आया, रसोईघर के पास बैठ गया, पैर में लिपटा हुआ कीचड़ से सना कपड़ा अलग किया और अपने सर्दी से सुन्न पैरों को सेंकने के लिए आग की तरह बढ़ाया।

लाइनमैन की बीवी, जो रसोइये के सहायक के रूप में काम करती थी और जिसका नाम ओदार्का था, रसोईघर की मेज़ पर चुकन्दर काटने में मशगूल थी। यह अच्छे डीलडौल की औरत थी। अभी जवानी उससे रुख़सत नहीं हुई थी। उसके कन्धे बहुत चौड़े, क़रीब-क़रीब मर्दों जैसे थे, वक्ष भरा-पूरा था, और नितम्ब चौड़े और भारी थे। वह बड़े जोश से छुरी चला रही थी और उसकी फुर्तीली उँगलियों तले कटी हुई सब्जियों का एक पहाड़ तेज़ी से इकट्ठा होता जा रहा था।

ओदार्का ने लापरवाही से पावेल को देखा और डपट कर बोली :

" अगर खाने की तलाश में तुम यहाँ मँडरा रहे हो तो मैं तुम्हें बतला दूँ कि अभी देर है। समझे ? काम छोड़कर इस तरह भागे चले आ रहे हो, तुम्हें अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए ! अँगीठी से अपने पैर हटा लो। यह रसोईघर है, कोई नहानघर तो है नहीं !"

उसी वक्त रसोइया अन्दर आया।

" मेरा यह जूता चिथड़े-चिथड़े हो गया है," पावेल ने रसोईघर में अपनी उस असमय उपस्थिति की सफ़ाई देते हुए कहा।

अधेड़ रसोइये ने पावेल के टूटे हुए जूते को देखा और ओदार्का की तरफ सिर हिलाकर इशारा करते हुए बोला, " इसका आदमी मुमकिन है तुम्हारे जूतों की मरम्मत कर सके, उसे मोची का काम थोड़ा-बहुत आता है। इसका इन्तज़ाम करो वरना परेशानी में पड़ोगे—जूतों के बगैर तुम्हारा काम चलने से रहा।"

ओदार्का ने यह सुना तो दुबारा पावेल को देखा और तब उसने महसूस किया कि पावेल के बारे में फैसला करने में उसने जल्दबाजी की थी।

उसने अपनी ग़लती मानते हुए कहा, " मैंने तुम्हें कोई आवारा समझा था।"

पावेल मुस्कराया, जैसे यह कह रहा हो कि कोई बात नहीं, मुझे बुरा नहीं लगा। ओदार्का ने विशेषज्ञ की आँखों से जूते का मुआइना किया और फिर बोली, " इसमें थेगड़े लगाने की कोशिश बेकार है। मगर मैं एक बात कर सकती हूँ। हमारे यहाँ घर पर एक पुराना बरसाती बूट पड़ा हुआ है, मैं उसे लाकर तुम्हें दे सकती हूँ और तुम उसे अपने जूतों के ऊपर से पहन लेना। तुम्हारे पैर

तो कम से कम बचे रहेंगे। इस तरह से तुम थोड़े ही घूम सकते हो, मर जाओगे ! अब पाला पड़ना शुरू होने ही वाला है, जिस दिन भी शुरू हो जाय ! "

और ओदार्का ने, जिसके मन में पावेल के लिए अब सहानुभूति ही सहानुभूति थी, अपनी छुरी रख दी और तेजी से बाहर निकल गई और थोड़ी ही देर बाद एक बड़ा सा बरसाती बूट और मजबूत कपड़े की एक पट्टी लेकर लौट आई।

पावेल के पैर अब सूखे हुए और गर्म थे। उसने उस मोटे कपड़े को अपने पाँवों में लपेटते और पाँवों को बरसाती बूट में डालते हुए ओदार्का को कृतज्ञ भाव से देखा।

तोकारेव गुस्से से उबलता हुआ शहर से लौटा। उसने आगे बढ़े हुए कम्युनिस्टों की एक मीटिंग खोलिआवा की कोठरी में बुलाई और उन्हें यह बुरी खबर सुनाई। वह बोला :

"यहाँ से वहाँ तक अड़चनें ही अड़चनें हैं। जहाँ भी जाओ, पहिये घूमते तो नजर आते हैं मगर पहुँचते कहीं नहीं। तमाम क्रान्ति के दुश्मन ह्वाइट लोग ही यहाँ से वहाँ तक भरे हुए हैं और लगता है कि हमारी जिन्दगी में तो उनका खातमा होगा नहीं। मैं तुमको बतलाता हूँ लड़को कि लक्षण अच्छे नहीं हैं। अभी तक हमारी जगह लेने वाले लोग कहीं नजर नहीं आते और यह भी पता नहीं कि आयेंगे भी तो कितने आयेंगे। पाला गिरना शुरू होने ही वाला है और उसके पहले चाहे जैसे हो, हमें दलदल के पार हो जाना है क्योंकि जमीन जब बर्फ़ से जम जायगी तो फिर कुछ करते-धरते न बनेगा। लिहाजा जब तक कि वे लोग वहाँ गड़बड़ पैदा करने वालों की अक्ल ठीक कर रहे हैं, तब तक हमको यहाँ अपने काम की रफ़्तार दुगनी कर देनी चाहिए। वह लाइन हमें बनानी ही है और उसे हम बनाकर रहेंगे चाहे हम मर ही क्यों न जायँ। अगर हम ऐसा नहीं कर सकते तो हम बोल्शेविक नहीं, मिट्टी के लोंदे होंगे।" तोकारेव की फटी हुई भारी आवाज में इस्पात की सी गूँज थी और उसकी घनी भरौनियों के नीचे उसकी आँखें पक्के निश्चय से चमक रही थीं।

"आज हम लोग एक बन्द मीटिंग करेंगे और यह खबर अपने पार्टी मेम्बरों को दे देंगे और कल से हम सब काम पर जुट जायँगे। सबेरे हम लोग ग़ैर पार्टी लोगों को छुट्टी दे देंगे। वे लोग चले जायेंगे और हम लोग रह जायेंगे। यह देखो प्रादेशिक कमिटी का फ़ैसला है," कहते हुए तोकारेव ने चार परत किया हुआ एक कागज़ पांक्रातोव के हाथ दिया। कन्धे के ऊपर से उस काग़ज को देखते हुए पावेल कोर्चागिन ने पढ़ा :

" परिस्थिति की गम्भीरता को देखते हुए कोमसोमोल के सारे सदस्य अपने काम पर जमे रहेंगे और तब तक उन्हें छुट्टी नहीं मिलेगी जब तक कि ईंधन का पहला चलान आ नहीं जाता। दस्तख़त : रिता उस्तिनोविच, प्रादेशिक कमिटी के मन्त्री की ओर से।"

रसोई की बारक में भीड़ लगी हुई थी। उस छोटी सी तंग जगह में एक सौ बीस आदमी सँकसे हुए खड़े थे। उनमें से कुछ दीवार का सहारा लिये हुए खड़े थे, कुछ मेज़ों पर चढ़ कर बैठ गये थे और कुछ तो रसोई के ऊपर तक जाकर बैठ गये थे।

पांकातोव ने मीटिंग की कार्रवाई शुरू की। तब तोकारेव ने एक छोटी सी तक़रीर की और इस ऐलान के साथ अपनी बात ख़तम की, जिसका असर सुनने वालों पर बम के गिरने जैसा हुआ :

" कम्युनिस्ट और कोमसोमोल कल काम नहीं छोड़ेंगे।"

बूढ़े ने अपनी बात के साथ-साथ मुख की एक ऐसी भंगिमा भी बनाई जिसका मतलब था कि यह फ़ैसला अन्तिम है और इसमें कोई रद्दोबदल मुमकिन नहीं है। इस चीज़ ने शहर लौटने की उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया —शहर लौटने की, अपने घर जाने की, इस मर्दूद जगह से भाग जाने की।

क्रुद्ध आवाज़ों का एक शोर उठा जिसमें थोड़ी देर के लिए सभी कुछ डूब गया। लोगों के हिलते हुए शरीर से ढिबरी की बत्ती काँप-काँप जाती थी। उस अर्द्ध-अन्धकार में शोर-गुल बढ़ता जा रहा था। वे लोग अपने घर लौटना चाहते थे। वे बहुत क्षोभ के साथ कह रहे थे कि अब हमको यहाँ पर रोकने की बात क्यों की जा रही है, हम जितना कर सकते थे, हमने किया। कुछ ने खामोशी से इस ख़बर को सुन लिया। और सिर्फ़ एक आदमी ने काम छोड़ कर भाग जाने की बात कही।

मुँह से गालियाँ निकालते हुए एक आदमी अपने कोने में से ज़ोर से चिल्लाया, " जहन्नुम में जाय यह काम ! मैं तो अब यहाँ एक दिन भी नहीं ठहर सकता। हाँ कोई जुर्म किया हो तो आप कड़ी मशक़्क़त की सज़ा दीजिए। मगर हमने कौन सा जुर्म किया है ? अब और ठहरना बेवकूफ़ी होगी। हमने दो हफ्ते तक काम किया और वह काफ़ी है। अब उन लोगों से कहिए जिन्होंने यह फ़ैसला किया है कि वे अपने कमरों से निकल कर खुद यहाँ आयें और काम करें। हो सकता है कि कुछ लोगों को इस गन्दगी और इस कीचड़ में ही मज़ा आता हो। मगर भाई मेरे पास तो जीने के लिए सिर्फ़ एक जिन्दगी है, मैं कल जा रहा हूँ।"

ओकुनेव के पीछे से आवाज़ आ रही थी और उसने यह देखने के लिए

कि वह कौन है, दियासलाई जलाई। दियासलाई की रोशनी ने एक क्षण के लिए बोलने वाले के गुस्से से विकृत चेहरे और खुले हुए मुँह को चमका दिया। मगर उस एक क्षण में ही ओकुनेव ने प्रादेशिक खाद्य कमिसारियट के एक क्लर्क के उस बेटे को पहचान लिया।

वह बनैले सुअर की तरह बिफरते हुए बोला, "पता लगा रहे हो कि कौन है, क्यों? उंह, मुझे कोई डर नहीं, मैंने क्या कोई चोरी की है।"

दियासलाई बुझ गई। पांक्रातोव उठा और अच्छी तरह तनते हुए बोला:

"यह किस क़िस्म की बात है? कौन है जो पार्टी के काम की तुलना जेल की कड़ी मशक़्क़त से कर रहा है?" उसने गरजते हुए और सामने की क़तार में बैठे लोगों पर अपनी कठोर दृष्टि डालते हुए कहा, "नहीं साथियो, हम शहर नहीं जा सकते, हमारी जगह यहीं है। अगर हम लोग दुम दबा कर यहाँ से चले जाते हैं तो हमारे भाई टिटुर कर मर जायेंगे। जितनी ही जल्दी हम अपना काम ख़तम कर लें उतनी ही जल्दी हम अपने घर पहुँच सकते हैं। वहाँ वह पीछे बैठा हुआ झींखनेवाला जिस तरह भाग जाने की बात कर रहा है, वह चीज़ हमारे विचारों या हमारे अनुशासन से क़तई मेल नहीं खाती।"

पांक्रातोव जहाज़ पर काम करने वाला आदमी था। उसे लम्बी-लम्बी तक़रीर करना अच्छा नहीं लगता था। मगर उसकी इस छोटी सी तक़रीर को भी उसी तैश खाई हुई आवाज़ ने बीच में टोका।

"ग़ैर-पार्टी लोग तो जा रहे हैं न?"

"हाँ।"

"छोटा सा ओवरकोट पहने एक लड़का कुहनियों से रास्ता बनाता हुआ सामने आया। कोमसोमोल की सदस्यता का एक कार्ड चमगादड़ की तरह उड़ता हुआ जाकर पांक्रातोव के सीने से टकराया, मेज़ पर गिरा और सीधा खड़ा हो गया।

"वह रहा, अपना कार्ड रख लीजिए। मैं दफ़्ती के इस टुकड़े के लिए अपनी तन्दुरुस्ती ख़तरे में नहीं डाल सकता!"

उसके आखिरी शब्द क्रुद्ध स्वरों के गर्जन में डूब गये:

"कुछ ख़बर है क्या चीज़ तुम फेंक रहे हो!"

"ग़द्दार, दोगला!"

"कोमसोमोल में यह समझ कर आया था कि यहाँ पेड़े बँटते हैं।"

"उठा के फेंक दो बाहर साले को!"

"ज़रा मुझे तो पहुँचने दो इस गीदड़ के पास!"

वह भगोड़ा, सिर झुकाये, दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा। उन्होंने उसे निकल

जाने दिया और जैसे उससे अपना दामन बचा रहे हों, गोया वह कोढ़ी हो। उसके बाहर निकलने पर दरवाजा चूँ करके बन्द हो गया।

पांक्रातोव ने फेंके हुए मेम्बरी के कार्ड को उठाया और ढिबरी की बत्ती से लगा दिया।

दफ्ती ने आग पकड़ ली और ऐंठ-ऐंठ कर जलने लगी।

जंगल में एक गोली की गूँज सुनाई दी। एक घुड़सवार उस खण्डहर बारक से मुड़ा और जंगल के अंधेरे में घुस गया। क्षण भर बाद लोग बारक और स्कूल की इमारत में से दौड़ते हुए बाहर आये। किसी ने दरवाजे की कीवाड़ पर टंगा हुआ प्लाइवुड का एक टुकड़ा देखा। एक दियासलाई जली और उसकी काँपती हुई लौ को हवा से बचाते हुए उन्होंने घसीट कर लिखी हुई उस इबारत को पढ़ा : "यहाँ से चले जाओ और जहाँ से आये हो वहीं लौट जाओ। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो हम तुम्हारे एक-एक आदमी को गोली से उड़ा देंगे। भागने के लिए मैं तुम्हें कल रात तक का वक्त देता हूँ। एटमन चेस्नोक।"

चेस्नोक ओलिक के गिरोह का आदमी था।

रिता के कमरे में मेज़ पर एक खुली हुई डायरी पड़ी थी।

"२ दिसम्बर

"आज सवेरे यहाँ पर पहली बार बर्फ़ गिरी। पाला बहुत तेज़ी से गिर रहा है। सीढ़ी पर मेरी मुलाकात व्याचेस्लाव ओलशिन्स्की से हुई और फिर हम लोग साथ-साथ सड़क पर घूमे।

"ओलशिन्स्की ने कहा, 'पहली बार जब बर्फ़ गिरती है तो मुझे हमेशा बहुत अच्छा मालूम होता है, खास कर जब ऐसा पाला भी पड़ रहा हो।'

"मगर मैं बोयार्का की बात सोच रही थी और मैंने उससे कहा कि बर्फ़ और पाले से मुझे रत्ती-भर खुशी नहीं होती, बल्कि उल्टे मेरी तो तबियत और भी बुझ जाती है। और मैंने इसका कारण भी उसे बतलाया।

"उसने कहा कि 'यह तो एक निरी वैयक्तिक प्रतिक्रिया है। अगर इसको तर्क का आधार बना कर चला जायगा तब तो लड़ाई के जमाने में हर तरह के आमोद-प्रमोद या खुशी की किसी भी अभिव्यक्ति को रोक देना पड़ेगा। मगर जिन्दगी का तो यह नियम नहीं है। विषाद तो मोर्चे की उस पट्टी तक सीमित है जहाँ पर लड़ाई लड़ी जा रही है। वहाँ जिन्दगी पर मौत की निकटता की छाया रहती है। मगर वहाँ के लोग भी हँसते हैं। और मोर्चे से अलग तो जिन्दगी हस्बे-

मामूल चलती रहती है : लोग हँसते हैं, रोते हैं, तकलीफ़ उठाते हैं, खुशी मनाते हैं, प्यार करते हैं और मनोरंजन और हलचल की खोज में रहते हैं।'

"ओलशिन्स्की के शब्दों में व्यंग्य की कोई छाया न थी। ओलशिन्स्की जन-कमिसारियट के वैदेशिक विभाग का प्रतिनिधि है। वह १९१७ से पार्टी में है। वह अच्छे कपड़े पहनता है। उसकी दाढ़ी हमेशा साफ़-चिकनी बनी रहती है और एक हलकी सी खुशबू भी उसके इर्द-गिर्द लिपटी रहती है। वह सेगल वाले हिस्से में हमारे ही घर में रहता है। कभी-कभी वह मुझसे मिलने के लिए शाम को चला आता है। उससे बात करना बड़ा अच्छा मालूम होता है। उसे योरप के बारे में बहुत बातें मालूम हैं, वह कई साल पेरिस में रहा है। मगर मुझे सन्देह है कि कभी उसकी और मेरी बहुत अच्छी दोस्ती हो सकती है। और वह इसलिए कि उसके लिए सबसे पहले मैं एक नारी हूँ। मैं उसकी पार्टी कामरेड हूँ, यह चीज़ उसके लिए गौण है। यह सही है कि इस मामले में वह अपने विचारों और भावनाओं को छिपाने की कोई कोशिश नहीं करता। उसमें खुल कर अपनी बात कहने का साहस है और मेरे साथ उसके बर्ताव में कोई भद्दी बात नहीं है। यह ठीक है कि वह मेरे प्रति प्रेम दिखाता है, मगर उस चीज़ को भी वह एक खूबसूरती से भर देता है। मगर तब भी मैं उसको पसन्द नहीं करती।

"जुखराई की सादगी और रूखापन मुझे ओलशिन्स्की के तमाम मंजे निखरे योरोपियन तौर-तरीक़ों से ज़्यादा भाता है।

"बोयार्का से खबर छोटी-छोटी रिपोर्टों की शकल में मिलती है, इस शकल में कि आज हमने कितनी पटरियाँ बिछाईं। वे जमी हुई धरती पर, स्लीपरों के लिए क्यारियाँ खोद-खोद कर उन्हीं में स्लीपरों को बिछाते जा रहे हैं। इस काम पर सिर्फ़ ढाई सौ आदमी हैं। पहले के काम करने वालों की जगह लेने के लिए जितने लोग गये, उनमें से आधे लोग भाग गये। वहाँ की हालत सचमुच बहुत ही भयानक है। मैं समझ नहीं पाती कि कैसे इस पाले में वे लोग अपना काम जारी रखते हैं। दुबावा को गये एक हफ्ता हो गया। वे पुश्चा-वोदित्सा के आठ इंजनों में से कुल पाँच की ही मरम्मत कर पाये। बाक़ी के लिए उनके पास पार्ट नहीं थे।

"ट्रामकार के अधिकारियों ने दिमित्री के खिलाफ़ बहुत से अभियोग लगाये हैं। उसने और उसकी ब्रिगेड के लोगों ने ट्राम के खुले हुए मालगाड़ी के डब्बों को, जो पुश्चा-वोदित्सा से शहर आते हैं, बीच में रोक लिया, मुसाफ़िरों को उतार दिया और उन डब्बों में बोयार्का के लिए रेल की पटरियाँ लाद दीं। ट्राम गाड़ियों पर वे उन्नीस गाड़ी रेल की पटरियाँ लादकर शहर के स्टेशन में ले आये। ट्राम चलाने वालों ने बड़ी खुशी से उनकी मदद की।

" सोलोमेंका के कोमसोमोलों ने, जो अब भी शहर में हैं, रात भर रेल की पटरियों को डब्बों में लादने का काम किया और दिमित्री और उसकी ब्रिगेड के लोग उनको लेकर बोयार्का चले गये।

" अकिम ने दुबावा के काम को कोमसोमोल ब्यूरो के सामने आने देने से इनकार किया। दिमित्री ने हमको बतलाया कि ट्रामकार की व्यवस्था में नौकर-शाहियत और फ़िजूल का लाल फ़ीता बहुत बुरी तरह घुसा हुआ है। उन्होंने इस काम के लिए दो डब्बे से ज़्यादा देने से साफ़ इनकार कर दिया है।

" मगर तो भी तुफ़्ता ने दुबावा को अलग ले जाकर उसे डाँटा। उसने कहा, ' इन पुराने छापेमारों वाले हथकण्डों को अब छोड़ दो नहीं तो देखते-देखते जेल पहुँच जाओगे। हथियारों का सहारा लिये बिना भी तो तुम किसी समझौते पर पहुँच सकते थे ? '

" मैंने इसके पहले कभी दुबावा को ऐसे क्रोध में नहीं देखा था।

" उसने बिफर कर चिल्लाते हुए कहा, ' तुम खुद उससे बात करने की कोशिश क्यों नहीं करते, या बस रिपोर्ट लिखने के लिए हो ? यहाँ बैठे-बैठे कुर्सी तोड़ते रहते हो और बस ज़बान हिलाना जानते हो। मैं भला कैसे बिना उन पटरियों को लिए बोयार्का जा सकता था ? तुम यहीं पर बने रहते हो और सबको हैरान करते रहते हो। चाहिए तो यह कि तुमको भी वहाँ भेज दिया जाय ताकि तुम भी कुछ उपयोगी काम करो। तोकारेव तुम्हारी अक़्ल ठीक कर देंगे !' दिमित्री इतने ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा था कि घर भर में उसकी आवाज़ गूँज रही थी।

" तुफ़्ता ने दुबावा के खिलाफ़ एक शिकायत लिखी। मगर अकिम ने मुझसे कहा कि मैं कमरे के बाहर चली जाऊँ और उसने करीब दस मिनट अकेले में उससे बात की। मगर उसके बाद तुफ़्ता गुस्से से लाल होता हुआ कमरे से बाहर आ गया। "

" ३ दिसम्बर

" सूबा कमिटी को एक और शिकायत मिली है, इस बार ट्रान्सपोर्ट चेका की ओर से। उससे मालूम हुआ कि पांक्रातोव, ओकुनेव और दूसरे कई साथी मोतोविलोव्का स्टेशन गये और वहाँ की खाली इमारतों के सारे दरवाज़े और खिड़कियाँ निकाल लीं। जब वे इन सब चीज़ों को मालगाड़ी पर लाद रहे थे तो स्टेशन पर के चेका के आदमी ने उनको पकड़ने की कोशिश की। उन्होंने उस आदमी का हथियार छीन लिया, उसकी रिवाल्वर खाली कर दी और गाड़ी जब

चलने लगी तभी उसको रिवाल्वर वापिस किया। खिड़कियाँ और दरवाज़े लेकर वे चले ही गये।

"तोकारेव पर रेलवे के सफ़ाई विभाग ने अभियोग लगाया है कि उसने बोयार्का के रेलवे स्टाक से नौ मन कीलें ले ली हैं। यह कीलें उसने किसानों को स्लीपर की शहतीरें दो कर लाने की मेहनत के एवज़ में दे दी है।

"इन सब शिकायतों के बारे में मैंने कामरेड जुखराई से बात की। मगर वे तो बस हँस दिये। उन्होंने कहा, 'करेंगे, हम इसकी भी फ़िक्र करेंगे।'

"रेलवे के इस काम की हालत वाक़ई बहुत संगीन है और अब तो हर दिन अनमोल है। हमें छोटी-से-छोटी चीज़ों के लिए यहाँ पर ज़ोर लगाना पड़ता है। जब देखो तब हमें काम में बाधा डालने वालों को सूबा कमिटी के सामने खड़ा करना पड़ता है और वहाँ जो लड़के काम कर रहे है, वे बराबर नियम-क़ानूनों को ज़्यादा-ज़्यादा तोड़ते चले जा रहे हैं।

"ओलशिन्स्की ने मुझे बिजली की एक अँगीठी ला कर दी है। ओल्गा यूरेनेवा और मैं उस पर हाथ सेंकती हूँ, मगर कमरा उससे कुछ खास गरम नहीं होता। मैं हैरान होकर सोचती हूँ कि जंगल में इस भयानक ठण्डी रात का सामना वे लोग कैसे करते होंगे? ओल्गा मुझको बतलाती है कि अस्पताल में इतनी ठण्डक रहती है कि मरीज़ अपने कम्बलों में लिपटे-लिपटे काँपते रहते हैं, उस जगह को दो दिन में सिर्फ़ एक बार गर्माया जाता है।

"नहीं कामरेड ओलशिन्स्की, मोर्चे पर के लोगों का दर्द मोर्चे से दूर बैठे हुए लोगों का दर्द भी होता है!"

"४ दिसम्बर

"रात भर बर्फ़ गिरती रही। बोयार्का से वे लिखते हैं कि हर चीज़ बर्फ़ से एकदम ढँक गई है और रेल की पटरियों पर से बर्फ़ हटाने के लिए उन्होंने फ़िलहाल अपना काम रोक दिया है। आज सूबा कमिटी ने यह फ़ैसला किया है कि रेलवे का पहला हिस्सा, यानी उस जगह तक जहाँ लकड़ी का काम शुरू हुआ है, जैसे भी हो पहली जनवरी १९५२ के पहले तक तैयार हो ही जाना है। जब यह फ़ैसला बोयार्का पहुँचा तो शायद तोकारेव ने कहा: 'हम लोग इस काम को पूरा करेंगे, बस शर्त यह है कि तब तक कहीं हमारा दम न निकल जाय।'

"कोर्चागिन के बारे में मुझे कोई ख़बर नहीं मिलती। मुझे थोड़ा आश्चर्य ही है कि पांकातोव जैसे 'किसी मामले' में वह भी कैसे नहीं फँसा! मैं अब भी नहीं समझ पाती कि वह मुझसे क्यों कतराता है।"

"५ दिसम्बर

"जहाँ पर काम चल रहा है और पटरी बिछाई जा रही है, वहाँ कल डाकुओं ने हमला किया था।"

घोड़े थके हुए, धीरे-धीरे, नर्म बर्फ़ पर चले जा रहे थे और उनकी टापें बर्फ़ के अन्दर घुस-घुस जाती थीं। जब-तब बर्फ़ के नीचे पड़ी हुई कोई टहनी किसी घोड़े की टाप से टूट जाती और घोड़ा हिनहिनाता और अड़ जाता। मगर तभी उसके कानों पर तेज़ी से एक चाबुक पड़ता और चाबुक खाकर वह भी दूसरे घोड़ों के पीछे सरपट भाग चलता।

क़रीब एक दर्जन घुड़सवारों ने उस पहाड़ी टीले को पार किया जिसके उस पार काली मिट्टी का मैदान था और जिस पर अभी बर्फ़ की चादर नहीं पड़ी थी। यहाँ पहुँच कर घुड़सवारों ने अपने घोड़े रोके। रकाब से रकाब मिली तो धीमी-सी आवाज़ हुई। सरदार के घोड़े ने ज़ोर से हिनहिना कर अपने जिस्म को हिलाया। इस लम्बी दौड़ के बाद पसीने से उसका जिस्म चमक रहा था।

आगे-आगे चलने वाले घुड़सवार ने उक्रेनी ज़बान में कहा, "बहुत बड़ी जमात में हैं ये बदमाश यहाँ। मगर कोई बात नहीं, अभी हम ऐसा कर देंगे कि डर के मारे उनकी बोटी काँपने लगेगी। एटमन का आदेश है कि कल तक इन हरामज़ादों को यहाँ से खदेड़ ही देना है। ईंधन के बहुत क़रीब पहुँचे जा रहे हैं ये लोग। ऐसे नहीं चलेगा।"

वे स्टेशन तक छोटी लाइन की पटरी पकड़े-पकड़े घोड़े पर सवार एक के पीछे एक चले जा रहे थे। पुरानी स्कूल की इमारत के पास के मैदान को देख कर उन्होंने अपनी रफ्तार बहुत धीमी कर दी और पेड़ों के पीछे पहुँच कर रुक गये। आगे खुले मैदान में जाने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ी।

गोली की एक बौछार ने रात की निस्तब्धता को चीर दिया। चाँदनी में चाँदी की तरह चमकते हुए बर्च के एक पेड़ की शाख़ से बर्फ़ के गाले गिलहरी की तरह गिर रहे थे। पेड़ों के बीच गोलियाँ चलने की रोशनी हो रही थी और गोलियाँ टूटते पलस्तर को चीरकर अन्दर चली जाती थीं। पांकातोव की खिड़कियों के शीशे चूर-चूर होकर ज़मीन पर गिरते थे तो झन्न-झन्न की आवाज़ होती थी।

कंकरीट की फ़र्श पर सोये हुए लोग गोली की आवाज़ सुन कर हड़बड़ा उठे। लेकिन जब गोलियाँ कमरे भर में उड़ने लगीं तो वे झट एक-दूसरे पर गिर पड़े।

दुबावा ने पावेल के कोट के पिछले दामन को पकड़ते हुए कहा, "कहाँ जा रहे हो?"

"बाहर।"

दिमित्री ने दाँत पीसते हुए साँप की तरह फुफकार कर कहा, "लेट जाओ गधे कहीं के! तुम्हारा सिर बाहर निकला नहीं कि काम तमाम समझो।"

वे दोनों दरवाज़े के अगल-बग़ल लेटे हुए थे। दुबावा फ़र्श पर चिपका हुआ लेटा था और उसके रिवाल्वर का मुँह दरवाज़े की तरफ़ था। पावेल उकड़ूँ बैठा बेचैनी से अपने रिवाल्वर की नली पर उँगलियाँ दौड़ा रहा था। उसमें पाँच गोलियाँ थीं, एक घर खाली था। उसने सिलिंडर को एक बार और घुमाया।

गोली चलना एकाएक बन्द हो गया। उसके बाद जो निस्तब्धता आई तो उसमें तनाव का बोझ था।

दुबावा ने फटी हुई आवाज़ में धीमे से कहा, "वे सब जिनके पास हथियार हों, इधर आयें।"

पावेल ने बहुत सावधानी से दरवाज़ा खोला। मैदान खाली था। बर्फ़ के गाले धीरे-धीरे गिर रहे थे।

जंगल में दस घुड़सवार अपने घोड़ों को सरपट भगाने के लिए उनको चाबुक लगा रहे थे।

दूसरे रोज़ एक रेलगाड़ी शहर से आई। उसमें से जुखराई और अकिम उतरे और तोकारेव और खोलियावा ने उनका स्वागत किया। एक मैक्सिम तोप, मशीनगन की पेटियों के कई डब्बे और दो दर्जन राइफ़िलें गाड़ी में से उतार कर प्लेटफ़ार्म पर रखी गईं।

जल्दी-जल्दी वे लोग काम की जगह पर पहुँचे। फ़ियोदोर के लम्बे बरानकोट का पिछला दामन ज़मीन पर लसरता चल रहा था जिससे बर्फ़ पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ बनती जा रही थीं। वह अब भी जहाज़ पर काम करने वाले आदमी की तरह अपने ख़ास लुढ़कते-पुढ़कते से भद्दे अन्दाज़ में चल रहा था जैसे किसी डेस्ट्रॉयर की डेक पर चहलक़दमी कर रहा हो। लम्बी टाँगों वाला अकिम फ़ियोदोर के क़दम ब क़दम चल रहा था मगर तोकारेव को उनके साथ चलने के लिए बीच-बीच में दौड़ना पड़ जाता था।

"डाकुओं का यह हमला हमारी सबसे बड़ी मुसीबत नहीं है। हमारी लाइन के ठीक रास्ते में एक जगह पर ज़मीन बहुत बेहूदा ढंग से उठी हुई है, जिसका मतलब है कि हमें और भी खुदाई करनी पड़ेगी, बहुत खुदाई। किस्मत ही खराब है और क्या कहें।"

वह बूढ़ा आदमी रुका, हवा की ओर पीठ करके खड़ा हुआ और सिगरेट जलाई। सिगरेट के दो-चार कश लेकर वह अपने साथियों को पकड़ने के लिए

तेज़ी से चला। आकिम उसके लिए रुक गया था मगर लुखराई आगे बढ़ता चला गया।

अकिम ने तोकारेव से पूछा, "तुम्हारा क्या खयाल है, तुम वक्त से काम खतम कर लोगे?"

तोकारेव ने ज़रा थम कर जवाब दिया।

"देखो बेटा, बात यह है कि यों तो यह काम नहीं किया जा सकता। मगर करना ही है, जैसे भी हो। बस इतनी सी बात है।"

उन दोनों ने फ़ियोदोर को जा पकड़ा और संग-संग चलने लगे।

तोकारेव ने गम्भीर स्वर में कहना शुरू किया, "परिस्थिति यह है कि यहाँ पर सिर्फ़ पतोश्किन और मैं, सिर्फ़ हम दो ही यह जानते हैं कि इन हालतों में, इतने कम सामान और कम काम करने वालों को लेकर, वक्त पर इस काम को पूरा नहीं किया जा सकता। मगर बाक़ी सारे लोग, एक-एक आदमी को बस इतना मालूम है कि चाहे जैसे भी हो, लाइन तैयार करनी ही है। इसीलिए मैंने कहा था कि अगर हम लोग बर्फ़ में जम कर मर नहीं जाते तो यह काम पूरा होगा। तुम लोग खुद ही सोचो, हम यहाँ पर एक महीने से ज़्यादा दिन से खुदाई कर रहे हैं, काम करने वालों की चौथी टुकड़ी को अब आराम के लिए छुट्टी देने का वक्त आ गया। मगर जो खास काम करने वाले हैं, वे तो पूरे वक्त काम करते रहेंगे। उनकी जवानी ही है जो उन्हें चला रही है। मगर उनमें से आधे लोग सर्दी से बुरी तरह जकड़े हुए हैं। उनको देख कर दिल खून के आँसू रोता है। ये बहुत अच्छे लड़के हैं, इनसे अच्छा कोई नहीं। मगर यह जगह दोज़ख से कम नहीं और यह ज़रूर कुछ-न-कुछ लोगों की जान लेगी।"

तैयार रेलवे लाइन स्टेशन से क़रीब एक मील की दूरी पर आकर खतम हो गई। उसके उस पार क़रीब डेढ़ मील तक समतल रास्ते पर लकड़ी की एक बाड़ सी लगी हुई थी; ये स्लीपर थे जो अपनी जगह पर मज़बूती से जमा कर रखे हुए थे। और उसके भी पार उठान तक रास्ता बिलकुल समतल था।

पांकातोव की पहली टोली इस हिस्से में काम कर रही थी। चालीस लोग स्लीपरें बिछा रहे थे और गाजर की सी दाढ़ी वाला एक किसान, जो मूंज के बने नये जूते पहने था, धीरे-धीरे लकड़ी के कुन्दे क्यारियों में गिराता जा रहा था। दूर पर इसी तरह और भी कई गाड़ियाँ अपना माल उतार रही थीं। लोहे के दो लम्बे-लम्बे डण्डे ज़मीन पर पड़े हुए थे—स्लीपरों को बराबर करने के लिए

इनसे काम लिया जाता था। कुल्हाड़ियाँ, फावड़े, कुदाल—सबका इस्तेमाल कंकरीट को दबाने के लिए किया जाता था।

रेल की पटरी बिछाना एक बहुत धीमा और मशक़्क़त का काम है। स्लीपरों को ज़मीन में अच्छी तरह जम जाना चाहिए ताकि पटरियाँ बराबरी से उनके ऊपर बैठ सकें।

इस टोली में सिर्फ़ एक आदमी था जिसे स्लीपरें बिछाने का काम आता था। वह तालिया का बाप लाइन फ़ोरमैन लगुतिन था। चौवन साल का आदमी, दाढ़ी कोयले की तरह काली और बीच से अलग की हुई और सिर में एक भी पका बाल नहीं। उसने शुरू से बोयार्का में काम किया था और वह सभी मुसीबतें उठाई थीं जो नौजवानों ने उठाई थीं। और इसीलिए टुकड़ी के सब लोग उसे बहुत आदर की दृष्टि से देखते थे। गोकि वह पार्टी मेम्बर नहीं था तब भी सभी पार्टी-मीटिंगों में लगुतिन को बड़ी इज़्ज़त की जगह दी जाती थी। उसे इस चीज़ का बड़ा फ़ख्र था और उसने क़ौल किया था कि जब तक काम ख़तम न हो जायगा, वह वहाँ से न जायगा।

"मैं कैसे तुम लोगों को यहाँ अकेला छोड़ कर चला चाऊँ? जब तक कोई तजुर्बेकार आदमी देखभाल करने के लिए न हो, तब तक ज़रूर कुछ-न-कुछ गड़बड़ हो जायगा। जहाँ तक तजुर्बे की बात है, मैंने ज़िन्दगी में इतने स्लीपर बिछाये हैं, यहाँ-वहाँ देश भर में कि मुझे उनकी याद नहीं," जब भी जगह लेने वाले दूसरे मज़दूरों का सवाल पैदा होता तो वह बड़ी ख़ुशदिली से यह बात कहता। और इस तरह वह रहता आया।

पतोश्किन ने देखा कि लगुतिन अपना काम जानता है और अपने हिस्से की देख-भाल के लिए कम ही जाता है। जिस वक़्त तोकारेव, अकिम और ज़ुखराई के साथ वहाँ आया, जहाँ वे लोग काम कर रहे थे, उस वक़्त पांक्रातोव थकान के पसीने से सराबोर और चेहरा लाल किये स्लीपर के लिए गढ़ा खोद रहा था। अकिम बड़ी मुश्किल से उस नौजवान जहाज़ी मज़दूर को पहचान पाया। पांक्रातोव का वज़न बहुत घट गया था और उसके गाल की चौड़ी-चौड़ी हड्डियाँ उसके धूल से भरे हुए चेहरे पर नुकीली होकर निकली हुई थीं और उसका चेहरा भी पीला और गढ़े में धँसा हुआ नज़र आता था।

उसने अकिम के हाथ में अपना गर्म और पसीजा हुआ हाथ देते हुए कहा, "अच्छा-अच्छा, बड़े चीफ़ लोग आये हैं।"

फावड़ों की आवाज थम गई। अकिम ने अपने चारों तरफ़ के लोगों के पीले और फटे हुए चेहरे देखे। उनके कोट और उनकी जाकटें लापरवाही से बर्फ़ पर पड़ी हुई थीं।

लेफ्तिन से थोड़ी देर बात करने के बाद तोकारेव शहर से आये हुए इन लोगों को लेकर खुदाई की जगह गया और पांक्रातोव को भी उसने अपने संग आने की दावत दी। वह जहाजी मजदूर जुखराई के बग़ल में चल रहा था।

जुखराई ने उस चुप्पे जहाजी मजदूर से सख्ती से पूछा, "पांक्रातोव, मुझे बतलाओ कि मोतोविलोव्का में हुआ क्या? क्या तुम ऐसा नहीं सोचते कि उस चेका के आदमी का हथियार छीन कर तुमने बहुत ज़्यादती की?"

पांक्रातोव खिसियाई हुई सी हँसी हँसा।

अपनी सफ़ाई देते हुए उसने कहा, "यह सब आपस की रजामन्दी से हुआ। उसी ने हम लोगों से कहा कि मेरा हथियार छीन लो। वह अच्छा लड़का है। जब हम लोगों ने उसको पूरी बात समझाई तो उसने कहा: 'मैं तुम्हारी मुश्किल समझता हूँ दोस्तो, मगर मुझे इस बात का हक़ नहीं है कि मैं तुम्हें खिड़कियाँ और दरवाजे ले जाने दूँ। कामरेड जेरज़िन्स्की से हमको आदेश मिला है कि हम रेलवे के माल-जायदाद की लूटपाट पर रोक लगायें। यहाँ का स्टेशन मास्टर अलग मेरी मुश्किल किये रहता है। वह हरामज़ादा चोरी करने का आदी है और मैं उसके रास्ते में रुकावट बनता हूँ। अगर मैं तुम लोगों को यह सब ले जाने दूँ और कुछ न बोलूँ, तो वह जरूर रिपोर्ट कर देगा और फिर मेरा मामला इन्क़लाबी अदालत के सामने पेश हो जायगा। लेकिन हाँ, अगर तुम मेरा हथियार छीन लो तो जरूर सब कुछ लेकर चम्पत हो सकते हो और अगर स्टेशन मास्टर इस मामले की रिपोर्ट नहीं करता तो मामला यहीं पर खतम हो जायगा।' इसलिए हम लोगों ने वैसा किया। आखिर हम लोग दरवाजे और खिड़कियाँ अपने मतलब के लिए तो ले नहीं गये, या मैं झूठ कहता हूँ?"

जुखराई की आँख में जो चमक आई उसको देख कर उसने अपना कहना जारी रखा, "कामरेड जुखराई, अगर आप चाहें तो हमको इस चीज़ की सज़ा दे सकते हैं, मगर उस लड़के के संग कोई सख्ती न कीजिएगा।"

"वह बात तो अब आई-गई हो गई। मगर देखो फिर कभी ऐसी बात न हो! अनुशासन के खयाल से यह चीज बहुत बुरी है। हम लोग अगर संगठित रूप से काम करें तो नौकरशाही की कमर तोड़ने के लिए हम काफ़ी ताक़तवर हैं। अच्छा आओ, अब कुछ और जरूरी चीजों के बारे में बात करें।" और फ़ियोदोर डाकुओं के हमले का पूरा खुलासा उससे पूछने लगा।

बोयार्का स्टेशन से क़रीब चार मील पर कुछ लोगों की एक टोली रेलवे लाइन के रास्ते में पड़ने वाले एक टीले को जी-जान से खोदे जा रही थी। सात आदमी अपनी टुकड़ी के तमाम हथियारों से लैस होकर पहरा दे रहे थे। हथियारों में उनके पास खोलियावा की राइफिल और कोर्चागिन, पांक्रातोव, दुबावा और खोमुतोव की रिवाल्वरें थीं।

पतोश्किन उस टीले पर चढ़ा हुआ अपनी नोट-बुक में कुछ लिख रहा था। इस काम पर वह अकेला इंजीनियर था। टेकनीशियन वाकुलेंको उसी सुबह भाग गया था। उसे भगोड़ेपन के जुर्म में अपने ऊपर मुक़दमा चलाया जाना मंजूर था, डाकुओं के हाथों मरना नहीं।

"इस टीले को रास्ते से हटाने में दो हफ्ता लगेगा। ज़मीन जम कर एकदम पत्थर हो गई है," पतोश्किन ने अपने बग़ल में खड़े उदास खोमुतोव से धीमी आवाज में कहा।

"हमें लाइन पर का पूरा काम करने के लिए पन्द्रह रोज मिला है और उसमें से पन्द्रह रोज तुम इसी के लिए लगा रहे हो," खोमुतोव ने अपनी मूँछ चबाते हुए गुर्राकर कहा।

"मैं तो समझता हूँ कि नहीं हो सकता। हाँ, यह जरूर है कि इसके पहले कभी ऐसी हालतों में और ऐसे काम करने वालों के साथ मैंने कोई चीज नहीं बनाई है। इसलिए हो सकता है कि मैं ग़लती कर रहा होऊँ। और सच बात तो यह है कि इसके पहले दो बार मैं ग़लती कर चुका हूँ।"

उसी वक़्त जुखराई, अकिम और पांक्रातोव दलवान के क़रीब आते दिखलाई दिये।

"वह देखो कौन है नीचे?" रेलवे वर्कशाप के नौजवान मेकेनिक ने, जो पुरानी व कुहनियों पर फटी हुई स्वेटर पहने था, चिल्ला कर कहा। उसने कोर्चागिन को उंगली गड़ाई और आनेवालों की तरफ़ इशारा किया। दूसरे ही क्षण कोर्चागिन हाथ में फावड़ा लिए पहाड़ी के नीचे बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। उसके सिर पर हेलमेट था और हेलमेट के नीचे उसकी आँखें मुस्कराकर प्यार से फ़ियोदोर का स्वागत कर रही थीं और फ़ियोदोर ने भी उससे हाथ मिलाया तो बड़ी देर तक उसके हाथों को पकड़े ही रहा।

"अरे तुम हो पावेल! इस पोशाक में तो तुम्हें पहचान ही न सका।"

पांक्रातोव सूखी सी हँसी हँसा और बोला, "इसको पोशाक कहना ठीक न होगा। बहरसूरत हवा की आमद के लिए इसमें तमाम छेद ही छेद हैं। भगोड़ों ने उसका ओवरकोट चुरा लिया, यह जाकट जो यह पहने हुए है, ओकुनेव ने

उसको दी है—इन लोगों का अपना एक कम्यून है न। मगर पावेल बिलकुल ठीक है, उसकी रगों में गर्म खून है। कंकरीट के फ़र्श पर—उस पर बिछी हुई पुआल से कुछ खास फ़र्क नहीं पड़ता—वह और एक-दो हफ्ते अपने को गरमा लेगा और उसके बाद चीड़ की लकड़ी के एक अच्छे से ताबूत में लिटाये जाने के लिए तैयार हो जायगा," उस जहाजी मजदूर ने अपने रूखे और गंभीर मजाक के साथ अपनी बात खत्म की।

काली-काली भवों और चपटी सी नाक वाले ओकुनेव ने अपनी शरारत भरी आँखें और छोटी कर ली और आपत्ति करते हुए कहा : "कोई बात नहीं, पावलुश्का का इन्तजाम हम लोग कर देंगे। हम सब मिल कर उसे रसोईघर में ओदार्का की मदद करने का काम दिला देंगे। और अगर वह एकदम गधा नहीं बने, तो खाने के लिए भी कुछ ज़्यादा पा जाया करेगा। जहाँ तक शरीर को गरमाने की बात है, तो अंगीठी से या खुद ओदार्का से सटकर बैठ जाया करेगा।"

इस बात पर एक ज़ोर का कहकहा पड़ा। उस दिन यह पहली मरतबा वे लोग हँसे थे।

फ़ियोदोर ने उस पहाड़ी का मुआइना किया और फिर तोकरेव और पतोश्किन के संग स्लेज में बैठ कर वहाँ चला गया जहाँ लकड़ी चीरने का काम चल रहा था। वह लौट कर आया तब भी वे लोग जी-जान से पहाड़ी को काटने के काम में लगे हुए थे। फ़ियोदोर ने उनके फावड़ों का तेजी से चलना देखा और उस मशक़्क़त के बोझ से काम करने वालों की झुकी हुई पीठों को देखा। अर्किम की ओर मुड़ते हुए उसने मद्धिम स्वर में कहा :

"मीटिंग की कोई जरूरत नहीं। यहाँ किसी आन्दोलन की दरकार नहीं है। तुम ठीक कहते हो तोकारेव कि ये लड़के सोने से तौले जाने के क़ाबिल हैं। ऐसी ही हालतों में लोहा आग में तप कर फ़ौलाद बनता है।

जुखराई ने पहाड़ी खोदने वालों को प्रशंसा और कठोर-कोमल गर्व की आँखों से देखा। अभी कुछ ही समय पहले उनमें से कुछ लोग उसके सामने अपनी चमकती हुई संगीनों को लिये खड़े थे। यह षड्यन्त्रकारियों के विद्रोह के एक रोज पहले वाली रात की बात थी। और अब एक ही आवेग से संचालित वे लोग इस पारश्रम में लगे हुए थे ताकि रेलवे की फ़ौलादी रगें गरमी और जिन्दगी के अनमोल स्रोत तक पहुँच सकें।

पतोश्किन ने नम्रता मगर दृढ़ता से फ़ियोदोर को यह बात बतला दी कि दो हफ्ते से कम में इस पहाड़ी को नहीं काटा जा सकता। फ़ियोदोर अपने किसी खयाल में डूबा हुआ उसकी दलीलों को सुनता रहा। उसका दिमाग़ स्पष्ट ही अपनी किसी दूसरी समस्या में उलझा हुआ था।

"पहाड़ी काटने का काम बन्द कर दो और पहाड़ी के उस पार पटरियाँ बिछाने का काम शुरू कर दो। इस पहाड़ी का हम दूसरा ही कुछ इलाज करेंगे।" उसने अखिरकार अपनी बात कही।

स्टेशन पर उसका बहुत सा वक़्त टेलीफोन पर बीतता था। खोलियावा जो बाहर दरवाज़े पर खड़ा पहरा देता था, अन्दर से आती फ़ियोदोर की फटी हुई भारी आवाज़ को सुनता था।

"मिलिटरी एरिया के चीफ़ आफ़ स्टाफ़ को फोन करो और मेरा नाम लेकर उनसे कहो कि पुज़ीरेव्स्की की रेजिमेंट को फौरन यहाँ के लिए बदली करें। इस इलाक़े से जल्द-से-जल्द लुटेरों का सफाया करना है। उनसे यह भी कहो कि एक बख्तरबन्द गाड़ी यहाँ भेजें और उसके साथ पहाड़ी को डाइनामाइट से उड़ाने के लिए आदमी भी भेजें। बाक़ी सारा इन्तज़ाम मैं कर लूँगा। मुझे लौटने में देर होगी। लित्के से कहो कि आधी रात के आस-पास मोटर लेकर स्टेशन पर रहे।"

बारक में, अकिम की छोटी सी तक़रीर के बाद जुखराई ने बोलना शुरू किया और एक घंटा, साथियों की आपस की बहस में पलक मारते उड़ गया। फ़ियोदोर ने उन लोगों को बतलाया कि काम को खतम करने के लिए पहली जनवरी जो आखिरी तारीख मुक़र्रर की गई है, उसको और आगे बढ़ाने का सवाल नहीं पैदा होता।

जुखराई ने कहा, "अब से हम इस काम को फौजी बुनियाद पर खड़ा कर रहे हैं। पार्टी मेम्बरों की एक स्पेशल टास्क कम्पनी होगी जिसके कमांडर कामरेड दुबावा होंगे। छः टीमों को खास-खास काम दिया जायगा। जो काम बाक़ी बच जायगा, उसे छः बराबर हिस्सों में बाँट कर एक-एक टीम को दे दिया जायगा। पहली जनवरी तक काम खतम होना ही है। जो टीम अपना काम पहले खतम कर लेगी उसे शहर वापिस जाने की इजाजत मिल जायगी। इसके अलावा सूबे की कार्यकारिणी का समापति-मंडल सरकार से दरख्वास्त कर रहा है कि सब से पहले काम खतम करने वाली टीम के सबसे अच्छे मज़दूर को 'ऑर्डर आफ द रेड बैनर' दिया जाय।"

अलग-अलग टीमों के ये लीडर मुक़र्रर किये गए: नं० १. कामरेड

पांक्रातोव, नं० २. कामरेड दुबावा, नं० ३. कामरेड खोमुतोव, नं० ४. कामरेड लगुतिन, नं० ५. कामरेड कोर्चागिन, नं० ६. कामरेड ओकुनेव।

" इस तामीरी काम के प्रधान, इसके राजनीतिक और व्यवस्था-सम्बन्धी नेता पूर्ववत एंटन निकिफ़ोरोविच तोकारेव रहेंगे, " जुखराई ने अपनी बात खतम करते हुए कहा।

चिड़ियों के ग़ोल के अचानक उड़ने की तरह तालियाँ बजने लगीं और कठोर चेहरों पर मुस्कराहट और शान्ति फैल गई। जिस झक्की मगर आत्मीय ढंग से भाषण समाप्त हुआ था, उससे मीटिंग का तनाव खुशी के कहकहे में डूब गया।

अकिम और फ़ियोदोर को विदा करने के लिए करीब बीस लोग स्टेशन पर आये।

कोर्चागिन से हाथ मिलाते हुए फ़ियोदोर ने पावेल के बर्फ़ से हुए भरे बरसाती बूटों को देखा।

उसने धीमे से कहा, " मैं तुम्हें एक जोड़ा जूते भेज दूँगा। उम्मीद करता हूँ कि कम से कम अभी तो तुम्हारे पैर सलामत होंगे, जम तो नहीं गये ? "

" कुछ कुछ सूजने लगे हैं," पावेल ने जवाब दिया। फिर एक चीज़ की याद करके जो उसने बहुत पहले माँगी थी, पावेल ने फ़ियोदोर की बाँह पकड़ ली और कहा, " मेरे रिवाल्वर के लिए आप कुछ कारतूस दे सकेंगे ? मेरा खयाल है मेरे पास अब सिर्फ़ तीन अच्छी कारतूसें बची हैं।"

जुखराई ने निषेध-सूचक सिर हिलाया, मगर पावेल की निराश मुद्रा को देख कर अपनी माउज़र का फ़ीता जल्दी से खोल दिया।

" यह लो, तुम्हारे लिए यह एक तोहफ़ा है। "

पावेल को एकाएक यक़ीन नहीं आया कि उसे सचमुच वह चीज़ मिल रही है जिसके लिए वह इतने दिनों से लालायित था, मगर जुखराई ने अपनी माउज़र का फ़ीता उसके कन्धे पर डालते हुए कहा :

" ले लो, ले लो ! मैं जानता हूँ बहुत दिनों से तुम्हारी निगाह इस चीज़ पर है। मगर देखना, कहीं अपने ही किसी आदमी पर इसका इस्तेमाल न कर बैठना। इसके साथ ये तीन सेट कारतूस हैं। "

पावेल ने अपने ऊपर गड़ी हुई दूसरों की ललचाई आँखों को महसूस किया।

कोई चिल्लाया, " ए पावका, अदला-बदली करते हो ? इसके बदले में मुझ से एक जोड़ा जूते ले लो और एक कोट भी। है सौदा मंजूर ? "

पांक्रातोव ने पीछे से पावेल की पीठ को कोंचा और कहा, " चलो, मैं

इसके बदले में तुम्हें एक जोड़ा फ़ेल्ट के जूते दूँ। मुझसे सौदा कर लो। क्योंकि अगर यही हाल रहा तो क्रिसमस के पहले तो तुम अपने इन बरसाती बूटों में यों भी मर चुके रहोगे।"

रेलगाड़ी के फुटबोर्ड पर एक पैर रख कर उसके सहारे जुखराई ने रिवाल्वर के लिए एक परमिट लिख दिया।

दूसरे दिन बड़े तड़के एक बख्तरबन्द गाड़ी आकर स्टेशन पर रुकी। इंजन बगुले के पर जैसी सफ़ेद भाप छोड़ रहा था जो उस साफ़-शफ़्फ़ाफ़ बर्फ़ानी हवा में खो जाती थी। चमड़े के कपड़े पहने हुए लोग लोहे के डब्बे में से निकले। कुछ घंटे बाद तीन लोग, जो पुल-पहाड़ी वग़ैरह उड़ाने का काम करते थे और गाड़ी मे आये थे, उन्होंने पहाड़ी की जड़ में दो बड़ी-बड़ी, काली-काली, कुम्हड़े जैसी चीजें गाड़ दी थीं। उन चीजों में से लम्बे-लम्बे पलीते निकले हुए थे। लोगों को सावधान करने के लिए उन्होंने कुछ गोलियाँ हवा में छोड़ीं और लोग अब इस घातक पहाड़ी से दूर-दूर चारों तरफ़ बिखर गये। पलीते के सिरे में आग लगा दी गई। पलीता नीली-नीली लौ देने लगा।

कुछ देर तक लोग साँस रोके खड़े रहे। उद्विग्न प्रतीक्षा के दो-एक क्षण, और फिर धरती काँप उठी और एक भयंकर ताक़त ने उस पहाड़ी को उड़ा दिया और मिट्टी के बड़े-बड़े ढोंके आसमान की तरफ़ उड़े। दूसरा धड़ाका पहले से भी ज़्यादा ज़बर्दस्त था। उसकी गरज चारों ओर के जंगल में गूँज गई और आवाज़ों का एक हंगामा सा छा गया।

जब धुआँ और धूल साफ़ हुई तो दिखाई दिया कि जहाँ अभी वह पहाड़ी खड़ी थी, वहाँ पर अब एक गहरा सा गढ़ा था और आस-पास की शकर जैसी सफेद बर्फ़ में मिट्टी मिल गई थी।

धड़ाके से पैदा होने वाले इस गढ़े की तरफ़ लोग अपने फावड़े और कुदाल लेकर दौड़े।

जुखराई के चले जाने के बाद काम करने वालों में इस बात की ज़बर्दस्त होड़ लगी कि कौन सबसे पहले अपना काम खतम करता है।

भोर के बहुत पहले कोर्चागिन चुपके से उठा ताकि दूसरे लोग न जगें और अपने ठिठुरे हुए पैरों को दबा-दबा कर उस बर्फ़ जैसे ठण्डे फ़र्श पर चलता हुआ

रसोईघर तक पहुँचा। वहाँ उसने चाय का पानी गरम किया और फिर अपनी टीम के लोगों को जगाने के लिए गया।

दूसरे लोगों के जागते-जागते दिन अच्छी तरह निकल आया था।

उसी सुबह पांक्रातोव गुंजान बारक में कुहनियों से अपना रास्ता बनाता हुआ वहाँ पहुँचा जहाँ दुबावा और उसके दल के लोग नाश्ता कर रहे थे।

उसने आवेश में कहा, "सुनते हो मितियाई! पावका ने अपने लड़कों को दिन निकलने के पहले ही जगा दिया और काम पर निकल गया। मैं दावे के के साथ कह सकता हूँ कि अब तक उन्होंने बीस गज पटरियाँ बिछा ली होंगी। सच कहते हैं कि उसने अपने रेलवे वर्कशाप के लड़कों को जोश दिला-दिला कर अपने हिस्से का काम पच्चीस तारीख तक खतम करने के लिए तैयार कर लिया है। इस तरह तो हम कहीं के न रहेंगे, वह हमको पटरा कर देगा। मगर मैं कहता हूँ वह नहीं होने का!"

दुबावा उदास ढंग से मुस्कराया। वह समझ सकता था कि नदी के किनारे वाले शहर के कोमसोमोल-मन्त्री को रेलवे वर्कशाप के लोगों का ऐसे आगे बढ़कर काम करना क्यों इतना बुरा लग रहा है। सच बात यह थी कि उसके दोस्त पावेल ने दुबावा को भी पीछे छोड़ दिया था। बिना किसी से एक शब्द कहे उसने सारी कम्पनी को चुनौती दे दी थी।

पांक्रातोव ने कहा, "दोस्त होने न होने से कुछ फ़र्क नहीं पड़ता। जीतेगा वही जो सबसे अच्छा काम करेगा।"

दोपहर को जब कोर्चागिन की टीम जोर-शोर से काम कर रही थी, तब एक अप्रत्याशित बाधा उपस्थित हुई। वह सन्तरी जो राइफिलों पर पहरा दे रहा था, उसने दरख्तों के बीच से कुछ घुड़सवारों के एक दल को करीब आते देखा और चेतावनी देने के लिए एक गोली छोड़ी।

"दोस्तो, हथियार उठा लो! लुटेरे!" पावेल चिल्लाया। उसने अपना फावड़ा फेंक दिया और पेड़ की तरफ़ दौड़ा जहाँ उसकी माउज़र लटक रही थी।

झटपट अपनी राइफिलें उठा कर दूसरे भी लाइन के किनारे के पास ही बर्फ़ पर लेट गये। आगे-आगे चलने वाले घुड़सवारों ने अपनी टोपियाँ हिलाईं।

उनमें से एक चिल्लाया, "साथियो, रुको रुको, गोली मत चलाओ!"

बुद्योनी की फ़ौज की टोपियाँ लगाये करीब पचास घुड़सवार रास्ते पर चले आ रहे थे। उनकी टोपियों पर लाल तारे चमक रहे थे।

पुज़ीरेव्स्की की रेजिमैंट की एक टुकड़ी देख-भाल के लिए आई थी। पावेल ने देखा कि कमांडर जिस पर सवार था, वह एक खूबसूरत भूरे रंग की

घोड़ी थी। उसके माथे पर एक सफ़ेद दाग़ था और उसके एक कान का थोड़ा-सा हिस्सा ग़ायब था। वह बेचैनी से जस्त कर रही थी और जब पावेल ने तेज़ी से आगे बढ़ कर उसकी रास को पकड़ा तो वह उछल पड़ी।

"अरे क्यों, लिश्का, मेरी प्यारी लिश्का, मैंने कब सोचा था कि फिर कभी हमारी मुलाक़ात होगी! अच्छा गोलियाँ तो तुझे छू नहीं पाईं!"

पावेल ने उसकी पतली गर्दन को प्यार से गले लगाया और उसके फड़कते हुए नथने को थपथपाया।

कमांडर क्षण भर के लिए एकटक पावेल को देखता रहा, फिर आश्चर्य से चीख पड़ा: "अरे, कहीं यह कोर्चागिन तो नहीं! मगर तुम भी कैसे हो, तुमने अपनी घोड़ी को तो पहचान लिया मगर अपने पुराने दोस्त सेरेदा को नहीं देख रहे हो। सलाम दोस्त!"

इस बीच शहर में सभी तरफ़ इस बात के लिए ज़ोर लगाया जा रहा था कि रेलवे लाइन बिछाने के काम को और तेज़ किया जाय और जहाँ काम चल रहा था, वहाँ इस चीज़ का असर फ़ौरन दिखाई देता था। ज़ार्की ने कोमसोमोल की ज़िला कमिटी के एक-एक आदमी को बीन-बीन कर बोयार्का भेज दिया था। सोलोमेंका में अब सिर्फ़ लड़कियाँ बची थीं। उसने ज़ोर लगा कर रेलवे स्कूल को, विद्यार्थियों की एक और टोली भेजने के लिए तैयार किया।

अपने काम के नतीजों की रिपोर्ट अकिम को देते हुए उसने मज़ाक में कहा, "मेरे पास अब सिर्फ़ प्रोलितारियत औरतें बच गई हैं। मैं सोचता हूँ कि अपनी जगह पर तालिया लगुतिना को रख कर दरवाज़े पर 'महिला विभाग' का साइनबोर्ड लगा दूँ और खुद भी बोयार्का चला जाऊँ। मुझे बड़ा अटपटा लगता है यहाँ, इतनी तमाम औरतों के बीच मैं अकेला आदमी हूँ। तुम ज़रा देखते कि किस नफ़रत से ये लड़कियाँ मुझको देखती हैं। ज़रूर वह कहती होंगी 'देखो, यह कैसा चंट आदमी है, इसने औरों को तो रवाना कर दिया, मगर खुद यहीं जमा हुआ है।' या मुमकिन है इससे भी कोई बुरी बात कहती हों। तुम्हें मुझको यहाँ से जाने देना ही होगा।"

मगर अकिम केवल हँसा।

बोयार्का में नये काम करने वाले बराबर आते रहे। उनमें रेलवे स्कूल के साठ विद्यार्थी भी थे।

ज़ुखराई ने रेलवे अधिकारियों को इस बात के लिए भी राज़ी किया कि नये पहुँचने वालों के रहने के लिए वे चार डब्बे बोयार्का भेज दें।

दुबावा की टीम को काम से छुट्टी देकर उन्हें पुश्चा-वोदित्सा से इंजन और छोटी लाइन के मालगाड़ी के खुले हुए पैंसठ डब्बे लाने के लिए भेजा गया। इस काम को उनके दूसरे काम का एक हिस्सा माना गया।

जाने के पहले दुबावा ने तोकारेव को सलाह दी कि क्लावीचेक को शहर से बुला कर उसे बोयार्का में उन नई संगठित टीमों में से एक का चार्ज दे दिया जाय। तोकारेव ने ऐसा नहीं किया। उसे यह नहीं मालूम था कि दुबावा के इस अनुरोध के पीछे असली कारण क्या है। इसका असली कारण था आना की एक चिट्ठी जो सोलोमैंका से आने वाले लोग अपने साथ लाये थे।

आना ने लिखा था :

"दिमित्री ! क्लावीचेक और मैंने मिलकर तुम्हारे लिए किताबों का एक गट्ठर तैयार किया है। हम तुमको और बोयार्का के दूसरे काम करने वालों को अपना हार्दिक अभिवादन भेजते हैं। तुम सब बहुत ग़जब के हो ! हम तुम्हारे लिए शक्ति और उत्साह की कामना करते हैं। कल लकड़ी का शेष स्टाक बाँट दिया गया, अब कुछ नहीं बचा। क्लावीचेक तुमको अपना नमस्कार भेज रहा है। वह बहुत अच्छा काम करने वाला है। बोयार्का के लिए सारी रोटियाँ वह खुद ही सेंकता है, आटा भी खुद ही सानता है और उसे गूँधता भी खुद ही है। बेकरी के दूसरे किसी आदमी पर उसे भरोसा नहीं है। उसने कहीं से बहुत अच्छा आटा पा लिया है। और उसकी रोटी अच्छी होती है, कम-से-कम उस रोटी से कहीं अच्छी होती है, जो मुझे मिलती है। शाम को हमारे सब दोस्त मेरे घर पर इकट्ठा होते हैं—लगुतिना, आर्त्युखिन, क्लावीचेक और कभी-कभी जार्की। हम लोग कभी-कभी साथ-साथ कुछ-कुछ पढ़ते भी हैं। मगर अक्सर हम लोग बातें ही करते हैं, दुनिया के हर आदमी और हर चीज के बारे में और खास करके बोयार्का में काम करते हुए तुम लोगों के बारे में। यहाँ की लड़कियाँ तोकारेव से बेहद नाराज हैं क्योंकि उन्होंने लड़कियों को इस काम पर लगाने से इनकार कर दिया। वे कहती हैं कि कठिनाइयाँ झेलने में वे किसी से कम थोड़े ही हैं। तालिया ने ऐलान किया है कि वह अपने बाप के कपड़े पहन कर अकेले बोयार्का चली जायगी। 'देखूँ वह कैसे मुझे वहाँ से बाहर करते हैं,' वह कहती है।

"मुझे कोई ताज्जुब न होगा अगर वह सचमुच अपनी बात पूरी

कर डाले। मेरा नमस्कार काली-काली आँखों वाले अपने दोस्त से कह देना।—आना"

बर्फ़ का तूफ़ान अचानक ही उन पर टूट पड़ा। झुके हुए भूरे बादल आसमान भर में फैल गये और ढेर-ढेर सी बर्फ़ गिरने लगी। रात आई तो हवा चिमनियों में हरहरा रही थी और पेड़ों में सिसक रही थी। उड़ते हुए बर्फ़ के गालों को उसने खदेड़ कर भगा दिया और जंगल की गूँजों को अपनी तेज़-तीखी आवाज़ से जगा दिया।

सारी रात तूफ़ान तेज़ी से चलता रहा और गोकि रात भर अंगीठियाँ सुलगी रहीं, तब भी लोग काँपते रहे। वह टूटी हुई स्टेशन की इमारत अन्दर की गरमी को संजो कर नहीं रख पाती थी।

सवेरे उन्हें गहरी बर्फ़ के बीच जैसे हल चला कर अपने-अपने हिस्सों पर पहुँचना पड़ा। मगर दरख्तों के बहुत ऊपर सूरज नीले आसमान में चमक रहा था और कहीं पर एक भी बादल का टुकड़ा नहीं था।

कोर्चागिन और उसके साथी अपने हिस्से में गिरी हुई बर्फ़ की सफ़ाई करने के लिए गये। तभी पावेल को इस बात का एहसास हुआ कि सर्दी कितनी तकलीफ़-देह चीज़ हो सकती है। ओकुनेव की जाकट एकदम तार-तार हो गई थी और उससे किसी क़िस्म का बचाव नहीं होता था। उसके रबड़ के बड़े जूतों में बराबर बर्फ़ भरी रहती थी। जब देखो तब वह बरफ़ में फँस कर निकल जाते थे और अब उसके दूसरे जूते के तल्ले निकलने की भी बारी आ गई थी। उसकी गर्दन में दो बड़े-बड़े फोड़े निकल आये थे। ठण्डे फर्श पर सोने के कारण ऐसा हुआ था। गुलेबन्द की जगह लगाने के लिए तोकारेव ने उसको अपना तौलिया दे दिया था।

पावेल का चेहरा मरख और उसकी आँखें लाल हो रही थीं और वह भूत की तरह बर्फ़ में अपना बेलचा चला रहा था। तभी एक मुसाफ़िर गाड़ी भक-भक करती हुई धीरे-धीरे स्टेशन में दाखिल हुई। उसके इंजन की जान अब-तब हो रही थी और वह बड़ी मुश्किल से गाड़ी को इस जगह तक खींच कर ला सका था। लकड़ी का एक भी कुन्दा इंजन के पास वाले कोयले के डब्बे में नहीं बचा था। और फायर बाक्स में आखिरी अंगारे बुझने की तैयारी में थे।

इंजन ड्राइवर ने चिल्ला कर स्टेशन मास्टर से कहा, "हमें ईंधन दो तो हम और आगे जायँ, वरना अभी जब तक इंजन में दम है, हमें गाड़ी को शण्ट करके साइडिंग में ले जाकर डाल देने दो, नहीं तो और मुसीबत होगी।"

रेलगाड़ी को साइडिंग में ले जाकर डाल दिया गया। गाड़ी को रोक देने

की वजह नाराज़ मुसाफ़िरों को समझाई गई और डब्बों से शिकायतों और गालियों का एक तूफ़ान सा उठा।

"जाओ, उस बुड्ढे आदमी से बात करो," स्टेशन मास्टर ने तोकारेव की तरफ़ इशारा करते हुए, जो प्लेटफार्म पर चला आ रहा था, रेलगाड़ी के गार्डों से कहा। "यहाँ पर जो तामीरी काम चल रहा है उसके प्रधान वही हैं। हो सकता है वह स्लेज में रख कर कुछ लकड़ी इंजन के लिए पहुँचा सकें। वे लोग स्लीपरों के लिए लकड़ी के कुन्दे इस्तेमाल कर रहे हैं।"

जब कंडक्टरों ने तोकारेव के सामने अपनी मांग रखी तो उसने कहा, "मैं तुम्हें लकड़ी दूँगा, मगर इसके लिए तुम्हें दाम देना पड़ेगा। आख़िर यह हमारे तामीरी काम का मसाला है। इस वक़्त बर्फ़ के कारण हमारा काम रुका हुआ है। तुम्हारी गाड़ी में क़रीब छ-सात सौ मुसाफ़िर ज़रूर होंगे। औरतें और बच्चे गाड़ी में रह जायँ। और मर्द बाहर आकर शाम तक बर्फ़ की सफ़ाई में हमारी मदद करें, यही हमारा कहना है। यह दाम चुकाने के लिए अगर तैयार हो तो मैं तुम्हें जलाने के लिए लकड़ी दे सकता हूँ। अगर यह बात उन लोगों को मंज़ूर न हो तो ठीक है, नये साल के पहले दिन तक वे आराम से उसी जगह पर पड़े रह सकते हैं।"

"ज़रा इस भीड़ को तो देखो जो इधर आ रही है। अरे, इनमें तो औरतें भी हैं!" कोर्चागिन ने अपनी पीठ पीछे किसी की आश्चर्य से कही गई यह बात सुनी। वह पीछे मुड़ा। तोकारेव वहाँ पहुँचा।

उसने कहा, "ये लो मैं तुम्हारे लिए एक सौ मददगार लाया हूँ। इन सबको काम दो और देखना कोई कामचोरी न करने पाये।"

कोर्चागिन ने इन नये आने वालों को काम पर लगा दिया। रेलवे की ठाट-दार साफ़-सुथरी वर्दी पहने एक लम्बे आदमी ने, जिसकी वर्दी में फ़र का कालर लगा हुआ था और जिसके सर पर ऊनी कराकुल टोपी लगी हुई थी, नाराज़गी से फावड़े को घुमाया और एक नौजवान औरत की तरफ़ मुड़ा जो उसकी साथिन थी। यह औरत सील मछली के चमड़े का हैट लगाये थी जिसके सिरे पर एक भारी सा फुंदना लगा हुआ था।

"मैं इस तरह फावड़ा भर-भर कर बरफ़ नहीं फेंकूंगा और किसी की मजाल नहीं कि मुझे इस काम के लिए मजबूर करे। रेलवे इंजीनियर की हैसियत से मैं इस काम का चार्ज ले सकता था अगर मुझे कहा जाता। लेकिन इसकी कोई

जरूरत नहीं कि तुम या मैं, यहाँ इस तरह हाथ में फावड़ा लेकर बर्फ की सफाई करें। यह कायदे के खिलाफ बात है। वह बुड्ढा आदमी कानून तोड़ रहा है। मैं चाहूँ तो उसका चालान करवा सकता हूँ। तुम्हारा फोरमैन कहाँ है?" उसने अपने पास खड़े हुए एक मजदूर से आदेश के स्वर में पूछा।

कोर्चागिन वहाँ आ गया।

"आप काम क्यों नहीं कर रहे हैं, महाशय?"

उस आदमी ने आँखों में उपेक्षा भर पावेल को ऊपर से नीचे तक देखा।

"मगर आप कौन हैं?"

"मैं एक मजदूर हूँ।"

"तब मुझे आपसे कुछ नहीं कहना है। मेरे पास अपने फ़ोरमैन को या जिस भी नाम से आप उसे पुकारते हों, भेज दीजिए····।"

कोर्चागिन के माथे में बल पड़ गये।

"अगर आप काम नहीं करना चाहते, तो मत करिए। मगर आप वापिस अपनी गाड़ी में नहीं पहुँच सकते जब तक कि आपके टिकट पर हमारे दस्तखत न हों। यह हमारे प्रधान का आदेश है।"

"और आप?" पावेल ने उस औरत की तरफ़ मुड़ते हुए कहा। और उस ओर नजर पड़ते ही उसे तो जैसे काठ-सा मार गया। उसके सामने तोनिया तुमानोवा खड़ी थी।

तोनिया को यकीन नहीं आ रहा था कि यह आवारा सा आदमी, जो फटे-पुराने कपड़े और सड़े-गले जूते पहने खड़ा था, जिसके गले में एक गन्दी सी तौलिया बंधी थी और जिसने शायद कई दिन से मुँह भी नहीं धोया था, वही कोर्चागिन था जिसे वह कभी जानती थी। सिर्फ उसकी आँखें अब भी अंगारों की तरह चमक रही थीं, जैसी कि तब चमकती थीं। उसे पावेल की आँखों की याद थी। उसे देख कर वह शर्म से गड़ गई कि अभी कुछ ही साल पहले उसने इस आवारा-शक्ल आदमी को अपनी मुहब्बत दी थी। हर चीज कैसी बदल गई थी।

उसने हाल में शादी की थी और वह अपने पति के साथ शहर जा रही थी, जहाँ वह रेलवे विभाग में ऊँचे पद पर था। भला किसने सोचा था कि अपने कैशोर्य का प्रेमपात्र उसे यहाँ इस रूप में मिल जायेगा? उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाने में भी उसे झिझक हुई। वासिली क्या सोचेगा? कितनी बुरी बात है कि कोर्चागिन का ऐसा पतन हो गया है। जाहिर है कि इस फ़ायर-मैन को मजदूर की हैसियत से ऊपर उठने का मौक़ा नहीं मिला।

वह हिचकिचाती हुई खड़ी रही। उसके गाल जल रहे थे। इसी बीच

रेलवे इंजीनियर ने, जो इस आवारे की ढिटाई पर तैश खाता खड़ा था क्योंकि वह उसकी बीबी को घूर रहा था, अपने हाथ का बेलचा फेंक दिया और अपनी बीबी के बगल में जाकर खड़ा हो गया।

"चलो तोनिया चलें, मैं इस लात्सरोनी[1] की सूरत अब और नहीं बर्दाश्त कर सकता।"

कोर्चागिन ने जिसेपी गैरबाल्डी पढ़ा था और उसे इस शब्द का मतलब मालूम था।

"मैं भले लात्सरोनी होऊँ, मगर तुम तो एक ग़लीज बुर्जुआ हो," उसने फटी हुई आवाज में कहा और तोनिया की तरफ़ मुड़ते हुए रूखे अन्दाज में कहा, "कामरेड तुमानोवा, बेलचा ले लो और काम शुरू कर दो। इस बैल के उदाहरण पर मत चलो···माफ़ करना अगर तुम्हारा इससे किसी तरह का सम्बन्ध हो।"

पावेल ने तोनिया के फर के जूतों पर निगाह डाली और मुस्कराते हुए कहा :

"मैं तुम्हें यहाँ रुकने की सलाह न दूंगा। कल रात लुटेरों ने हम पर हमला किया था।"

यह कह कर वह घूमा और चल पड़ा, उसके रबड़ के बड़े जूते फटाफट बज रहे थे।

उसके आख़िरी शब्दों का रेलवे इंजीनियर पर असर हुआ और तोनिया ने उसे रुकने और काम करने के लिए राजी कर लिया।

उसी शाम को, दिन का काम खत्म हो जाने पर, काम करने वालों की भीड़ स्टेशन वापस आई। तोनिया का पति बड़ी जल्दी कर रहा था ताकि सबसे आगे पहुँच जाय और रेलगाड़ी में उसे अच्छी सीट मिल जाय। तोनिया ने, जो मजदूरों की एक टोली को रास्ता देने के लिए रुक गई थी, पावेल को दूसरे सब काम करने वालों के पीछे-पीछे थके हुए क़दमों से, अपने बेलचे का सहारा लेकर धीरे-धीरे चलते देखा।

"हलो पावलुशा," उसने कहा और उसके साथ हो ली और उसके बग़ल-बग़ल चलने लगी। "मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं तुमको यहाँ ऐसी हालत में पाऊँगी। अधिकारियों को इतना तो मालूम होगा ही कि तुम्हारी योग्यता इससे ज़्यादा है कि तुम बस एक मजदूर बना कर छोड़ दिये जाओ? मैंने तो सोचा

१. नेपुल्स शहर का रहने वाला आवारागर्द लड़का जो छोटे-मोटे काम करके और भीख मांग कर जीवन निर्वाह करता है।

था कि तुम कब्रके कमिसार या ऐसे ही किसी दूसरे पद पर पहुँच गये होंगे। बड़े अफ़सोस की बात है कि जिन्दगी ने तुम्हारे साथ ऐसी बेरहमी की।"

पावेल रुका और उसने कुछ आश्चर्य से तोनिया को देखा।

"और न मैंने कभी समझा था कि तुम्हारा नज़रिया इतना तंग होगा," उसने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए सभ्य से सभ्य शब्द तलाश करते हुए कहा।

तोनिया के कान की लवें जल रही थीं।

"तुम अब भी हमेशा ही की तरह बदज़बान हो!"

कोर्चागिन ने अपना बेलचा उठा कर कन्धे पर रख लिया और आगे बढ़ता रहा। कुछ क़दम जाकर वह रुका।

"कामरेड तुमानोवा" उसने कहा, "मेरी बदज़बानी तुम्हारी सभ्यता से कहीं अच्छी है। और जहाँ तक मेरी जिन्दगी का ताल्लुक है, उसकी फिक्र न करो। उसमें कोई गड़बड़ी नहीं है। गड़बड़ी तुम्हारी जिन्दगी में है, जैसा मैंने सोचा था उससे कहीं ज़्यादा। दो साल पहले तुम बेहतर थी, तब तुम्हें एक मज़दूर से हाथ मिलाने में कम से कम शर्म तो नहीं मालूम होती थी। मगर अब तुमसे कपूर की गोलियों की बदबू आती है। सच बात यह है कि तुम्हारे और मेरे बीच अब कोई मिलने की जगह बाकी नहीं रही और हमारा एक-दूसरे से कुछ भी कहना बेसूद है।"

पावेल को आर्तेम की एक चिट्ठी मिली थी जिसमें लिखा था कि वह शादी करने जा रहा है और पावेल से ज़ोर देकर उसने कहा था कि हर हालत में वह शादी में शरीक हो।

हवा का एक झोंका पावेल के हाथ से काग़ज़ के उस टुकड़े को उड़ा ले गया। यह सब शादी-बारात उसके लिए नहीं है। इस वक़्त भला वह कैसे जा सकता है? अभी कल ही वह भालू पांकातोव उसकी टीम से आगे बढ़ गया था और इतनी तेज़ी से काम कर रहा था कि सबको देख कर हैरत होती थी। वह जहाज़ी मज़दूर प्रतियोगिता में पहला स्थान पाने के लिए जान लगा कर कोशिश कर रहा था। यों वह लापरवाह सा आदमी था और इन बातों की उसे फिक्र नहीं रहती थी। मगर अब उस लापरवाही की उसके यहाँ कोई जगह न थी और वह जैसे चाबुक मार-मार कर अपने साथी जहाज़ियों को बेहद तेज़ रफ़्तार से आगे लिये चला जा रहा था।

पतोश्किन उस ख़ामोश तेज़ी को देख रहा था जिससे कि सब लोग काम कर रहे थे और वह परेशान होकर सिर खुजलाते हुए मन ही मन आश्चर्य से सोचता था, "ये आदमी हैं या देव ? ऐसी असम्भव शक्ति इनके अन्दर कहाँ से आती है ? अगर सिर्फ आठ दिन तक मौसम साफ रहा तो हम कटी हुई लकड़ियों तक पहुँच जायँगे ! ठीक है, देखो, अभी तुम्हें ज़िन्दगी में बहुत कुछ देखना और सीखना है ! ये लोग सारे रेकार्ड और सारे अन्दाज़े तोड़ कर रख दे रहे हैं।"

क्लावीचेक अपनी तैयार की हुई आखिरी रोटियाँ लेकर शहर से आया। उसने तोकारेव से बात की और फिर कोर्चागिन की तलाश में निकल गया। दोनों आदमियों ने बड़ी मुहब्बत से एक-दूसरे से हाथ मिलाया। क्लावीचेक ने खुल कर मुस्कराते हुए थैले में हाथ डाला और स्वीडन की बनी हुई चमड़े की एक बड़ी खूबसूरत जाकट निकाली जिसमें फर का अस्तर लगा हुआ था।

"यह तुम्हारे लिये है !" उस नर्म चमड़े को थपथपाते हुए उसने कहा। "बूझो तो किसने भेजा है ? क्या, तुम्हें नहीं मालूम ? हो यार तुम सचमुच बड़े बुद्धू ! कामरेड उस्तिनोविच ने भेजा है इसे, ताकि तुम्हें सरदी न लग जाय। उसको यह चीज़ ओलशिन्स्की से मिली थी। उससे लेकर उस्तिनोविच ने सीधे मेरे हाथ में पकड़ा दिया ताकि मैं तुम्हें लाकर दे दूँ। अकिम ने उसको बताया था कि तुम्हारे पास बस एक पतली सी जाकट है जिसे पहन कर तुम जाड़े-पाले में घूमते रहते हो। ओलशिन्स्की बड़ा ख़फ़ीफ़ हुआ। उसने कहा, 'मैं इस साथी को एक फ़ौजी कोट भेज दूँगा।' मगर रिता इसको सुन कर हँस पड़ी और बोली, 'फ़िक्र न करो, इस जाकट में वह ज़्यादा अच्छा काम करेगा।'

आश्चर्यान्वित पावेल ने उस शानदार जाकट को लिया और फिर कुछ हिचकिचाते हुए उसे अपने सर्दी से जकड़े हुए बदन पर चढ़ा लिया। पहनने के साथ ही उसको उन नर्म-नर्म बालों से, जो उसके सीने और कन्धों पर फैले हुए थे, अपने जिस्म के अन्दर गर्मी मालूम हुई।

रिता ने अपनी डायरी में लिखा :

"२० दिसम्बर

"आन्धी और तूफ़ान का रेला चल रहा है। बर्फ़ और तेज़ हवा। वहाँ बोयार्का में वे लोग अपनी मंज़िल पर पहुँच ही गये थे कि पाले और तूफ़ान ने आकर उनको रोक दिया। वहाँ उनके गर्दन तक बर्फ़ जमी हुई है और जमी हुई धरती को खोदना आसान काम नहीं है। अब मुश्किल से उनका आधा मील का काम बाक़ी है, मगर यही सबसे कठिन मंज़िल है।

"तोकारेव ने रिपोर्ट भेजी है कि वहाँ टाइफाइड ज़ोर से फैला है। तीन आदमियों ने बिस्तर पकड़ लिया है।"

"२२ दिसम्बर

"कोमसोमोल की सूबा कमिटी का एक पूरा इजलास हुआ था। मगर बोयार्का से उसमें कोई नहीं शरीक हुआ। बोयार्का से चौदह मील पर लुटेरों ने अनाज की एक गाड़ी उलट दी है और गल्ले की कमिसारियट के प्रतिनिधि ने आदेश दिया है कि सारे काम करने वालों को उस जगह पर भेज दिया जाय।"

"२३ दिसम्बर

"बोयार्का से टाइफाइड के और सात मरीज़ शहर लाये गए हैं। उनमें ओकुनेव भी है। मैं स्टेशन गई थी और मैंने उन लोगों की ठण्डी, सर्दी से अकड़ी हुई लाशों को उतारे जाते देखा जो खारकोव की एक गाड़ी के बफ़र पर चढ़ कर आ रहे थे। अस्पताल ठण्डे पड़े हैं, उनको गरम करने का इन्तज़ाम नहीं है। यह मनहूस बर्फ़ का तूफान पता नहीं कब ख़तम होगा?"

"२४ दिसम्बर

"अभी जुखराई से मिल कर आ रही हूँ। उन्होंने इस उड़ती हुई ख़बर की तसदीक़ की कि ओलिक और उसके पूरे गिरोह ने कल रात बोयार्का पर हमला किया था। दो घंटे तक लड़ाई चली। तार-वार सब काट डाले गये थे और कहीं आज सबेरे जाकर जुखराई को ठीक-ठीक रिपोर्ट मिली। गिरोह को मार कर भगा दिया गया मगर तोकारेव भी घायल हो गया है, एक गोली उसके सीने से पार हो गई है। वह आज शहर लाया जायगा। फ्रेंज क्लावीचेक, जो उस रात सन्तरियों के चार्ज में था, मारा गया। लुटेरों पर सबसे पहले उसी की निगाह गई थी और उसी ने शोर मचा कर अपने साथियों को होशियार किया था। उसने हमलावरों पर गोली चलानी शुरू की। मगर इसके पहले कि वह स्कूल की इमारत तक पहुँच सके, लुटेरे उसके ऊपर चढ़ आये थे। तलवार के एक वार ने उसको काट कर रख दिया। ग्यारह मज़दूर घायल हुए। अब वहाँ पर दो घुड़सवार दस्ते और बख्तरबन्द गाड़ी पहुँच गई है।

"तामीरी काम का चार्ज अब पांकातोव ने ले लिया है। आज पुजीरेव्स्की ने गिरोह के बचे-खुचे लोगों को ग्लुबोकी गांव में जा पकड़ा और उनका सफ़ाया कर दिया। कुछ ग़ैर-पार्टी मज़दूर रेलगाड़ी का इन्तज़ार किये बिना पैदल ही शहर के लिए चल पड़े, वे पटरी के किनारे-किनारे चले आ रहे हैं।"

" तोकारेव और दूसरे घायल लोग आये और उन्हें अस्पताल में रख दिया गया। डाक्टरों ने वचन दिया है कि वे बूढ़े तोकारेव को बचा लेंगे। वह अब भी बेहोश है। दूसरों की जान खतरे में नहीं है।

" हम लोगों और सूबे की पार्टी कमिटी के नाम बोयार्का से एक तार आया है जिसमें लिखा है : ' लुटेरों के हमले के जवाब में रेलवे लाइन के हम तामीरी मजदूर, जो 'सोवियत शक्ति के लिए' नामक बख्तरबन्द गाड़ी के चालकों और लाल सेना की घुड़सवार रेजिमेंट के साथ इस मीटिंग में जमा हुए हैं, आपके सम्मुख शपथ लेते हैं कि चाहे जो भी अड़चनें हमारे रास्ते में आयें, पहली जनवरी को हम जलाने की लकड़ी शहर को जरूर ही देंगे। अपनी सारी ताक़त लगा कर हम लोग काम कर रहे हैं। जिसने हमको यहाँ भेजा, वह कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद। मीटिंग का सभापति, कोर्चागिन। मन्त्री, बेजिन। '

" क्लावीचेक को सोलोमेंका में फ़ौजी क़ायदे से दफ़ना दिया गया। "

मंजिल अब दिखाई दे रही थी, मगर उसकी तरफ़ बढ़ने की रफ्तार इतनी धीमी थी कि तकलीफ़ होती थी। हर रोज टाइफाइड, दर्जनों काम करनेवालों को छीन लेता था।

एक रोज कोर्चागिन, काम पर से स्टेशन लौटते हुए, शराबी की तरह लड़खड़ाता चला आ रहा था। उसकी टांगें टूटी जा रही थीं। कई रोज से उसे हरारत रहती थी, मगर आज बुख़ार की तेज़ी बहुत बढ़ गई थी।

टाइफाइड बुख़ार काम करने वालों की संख्या बराबर घटाता जा रहा था और अब उसे यह एक नया शिकार मिला। मगर पावेल के तगड़े जिस्म ने रोग का बहुत मुक़ाबला किया और लगातार पाँच रोज तक उसके अन्दर इतनी ताक़त रही कि वह कंकरीट के फ़र्श पर बिछे हुए अपने पुआल के बिस्तरे से उठा और दूसरे काम करने वालों के संग-संग काम में शरीक हुआ। मगर अब बुख़ार ने उसके ऊपर काबू पा लिया था। और अब न तो गरम जाकट, न फ़ियोदोर के उपहार के फेल्ट जूते, जिन्हें वह पाले के मारे हुए पैरों में पहने था, कुछ भी काम आये।

हर क़दम के साथ उसके सीने में बड़ा तेज दर्द होता था। उसके दाँत बज रहे थे। और उसकी आँखों के आगे धुँधलका-सा छाया हुआ था जिससे तमाम पेड़ उसे घूमते नजर आते थे।

बड़ी मुश्किल से वह किसी-किसी तरह अपने पैरों को घसीटता हुआ स्टेशन

पहुँचा। वहाँ पर उसे असाधारण हलचल दिखाई दी जिससे कि वह रुक गया और अपनी बुखार से भारी आँखों पर ज़ोर देते हुए उसने देखा कि माल के खुले हुए डब्बों की एक लम्बी गाड़ी यहाँ से वहाँ तक प्लेटफ़ार्म पर खड़ी है। गाड़ी में जो लोग आये थे, वे उन डब्बों से छोटी लाइन के इंजन, रेल की पटरियाँ और स्लीपर उतार रहे थे। पावेल लड़खड़ाते क़दमों से आगे बढ़ा और भहरा कर गिर पड़ा। उसका सिर ज़मीन से जा टकराया और उसे भयानक दर्द महसूस हुआ और उसके जलते हुए गालों को बर्फ़ की ठण्डक मिली जो उसे अच्छी मालूम हुई।

कई घंटे बाद लोगों ने उसे वहाँ पड़े देखा और उठा कर बारक में ले आये। उसकी साँस भारी चल रही थी और उसे अपने आसपास की चीज़ों का कोई होश न था। बख़्तरबन्द गाड़ी में से एक कम्पाउंडर को बुलाया गया और उसने बतलाया कि पावेल को निमोनिया और टाइफाइड है। उसे एक सौ छः डिग्री बुखार था। कम्पाउण्डर ने उसके जोड़ों की सूजन और गर्दन पर के उसके ज़ख्मों को भी देखा, मगर उसने कहा कि निमोनिया और टाइफाइड के मुक़ाबले में वे कुछ भी नहीं हैं। मरीज़ की जान लेने के लिए यह निमोनिया और टाइफाइड काफ़ी है।

पांक्रातोव और दुबावा ने, जो शहर से आ गये थे, पावेल को बचाने के लिए कोई भी कोशिश उठा नहीं रखी।

अल्योशा कोखान्स्की को, जो पावेल के ही शहर का आदमी था, यह भार दिया गया कि वह पावेल को उसके घर वालों के पास ले जाय।

कोर्चागिन की टीम के तमाम काम करने वालों की मदद से और खास तौर से खोलियावा की मदद से पांक्रातोव और दुबावा ने किसी तरह अल्योशा और बेहोश कोर्चागिन को भरे हुए रेलगाड़ी के डब्बे में घुसाया। मुसाफ़िरों को शक हो गया कि टाइफस का मामला है और उन्होंने इस बात के लिए बहुत ज़ोर लगाया कि उन लोगों को अन्दर न आने दें। और यह भी धमकी दी कि वे रास्ते में ही मरीज़ों को उठा कर रेलगाड़ी से बाहर फेंक देंगे।

खोलियावा ने अपनी बन्दूक उनकी नाक से अड़ा दी और गरज कर बोला: "इसकी बीमारी छुतही नहीं है! और यह इस गाड़ी पर जायगा ही, चाहे इसके लिए तुम लोगों को इसमें से उठा कर बाहर फेंक देना पड़े! और याद रखना जानवरो, अगर तुममें से किसी ने इसको हाथ भी लगाया तो मैं लाइन को खबर भेज दूँगा और तुम सबको गाड़ी से उतार कर जेल में डाल दिया जायगा। लो, अल्योशा, पावका को यह माउज़र लो और जो भी आदमी कुछ गड़बड़ करे, उसे गोली से उड़ा दो," खोलियावा ने ज़ोर देते हुए अपनी बात खतम की।

रेलगाड़ी भक-भक भाप छोड़ती हुई स्टेशन से रवाना हुई। पांक्रातोव दुबावा के पास गया जो वीरान प्लेटफ़ार्म पर खड़ा था।

"तुम्हारा क्या खयाल है, यह बच जायगा?"

सवाल का कोई जवाब नहीं मिला।

"चलो मितियाई, इसका कोई इलाज नहीं है। अब हमीं को हर चीज़ की जवाबदेही करनी पड़ेगी। हमें रात भर में इन इंजनों को उतार लेना है और सवेरे हम उनको गरमाने की कोशिश करेंगे।"

खोलियावा ने लाइन पर के अपने तमाम चेका के दोस्तों को टेलीफोन किया और उनसे ज़ोर देकर यह कहा कि वे इस बात का खयाल रखें कि बीमार कोर्चागिन को कहीं पर कोई गाड़ी से उतार न सके। उसे जब इस बात का पूरा आश्वासन मिल गया तभी वह सोने के लिए गया।

लाइन पर और आगे चल कर एक रेलवे जंकशन पर सुनहले बालों वाले एक अपरिचित नौजवान आदमी का शरीर स्टेशन से गुज़रती हुई एक मुसाफ़िर गाड़ी के डब्बे से उतार कर प्लेटफ़ार्म पर रख दिया गया। वह कौन था और काहे से मरा, यह किसी को मालूम न था। स्टेशन के चेका के लोग खोलियावा के अनुरोध की याद कर भागे हुए डब्बे के पास गये, मगर जब उन्होंने देखा कि वह नौजवान मर चुका है तो उन्होंने कहा कि लाश को मुर्दाघर पहुँचाया जाय और फ़ौरन खोलियावा को बोयार्का टेलीफोन किया कि उसके उस दोस्त की मौत हो गई, जिसकी जान बचाने के लिए वह इतना चिन्तित था।

बोयार्का से कोमसोमोल की सूबा कमिटी के पास एक छोटा-सा तार कोर्चागिन की मौत की खबर देते हुए लिखा गया।

मगर इसी बीच अल्योशा कोखान्स्की ने बीमार कोर्चागिन को उसके घर वालों के हवाले किया और खुद बुखार का शिकार हो गया।

"६ जनवरी

"मेरे दिल में इतना दर्द क्यों होता है? लिखने के लिए बैठने के पहले मैं जार-जार रोई। कौन इस बात का यक़ीन करेगा कि रिता रो भी सकती है और इतनी असह्य व्यथा से? मगर क्या आँसू सदा कमज़ोरी की निशानी होते हैं? आज मेरे आँसू दिल को झुलसा देने वाले दर्द के हैं। आज इस विजय के दिन यह शोक क्यों आया—जब कि जाड़े-पाले की भयानक मुसीबतों पर जीत हासिल कर ली

गई है, जब कि रेलवे स्टेशन उस अनमोल चीज, जलाने की लकड़ी, से अटे हुए हैं, जब कि मैं अभी अभी इस विजय के उत्सव से लौटी हूँ, शहर की सोवियत की बड़ी मीटिंग से जिसमें इस तामीरी काम के वीरों का सम्मान किया गया। यह विजय तो है, मगर इसके लिए दो आदमियों ने अपनी जानें दी हैं—क्लावीचेक और कोर्चागिन ने।

"पावेल की मौत ने मेरी आँखें खोल दी है और मैं इस सचाई को देख रही हूँ कि वह मेरा इतना प्रिय था जितना कि मैंने कभी नहीं सोचा था।

"और अब मैं इस डायरी को बन्द करती हूँ। मुझे शक है कि मैं फिर शायद कभी शुरू न कर सकूँगी। आज मैं खारकोव चिट्ठी भेज रही हूँ, जिसमें मैं उक्रेन के कोमसोमोल की केन्द्रीय कमिटी वाले काम के लिए अपनी स्वीकृति लिख दूँगी।"

बारहवाँ अध्याय

मगर जवानी की जीत हुई। टाइफाइड पावेल का काम तमाम नहीं कर सका। चौथी बार उसने मौत की सरहद पार की और जिन्दगी को लौट आया। मगर अपने बिस्तर से उठने में उसे पूरा एक महीना लग गया। वह बिलकुल पीला और कंकाल की तरह हड्डी-हड्डी हो गया था और काँपती हुई टाँगों से, बेहद कमजोरी से लड़खड़ाता कमरे को पार करता था और सहारे के लिए दीवार पकड़ लेता था। अपनी माँ की मदद से वह खिड़की के पास पहुँचा और बड़ी देर तक वहाँ पर खड़ा-खड़ा सड़क को देखता रहा जहाँ पिघली हुई बर्फ के नाले शुरुआती वसन्त की धूप में चमक रहे थे। बर्फ का पिघलना अभी शुरू हो ही रहा था।

खिड़की के ठीक सामने पूरे पेट की एक गोरैया चेरी के पेड़ की एक शाख पर बैठी हुई अपने पंख फुला रही थी और पावेल को घबराई हुई आँखों से जल्दी-जल्दी और चुपके-चुपके देख लेती थी।

"अच्छा तो तुम और मैं आखिर जाड़े को पार कर ही आये?" पावेल ने कहा और खिड़की के शीशे पर धीरे से उंगली मारी।

उसकी माँ ने चौंक कर निगाह उठाई।

"वहाँ बाहर कौन है जिससे तुम बात कर रहे हो?"

"एक गोरैया''''और लो अब वह उड़ भी गई, शैतान कहीं की।" और थकी सी मुस्कराहट पावेल के चेहरे पर खेल गई।

वसन्त के उभार पर आते-आते पावेल शहर वापिस जाने की सोचने लगा। अब उसमें चलने-फिरने लायक ताक़त आ गई थी, मगर कोई अज्ञात बीमारी उसको घुन की तरह खाये जा रही थी। एक रोज़ जब वह बाग़ीचे में घूम रहा था, तो उसकी रीढ़ की हड्डी में ऐसा भयानक दर्द उठा कि उसके लिए खड़ा रहना मुश्किल हो गया। बड़ी मुश्किल से वह किसी तरह अपने पाँव घसीट कर कमरे में वापिस पहुँचा। दूसरे रोज उसकी पूरी डाक्टरी जाँच हुई। पावेल की पीठ की जाँच करने पर डाक्टर को उसकी रीढ़ मे एक गहरा गड्ढा मिला जिसे देख कर आश्चर्य से उसने कहा :

"यह घाव तुम्हें कहाँ लगा ?"

"रोवनी की लड़ाई में। हमारे पीछे की बड़ी सड़क को एक तीन इंची तोप ने फोड़ कर रख दिया और तभी एक पत्थर आकर मेरी पीठ में लगा।"

"मगर तुम चलते-फिरते कैसे थे ? क्या इससे कभी तुम्हें कोई परेशानी नहीं हुई ?"

"नहीं। चोट लगने के एक-दो घंटे तक तो मैं नहीं उठ सका, मगर फिर सब ठीक हो गया और मैं अपने घोड़े पर सवार हो गया और मजे में मेरा काम चलता रहा। तब से यह पहली मर्तबा मुझे तक़लीफ़ हुई है।"

उस गड्ढे की जाँच करते वक्त डाक्टर का चेहरा बहुत गम्भीर हो गया था।

"न भाई, यह बहुत बुरी चीज है। रीढ़ को इस तरह झकझोरा जाना उसे पसन्द नहीं। अच्छा हो कि यह कोई गड़बड़ी न करे और मामला खैरियत से गुजर जाय।"

डाक्टर ने अपने मरीज को कपड़ा पहनते समय हमदर्दी से और पीड़ा से देखा, पीड़ा जिसे छिपाना उसके बस में न था।

आर्तेम अपनी बीवी के घरवालों के यहाँ रहता था। उसकी बीवी स्त्योशा मामूली रूप-रंग की एक ग़रीब परिवार की किसान औरत थी। एक रोज पावेल अपने भाई से मिलने के लिए गया। एक धूल में लिथड़ा हुआ तिरपट आँख का लड़का उस छोटे से गन्दे हाते में खेल रहा था। उसने पावेल को बड़ी देर तक घूरा और फिर नाक पोंछते हुए जवाब तलब करने के स्वर में बोला :

" क्या चाहिए ? कौन जाने तुम चोर होओ ! फ़ौरन यहां से चलते बनो नहीं तो मां तुम्हारी अच्छी तरह से खबर लेगी ! "

उस गन्दी सी पुरानी झोपड़ी की एक छोटी खिड़की खुली और आर्तेम ने बाहर झाँका।

उसने पुकार कर कहा, " अन्दर चले आओ पावेल ! "

एक बुड्ढी स्त्री जिसका चेहरा बहुत पुराने काग़ज़ की तरह पीला-पीला था, अंगीठी के पास काम कर रही थी। पावेल उसके पास से गुजरा तो उसने पावेल को ऐसी निगाहों से देखा जिसमे दोस्ती नही थी और वह अपने बर्तनों की खटर फटर में फिर लग गई।

दो लड़कियाँ, जिनकी रस्सी-जैसी चोटियाँ थीं, अंगीठी पर चढ़ गईं और वहाँ से हब्शियों की तरह कुतूहल से मुँह फाड़ कर इस आगन्तुक को देखने लगी।

आर्तेम मेज से लगी कुर्सी पर बैठा था और उसके चेहरे से जाहिर था कि उसे कुछ-कुछ परेशानी महसूस हो रही है। उसे यह बात मालूम थी कि न तो उसकी माँ को यह शादी पसन्द थी और न उसके भाई को। उन लोगों की समझ में नहीं आता था कि क्यों आर्तेम, जिसका परिवार कई पीढ़ियों से मजदूरों का परिवार था, राजगीर की उस खूबसूरत लड़की जो दर्ज़ीगीरी करती थी गालिया से सम्बन्ध तोड़ कर, जिससे तीन साल तक उसका इश्क चला था, स्त्योशा जैसी एक कुन्दज़हन, नासमझ औरत के साथ रहने लगा और क्यों उसने पाँच जनों के कुनबे का रोटी कमाने वाला बनना मंजूर किया। अब उसकी हालत यह थी कि दिन भर रेलवे के कारखाने में खटने के बाद उसे उजड़े हुए खेत में फिर से जान डालने के लिए हल लेकर जुतना पड़ता था।

आर्तेम को पता था कि पावेल, इस तरह मज़दूरों की जमात छोड़ कर उसके शब्दों में 'मध्यवर्गी' लोगों के साथ आर्तेम के जा मिलने से असहमत था और इस वक़्त वह ग़ौर से देख रहा था कि कैसे उसका भाई उसके वातावरण और परिवेश का जायज़ा ले रहा है।

कुछ देर तक वे बैठे वैसी ही बेमानी-सी बातें करते रहे, जो अचानक मिल जाने वाले दो लोगों में यों ही हुआ करती हैं। थोड़ी ही देर बाद पावेल जाने के लिए उठा। मगर आर्तेम ने उसे रोक लिया।

" थोड़ी देर रुको, हमारे साथ खाना खाना। स्त्योशा ज़रा देर में दूध लेकर आयेगी। अच्छा तो तुम कल फिर चले जा रहे हो ? अच्छा पावका, यह तो

बताओ, क्या तुम्हें इस बात का पूरा यक़ीन है कि तुम्हारे अन्दर काफ़ी ताक़त आ गई है ?"

सत्योशा अन्दर आई। उसने पावेल का अभिवादन किया और आर्तेम से कहा कि उसके साथ खलिहान तक चले और वहाँ से कोई चीज उठा कर लाने में उसकी मदद करे। अब पावेल उस कमरे में उस चिड़चिड़ी बुढ़िया के साथ अकेला रह गया। खिड़की में से गिर्जाघर की घंटियों की आवाज आ रही थी। बुढ़िया ने अपने हाथ की संडसी रख दी और चिड़चिड़े स्वर में बड़बड़ाने लगी :

"हे भगवान, आग लगे इस घर के खटराग को, भगवान के स्मरण के लिए भी दो क्षण नहीं मिले !" उसने अपना शाल उतार लिया और इस आगन्तुक को उड़ती निगाहों से देखती हुई उस कोने में गई जहाँ देवी-देवताओं के चित्र वग़ैरह टंगे हुए थे, जिन पर वक़्त ने कालिख पोत दी थी और जिन पर एक अजीब मुर्दनी सी छाई हुई थी। अपनी लकड़ी जैसी तीन उंगलियों से उसने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया।

अपने मुर्झाये हुए होठों से बुदबुदा कर कहा, "ऐ हमारे बाप, तू जो आसमान पर है, तेरा नाम पाक माना जाय !"

वह आवारा छोकरा बाहर हाते में एक काले लटके हुए कान वाले सुअर पर सवार उचक रहा था। अपनी छोटी-छोटी नंगी एड़ियाँ उसने चुस्ती से सुअर की बग़ल में गड़ा रखी थीं और उसके खड़े हुए बालों से चिपटा हुआ चीख-चीख कर उस दौड़ते और हाँफते हुए जानवर से कह रहा था : "हाँ पट्ठे, बढ़ा चल, बढ़ा चल !"

वह सुअर पागल की तरह हाते में दौड़ रहा था और जी-तोड़ कोशिश कर रहा था कि किसी तरह उस लड़के को गिरा दे। मगर वह तिरपट छोकरा मज़बूती से उस पर सवार था।

बुढ़िया ने अपनी प्रार्थना बन्द की और खिड़की में से सिर निकाला।

"अरे चांडाल, उतर उस सुअर पर से, नहीं तो मैं मारते-मारते तेरी चमड़ी उधेड़ लूँगी ! तेरी ठटरी बँधे नासपीटे !"

आख़िरकार सुअर को कामयाबी मिली और उसने लड़के को, जिसने उसकी नाक में दम कर दिया था, अपनी पीठ पर से गिरा दिया और तब बुढ़िया सन्तुष्ट होकर अपनी मूर्तियों के पास लौटी और अपने चेहरे पर पवित्र धार्मिक भाव लाते हुए कहने लगी :

"तेरी बादशाहत ज़मीन पर हो....।"

उसी वक़्त लड़का दरवाज़े की देहलीज़ पर दिखाई दिया। आँसुओं से

उसका चेहरा गन्दा हो रहा था। आस्तीन से अपनी बराबर बहती हुई नाक को पोंछते हुए और दर्द के मारे सिसकते हुए उसने रोने के स्वर में कहा :

" नानी, मिठा-आ-आ-ई ! "

बुढ़िया गुस्से से लाल होकर उसकी तरफ़ मुड़ी।

" अरे हरामजादे, तिरछी आँख के भूत, देखता नहीं मैं प्रार्थना कर रही हूँ ? अभी देती हूँ मैं तुझे मिठाई, शैतान की औलाद'''! " कहते हुए उसने बेंच पर से कोड़ा उठाया। मगर देखते-देखते लड़का नौ-दो-ग्यारह हो गया। अँगीठी पर बैठी हुई दोनों नन्हीं-नन्हीं लड़कियाँ गुपचुप हँसीं।

और बुढ़िया ने तीसरी बार प्रार्थना में अपना मन लगाया।

पावेल उठ खड़ा हुआ और बिना अपने भाई का इन्तज़ार किये बाहर निकल गया। बाहर का फाटक बन्द करते हुए उसने देखा कि बुढ़िया मकान की आखिरी खिड़की में से बड़ी शक की निगाहों से उसे देख रही है।

" पता नहीं आर्तेम के सिर पर कौन भूत सवार था जो उसे यहाँ घसीट लाया ? अब जिन्दगी भर के लिए वह यहीं बँध गया। स्त्योशा के हर साल एक बच्चा होगा और आर्तेम यहाँ पर वैसे ही चिपका रहेगा जैसे घूर पर गोबरैला चिपका रहता है। यह भी मुमकिन है कि वह रेल के कारखाने का काम छोड़ दे। " उस छोटे से कस्बे की उजड़ी हुई सड़कों पर चलते हुए पावेल के मन में यही उदास विचार आ रहे थे। " और मुझे देखो कि मैं अपनी जगह पर यह उम्मीद लिये बैठा था कि सियासी काम में उसकी दिलचस्पी पैदा करूँगा। "

पावेल को इस खयाल से बड़ी खुशी हो रही थी कि कल वह यह जगह छोड़ कर बड़े शहर में चला जायगा जहाँ उसके तमाम वे दोस्त और साथी मिलेंगे जिन्हें वह इतना प्यार करता है। बड़े शहर की जिन्दगी की हलचल, आदमियों का अन्तहीन तांता, उसकी ट्रामों और मोटर गाड़ियों की आवाज़ें, अपनी इन सब चीजों समेत शहर उसे चुम्बक की तरह अपनी तरफ़ खींचता था। मगर सबसे ज़्यादा चाह उसके दिल में कारखाने की उन बड़ी-बड़ी ईंट की इमारतों की थी— कालिख से भरी हुई वर्कशाप, मशीनें, ट्रांसमिशन बेल्टों की धीमी गूँज। उसके मन में दैत्याकार फ्लाई ह्वीलों को बेतहाशा घूमते देखने की, मशीन के तेल की गन्ध सूँघने की तीव्र लालसा थी। ये सारी चीजें उसके व्यक्तित्व का अंश बन चुकी थीं। इसलिए स्वभावतः उसे उन चीजों की तलाश होती थी। यह छोटा सा, खामोश सा कस्बा, जिसकी सड़कों पर वह इस वक़्त घूम रहा था, उसके मन को एक अजीब तरीके से उदास कर देता था। उसे इस बात पर अब हैरत नहीं होती थी कि अब वह इस जगह पर अजनबी सा महसूस करता है। यहाँ तक कि दिन के

वक़्त भी शहर में घूमना उसे एक मुसीबत सी मालूम होती थी। अपने मकान के सामने के चबूतरों पर बैठ कर गपशप करती हुई गृहिणियों के पास से गुजरने पर यह मुमकिन नहीं था कि उनकी बेमतलब बातचीत के कुछ टुकड़े उसके कान में भी न पड़ते :

" यह कौन है, टटरी-टटरी निकल आई है ? "

" लगता है कि इसे तपेदिक हो गई थी। तपेदिक समझती हो, फेफड़े की बीमारी होती है। "

" जाकट इसने बड़ी बाँकी पहन रखी है। कहीं से चुरा कर लाया है, चाहे शर्त बद लो। "

इसी तरह की और भी बहुत सी बातें वह सुनता। इन तमाम चीजों से पावेल का मन बुरी तरह घबरा गया था। ऐसी बातों को सुन कर उसे बड़ी नफ़रत मालूम होती थी।

बहुत जमाना हुआ जब से उसने इन चीजों से अपना सम्बन्ध एकदम जड़ से तोड़ लिया था। अब उसे क़स्बे के मुक़ाबले में बड़े शहर से कहीं ज़्यादा अपनापन महसूस होता था क्योंकि कुछ बड़े मजबूत और एक-दूसरे को ताक़त देने वाले सम्बन्ध उसे बड़े शहर से जोड़े हुए थे—ये सम्बन्ध मेहनत और साथियों की दोस्ती और मिल कर लड़ने-मरने के थे।

अपने विचारों में डूबा-डूबा बेखबर-सा वह चीड़ के जंगलों में पहुँच गया और दुराहे पर थोड़ी देर के लिए खड़ा हो गया। उसके दाहिने हाथ पर वह पुराना जेलखाना था जिसे एक ऊँची सी, लोहे के नुकीले डण्डे निकली हुई चहारदीवारी जंगल से अलग करती थी। जेलखाने के और आगे अस्पताल की सफ़ेद इमारतें थीं।

यही वह जगह थी जहाँ जल्लाद के फन्दे ने वालिया और उसके साथियों की जिन्दगी का गला घोंट दिया था। पावेल उस जगह पर खामोश खड़ा रहा, जहाँ पर फाँसी की टिकटी रह चुकी थी, फिर धीरे-धीरे चढ़ाई तक गया और चढ़ाई पार कर नीचे उतर कर उस छोटे-से कब्रिस्तान पर पहुँच गया जहाँ क्रान्ति के दुश्मनों के आतंक राज के शिकार अपनी सामूहिक समाधियों में पड़े हुए थे।

प्यार भरे हाथों ने कब्रों पर सनोबर की शाखें बिछा रखी थीं और कब्रिस्तान के चारों तरफ़ एक साफ़ सुथरी हरी सी बाड़ी बना दी थी। चढ़ाई की चोटी पर खड़े हुए चीड़ के दरख्त सीधे और छरहरे थे और नये-नये घास ने ढलवान पर एक हरी सी रेशमी कालीन बिछा रखी थी।

शहर के सिरे पर की बस्तियों में जैसे एक उदास और डरी हुई सी शान्ति

थी। पेड़ एक-दूसरे से मानो कानाफूसियों में बात करते थे और नई जिन्दगी पाई हुई धरती में से वसन्त की ताजी महंक उठ रही थी····। इसी जगह पर पावेल के साथियों ने बहादुरी के साथ मौत का सामना किया था ताकि ग़रीबी में पैदा हुए लोगों की जिन्दगी खूबसूरत हो सके, उन लोगों की जिन्दगी जिनकी गुलामी पैदाइश के रोज से ही शुरू होती थी।

पावेल ने धीरे-धीरे अपना हाथ उठाया और टोपी उतार ली और एक गहरी उदासी उसके भीतर-बाहर व्याप गई।

आदमी की सबसे बड़ी दौलत उसकी जिन्दगी होती है, और जीने के लिए आदमी को बस एक ही जिन्दगी मिलती है। उसे इस तरह अपनी जिन्दगी जीनी चाहिए ताकि उसे मन-ही-मन इस दुख की यन्त्रणा को न सहना पड़े कि उसने अपनी जिन्दगी के साल यों ही गुजार दिये हैं, ताकि उसे इस जिल्लत की आग में न जलना पड़े कि उसका बीता हुआ जमाना नीचे गिरा और ओछा था। उसे इस तरह जीना चाहिए ताकि मरते वक्त वह कह सके कि मैंने अपनी सारी जिन्दगी, अपनी सारी शक्ति संसार के पवित्रतम कार्य में लगाई है—मानव जाति की आजादी की लड़ाई में लगाई है। और आदमी को अपनी जिन्दगी के एक-एक क्षण का इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि कौन जाने कब कोई अचानक बीमारी या करुण दुर्घटना बीच ही में जिन्दगी के सूत को काट दे।

यही बातें सोचता-सोचता कोर्चागिन मुड़ कर कब्रिस्तान से चल दिया।

घर पर उसकी मां दुखी मन से अपने बेटे के जाने की तैयारी कर रही थी। पावेल ने देखा कि वह उससे अपने आँसू छिपाने की कोशिश कर रही है।

आखिरकार उसने बड़ी हिम्मत करके कहा, "पावलुशा, फिर सोच देखो, शायद तुम यहाँ रुक सको? मैं बुड्ढी हुई, इस तरह से अकेले रहना मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। देखो न, चाहे कितने बच्चे किसी के हों, वे सब बड़े होकर छोड़ कर चले जाते हैं। भला बताओ तुम्हें शहर भागने की क्या जरूरत है? यहाँ पर भी तो तुम रह सकते हो या कहीं ऐसा तो नहीं है कि शहर की किसी छोकरी से तुम्हारा मन लग गया हो? तुम सब कभी अपनी बुड्ढी मां को कुछ नहीं बताते। तमाम लड़कों का यही हाल होता है। आर्तेम ने कभी मुझ से एक शब्द नहीं कहा और जाकर शादी करके बैठ रहा। तुम तो उससे भी गये गुजरे हो। मैं तो तुम्हें तभी देखती हूँ जब तुम बीमार या घायल होते हो," उसकी

माँ ने एक साफ़-सुथरे झोले में उसका थोड़ा-सा सामान रखते हुए धीमे से शिकायत के लहजे में कहा।

पावेल ने मां के कन्धे पकड़ कर उसे अपनी तरफ़ खींचा और कहा :

" माँ, मेरे लिए किसी छोकरी से मन लगाने का सवाल नहीं पैदा होता! क्या तुम नहीं जानती कि चिड़िया अपनी जाति का ही साथी ढूँढ़ती है? और क्या तुम कहोगी कि मैं उस तरह का लड़का रहा हूँ जो तितलियों के पीछे भागता है? "

उसकी माँ बरबस मुस्करा पड़ी।

" नहीं माँ, मैंने वचन दिया है कि जब तक दुनिया के तमाम थैलीशाहों का नाश नहीं हो जाता, मैं लड़कियों से दूर ही रहूँगा। शायद तुम कहोगी कि यह तो ज़रा लम्बी प्रतीक्षा है। मगर नहीं माँ, अब इन थैलीशाहों के दिन गिने हुए हैं। जल्दी ही जनता का राज क़ायम हो जायगा और तब तुम्हारे जैसे बुड्ढे लोग, जिन्होंने जिन्दगी भर मेहनत-मज़दूरी की है, इटली जा सकेंगे। तुम जानती हो इटली कहाँ है? इटली समुद्र किनारे एक खूबसूरत गरम देश है। वहाँ पर जाड़ा नहीं पड़ता, माँ। हम तुम को अमीरों के महलों में रखेंगे और तुम लोग आराम से धूप खाना और अपनी बूढ़ी हड्डियों को विश्राम देना और हम लोग इस बीच जाकर अमरीका के थैलीशाहों का सफ़ाया करेंगे। "

" बेटा, यह एक अच्छी परियों की कहानी है, मगर मैं शायद वह दिन देखने के लिए ज़िन्दा नहीं रहूँगी....। तुम बिलकुल अपने दादा की तरह हो। वह जहाज़ पर काम करते थे और उनके भी दिमाग़ में हमेशा तरह-तरह के ख़यालात भरे रहते थे। बिलकुल आवारा आदमी थे वह, खुदा उनकी रूह को सलामत रखे! उनकी कहानी सेबास्तोपोल की लड़ाई से ख़तम हुई और वह एक हाथ और एक टांग गंवा कर घर लौटे। उन्होंने उनके सीने पर दो क्रॉस लटका दिये, और दो चाँदी के तमग़े। उन्होंने बहुत अच्छी उम्र पाई और खूब बूढ़े होकर मरे, मगर मरे भयानक ग़रीबी में। मिज़ाज के भी वह बहुत तेज़ थे, अपनी बैसाखी से उन्होंने किसी अफ़सर के सिर पर वार कर दिया और फिर इस जुर्म में एक साल तक जेल की हवा खाई। तब उनके फ़ौजी क्रॉस भी किसी काम न आये। सच कहती हूँ कि तू बिलकुल अपने दादा पर पड़ा है, हू-बहू। "

" वह सब तो ठीक है माँ, मगर क्या हम लोग ऐसे उदास ढंग से विदा होंगे एक-दूसरे से? मुझे मेरा अकार्डियन तो दे। मैंने बहुत दिनों से उसे नहीं छुआ। "

पावेल ने बाजे के सीप के बने पर्दे पर सिर झुका लिया और बजाने

लगा। उसकी माँ सुनती रही और हैरान होकर उसके संगीत के अन्दर पैदा होने वाले उस नये गुण के बारे में सोचती रही, वह गुण जो पहले नहीं था और अब पता नहीं उसमें कहाँ से आ गया था। पहले वह इस तरह कभी नहीं बजाता था। पहले उसकी धुनों में बेहद मस्ती रहती थी, एक तरह का मतवालापन, एक नशा सा जिसके लिए पावेल कस्बे भर में मशहूर था। वह चीज़ अब चली गई थी। उसकी उंगलियों में अब भी वही ताक़त और वही सफ़ाई थी, मगर वह जो संगीत निकालती थी वह कहीं ज़्यादा गहरा और भावों के ऐश्वर्य से भरपूर होता था।

पावेल अकेला ही स्टेशन गया।

उसने घर पर ही रुकने के लिए अपनी माँ को राजी कर लिया क्योंकि वह जानता था कि स्टेशन पर की विदाई उसके लिए असह्य हो जायगी।

गाड़ी का इन्तज़ार करती हुई भीड़ बेतहाशा गाड़ी के अन्दर घुसी और एक रेलपेल सी मच गई। पावेल चढ़ कर एक सबसे ऊँची बर्थ पर बैठ गया और वहाँ से नीचे के मुसाफ़िरों का चीखना-चिल्लाना और बेहद आवेश में बहस-मुबाहसा करना और हाथों से इशारा करना देखता रहा।

हस्बेमामूल आज भी गठरी-मोटरी के अम्बार लगे हुए थे, मगर जल्दी-जल्दी उन्हें सीटों के नीचे सरका कर नजर की ओट कर दिया गया।

रेलगाड़ी ने जब कुछ रफ़्तार पकड़ी तो शोर-गुल थोड़ा थमा और मुसाफ़िरों ने दत्तचित होकर पेट-पूजा शुरू की।

पावेल थोड़ी देर में सो गया।

कीव पहुँच कर पावेल फ़ौरन शहर के बीचोबीच के श्चातिक स्ट्रीट की तरफ़ चल दिया। धीरे-धीरे उसने पुल को पार किया। सब कुछ पहले ही जैसा था, कुछ भी नहीं बदला था। चिकनी-चिकनी रेलिंगों को हाथ लगाते हुए उसने पुल को पार किया। पुल से नीचे उतरने के पहले वह ज़रा देर तक थमा। पुल पर चिड़िया का पूत भी नहीं था। रात का असीम विस्तार उसकी मुग्ध आँखों के सामने बड़ा शानदार दृश्य उपस्थित कर रहा था। क्षितिज अंधेरे के मखमली पर्दों में लिपटा हुआ था और तारे जलते-बुझते जलते-बुझते चमक रहे थे। और नीचे, जहाँ धरती किसी अदृश्य बिन्दु पर आकाश से मिलती थी, शहर की लाखों रोशनियाँ अंधेरे में चमक रही थीं···।

बहस के दौरान में लोगों की आवाजें चढ़ जाती थीं जिससे रात की निस्तब्धता भंग होती थी और पावेल का ध्यान टूट जाता था। कोई इधर आ रहा था। पावेल ने बलात अपनी आँखें शहर की रोशनियों से हटाईं और सीढ़ियाँ उतरने लगा।

एरिया स्पेशल डिपार्टमेंट में ड्यूटी पर तैनात आदमी ने पावेल को बताया कि जुखराई को शहर छोड़े बहुत दिन हो गये।

उस आदमी ने इस बात का निश्चय करने के लिए कि यह नौजवान वाक़ई जुखराई का दोस्त है, पावेल से बहुत-खोद खोद कर सवाल किये और अन्त में उसे बतलाया कि फ़ियोदोर को तुर्किस्तान के मोर्चे पर काम करने के लिए ताशकन्द भेजा गया है। इस खबर से पावेल को इतनी उलझन हुई कि वह और भी तफ़सील की बातें पूछे बग़ैर फौरन मुड़ा और चल दिया। उसके ऊपर थकान का एक दौरा सा पड़ा जिसने उसे ड्योढ़ी पर बैठ कर सुस्ताने के लिए मजबूर कर दिया।

एक ट्राम घड़घड़ाती हुई गुजर गई और सड़क उसकी आवाज से गूँज उठी। न जाने कितने लोग उसके पास से गुजरे। पावेल ने औरतों की मस्त हँसी के कहकहे सुने, तरह-तरह की आवाजें सुनीं—गूंजती हुई भारी आवाज, किसी नौजवान की तेज पतली आवाज और किसी बुड्ढे की घरघराती हुई आवाज। तेजी से भागती हुई भीड़ का यह ज्वार थमने में ही नहीं आता था। तेज रोशनी से चमकती हुई ट्रामें, मोटरों की आँख को चौंधिया देने वाली हेडलाइट की तेज रोशनियाँ, पास के किसी सिनेमा के फाटक पर तेजी से चमकती हुई बिजली की रोशनियाँ···और सब जगह लोग ही लोग जिनकी बातचीत की अनवरत गूंज से सड़क भरी हुई थी। यह था एक बड़ा शहर, रात के वक़्त!

फ़ियोदोर के चले जाने की खबर से उसने अपने दिल में जो दर्द महसूस किया था, वह सड़क के इस शोर-शराबे में हलका पड़ गया। अब वह कहाँ जाय? सोलोमैंका में उसके दोस्त रहते थे, मगर सोलोमैंका बहुत दूर था। यहाँ से पास ही यूनिवर्सिटी स्ट्रीट पर के उस मकान की एक झलक उसे मिली थी। वह क्यों न वहीं चला जाय? जरूर, यही ठीक होगा। आखिरकार फ़ियोदोर के बाद जिस कामरेड को देखने की उसके दिल में सबसे ज़्यादा चाह थी, वह रिता थी। और शायद अकिम के यहाँ रात गुजारने का भी कोई बन्दोबस्त हो जाय।

उसने दूर से ही मकान के सिरे वाली खिड़की में रोशनी देखी। अपने आवेग को दबाते हुए उसने मकान का भारी ओक की लकड़ी का बना दरवाजा खोला। कुछ पल वह वहीं ड्योढ़ी पर खड़ा रहा। रिता के कमरे से आवाजें आ रहीं थीं और कोई गिटार बाजा बजा रहा था।

" ओ हो, तो अब वह गिटार को इजाजत देती है, इसका मतलब है कि अब उतनी सख्ती नहीं है," उसने अपने मन में कहा। फिर धीमे से दरवाजे पर दस्तक दी और अपने मन के आवेग को दबाने के लिए होंठ काटने लगा।

घुंघराली लटों वाली एक नौजवान औरत ने दरवाजा खोला। उसने सवाल करती हुई आँखों से कोर्चागिन को देखा।

" आप किसको चाहते हैं ? "

वह दरवाजा खोले खड़ी रही और कमरे के अन्दर की एक झलक पावेल को मिली जिससे उसको लगा कि आना बेकार हुआ।

" मैं उस्तिनोविच से मिल सकता हूँ ? "

" वह यहाँ नहीं हैं। पिछली जनवरी में वह खारकोव चली गईं और सुनती हूँ कि अब वह मास्को में हैं। "

" कामरेड अकिम यहाँ रहते हैं या वह भी चले गये ? "

" कामरेड अकिम भी अब यहाँ नहीं हैं। अब वह ओडेसा के कोमसोमोल के मन्त्री हैं। "

अब पावेल के पास इसके सिवा कोई चारा न था कि लौट पड़े। शहर लौटने का उसका सारा उत्साह और खुशी अब ठण्डी पड़ गई थी।

अब फ़ौरी सवाल यह था कि रात कहाँ गुजारी जाय।

" चाहो तो ऐसे दोस्तों की तलाश में, जो अब यहाँ नहीं हैं, तुम अपनी टाँगों को थका-थका कर चूर कर डालो," उसने अपनी निराशा की घूँट पीते हुए बड़बड़ा कर अपने मन में कहा। फिर भी उसने एक बार और अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया। देखूँ, पांक्रातोव अब यहाँ रहता है या नहीं! वह जहाजी मजदूर घाट के पास रहता था जो कम से कम सोलोमेंका से तो ज़्यादा पास पड़ता था।

पांक्रातोव के घर पहुँचते-पहुँते वह थक कर चूर हो गया था। पावेल ने उस दरवाजे पर, जिस पर कभी पीला रोग़न पोता गया था, दस्तक देते हुए अपने मन में इस बात का पक्का निश्चय किया, " अगर वह भी यहाँ नहीं हो, तो फिर मैं और किसी की तलाश नहीं करूँगा। मैं किसी किश्ती के नीचे घुस कर वहीं रात गुजार दूँगा। "

दरवाजा एक बूढ़ी औरत ने खोला जिसने टुड्डी के नीचे अपने सिर की रूमाल की गाँठ लगा रखी थी। यह पांक्रातोव की माँ थी।

" इग्नात घर पर है माँ ? "

" अभी-अभी आया है। "

उसने पावेल को नहीं पहचाना और पीछे मुड़ कर आवाज दी, "इग्नात, तुमसे मिलने कोई आया है।"

पावेल उसके पीछे-पीछे कमरे में गया और अपने सामान का थैला फ़र्श पर रख दिया। पांक्रातोव ने, जो मेज पर बैठा खाना खा रहा था, जल्दी से गर्दन मोड़ कर आने वाले को देखा।

उसने कहा, "अगर तुम्हें मुझसे काम है, तो कुछ देर बैठो। तब तक मैं कुछ पेट-पूजा कर लूँ। सवेरे से मैंने कुछ नहीं खाया है," कहते हुए उसने लकड़ी का एक बड़ा चमचा उठाया।

पावेल एक तरफ़ एक टूटी कुर्सी पर बैठ गया। उसने अपनी टोपी उतार ली और अपनी पुरानी आदत के अनुसार उसी टोपी से अपना माथा पोंछा।

"क्या मैं सचमुच इतना बदल गया हूँ कि इग्नात भी मुझे नहीं पहचान पाता?" उसने अपने आप से सवाल किया।

पांक्रातोव ने एक-दो चमचा खाना मुँह में डाला मगर चूँकि आगन्तुक कुछ बोला नहीं, उसने गर्दन मोड़ कर उसको देखा।

"कहो-कहो, किस परेशानी में हो?"

उसके हाथ में रोटी का टुकड़ा था और उसको पकड़े-पकड़े उसका हाथ हवा में टँगा रह गया। उसने अपने मिलने वाले को अचरज से आँखें मुलमुलाते हुए घूरा।

"अरे ··· यह क्या? ···· ज़रा सोचो तो आज यह कौन ···· !"

पांक्रातोव के सुर्ख चेहरे पर उस घबराहट और हैरत को देख कर पावेल से न रहा गया और वह ज़ोर से हँस पड़ा।

पांक्रातोव ज़ोर से चीखा, "पावका! मगर हम तो सोचते थे कि तुम्हारा टिकट कट गया! एक मिनट रुको तो, ज़रा फिर से अपना नाम बतलाना?"

पांक्रातोव की चीखों को सुन कर उसकी बड़ी बहन और माँ बग़ल के कमरे से दौड़ी हुई आईं। उन तीनों ने पावेल के ऊपर सवालों की तब तक झड़ी लगा दी, जब तक कि उन्हें पूरी तरह इस बात का सन्तोष नहीं हो गया कि यह और कोई नहीं, पावेल कोर्चागिन ही है।

घर के सब लोगों के सो जाने के बहुत बाद तक पांक्रातोव पिछले चार महीने की घटनाओं का खुलासा पावेल को देता रहा।

"जार्की और मितियाई पिछले जाड़े में खारकोव चले गये। और जानते हो कहाँ गये दोनों? कम्युनिस्ट यूनिवर्सिटी में। हाँ-हाँ कम्युनिस्ट यूनिवर्सिटी में! उसके तैयारी कोर्स में उनको जगह मिली। पहले हम लोग पन्द्रह जन थे। तुम्हारे

इस ख़ादिम ने भी दाख़िले के लिए एक अर्ज़ी दे दी थी। मैंने सोचा कि अच्छा रहेगा, दिमाग़ में पड़ा हुआ कुछ भूसा ख़ारिज होगा। और क्या तुम इस बात का यक़ीन करोगे कि परीक्षा बोर्ड ने लेकर मुझे फेल कर दिया!"

इस चीज़ की याद करके पांकातोव ने ग़ुस्से से उँह किया और अपनी बात जारी रखी :

"पहले तो सब कुछ बड़े मज़े में चलता रहा। मेरी सभी बातें ठीक थीं : मेरे पास पार्टी कार्ड था, काफ़ी दिन मैं कोमसोमोल में रह चुका था, मेरे पिछले ज़माने के रेकार्ड में कोई बुरी बात न थी। मगर जब सियासी जानकारी की बात आई तो मैं मुसीबत में पड़ गया।

"मेरे और परीक्षा बोर्ड के एक दूसरे कामरेड के बीच बहस छिड़ गई। ज़रा सोचो तो उसने यह कैसा छोटा-सा बेहूदा सवाल मुझ से कर दिया : 'बतलाओ कामरेड पांकातोव, दर्शन-शास्त्र के बारे में तुम क्या जानते हो?' भाई सच बात तो यह थी कि मुझे दर्शन के बारे में ख़ाक-बला कुछ भी नहीं मालूम था। लेकिन हमारे साथ घाट पर एक लड़का काम किया करता था। वह व्याकरण के स्कूल का विद्यार्थी था और आगे चल कर आवारा हो गया था और यों ही मज़े के लिए उसने घाट पर मज़दूरी करनी शुरू कर दी थी। हाँ, तो उसने मुझे ग्रीस के कुछ अक़्लमन्द लोगों की जो बात बतलाई थी मुझे याद थी। उसने मुझे बतलाया था कि वे लोग हर चीज़ का जवाब जानते थे और उन्हें दार्शनिक कहा जाता था। कोई एक आदमी था जिसका नाम ठीक से याद नहीं, डियोजिनीज़ या ऐसा ही कुछ नाम था, सारी ज़िन्दगी वह एक पीपे में रहता आया···उनमें सबसे तेज़ आदमी था वह जो चालीस बार बात को साबित कर सकता था कि काला सफ़ेद होता है और सफ़ेद काला। ज़माने के ठग थे सब, घाघ, समझे न? हाँ तो मुझे उस विद्यार्थी की बात याद थी और मैंने अपने मन में कहा : 'अच्छा तो यह मुझे लंगी लगाने की कोशिश कर रहा है।' मैंने परीक्षक को चमकती हुई आँखों से अपनी तरफ़ देखता पाया और मैंने उसको अच्छी डाँट पिलाई। मैंने कहा, 'दर्शनशास्त्र बिलकुल धोखाधड़ी है और मैं उसके साथ बिलकुल समझौता करने के लिए तैयार नहीं हूँ। हाँ पार्टी का इतिहास हो तो उसकी बात और है उसमें ज़रूर मुझे बहुत दिलचस्पी होगी।' मेरा कहना था कि उन्होंने मुझको वो-वो लगाई कि मैं क्या बताऊँ। उन्होंने मुझसे पूछा कि दर्शनशास्त्र के बारे में सब बेसिरपैर की बातें किसने मेरे दिमाग़ में घुसेड़ दी। तब मैंने उनको उस विद्यार्थी की बात बतलाई और कुछ बातें जो उसने मुझसे कही थी, मैंने उगल दी। फिर तो भाई कमीशन के सारे लोगों के पेट में हँसते हँसते बल पड़ गये। वे लोग मुझ पर ही तो हँस

रहे थे। लिहाज़ा मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ। मैंने कहा, 'तुम मुझे बेवकूफ़ समझते हो क्या?' और कमरे के बाहर निकल गया।

"बाद में उस परीक्षक ने सूबा कमिटी में जाकर मुझे पकड़ा और पूरे तीन घंटे तक मुझे लेक्चर पिलाया। ग़रज़ मालूम यह हुआ कि उस विद्यार्थी के दिमाग़ में तमाम बातें उल्टी-पुल्टी भरी थीं। अब मुझे ऐसा लगता है कि दर्शन-शास्त्र बिलकुल ठीक चीज़ है और बहुत ज़रूरी चीज़ है।

"दुबावा और जार्की इम्तहान में पास हो गये। मितियाई पढ़ाई में हमेशा बहुत अच्छा था मगर जार्की मुझसे कुछ ज़्यादा अच्छा नहीं है। ज़रूर उसके वीरता के पदक ने उसका बेड़ा पार कर दिया होगा। बहरहाल मैं तो यहीं का यहीं रह गया। उन लोगों के चले जाने के बाद मुझे यहीं घाट पर प्रबन्ध का काम दे दिया गया—मुझे माल के घाटों का सहायक प्रधान बना दिया गया। मैं हमेशा मज़दूर जवानों की तरफ़ से मैनेजरों से झगड़ा किया करता था और अब मैं खुद मैनेजर हूँ।

"अब अगर मुझे कोई आलसी या सनकी आदमी मिलता है, तो मैं मैनेजर और कोमसोमोल के मन्त्री दोनों की हैसियत से उसकी मुसीबत कर देता हूँ। मेरी आँख में वह धूल नहीं झोंक सकता। अच्छा अपने बारे में तो अब मैं बस करता हूँ। तुम्हें बतलाने को और रहा ही क्या? अकिम के बारे में तुम्हें मालूम ही है, पुराने लोगों में अब सिर्फ़ तुफ़ता ही सूबा कमिटी में बाक़ी बचा है। अब भी वह अपना वही पुराना काम कर रहा है। तोकारेव सोलोमेका की पार्टी की ज़िला कमिटी का मन्त्री है। तुम्हारा कम्यून का साथी ओकुनेव कोमसोमोल की ज़िला कमिटी में है। तालिया राजनीतिक शिक्षा विभाग में काम करती है। स्वेतायेव कारख़ाने में तुम्हारा वाला काम करता है। मैं उसे बहुत अच्छी तरह नहीं जानता। बस सूबा कमिटी में जब-तब हमारी मुलाक़ात हो जाती है, वह काफ़ी दिमाग़वाला आदमी मालूम होता है। मगर सबसे ज़रा अलग-थलग रहता है। आना बोहार्ट की याद तुम्हें है? वह भी सोलोमेंका में है। वह पार्टी की ज़िला कमिटी की महिला-विभाग की प्रधान है। बाक़ी लोगों के बारे में मैंने तुम्हें बतला ही दिया है। हाँ पावलुशा, पार्टी ने बहुत से लोगों को पढ़ने के लिए भेजा है। सारे पुराने काम करने वाले सूबे के सोवियत और पार्टी स्कूल में पढ़ने जाते हैं। मुझको उन्होंने अगले साल भेजने का वादा किया है।"

आधी रात कब की बीत चुकी थी जब वे सोने गये। दूसरे रोज़ पावेल के उठने के पहले पांकातोव घाट पर चला गया था। उसकी बहन दुसिया ने, जो बड़ी खूबसूरत लड़की थी और अपने भाई से बहुत मिलती-जुलती थी, पावेल को

चाय दी और उसका जी बहलाने के लिए पूरे वक़्त बात करती रही। पांक्रातोव का बाप, जो कि जहाज़ का इंजीनियर था, घर पर नहीं था।

पावेल ने बाहर निकलने का इरादा किया तो दुसिया ने उसे याद दिलाया : "भूलना मत, रात के खाने पर हम लोग तुम्हारा इन्तज़ार करेंगे।"

पार्टी की सूबा कमिटी में हमेशा की तरह खूब हलचल थी। सामने का दरवाज़ा पूरे वक़्त खुलता और बन्द होता रहता। गलियारों और दफ़्तरों में भीड़ लगी हुई थी और प्रबन्ध विभाग के दरवाज़े के भीतर से टाइपराइटरों के खटखटाने की मद्धिम आवाज़ आ रही थी।

पावेल किसी पहचानी हुई शक्ल की तलाश में गलियारे में कुछ देर यों ही घूमता रहा। मगर जब उसे कोई भी अपना परिचित न मिला तो वह सीधे मन्त्री से मिलने के लिए चला गया। मन्त्री नीली सी रूसी कमीज़ पहने एक बड़ी सी मेज़ के पीछे बैठा हुआ था। पावेल के अन्दर दाख़िल होने पर उसने एक बार नज़र उठा कर देखा और फिर से लिखने लगा।

पावेल उसके सामने एक कुर्सी पर बैठ गया और अकिम के उत्तराधिकारी की रूप-रेखा को परखने लगा।

"मुझसे क्या काम है?" मन्त्री ने, जो ऊँचे गले की कमीज़ पहने हुए था, अपना लिखना ख़तम करके उससे पूछा।

पावेल ने उसको अपनी कहानी सुनाई।

"कामरेड, करना अब यह है कि सदस्यता की सूची में मुझे एक बार फिर से ज़िन्दा करना है। और फिर मुझे रेलवे के कारख़ाने में भेज दिया जाय," उसने अपनी बात ख़तम करते हुए कहा, "उचित आदेश आप दे दीजिए।"

मन्त्री अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुका।

उसने कुछ हिचकिचाते हुए जवाब दिया, "हम तुमको सदस्यों की सूची में फिर से रख तो लेंगे, इसमें तो कोई कहने की बात ही नहीं। मगर तुम्हें कारख़ाने में भेजने में ज़रा दिक़्क़त होगी। वहाँ पर स्वेतायेव है। वह सूबा कमिटी का मेम्बर है। तुम्हारे लिए हमको कुछ और काम ढूँढ़ना होगा।"

कोर्चागिन ने अपनी आँखें छोटी करते हुए कहा :

"मैं स्वेतायेव के काम में कोई दख़लन्दाज़ी नहीं करना चाहता। मैं अपने पेशे का काम करना चाहता हूँ, कोई पार्टी मन्त्री का काम तो चाहता नहीं।

और चूँकि मेरी सेहत अब भी जरा ख़राब है, इसलिए मैं आप से दरख़ास्त करूँगा कि मुझे और कोई काम न दें।"

मन्त्री ने उसकी बात मान ली। काग़ज के एक टुकड़े पर उसने कुछ शब्द घसीट कर लिखे।

"इसे कामरेड तुफ़्ता को दे देना, वह सारा बन्दोबस्त कर देंगे।"

कार्यकर्ता-विभाग में पावेल ने तुफ़्ता को अपने सहायक को डाँटते पाया। पावेल एक-दो मिनट तक खड़ा उन दोनों की गरमा-गरम बातचीत सुनता रहा। मगर जब उसने देखा कि उसके जल्दी ख़त्म होने के कोई आसार नहीं हैं, तो उसने बीच ही में उसकी वक्तृता को काट दिया।

"अपनी बहस फिर ख़तम कर लेना तुफ़्ता। मेरे काग़जात ठीक करने के लिए यह देखो तुम्हारे लिए एक पत्र है।"

तुफ़्ता बात को न समझते हुए कभी उस काग़ज को देखता था और कभी कोर्चागिन को। आखिरकार बात उसकी समझ में आई।

"ओह जरा रुकना तो! तो तुम मरे नहीं? वाह रे, मगर बताओ किया क्या जाय? सदस्यों की सूची में से तुम्हारा नाम काट दिया गया। मैंने खुद तुम्हारा कार्ड केन्द्रीय कमिटी को लौटा दिया। इतना ही नहीं, पार्टी की मर्दुमशुमारी में से भी तुम बाहर रहे हो और कोमसोमोल की केन्द्रीय कमिटी के सरकुलर के अनुसार वे लोग जो मर्दुमशुमारी में नहीं आये, उन्हें कोमसोमोल के बाहर समझ लिया गया। इसलिए अब अकेली सूरत यह है कि तुम फिर नये सिरे से बाक़ायदा सदस्यता के लिए अर्जी दो।" तुफ़्ता ने ऐसे लहजे में बात कही जैसे वह किसी की बात सुनने के लिए तैयार न हो।

पावेल की त्योरी चढ़ गई।

"अब भी तुम्हारे वही पुराने ढंग हैं? तुम हो तो नौजवान आदमी मगर बूढ़े से बूढ़े, खूसट से खूसट क़ानूनी चूहे से भी तुम गये-गुजरे हो। बोलोदका, कब तुम्हें समझ आयेगी।"

तुफ़्ता ऐसे उछल पड़ा जैसे किसी पिस्सू ने उसे काट लिया हो।

"बराय मेहरबानी मुझे लेक्चर न दीजिए। यहाँ का चार्ज मेरे जिम्मे है। सरकुलर में जो आदेश दिये जाते हैं, वह उनका पालन करने के लिए, उल्लंघन करने के लिए नहीं। और तुम चूहा कह कर मेरा जो अपमान कर रहे हो, इसका मजा मैं तुम्हें चखाऊँगा।"

तुफ़्ता ने बहुत धमकी के लहजे में अपनी बात कही थी, जैसे वह अभी कुछ कर गुजरेगा। अपनी बात कह कर उसने ऐसा इशारा किया कि जैसे मुलाक़ात

अब खतम हो गई और फिर सामने की बन्द डाक के ढेर को अपनी तरफ़ खींचा।

पावेल धीरे-धीरे दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा, मगर फिर कुछ याद करके वापिस लौटा और तुफ़्ता के सामने पड़े हुए मन्त्री के पत्र को उठा लिया। तुफ़्ता ने उसे ग़ौर से देखा। कार्यकर्ता-विभाग के इस क्लर्क में अजीब कोई बात थी जो उतनी ही नाखुशगवार थी जितनी कि बेवकूफी से भरी हुई। वह बूढ़े आदमी की तरह बदमिज़ाज और छोटी-छोटी बातों को लेकर अड़ने वाला था। उसके बड़े-बड़े कान जैसे हरदम खड़े रहते थे कि कब कोई बात हो और वह उलझ पड़े।

पावेल ने शान्त मगर मज़ाक उड़ाती हुई आवाज़ में कहा, "अच्छा तुम मुझको इसके लिए दोष दे सकते हो कि मैंने मेम्बरी के तुम्हारे तमाम आंकड़े उलट-पुलट दिये हैं। मगर ज़रा मुझको बतलाओ कि तुम ऐसे लोगों को कैसे डांट सकते हो जो पहले से बिना बाक़ायदा नोटिस दिये मर गये हों? आख़िर को कोई आदमी चाहे तो बीमार पड़ सकता है, या मर सकता है, अगर उसके जी में आये। और मैं तो शर्त बद कर कह सकता हूँ कि तुम्हारे सरकुलर में इसके बारे में कुछ भी नहीं लिखा होगा।"

तुफ़्ता का सहायक अपनी तटस्थता को अब और कायम नहीं रख सका और हो-हो-हो करके ज़ोर से हँस पड़ा।

तुफ़्ता की पेन्सिल की नोक टूट गई और उसने उसे उठाकर फर्श पर फेंक दिया। मगर इसके पहले कि वह अपने प्रतिपक्षी को कोई जवाब दे सके, बहुत से लोग बातें करते और हँसते हुए कमरे में घुस आये। उनमें ओकुनेव भी था। लोगों ने जब पावेल को पहचाना तो सब में बड़ी खलबली मची और फिर पावेल से सवाल पर सवाल होने लगे। चन्द मिनट बाद नौजवानों की एक दूसरी टोली अन्दर आई। उनमें ओल्गा यूरेनेवा भी थी। पावेल को फिर से देखने का उसे ऐसा झटका लगा था और इतनी खुशी हुई थी कि वह जैसे बेसुध होकर बड़ी देर तक उसके हाथ को पकड़े खड़ी रही।

और पावेल को दुबारा अपनी कहानी नये सिरे से सुनानी पड़ी। अपने साथियों की सच्ची खुशी, उनकी खुली हुई दोस्ती और सहानुभूति, आजिज़ी से उनका हाथ मिलाना और दोस्ताना अन्दाज़ में उसकी पीठ को थपथपाना—इस सबसे पावेल थोड़ी देर के लिए तुफ़्ता को भूल गया।

मगर जब उसने अपनी कहानी खतम की और तुफ़्ता के साथ हुई बातचीत का हाल साथियों को बतलाया तो सब बहुत बिगड़ उठे। ओल्गा प्रलयंकर आंखों से तुफ़्ता को देखती हुई मन्त्री के दफ़्तर में चली गई।

"चलो हम लोग नेज़्दानोव के यहाँ चलें," ओकुनेव ने ज़ोर से कहा,

"वह इसकी अक्ल ठिकाने लगा देगा।" और यह कहते हुए उसने पावेल का कन्धा पकड़ा और इन नौजवान दोस्तों की पूरी टोली ओल्गा के पीछे-पीछे मन्त्री के दफ्तर में जा पहुँची।

"इस तुफ्ता को यहाँ के काम पर से हटा कर वहाँ घाट पर पांक्रातोव के नीचे कुली का काम देना चाहिए, साल भर के लिए। बड़ा जलील नौकरशाह है!" ओल्गा ने बिफरते हुए कहा।

सूबा कमिटी का मन्त्री मुस्कराता हुआ ओकुनेव, ओल्गा और दूसरों की इस बात को सुनता रहा कि तुफ्ता को कार्यकर्ता-विभाग से अलग कर देना चाहिए।

उसने ओल्गा को आश्वासन दिया, "इसमें तो कोई बहस ही नहीं कि कोर्चागिन को फिर से सूची में शामिल कर लिया जायगा। अभी इस वक्त उसे एक नया कार्ड दे दिया जायगा। मैं तुम से सहमत हूँ कि तुफ्ता क़ानून की लकीर का फ़कीर है। वही उसकी खास कमजोरी है। मगर यह मानना होगा कि उसने अपना काम बुरा नहीं किया है। जहाँ-जहाँ मैंने काम किया है, मैंने देखा है कि कोमसोमोल के कार्यकर्ताओं के काम के आंकड़े भयंकर गड़बड़ी में रहे हैं, वे क़तई ऐसे नहीं रहे हैं कि उनकी किसी भी एक संख्या पर भरोसा किया जा सके। हमारे कार्यकर्ता-विभाग में आंकड़े काफ़ी अच्छी तरह रखे गये हैं। तुम लोग खुद जानते हो कि तुफ्ता अक्सर बैठा रात की रात काम करता रहता है। मैं इस सवाल को ऐसे देखता हूँ: तुफ्ता को अलग करना आसान है लेकिन अगर उसकी जगह कोई मस्त लापरवाह आदमी ले लेता है, जिसे आंकड़े-वांकड़े रखने का हाल कुछ भी नहीं मालूम, तो नौकरशाहियत से तो हमें छुटकारा मिल जायगा मगर फिर कोई नियम या व्यवस्था भी नहीं रहेगी। उसे अपनी जगह पर रहने दो। मैं उसे अच्छी तरह डाँट दूँगा। फ़िलहाल इससे काम चल जायगा और आगे चल कर देखा जायगा।"

ओकुनेव ने बात मानते हुए कहा, "अच्छा, ठीक कहते हो, उसको रहने ही दो। चलो पावलुशा, हम लोग सोलोमैंका चलें। वहाँ पर आज रात क्लब में पार्टी की मीटिंग है। किसी को अभी यह नहीं मालूम कि तुम लौट आए हो। सोचो, सबको कितनी हैरानी होगी जब हम ऐलान करेंगे—अब कोर्चागिन तक़रीर करेगा। सचमुच पावलुशा, तुम बड़े गजब के आदमी हो जो नहीं मरे। भला बताओ तुम मर गये होते तो मजदूर वर्ग के किस काम के होते।" कहते हुए ओकुनेव ने अपने दोस्त को अपनी बाँह में लिया और गलियारे में उसे ले चला।

"तुम चलोगी ओल्गा?"

"जरूर जरूर।"

कोर्चागिन पांक्रातोव के यहाँ रात के खाने पर नहीं लौटा। सच बात तो यह है कि सारे दिन वह वहाँ नहीं गया। ओकुनेव सोवियत की इमारत में अपने कमरे में उसे ले गया। अच्छा से अच्छा खाना जो वह इकट्ठा कर सकता था, उसने पावेल को दिया और फिर अखबारों का एक ढेर और जिला कोमसोमोल ब्यूरो की मीटिंगों की कार्यवाही की रिपोर्ट की दो मोटी-मोटी फाइलें उसके सामने रखते हुए बोला :

" ये सब देख जाओ। तुम जब टाइफस लिये पड़े थे और अपना वक्त खराब कर रहे थे, उस बीच बहुत-सी बातें हो गई हैं। मैं शाम को लौटूँगा और तब हम लोग साथ-साथ क्लब चलेंगे। अगर थक जाओ तो लेट जाना और थोड़ा सो लेना। "

अपनी जेबों में तमाम कागजात और जरूरी दस्तावेज भरते हुए (ओकुनेव को सिद्धान्ततः पोर्टफोलियो के इस्तेमाल से नफ़रत थी और वह उसके बिस्तर के नीचे उपेक्षित पड़ा था) जिला कमिटी के मन्त्री ने उससे विदा ली और बाहर निकल गया।

जब वह शाम को लौटा तो कमरे के फर्श पर तमाम अखबार बिखरे हुए थे और ढेर भर किताबें बिस्तर के नीचे से बाहर निकाल कर रखी हुई थीं। पावेल बिस्तर पर बैठा हुआ केन्द्रीय कमिटी की आखिरी चिट्ठियों को पढ़ रहा था। ये चिट्ठियाँ उसे अपने दोस्त की तकिया के नीचे मिली थीं।

ओकुनेव ने बनावटी गुस्से से चिल्लाते हुए कहा, " क्या हालत कर रखी है तुमने मेरे कमरे की ! ऐ कामरेड ! जरा रुको तो ! यह तुम क्या कर रहे हो ! ये गुप्त कागजात हैं जो तुम पढ़ रहे हो ! यही होता है, मैंने खामखाह तुम जैसे लम्बी नाक वाले आदमी को अपने कमरे में घुसने दिया। "

पावेल ने मुस्कराते हुए खत उठा कर अलग रख दिया और बोला, " यह खत गुप्त नहीं था मगर वह वाला जिसे तुम लैम्प के ऊपर लगाये हुए हो, उस पर जरूर 'गोपनीय' लिखा हुआ है। यह देखो, सिरे के आस-पास वह तमाम जल गया है। "

ओकुनेव ने कागज के जले हुए टुकड़े को लैम्प पर से निकाला, उसके शीर्षक को देखा और माथा ठोंक लिया।

" तीन दिन से मैं इस कम्बख्त के पीछे हैरान हो रहा हूँ। समझ ही में नहीं आता था कि कहाँ चला गया। अब मुझे याद आया। वोलिन्तसेव ने इसी काग़ज़ी से अभी उस रोज लैम्प का शेड बनाया था और फिर खुद ही तमाम जगह उसको तलाश करता फिरा था। " ओकुनेव ने बहुत सावधानी से उस कागज को मोड़ा

और गद्दे के नीचे ठूँस दिया और पावेल को जैसे विश्वास दिलाते हुए कहा, "थोड़ी देर बाद हम सब ठीक-ठाक कर लेंगे, अभी चलो जल्दी-जल्दी कुछ खा लें और भाग कर क्लब चलें। अपनी कुरसी मेज के और पास खींच लो पावेल।"

एक जेब में से उसने अखबार में लिपटी हुई एक लम्बी-सी सूखी मछली निकाली और दूसरी जेब से डबलरोटी के दो टुकड़े। अखबार उसने मेज पर बिछा दिया, मछली का सिर पकड़ा और मेज के सिरे पर उसे अच्छी तरह ठोंका।

मेज पर बैठ कर, अपने जबड़ों का इस्तेमाल बहुत जोश के साथ करते हुए खुशमिजाज ओकुनेव ने पावेल को तमाम खबरें सुनाईं। वह बीच-बीच में मजाक भी करता जाता था।

क्लब में ओकुनेव कोर्चागिन को पिछले दरवाजे से स्टेज पर ले गया। उस बड़े हॉल के एक कोने में, स्टेज के दाहिनी तरफ पियानो के पास तालिया लगुतिना और आना बोहार्ट रेलवे बस्ती के कुछ कोमसोमोलों के साथ बैठी हुई थी। रेलवे के कारखाने का कोमसोमोल मन्त्री वोलिन्तसेव आना के सामने बैठा हुआ था। उसका चेहरा अगस्त महीने के सेव की तरह सुर्ख था और उसके बाल और भवें पके हुए धान के रंग की थी। उसकी बहुत ही फटी-पुरानी चमड़े की जाकट किसी जमाने में काली थी।

उसकी बगल में पियानो के ढक्कन पर लापरवाही से कुहनी टिकाये हुए स्वेतायेव बैठा था। वह एक खूबसूरत नौजवान आदमी था जिसके बादामी रंग के बाल और बहुत ही खूबसूरत तराशे हुए ओंठ थे। उसकी कमीज गले पर खुली हुई थी।

उस टोली के पास पहुँचते हुए ओकुनेव ने आना को कहते सुना :

"कुछ लोग हैं जो इस बात के लिए अपना एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं कि नये मेम्बरों का दाखिला मुश्किल से मुश्किल होता जाय। उन्हीं लोगों में स्वेतायेव भी है।"

"कोमसोमोल कोई सैर-सपाटे का मैदान नहीं है, वह कोई पिकनिक की जगह नहीं है," स्वेतायेव ने किसी की कुछ परवाह न करते हुए कहा।

"वह देखो निकोलाई!" ओकुनेव को देख कर तालिया चिल्लाई, "आज रात वह कैसा चमक रहा है जैसे पालिश किया हुआ समोवार!"

ओकुनेव को सबों ने खींच कर अपने घेरे में ले लिया और उस पर सवालों के गोले दागने लगे।

"तुम कहाँ रहे ?"

"अब मीटिंग की कार्रवाई शुरू करनी चाहिए।"

ओकुनेव ने सबको खामोश करने के लिए हाथ उठाया।

"और कुछ देर इन्तजार करो दोस्तो। तोकारेव के आते ही हम लोग मीटिंग शुरू कर देंगे।"

"वह लो, वे भी आ गये," आना ने कहा।

"पार्टी की जिला कमिटी के मन्त्री तोकारेव चले आ रहे थे। उनसे मिलने के लिए ओकुनेव दौड़ कर उनकी तरफ़ बढ़ा।

"आओ काका, चल कर स्टेज के पीछे मेरे एक दोस्त से मिलो। मगर एक झटके के लिए अपने को तैयार कर लो!"

"क्या मामला है?" बुड्ढे ने अपने सिगरेट का कश लेते हुए अपनी भारी आवाज में गुर्रा कर कहा, मगर ओकुनेव तो आस्तीन पकड़ कर उन्हें खींचे लिये जा ही रहा था।

....ओकुनेव ने चेयरमैन की घंटी इतने जोर से बजाई कि मीटिंग में आये हुए सबसे बातूनी लोग भी चुप हो गये।

तोकारेव के पीछे, सदाबहार लताओं के फ्रेम में से *कम्युनिस्ट घोषणापत्र* की रचना करने वाली महान प्रतिभा मार्क्स का शेर बबर जैसा सिर सभा को देख रहा था। ओकुनेव मीटिंग की कार्यवाही शुरू कर रहा था और इस बीच तोकारेव की आँखें बराबर कोर्चागिन पर लगी हुई थीं जो बगल में खड़ा हुआ अपने बुलाये जाने का इन्तजार कर रहा था।

"साथियो! इसके पहले कि हम एजेंडे पर के संगठनात्मक सवालों पर बहस करें, यहाँ पर एक साथी ने बोलने की इजाजत माँगी है। मेरा और तोकारेव का प्रस्ताव है कि उस साथी को बोलने का मौका दिया जाय।"

हॉल में से श्रोताओं की सहमति का स्वर उठा और तब ओकुनेव ने कहा:

"मैं पावका कोर्चागिन को आकर तकरीर करने के लिए बुलाता हूँ!"

हॉल के सौ लोगों में से कम से कम अस्सी लोग कोर्चागिन को जानते थे और जब उसकी वह परिचित आकृति फुटलाइट के सामने आकर खड़ी हुई और उस लम्बे पीले नौजवान ने बोलना शुरू किया तो श्रोताओं ने बेइन्तहा खुशी से आवाजें करनी और जोर-जोर से तालियाँ बजानी शुरू की।

"प्यारे साथियो!"

कोर्चागिन की आवाज सधी हुई थी मगर वह अपने भावावेश को छिपा नहीं पा रहा था।

" अच्छा तो दोस्तो, मैं तुम लोगों की कतार में अपनी जगह लेने के लिए फिर लौट आया हूँ। मुझे बड़ी खुशी है कि मैं एक बार फिर तुम्हारे बीच आ सका। मैं यहाँ अपने बहुत से दोस्तों को देख रहा हूँ। मेरा खयाल है कि सोलोमेंका की कोमसोमोल में अब पहले से तीस फ़ीसदी ज़्यादा लोग हैं। अब वर्कशापों और यार्डों में सिगरेट लाइटर बनना बन्द हो गया है और रेलवे की कब्रिस्तान में से मशीनों की बड़ी-बड़ी लाशें मरम्मत के लिए आने लगी हैं। इसका मतलब है कि हमारे देश की नई जिन्दगी शुरू हो रही है और वह अपनी सारी ताकत को इकट्ठा कर रहा है। यह सचमुच एक ऐसी चीज है जिसके लिए जीने में भी मजा है! ऐसे वक़्त भला मैं कैसे मर सकता था!" खुशी की मुस्कराहट से कोर्चागिन की आँखें चमकने लगीं।

लोगों की तालियों और प्यार के बोलों के तूफ़ान के बीच पावेल मंच से उतरा और आना व तालिया के पास चला गया। अपनी तरफ़ बढ़े हुए हाथों से उसने हाथ मिलाया और फिर तमाम दोस्तों ने सरक कर अपने बीच उसके लिए जगह बना ली। तालिया ने अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया और कस कर दबाया। आना की आँखें अब भी हैरत से फैली हुई थीं, उसकी बरौनियाँ धीमे-धीमे फड़क रही थीं और जिन आँखों से वह पावेल को देख रही थी, उनमें हार्दिक स्वागत का भाव था।

तेजी से दिन बीतते जा रहे थे। मगर उनके बीतने में कोई एकरसता न थी क्योंकि हर दिन अपने साथ कोई नई चीज लाता था और सवेरे अपने दिन के काम की योजना बनाते वक़्त पावेल कुछ क्षोभ से इस बात को लक्ष्य करता था कि सचमुच दिन बहुत छोटा होता है और बहुत कुछ जो करने का उसने इरादा किया था, उसे वह नहीं कर सका।

पावेल ओकुनेव के साथ रहने चला गया था। वह रेलवे के कारखाने में असिस्टेंट इलेक्ट्रिक फिटर का काम कर रहा था।

पावेल कोमसोमोल के नेतृत्व से कुछ दिन के लिए हटना चाहता था और इस सवाल को लेकर ओकुनेव से उसकी बड़ी बहस हुई और उस लम्बी बहस के बाद ही ओकुनेव इस चीज के लिए राजी हुआ।

ओकुनेव ने आपत्ति की थी, " हमारे पास यों भी बहुत कम आदमी हैं और तुम वर्कशाप में जाकर पड़े रहने की बात करते हो। मुझको यह न बतलाओ कि तुम बीमार हो। टाइफस के बाद मैं खुद एक महीने तक छड़ी लेकर लंगड़ाता

घूमा था। पावका तुम मुझे बेवकूफ़ नहीं बना सकते, मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ, जरूर उसमें कोई बात है। बताओ क्या बात है, झट बोल दो," ओकुनेव ने आग्रह करते हुए कहा।

"तुम ठीक कहते हो कोलिया, है, और भी कोई बात। मैं पढ़ना चाहता हूँ।"

ओकुनेव आवेश में आकर चिल्लाया, "मैंने कहा था न! मैं समझ गया था कि जरूर कोई बात है! तुम क्या यह सोचते हो कि मेरे दिल में पढ़ने की ख्वाहिश नहीं है। मगर यह सरासर तुम्हारा स्वार्थीपन होगा। तुम चाहते हो कि हम लोग तो पहिए को अपना कन्धा लगाएँ और तुम बैठ कर पढ़ो! न भाई यह नहीं होगा, कल से तुम्हें संगठन-कर्ता का काम शुरू करना होगा।"

मगर खैर एक लम्बी बहस के बाद ओकुनेव मान गया।

"ठीक है, मैं दो महीने तुमसे कुछ नहीं बोलूँगा। मगर मेरी भलमनसाहत, मेरी फ़राग़दिली की दाद तुम्हें देनी होगी। मगर मेरा खयाल है कि स्वेतायेव से तुम्हारी नहीं बनेगी, वह जरा ज़्यादा घमंडी है।"

पावेल के वर्कशाप में आ जाने से स्वेतायेव चौकन्ना हो गया था। उसे इस बात का पूरा यक़ीन था कि कोर्चागिन के आते ही नेतृत्व के लिए संघर्ष शुरू हो जायगा। उसके अहंकार को चोट लगी और उसने डट कर पावेल का मुकाबला करने का फैसला किया। मगर जल्दी ही उसने यह बात देख ली कि पावेल के बारे में ऐसा सोचना उसकी ग़लती थी। जब कोर्चागिन को मालूम हुआ कि उसको कोमसोमोल ब्यूरो का सदस्य बनाने की योजना है, तो वह सीधे कोमसोमोल के मन्त्री के दफ़्तर में गया और उसको इस बात के लिए राजी कर लिया कि इस सवाल को एजेंडे पर से हटा दे। ओकुनेव से उसकी जो बात हुई थी, उसी को उसने कारण के रूप में पेश किया। वर्कशाप के कोमसोमोल की सेल में पावेल राजनीतिक अध्ययन का एक क्लास लेता था। मगर ब्यूरो में काम करने की उसने कोई ख्वाहिश नहीं दिखलाई। सरकारी काम के बाक़ायदा नेतृत्व में उसका हिस्सा रहा हो चाहे न रहा हो, लेकिन पावेल का असर सभी कामों में दिखाई दे रहा था। कई मौक़ों पर उसने अपने दोस्ताना, साथियों जैसे, सीधे-सरल ढंग से स्वेतायेव को मुसीबतों में से निकाला भी था।

एक रोज़ कारखाने में आकर स्वेतायेव को यह देख कर बहुत हैरत हुई कि कोमसोमोल सेल के तमाम मेम्बर और कोई तीन दर्जन ग़ैर-पार्टी लड़के खिड़कियों को धोने में लगे हैं और मशीनों पर बरसों से जमी गन्दगी को साफ़ कर रहे हैं और गाड़ी भर-भर के कूड़ा-करकट बाहर यार्ड में फेंक रहे हैं। पावेल के हाथ में

एक बड़ा सा कूंचा था और उससे वह बेतहाशा सीमेंट के फ़र्श की सफ़ाई किये जा रहा था जिस पर तमाम मशीन के तेल और ग्रीस के धब्बे थे।

स्वेतायेव ने पावेल से पूछा, "कहो, यह कैसी सफ़ाई हो रही है? यह कौन सा मौका है?"

कोर्चागिन ने संक्षेप में जवाब दिया, "हम इस तमाम गन्दगी से हैरान आ गये हैं। बीस बरस से इस जगह की सफ़ाई नहीं हुई, हम लोग हफ्ते भर में इसे चमका कर एकदम नया कर देंगे।"

स्वेतायेव ने अपने कन्धे उचकाये और चला गया।

अपने वर्कशाप की सफ़ाई से एलेक्ट्रीशियनों का जी नहीं भरा तो उन्होंने कारखाने के हाते की भी सफ़ाई में हाथ लगाया। बरसों से उस लम्बे-चौड़े हाते का इस्तेमाल कूड़े के ढेर की शकल में हो रहा था जहाँ पर तमाम इस्तेमाल से खारिज सामान फेंक दिया जाया करता था। गाड़ी के सैकड़ों पहिये और ऐक्सेल, जंग लगे लोहे के पहाड़, रेल की पटरियाँ, ऐक्सेल बॉक्स—हज़ारों टन लोहा वहाँ खुले आसमान के नीचे पड़ा जंग खा रहा था। मगर कारखाने के व्यवस्थापकों ने इन नौजवानों के काम को रोक दिया।

उन्होंने कहा, "हमारे सामने ज़्यादा अहम मसले हैं। हाते की सफ़ाई अभी कुछ दिन रुक सकती है।"

लिहाज़ा एलेक्ट्रीशियनों ने वर्कशाप के दरवाजे के सामने की थोड़ी सी जगह को पक्का कर दिया, दरवाजे के बाहर तार का एक पाँव-पोश रख दिया और फ़िलहाल बात इतने पर ही छोड़ दी। मगर वर्कशाप के अन्दर काम के घंटों के बाद सफ़ाई का काम बदस्तूर चलता रहा। जब एक हफ्ते बाद चीफ़ इंजीनियर स्त्रिज आया तो उसने वर्कशाप को खूब रोशन पाया। लोहे के डण्डे लगी बड़ी-बड़ी खिड़कियों से अब खूब रोशनी आ रही थी क्योंकि उन पर से धूल और तेल की मोटी-मोटी परतें अलग कर दी गई थीं। खिड़की से आती हुई रोशनी डीजेल इंजनों के पालिश किये हुए तांबे के हिस्सों पर चमक रही थी। मशीनों के भारी-भारी पुरज़ों पर हरे रोग़न की ताज़ी पुताई चमक रही थी और किसी ने पहियों की तीलियों पर रोग़न से पीले-पीले तीर भी बना दिये थे।

"अच्छा अच्छा···" स्त्रिज ने आश्चर्य से बुदबुदा कर कहा।

वर्कशाप के दूर के एक कोने में कुछ लोग अपना काम पूरा कर रहे थे। स्त्रिज उनके पास गया। रास्ते में उसे रंग का टिन ले जाते कोर्चागिन मिला।

इंजीनियर ने उसको रोक कर कहा, "ज़रा एक मिनट रुकना दोस्त। तुमने यहाँ जो कुछ किया है, मैं उससे पूरी तरह सहमत हूँ। मगर तुम्हें यह रंग कहाँ से

मिला ? मैंने तो इस बात का कड़ा हुक्म दे रखा है कि मेरी इजाजत के बिना रंग इस्तेमाल न किया जाय ? ऐसे कामों के लिए हम रंग बर्बाद नहीं कर सकते। हमारे पास जितना कुछ है उसकी जरूरत हमें अपने इंजनों के लिए है।"

"यह रंग हमने फेंके हुए डब्बों में से खुरच-खुरच कर निकाला है। इसमें हमारे दो दिन लगे मगर हमने क़रीब पच्चीस पौंड रंग निकाल लिया। कामरेड इंजीनियर, हम लोग किसी भी नियम को तोड़ नहीं रहे हैं।"

इंजीनियर ने अब भी गुस्से का इज़हार किया, मगर बात बदल गई थी। उसके चेहरे से ज़ाहिर था कि कहने को उसके पास कुछ ख़ास है नहीं।

"अच्छा तो करो जो कर रहे हो। ठीक है। मगर यह वाक़ई बड़ी दिलचस्प बात है। इसका तुम्हारे पास क्या जवाब है····क्या नाम····इस बात का कि वर्कशाप में सब लोग अपनी मरज़ी से सफ़ाई में दिलोजान से लगे हुए हैं ? मैं समझता हूँ ये सब काम के घंटों के बाद ही हुआ होगा ?"

कोर्चागिन ने इंजीनियर की आवाज़ में सच्ची हैरानी को लक्ष्य किया।

उसने कहा, "इसमें शक क्या है, काम के घंटों के बाद ही सब काम हुआ है। आपने क्या समझा था ?"

"हाँ मगर····"

"कामरेड स्त्रिज, इसमें अचम्भे की ऐसी कोई बात नहीं है। आपसे यह किसने कहा कि बोल्शेविक गन्दगी को हाथ नहीं लगायेंगे और जैसा का तैसा पड़ा रहने देंगे ? ज़रा रुकिए कुछ दिन और, जब तक कि हमारा यह मामला ठीक से चल नहीं निकलता, फिर देखिएगा और भी बहुत-सी अचम्भे की चीजें आपको देखने को मिलेंगी।"

और फिर इंजीनियर से अपने-आपको बचाते हुए ताकि रंग उछल कर उसके ऊपर न जा पड़े, कोर्चागिन आगे बढ़ गया।

पावेल हर शाम को पब्लिक लाइब्रेरी जाता था और बड़ी रात तक वहीं रहता था। तीनों लाइब्रेरियों से उसकी दोस्ती हो गई थी और समझाने-बुझाने की अपनी तमाम क़ाबलियत का इस्तेमाल करके उसने आज़ादी के साथ किताबों को लेने और पढ़ने का हक़ पा लिया था। वह ऊँचे-ऊँचे टाँडों में सीढ़ी लगा कर वहाँ पर घंटों अपने पढ़ने की सामग्री की तलाश में एक के बाद दूसरी किताब के पन्ने पलटता रहता था। ज़्यादातर किताबें पुरानी थीं। आधुनिक साहित्य सिर्फ एक छोटी सी आलमारी में था। कुछ थोड़े से गृह-युद्ध के पैम्फलेट, मार्क्स का 'कैपिटल', जेक लंडन का 'आयरन हील' और ऐसी ही कुछ और। पुरानी किताबों को टटोलते हुए उसे 'स्पार्टाकस' नाम की किताब मिली। उसने दो

रात में उसको पढ़ डाला और पढ़ कर मैक्सिम गोर्की की किताबों की बग़ल में रख दिया। कुछ दिन तक यही सिलसिला चला—धीरे-धीरे ऐसी अच्छी किताबों के चुनाव करने का सिलसिला जिनमें कोई आधुनिक क्रान्तिकारी सन्देश हो।

लाइब्रेरियनों ने कोई आपत्ति नहीं की : उनके लिए सब कुछ बराबर था।

रेलवे वर्कशाप में कोमसोमोल की ज़िन्दगी शान्त ढंग से चली जा रही थी कि अचानक एक ऐसी घटना हुई जिसे पहले लोगों ने महत्वहीन समझा। मरम्मत का काम करने वाले काहिल, चेचक-रू, चपटी नाक के कोस्त्या फ़िदिन ने, जो सेल की ब्यूरो का मेम्बर था, एक बहुत क़ीमती विदेशी ड्रिल तोड़ दी थी, लोहे के टुकड़े पर चला कर। यह दुर्घटना सरासर लापरवाही का नतीजा थी। इतना ही नहीं, कभी-कभी तो यह भी लगता था कि जैसे फ़िदिन ने जान-बूझ कर बदमाशी की हो।

सबेरे के वक़्त यह घटना हुई थी। मरम्मत के बड़े फ़ोरमैन खोदोरोव ने लोहे की एक पट्टी में कई सूराख करने के लिए कोस्त्या से कहा था। कोस्त्या ने पहले तो इनकार किया मगर जब फ़ोरमैन ने बहुत इसरार किया तो उसने लोहा उठा लिया और उसमें सूराख करने लगा। फ़ोरमैन सबसे बड़ी कड़ी मेहनत लेता था, इसलिए मज़दूर उसको पसन्द नहीं करते थे। पहले वह मेन्शेविक रह चुका था। कारखाने की सामाजिक ज़िन्दगी में वह कोई हिस्सा नहीं लेता था और कम्युनिस्ट युवक उसे पसन्द नहीं थे। मगर अपने काम का वह माहिर था और दिल लगा कर अपने फ़र्ज़ को पूरा करता था। खोदोरोव ने देखा कि कोस्त्या अपनी ड्रिल में तेल डाले बग़ैर उसको सूखा ही चला रहा है। उसने जल्दी से मशीन के पास जाकर कोस्त्या को रोका।

"तुम अन्धे हो क्या? इसी तरह ड्रिल इस्तेमाल करनी चाहिए!" उसने कोस्त्या को डाँटते हुए कहा, क्योंकि उसे मालूम था कि इस तरह ड्रिल ज़्यादा दिन नहीं चलेगी।

कोस्त्या ने पलट कर उसको जवाब दिया और फिर से लेथ को चालू कर दिया। डिपार्टमेंट के प्रधान से शिकायत करने के लिए खोदोरोव उसके पास गया। इसी बीच कोस्त्या, मशीन को चलता हुआ छोड़ कर, जल्दी से तेल की कुप्पी लाने के लिए भागा ताकि प्रधान के आते-आते सब कुछ एकदम ठीक हो जाय। तेल लेकर लौटने-लौटने तक में ड्रिल टूट चुकी थी। प्रधान ने फ़िदिन की रिपोर्ट की और माँग की कि उसको बर्ख़ास्त कर दिया जाय। मगर कोमसोमोल की सेल

ब्यूरो ने यह कह कर फिदिन का साथ दिया कि खोदोरोव सभी सक्रिय कोमसोमोल सदस्यों से चिढ़ता है। मैनेजमेन्ट ने फिदिन के बर्खास्त किये जाने पर ज़ोर दिया और मामला वर्कशापों की कोमसोमोल ब्यूरो के सामने रखा गया। लड़ाई शुरू हो गई।

ब्यूरो के पाँच में से तीन सदस्य इस राय के थे कि कोस्त्या को सरकारी तौर पर चेतावनी देकर दूसरे किसी काम पर लगा दिया जाय। स्वेतायेव उन तीन में से एक था। बाक़ी दो का खयाल था कि फिदिन को कोई भी सज़ा न मिलनी चाहिए।

इस मामले की बहस के लिए ब्यूरो मीटिंग स्वेतायेव के दफ्तर में बुलाई गई थी। एक बड़ी-सी मेज़ के इर्द-गिर्द, जिस पर लाल कपड़ा बिछा हुआ था, कई बेंच और स्टूल रखे थे, जिन्हें बढ़ई का काम करने वाले नौजवान कम्युनिस्टों ने बनाया था। दीवालों पर लीडरों की तसवीरें थीं और रेलवे वर्कशाप का अपना झण्डा मेज़ के पीछे एक पूरी दीवाल पर फैला हुआ था।

स्वेतायेव अब पूरे वक़्त कोमसोमोल का काम करता था। पेशे से वह खरादघर का आदमी था मगर अपनी संगठनात्मक योग्यता के कारण वह कोमसोमोल के एक ऊँचे पद पर पहुँच गया था। अब वह कोमसोमोल की ज़िला कमिटी की ब्यूरो का मेम्बर था और साथ ही सूबा कमिटी का भी मेम्बर था। एक मशीन के कारखाने के खरादघर में उसने काम किया था और रेलवे के कारखाने के लिए नया था। शुरू से ही उसने प्रबन्धक की बागडोर मज़बूती से अपने हाथों में ले ली थी। स्वभाव से वह ज़रा ज़्यादा आत्म-विश्वासी था और फ़ैसले बहुत जल्दी दे देता था। इस कारण, उसने शुरू से ही कोमसोमोल के दूसरे सदस्यों की स्वतन्त्र काम करने की योग्यता को मार दिया था। वह सब काम अपने ही हाथों से करने पर ज़ोर देता था और जब नहीं कर पाता था तो अपने सहायकों को सुस्त और कामचोर कह कर उनकी लानत-मलामत करता था।

यहाँ तक कि दफ्तर की सजावट भी उसकी निजी निगरानी में हुई थी।

मीटिंग की कार्यवाही वह कमरे में रखी हुई अकेली गद्देदार आरामकुर्सी पर बैठा हुआ चला रहा था। यह कुर्सी क्लब से उठा कर लाई गई थी। यह एक बन्द मीटिंग थी। पार्टी संगठनकर्ता खोमुतोव ने अभी-अभी बोलने की इजाज़त मांगी थी जब कि भीतर से बन्द दरवाज़े पर दस्तक पड़ी। इस आवाज़ से स्वेतायेव के माथे पर बल पड़ गये। दुबारा दस्तक पड़ी। कात्या ज़ेलेनोवा उठी और उसने दरवाज़ा खोला : देहलीज़ पर कोर्चागिन खड़ा था। कात्या ने उसे अन्दर आने दिया।

पावेल एक खाली सीट की तरफ़ बढ़ता जा रहा था कि स्वेतायेव ने उससे कहा :

" कोर्चागिन, यह ब्यूरो की बन्द मीटिंग है जिसमें सबको आने की इजाजत नहीं है। "

पावेल के चेहरे पर खून उतर आया और वह धीरे-धीरे घूम कर मेज के सामने खड़ा हो गया।

" मुझे मालूम है। फिदिन के मामले में आपकी क्या राय है, मुझे यह सुनने में दिलचस्पी है। मैं इस सिलसिले में कुछ कहना चाहता हूँ। क्यों क्या मामला है, क्या आपको मेरे यहाँ रहने में आपत्ति है ? "

" मुझे आपत्ति नहीं है, मगर तुमको जानना चाहिए कि बन्द मीटिंगें सिर्फ़ ब्यूरो मेम्बरों के लिए होती हैं। जितने ही ज़्यादा लोग हो जाते हैं, मसले पर ठीक से बहस करके किसी नतीजे पर पहुँचना उतना ही मुश्किल हो जाता है। मगर अब जब कि तुम आ ही गये हो, तो रह सकते हो। "

कोर्चागिन को कभी ऐसी उपेक्षा नहीं मिली थी। उसके माथे पर एक और धारी पड़ गई।

" यह सब शिष्टाचार किसलिए ? " खामुतोव ने अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए कहा। मगर कोर्चागिन ने हाथ के इशारे से उसे चुप कर दिया और बैठ गया। खोमुतोव ने फिर अपना बोलना शुरू किया, " हाँ तो जो बात मैं कहना चाह रहा था, वह यह है। यह सच है कि खोदोरोव पुराने विचारों का आदमी है, मगर अनुशासन के लिए हमें कुछ न कुछ करना ही होगा। अगर तमाम कोमसोमोल वाले इसी तरह ड्रिलें तोड़ते रहे तो हमारे पास काम करने के लिए फिर ड्रिलें रहेंगी ही नहीं। और इससे भी बड़ी बात यह है कि इस तरह हम पार्टी के बाहर के मज़दूरों के सामने बुरा उदाहरण रखेंगे। मेरी राय में उस लड़के को सख़्त चेतावनी देनी चाहिए ? "

स्वेतायेव ने उसकी बात खतम करने का मौक़ा नहीं दिया और अपनी दलीलें देनी शुरू कर दी। दस मिनट गुज़र गये। इस बीच कोर्चागिन ने भाँप लिया कि हवा का रुख किस तरफ़ है। आख़िरकार जब मामला वोट के लिए पेश किया गया तो कोर्चागिन ने उठ कर बोलने की इजाज़त माँगी। स्वेतायेव ने बहुत अनिच्छा से उसको बोलने की इजाज़त दी।

" साथियो, फिदिन के मामले में मैं आपको अपनी राय देना चाहता हूँ, " पावेल ने बोलना शुरू किया। न चाहते हुए भी उसकी आवाज़ रूखी और कठोर सुनाई पड़ रही थी।

" फ़िदिन का मामला एक सिगनल है और हमको यह देखना है कि सबसे अहम चीज़ कोस्त्या की, अकेले उसकी हरकत नहीं है। मैंने कल कुछ तथ्य इकट्ठा किये हैं।" पावेल ने अपनी जेब से एक नोटबुक निकाली। " ये आँकड़े मुझे हाज़री का रजिस्टर रखने वाले से मिले। अब ज़रा ग़ौर से सुनिए : हमारे कोमसोमोलों में तेईस फ़ीसदी लोग पाँच से लेकर पन्द्रह मिनट तक की देरी करके काम पर आते हैं। यह रोज़ का सिलसिला है। नियम सा बन गया है। हर महीने एक या दो रोज़ सत्रह फ़ीसदी लोग बिलकुल काम पर आते ही नहीं। ग़ैर-पार्टी मज़दूरों में काम पर न आने वाले चौदह फ़ीसदी हैं। साथियो, ये आँकड़े चाबुक की तरह हमारी पीठ पर पड़ते हैं। मैंने और भी कुछ आँकड़े जमा किये हैं। हमारे पार्टी मेम्बरों में चार फ़ीसदी लोग महीने में एक रोज़ काम पर नहीं आते और चार फ़ीसदी देर से आते हैं। ग़ैर-पार्टी मज़दूरों में ग्यारह फ़ीसदी लोग महीने में एक रोज़ नहीं आते हैं और तेरह फ़ीसदी लोग हर रोज़ देर से पहुँचते हैं। नब्बे फ़ीसदी टूट-फूट के लिए नौजवान मज़दूर ज़िम्मेदार होते हैं जिनमें सात फ़ीसदी बिलकुल नये लोग हैं। इन आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि हम कोमसोमोल के लोग पार्टी मेम्बरों और वयस्क मज़दूरों के मुक़ाबले में बहुत बुरा काम कर रहे हैं। मगर सब जगह यही हालत नहीं है। खरादघर के काम का रेकार्ड बहुत अच्छा है, बिजली वाले भी कुछ खास बुरे नहीं हैं, मगर बाक़ी लोग ज़्यादातर एक ही सतह पर हैं। मेरी राय में कामरेड खोमुतोव ने अनुशासन के बारे में जितना कहना चाहिए, उसका शतांश ही कहा है। तात्कालिक समस्या यह है कि इन टेढ़े-मेढ़े मामलों को कैसे सीधा किया जाय। मैं आप लोगों को जोश दिलाने के लिए यहाँ पर कोई तक़रीर नहीं करना चाहता, मगर इतना ज़रूर कहूँगा कि इस लापरवाही और ढीलढाल को हमें बन्द करना ही होगा। पुराने मज़दूर ईमानदारी से इस बात को मान रहे हैं कि वे अपने पूँजीपति मालिकों के लिए ज़्यादा अच्छा काम किया करते थे। मगर अब तो हम खुद अपने मालिक हैं और बुरा काम करने के लिए कोई कारण नहीं है। बात सिर्फ़ एक कोस्त्या और दूसरे किसी मज़दूर की नहीं है जिसे दोष देकर हम छुट्टी पा लें। हम सभी लोगों की ग़लती है कि हम ठीक से इस बुराई से लड़ने के बदले किसी न किसी बहाने से कोस्त्या जैसे मज़दूरों की वकालत करते हैं।

" समोखिन और बुतिलियाक ने अभी-अभी यहाँ पर कहा है कि फ़िदिन अच्छा लड़का है, हमारे बेहतरीन लोगों में से है, आगे बढ़ कर कोमसोमोल का काम करता है, वग़ैरह-वग़ैरह। क्या हुआ अगर उसके हाथ से एक ड्रिल टूट गई, किसी के भी हाथ से टूट सकती थी। खास बात यह है कि कोस्त्या हममें से एक

है और फ़ोरमैन नहीं है''''मगर क्या कभी किसी ने खोदोरोव से बात करने की कोशिश की। इस बात को न भूलिए कि वह चाहे बड़बड़ाये जितना, उसके पीछे काम का तीस साल का तजुर्बा है! हम उसकी राजनीति की चर्चा नहीं करना चाहते। इस खास मामले में उसी का पक्ष मज़बूत है क्योंकि वह पार्टी के बाहर का आदमी होते हुए सरकारी जायदाद की फ़िक्र करता है और हम हैं कि क़ीमती-क़ीमती औज़ारों को तोड़े डाल रहे हैं। ऐसे सूरते हाल को आप क्या कहोगे? मैं समझता हूँ कि हमें अभी पहला वार करना चाहिए और इस मोर्चे पर हमला बोल देना चाहिए।

"मैं प्रस्ताव करता हूँ कि फिदिन को काम से जी चुराने और उत्पादन में अव्यवस्था फैलाने के अभियोग में कोमसोमोल से निकाल दिया जाय। दीवार के अखबार में इस मामले पर बहस होनी चाहिए और बिना इस बात से डरे कि इसका क्या नतीजा होगा, सारे तथ्य सम्पादकीय में दे देने चाहिए। हम मज़बूत हैं, हमारे पास ऐसी शक्तियाँ हैं जिन पर हम भरोसा कर सकते हैं। कोमसोमोल के अधिकांश सदस्य अच्छे काम करने वाले हैं। उनमें से साठ बोयार्का में रह चुके हैं और वह बड़ी कठिन परीक्षा थी। उनकी मदद और उनके सहयोग से हम तमाम कठिनाइयों को सुलझा लेंगे। ज़रूरत सिर्फ़ इस बात की है कि हम इस मसले पर अपने रवैये को बिलकुल बदल दें।"

कोर्चागिन आम तौर पर बहुत खामोश और चुप रहने वाला आदमी था, मगर इस वक़्त वह इतने जोश से बोल रहा था कि स्वेतायेव को अचम्भा हुआ। असली पावेल को वह आज पहली बार देख रहा था। उसने इस बात को समझा कि पावेल ठीक बात कह रहा है मगर सावधानी बरतने के खयाल से वह खुलेआम अपनी सहमति नहीं दिखलाना चाहता था। उसने कोर्चागिन के भाषण को इस रूप में लिया कि जैसे वह पूरे संगठन की सामान्य दशा की बड़ी कठोर आलोचना हो, मानो वह स्वेतायेव की शक्ति को कम करने की कोशिश हो और इसलिए उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी को कुचल देने का फ़ैसला किया। उसने अपना भाषण कोर्चागिन पर यह अभियोग लगाते हुए शुरू किया कि कोर्चागिन मेन्शेविक खोदोरोव के पक्ष का समर्थन कर रहा है।

वह तूफ़ानी बहस-मुबाहसा तीन घंटे तक चला। बहुत रात गये आखिरी बात पर लोग पहुँचे। तथ्यों के निर्मम तर्क से हार कर और यह देख कर कि बहुमत कोर्चागिन के साथ हो गया है, स्वेतायेव ने एक ग़लत क़दम उठाया। उसने जनवाद के नियमों का उल्लंघन करते हुए, वोट लेने के ठीक पहले कोर्चागिन को कमरे से निकल जाने का आदेश दिया।

" बहुत अच्छा, मैं चला जाऊँगा मगर स्वेतायेव, तुम्हारा यह आचरण ठीक नहीं। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि अगर तुम अपनी बात पर अड़े रहे तो कल मैं इस मामले को जनरल मीटिंग के सामने रखूँगा और मुझे इस बात का पक्का यक़ीन है कि वहाँ पर तुम बहुमत को अपने साथ न ले जा सकोगे। स्वेतायेव, तुम्हारी बात ठीक नहीं है। कामरेड खोमुतोव, मेरा खयाल है कि यह आपका कर्तव्य है कि आप इस मामले को जनरल मीटिंग में पार्टी-ग्रुप के सामने उठाएँ।"

स्वेतायेव ने उद्दण्डता से चीखते हुए कहा, "मुझे डराने की कोशिश मत करो। मैं खुद पार्टी-ग्रुप के सामने जा सकता हूँ और मैं तुम्हें बतला दूँ कि उनको तुम्हारे बारे में बतलाने के लिए भी मेरे पास कुछ बातें हैं। अगर तुम खुद काम नहीं करना चाहते तो कम-से-कम दूसरों के काम में अड़ंगा तो न लगाओ।"

पावेल बाहर निकल गया। बाहर निकल कर उसने कमरे का दरवाज़ा बन्द किया और अपने जलते हुए माथे पर हाथ फेरा और खाली दफ़्तर में से होता हुआ बाहर के दरवाजे की तरफ़ बढ़ा। सड़क पर पहुँच कर उसने एक गहरी सांस ली, एक सिगरेट जलाई और बातियेवा पहाड़ी के उस छोटे से घर की तरफ़ चल दिया जहाँ तोकारेव रहता था।

उस बुड्ढे मेकेनिक को उसने खाना खाते पाया।

तोकारेव ने पावेल को खाने के लिए बुलाते हुए कहा, "आओ, कहो क्या खबर है। दार्या, इस लड़के के लिए एक रक़ाबी में खिचड़ी ले आओ।"

तोकारेव की बीबी दार्या फ़ोमीनिचना अच्छी लम्बी-तगड़ी औरत थी जब कि उसका पति नाटा और दुबला सा आदमी था। उसने एक रक़ाबी में ज्वार की खिचड़ी लाकर पावेल के सामने रख दी और अपने गीले ओंठों को अपने सफेद एप्रन के छोर से पोंछती हुई बड़ी दयालुता से बोली, "शुरू करो बेटा।"

उन दिनों जब बूढ़ा तोकारेव रेलवे के कारखाने में काम करता था, पावेल अक्सर उसके यहाँ जाया करता था और इस बूढ़े दम्पत्ति के साथ उसने बहुत सी अपनी अच्छी शामें गुजारी थी। मगर इस बार शहर में लौटने पर वह पहली मर्तबा तोकारेव के यहाँ गया था।

बुड्ढे मेकेनिक ने बड़े ध्यान से पावेल की कहानी सुनी। कहानी सुनते समय वह बराबर चम्मच से खाना खाता जा रहा था और बीच-बीच में बस थोड़ा सा हाँ हूँ कर लेता था। इससे ज़्यादा कोई टीका-टिप्पणी उसने नहीं की। अपना

दलिया खतम करके उसने अपनी मूँछ रूमाल से पोछी और खखार कर गला साफ़ किया।

उसने कहा, "तुम्हारी बात बिलकुल ठीक है, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। इस सवाल को ठीक से उठाने का यही मौक़ा है, अब और देर करना अच्छा न होगा। कारखाने में हमारे इलाक़े भर में दूसरी किसी भी जगह से ज़्यादा कम्युनिस्ट हैं और हमें अपनी बात की शुरुआत इसी जगह से करनी चाहिए। अच्छा तो तुममें और स्वेतायेव में ठन गई? बहुत बुरी बात है। इसमें तो खैर शक नहीं कि उसमें ज़रा प्यादे से फ़रज़ी बनने वाले का घमंड है। मगर उससे क्या, तुम तो पहले सबके साथ निभा लिया करते थे? अच्छा यह तो बताओ कि कारखाने में तुम क्या काम करते हो?"

"मैं एक डिपार्टमेंट में काम कर रहा हूँ और आम तौर पर जहाँ भी कोई काम होता रहता है मैं उसमें ज़रूर रहता हूँ। अपने सेल में मैं एक राजनीतिक स्टडी सर्किल चलाता हूँ।"

"तुम ब्यूरो में नहीं हो?"

कोर्चागिन ने कुछ हिचकते हुए जवाब दिया:

"मैंने सोचा कि जब तक मेरी टाँगों में ठीक से ताक़त नहीं आ जाती, और इस खयाल से भी कि मैं कुछ पढ़ना-लिखना चाहता था, मैं अभी कुछ दिन बाक़ायदा नेतृत्व में कोई हिस्सा न लूँगा।"

"अच्छा तो यह बात है!" तोकारेव ने बात बुरी लगने के अन्दाज़ में कहा। "भाईजान, अगर आपकी तन्दुरुस्ती की बात न होती, तो मैंने आज आपकी खबर ली होती। मगर यह तो कहो कि अब कैसे हो? पहले से कुछ ज़्यादा ताक़त महसूस करते हो?"

"हाँ।"

"अच्छा, अब तुम ज़रा जी लगा कर काम में जुट जाओ। इधर-उधर की बात करने से कोई फ़ायदा नहीं। और न इस तरह अलग-थलग बैठे रहना ही ठीक होगा। तुम अपनी ज़िम्मेदारी से मुँह चुराते हो और तुम खुद भी इस बात को जानते हो। बात और कुछ नहीं है। अब कल से ही तुम्हें चीज़ों को ठीक करने में लग जाना होगा। ओकुनेव को मैं इसकी खबर दे दूँगा।" तोकारेव के स्वर से उसकी खीझ साफ़ व्यक्त हो रही थी।

"न बाबा, आप उससे कुछ न कहियेगा," पावेल ने जल्दी से आपत्ति करते हुए कहा, "मैंने खुद ही उससे कहा था कि मुझे कोई काम न दे।"

तोकारेव ने कुछ नाराज़गी से सीटी बजाई।

" अच्छा तो तुमने कहा और उसने तुम्हें छोड़ भी दिया ! खैर जो है ठीक है, तुम कोमसोमोलों के साथ हम कर ही क्या सकते हैं····अच्छा बेटा तुम जरा मुझे अखबार पढ़ कर सुनाओगे, जैसे पहले सुनाया करते थे ? मेरी आँखें अब उतनी ठीक नहीं । "

कारखानों की पार्टी ब्यूरो ने कोमसोमोल की ब्यूरो के बहुमत के फ़ैसले की तसदीक़ की और पार्टी और कोमसोमोल के ग्रुप मज़दूरों के अनुशासन का उदाहरण रखने के महत्वपूर्ण और मुश्किल काम में लग गये । स्वेतायेव पर ब्यूरो में बहुत कस कर डाँट पड़ी। उसने पहले तो बहुत बढ़-बढ़ कर बात की मगर मन्त्री लोपाखिन ने उसे बिलकुल पस्त कर दिया । लोपाखिन अधेड़ आदमी था और उसके चेहरे पर एक अजीब मोम जैसा पीलापन था जिससे उसकी तपेदिक का पता चलता था जो उसे घुन की तरह खाये जा रही थी । आखिरकार मजबूर होकर स्वेतायेव ने अंशतः अपनी ग़लती कुबूल की ।

अगले रोज़ दीवार के अखबारों में कई लेख थे जिनसे रेलवे कारखानों में अच्छी-खासी सनसनी फैल गई । वे लेख ज़ोर-ज़ोर से पढ़े गये और उन पर गरमा-गरम बहसें हुईं और उसी शाम को नौजवानों की जो मीटिंग हुई उसमें हमेशा से कहीं ज़्यादा उपस्थिति रही और सारी बातचीत लेखों में उठाई गई उन्हीं समस्याओं पर हुई ।

फिदिन को कोमसोमोल से निकाल दिया गया और ब्यूरो में एक नये मेम्बर को लिया गया और उसे राजनीतिक शिक्षा का भार दे दिया गया । यह नया मेम्बर कोर्चागिन था ।

जिस वक्त मीटिंग में नेज़्दानोव, इस नई परिस्थिति में रेलवे के कारखानों के सामने आये हुए नये कामों की रूपरेखा बतला रहा था, उस समय हॉल में असाधारण शान्ति थी ।

मीटिंग के बाद स्वेतायेव ने कोर्चागिन को बाहर अपना इन्तजार करते हुए पाया ।

पावेल ने कहा, " चलो हम लोग साथ-साथ चलें । मुझे तुमसे कुछ कहना है । "

" किस चीज के बारे में ? " स्वेतायेव ने अप्रिय ढंग से पूछा ।

पावेल ने उसकी बांह अपनी बांह में ले ली और चार-छः गज आगे जाकर एक बेन्च के पास रुक गया ।

" आओ बैठें थोड़ी देर, " कहते हुए वह बैठ गया।

स्वेतायेव की सिगरेट का जलता हुआ सिरा कभी जोर से जल उठता था और कभी बुझने सा लगता था।

" स्वेतायेव, मुझसे तुम्हें क्या शिकायत है ? "

कुछ मिनट तक खामोशी रही।

" ओह, तो यह बात है ? मैंने सोचा था कि तुम मुझसे कुछ काम की बात करना चाहते होगे, " स्वेतायेव ने आश्चर्य दिखाते हुए कहा, मगर उसकी आवाज काँप रही थी।

पावेल ने मजबूती से अपना हाथ स्वेतायेव के घुटने पर रख दिया।

" दिमका, जरा अपना यह नखरा छोड़ कर सीधे से बात करो। तुम जैसे बात कर रहे हो न, वैसे बड़े-बड़े कूटनीतिज्ञ बात किया करते हैं। तुम मुझको यह बतलाओ कि तुम्हें मुझसे इस कदर चिढ़ क्यों है ? "

स्वेतायेव को बेचैनी महसूस हो रही थी और वह बार-बार उसके पहलू बदलने से प्रकट हो रही थी।

" तुम काहे के बारे में बात कर रहे हो ? मुझे तुमसे चिढ़ क्यों होने लगी। मैंने खुद तुम्हें काम दिया था कि नहीं ? तुमने वह काम करने से इनकार किया और अब तुम मुझ पर यह दोष लगाते हो कि मैं तुम्हें काम से बाहर रखने की कोशिश करता हूँ। "

मगर उसके शब्दों में वह आत्मविश्वास नहीं था जो दूसरों के अन्दर विश्वास जगाता है। पावेल का हाथ अब भी स्वेतायेव के घुटने पर टिका हुआ था और उसने मार्मिक स्वर में कहा :

" अगर तुम वह बात नहीं कहोगे तो मैं कहूँगा। तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे काम करने के ढंग पर शिकंजा चढ़ाना चाहता हूँ। तुम्हारा खयाल है कि मैं तुमसे तुम्हारा काम छीन लेना चाहता हूँ। अगर तुम ऐसा न सोचते, तो उस कोस्त्या वाले मामले में हमारे बीच ऐसा झगड़ा न हुआ होता। इस तरह के आपसी सम्बन्ध हमारे काम को तबाह करके रख देंगे। अगर यह सिर्फ हम दोनों के बीच की बात होती तो कोई बात न थी, मुझे इसकी खाक परवाह न होती कि तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो। लेकिन कल से हम लोगों को साथ-साथ काम करना है। इस तरह भला कैसे काम चलेगा ? अच्छा अब मेरी बात सुनो। हमारे बीच कोई दरार न होनी चाहिए। हम दोनों मेहनतकश हैं। अगर अपना लक्ष्य तुमको दुनिया में सबसे प्यारा हो तो लाओ अपना हाथ दो और चलो हम लोग कल से दोस्त की तरह काम करें। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि तुम अपने

दिमाग से सारा कूड़ा-करकट निकाल दो और किसी तरह की साज़-बाज़ में न पड़ो, वरना अगर काम में कोई ज़रा सी भी गड़बड़ी हुई तो हर बार हमारे बीच महाभारत होगा। लो ये लो, यह रहा मेरा हाथ, यह दोस्ती का हाथ है।"

स्वेतायेव की खुरदुरी उँगलियाँ उसकी हथेली पर आकर जमीं तो कोर्चागिन को बड़े गहरे सन्तोष की अनुभूति हुई।

एक हफ्ता गुज़र गया। पार्टी की ज़िला-कमिटी में काम का समय खतम होने आ रहा था। दफ्तरों में शान्ति छा गई थी। मगर तोकारेव अब भी अपनी मेज़ पर बैठा काम कर रहा था। वह अपनी कुरसी पर बैठा एकदम ताज़ी रिपोर्टों को देख रहा था जब कि दरवाजे पर एक दस्तक पड़ी।

"चले आओ!"

कोर्चागिन अन्दर आ गया और उसने सेक्रेटरी की मेज पर प्रश्नावलियों के दो भरे हुए फ़ार्म रख दिए।

"यह क्या है?"

"यह गैर-जिम्मेदारी का खातमा है। और अगर आप मुझसे पूछें तो अब इस चीज को और टाला भी नहीं जा सकता। यों ही बहुत देर हो गई। अगर आप भी मेरी राय के हों और इस काम में मेरी सहायता कर सकें तो मैं आपका बड़ा कृतज्ञ होऊँगा।"

तोकारेव ने उड़ती हुई दृष्टि शीर्षक पर डाली, इस नौजवान को देखा और अपना क़लम उठा लिया। "रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की उम्मीदवार मेम्बरी के लिए पावेल आन्द्रिएविच कोर्चागिन की सिफ़ारिश करने वाले साथी की पार्टी ज़िन्दगी कब से शुरू हुई?" इस शीर्षक के नीचे उसने मज़बूत हाथ से "१९०३" लिखा और अपना हस्ताक्षर कर दिया।

"यह लो बेटा। मैं जानता हूँ कि तुम कभी मेरे सफेद बालों को लज्जित नहीं होने दोगे।"

कमरा इतना गरम था कि दम घुट रहा था। सबके दिमाग में बस एक यही खयाल सबसे ऊपर था कि कैसे जल्दी से जल्दी सोलोमेंका के शाहबलूत के दरख्तों की शीतल छांह में पहुँच जायें।

"खतम करो पावका, अब मुझसे एक मिनट भी और यह चीज़ बर्दाश्त न

होगी," स्वेतायेव ने, जिसके शरीर से पसीने का परनाला जारी था, अनुनय के स्वर में कहा। कात्युशा और दूसरों ने उसका समर्थन किया।

पावेल कोर्चागिन ने किताब बन्द कर दी और स्टडी सर्किल खतम हुआ।

जब वे लोग उठे तो दीवार पर टंगे हुए पुरानी चाल के एरिक्सन टेलीफ़ोन की घंटी घनघनाई। स्वेतायेव ने टेलीफ़ोन लिया, मगर कमरे में इतना शोर मच रहा था कि अपनी बात सुनाने के लिए उसे ज़ोर से टेलीफ़ोन में बोलना पड़ रहा था।

उसने रिसीवर रख दिया और कोर्चागिन की तरफ़ मुड़ा।

"पोलिश दूतावास के दो रेल के डब्बे स्टेशन पर हैं। उनकी बत्ती बुझ गई है, तार में कोई गड़बड़ी है। एक घंटे में गाड़ी छूटेगी। थोड़े से औज़ार ले लो पावेल और लपक कर जाओ उसे ठीक कर दो। यह बहुत ज़रूरी काम है।"

पहले प्लेटफ़ार्म पर, सोने वाले मुसाफ़िरों के दो डब्बे खड़े थे। उनके शीशे और पालिश किये हुए पीतल के उनके हिस्से चमक रहे थे। सब लोगों के बैठने के डब्बे में, जिसमें बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ थीं, खूब रोशनी थी। मगर उससे लगे हुए डब्बे में अंधेरा था।

पावेल उस खूबसूरत शानदार पुलमैन के पावदान तक गया और डब्बे में दाखिल होने के इरादे से उसमें लगे हुए लोहे के डण्डे को पकड़ लिया।

स्टेशन की दीवार से जल्दी से अलग होती हुई एक आकृति ने पावेल के कन्धे पकड़ लिये।

"कहाँ जा रहे हो?"

यह आवाज़ पहचानी हुई थी। पावेल मुड़ा और उसने उस आदमी की जाकट, चौड़े माथे की टोपी, उसकी पतली सी टेढ़ी नाक और उसकी सतर्क, शंकालु आँखों को देखा।

यह आर्त्युखिन था। उसने पहले पावेल को नहीं पहचाना। मगर अब उसका हाथ पावेल के कन्धे से गिर पड़ा और उसके चेहरे का तनाव हलका हो गया; मगर वह बदस्तूर अपनी प्रश्न करती हुई आँखों से औज़ारों की पेटी को देखता रहा।

"तुम कहाँ जा रहे थे?" उसने कुछ कम खिंचे-तने स्वर में पूछा।

पावेल ने संक्षेप में बतलाया। फिर डब्बे के पीछे से एक और आकृति सामने आई।

"एक मिनट रुकिए, मैं उनके कंडक्टर को बुलाता हूँ।"

कोर्चागिन जब कंडक्टर के पीछे-पीछे उस सलून गाड़ी में दाखिल हुआ तो उसने कई लोगों को बाकायदा सफ़री कपड़े पहने हुए बैठे देखा। किसी के कपड़े

में कोई नुक़्स नहीं निकाला जा सकता था। एक औरत दमश्क़ के कपड़े के मेज़ पोश से ढँकी हुई एक मेज़ से लगी दरवाज़े की तरफ़ पीठ किये बैठी थी। जिस वक़्त पावेल अन्दर दाख़िल हुआ, वह अपने सामने खड़े हुए एक लम्बे अफ़सर से बात कर रही थी। एलेक्ट्रीशियन के आते ही उन्होंने अपनी बातचीत बन्द कर दी।

कोर्चागिन ने फुर्ती से उन तारों की जाँच की जो आख़िरी बत्ती से गलियारे तक दौड़ रहे थे। मगर उसे बिलकुल ठीक पाकर वह गड़बड़ी की तलाश में उस डब्बे से निकल कर दूसरे डब्बे में चला गया। वह मोटा-तगड़ा साँड़ की सी गर्दन वाला कंडक्टर पावेल के पीछे-पीछे चल रहा था। उसकी वर्दी पीतल के बड़े-बड़े बटनों से चमक रही थी, जिन पर पोलैंड का राज्य-चिह्न ईगिल बना हुआ था।

"चलिए हम लोग अगला डब्बा देखें, यहाँ तो सब ठीक है। बैटरी काम कर रही है। गड़बड़ वहाँ पर होगी।"

कंडक्टर ने दरवाज़े के अन्दर चाभी घुमाई और वे दोनों अंधेरे गलियारे में पहुँच गये। तारों के ऊपर अपनी टार्च की रोशनी फेंकते हुए पावेल को जल्दी ही वह जगह मिल गई जहाँ शार्ट-सर्किट हो रहा था। कुछ ही मिनट बाद गलियारे में बत्ती जल गई और गलियारा रोशनी से भर उठा।

कोर्चागिन ने अपने गाइड से कहा, "कम्पार्टमेंट के बल्ब बदलने होंगे। वे जल गये हैं।"

"उस हालत में हमें उस महिला को बुलाना होगा, उसी के पास चाभी है।" कंडक्टर एलेक्ट्रीशियन को डब्बे में अकेला नहीं छोड़ना चाहता था, इसलिए उसने पावेल को अपने पीछे-पीछे आने के लिए कहा।

पहले वह महिला कम्पार्टमेंट में दाख़िल हुई और फिर उसके पीछे-पीछे कोर्चागिन आया। कंडक्टर रास्ता रोके हुए दरवाज़े में खड़ा रहा। पावेल ने चमड़े के दो बहुत टाठदार सफ़री झोले, सीट पर लापरवाही से फेंका हुआ एक रेशमी चोगा, इत्र की एक बोतल और खिड़की के पास मेज़ पर एक छोटा सा फ़ैशनेबुल स्त्रियों वाला वैनिटी केस देखा। वह स्त्री कोच के एक सिरे पर बैठी हुई थी और अपने सुनहले बालों में हाथ फेरती हुई बिजली वाले को काम करते हुए गौर से देख रही थी।

कंडक्टर ने कुछ मुश्किल से अपनी सांड़ जैसी गर्दन को झुकाते हुए बड़े स्वामिभक्त नौकर के ढंग से कहा, "श्रीमती जी, मुझे ज़रा देर के लिए जाने की इजाज़त देंगी? मेजर साहब ने थोड़ी सी ठण्डी बियर मँगाई है।"

"तुम जा सकते हो," उस औरत ने बनावटी रोबदाब से जवाब दिया।

यह बात पोलिश ज़बान में हुई थी।

गलियारे से आती हुई रोशनी उस औरत के कन्धे पर पड़ रही थी। लियों के बेहतरीन रेशम का बना हुआ उसका लाजवाब गाउन, जिसे पेरिस के बेहतरीन दर्ज़ियों ने सिया था, उसके कन्धे से गिर पड़ा था और उसकी बाँहें नंगी थीं। कानों में हीरे के बुन्दे दप-दप चमक रहे थे। कोर्चागिन सिर्फ़ एक कन्धे और बाँह को देख पा रहा था और वे हाथी दाँत के बने हुए से जान पड़ते थे। चेहरा छाया में था। तेज़ी से पेंचकश को चलाते हुए पावेल ने छत में के तार बदल दिये और पल भर बाद कम्पार्टमेंट में बत्तियाँ जल उठीं। अब उसे सिर्फ़ उस सोफ़े के ऊपर का बल्ब देखना था जिस पर वह औरत बैठी हुई थी।

"मुझे उस बल्ब को देखना है," कोर्चागिन ने उस औरत के सामने जाकर रुकते हुए कहा।

औरत ने बिलकुल ठीक रूसी ज़बान में जवाब दिया, "अरे हाँ, मैं तुम्हारे रास्ते में आ रही हूँ।" वह हलके क़दमों से उठी और जाकर पावेल के बग़ल में खड़ी हो गई। अब पावेल उसको पूरी तरह देख सका। उसकी वह कमानीदार भवें और सम्पुटित, उपेक्षापूर्ण ओंठ उसके पहचाने हुए थे। इसमें कोई सन्देह ही न हो सकता था: यह वही वकील की लड़की नेली लेशचिन्स्की थी। पावेल के चेहरे पर अचम्भे का जो भाव था, उस स्त्री ने भी उसको लक्ष्य किया। मगर गोकि पावेल उसको पहचान रहा था, तो भी वह खुद इन पिछले चार बरसों में इतना बदल गया था कि नेली लेशचिन्स्की यह नहीं समझ सकी कि यह बिजली वाला उसी का फ़सादी पड़ोसी है।

पावेल आश्चर्य से उसको घूर रहा था। यह चीज़ लेशचिन्स्की को बुरी मालूम हुई और उसके माथे में बल पड़ गये। वह कम्पार्टमेंट के दरवाज़े के पास चली गई और वहाँ खड़ी बेचैनी से अपने पेटेन्ट जूते की एड़ी ज़मीन पर धीमे-धीमे पटकने लगी। पावेल ने दूसरे बल्ब की जाँच शुरू की। उसने पेंच को खोला, बल्ब को रोशनी के सामने उठा कर देखा और न जाने कैसे अचानक उससे पोलिश में पूछ बैठा:

"क्या विक्टर भी यहीं है?"

बोलते समय पावेल पीछे नहीं मुड़ा था। उसने नेली के चेहरे को नहीं देखा। मगर उसके सवाल के बाद जो लम्बी खामोशी आई उससे यह बात ज़ाहिर थी कि वह स्त्री घबराहट में पड़ गई थी।

"क्यों, तुम उसे जानते हो क्या?"

"हाँ, और बहुत अच्छी तरह। लगता है आप भूल गईं। हम लोग पड़ोसी थे।" पावेल उसको देखने के लिए पीछे मुड़ा।

" तुम····तुम पावेल हो, मेरी···· " नेली बात कहते-कहते मारे घबराहट के रुक गई।

" ···रसोईदारिन का बेटा, " कोर्चागिन ने उसकी बात पूरी की।

" मगर देखने में तो तुम कैसे बड़े से हो गये! उस वक़्त तो तुम बस छोकरे थे, हाँ लड़ने-भिड़ने में तुम ज़रूर तेज़ थे।"

नेली ने उसे सिर से पैर तक बहुत ध्यान से देखा।

" तुम विक्टर के बारे में क्यों पूछते हो? जहाँ तक मुझे याद है, तुम और वह आपस में कुछ बड़े दोस्त तो थे नहीं, " उसने अपनी सुरीली आवाज़ में कहा। वह बड़ी उकताहट महसूस कर रही थी और इस अचानक मुलाक़ात से उसे कुछ राहत सी मिली।

पेंच तेज़ी से दीवार के अन्दर घुस गया।

" मेरा एक कर्ज़ है जिसे विक्टर ने अभी तक नहीं चुकाया। उससे मिलो तो कह देना कि उसे चुकता कराने की उम्मीद मैंने अभी नहीं छोड़ी है।"

" मुझे बता दो कि उसको तुम्हारा कितना देना है और मैं उसकी तरफ़ से दे दूंगी।" उसको अच्छी तरह मालूम था कि कोर्चागिन किस कर्ज़ की बात कर रहा है। उसे मालूम था कि विक्टर ने ही पावेल को पेतलुरा के सिपाहियों के हाथ में दिया था। मगर इस 'आवारे' का मज़ाक बनाने के ख़याल से उसने जान-बूझकर यह अपमानजनक रवैया अख़्तियार किया था।

कोर्चागिन ने कुछ नहीं कहा।

" बताओ, क्या यह बात सच है कि हमारा मकान लूटा गया है और अब टूट-फूट रहा है? निश्चय ही वह ग्रीष्म-कुंज और वे तमाम झाड़ियाँ उखाड़ डाली गई होंगी, " नेली ने पूछा, उसके स्वर में अपनी उस लुटी हुई दुनिया की प्यास थी।

" वह मकान अब तुम्हारा नहीं हमारा है और अपनी ही जायदाद को अब हम तबाह और बर्बाद नहीं करेंगे।"

नेली मज़ाक उड़ाने के ढंग पर धीरे से हँसी।

" ओह, देखती हूँ कि तुम अच्छी तरह दीक्षित हो गये हो! मगर इस बात को न भूलना कि यह गाड़ी पोलिश मिशन की है और यहाँ पर मैं स्वामिनी हूँ और तुम नौकर, जैसे कि तुम हमेशा थे। तुम इसलिए काम कर रहे हो कि यहाँ रोशनी आ जाय ताकि मैं इस सोफ़े पर आराम से लेट कर पढ़ सकूँ, समझे! तुम्हारी माँ हमारे कपड़े धोती थी और तुम उसे पानी ला लाकर दिया करते थे। हम फिर बहुत-कुछ उन्हीं परिस्थितियों में एक-दूसरे से मिल रहे हैं।"

उसकी आवाज में विजय की द्वेषपूर्ण गूँज थी। अपने चाकू से तार को छीलते हुए पावेल ने उस पोलिश औरत को ऐसी निगाहों से देखा जिनमें घृणा साफ़-साफ़ झलक रही थी।

" अगर तुम्हारे लिए काम करने की बात होती तो मैं यहाँ एक जंग लगी कील भी न ठोंकता। लेकिन चूँकि पूँजीपतियों ने कूटनीतिज्ञों का आविष्कार किया है, इसलिए हमको भी वही खेल खेलना पड़ता है। हम उनकी गर्दन नहीं उड़ाते, इतना ही नहीं उनके साथ शिष्टाचार का व्यवहार करते हैं, मगर तुममें तो इसका भी शऊर नहीं।"

नेली के गाल लाल हो गये।

" मान लो तुम वारसा फ़तह कर लो तो मेरे साथ क्या सलूक करोगे ? मैं समझती हूँ कि तुम मेरा क़ीमा बना दोगे, या शायद मुझको रख लो ?"

वह दरवाजे में बड़ी अदा के साथ खड़ी थी, उसके नथने, जो कोकीन से अब अपरिचित नहीं थे, फड़क रहे थे। सोफ़े के ऊपर की बत्ती जल गई थी। पावेल उठ कर सीधा खड़ा हो गया।

" तुमको ? तुम्हें मार कर कौन अपना हाथ ख़ामख़ाह ख़राब करेगा ! तुम तो यों ही हमारे बिना हाथ लगाये ही कोकीन की ज़्यादती से टें हो जाओगी। और जहाँ तक तुमको रखने की बात है, मैं सड़क पर की किसी वेश्या को ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

उसने अपना औज़ारों का डब्बा उठाया और दरवाजे की तरफ़ बढ़ा। नेली उसको रास्ता देने के लिए एक ओर को हट गई। वह गलियारे में आधे रास्ते गया होगा कि उसने अपने पीछे नेली के मुँह से निकली हुई यह गाली सुनी :

" बदमाश बोल्शेविक !"

उसके अगले रोज शाम को जब पावेल लाइब्रेरी की ओर जा रहा था तो रास्ते में उसे कात्युशा जेलेनोवा मिली। उसने अपने छोटे-छोटे हाथों से उसकी आस्तीन पकड़ ली और हँसते हुए उसका रास्ता रोक कर खड़ी हो गई।

" कहाँ तेजी से भागे जा रहे हो, राजनीति और ज्ञान के पंडित ?"

पावेल ने उसी दिल्लगी के स्वर में जवाब दिया, " लाइब्रेरी जा रहा हूँ चाची, मुझे जाने दो !" उसने हल्के से कात्युशा के कंधों को पकड़ा और उसे एक ओर को हटा दिया। कात्युशा ने उसके हाथों से अपने को छुड़ा लिया और उसके साथ-साथ चलने लगी।

" मेरी बात सुनो पावलुशा ! यह भी कैसी बात है कि तुम हर वक्त पढ़ते ही रहते हो, जरा सोचो तो यह भी कहीं होता है। सुनो मैं एक बात कहती हूँ— चलो हम लोग आज रात एक पार्टी में चलें। जीना ग्लेडिश के यहाँ सब लोग मिल रहे हैं। लड़कियाँ मुझसे बराबर कहा करती हैं कि मैं तुम्हें ले आऊँ, मगर आजकल तुम्हें पढ़ने के अलावा कोई बात ही नहीं सूझती। क्या कभी तुम्हें किसी मनोरंजन की जरूरत नहीं पड़ती ? ऐसे मौकों पर एकाध बार पढ़ाई को छोड़ देना भी तुम्हारे लिए अच्छा ही पड़ेगा, " कात्युशा ने इसरार करते हुए कहा।

" कैसी पार्टी है यह ? हम लोग क्या करेंगे वहाँ ? "

" हम लोग क्या करेंगे ! " कात्युशा ने मुस्कुरा कर उसका मजाक बनाने की कोशिश करते हुए कहा, " अरे करेंगे क्या, भगवान की प्रार्थना तो करेंगे नहीं, नाचेंगे, गायेंगे, मौज-मजा लेंगे और क्या। तुम अकार्डियन बजाते हो न ? मैंने कभी तुमको बजाते नहीं सुना, एक बार भी नहीं ! आज जरूर चलो और चल कर बजाओ, चलोगे न ? मेरी खातिर ? जीना के चचा के पास अकार्डियन तो है, मगर बजाना-वजाना उसे नहीं आता। लड़कियों को तुममें बड़ी दिलचस्पी है, मगर तुम्हें अपनी किताबों से ही फुरसत नहीं, अजब किताबी कीड़े हो। यह किसने कहा कि कोमसोमोलों को दिल-बहलाव के लिए कुछ न करना चाहिए ? चलो-चलो, तुम्हें तो मनाते-मनाते मेरी जान पर बन आई। नहीं चलोगे तो हमारा झगड़ा हो जायगा और फिर मैं तुमसे महीने भर तक नहीं बोलूँगी। "

कात्या मकानों के रंग-रोगन का काम करती थी। वह बड़ी अच्छी कामरेड थी और कोमसोमोल की सबसे कर्मठ सदस्याओं में से एक। पावेल इस लड़की का दिल नहीं दुखाना चाहता था। लिहाजा उसने कात्या की बात मान ली, गोकि इसमें शक नहीं कि ऐसी पार्टियों में उसे बड़ा अटपटा सा लगता था, खासी, परेशानी होती थी।

इंजन ड्राइवर ग्लेडिश के घर पर तमाम नौजवानों की शोर मचाती हुई भीड़ इकट्ठा थी। बड़े लोग दूसरे कमरे में चले गए थे और वह बड़ा कमरा और सायबान, जो सामने वाले छोटे से बाग़ीचे में खुलता था, उन्होंने इन पन्द्रह लड़के-लड़कियों के लिए छोड़ दिया था। " कबूतर चुगाने " का खेल चल रहा था जब कात्युशा पावेल को लेकर बागीचे में से होकर सायबान में आई। सायबान के बीचोबीच दो कुरसियाँ पीठ से पीठ जुटा कर रखी हुई थीं। गृहस्वामिनी खेल का नेतृत्व कर रही थी। उसके आवाज देने पर एक लड़का और एक लड़की आकर कुरसियों पर पीठ से पीठ लगा कर बैठ गए और जब उसने आवाज दी, " अब कबूतरों को चुगाओ ! " तो लड़का और लड़की दोनों पीछे को झुके और

उनके ओंठ मिल गए। दर्शकों को इसमें बड़ा आनन्द मिल रहा था। इसके बाद उन्होंने "अँगूठी" और "डाकिये की दस्तक" नाम के दो खेल खेले। यह दोनों चुम्बन के खेल थे गो कि "डाकिये की दस्तक" में खेलने वाले खुलेआम रोशनी से चमकते सायबान में एक-दूसरे को न चूम कर कमरे में रोशनी बुझा कर चूमते थे। उन लोगों के लिए, जिन्हें इन दोनों खेलों में दिलचस्पी न थी, एक कोने में छोटी सी गोल मेज पर "फ्लावर फ्लर्ट" ताशों की गड्डी रखी थी। पावेल के बग़ल में क़रीब सोलह साल की एक लड़की थी जिसकी आँखें हल्की नीली थीं और जिसने मुरा कह कर अपना परिचय दिया। उस लड़की ने नजाकत से उसको देखते हुए उसे एक ताश दिया और धीमे से कहा :

"वायलेट।"

कुछ बरस पहले पावेल ऐसी पार्टियों में शरीक हुआ था और गोकि वह खुद इन सारी मस्तियों में शरीक नहीं हुआ था, तो भी उसने इसमें कोई बुराई नहीं देखी थी और यही समझता था कि यह एक आम क़ायदा है। मगर अब कस्बे की निम्न मध्य-वर्गीय जिन्दगी से हमेशा के लिए नाता तोड़ लेने पर उसको यह पार्टी बड़ी घृणित लगी और उसे कुछ-कुछ हँसी भी आई।

मगर वह तो खैर जो था सो था, अभी उसके हाथ में वह "फूल वाला" ताश था।

"वायलेट" के सामने लिखा था : "मैं तुम्हें बहुत पसन्द करती हूँ।"

पावेल ने आँख उठा कर उस लड़की को देखा। उस लड़की ने बिना झिझक पावेल की निगाह का जवाब दिया।

"क्यों?"

अपना यह सवाल पावेल को बड़ा बेहूदा सा मालूम हुआ। मगर मुरा के पास जवाब तैयार था।

उसने धीरे से कहा, "गुलाब" और पावेल को दूसरा पत्ता पकड़ा दिया।

गुलाब वाले पत्ते पर लिखा था : "तुम मेरे आदर्श हो।" कोर्चागिन उस लड़की की तरफ़ मुड़ा और अपनी आवाज़ को नर्म बनाने की कोशिश करते हुए उसने पूछा :

"यह सब बेहूदगियाँ तुम क्यों करती हो?"

पावेल की बात सुन कर मुरा तो स्तब्ध सी रह गई और उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे।

"मेरी बात तुमको बुरी लगी क्या?" उसने मान करती हुई छोकरी की तरह ओंठ निकालते हुए कहा।

पावेल ने इस सवाल पर कोई ध्यान नहीं दिया, मगर वह इस लड़की के बारे में और जानने के लिए उत्सुक था। उसने उससे बहुत से सवाल पूछे जिनका उस लड़की ने खुशी-खुशी जवाब दिया। कुछ ही मिनटों में वह जान गया कि वह लड़की माध्यमिक स्कूल में पढ़ने जाती है, उसका बाप कारखाने में काम करता है और यह कि वह पावेल को बहुत दिनों से जानती है और उससे परिचित होना चाहती थी।

पावेल ने पूछा, "तुम्हारा दूसरा नाम क्या है?"

"वोलिन्तसेवा।"

"तुम्हारा भाई रेलवे यार्ड की कोमसोमोल सेल का मन्त्री है न?"

"हाँ।"

अब कोर्चागिन परिचित भूमि पर था। यह बात उसके नजदीक अब साफ़ थी कि उस इलाक़े के सबसे सक्रिय कोमसोमोलों में से एक वोलिन्तसेव अपनी ही बहन को किसी तरह की राजनीतिक शिक्षा या संस्कार नहीं दे रहा था। वह क़स्बे की दूसरी मध्य-वर्गी लड़कियों की तरह, उन्हीं जैसे संस्कार लेकर बड़ी हो रही थी। पिछले साल वह और उसकी सहेलियाँ ऐसी न जाने कितनी ही चुम्बन-गोष्ठियों में शरीक़ हुई थीं। उसने पावेल को बतलाया कि कई बार उसने उसको अपने भाई के यहाँ देखा था।

मुरा ने महसूस किया कि उसके पड़ोसी को उसका आचरण पसन्द नहीं आया। कोर्चागिन के चेहरे की उपेक्षापूर्ण मुस्कराहट को देख उसने आवाज़ दिये जाने पर भी "कबूतर चुगाने" के खेल में हिस्सा लेने से साफ़ इनकार कर दिया। वे दोनों और भी चन्द मिनट तक बैठे एक-दूसरे से बात करते रहे और मुरा पावेल को अपने बारे में बतलाती रही जब कि जेलेनोवा उन लोगों के पास आई।

"मैं तुम्हारे लिए अकार्डियन ले आऊँ?" उसने पूछा और शरारत-भरी निगाहों से मुरा को देखते हुए इतना और जोड़ा, "लगता है तुम लोगों में बड़ी दोस्ती हो गई?"

पावेल ने कात्युशा को अपने पास बिठाल लिया और अपने आसपास के शोर-शराबे और हँसी की आवाज़ों का फ़ायदा उठाते हुए बोला:

"मैं नहीं बजाऊँगा। हम दोनों जा रहे हैं।"

जेलेनोवा ने ताने के स्वर में कहा, "ओहो! अच्छा तो गरज तीर लग चुका है, क्यों?"

"ठीक कहती हो। अच्छा बताओ कात्युशा, हमारे अलावा यहाँ कोम-सोमोल के और भी कोई लोग हैं? या सिर्फ हम लोग ही 'कबूतर प्रेमी' हैं?"

कात्युशा ने जैसे पावेल को मनाते हुए कहा, "अब यह सब बचपना खतम करके हम लोग नाचना शुरू करेंगे।"

कोर्चागिन उठा।

"बहुत अच्छा तुम नाचो मगर हम दोनों तो चलते हैं।"

एक रोज शाम को आना बोर्हार्ट ओकुनेव के घर आई और वहाँ उसने कोर्चागिन को अकेले पाया।

"क्या तुम बड़े व्यस्त हो पावेल? मेरे साथ शहर की सोवियत के खुले इजलास में चलोगे? मैं अकेले नहीं जाना चाहती। खास कर इसलिए कि लौटने में काफ़ी देर हो जायगी।"

कोर्चागिन जाने के लिए फ़ौरन तैयार हो गया। वह अपने बिस्तरे के ऊपर लटकती हुई माउजर को उठाने ही वाला था, मगर यह सोच कर इरादा बदल दिया कि वह ज़्यादा भारी पड़ेगी। लिहाज़ा उसने दराज़ में से ओकुनेव का रिवाल्वर निकाला और उसे अपनी जेब में डाल लिया। ओकुनेव के लिए उसने एक पुर्ज़ा लिख कर रख दिया और चाभी ऐसी जगह रख दी जहाँ उसके कमरे के साथी को वह मिल जाय।

शहर सोवियत का इजलास थियेटर हॉल में हो रहा था। वहाँ पर उनकी मुलाक़ात पांक्रातोव और ओल्गा यूरेनेवा से हुई। वे सब साथ-साथ हॉल में बैठे और इण्टरवलों में संग-संग टोली बना कर स्क्वायर में टहलते थे। आना का जैसा खयाल था मीटिंग बड़ी देर में खतम हुई।

ओल्गा ने प्रस्ताव किया, "कैसा हो अगर तुम मेरे घर पर चल कर रात गुज़ारो? देर हो गई है और तुम्हें बहुत दूर जाना है।"

मगर आना ने इनकार कर दिया और बोली, "पावेल ने मुझे घर पहुँचाने का वादा किया है।"

पांक्रातोव और ओल्गा संग-संग बड़ी सड़क पर चल दिये और आना और पावेल ने सोलोमेंका का चढ़ाई वाला रास्ता पकड़ा।

यह एक अंधेरी रात थी, हवा बन्द थी और दम घुट रहा था। जिस वक़्त शहर सोवियत की इजलास में हिस्सा लेने वाले ये लोग अपने-अपने घरों की तरफ़ जा रहे थे, शहर सो रहा था। धीरे-धीरे उनके क़दमों की आहट और उनकी आवाज़ें डूब गईं। पावेल और आना शहर के बिचले हिस्से से दूर तेज़ी से चले जा रहे थे। बाजार में, जो रात के वक़्त उजाड़ सा था, गश्त करने वाले सिपाहियों

की एक टोली ने उनको रोका और उनके काग़ज़ात का मुआइना किया और फिर उन्हें आगे बढ़ जाने दिया। उन्होंने बड़ी सड़क को पार किया और फिर एक अंधेरी खामोश गली में पहुँचे जो एक सूने उजड़े से खित्ते को काटती थी। बाईं तरफ मुड़ते हुए वे रेलवे के खास गोदामों के समानान्तर बड़ी सड़क पर आगे बढ़ते रहे। रेलवे गोदाम की इमारतें सीमेंट की थीं और इस अंधेरे में उनकी लम्बी क़तार और भी डरावनी लग रही थी। आना के मन में न जाने क्यों एक धुँधली सी आशंका थी, वह घबराई हुई अंधेरे में आँख गड़ा कर देख रही थी जैसे अपनी निगाहों से अंधेरे को चीर रही हो और अपने साथी के सवालों का जवाब अटक-अटक और रुक-रुक कर दे रही थी। जब वह भयानक छाया जिससे आना को डर लग रहा था केवल टेलीफ़ोन का एक खम्भा निकली तो वह ज़ोर से हँस पड़ी और अपनी घबराहट की बात उसने पावेल से कही। उसने पावेल की बाँह पकड़ ली और पावेल के कन्धे के भार को अपने कन्धे पर महसूस करते हुए उसके दिल को बहुत ढाढ़स मालूम हुआ।

"मैं अभी सिर्फ़ तेईस बरस की हूँ, मगर घबराहट के मामले में किसी बुढ़िया से कम नहीं। अगर तुम मुझे बुज़दिल समझो तो यह तुम्हारी गलती होगी। मगर पता नहीं क्यों आज रात मैं एक अजीब परेशानी और बेचैनी सी महसूस कर रही हूँ, गो इसमें शक नहीं कि तुम्हारे साथ रहने से मैं अपने आपको काफ़ी महफ़ूज़ समझती हूँ और सच बात तो यह है कि मुझे इस तरह अपने डरने पर शर्म आ रही है।"

और सचमुच पावेल की गम्भीर शान्ति, उसकी जलती हुई सिगरेट जो बीच-बीच में पल भर के लिए उसके चेहरे के एक भाग को आलोकित कर देती थी और उस आलोक में उसकी साहसी लोगों जैसी भवें दिख जाती थीं—इन सब चीजों ने उन डरों और आशंकाओं को दूर भगा दिया जिन्हें अंधेरी रात, उस जगह के सूनेपन और उस कहानी ने पैदा किया था जिसे अभी उन्होंने मीटिंग में सुना था। मीटिंग की अगली रात को शहर के छोर पर एक बड़ा भयानक क़त्ल हो गया था, उसीकी कहानी उन्हें सुनने को मिली थी।

मालगोदाम पीछे छूट गया। एक छोटी सी खाड़ी थी जिस पर पुल बना हुआ था। उन्होंने उस पुल को पार किया और रेलवे लाइन के नीचे-नीचे चलने वाली टनेल को जाने वाली सड़क पर बढ़ते रहे। यही टनेल शहर के इस हिस्से को रेलवे के इलाक़े से जोड़ती थी।

स्टेशन की इमारत दाहिनी तरफ़ को अब उनके बहुत पीछे छूट गई थी। यह सड़क डिपो के उस पार एक अन्धी गली में खतम होती थी। वे अब समतल

जमीन पर पहुँच गये थे। ऊपर रेलवे लाइन के आसपास स्विचों और रेलगाड़ी की आमद बतलाने वाले आले की रंगीन रोशनियाँ अन्धेरे में चमक रही थीं और डिपो के पास एक यार्ड इंजन रात को घर लौटता हुआ मारे थकान के लम्बी साँस छोड़ रहा था।

टनेल के मुहाने पर एक सड़क का लैम्प जंगदार कांटे से लटक रहा था। हवा में वह हलके-हलके हिल रहा था जिससे उसकी धुँधली पीली रोशनी कभी टनेल की एक दीवार पर और कभी दूसरी दीवार पर पड़ रही थी।

टनेल के मुहाने से क़रीब दस गज़ पर, बड़ी सड़क के पास एक छोटी सी बंगलिया अकेली खड़ी थी। दो साल पहले तोप के एक गोले ने उसके भीतरी हिस्से को तबाह कर दिया था और उसके अगवाड़े को खण्डहर बना दिया था। लिहाज़ा इस वक्त अब वहाँ एक बड़ा सा गढ़ा बना हुआ था और वह बंगलिया अपनी दरिद्रता का प्रदर्शन करते हुए सड़क के किनारे किसी भिखारी की तरह खड़ी थी। ऊपर से एक रेलगाड़ी के गरजने की आवाज आ रही थी।

"हम लोग अब करीब-करीब घर पहुँच गये," आना ने चैन की साँस लेते हुए कहा।

पावेल ने आना की नज़र बचा कर अपनी बाँह को छुड़ाने की कोशिश की। मगर आना ने उसकी बाँह नहीं छोड़ी। वे लोग उस उजड़े हुए घर के पास से गुज़र गये।

तभी अचानक उन्हें अपने पीछे कुछ आवाजें सुनाई दीं। ये दौड़ते हुए पैरों और ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने की आवाजें थीं। पीछे के लोगों ने उन्हें आकर पकड़ लिया।

कोर्चागिन ने अपनी बाँह को झटका दिया मगर डरी हुई आना उसे पूरे ज़ोर से पकड़े हुए थी। और इसके पहले कि वह अपनी बाँह को छुड़ा सके, मौका हाथ से निकल चुका था, उसकी गर्दन को किसी ने अपने मजबूत पंजे में ले लिया था। एक लहमा और गुज़रा और उसे ऐसा झटका लगा कि वह घूम कर अपने हमला करने वाले के सामने आ गया। वह हाथ उसके गले की तरफ बढ़ा और उसके ट्यूनिक के कालर को इतना मरोड़ते हुए कि पावेल का गला घुटने लगा, उसने रिवाल्वर की नली उसके मुँह से अड़ा दी।

पावेल की डरी और ठहरी हुई आँखें अपने भीतर का सारा ज़ोर लगा कर अतिमानवी तनाव से रिवाल्वर का घूमना देख रही थीं। रिवाल्वर की नली में से मौत उसे घूर रही थी और उसके अन्दर न तो इतनी शक्ति थी, न इतनी इच्छा-शक्ति कि एक पल के लिए भी अपनी आँख को रिवाल्वर की नली से हटा सकता।

वह अपनी मौत का इन्तजार करता खड़ा रहा। मगर आक्रमणकारी ने गोली नहीं चलाई और पावेल की फैली हुई आँखों ने उस लुटेरे के चेहरे को देखा, उसके बड़े से खोपड़े को, उसके भारी जबड़े को, और उसकी कई दिन की दाढ़ी और मूँछ की काली छाया को। मगर टोपी की चौड़ी बारी के नीचे उसकी आँखें नहीं दिखाई दे रही थीं।

कोर्चागिन ने अपनी आँख की कोर से आना के खड़िये की तरह सफेद चेहरे की एक हलकी सी झलक पाई। आना को उस वक़्त उन तीन लुटेरों में से एक दीवार के उस बड़े से मोखे के अन्दर घसीट ले गया। बेदर्दी से उसकी बांह को मरोड़ते हुए उसने आना को जमीन पर गिरा दिया। एक और छाया पावेल की तरफ़ लपकी, पावेल ने केवल उसकी छाया टनेल की दीवार पर देखी। उसे पीछे के उस खण्डहर मकान के भीतर हाथापाई की आवाज़ सुन पड़ी। आना जी-जान से लड़ रही थी, उसकी घुटती हुई आवाज एकाएक बन्द हो गई, जब उसके मुँह में एक टोपी ठूँस दी गई। वह बड़ी खोपड़ी वाला बदमाश जिसके हाथ में कोर्चागिन की जिन्दगी थी, बलात्कार के उस स्थल की ओर वैसे ही खिंचा जैसे कोई जंगली जानवर अपने शिकार की ओर। स्पष्ट ही वह इस गिरोह का सरदार था और उसको यह शोभा नहीं देता था कि ऐसे मामले में निष्क्रिय दर्शक बना खड़ा रहे! यह छोकरा तो अभी कल का लौंडा था, उससे डरने की कोई बात नहीं।

"इसके सिर पर कस कर दो घूँसे लगाओ और कह दो कि मैदान में होकर भाग जाय और तुम देखना वह बिना एक बार मुड़े और पीछे को ताके सरपट शहर तक भागता चला जायगा।" उसने अपनी पकड़ ढीली कर दी।

"भाग जाओ····जिधर से आये थे उधर ही को लौट जाओ और देखो चिल्लाना-विल्लाना मत, नहीं तो अभी एक गोली तुम्हारी गर्दन के पार हो जायगी," उसने अपनी बन्दूक की नली कोर्चागिन के माथे से अड़ाते हुए कहा। "अच्छा भागो," उसने अपनी फटी आवाज में धीरे से कहा और अपनी बन्दूक नीचे कर दी ताकि उसके शिकार को गोली का डर न रहे।

कोर्चागिन लड़खड़ाता हुआ पीछे हटा और आक्रमणकारी पर निगाह रखते हुए तिरछा होकर दौड़ने लगा। वह बदमाश यह देख कर कि उस छोकरे को अब भी गोली का डर लग रहा है, मुड़ा और उस खण्डहर मकान की तरफ़ बढ़ा।

कोर्चागिन का हाथ तेजी से अपनी जेब पर गया। काश कि वह काफ़ी फुर्ती से काम कर सकता! उसने घूम कर अपना बायाँ हाथ आगे बढ़ाया, जल्दी से निशाना लिया और गोली चला दी।

लुटेरे को अपनी ग़लती समझने में बहुत देर हो गई थी। उसे हाथ

उठाने का भी वक़्त नहीं मिला और गोली उसके पहलू को चीरती हुई निकल गई।

गोली लगने से वह धीमे से कराहता और लड़खड़ाता हुआ जाकर टनेल की दीवार से टकराया और दीवार को अपने पंजों से पकड़ने की कोशिश करते हुए धीरे-धीरे वहीं जमीन पर ढेर हो गया। मकान के भीतर से एक छाया चुपके से बाहर आई और नीचे गली की तरफ भागी। कोर्चागिन ने उस पर भी गोली छोड़ी। एक दूसरी छाया झुक कर कमर दुहरी किये तीर की तरह टनेल की स्याह गहराई की तरफ भागी। एक गोली चलने की आवाज हुई। गोली ने कंकरीट को फोड़ दिया और धूल उड़ी। उस काली आकृति पर भी वह धूल पड़ी। वह आकृति उछल कर एक ओर को हटी और अँधेरे में खो गई। एक बार फिर ब्राउनिंग की गोली ने रात की निस्तब्धता को चीर दिया। दीवार के पास वह बड़े से खोपड़े वाला लुटेरा अपनी मृत्यु की यंत्रणा में ऐंठ रहा था।

कोर्चागिन ने आना को उसके पैरों पर खड़ा किया। अभी जो कुछ उस पर गुजरी थी, उसके आतंक से स्तब्ध वह लुटेरे का दर्द से ऐंठना देख रही थी। मगर अब भी उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सुरक्षित है।

कोर्चागिन उसे रोशनी के घेरे से हटा कर वापस शहर की ओर बढ़ते हुए अंधेरे में घसीट ले गया। जब वे दौड़ कर रेलवे स्टेशन की तरफ़ जा रहे थे, तो रोशनियाँ टनेल के पास ऊपर टीले पर चमक रही थीं और रेलवे लाइन पर एक राइफ़िल छूटने की आवाज हुई।

बातियेवा पहाड़ी पर आना के घर पहुँचते-पहुँचते मुर्ग़े बांग देने लगे थे। आना बिस्तर पर लेट गई। कोर्चागिन मेज़ के पास बैठा सिगरेट पीता और अपनी सिगरेट के धुएँ का ऊपर उठना देखता रहा····उसने अपनी जिन्दगी में यह चौथी बार किसी की जान ली थी।

उसने अपने मन में सोचा, क्या सचमुच हिम्मत नाम की कोई चीज होती है? कोई ऐसी चीज जो सदा अपने निर्विकार रूप में दिखलाई देती हो? अपनी अनुभूतियों को दुहराते हुए उसने इस बात को अपने तईं स्वीकार किया कि उन कुछ क्षणों में जब बन्दूक की नली की भयानक काली आँख उसको घूर रही थी, उस वक़्त वह दहशत से काँप गया था, मानो दहशत ने उसके दिल को अपनी बर्फ़ानी गिरफ़्त में ले लिया हो। और वे जो दो काली छायाएँ बच कर निकल गईं, इसका कारण क्या सिर्फ़ यह था कि उसकी आँखें कमज़ोर थीं या यह कि

उसे बाएँ हाथ से गोली चलानी पड़ रही थी ? नहीं। कुछ क़दमों की दूरी पर उसका निशाना कभी नहीं चूक सकता था और वे जो दो लोग बच गये, उसका कारण सिर्फ़ यह था कि वह घबरा गया था और इसीलिए जल्दी में उसका हाथ काँप गया था।

टेबुल लैम्प की रोशनी उसके सिर ही पर सबसे ज़्यादा पड़ रही थी। आना ग़ौर से उसको देख रही थी और उसके चेहरे पर आते-जाते हर भाव को और उसके सिर के हिलने वग़ैरह को समझ रही थी। पावेल की आँखें शान्त थीं, उसकी पेशानी की झुर्रियों से ही उसके गहरे सोच का पता चल रहा था।

"तुम क्या सोच रहे हो पावेल ?"

अचानक पूछे गये इस सवाल से उसके विचार उसी तरह उड़ गये जिस तरह धुआँ उड़ता हुआ रोशनी के घेरे से बाहर चला जा रहा हो और उसने पहली बात जो दिमाग़ में आई, कह दी :

"मुझे कमांडेंट के दफ़्तर जाना ही चाहिए। इस मामले की फ़ौरन रिपोर्ट होनी चाहिए।"

बुरी तरह थकान महसूस करता हुआ वह बेमन से उठा।

आना ने उसका हाथ पकड़ लिया क्योंकि अकेले छूट जाने के ख़याल से उसे डर मालूम हो रहा था। फिर उसने पावेल को दरवाज़े तक पहुँचाया और ड्योढ़ी पर खड़ी-खड़ी उस नौजवान को, जिसकी अब वह इतनी ऋणी थी, तब तक देखती रही जब तक वह अंधेरे में खो नहीं गया।

कोर्चागिन की रिपोर्ट ने उस हत्या के रहस्य का पता चला दिया जिससे रेलवे के सन्तरी बहुत परेशान थे। फ़ौरन उस लाश की शिनाख़्त हुई और यह मालूम हुआ कि वह फ़िम्का नाम के एक नम्बरी मुजरिम की लाश थी। यह फ़िम्का नम्बरी हत्यारा और लुटेरा था और बहुत बार जेल काट आया था।

अगले रोज़ हर आदमी टनेल के पास की इस घटना के बारे में बात कर रहा था। इतना ही नहीं, यह घटना पावेल और स्वेतायेव के बीच एक अप्रत्याशित झगड़े का भी कारण बनी।

काम अभी चल ही रहा था जब स्वेतायेव वर्कशाप में आया और उसने कोर्चागिन को बात करने के लिए बुलाया। स्वेतायेव आगे-आगे ख़ामोश चला जा रहा था और गलियारे के एक दूर कोने में पहुँच गया था। वह बहुत उद्विग्न हो रहा था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बात कैसे शुरू करे। आख़िरकार उसने कहा :

"मुझे बतलाओ कल क्या हुआ।"

समझता था कि तुम्हें मालूम होगा।"

स्वेतायेव ने बेकली से अपने कन्धे उचकाये। पावेल को इस बात का पता नहीं था कि उस टनेल वाले काण्ड का असर दूसरों से कहीं ज्यादा स्वेतायेव पर हुआ था। पावेल को यह बात नहीं मालूम थी कि चाहे वह लुहार स्वेतायेव ऊपर से कितनी ही उदासीनता क्यों न दिखलाता हो, सच बात यह थी कि उसे आना बोर्हार्ट से प्रेम था। उस लड़की की ओर आकृष्ट होने वाला वह अकेला आदमी नहीं था, मगर प्रेम के तीर ने उसी को सबसे ज़्यादा बेधा था। लगुतिना ने अभी-अभी रात की टनेल वाली घटना के बारे में उसको बतलाया था और अब एक ही सवाल उसे तंग कर रहा था जिसका जवाब उसे नहीं मिला था। वह लट्ठमार तरीक़े से अपना सवाल पावेल से न कर सकता था, मगर तब भी जवाब तो उसे मिलना ही था। उसकी अच्छी भावनाओं ने उससे पूछा कि उसके मन को जो डर कुतर रहा है, वह बहुत क्षुद्र और स्वार्थी है। लेकिन उसके अन्दर जो अन्तरद्वन्द्व चल रहा था, उसमें उसके भीतर के आदिम वन्य-पशु की ही जीत हुई।

"सुनो कोर्चागिन," उसने फटी हुई भारी आवाज़ में कहा, "यह बात केवल तुम्हारे और मेरे बीच रहनी चाहिए। मैं जानता हूँ कि तुम आना की ख़ातिर उस चीज़ के बारे में कुछ बोलना नहीं चाहते, मगर तुम मेरे ऊपर तो विश्वास कर सकते हो। तुम मुझे यह बतलाओ कि जब वह लुटेरा तुम्हें अपनी गिरफ़्त में लिये हुए था, तो क्या उस वक़्त उसके दूसरे साथियों ने आना के साथ बलात्कार किया?"

घबरा कर उसने अपनी बात ख़तम करने के पहले ही अपनी आँखें नीची कर लीं।

कोर्चागिन की समझ में यह बात धुँधले तरीक़े से आने लगी कि वह कौन सी चीज़ है जो स्वेतायेव को तंग कर रही है। "अगर उसे आना की परवाह न होती और उससे कुछ लेना-देना न होता, तो वह हर्गिज़ इतना परेशान न होता। लेकिन अगर आना उसे प्रिय है तो···" और पावेल आना के प्रति उस अपमान से जल उठा जो स्वेतायेव के सवाल में निहित था।

"तुम क्यों पूछ रहे हो?"

स्वेतायेव ने मुँह ही मुँह में कुछ उखड़ी-उखड़ी सी बात कही जो समझ में नहीं आती थी। उसको लगा कि पावेल समझ रहा है कि क्या मामला है और इसीलिए उसे ग़ुस्सा आ गया:

"उलटे मुझसे सवाल करके तुम अब बचने की कोशिश न करो। मैं सीधा-सादा जवाब चाहता हूँ।"

" तुम आना से प्यार करते हो ? "

बड़ी देर तक खामोशी रही। आखिरकार स्वेतायेव ने अपने ऊपर बहुत जब्र करके जवाब दिया, " हाँ। "

कोर्चागिन कोशिश करके अपने गुस्से को दबाता हुआ मुड़ा और बिना एक बार पीछे मुड़ कर देखे सीधे गलियारे में आगे बढ़ता गया।

एक रात ओकुनेव, जो अनिश्चय की हालत में कुछ देर से अपने दोस्त के बिस्तर के पास मँडरा रहा था, आखिरकार बिस्तर के छोर पर बैठ गया और उसने उस किताब पर अपना हाथ रख दिया जिसे पावेल पढ़ रहा था।

" सुनो पावलुश्का, एक बात है जिसका बोझ मैं अपने सीने से उतारना चाहता हूँ। एक दृष्टि से तो वह बिलकुल महत्त्वहीन सी बात मालूम पड़ेगी, मगर दूसरी दृष्टि से वह उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। मेरे और तालिया लगुतिना के बीच ग़लतफ़हमी हो गई है। बात यह है कि पहले मैं उसे काफ़ी चाहता था। " ओकुनेव ने बड़े कातर ढंग से अपना सिर खुजलाया। मगर जब उसने अपने दोस्त के चेहरे पर हँसी का कोई निशान नहीं देखा तो उसे हिम्मत हुई। " मगर तालिया···तुम जानते ही हो। ठीक तो है मैं तुम्हें तमाम तफ़सील की बातें न बतलाऊँगा, जरूरत भी नहीं है, उनके बिना भी बात काफ़ी साफ़ है। कल हम दोनों ने शादी करने का फ़ैसला किया। अब देखो मामला कैसा चलता है। मैं बाईस साल का हुआ, हम दोनों को वोट देने का अधिकार है। हम दोनों बराबरी के आधार पर रहना चाहते हैं। तुम्हारा क्या खयाल है ? "

कोर्चागिन ने सवाल पर ग़ौर किया।

" मैं क्या कहूँ कोलिया ? तुम दोनों मेरे दोस्त हो, हम सब एक ही बिरादरी के लोग हैं और हमारे सबके तौर-तरीक़े एक-दूसरे से बिलकुल मिलते हैं। तालिया बहुत अच्छी लड़की है। मजे में चलेगी जिन्दगी, उसमें कहना क्या है। "

दूसरे रोज़ कोर्चागिन डिपो मजदूरों के होस्टल में चला गया और कुछ दिन बाद आना ने तालिया और निकोलाई के सम्मान में एक पार्टी दी, एक सादी सी कम्युनिस्ट पार्टी जिसमें खाना-पीना ही था। यह अपने संस्मरण सुनाने और अपनी प्रिय किताबों से टुकड़े पढ़ने की शाम थी। उन्होंने बहुत से गाने गाये और अच्छी तरह गाये। उनकी आवाजें दूर तक गूँजीं। उसके बाद कात्युशा जेलेनोवा और वोलिन्तसेवा एक अकार्डियन ले आईं और कमरा उसकी रुपहली लयों और भारी, जानदार आवाजों से गूँज उठा। उस शाम को पावेल ने और दिनों से भी

ज़्यादा अच्छा बजाया और जब सभी के दिलों में खुशी बिखेरते हुए भारी-भरकम पांकातोव ने नाचना शुरू कर दिया तो पावेल भी अपने बजाने की उदास शैली को भूल गया और बड़ी मस्ती से बजाने लगा।

देनिकिन जब जायेगा जान
कोलचक के भी कट गये कान
होगा तब वह भी सिड़ी सुलतान

अकार्डियन पिछले जमाने के गीत गा रहा था, उन तूफ़ानी सालों के गीत और आज की दोस्ती और संघर्षों और आनन्दों के गीत। मगर जब वह बाजा वोलिन्तसेव को दिया गया और जब उस मेकेनिक ने "यावलेव्को" नृत्य की मस्त धुन शुरू की तो कोर्चागिन से न रहा गया और वह सुधबुध भूल कर नाचने लगा। अपनी जिन्दगी में पावेल यह तीसरी और आखिरी बार नाचा था।

तेरहवाँ अध्याय

यह सरहद है। दो चौकियाँ हैं जो दो अलग-अलग दुनिया की प्रतीक हैं और अपनी निश्शब्द शत्रुता लिये आमने-सामने खड़ी हैं। उनमें से एक पर अच्छी तरह रन्दा किया हुआ है। उस पर पालिश भी है और काले व सफ़ेद रंग में वह रंगी हुई भी है और देखने में पुलिस बॉक्स जैसी जान पड़ती है। उसके मस्तक पर एक सिरवाला ईगल मोटे-मोटे कीलों से अपनी जगह पर अच्छी तरह टंका हुआ है। उसके डैने फैले हुए हैं, पन्जे धारीदार खम्भे को पकड़े हुए हैं, टेढ़ी चोंच खुली हुई है और वह शिकारी पक्षी अपनी द्वेषपूर्ण आँखों से सामने के उस खम्भे को देख रहा है जिस पर हँसिये-हथौड़े का निशान है। यह एक ओक का मजबूत गोला, मोटा भद्दा गढ़ा हुआ खम्भा है जो मजबूती से जमीन के ऊपर पैर जमाये खड़ा है। दोनों खम्भे समतल जमीन पर हैं, मगर उनके बीच एक गहरी खाई है और वह खाई यह है कि दोनों दो दुनियाओं के प्रतीक हैं। उनके दरमियान छः क़दमों के बराबर जो जगह है, उसे आप अपनी जान को खतरे में डाले बिना नहीं पार कर सकते।

यह सरहद है।

काले सागर से लेकर हजारों मील सुदूर उत्तर में आर्कटिक महासागर तक सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र के ये शान्त पहरुए अपने लोहे के कवच पर

श्रम का महान प्रतीक लगाये मूर्तिवत खड़े हैं। ईगल वाली चौकी पर सोवियत उक्रेन और पूँजीवादी पोलैंड की सरहदें मिलती हैं। वह उक्रेन के भीतरी प्रदेश में बेरेजदोव नामक क़स्बे से करीब आठ मील पर स्थित है और उसके सामने कोरेक नामक पोलिश क़स्बा है। स्लावुता से लेकर अनापोल तक के सरहदी इलाके में उत्तरी सरहदी बटालियन का पहरा है।

सरहद पर के ये सैनिक बर्फ़ से ढके हुए मैदानों पर मार्च करते हैं, जंगलों को काट कर उनके बीच से रास्ता बनाते हैं, नीचे वादियों में घुसते हैं और पहाड़ियों पर चढ़ते हैं, पहाड़ों की चोटियों के पीछे खो जाते हैं और एक नदी के घाट पर जाकर रुकते हैं और वहाँ से एक विरोधी देश के सर्द मैदानों को देखते हैं।

हड्डी को कँपा देने वाली सर्दी पड़ रही है। यह एक ऐसा दिन है जब पाले की वजह से फ़ेल्ट जूतों के तल्ले से दब कर बर्फ़ चरमर करती है। लाल सेना का एक भीमाकार सैनिक पौराणिक वीरों के योग्य हेलमेट लगाये हँसिये-हथौड़े वाली चौकी से निकल कर अपने भारी क़दमों से गश्त पर निकल जाता है। वह एक बड़ा सा भूरा बरानकोट और फ़ेल्ट जूते पहने है। बरानकोट के ऊपर वह एक बड़ा सा भेड़ के ऊन का कोट पहने है जो उसकी एड़ी तक पहुँचता है और जिसका कालर भी वैसा ही बड़ा है। वह बर्फ़ के भयानक से भयानक तूफ़ान में भी आदमी को गर्म रखता है। उसके सिर पर कपड़े का एक हेलमेट है और उसके हाथों में भेड़ की खाल के दस्ताने हैं। अपनी राइफिल उसने कन्धे पर लटका रखी है और गश्त लगाते समय ज़मीन पर लसरते हुए उसके कोट से बर्फ़ पर निशान बनता जाता है और वह अपने घर पर उगाई हुई तम्बाकू की सिगरेट का कश खूब मज़ा ले-लेकर खींच रहा है। खुले हुए मैदानों में सोवियत के ये सरहदी सन्तरी एक-एक किलोमीटर की दूरी पर तैनात हैं ताकि एक सन्तरी हमेशा दूसरे को देख सके। दूसरी ओर पोलिश सीमा में एक-एक किलोमीटर में दो-दो सन्तरी हैं।

एक पोलिश पैदल सिपाही अपनी गश्त के रास्ते पर बढ़ता हुआ लाल सैनिक की तरफ़ आता है। वह मोटे-मोटे फ़ौजी बूट और कुछ हरापन लिये खाकी वर्दी पहने है और उसके ऊपर एक काला कोट है जिसमें चमचमाती बटनों की दो क़तारें लगी हुई हैं। उसके सिर पर सफ़ेद ईगल का चिन्ह लिये उसकी वर्दी वाली चौखुटी टोपी है, उसके कन्धों के फ़ीतों और कालर पर और भी सफ़ेद ईगल बने हुए हैं, मगर उनसे उसके जिस्म को कोई गरमी नहीं मिलती। उस जाड़े-पाले में वह बुरी तरह ठिठुर गया है और अपने शरीर को गरमाने के लिए अपने सर्दी से सुन्न पड़े हुए कानों को घिसता है और चलते-चलते एक एड़ी को दूसरी एड़ी से भी मिला लिया करता है। मगर पतले दस्तानों के भीतर उसके

हाथ सर्दी से ऐंठे जा रहे हैं। पाला इतने जोरों से गिर रहा है और सर्दी ऐसी भयानक है कि वह पोल एक क्षण को भी कहीं रुकने की जुर्रत नहीं कर सकता, क्योंकि ख़तरा है कि पाला उसके अंग-अंग को जकड़ देगा। लिहाज़ा वह बीच-बीच में दौड़ने भी लग जाता है। जब दोनों सन्तरी पास आ गए तो पोलिश सिपाही लाल सैनिक के साथ-साथ चलने के लिए घूम पड़ा।

सरहद पर सैनिकों का आपस में बात करना मना है। मगर जब कोई आस-पास न हो और एक किलोमीटर की दूरी पर ही दूसरा आदमी हो, तो फिर कौन कह सकता है कि सन्तरी चुपचाप गश्त लगा रहा है या अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लघंन कर रहा है।

पोलिश सिपाही को सिगरेट की जबर्दस्त तलब लगी है, मगर अपनी माचिस वह बारक में भूल आया है और इस वक्त जैसे उसको और भी ललचाने के लिए सोवियत सरहद की तरफ़ से तम्बाकू की खुशबू आ रही है, गोया हवा उसको सताने के लिए ही यह खुशबू उड़ा कर ला रही हो। और उस पोलिश सिपाही की सिगरेट की प्यास और तेज़ हो जाती है। पोल अपना कान घिसना बन्द कर देता है और गर्दन मोड़ कर पीछे देखता है, कौन जाने कप्तान साहब या हुज़ूर लेफ़्टिनेंट साहब अपने घोड़े पर सवार, किसी टीले के पीछे से सामने आ जायें। अक्सर ही तो वे निगरानी के लिए निकला करते हैं। मगर उसे कुछ नहीं दिखाई देता, सिवा धूप में चमकती हुई सफ़ेद बर्फ़ के। आसमान में बादल का नाम नहीं है।

"दियासलाई है कामरेड?" उस पोल ने ही सबसे पहले नियम को तोड़ा। और अपनी तलवार जैसी संगीन लगी फ्रांसीसी राइफिल को ठेल कर कन्धे पर डालते हुए उसने अपनी अकड़ी हुई उंगलियों से बड़ी मुश्किल से अपने कोट की जेब में से सस्ती सिगरेट का एक पैकेट निकाला।

लाल सैनिक ने उसकी बात तो सुन ली, मगर सरहद की दूसरी तरफ़ के आदमी से बात करना क़ायदे के ख़िलाफ़ है, इसलिए उसने कोई जवाब नहीं दिया। इसके अलावा यह भी था कि लाल सैनिक ठीक समझ नहीं पाया कि वह सिपाही क्या कहना चाहता है। इसलिए वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया। उसके नर्म और गर्म फ़ेल्ट के जूतों के नीचे बर्फ़ चरमर कर रही थी।

"कामरेड बोल्शेविक दियासलाई है? माचिस की डिबिया फेंक दो न?" इस बार पोलिश सिपाही ने रूसी में बात की।

लाल सैनिक ने अपने पड़ोसी को बहुत ग़ौर से देखा। उसने अपने मन में कहा, "लगता है कि पाले ने इन जनाब को बुरी तरह जकड़ लिया है। होने को तो

बेचारा थैलीशाह का सिपाही है, मगर देखो कैसी भयानक जिन्दगी है। ज़रा सोचो इतने कम कपड़ों में उसे बाहर की सर्दी में ढकेल दिया गया है! क्या ताज्जुब कि वह खरहे की तरह उचकता फिर रहा है, और तब जब कि सिगरेट पीने का भी इन्तज़ाम न हो।" बिना पीछे मुड़े लाल सैनिक ने माचिस की डिबिया उसकी तरफ़ फेंक दी। सिपाही ने उसे लोक लिया और कई बार की नाकाम कोशिश के बाद आखिरकार उसकी सिगरेट जली और उसने माचिस की डिबिया वापिस लाल सैनिक के पास फेंक दी। तब लाल सैनिक ने अनिच्छापूर्वक ही सही, नियम भंग करते हुए कहा :

"रखे रहो, मेरे पास और भी माचिस है।"

सरहद के उस पार से जवाब आया :

"धन्यवाद, मैं न रखूँगा। कहीं उन्होंने मेरे पास यह डिबिया देख ली तो मुझे दो साल जेल में काटना पड़ेगा।"

लाल सैनिक ने ग़ौर से अपनी माचिस की डिबिया को देखा। उसके लेबुल पर एक हवाई जहाज़ बना था जिसमें प्रोपेलर की जगह एक मज़बूत मुट्ठा बनी हुई थी और अल्टीमेटम लिखा हुआ था।

"ठीक है, उनके यहाँ यह चीज़ न चलेगी।"

वह सिपाही लाल सैनिक के साथ-साथ गश्त लगाता रहा। इस वीरान मैदान में वह बेहद अकेला महसूस कर रहा था।

घोड़े इतमीनान से दुलकी चाल से चले जा रहे थे और उनकी चाल के अनुसार काठियों के चूँ-चूँ करने में भी एक लय थी। पाले की हवा में घोड़ों के नथनों से निकली हुई सांस थोड़ी देर के लिए जम कर सफ़ेद भाप सी बन जाती थी। काले घोड़े के नथने के इर्द-गिर्द थोड़ा सा पाला जमा हुआ था। अपनी खूबसूरत गर्दन को तिरछी किये और बड़ी खूबसूरती से डग भरती हुई बटालियन कमांडर की घोड़ी अपने मुँह में पड़े लगाम से खिलवाड़ कर रही थी। दोनों घुड़सवार फ़ौजी बरानकोट पहने हुए थे, उनकी कमर पर पेटी लगी थी और उनकी आस्तीनों पर तीन लाल चौखुटे बने हुए थे। दोनों में फ़र्क बस इतना ही था कि बटालियन कमांडर गाव्रिलोव की वर्दी के कफ़-कॉलर वग़ैरह हरे रंग के थे और उसके साथी के लाल रंग के। गाव्रिलोव सरहदी सैनिकों के साथ था, इस पचपन मील लम्बे विस्तार में उसी की बटालियन सरहदी चौकियों की देखभाल करती थी, वही इस सरहदी इलाके का इंचार्ज था। उसका साथी बेरेज़दोव से आया हुआ एक आदमी

था—बटालियन कमिसार कोर्चागिन, जो सार्वजनिक फ़ौजी शिक्षा-व्यवस्था की ओर से आया था।

रात को बर्फ़ गिरी थी और ताज़ी सफ़ेद बर्फ़ के गाले कम्बल की तरह उस सारे इलाके पर पड़े हुए थे जिन्हें आदमी या जानवर किसी ने हाथ तक नहीं लगाया था। दोनों आदमी दुलकी चाल से अपने घोड़े को बढ़ाते हुए जंगल में से निकले और खुले मैदान को पार करने ही वाले थे, जहाँ से चालीस क़दम पर सरहदी चौकियाँ थीं, जब कि गाव्रिलोव ने एकाएक अपने घोड़े को रोक लिया। कोर्चागिन ने पीछे मुड़ कर देखा कि गाव्रिलोव काठी से नीचे झुका हुआ बर्फ़ पर पड़े कुछ अजीब से निशानों का मुआइना कर रहा है। उसको देख कर ऐसा लगता था जैसे कोई छोटा सा दनदानेदार पहिया उस पर से गुज़रा हो। कोई मक्कार जानवर इधर से गुज़रा होगा जो बर्फ़ पर ये दाग छोड़ गया है जो अब उलझन पैदा कर रहे हैं। यह तो पता लगाना मुश्किल था कि जानवर किधर गया, मगर बटालियन कमांडर के रुकने की वजह यह नहीं थी। उस निशान से दो क़दम पर, बर्फ़ के हलके से चूरे के नीचे एक और निशान था, किसी आदमी के पैर का निशान! पैर के निशानों में संशय की कोई बात न थी, वे सीधे जंगल की ओर निर्देश कर रहे थे और इसमें ज़रा सा भी सन्देह नहीं था कि पोलिश सीमा से कोई आदमी आया था। बटालियन कमांडर अपने घोड़े को आगे बढ़ाता हुआ सन्तरी की गश्त के रास्ते के साथ-साथ चल रहा था। पैर के ये निशान पोलिश सरहद पर दस-बारह क़दम तक दिखलाई दे रहे थे।

बटालियन कमांडर ने बड़बड़ाते हुए कहा, "रात को उधर से सरहद पार करके कोई आया था। तीसरा प्लैटून फिर ऊंघने लगा है—इस चीज़ का कोई हवाला उनकी सबेरे की रिपोर्ट में नहीं है। बहुत ख़राब बात है!" गाव्रिलोव की पकती हुई मूँछें बर्फ़ और पाले में उसकी सांस से और भी सफेद हो रही थीं और इस तरह उसके ओठों पर बैठी हुई थीं कि उनको देख कर डर लगता था।

दूर पर दो आकृतियाँ इन घुड़सवारों के पास आ रही थीं। उनमें से एक दुबला-पतला आदमी था जो काले कपड़े पहने था और जिसकी फ्रांसीसी संगीन धूप में चमक रही थी, और दूसरा एक बहुत ऊँचा-पूरा आदमी था जो पीले रंग का भेड़ की खाल का कोट पहने था। चित्ती घोड़ी एड़ के जवाब में तेज़ी से दौड़ रही थी और वे दोनों घुड़सवार इन लोगों के पास जल्दी से पहुँच गये। आकर लाल सैनिक ने राइफिल अपने कन्धे से उतार ली और अपने मुँह में दबा हुआ सिगरेट का टुकड़ा बर्फ में थूक दिया।

"सुबह मुबारक हो कामरेड। तुम्हारे यहाँ क्या हालचाल है?" बटालियन

कमांडर ने अपना हाथ उस लाल सैनिक की तरफ बढ़ाया। लाल सैनिक ने हाथ मिलाने के लिए जल्दी से अपने हाथ का दस्ताना अलग किया। वह सरहदी सन्तरी इतना लम्बा था कि उस तक पहुँचने के लिए कमांडर को अपनी काठी से आगे झुकने की भी जरूरत नहीं पड़ी।

वह पोल दूर से देखता रहा। यहाँ पर दो बोल्शेविक अफ़सर एक सैनिक का ऐसे अभिवादन कर रहे थे जैसे वह उनका बड़ा गहरा दोस्त हो! क्षण भर के लिए उसकी आँख के सामने भी यह तसवीर आ गई कि जैसे वह मेजर ज़ाकज़्यूस्की से हाथ मिला रहा है। मगर यह विचार ही बेवकूफ़ी से इतना भरा था कि उसने चौंक कर अपने इर्द-गिर्द देखा।

"मैंने आज ही चार्ज लिया है, कामरेड बटालियन कमांडर," उस लाल सैनिक ने रिपोर्ट दी।

"वहाँ का सारा रास्ता देख लिया है?"

"नहीं, अभी नहीं।"

"यहाँ पर रात दो से छः बजे तक किसकी ड्यूटी थी?"

"सुरोतेंको की, कामरेड बटालियन कमांडर।"

"अच्छा अच्छा, मगर जरा आँखें खोल कर चलना।"

कमांडर ने अपने घोड़े को बढ़ाते-बढ़ाते चेतावनी के ये शब्द कहे:

"और देखो उन आदमियों के साथ जरा कम घूमा करो।"

सरहद से बेरेज़दोव जाने की चौड़ी सड़क पर उनके घोड़े दुलकी चाल से चले जा रहे थे। कमांडर ने अपने साथी से कहा, "यहाँ सरहद पर तुम अपनी आँखें जरा खुली रखना। जरा सी भी अगर कोई चूक हुई तो उसका बुरा भुगतान करना पड़ेगा। हम लोगों का काम ऐसा है कि हम जरा भी सुस्ताने की जुर्रत नहीं कर सकते। दिन-दहाड़े तो सरहद में घुस आना आसान नहीं है, मगर रात को काफ़ी होशियार रहने की जरूरत है। तुम्हीं सोचो कामरेड कोर्चागिन। मेरे हिस्से में, हमारी सरहद चार गाँवों को काटती हुई जाती है, इससे मामला काफ़ी पेचीदा हो जाता है। चाहे कितने ही पास-पास तुम सन्तरियों को क्यों न खड़ा करो, होगा यही कि सीमा-रेखा के एक तरफ़ के सम्बन्धी, रेखा की दूसरी तरफ़ होनेवाली हर शादी और जशन में जरूर शरीक होंगे। और क्या ताज्जुब—उन झोपड़ियों और खाड़ी के छिछले पानी के बीच मुश्किल से पच्चीस क़दम का फ़ासला होगा और वह पानी भी इतना छिछला है कि मुर्ग़ी का बच्चा उसे पाँव-पाँव पार कर दे। इतना ही नहीं सरहद पर माल का लेनदेन भी चोरी से होता है। यह सही है कि ज़्यादातर बहुत छोटे पैमाने पर यह चीज होती है, जैसे कोई औरत पोलिश शराब

की एक-दो बोतल ले आई या इसी क़िस्म की चीज़ें। मगर थोड़ा बहुत यह काम बड़े पैमाने पर भी होता है, बड़े-बड़े पैसेवाले इस काम को करते हैं। तुमने सुना है न कि सरहद पर के तमाम गाँवों में पोलों ने दूकानें खोल दी हैं जिनमें तुम्हें अपने जरूरत की हर चीज मिल सकती है? और यक़ीन मानो कि ये दूकानें उन्होंने अपने ग़रीब किसानों के लिए नहीं खोली हैं।"

बटालियन कमांडर की बात सुनते-सुनते कोर्चागिन सोचने लगा कि सरहद की ज़िन्दगी स्काउटिंग का काम करने जैसी ज़िन्दगी है जिसका कोई भी अन्त नहीं।

"तुम्हारा क्या खयाल है कामरेड गाव्रिलोव, मैं तो सोचता हूँ कि शायद चोरी-चोरी माल की बिक्री के अलावा और भी कुछ ज़्यादा गम्भीर चीजें यहाँ पर चल रही है?"

"यही तो मुसीबत है," बटालियन कमांडर ने चिन्ता के स्वर में जवाब दिया।

बेरेज़दोव एक छोटा सा क़स्बा था जिसमें खास आबादी यहूदियों की थी। उसमें दो-तीन सौ छोटे-छोटे मकान थे जो बेतरतीबी से इधर-उधर फैले हुए थे और एक बड़ा सा बाजार का चौक था जिसके बीचोबीच कोई दो दर्जन दूकानें थीं। वह चौक लीद-गोबर से गन्दा रहता था। खास क़स्बे के चारों तरफ़ किसानों की झोपड़ियाँ थीं। यहूदियों की आबादी वाले हिस्से के बीच में बूचड़खाने के रास्ते पर एक पुराना यहूदी गिर्जाघर खड़ा था। उसकी बड़ी टूटी-फूटी गन्दी सी इमारत थी। गोकि इस गिर्जाघर में सनीचर को भीड़ इकट्ठा होती थी मगर तो भी अब उसके चहल-पहल के दिन ग़ायब हो चुके थे और गिर्जाघर का यहूदी पादरी एक ऐसी ज़िन्दगी बसर करता था जो कि निश्चय ही उसको बहुत प्रिय न थी। १९१७ में जो कुछ हुआ था, वह जरूर ही बुरी चीज थी क्योंकि उसीकी वजह से तो अब यह हालत थी कि इस मनहूस जगह में भी जरा-जरा से छोकरे तक उसकी कोई इज़्ज़त न करते थे जब कि उसे यह इज़्ज़त पाने का हक़ था। यह सच है कि बूढ़े-पुराने लोग सिर्फ़ कोशर (हलाल) खाना खाते थे, मगर न जाने कितने छोकरे थे जो सुअर के गोश्त जैसी हराम चीज के बने हुए सॉसेज खाते थे। इस खयाल से ही यहूदी पादरी को मितली मालूम होने लगती थी! और रबाई बोरुख ने गुस्से में आकर जोर से एक सुअर के लात लगाई जो लीद-गोबर के ढेर में अपने खाने की चीज ढूँढ़ रहा था। पादरी को इस बात की जरा भी खुशी नहीं थी कि

बेरेज़दोव को जिले का केन्द्र बना दिया गया और न उसे ये कम्युनिस्ट ही पसन्द थे जो भगवान जाने कहाँ से आ गये थे और अब तमाम चीज़ों को उलट-पलट कर रखे दे रहे थे। हर रोज कोई नई बदमजगी पैदा हो जाती। मिसाल के लिए कल उसने पादरी के मकान के दरवाजे पर यह साइनबोर्ड लगा देखा : "बेरेज़दोव जिला कमिटी, उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग।"

रबाई ने सोचा कि इस साइनबोर्ड से सिवा बुराई के दूसरी किसी भी चीज की उम्मीद करना बेसूद होगा। वह अपने खयाल में इतना डूबा हुआ था कि उसने अपने गिर्जाघर के दरवाजे पर चिपकी हुई नोटिस को देखा ही नहीं, जब तक कि वह उसके ठीक सामने न पहुँच गया। नोटिस में लिखा हुआ था :

> "मजदूर नौजवानों की एक आम सभा आज क्लब में होगी। कार्यकारिणी समिति के चेयरमेन लिसिस्सिन और नौजवान कम्युनिस्ट लीग की जिला कमिटी के कार्यवाहक मन्त्री कोर्चागिन के भाषण होंगे। मीटिंग के बाद नौवर्षीय स्कूल के विद्यार्थी गाने-बजाने का प्रोग्राम देंगे।"

रबाई ने गुस्से में आकर नोटिस को नोच लिया और बोला, "अच्छा तो उन्होंने बिस्मिल्ला कर भी दिया!"

स्थानीय गिर्जाघर से लगे हुए एक लम्बे-चौड़े बाग़ के बीच में एक बड़ा सा पुराना मकान खड़ा था जो किसी जमाने में पादरी का था। मकान के कमरों की, जिनमें पादरी अपनी बीबी के साथ रहता था, हवा में घुटन सी महसूस होती थी और ऐसा मालूम होता था कि वहाँ के कोने-कोने में भयानक ऊब और थकान भरी हुई है। यह मियां-बीबी उस मकान ही की तरह बुड्ढे और उतने ही जड़ थे और बहुत जमाने से एक-दूसरे से बिलकुल ऊबे हुए थे। मकान के नये मालिकों के आने के साथ ही वहाँ की सारी ऊब और थकान भी जैसे साफ़ हो गई। उस बड़े हॉल में, जिसमें वे धर्मप्राण लोग सिर्फ़ गिर्जाघर की छुट्टियों के रोज अपने मेहमानों का स्वागत-सत्कार करते थे, अब हमेशा भीड़ लगी रहती थी क्योंकि वह मकान अब बेरेज़दोव कम्युनिस्ट पार्टी कमिटी का हेडक्वार्टर था। सामने के हॉल के दाहिनी तरफ़ वाले छोटे कमरे के दरवाज़े पर खड़िये से "कोमसोमोल जिला कमिटी" लिखा हुआ था। यहीं पर कोर्चागिन, जो दूसरी यूनिवर्सिल मिलिटरी ट्रेनिंग बटालियन का फ़ौजी कमिसार होने के साथ ही साथ नवसंगठित कोमसोमोल जिला कमिटी का कार्यवाहक मन्त्री भी था, अपने दिन का काफ़ी वक़्त गुज़ारता था।

आना के घर की उस गोष्ठी में गये उसको आठ महीने गुज़र चुके थे,

मगर उसको ऐसा लगता था कि जैसे यह अभी कल की ही बात हो। कोर्चागिन ने काग़ज़ के ढेर को एक तरफ़ सरका दिया और अपनी कुर्सी पर पीछे को झुका हुआ अपने खयालों में डूब गया····।

घर में शान्ति थी। रात काफ़ी जा चुकी थी और पार्टी कमिटी का दफ़्तर खाली हो गया था। कमिटी का मन्त्री त्रोफीमोव कोर्चागिन को घर में अकेला छोड़ कर थोड़ी देर पहले अपने घर चला गया था। पहले से खिड़की पर अजीब-अजीब सी आकृतियाँ बनी हुई थीं, मगर कमरा गर्म था। मेज़ पर मिट्टी के तेल का लैम्प जल रहा था। कोर्चागिन अभी कुछ दिन पहले की बातें याद कर रहा था। उसे याद आया कि कैसे अगस्त के महीने में कारखाने के कोमसोमोल संगठन ने उसे नौजवानों का संगठनकर्ता बना कर एक मरम्मती गाड़ी के साथ एकातेरीनोस्लाव भेजा था। पतझड़ के आखिरी दिनों तक वह रेलगाड़ी के डेढ़ सौ लोगों के साथ-साथ एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन घूमता फिरा था। लड़ाई के बाद की गड़बड़ी को दूर करके व्यवस्था स्थापित करना, टूटी-फूटी चीज़ों की मरम्मत करना और रेल के जले हुए और टूटे-फूटे डब्बों के अवशेषों की सफ़ाई करना—यही उसका काम था। सिनेलनिकोवो से पोलोगी तक उन लोगों ने सफ़र किया और यही वह इलाक़ा था जिसमें माखनो डाकू लूटपाट करके चारों तरफ़ तबाही व बर्बादी फैलाया करता था। गुलियाई-पोलिये में वाटर-टावर की ईंट की बनी इमारत की मरम्मत करने और डाइनामाइट से उड़ाई गई पानी की टंकी की दीवारों पर जहाँ-तहाँ लोहे की पत्तरें बिछाने में उन्हें पूरा एक हफ़्ता लगा। गोकि पावेल फ़िटर नहीं था और इस भारी काम का आदी नहीं था, तब भी औरों के साथ-साथ उसने भी रिंच सँभाली और न जाने कितने हज़ार जंग लगे बोल्टू कसे।

पतझड़ बीतते-बीतते रेलगाड़ी घर लौटी और कारखाने फिर अपने डेढ़ सौ काम करने वालों को पा गये ····।

एलेक्ट्रीशियन पावेल अब अक्सर आना के घर जाया करता। उसके माथे की झुर्रियाँ साफ़ हो गईं और उसकी हँसी फिर से सुनी जाने लगी।

रेलवे कारखाने के धूल-धक्कड़ से भरे चेहरे वाले मज़दूर एक बार फिर उसके मुँह से संघर्ष के पिछले वर्षों की कहानी सुनने के लिए जुटे, उन प्रयत्नों की कहानी जो गुलाम मगर विद्रोही रूस के किसानों ने अपने कन्धों पर सवार बादशाहों को उलटने के लिए किये थे, स्तेपान राज़िन और पुगाचोव के विद्रोहों की कहानी।

एक शाम आना के घर पर, जब रोज़ से ज़्यादा नौजवान इकट्ठा हुए थे, पावेल ने यह घोषणा की कि वह सिगरेट पीना छोड़ देगा, जिसकी आदत उसे लगभग अपने बचपन से ही पड़ी हुई थी।

उसने दृढ़ संकल्प के स्वर में घोषणा की, "अब मैं कभी सिगरेट नहीं पीऊँगा।"

यह चीज अचानक ही हुई। वहाँ पर मौजूद एक नौजवान ने यह कहा कि आदत—मसलन सिगरेट पीने की आदत—इच्छाशक्ति से ज़्यादा मज़बूत चीज होती है। इस सवाल पर दो मत थे। पहले तो पावेल ने कुछ नहीं कहा, मगर जब तालिया ने उसको बहस में खींचा तो आखिरकार वह भी बहस में शरीक हो गया।

"आदमी अपनी आदतों पर शासन करता है न कि आदतें आदमी पर। अगर ऐसा न हो तो पता नहीं हम कहाँ पहुँचें।"

स्वेतायेव ने एक कोने में बैठे-बैठे अपनी जगह से कहा, "सुनने में बात बहुत अच्छी लगती है, है न? कोर्चागिन को बढ़-बढ़ कर बात करना पसन्द है। मगर अपनी विद्वत्ता का इस्तेमाल वह अपने ऊपर क्यों नहीं करता? वह सिगरेट पीता है, झूठ कहता हूँ? यह भी उसे मालूम है कि यह बड़ी गन्दी आदत है। अच्छी तरह उसे यह बात मालूम है। मगर उसमें इतनी मर्दानगी नहीं कि इस आदत को छोड़ दे।" फिर अपने स्वर को बदलते हुए स्वेतायेव ने तीखे व्यंग के स्वर में कहा: "अभी कुछ ही रोज पहले वह अध्ययन केन्द्रों में संस्कृति का प्रसार करने में लगा था, मगर इससे उसका गाली बकना बन्द हुआ क्या? कोई भी आदमी जो पावका को जानता है, यही कहेगा कि वह बहुत गाली नहीं बकता, मगर एक बार जब शुरू करता है तो फिर उसे कोई रोकटोक पसन्द नहीं होती। दूसरे को उपदेश करना खुद आचरण करने से हमेशा ज़्यादा सरल पड़ता है।"

इसके बाद खामोशी छा गई जिसमें काफ़ी तनाव था। स्वेतायेव के स्वर के तीखेपन ने सबको जैसे ठण्डा कर दिया था। कोर्चागिन ने तत्काल कोई जवाब नहीं दिया। धीरे-धीरे उसने अपने ओठों के बीच से सिगरेट निकाली और धीरे से कहा:

"अब मैं फिर कभी सिगरेट नहीं पीऊँगा।"

फिर थोड़ी देर की खामोशी के बाद उसने कहा:

"यह मैं दिम्का की खातिर नहीं, खुद अपने खयाल से कर रहा हूँ। जो आदमी किसी बुरी आदत से अपना पीछा नहीं छुड़ा सकता, वह किस काम का आदमी है। इसके बाद अब सिर्फ़ वह गाली बकने वाली आदत रह जाती है, जिसकी मुझे फ़िक्र करनी होगी। मैं जानता हूँ कि मैं इस ज़लील आदत पर अब तक क़ाबू नहीं पा सका हूँ, मगर दिम्का भी इस बात को मानता है कि अब वह

मेरे मुँह से गालियाँ कम ही सुनता है। सिगरेट पीना बन्द करने से किसी बुरे शब्द का मुँह से निकलना बन्द करना ज़्यादा मुश्किल काम है। इसलिए मैं अभी यह नहीं कह सकता कि सिगरेट ही की तरह मैंने आज से गाली बकना भी छोड़ दिया। लेकिन इसका मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यह बुरी आदत भी मैं छोड़ ज़रूर दूँगा।"

पाला शुरू होने के ठीक पहले नदी में बह कर आते हुए लकड़ी के कुन्दों ने नहर को जाम कर दिया। फिर पतझड़ की बाढ़ों ने उन्हें तोड़ दिया और तेज़ बहता हुआ पानी उस लकड़ी को, जिसकी इतनी सख़्त ज़रूरत थी, बहा ले गया। और तब एक बार फिर सोलोमैंका ने अपने लोगों को रक्षा के काम पर भेजा, इस बार उस अनमोल लकड़ी की रक्षा के लिए।

कोर्चागिन दूसरे लोगों से पीछे नहीं छूटना चाहता था, इसलिए उसने हफ्ते भर तक, जब तक कि किनारे पर लकड़ी का ढेर नहीं लग गया, किसी को यह नहीं बतलाया कि उसे सर्दी लग गई है। उस बर्फ़ानी पानी और पतझड़ की उस ठण्डी सीलन ने उसके ख़ून में सोते हुए उसके पुराने दुश्मन को जगा दिया और उसे तेज़ बुख़ार चढ़ आया और वह बिस्तर पर पड़ गया। दो हफ्ते तक उसके शरीर में गठिये की सख़्त तकलीफ़ रही और जब वह अस्पताल से लौटा तो उसकी यह हालत थी कि वह एक टाँग बेन्च के इधर और एक टाँग उधर रख कर ही अपनी जगह पर काम कर सका। फोरमेन उसको देख कर उदासी से सिर हिलाता था। कुछ दिन बाद एक मेडिकल बोर्ड ने उसे काम के लिए अयोग्य घोषित कर दिया और उसको बर्ख़ास्तगी की तनख़ा और पेन्शन पाने के अधिकार का सर्टिफ़िकेट दे दिया गया। मगर कोर्चागिन ने ग़ुस्से से उसको लेने से इनकार कर दिया।

वह कारख़ाने से चला तो उसका दिल भारी था। वह धीरे-धीरे, अपनी छड़ी का सहारा लिये जा रहा था, मगर हर क़दम पर उसे सख़्त दर्द महसूस होता था। उसे अपनी माँ के कई ख़त मिले थे जिनमें उसने पावेल को घर बुलाया था और हर बार जब उसे अपनी माँ का ख़याल आता, तो उसके मन में अपनी माँ के विदाई के समय के ये शब्द गूँज जाते :

"मैं तो तुम्हें तभी देखती हूँ जब तुम लाचार और मजबूर होते हो।"

सूबा कमिटी में उसे अपना कोमसोमोल और पार्टी का कार्ड दिया गया और फिर वह जाते समय कम से कम लोगों से मिल कर, ताकि जुदाई में उतना ही कम दर्द हो, चुपके से अपनी माँ के पास जाने के लिए शहर से निकल गया। दो

हफ़्ते तक उसकी बुढ़िया माँ ने उसकी सूजी टाँगों को भाप से सेंका और उनकी मालिश की और महीने भर में ही वह इस क़ाबिल हो गया कि बिना अपनी छड़ी का सहारा लिये चल सकता था। उसका मन खुशी से भर उठा जब उसकी जिन्दगी में गोधूलि की जगह यह एक नया सबेरा फिर से आया। एक बार फिर रेलगाड़ी उसे सूबे के केन्द्र में ले आई, तीन दिन उसने वहाँ पर गुज़ारे और संगठन विभाग ने उसे प्रादेशिक फ़ौजी कमिसारियट में एक फ़ौजी शिक्षा की यूनिट में राजनीतिक कार्यकर्ता का काम सौंप दिया।

एक हफ़्ता और गुज़रा और पावेल दूसरे नम्बर की बटालियन का फ़ौजी कमिसार बन कर एक छोटे से, बर्फ़ से ढँके हुए क़स्बे में पहुँच गया। कोमसोमोल की एरिया कमिटी ने भी उसे एक काम सौंप दिया : वह काम था इलाक़े के बिखरे हुए कोमसोमोल सदस्यों को इकट्ठा करना और उस ज़िले में नौजवान सभा का संगठन क़ायम करना। और इस तरह जिन्दगी फिर चल निकली।

बाहर बड़ी सख़्त, दम घोंटने वाली गर्मी थी। कार्यकारिणी समिति के दफ़्तर की खुली खिड़की में से चेरी के पेड़ की एक शाख़ भीतर झाँक रही थी। सड़क के उस पार एक पोलिश गिर्जे के गोथिक शैली के घन्टेघर के ऊपर लगा हुआ सुनहला क्रॉस धूप में चमक रहा था। और खिड़की के सामने हाते में छोटे-छोटे, आसपास की घास जैसे हरे-हरे बत्तख के बच्चे खाने की तलाश में व्यस्त घूम रहे थे। ये बत्तख के बच्चे कार्यकारिणी समिति के रखवाले के थे।

कार्यकारिणी समिति के चेयरमेन ने उस खत को जो अभी-अभी उसे मिला था, पढ़ कर खतम किया। उसके चेहरे पर एक छाया सी आ गई और उसका बड़ा सा गँठीला हाथ उसके बड़े-बड़े बालों में घूमने लगा और वहीं रुक गया।

बेरेज़दोव कार्यकारिणी समिति के चेयरमेन निकोलाई निकोलायेविच लिसित्सिन की उम्र सिर्फ़ चौबीस साल की थी, मगर न तो उसके कर्मचारी और न कोई स्थानीय पार्टी कार्यकर्ता ही इस बात का विश्वास करता था। लिसित्सिन लम्बा-चौड़ा मज़बूत आदमी था, देखने में कठोर इतना कि अक्सर डर लगता था और इसी सबसे उसकी उम्र कम से-कम पैंतीस की मालूम होती थी। उसका शरीर खूब तगड़ा था, मोटी सी गर्दन और उस पर बड़ा सा सिर, भूरे रंग की तेज़ नुकीली आँखें जिनमें एक फ़ौलादी चमक थी और मज़बूत जबड़े जिनको देख कर लगता था कि यह उत्साही आदमी है। वह नीले रंग की बिर्जिस और भूरी वर्दी पहनता

था जो अब घिस गई थी और जिसकी बाईं तरफ़ वाले जेब पर "ऑर्डर ऑफ़ द रेड बैनर" टंका हुआ था।

अपने बाप और दादा की तरह लिसित्सिन भी बचपन से ही धातु का काम करने वाला मजदूर रहा था और अक्तूबर क्रान्ति के पहले तुला नगर के एक तोप के कारख़ाने में वह एक खराद का "कमांडर" था।

पतझड़ की उस रात से शुरू करके जब तुला का यह लुहार कन्धे पर राइफ़िल रखकर मजदूरों के राज के लिए लड़ने गया, तब से अब तक वह घटनाओं के भंवर में ही चल रहा था। क्रान्ति और पार्टी ने कोलिया लिसित्सिन को एक कठिन जगह से दूसरी कठिन जगह भेजा और उन सभी जगहों में अपने काम को शान से पूरा करते हुए लिसित्सिन लाल सेना के साधारण सैनिक से रेजिमैंट का कमांडर और कमिसार बना।

लड़ाई की आग और तोपों की गरज अब अतीत का अंग हो गई थी। अब निकोलाई लिसित्सिन सरहद पर के एक जिले में काम कर रहा था। जिन्दगी धीमे-धीमे सम-चाल से चली जा रही थी और कार्यकारिणी का चेयरमेन अपने दफ्तर में बैठा हर रोज बड़ी रात तक खेती की फ़सल की रिपोर्टों को उलटता-पलटता रहता था। इस वक़्त उसके सामने जो ख़त था, उसने थोड़ी देर के लिए उसके हाल के गुजरे हुए जमाने की याद को ताजा कर दिया। यह तार की संक्षिप्त भाषा में एक चेतावनी थी :

"अत्यन्त गोपनीय। बेरेजदोव कार्यकारिणी समिति के चेयरमेन लिसित्सिन के नाम।

"इधर देखने में आ रहा है कि सरहद पर पोल लोग हमारी सीमा में सरहदी इलाके के लोगों में आतंक फैलाने के लिए बड़े-बड़े गिरोहों को भेज रहे हैं। बचाव का इन्तजाम करने की जरूरत है। हमारा प्रस्ताव है कि अर्थ-विभाग की तमाम क़ीमती चीजें, जिनमें जमा किया हुआ टैक्स भी शामिल है, एरिया सेन्टर को भेज दी जायें।"

अपनी खिड़की में से लिसित्सिन जिला कार्यकारिणी समिति की इमारत में आने वाले हर आदमी को देख सकता था। उसने नजर उठाई तो पावेल कोर्चागिन को सायबान में खड़ा पाया। क्षण भर बाद दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

लिसित्सिन ने पावेल से हाथ मिलाते हुए कहा, "बैठ जाओ, मुझे तुम से कुछ कहना है।"

पूरे एक घन्टे तक दोनों दफ़्तर में बैठे बातें करते रहे।

कोर्चागिन के दफ़्तर से निकलते-निकलते दोपहर का वक़्त हो गया था। जैसे ही वह दफ़्तर से बाहर आया, लिसित्सिन की छोटी बहन, जो थी तो बच्ची मगर अपनी उम्र से कहीं ज़्यादा गम्भीर थी, बाग़ीचे में से भाग कर उसके पास आई। कोर्चागिन को देख कर वह हमेशा बड़े प्यार से मुस्करा देती थी। कोर्चागिन उसको प्यार में अन्युत्का कह कर बुलाता था, जो उसके नाम का संक्षिप्त रूप था। इस वक़्त भी उसने लजाते हुए पावेल का अभिवादन किया और सिर को झटका देकर एक बिखरी हुई लट को माथे पर से पीछे हटा दिया।

उसने पूछा, "क्या कोलिया बहुत व्यस्त है? मारिया मिखाइलोवना बड़ी देर से उसका खाना तैयार करके बैठी हुई है।"

"अन्दर चली न जाओ अन्युत्का, वह अकेले बैठा है।"

दूसरे रोज सवेरे, भोर होने के बहुत पहले तीन गाड़ियाँ, जिन्हें अच्छे मोटे-ताजे घोड़े खींच रहे थे, आकर कार्यकारिणी समिति के सामने रुकीं। उन गाड़ियों के साथ जो लोग आये थे, उन्होंने धीमी आवाज में आपस में बातें की और इसके बाद कई मुहरबन्द बोरे अर्थ-विभाग से बाहर लाये गये। उन्हें गाड़ियों पर लादा गया और कुछ मिनट बाद गाड़ियाँ उनको लेकर चली गईं और सड़क पर उनकी दूर जाती हुई आवाज सुनाई देने लगी। इन गाड़ियों को हिफाजत से अपनी जगह पर पहुँचाने की जिम्मेदारी एक सैनिक दस्ते की थी जिसका नायक कोर्चागिन था। वहाँ से प्रादेशिक केन्द्र तीस मील दूर था (जिसमें से कोई बाईस मील का रास्ता जंगल होकर था)। सुरक्षित ढंग से वे सारी क़ीमती चीजें एरिया अर्थ-विभाग की तिजोरियों में पहुँच गईं।

इसके कुछ दिन बाद एक घुड़सवार, जिसके घोड़े के मुँह से फिचकुर निकल रहा था, सरहद की ओर से सरपट बेरेजदोव में आया। वह सड़कों के बीच से गुजरा तो शहर के नाकारे लोग अचम्भे से उसको घूरने लगे।

कार्यकारिणी समिति के फाटक पर पहुँच कर सवार कूद कर घोड़े से नीचे आ गया और अपनी तलवार को एक हाथ से सम्भाले, अपने भारी-भारी बूट पहने सीढ़ियों पर धम-धम चढ़ गया। उसको देख कर लिसित्सिन के माथे में परेशानी से बल पड़ गये और उसने उसके हाथ से खत ले लिया और लिफ़ाफ़े पर दस्तखत करके लिफ़ाफ़ा उसे वापिस दे दिया। चिट्ठी देकर वह सरहदी सन्तरी अपने घोड़े पर सवार हुआ और घोड़े को सुस्ताने का जरा भी समय दिये बिना उसने घोड़े को एड़ लगाई और जिधर से आया था, सरपट उधर ही चला गया।

कार्यकारिणी समिति के चेयरमेन के अलावा और किसी को नहीं मालूम था कि उस चिट्ठी में क्या लिखा है, और अभी ही उसने उस चिट्ठी को पढ़ा था।

मगर शहर वालों की नाक भी अजीब होती है, उनको पता नहीं कैसे होने वाली घटनाओं का सुराग मिल जाता है। यहाँ के तीन में से दो छोटे-मोटे सौदागर चोरी से माल लाने-ले-जाने का काम कुछ-न-कुछ जरूर करते थे और इस काम को करने के ही सिलसिले में आने वाले खतरे को समझ जाने की एक सहज चेतना उनके अन्दर पैदा हो गई थी।

दो आदमी तेजी से फ़ौजी ट्रेनिंग बटालियन के हेडक्वार्टर को जाने वाले चौड़े रास्ते पर चले जा रहे थे। उनमें से एक पावेल कोर्चागिन था। वह हथियारों से लैस था मगर इससे दर्शकों को कोई आश्चर्य नहीं हो रहा था। यह तो उसकी आदत थी। मगर इस बात से उनको खतरे का कुछ-कुछ आभास हो रहा था कि पार्टी कमिटी के मन्त्री त्रोफ़ीमोव ने भी रिवाल्वर लटका रखी थी।

कुछ मिनट बाद एक दर्जन लोग अपनी राइफिलों में संगीनें लगाये हेड-क्वार्टर में से निकले और फुर्ती से मार्च करते हुए चौराहे पर खड़ी मिल के पास पहुँच गये। स्थानीय कम्युनिस्ट पार्टी और कोमसोमोल के बाकी सदस्यों को पार्टी दफ्तर में हथियार दिये जा रहे थे। कार्यकारिणी समिति का चेयरमेन कौसेकों वाली टोपी और हमेशा की तरह अपनी माउजर पेटी में लगाये घोड़े पर सरपट निकल गया। जरूर कुछ मामला है। खास चौक और आसपास की गलियाँ सूनी हो गईं। चिड़िया का पूत नजर नहीं आता था। देखते-देखते उन छोटी-मोटी दूकानों के दरवाजों पर बाबा आदम के वक्त के बड़े-बड़े ताले लटकने लगे और खिड़कियों की चिटखनियाँ चढ़ा दी गईं। सिर्फ़ निडर मुर्गियाँ और सुअर गर्मी से परेशान होकर गन्दगी के ढेर में अपने खाने की तलाश में घूमते रहे।

शहर के छोर पर के बागीचों में वे सिपाही छिपे। वहाँ से खुला मैदान और सीधी दूर तक चली जाती हुई सड़क उन्हें साफ़ दिखाई देती थी।

लिसित्सिन को जो चिट्ठी मिली थी उसमें बहुत संक्षेप में बस यह लिखा था :

> " कल रात लगभग सौ घुड़सवार दो हलकी मशीनगनें लेकर पोदुब्सी के इलाके में एक झड़प के बाद सोवियत क्षेत्र में घुस आये। बचाव की तदबीर करो। हमलावर गिरोह का निशान स्लावुता के जंगलों में जाकर खो गया है। गिरोह का पीछा करने के लिए एक बोल्शेविक कौसेक कम्पनी भेजी गई है। यह कम्पनी दिन के वक्त बेरेज़दोव से गुजरेगी। उनको दुश्मन न समझना। *गाव्रिलोव*; कमांडर, सरहदी बटालियन। "

मुश्किल से एक घन्टा गुजरा होगा जब एक घुड़सवार शहर जाने वाली सड़क पर दिखाई दिया। उसके करीब पांच-छः फर्लांग पीछे और भी घुड़सवार

चले आ रहे थे। कोर्चागिन बड़े गौर से उनको देख रहा था। आगे-आगे चलने वाला घुड़सवार सातवीं लाल कौसेक रेजिमेंट का एक नौजवान सैनिक था। बावजूद इसके कि वह बहुत होशियारी से आगे बढ़ रहा था, उसे सड़क के पास के बागीचों में छिपे हुए लोग नहीं दिखाई दिये। इसके पहले कि वह मामले को समझ पाये, हथियारों से लैस लोगों ने हरियाली में से बाहर सड़क पर आकर उसे चारों ओर से घेर लिया। उसने उन लोगों की वर्दियों पर कोमसोमोल का निशान देखा तो खिसिया कर मुस्कराया। संक्षेप में उसको बात समझाई गई और उसने अपना घोड़ा फेरा और पीछे दुलकी चाल से चले आते हुए घुड़सवारों के पास सरपट अपने घोड़े को भगा ले गया। कोमसोमोल के इन लोगों ने लाल कौसेकों को गुजर जाने दिया और वापिस अपनी जगहों पर पहुँच कर पहरा देने लगे।

लिसित्सिन के कई दिन बड़ी चिन्ता में गुजरे। कई दिन बाद ही उसको यह खबर मिली कि हमलावर पोलों का वह गिरोह अपना काम करने में नाकाम रहा था। लाल घुड़सवारों ने उसका पीछा किया और उन्हें भाग कर अपनी सरहद में चला जाना पड़ा।

उन्नीस बोल्शेविकों ने इस इलाके में सोवियत जिन्दगी के निर्माण के काम को उत्साह के साथ करना शुरू किया। यह एक नया इलाका था और इसलिए हर काम की शुरुआत नींव से करनी थी। इसके अलावा चूँकि सरहद यहाँ से बहुत पास थी, इसलिए सबको बहुत सावधान रहना पड़ता था।

लिसित्सिन, त्रोफ़ीमोव, कोर्चागिन और दूसरे मुट्ठी भर कार्यकर्त्ता जिन्हें उन्होंने इकट्ठा किया था, सवेरे से शाम तक सोवियतों के नये चुनाव का इन्तजाम, डाकुओं से लड़ना, सांस्कृतिक काम का संगठन, चोरी से माल लाने-ले-जाने की रोक-थाम वग़ैरह किया करते थे और इसके साथ-साथ अपनी सुरक्षा को मजबूत करने का पार्टी और कोमसोमोल का काम भी करते थे।

घोड़े की पीठ पर से मेज पर और फिर मेज से मैदान में, जहाँ फ़ौजी शिक्षार्थी ड्रिल किया करते थे, फिर क्लब और स्कूल और दो-तीन कमिटी मीटिंगें —दूसरी बटालियन के फ़ौजी कमिसार की यही दिनचर्या थी। उसके बगल में माउजर लटकी रहती और अक्सर उसकी रातें घोड़े की पीठ पर गुजरती थीं—ऐसी रातें जिनकी निस्तब्धता "हाल्ट, कौन है?" और चोरी से लाये गए माल से लदी हुई तेजी से भागती हुई गाड़ियों के पहियों की आवाज से ही भंग होती थी।

बेरेजदोव की कोमसोमोल जिला कमिटी में कोर्चागिन, लिदा पोलेविख और जेंका राजबालिखिन थे। लिदा वोल्गा की रहने वाली नीली आँख की एक लड़की

थी जो महिला विभाग की अध्यक्षा थी और जेका राजवालिखिन एक लम्बा खूब-सूरत नौजवान था जो अभी कुछ ही समय पहले हाई स्कूल का विद्यार्थी था। राजवालिखिन के मन में रोमांचकारी साहसिक कारनामों के लिए जबर्दस्त मोह था और शर्लक होम्स और लुई बुसेनार के बारे में तो उससे ज्यादा कोई जानता ही न था। पहले वह पार्टी की जिला कमिटी का आफ़िस मैनेजर था और गोकि कोमसोमोल में आये उसे अभी सिर्फ़ चार ही महीने हुए थे, वह दूसरे नौजवानों के सामने अपने को 'पुराना बोल्शेविक' कहता था। एरिया कमिटी ने कुछ हिचकते हुए उसको राजनीतिक शिक्षा का भार देकर बेरेजदोव भेजा था और इसीलिए उसको भेजा था क्योंकि दूसरा कोई आदमी नहीं था।

सूरज अपने शिखर पर था। हर तरफ़ गर्मी थी और सभी जीवित प्राणी छाया में शरण ढूँढ रहे थे। यहाँ तक कि कुत्ते भी शेडों में घुसे हुए हाँफते, ऊँघते और बेजान से पड़े थे। गाँवों में जिन्दगी की अकेली निशानी एक सुअर था जो कुएँ के पास कीचड़ की एक तलैया में मौज से पड़ा हुआ था।

कोर्चागिन ने अपने घोड़े को खोला और घुटने के दर्द से ओठों को काटता हुआ कूद कर घोड़े की पीठ पर सवार हुआ। उस्तानी स्कूल की इमारत की सीढ़ियों पर खड़ी थी और धूप से बचने के लिए आँख पर हथेली की आड़ लिये हुए थी।

उसने मुस्करा कर कहा, "कामरेड फ़ौजी कमिसार, उम्मीद करती हूँ कि आप से फिर मुलाकात होगी।"

घोड़ा अधीर होकर पैर पटक रहा था और अपनी गर्दन तान कर रास पर जोर दे रहा था।

"अच्छा विदा कामरेड राकीतिना! तो यह बात तय हो गई, कल पहला सबक आप ही पढ़ायेंगी।"

रास को ढीला पाकर घोड़ा तेजी से चल दिया। तभी एकाएक पावेल के कानों में जोर-जोर से चीखने की आवाजें आईं। यह गाँव में आग लग जाने पर औरतों के चीखने जैसी आवाज थी। तेजी से अपने घोड़े को लौटाते हुए फ़ौजी कमिसार पावेल ने एक नौजवान किसान स्त्री को बेतहाशा गाँव में भाग कर आते देखा। राकीतिना ने जल्दी से आगे बढ़ कर उस औरत को रोका। पास की झोपड़ियों से उनमें रहने वाले, जिनमें ज़्यादातर बूढ़े स्त्री व पुरुष थे, क्योंकि मेहनत कर सकने वाले किसान खेतों में काम कर रहे थे, बाहर की ओर देखने लगे।

" ओह ! भाइयो, जल्दी चलो जल्दी चलो ! वहाँ वे लोग एक-दूसरे को मारे डाल रहे हैं । "

कोर्चागिन जब सरपट भाग कर वहाँ पहुँचा तो लोग उस औरत के इर्द-गिर्द भीड़ लगा रहे थे, उसके सफेद ब्लाउज को पकड़ कर तान रहे थे और बहुत चिन्तित होकर उससे सवाल पर सवाल किये जा रहे थे। मगर उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि मामला क्या है, क्योंकि वह औरत बेतहाशा चीखे जा रही थी। " कत्ल हो रहा है ! वे लोग काट कर रखे दे रहे हैं ! " बस इतना ही कह पाती थी। उलझी हुई दाढ़ी वाला एक बुड्ढा अपने हाथ के कते-बुने पाजामे को एक हाथ से सँभाले दौड़ने की कोशिश करता हुआ वहाँ आया।

उसने उस घबराई हुई औरत से चिल्ला कर कहा, " बन्द करो अपना चीखना, साफ़-साफ़ तो बोलो कुछ ! किसका कत्ल हो रहा है ? मामला क्या है ? अपनी यह भौं-भौं तो बन्द करो ! "

" हमारे आदमियों में और पोदुब्सी वालों में लड़ाई हो रही है। वे हमारे आदमियों का कत्ल कर रहे हैं ! "

इसी से सारी बात उनकी समझ में आ गई। औरतें रोने लगीं और बुड्ढे लोग गुस्से में ज़ोर-ज़ोर से साँस छोड़ने लगे। यह खबर गाँव भर में, कोनों-अंतरों तक में लहर की तरह फैल गई : " वे पोदुब्सी वाले हँसियों से हमारे आदमियों को काटे डाल रहे हैं····फिर वही पुराना सरहद वाला झगड़ा है ! " सिर्फ वे लोग जो बिस्तर पकड़े हुए थे, घर के अन्दर रहे, बाकी सारे लोग बाहर गाँव की सड़क पर निकल आये और लाठी, गड़ांसा, कुल्हाड़ी वग़ैरह से लैस होकर उन खेतों की तरफ़ दौड़े जहाँ दोनों गाँव के लोग मेड़ के झगड़ों को लेकर एक-दूसरे का खून बहा रहे थे। और साल में एक बार यह चीज़ जरूर होती थी।

कोर्चागिन ने अपने घोड़े को चाबुक लगाया और घोड़ा सरपट भाग चला। घुड़सवार कोर्चागिन की आवाज़ों से घोड़ा दौड़ता हुआ गाँव वालों के पास से तीर की तरह निकल गया। उसके कान पीछे को दबे हुए थे और उसकी टापें जमीन को रौंद रही थीं और उसकी चाल बराबर तेज होती जा रही थी। सामने एक पहाड़ी पर एक हवा की चक्की बांहें फैलाये खड़ी थी मानो घोड़े का रास्ता रोकना चाहती हो। दाहिनी तरफ़ नदी के किनारे खाले में चरागाह थी और बाईं तरफ़ एक राई का खेत था जो दूर क्षितिज तक चला गया था। पकी हुई राई की बालें हवा में झूम रहीं थीं। दोनों तरफ़ पॉपी के लाल-लाल फूल थे। यहाँ पर शान्ति थी और गर्मी असह्य थी। मगर दूर से, जहाँ पर नदी एक रुपहले फ़ीते सी नज़र आती थी और धूप खाती जान पड़ती थी, लड़ाई की आवाजें आ रही थीं।

घोड़ा चरागाहों पर बेतहाशा भागता चला जा रहा था। "अगर यह कहीं ठोकर खाकर गिरा तो हम दोनों का काम तमाम हो जायगा।" पावेल के मन में एकाएक यह ख़याल आया। मगर अब रुकने का वक़्त न था और उसे इसी तरह बढ़ते जाना था, काठी पर इसी तरह नीचे झुके हुए और कानों में तेज़ हवा की सीटी सी बजती हुई।

आँधी की तरह वह सरपट उस खेत पर पहुँचा जहाँ लोग गुस्से से अन्धे होकर जंगली जानवरों की तरह आपस में लड़ रहे थे। बहुत से लोग लहू-लुहान होकर जमीन पर पड़े थे।

घोड़े ने एक दाढ़ी वाले किसान को अपने पैरों से कुचल दिया जो एक हँसिया के बेंट का सिरा हाथ में लिये एक नौजवान का पीछा कर रहा था और जिसके चेहरे से खून बह रहा था। उसके पास ही एक विशालकाय आदमी अपने बड़े-बड़े भारी बूटों से अपने जमीन पर पड़े हुए दुश्मन के पेट में बेदर्दी से ठोकर मार रहा था।

इन लड़ते हुए आदमियों की भीड़ में तेजी से घोड़े को दौड़ाते हुए कोर्चागिन ने उन सबको तितर-बितर कर दिया। इस अचानक हमले से सँभलने के पहले कोर्चागिन कभी एक आदमी पर और कभी दूसरे आदमी पर जा चढ़ता था। क्योंकि यह बात उसने समझ ली थी कि ये खून में लिथड़े हुए आदमी जो इस वक्त जानवर हो गए हैं, डरा कर ही तितर-बितर किये जा सकते हैं।

पावेल ने गुस्से में जोर से चिल्ला कर कहा, "भाग जाओ जानवर कहीं के! भाग जाओ लुटेरो, नहीं तो मैं तुममें से एक-एक को गोली से भून दूँगा!"

"और अपनी पिस्तौल निकालते हुए उसने एक ऊपर उठे हुए, गुस्से से वहशियाना नज़र आते हुए चेहरे पर गोली चलाई। घोड़ा फिर दौड़ा और पिस्तौल फिर बोली। कुछ लड़ने वालों ने अपने हँसिये छोड़ दिये और लौट पड़े। फ़ौजी कमिसार पावेल ने अपने घोड़े पर सवार इधर से उधर तक मैदान को रौंद कर और लगातार गोली चलाते हुए स्थिति पर क़ाबू पा लिया। वे किसान भाग निकले और चारों तरफ़ तितर-बितर हो गये क्योंकि वे इस खूनी झगड़े की जिम्मेदारी से भी बचना चाहते थे और इस ख़तरनाक घुड़सवार आदमी से भी जो गुस्से से पागल होकर बेतहाशा गोली चलाये जा रहा था।

सौभाग्य से कोई मरा नहीं। और घायल लोग ठीक हो गये। बहरहाल, थोड़ी ही देर बाद इस मामले की सुनवाई के लिए पोदुब्सी में जिले की अदालत बैठी, मगर बदमाशों के सरग़ना लोगों का पता लगाने की जज की सारी कोशिशें नाकाम हुईं। सच्चे बोल्शेविक की दृढ़ता और धैर्य से जज ने अपने सामने

के बिगड़े हुए किसानों को यह दिखलाने की कोशिश की कि उनका काम कितना बर्बर था। जज ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस तरह की मार-काट बर्दाश्त नहीं की जायगी।

किसानों ने कहा, "कामरेड जज, दोष हमारा नहीं, चौहद्दी का है। पता नहीं कैसे हर बार वह आपस में गडमड हो जाती है और हर साल हमें उसके पीछे लड़ना पड़ता है।"

मगर खैर वह जो भी हो, कुछ किसानों को इस लड़ाई की जवाबदेही करनी पड़ी।

हफ्ते भर बाद एक कमीशन वहाँ आया और झगड़े की जमीनों की छान-बीन करने लगा।

"जमीन की नाप-जोख करते मुझे तीस साल हो गये और मैंने देखा है कि हमेशा झगड़ा बटवारे की लाइन को लेकर होता है," कमीशन के बुड्ढे सर्वेयर ने अपना फ़ीता लपेटते हुए कोर्चागिन से कहा। वह बुड्ढा गरमी के कारण और काफ़ी पैदल चलने के कारण बिलकुल थक गया था और उसके शरीर से पसीना चू रहा था। "सचमुच अपनी आँख पर यक़ीन नहीं आता, जरा देखो कैसे ये चरागाहें बाँटी गई हैं। कोई शराबी भी इससे ज़्यादा सीधी रेखाएँ खींच सकता था। और खेतों का हाल तो और भी बुरा है। तीन-तीन क़दमों के बराबर जमीन की पट्टियाँ हैं और उस पर तुर्रा यह कि एक की टाँग दूसरे में घुसी हुई है—कोई उनको अलग करने की कोशिश करे तो पागल हो जाय। इस पर से जब लड़के बड़े होते हैं और बाप अपनी जमीनों के और भी टुकड़े करते हैं तो उन छोटी-मोटी पट्टियों के और भी छोटे टुकड़े हो जाते हैं। मेरी बात का यक़ीन करो कि आज से बीस बरस बाद जोतने के लिए कोई धरती बाक़ी न रहेगी, सिर्फ मेड़ें ही मेड़ें रह जायेंगी। यों भी कुल जमीन का दस फ़ीसदी मेड़ों के पीछे बर्बाद हो रहा है।"

कोर्चागिन मुस्कराया।

"कामरेड सर्वेयर, आज से बीस बरस बाद एक भी मेड़ बाक़ी न रहेगी।"

उस बुड्ढे ने पावेल को बहुत बड़प्पन के भाव से देखा, जैसे उसकी बेवकूफ़ी पर तरस खा रहा हो।

"तुम्हारा मतलब कम्युनिस्ट समाज से है? वह जरा बहुत दूर की बात है। है न?"

"आपने बुदानोव्का कोलखोज के बारे में सुना है?"

"ओह, यह मतलब है तुम्हारा।"

"आपका क्या कहना है उसके बारे में?"

" मैं बुदानोव्का में रह चुका हूँ। मगर वह बात अपवाद है, कामरेड कोर्चागिन।"

कमीशन धरती की पट्टियों की पैमाइश करता रहा। दो नौजवान खूँटे गाड़ रहे थे। और दोनों तरफ़ खड़े हुए किसान बड़े ग़ौर से यह देख रहे थे कि वे सड़ी सी डंडियाँ ठीक उस जगह पर गड़ें जहाँ विभाजन की रेखा पहले थी, जो घास में मुश्किल से दिखाई दे रही थी।

अपनी मरियल घोड़ी पर चाबुक फटकारते हुए बातूनी कोचवान अपनी सवारियों की तरफ़ मुड़ा।

उसने कहा, " मेरी समझ में ही नहीं आता, ये कोमसोमोल के छोकरे कहाँ से फट पड़े! आज के पहले ऐसी कोई चीज़ कभी न हुई थी, कम-से-कम मुझे तो याद नहीं। मैं तो दावे से कह सकता हूँ कि यह वही उस्तानी है जिसने यह सारा खेल तमाशा शुरू किया है। उसका नाम राकीतिना है, हो सकता है आपने भी उसका नाम सुना हो? है तो वह जवान औरत मगर किसी काम की नहीं। वह गाँव भर की तमाम औरतों को भड़काती है। उनके दिमाग़ में न जाने कहाँ-कहाँ की वाही-तबाही की बातें भर देती है और उसी से तो मुसीबत शुरू होती है। उसी के चलते तो आज यह हालत है कि कोई आदमी अपनी बीवी को पीट तक नहीं सकता! पुराने ज़माने में ज़रा भी अपनी तबियत नाराज़ होने पर तुम अपनी बुढ़िया के डण्डा लगा सकते थे, फिर चाहे वह कहीं जाकर कोने में बैठी बिसूरती रहे! मगर अब तुमने कुछ किया नहीं कि वह इतना हल्ला मचाती है कि तुम कान पर हाथ धरने लगते हो कि मुझे क्या सूझी थी कि मैंने इसे छू दिया। आज तो वह तुम्हें जनता की अदालत की धमकी देती है और जहाँ तक जवान लड़कियों की बात है, वे तो तलाक की बात करती हैं और दुनिया भर के कानून सुनाने लगती हैं। मेरी गांका को ही देखो, कैसी ख़ामोश औरत थी वह जैसी दुनिया में न मिले। लेकिन अब उसे देखो जाकर, प्रतिनिधि बन गई है, इसका मतलब शायद होता है कि औरतों के समाज में उसे बड़ा समझा जाता है। गांव भर की औरतें उसके पास आती हैं। मैंने जब इस चीज़ के बारे में सुना तो मेरे जी में आया कि चाबुक से उसकी ज़रा अच्छी तरह पूजा करूँ, मगर फिर मैंने जाने दिया, कहा, इस मामले में हाथ डालना ठीक नहीं। सब जहन्नुम में जाना ही चाहती हैं तो जायँ! जहाँ तक घर के काम-काज की बात है, तो वह औरत बुरी नहीं है।"

कोचवान की गाढ़े की कमीज की खुली हुई जगह में से उसका बालदार सीना दिखलाई दे रहा था। उसने अपने सीने को खुजलाया और घोड़े की पीठ पर अपना चाबुक फटकारा। गाड़ी में राजवालिखिन और लिदा बैठे हुए थे। उन दोनों को पोदुब्सी में काम था। लिदा महिला प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन बुलाने की योजना बना रही थी और राजवालिखिन को स्थानीय सेल के काम के संगठन में मदद पहुँचाने के लिए भेजा गया था।

लिदा ने मजाक के स्वर में कोचवान से पूछा, "तो तुम्हें कोमसोमोल अच्छे नहीं लगते?"

कोचवान जवाब देने के पहले थोड़ी देर तक अपनी छोटी सी खसखसी दाढ़ी के बाल नोचता रहा।

"नहीं, मुझे बुरे नहीं लगते····मैं इस बात का हामी हूँ कि नौजवानों को मस्ती का मौक़ा देना चाहिए, लोग नाटक-वाटक किया करें। मुझे खुद हँसने-हँसाने वाले नाटक पसन्द हैं, अगर अच्छे हों। शुरू में हमने जरूर सोचा था कि नौजवान हमारे काबू के बाहर हो जायँगे, मगर बाद में उलटी ही बात निकली। मैंने लोगों को कहते सुना है कि वे लोग शराब-वराब पीने और झगड़े करने वग़ैरह के मामले में बड़े सख़्त हैं। उनका ज़्यादा झुकाव किताब पढ़ने पर होता है। मगर पता नहीं क्यों वे लोग भगवान को अपनी जगह नहीं रहने देते, जब देखो तब वे गिर्जे छीन कर उनको क्लब में बदलने की फ़िराक़ में रहते हैं। यह बात ठीक नहीं है, इसी से हम बुड्ढे लोग उनके खिलाफ़ हो गये हैं। मगर कुल मिलाकर वे लोग बुरे नहीं हैं। अगर तुम मुझसे पूछो तो मैं यह जरूर कहूँगा कि गाँव के सभी दरिद्र लोगों को अपने में शरीक करके उन्होंने बड़ी ग़लती की। ऐसे लोगों को लेने से क्या फ़ायदा जो खरीदे जा सकते हैं या जो अपनी खेती की देख-भाल ठीक से नहीं कर सकते। धनी किसानों के लड़कों से वे लोग कोई सरोकार ही नहीं रखते।"

गाड़ी खड़खड़ाती हुई पहाड़ी के नीचे उतरी और स्कूल की इमारत के सामने जाकर रुक गई।

दरबान की बीवी इन नये आगन्तुकों के ठहरने का इन्तजाम करके पुआल पर सोने चली गई थी। लिदा और राजवालिखिन अभी एक मीटिंग से लौटे थे जो जरा देर में खत्म हुई थी। झोपड़ी के अन्दर अंधेरा था। लिदा ने जल्दी-जल्दी कपड़े उतारे, कूद कर बिस्तर पर गयी और पलक मारते सो गई। उसकी नींद अपने शरीर पर फिरते हुए राजवालिखिन के हाथों के स्पर्श से अचानक खुली। राजवालिखिन के हाथ इस तरह उसके शरीर पर फिर रहे थे कि लिदा के मन में कोई सन्देह न रहा कि राजवालिखिन का क्या इरादा है।

"क्या है ?"

"श् श्, लिदा, इतना हल्ला मत करो। अकेले पड़े-पड़े मैं तो उकता गया। इस तरह खर्राटे भरने से ज़्यादा अच्छी कोई चीज़ हो सकती है, क्या यह तुम्हारी समझ में नहीं आता ?"

"अपने पन्जों से मुझे इस तरह गूँधो मत और फ़ौरन मेरे बिस्तर पर से चले जाओ!" लिदा ने उसको धक्का देते हुए कहा। राजवालिखिन की तेल जैसी चिकनी मुस्कराहट से उसे हमेशा नफ़रत होती थी और उसके जी में आया कि उसको लज्जित और अपमानित करने के लिए कोई कड़ी बात कहे, मगर नींद उस पर भारी हो रही थी और उसने आँखें मूँद लीं।

"अरे मान भी जाओ! यह कैसी बात तुम कर रही हो ?" तुम कोई सन्यासिनी तो हो नहीं, तुम्हारा लालन-पालन किसी मठ में तो हुआ नहीं, तब फिर ऐसा क्यों ? बहुत भोली न बनो, तुम मुझे चरका नहीं दे सकती। अगर तुम सचमुच प्रगतिशील स्त्री होती तो मेरी इच्छा पूरी करके फिर मन चाहे जितना सोती।"

इस मामले को तय जान कर वह फिर लिदा के बिस्तरे की पाटी पर जाकर बैठ गया और लिदा के कन्धे पर उसने अपना हाथ रखा।

लिदा अब बिलकुल अच्छी तरह जाग गई थी, बोली, "जहन्नुम में जाओ! मैं कल कोर्चागिन को इसके बारे में बतला दूँगी।"

राजवालिखिन ने उसका हाथ पकड़ लिया और झुंझलाते हुए धीरे से बोला :

"मैं तुम्हारे कोर्चागिन की खाक परवाह नहीं करता और देखो मेरी बात मान जाओ, मुझे रोकने की कोशिश मत करो नहीं तो मुझे तुम्हारे साथ जबर्दस्ती करनी पड़ेगी।"

ज़रा देर हाथापाई हुई और फिर रात की निस्तब्धता में कस कर जड़े गये दो तमाचे गूंज उठे। राजवालिखिन कूद कर अलग खड़ा हो गया। लिदा टटोलती हुई दरवाज़े के पास गई, धक्का देकर उसे खोला और दौड़ कर हाते में निकल गई। वहाँ वह चाँदनी में खड़ी थी, उसके अन्दर गुस्सा उबाल खा रहा था।

"अन्दर चली आओ, बेवकूफ़ कहीं की!" राजवालिखिन ने दुष्टता से उसको पुकारते हुए कहा।

वह खुद अपना बिस्तर बाहर ओल्ती के नीचे निकाल लाया और बाकी रात उसने वहीं गुज़ारी। लिदा ने भीतर से कुंडी बन्द कर ली और अपने बिस्तर में सिमट कर फिर से सो गई।

सवेरे वे लोग अपने घर के लिए रवाना हो गये। राजवालिखिन बूढ़े कोचवान के बगल में बैठा सिगरेट पर सिगरेट पीता जा रहा था।

"यह छुई-मुई कहीं सचमुच जाकर कोर्चागिन के सामने मेरा भांडा फोड़ न दे। अरे किसने सोचा था कि वह ऐसी सती-साध्वी निकलेगी! नखरे तो ऐसे हैं कि जैसे पता नहीं कहाँ की हसीना हों, मगर शकल-सूरत कुछ है नहीं। लेकिन उससे समझौता कर लेना अच्छा होगा वरना मुसीबत होगी। यों भी कोर्चागिन की निगाह मुझ पर है।"

वह लिदा के पास पहुँच गया। उसने ऐसा दिखलाया कि जैसे उसे अपने ऊपर बड़ी शर्म आ रही हो, उदास चेहरा बना लिया और माफ़ी माँगने के दो चार शब्द बुदबुदाये।

उससे काम बन गया। अभी उन्होंने गाँव की सरहद पार भी न की थी कि लिदा ने उसको वादा दे दिया कि रात की बात वह किसी से न बतलायेगी।

सरहद पर के गाँवों में एक के बाद दूसरी जगह कोमसोमोल के संगठन बन रहे थे। ज़िला कमिटी के मेम्बर बड़ी सावधानी से कम्युनिस्ट आन्दोलन की इन पहली नयी कोंपलों की देखभाल कर रहे थे। कोर्चागिन और लिदा पोलेविख अलग-अलग बस्तियों में स्थानीय संगठन के मेम्बरों के साथ बहुत वक्त गुज़ारते थे।

राजवालिखिन को गाँवों में जाना अच्छा नहीं लगता था। वह नहीं जानता था कि कैसे किसान लड़कों का विश्वास पाये और बस कोई न कोई गड़बड़ी पैदा कर देता था। लिदा और पावेल को किसान नौजवानों से दोस्ती पैदा करने में कोई मुश्किल न होती थी। लड़कियाँ फ़ौरन लिदा को चाहने लग जाती थीं। वे उसे फ़ौरन अपने में से ही एक समझने लगतीं और लिदा धीरे-धीरे उनके मन में कोमसोमोल आन्दोलन के प्रति दिलचस्पी पैदा करती। जहाँ तक कोर्चागिन की बात थी, जिले के सारे नौजवान उसको जानते थे। सोलह सौ नौजवान जो फ़ौजी सर्विस के लिए बुलाये जाने वाले थे, वे आरम्भिक फ़ौजी शिक्षा उसकी बटालियन में ही पाते थे। उसका अकार्डियन इस गाँव में प्रचार के काम में जितना सहायक साबित हो रहा था, उतना पहले कभी नहीं हुआ था। अपने बाजे के कारण पावेल नौजवानों के बीच बड़ा लोकप्रिय था। वे नौजवान अक्सर शाम को गाँव की गलियों में जमा हो जाते थे और गाते-बजाते थे। और पता नहीं कितने बिगड़ैल जवानों ने यहीं से कोमसोमोल की तरफ़ अपना सफ़र शुरू किया था, अकार्डियन के इसी मोहक संगीत को सुन कर, जो कभी आवेगपूर्ण और उत्तेजक होता था, कभी

ओजस्वी और साहसपूर्ण और कभी कोमल और दुलार-भरा जैसे कि उक्रेन के उदास, हसरत-भरे गाने ही हो सकते हैं। वे अकार्डियन सुनते थे और उस नौजवान आदमी की बात सुनते थे जो अकार्डियन बजाता था, जो कभी रेलवे मजदूर था और अब फ़ौजी कमिसार और कोमसोमोल का मन्त्री था। और तब उन्हें ऐसा महसूस होता कि जैसे अकार्डियन का संगीत उस नौजवान कमिसार की बात के अन्दर डूब गया हो और दोनों के स्वर आपस में मिल गये हों। फिर जल्दी ही नये-नये गाने गाँवों में गूँजने लगते और झोपड़ियों में बाइबिलों और प्रार्थना पुस्तकों के पास दूसरी नयी-नयी पुस्तकें दिखाई देने लगतीं।

चोरी-चोरी माल को लाने-ले-जाने वालों को अब सरहद के सन्तरियों के अलावा एक दूसरी शक्ति का भी सामना करना पड़ता था। कोमसोमोल के सदस्यों की शकल में सोवियत सरकार को अपने बड़े पक्के दोस्त और उत्साही सहायक मिल गये थे। कभी-कभी सरहदी क़स्बे के कोमसोमोल संगठन दुश्मन को पकड़ने के उत्साह में हद से गुजर जाते थे और तब कोर्चागिन को अपने नौजवान साथियों की मदद के लिए आगे आना पड़ता था। एक बार ग्रिशुत्का खोरोवोदको को अपने निजी सूत्रों से यह पता चला कि उस रात को कुछ चोरी से लाया हुआ माल गाँव की मिल में आने वाला था। नीली आँखों वाला ग्रिशुत्का खोरोवोदको पोदुब्सी ग्राम सेल का मन्त्री था। वह गरम मिजाज का लड़का था और उसको बहस करना अच्छा लगता था और धर्म-विरोधी आन्दोलन में वह बहुत सक्रिय रहता था। उसने कोमसोमोल के सारे सदस्यों को जगाया और एक ट्रेनिंग राइफिल और दो संगीनों से लैस होकर वे लोग आधी रात को बाहर आये, चुपके से मिल में एक जगह छिप कर बैठ गये और अपने शिकार का इन्तजार करने लगे। खुफ़िया विभाग की सरहदी चौकी को भी चोरी का माल लाने वालों के इस इरादे की खबर लग गयी थी और उन्होंने भी अपने आदमी भेजे थे। अँधेरे में ये दोनों लोग एक-दूसरे से लड़ पड़े और अगर सरहदी सन्तरियों ने सूझ-बूझ से काम न लिया होता तो उस झगड़े में कोमसोमोल के बहुत से नौजवान मारे जाते या घायल होते। फ़िलहाल हुआ यह कि उन लड़कों से हथियार छीन लिये गये और उन्हें तीन मील दूर एक गाँव में ले जाकर हवालात में बन्द कर दिया गया।

संयोग से कोर्चागिन उस समय गाव्रिलोव के घर पर था। जब अगली सुबह को बटालियन कमांडर ने उसको यह खबर दी तो पावेल घोड़े पर सवार होकर अपने लड़कों को बचाने के लिए सरपट भागा।

खुफ़िया विभाग के आदमी ने, जो उस जगह ड्यूटी पर था, हँसते हुए उसको यह कहानी सुनाई।

उसने कहा, " कामरेड कोर्चागिन, मैं तुमको बतलाऊँ कि हम लोग क्या करने जा रहे हैं। ये अच्छे लड़के हैं और हम उन्हें परेशान नहीं करना चाहते, मगर अच्छा हो कि तुम उन्हें जरा डाँट दो ताकि आगे से वे हमारा काम करने की कोशिश न करें। "

सन्तरी ने शेड का दरवाजा खोला और ग्यारहो लड़के खड़े हो गये और खिसियाये हुए से कभी इस पैर पर और कभी उस पैर पर जोर देते खड़े रहे।

खुफ़िया विभाग के आदमी ने जान-बूझ कर और भी कठोरता से कहा, " इनको देखो, इन्होंने लेकर सारा मामला गड़बड़ कर दिया और अब मुझे इन लोगों को एरिया हेडक्वार्टर भेजना होगा। "

तब ग्रिशुत्का बोल उठा।

" मगर कामरेड सखारोव, " उसने आवेशपूर्ण स्वर में कहा, " हमने कौन सा जुर्म किया है ? हम लोग बहुत दिन से उन बदमाशों की टोह में थे। हम तो सोवियत अधिकारियों की मदद करना चाहते थे और आप हैं कि हमें लेकर यहाँ बन्द कर दिया, जैसे हम कोई डाकू हों। " यह कहते हुए वह इस तरह दूसरी ओर मुँह फेर कर खड़ा हो गया कि जैसे उसके साथ बड़ा अन्याय हुआ हो।

कोर्चागिन और सखारोव में गम्भीर परामर्श हुआ, मगर यह मामला ऐसा था कि उन्हें कई बार अपनी गम्भीरता बनाये रखने में मुश्किल हुई। आखिरकार, सलाह-मशविरे के बाद उन्होंने फैसला किया कि बहुत हो गया, लड़कों को काफ़ी तम्बीह हो गई, अब काफ़ी डर गये होंगे।

सखारोव ने पावेल से कहा, " अगर तुम उनकी गारन्टी लो और वादा करो कि अब वे फिर कभी चहलक़दमी करते हुए सरहद पर न जा निकलेंगे, तो मैं उन्हें छोड़ दूँगा। अगर वे मदद करना ही चाहते हैं तो उसके दूसरे तरीके हैं। "

" बहुत अच्छा, मैं उनकी गारन्टी लेता हूँ। मुझे उम्मीद है कि वे मुझे लज्जित होने का मौक़ा न देंगे। "

कोमसोमोल के वे लड़के गाते हुए पोदुब्नी वापस आये। मामला दबा दिया गया। और कुछ ही दिन बाद वह मिल वाला पकड़ लिया गया। इस बार क़ानून ने उसको पकड़ा था।

मैदान-विला के जंगलों मे घनी जर्मन किसानों की एक बस्ती थी। ये कुलक फार्म आधे-आधे किलोमीटर की दूरी पर थे और ऐसे मजबूत बने हुए थे मानो छोटे-मोटे किले हों। मैदान-विला को ही अपना केन्द्र बना कर आन्तोन्युक

और उसके गिरोह वाले लूटपाट किया करते थे। आन्तोन्युक एक समय ज़ारशाही फौज में सार्जेन्ट मेजर रह चुका था। अब उसने अपने अज़ीज रिश्तेदारों में से सात खूनियों को जमा कर लिया था और उन्हें पिस्तौलों से लैस करके गाँव की सड़कों पर डकैतियाँ किया करता था। खून बहाने में उसे कोई दरेग़ न था। अमीर सट्टेबाज़ों और मुनाफाखोरों को लूटने में उसे आपत्ति न थी, मगर उसके साथ ही साथ वह सोवियत मज़दूरों को भी लूटता था। आन्तोन्युक की खास बात उसकी तेज़ रफ्तार थी। एक रोज वह कोआपरेटिव स्टोर के दो क्लर्कों को लूटता और उसके अगले ही रोज अठारह मील दूर किसी गांव में डाकखाने के किसी कर्मचारी के हथियार वग़ैरह छीन लेता और उसके पास जो कुछ होता, कौड़ी-कौड़ी लूट लेता। आन्तोन्युक की प्रतियोगिता गोर्देई से थी जो उसी की तरह एक दूसरा लुटेरा था और किसी भी तरह आन्तोन्युक से बेहतर नहीं था। दोनों लुटेरों को लेकर उस इलाके की मिलीशिया और खुफियों के लोग बड़े परेशान रहते थे। आन्तोन्युक का इलाक़ा बेरेजदोव के ठीक बाहर था और धीरे-धीरे यह हालत पैदा हो गई कि शहर जानेवाली सड़क पर निकलना खतरनाक हो गया। उस लुटेरे को पकड़ना मुश्किल हो रहा था, वह हमेशा बच कर निकल जाता था। जब वह अपने को खतरे में देखता तो सरहद के उस पार चला जाता और कुछ खामोश पड़ा रहता और फिर अचानक जब कि किसी को उसकी उम्मीद न होती, वह दुबारा अपनी लूटपाट शुरू कर देता। उसका यह बार-बार बच कर निकल जाना ही उसको और भी खतरनाक बना रहा था। इस लुटेरे की किसी नई लूटपाट की रिपोर्ट मिलने पर लिसित्सिन गुस्से से अपने ओठों को चबाने लगता।

"कब यह सांप हमको काटना बन्द करेगा? मगर हरामज़ादे, अब ज़रा बच कर रहना नहीं तो मैं ही तेरी बोटी-बोटी अलग करूँगा," उसने दाँत पीसते हुए कहा। दो बार जिला कार्यकारिणी के चेयरमैन ने कोर्चागिन और तीन दूसरे कम्युनिस्टों को लेकर उस लुटेरे का पीछा किया, मगर हर बार वह बच कर निकल गया।

लुटेरे से लड़ने के लिए एरिया सेंटर से एक खास टुकड़ी बेरेजदोव भेजी गयी। इस टुकड़ी का कमांडर फिलातोव नाम का बांका जवान था। कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन को अपने आने की रिपोर्ट देने के पहले, जैसा कि उसे सरहदी नियमों के अनुसार करना चाहिए था, यह घमंडी छैला जवान सीधे सबसे पास के गांव सेमाकी गया। आधी रात को वह गांव में पहुँचा और अपने आदमियों को लेकर गांव के छोर पर एक मकान में ठहर गया। इन सशस्त्र लोगों के अचानक और रहस्यपूर्ण आगमन को बग़ल के घर के एक कोमसोमोल मेम्बर ने लक्ष्य किया

और झटपट गांव की सोवियत के चेयरमेन को इसकी रिपोर्ट देने चल दिया। गाँव की सोवियत के चेयरमेन को इस टुकड़ी के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। इसलिए स्वभावतः उसने उन्हें लुटेरा समझा और उस युवा कम्युनिस्ट को फौरन जिला केन्द्र में मदद हासिल करने के लिए भेजा। फिलातोव की इस अहमकाना बहादुरी से कई लोगों की जानें चली गई होतीं। लिसित्सिन ने आधी रात को मिलिशिया वालों को जगाया और एक दर्जन आदमियों को लेकर सेमाकी के इन "लुटेरों" का सफ़ाया करने के लिए चला। वे अपने घोड़ों पर सरपट उस मकान तक आये, घोड़ों से उतरे और बाड़ी को फांदते हुए मकान के पास पहुँचे। उस सन्तरी के, जो दरवाजे पर खड़ा पहरा दे रहा था, सिर पर रिवाल्वर से चोट मार कर उसे गिरा दिया गया, लिसित्सिन और उसके आदमी तेजी से उस कमरे में घुसे जिसमें छत से लटकते हुए एक तेल के चिराग़ का मद्धिम प्रकाश था। एक हाथ में दस्ती बम और दूसरे में रिवाल्वर लिये हुए लिसित्सिन इतने जोर से गरजा कि खिड़की के शीशे खड़खड़ा उठे :

"हथियार डाल दो, नहीं तो मैं तुम लोगों को गोली से उड़ा दूँगा!"

एक क्षण की ही बात और थी और वे निंदासे लोग जो फ़र्श पर से उछल उछल कर खड़े हो रहे थे, गोलियों की बौछार से वहीं ढेर कर दिये गये होते। मगर उस आदमी की शकल, जो दस्ती बम फेंकने के लिए तैयार खड़ा था, इतनी भयानक थी कि उन्होंने डर के मारे हाथ उठा दिये। कुछ मिनट बाद जांघिया पहने "लुटेरों" को बाहर ले जाया गया तो फ़िलातोव ने लिसित्सिन की वर्दी पर लगे हुए तमग़े को देखा और उसको परिस्थिति की सफ़ाई देने लगा।

लिसित्सिन को बड़ा गुस्सा आया। उसने नफ़रत से कहा, "गधा कहीं का!"

जर्मन क्रान्ति की खबरें, हाम्बुर्ग के बैरीकेडों के राइफिलों की हलकी गूँजें इस सरहदी इलाके में भी पहुँचीं। वातावरण में बड़ा तनाव था। लोग बड़ी आतुर आशा से अखबार पढ़ते थे। क्रान्ति की हवा पश्चिम से आ रही थी। कोमसोमोल जिला कमिटी में नौजवान कम्युनिस्टों की अर्जियों पर अर्जियाँ आ रही थीं कि वे लाल फौज में भरती होना चाहते हैं। कोर्चागिन उन लोगों को समझाने में व्यस्त था कि सोवियत देश शान्ति की नीति का अनुसरण कर रहा है और उसका कोई इरादा अपने पड़ोसियों से लड़ने का नहीं है। मगर इसका कोई खास असर नहीं पड़ा। हर इतवार को सारे जिले के कोमसोमोल सदस्य पादरी के मकान के बड़े बाग़ीचे में मीटिंग करते थे और एक रोज दोपहर को पोदुब्सी का सेल वाक़ायदा

मार्च करता हुआ जिला कमिटी के हाते में आया। कोर्चागिन ने उन्हें खिड़की में से देखा और बाहर सायबान में निकल आया। वे ग्यारह लड़के थे और खोरोवोदको सबसे आगे-आगे था। सब बड़े-बड़े फ़ौजी बूट पहने हुए थे और सबके कन्धों पर बड़े-बड़े किरमिच के किटबैग थे। वे आकर दरवाजे पर रुके।

कोर्चागिन ने आश्चर्य से पूछा, "यह क्या है ग्रिशा?"

खोरोवोदको ने जवाब देने के बदले पावेल को आँख से इशारा किया और उसके साथ मकान के अन्दर चला गया। लिदा, राजवालिखिन तथा दो और कोमसोमोल के सदस्य खोरोवोदको के पास घिर आये और उससे पूछने लगे कि यह क्या मामला है। खोरोवोदको ने दरवाजा बन्द कर दिया और अपनी भवों में झुर्री डालते हुए बोला :

"साथियो, यह एक तरह का टेस्ट मोबिलाइजेशन है। यह मेरी ही सूझ है। आज सवेरे मैंने लड़कों को बतलाया कि जिले से एक बहुत खुफ़िया तार आया है कि जर्मन पूँजीशाहों से हमारी लड़ाई ठननेवाली है और जल्दी ही पोलिश जागीरदारों से भी हमें लड़ना होगा। मैंने उनको बतलाया कि मास्को से हमको आदेश मिला है कि तमाम नौजवान कम्युनिस्टों को मोर्चे के लिए जमा करो। जिस किसी को भी डर लगता हो वह अर्जी दे सकता है और उसे घर पर रहने की इजाजत मिल जायगी। मैंने उन्हें कहा कि किसी से लड़ाई के बारे में एक शब्द भी न कहें, बस एक डबल रोटी और थोड़ा सा गोश्त लेकर आ जायँ और जिनके पास गोश्त न हो, वे लहसुन-प्याज भी ला सकते हैं। हम लोग गाँव के बाहर गुप्त रूप से मिलनेवाले थे और फिर वहाँ से जिले के केन्द्र में जाने का हमारा इरादा था और फिर जिले के केन्द्र से एरिया के केन्द्र में जहाँ हथियार मिलने की बात थी। तुम देखते कि लड़कों पर इस चीज का कैसा गहरा असर पड़ा था! उन्होंने मुझको बहुत पम्प करने की कोशिश की मगर मैंने उनसे कहा कि चटपट तैयारी में लग जाओ और फिजूल के सवालात में मत पड़ो। वे लोग जो मोर्चे पर न जाना चाहते हों, बतला दें। हमें सिर्फ स्वयंसेवकों की जरूरत है। खैर इसके बाद मेरे लड़के चले गये और मैं परेशान होने लगा। मान लो उनमें से कोई न लौटा? अगर ऐसा हुआ तो मैं पूरी सेल को तोड़ दूँगा और किसी दूसरी जगह चला जाऊँगा। मैं गाँव के बाहर धड़कते हुए दिल से उनका इन्तजार करता बैठा रहा। थोड़ी देर बाद, एक के बाद एक उनका आना शुरू हुआ। उनमें से कुछ रोये थे, उनके चेहरे से यह बात साफ़ थी गोकि वे छिपाने की कोशिश कर रहे थे। दस के दसो आ गये, हमारे बीच एक भी भगोड़ा नहीं था। ऐसा है हमारा पोदुब्सी सेल!" उसने विजयोल्लास के स्वर में अपनी बात खतम की।

उसकी बात से लिदा पोलेविख को झटका सा लगा और जब उसने खोरोवोदकों को डांटना शुरू किया तो वह उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगा।

" तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आई ? मेरी समझ में तो यह उनकी परीक्षा का सबसे अच्छा तरीका है। इस तरह हर आदमी को एकदम आरपार देखा जा सकता है। यहाँ पर किसी धोखे-धड़ी की गुंजाइश नहीं है। मैं नाटक को पूरा करने के लिए उन्हें सीधे एरिया सेंटर तक घसीट कर ले जाना चाहता था, लेकिन वे बुरी तरह थक गए हैं। कोर्चागिन, तुम्हें उनके सामने छोटी सी तकरीर करनी होगी। करोगे न ? तकरीर के बिना बात कुछ बनेगी नहीं। उनसे बतला देना कि भरती बन्द हो गई है या इसी किस्म की कोई बात, मगर उससे क्या, हमें अपने जवानों पर गर्व है।"

कोर्चागिन एरिया सेंटर में कम ही जाता था क्योंकि रास्ते में कई रोज लग जाते थे और काम की ऐसी भीड़ थी कि उसका हरदम अपने जिले में रहना जरूरी था। इसके विपरीत राजवालिखिन छोटे-से-छोटे बहाने से हरदम शहर जाने के लिए तैयार रहता था। सिर से पैर तक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर वह निकलता था और शायद अपने दिल में खुद को फेनीमोर कूपर का नायक समझता था। जंगल में से गुजरते वक्त वह कौओं और गिलहरियों पर गोली का निशाना लगाता, अकेले राहगीरों को रोक लेता और उनसे सवाल करता कि तुम कौन हो, कहाँ से आ रहे हो, कहाँ जा रहे हो। शहर के पास पहुँच कर वह अपने हथियार अलग रख देता, अपनी राइफिल गाड़ी में घास के नीचे डाल देता और रिवाल्वर अपनी जेब में छिपा कर रख लेता और जब कोमसोमोल की एरिया कमिटी के दफ्तर में पहुँचता तो अपने साधारण रूप में दिखाई देता।

" कहो बेरेज़दोव की क्या खबर है ? " एरिया कमिटी के मन्त्री फ़ेदोतोव ने एक रोज दफ्तर में आने पर राजवालिखिन से पूछा।

फ़ेदोतोव के दफ्तर में हर वक्त भीड़ लगी रहती थी और सब लोग एक साथ ही बात करते थे। ऐसी हालत में काम करना आसान नहीं था। एक ही साथ चार लोगों की बात सुनना, पाँचवें आदमी की बात का जवाब देना और फिर बीच-बीच में लिखते भी जाना। गोकि फ़ेदोतोव की उम्र बहुत कम थी, तब भी वह सन १९१९ से ही पार्टी मेम्बर था, उन तूफ़ानी दिनों में ही यह बात मुमकिन थी कि कोई पन्द्रह बरस का लड़का पार्टी के अन्दर लिया जा सकता था।

राजवालिखिन ने लापरवाही से जवाब दिया, " अरे तमाम खबरें ही खबरें

हैं। इतनी खबरें हैं कि सब एक साथ बतलाना भी मुश्किल है। सबेरे से लेकर रात तक हम लोग पिसे रहते हैं। इतना ज़्यादा काम है। आप जानते ही हैं कि हमें एकदम नींव से शुरू करना पड़ा। हमने दो नये सेल बनाये। अब बतलाइए कि आपने मुझे यहाँ काहे के लिए बुलाया है?" और वह एक आराम कुरसी पर बड़े कामकाजी आदमी के ढंग से बैठ गया।

अर्थ विभाग के प्रधान, क्रिम्स्की ने एक पल के लिए अपनी मेज़ पर फैले हुए कागजों के ढेर से आँख उठा कर देखा।

उसने कहा, "हमने तो कोर्चागिन को बुलाया था, तुमको तो बुलाया नहीं था।"

राजवालिखिन ने मुँह से सिगरेट के धुएँ का बादल छोड़ा।

"कोर्चागिन को यहाँ आना अच्छा नहीं लगता, इसलिए दूसरे कामों के अलावा यह काम भी मुझे ही करना पड़ता है....आम तौर पर कुछ सेक्रेटरियों की ज़िन्दगी मजे में गुजर रही है। वे खुद कुछ काम नहीं करते और मुझ जैसे गधों को ही सारा बोझ ढोना पड़ता है। एक बार सरहद के इलाके में चले जाने पर कोर्चागिन फिर दो-तीन हफ्ते नहीं लौटता और फिर सारा काम मेरे सिर आ पड़ता है।"

राजवालिखिन के इस इशारे को सबने समझा कि जिला मन्त्री बनने के लिए वही ज़्यादा योग्य है।

राजवालिखिन के चले जाने पर फ़ेदोतोव ने अपने दूसरे साथियों से कहा, "यह आदमी मुझे अच्छा नहीं लगता।"

राजवालिखिन की चालबाजी का पर्दाफाश यों ही अचानक हो गया। एक रोज लिसित्सिन अपनी डाक लेने के लिए फेदोतोव के दफ्तर में आया। देहात में काम करने वालों का यही आम कायदा था। दोनों आदमियों की बातचीत के दौरान में राजवालिखिन का पर्दाफाश हो गया।

"कोर्चागिन को यहाँ जरूर भेजो। हम तो यहां उसे अच्छी तरह जानते भी नहीं," फेदोतोव ने लिसित्सिन से चलते समय कहा।

"बहुत अच्छा। मगर देखना उसको हम लोगों के पास से छीनने की कोशिश मत करना। यह हम कभी न होने देंगे।"

इस साल सरहद पर अक्तूबर क्रान्ति की साल-गिरह और सालों से भी ज़्यादा उत्साह से मनाई गई। सरहद के गांवों में इस उत्सव का संगठन करने के

लिए जो कमिटी बनाई गई थी, उसका चेयरमेन कोर्चागिन को चुना गया। पोदुब्सी की मीटिंग के बाद आसपास के तीन गांवों के पाँच हज़ार किसान आधा मील लम्बा जुलूस बना कर, बड़े-बड़े लाल झण्डे लिये और फौजी बैण्ड और ट्रेनिंग बटालियन को आगे किये सीमान्त की तरफ बढ़े। सोवियत सीमा में वे लोग बाक़ायदा मार्च कर रहे थे। वे सरहदी चौकी के बराबर-बराबर चले जा रहे थे और उन गाँवों की तरफ़ बढ़ रहे थे जिन्हें विभाजन रेखा ने दो टुकड़ों में बाँट दिया था। इसके पहले पोलों ने अपनी सीमा पर ऐसे लोगों को नहीं देखा था। बटालियन कमांडर गाव्रिलोव और कोर्चानिन अपने घोड़ों पर सवार जलूस के आगे-आगे चल रहे थे और उनके पीछे बैण्ड बज रहा था, झण्डे हवा में फरफरा रहे थे और लोगों के गाने की आवाज़ दूर-दूर तक गूँज रही थी। किसान नौजवान अपने बेहतरीन कपड़े पहने हुए थे और बड़े जोश में थे। गाँव की लड़कियाँ खूब मगन थीं और हँस रही थीं। प्रौढ़ लोग गम्भीरता-पूर्वक मार्च कर रहे थे और बुड्ढों के चेहरों पर विजय के उल्लास का शान्त भाव था। जहाँ तक दिखाई देता था, यह मानव समुद्र फैला हुआ था। इसका एक किनारा सरहद पर था, मगर किसी ने उस निषिद्ध रेखा के उस पार क़दम भी नहीं रखा। कोर्चागिन ने आदमियों के इस समुन्दर को गुज़रते देखा। कोमसोमोल के गाने " घने जंगलों से लेकर ब्रिटेन के समुन्दरों तक लाल फ़ौज ही सबसे मज़बूत है ! " की जगह लड़कियों का समवेत गान चल रहा था, " उधर पहाड़ी के उस पार लड़कियाँ खेत काट रही हैं···· "

सोवियत सन्तरियों ने अपनी सन्तुष्ट मुस्कराहट से इस जुलूस का स्वागत किया। पोलिश सन्तरी हैरान खड़े देख रहे थे। इस प्रदर्शन से सरहद की दूसरी तरफ़ काफ़ी खलबली मची, बावजूद इसके कि पोलिश कमांड को आगे से ही इस चीज़ के बारे में पता था। घोड़े पर सवार सिपाही गश्त करते हुए बेचैनी से ऊपर नीचे, आगे-पीछे आ-जा रहे थे, सरहदी सन्तरियों की संख्या पँचगुनी कर दी गई थी और पास की पहाड़ियों के पीछे रिज़र्व फौज को भी रखा गया था जो ज़रूरत के वक़्त तत्काल बुलाई जा सकती थी। मगर जलूस अपने ही हिस्से में घूमता और मस्ती से मार्च कर रहा था और हवा उसके गाने से भरी हुई थी।

एक पोलिश सन्तरी एक टीले पर खड़ा था। जलूस नपी-तुली चाल से क़रीब आता जा रहा था। मार्च करने के समय का एक गीत शुरू हुआ। उस पोल ने फुर्ती से अपनी राइफ़ल नीचे कर ली और सलामी दी और कोर्चागिन ने उसके शब्द स्पष्ट सुने : " मज़दूरों का राज ज़िन्दाबाद ! "

उस सैनिक की आँखों से पावेल को मालूम हो गया कि उसी के मुँह से ये शब्द निकले थे। पावेल मुग्ध होकर अपलक उसको देखता रहा।

एक दोस्त ! सिपाही की वर्दी के भीतर जो दिल धड़क रहा है, उसे प्रदर्शनकारियों से सहानुभूति है। पावेल ने धीरे से पोलिश में जवाब दिया :

" बधाई कामरेड ! "

सन्तरी उसी मुद्रा में खड़ा रहा और प्रदर्शनकारी गुज़र गये। पावेल उस छोटी सी काली आकृति को देखने के लिए कई बार पीछे मुड़ा। यह एक और पोल था। उसकी गलमुच्छें पकने लगी थीं और उसकी टोपी के चमकदार छज्जे के नीचे उसकी आँखें एकदम भावशून्य थीं। पावेल ने अभी थोड़ी देर पहले जो बात सुनी थी उसका संस्कार अब भी उसके मन पर था, इसलिए उसने जैसे अपने आप से बुदबुदा कर पोलिश ज़बान में कहा :

" बधाई, कामरेड ! "

मगर कोई जवाब नहीं मिला।

गाव्रिलोव मुस्कराया। जो कुछ बातें हुई थीं उसने सुन लिया था।

उसने कहा, " तुम ज़रूरत से ज़्यादा उम्मीद करते हो। वे सब के सब सीधे-सादे सिपाही नहीं हैं। उनमें से कुछ ऊँचे पद के सैनिक भी हैं। तुमने उसकी आस्तीन पर वह चिन्ह नहीं देखा ? निश्चय ही वह फ़ौजी पुलिस का आदमी है। "

जलूस का अगला हिस्सा पहाड़ी के नीचे उतरने लगा था और एक गाँव की तरफ़ बढ़ रहा था जिसे सरहद ने दो हिस्सों में बाँट दिया था। गाँव का सोवियत वाला आधा हिस्सा मेहमानों के स्वागत की ज़बर्दस्त तैयारी कर रहा था। गाँव के सारे रहने वाले नदी के किनारे सरहद के पुल पर खड़े इन्तज़ार कर रहे थे। सड़क के दोनों तरफ़ नौजवान खड़े थे। गाँव के पोलिश हिस्से के घरों और शेडों की छतों पर लोग भरे हुए थे। वे नदी के इस पार की कार्रवाइयों को बड़ी गहरी और सतर्क दिलचस्पी से देख रहे थे। घरों के सायबानों में और बागीचों की बाड़ियों पर किसानों की भीड़ थी। आदमियों के उस गलियारे में दाखिल होने पर जलूस ने ' इन्टरनेशनल ' गान की तान छेड़ी। उसके बाद एक मंच पर से, जिसे हरी-हरी पत्तियों से सजाया गया था, खूब जोरदार तकरीरें हुईं। नौजवानों और सफ़ेद बाल वाले बुड्ढे क्रान्तिकारियों ने भाषण दिये। कोर्चागिन ने भी अपनी मातृभाषा उक्रेनी में भाषण दिया। उसके शब्द उड़ते हुए सरहद के उस पार पहुँचे और नदी पार के लोगों ने उनको सुना। फ़ौजी पुलिस के आदमियों ने वहाँ पर जमा देहातियों को भगाना शुरू कर दिया क्योंकि उन्हें डर था कि वे शब्द उन सुनने वालों के दिलों में भी आग लगा देंगे। गोलियाँ हवा में छोड़ी जाने लगीं।

सड़कें खाली हो गईं। नौजवान फौजी पुलिस की गोलियों से डर कर छतों पर से हट गये। सोवियत सरहद के लोग इन चीजों को देखते रहे और उनके चेहरे गम्भीर हो गये। जो कुछ अभी उसने देखा था, उससे अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक बुड्ढा गड़ेरिया गाँव के कुछ लड़कों की मदद से मंच पर चढ़ गया और उतेजित होकर भाषण देने लगा।

"तुमने देखा मेरे बच्चो! यही सलूक कभी हमारे साथ भी होता था। मगर अब किसान हमारे यहाँ गाँव का राजा है और अब कहीं नगाइका नहीं है। जागीरदारों, ताल्लुकेदारों का राज खतम हो गया है और हमारी पीठ पर अब उनके कोड़े नहीं पड़ते। बच्चो, यह तुम्हारा काम है कि तुम अब फिर कभी उन जागीरदारों और थैलीशाहों को लौटने न दो। मैं बुड्ढा आदमी हूँ और मुझे भाषण-वाषण देना नहीं आता। लेकिन अगर मैं बोल सकता तो मेरे पास कहने को बहुत कुछ है। जारशाही में हम लोग सारी जिन्दगी बैलों की तरह काम करते थे और भूख और बदहाली में रहते थे···उन बेचारों की ही तरह!" कहते हुए उसने अपने दुबले-पतले हाथ से नदी के उस पार इशारा किया और फूट-फूट कर रोने लगा जैसे बच्चे और बुड्ढे ही रो सकते हैं।

उसके बाद ग्रिशुत्का खोरोवोदको बोला। उसकी गुस्से से भरी हुई तकरीर को सुनते हुए गाव्रिलोव ने अपना घोड़ा मोड़ा और नदी के दूसरे किनारे पर यह देखने के लिए निगाह डाली कि कोई इन तकरीरों का नोट ले रहा है या नहीं। मगर नदी का किनारा वीरान था। पुल पर तैनात सन्तरी भी हटा लिया गया था।

उसने हँसते हुए कहा, "अच्छा है, लगता है कि विदेशी मामलों की कमिसारियट के पास कोई प्रतिवाद नहीं भेजा जायगा।"

पतझड़ के आखिरी दिनों में एक बरसाती रात को आन्तोन्युक और उसके सात आदमियों की खून और तबाही की कहानी आखिरकार खतम हो गई। वह लुटेरा मैदान-विला की जर्मन बस्ती में एक धनी किसान के घर एक शादी के मौके पर पकड़ा गया। खोलिन्स्की कम्यून के किसानों ने उसको पकड़ा था।

गाँव की औरतों ने शादी में आये हुए इन मेहमानों के बारे में खबर दी और बाहर कोमसोमोल फ़ौरन इकट्ठा हो गए और जो भी हथियार मिले, उनसे लैस होकर गाड़ी पर चढ़ कर मैदान-विला के लिए रवाना हुए और एक आदमी को

खबर लेकर बेरेज़दोव भेज दिया। सेमाकी में संयोग से उस खबर ले जाने वाले आदमी की मुलाकात फिलातोव की टुकड़ी से हो गई जो खबर मिलते ही लुटेरों को पकड़ने के लिए चल दी। खोलिन्स्की के आदमियों ने फार्म को घेर लिया और उनमें और आन्तोन्युक के गिरोह के लोगों में राइफिलें चलने लगीं। आन्तोन्युक के गिरोह वाले मकान के एक हिस्से में किलेबन्दी करके बैठ गये और जो भी उनकी राइफिल की मार में आता, उस पर फ़ौरन गोली चलाते। उन्होंने एक बार भाग निकलने की भी कोशिश की, मगर उन्हें मार कर फिर उस इमारत के अन्दर घुसने पर मजबूर कर दिया गया। इस कोशिश में उनका एक आदमी मारा गया। आन्तोन्युक ऐसी अनेक कठिन घड़ियों से गुजर चुका था और अपने दस्ती बमों और अन्धेरे की मदद से लड़ कर अपना रास्ता बनाने में कामयाब हुआ था। इस बार भी वह भाग गया होता क्योंकि खोलिन्स्की के नौजवान कम्युनिस्टों के दो आदमी मारे जा चुके थे, मगर संयोग से उसी वक्त फिलातोव मौके पर पहुँच गया। आन्तोन्युक ने समझ लिया कि उसका खेल अब खतम हो गया। सबेरे तक वह तमाम खिड़कियों में से गोलियां चलाता ही रहा, मगर भोर होते-होते उसे पकड़ लिया गया। उन सातों में से एक ने भी आत्म-समर्पण नहीं किया। इन लुटेरों का सफ़ाया करने में चार जानें गईं। उनमें से तीन हाल ही में संगठित खोलिन्स्की के कोमसोमोल दल के लड़के थे।

कोर्चागिन की बटालियन को इलाकाई फ़ौजों की पतझड़ के दिनों की फौजी कार्रवाइयों के लिए बुला लिया गया। बटालियन मूसलाधार बारिश में एक ही दिन में तीस मील मार्च करके डिवीजनल कैम्प पर पहुँची। वे सबेरे रवाना हुए और बहुत रात गये अपनी मन्जिल पर पहुँचे। बटालियन कमांडर गुसेव और उसका कमिसार दोनों घोड़ों पर सवार थे। बटालियन के आठ सौ ट्रेनिंग पाने वाले बारक में पहुँचे तो थक कर चूर हो रहे थे और वे फौरन सो गये। दाँव-पेंच की कार्रवाइयाँ अगले रोज सुबह शुरू होने वाली थीं; टेरीटोरियल डिवीजन के हेडक्वार्टर ने बटालियन को बुलाने में देर कर दी थी। बटालियन के लोग जब अपनी वर्दियाँ पहने और राइफिलें लिये मुआइने के लिए कतार में खड़े हुए तो उनकी शकल एकदम बदली हुई थी। इन नौजवानों को फौजी ट्रेनिंग देने में गुसेव और कोर्चागिन ने बहुत समय और शक्ति लगाई थी और उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि उनकी यूनिट इम्तहान में पास हो जायगी। जब सरकारी मुआइना खतम हो गया और बटालियन ने ड्रिल के मैदान में अपनी योग्यता भी दिखला दी, तब एक कमांडर ने

जो खूबसूरत मगर थुलथुल आदमी था, कोर्चागिन की तरफ मुड़ कर तेज स्वर में जवाब तलब किया :

" तुम घोड़े पर क्यों सवार हो ? हमारी ट्रेनिंग बटालियनों के कमांडरों और कमिसारों को घोड़े पर सवार होने का हक नहीं है। अपने घोड़े को अस्तबल में रख दो और पैदल आकर इन कार्रवाइयों में शरीक होओ। "

कोर्चागिन जानता था कि अगर वह घोड़े से उतर पड़ा तो परेड में हिस्सा न ले सकेगा क्योंकि उसकी टाँगों में एक कदम भी चलने की ताकत न थी। मगर वह अपनी बात कैसे इस बढ़-बढ़ कर बात करने वाले छैले को समझाये जो इतने ठाठबाट से अपने फीते-वीते लगाये हुए है ?

" मैं पैदल परेड में हिस्सा न ले सकूँगा। "

" क्यों ? "

यह समझ कर कि उसे कोई न कोई जवाब देना ही होगा, कोर्चागिन ने धीरे से कहा :

" मेरी टाँगें सूजी हुई हैं और मैं एक हफ्ते तक इस दौड़ने-भागने को बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा। मगर यह तो बतलाओ कामरेड कि तुम कौन हो ? "

" पहली बात तो यह कि मैं तुम्हारी रेजिमेंट का चीफ आफ स्टाफ हूँ, और दूसरी बात यह कि मैं एक बार फिर तुमको घोड़े पर से उतरने का हुक्म देता हूँ। अगर तुम बीमार हो तो तुम्हें फौज में नहीं होना चाहिए। "

पावेल को ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने उसके मुँह पर चाबुक मार दिया। उसने जोर से लगाम को अपनी तरफ खींचा और जैसे उतरने को हुआ, मगर गुसेव के मजबूत हाथ ने उसे रोक दिया। कुछ देर तक पावेल के मन में आहत स्वाभिमान और आत्मसंयम के बीच द्वन्द्व हुआ। मगर पावेल कोर्चागिन अब मामूली लाल सैनिक न था जो बहुत आसानी से इस यूनिट से उस यूनिट में जा सकता था। अब वह बटालियन कमिसार था और उसके पीछे उसकी बटालियन खड़ी थी। अगर वही हुक्म को न माने तो अपने आदमियों के सामने अनुशासन की दृष्टि से वह कैसा बुरा उदाहरण रखेगा ! इस घमंडी गधे के लिए तो उसने अपनी बटालियन को तैयार किया नहीं था। उसने रकाब में से अपने पैर निकाले, घोड़े से उतर पड़ा और घुटनों के भयानक दर्द से लड़ता हुआ दाहिनी तरफ चला गया।

कई दिन तक मौसम बहुत ही अच्छा रहा। परेड और दूसरी फौजी कार्रवाइयाँ अब खतम होने आ रही थीं। पाँचवें रोज सैनिक शेपेतोवका के करीब थे और यहीं ये कार्रवाइयाँ खत्म होने वाली थीं। बेरेजदोव की बटालियन को क्लिमेन्तोविची

गाँव की तरफ से स्टेशन पर कब्जा करने का काम दिया गया था।

कोर्चागिन ने, जो अब अपने घर की जमीन पर था, स्टेशन पर पहुँचने के सभी रास्ते गुसेव को दिखला दिये। बटालियन दो हिस्सों में बँट गई और एक लम्बा घेरा लेते हुए दुश्मन की पिछली पाँतों में जा निकली और खुशी से जोर-जोर से चिल्लाते हुए स्टेशन की इमारत में घुस गई। इस काम की बड़ी प्रशंसा हुई। बेरेज़दोव के लोगों का कब्जा स्टेशन पर कायम रहा और जिस बटालियन ने स्टेशन की रक्षा की थी, वह जंगल में चली गई और फैसला करने वालों ने यह फैसला किया कि उन्होंने अपने आधे आदमी गंवा दिये थे।

कोर्चागिन बटालियन के आधे हिस्से का कमांडर था। उसने अपने आदमियों को मैदान में फैल जाने का हुक्म दे दिया था और कमांडर और तीसरी कम्पनी के राजनीतिक शिक्षक के साथ सड़क के बीच में खड़ा था, जब कि एक लाल सैनिक उसके पास दौड़ता हुआ आया।

उसने हाँफते हुए कहा, "कामरेड कमिसार, बटालियन कमांडर जानना चाहते हैं कि क्या तोपची रेलवे क्रॉसिंगों का बचाव करेंगे। कमीशन के लोग इधर ही आ रहे हैं।"

पावेल और उसके संग के कमांडर एक क्रॉसिंग पर गये। रेजिमेन्टल कमांडर और उसके सहायक वहाँ पर थे। गुसेव को इस कामयाब फौजी कार्रवाई के लिए बधाई दी गई। हारी हुई बटालियन के प्रतिनिधि खिसियाये से खड़े थे और उन्होंने अपनी सफ़ाई में भी कुछ नहीं कहा।

गुसेव ने कहा, "इस चीज़ का श्रेय मैं नहीं ले सकता। कोर्चागिन ने ही हमको रास्ता दिखलाया था। वह यहीं का आदमी है।"

चीफ़ आफ स्टाफ घोड़े पर सवार होकर पावेल के पास आया और व्यंग के स्वर में बोला, "तो तुम अच्छा-खासा दौड़ लेते हो, कामरेड। घोड़ा जो तुमने ले रखा था वह शायद रोब जमाने के लिए, क्यों?" वह और भी कुछ कहने जा रहा था, मगर कोर्चागिन के चेहरे के भाव को देख कर रुक गया।

जब बड़े कमांडर चले गये तो कोर्चागिन ने गुसेव से पूछा, "तुम्हें इस आदमी का नाम तो नहीं मालूम?"

गुसेव ने उसके कन्धे पर हाथ मारा।

"अरे छोड़ो भी, क्यों फ़िजूल उस छिछोरे के पीछे अपना दिमाग़ खराब करते हो। उसका नाम चुज़ानिन है। पहले वह शायद अलमबरदार था।"

उस रोज़ पावेल ने कई बार अपने दिमाग़ पर जोर डाल कर यह याद करने

की कोशिश की कि यह नाम उसने पहले कहाँ सुना था, मगर उसे याद नहीं आया।

दाँव-पेंच की कार्रवाइयाँ ख़तम हो गई थीं। बटालियन बहुत प्रशंसित होकर बेरेज़दोव लौट गई। कोर्चागिन अपनी माँ से मिलने के लिए एक-दो दिन के लिए रुक गया। उसकी माँ के दिन बड़ी मुश्किल से कट रहे थे। दो रोज़ तक वह बारह-बारह घंटे सोया और तीसरे रोज़ आर्तेम से मिलने के लिए यार्ड में गया। इस धूल से अटे हुए, धुएँ से काले घर में पावेल को बड़ा अच्छा मालूम हुआ। उसने भूखे आदमी की तरह कोयले के धुएँ को अपने फेफड़ों में भरा। यही उसकी असली जगह थी और यहीं पर वह रहना चाहता था। उसको लगा कि जैसे उसकी कोई बहुत ही प्यारी चीज़ खो गई हो। इंजन की सीटी सुने उसे महीनों हो गये थे और पहले के इस फ़ायरमैन और बिजली वाले के मन में अपने परिचित परिवेश के लिए वैसी ही प्यास थी जैसी किसी मल्लाह के दिल में बहुत दिनों तक समुद्र के किनारे पर रहने के बाद समुद्र के असीम विस्तार के लिए होती है। इस भावना पर विजय पाने में उसे काफ़ी समय लगा। वह अपने भाई से ज़्यादा नहीं बोला। उसका भाई अब लुहारखाने में काम करता था। आर्तेम के माथे पर उसने नई झुर्रियाँ देखीं। अब वह दो बच्चों का बाप था। साफ़ ज़ाहिर था कि आर्तेम की ज़िन्दगी आराम की ज़िन्दगी न थी। उसने कोई शिकायत नहीं की, मगर पावेल खुद इस बात को समझ गया।

दोनों ने संग-संग एक-दो घंटे काम किया और फिर अलग हो गये।

रेलवे क्रॉसिंग पर पावेल ने अपने घोड़े की लगाम खींची और रुका और बड़ी देर तक स्टेशन को देखता रहा। फिर उसने घोड़े को चाबुक लगाया और जंगल में होता हुआ सरपट सड़क पर निकल गया।

जंगल की सड़कें अब काफ़ी सुरक्षित थीं। बोल्शेविकों ने सभी छोटे-बड़े लुटेरों का सफ़ाया कर दिया था और उस इलाक़े के गाँव अब शान्ति से ज़िन्दगी बसर करते थे।

दोपहर होते-होते पावेल बेरेज़दोव पहुँचा। लिदा पोलेविख उसके स्वागत के लिए दौड़ कर ज़िला कमिटी के सायबान में निकल आई।

उसने बड़ी प्यार-भरी मुस्कराहट के साथ कहा, "स्वागत! घर लौटने पर! तुम्हारे बिना यहाँ बहुत बुरा लगता था!" उसने पावेल को अपनी बाँहों में ले लिया और फिर दोनों कमरे में चले गये।

अपना कोट उतारते हुए उसने लिदा से पूछा, "राज़वालिखिन कहाँ है?"

लिदा ने अनमने ढंग से जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम। अरे हाँ, याद आया। उसने आज सुबह को ही मुझसे कहा था कि वह तुम्हारे बदले समाज-शास्त्र का क्लास लेने स्कूल जा रहा है। वह कहता है कि यह तुम्हारा नहीं, उसका काम है।

पावेल को अचानक मिलने वाली इस खबर से तकलीफ़ हुई। राज़वालिखिन उसे कभी अच्छा नहीं लगता था। पावेल ने चिढ़ते हुए अपने मन में कहा, "स्कूल में वह सारा मामला गड़बड़ कर देगा, पता नहीं क्या अनाप-शनाप पढ़ाये।"

उसने लिदा से कहा, "उसकी तुम फ़िक्र न करो। मुझे बतलाओ, यहाँ की अच्छी-अच्छी खबरें क्या हैं। तुम ब्रुशेव्का गई थीं? वहाँ लड़कों का क्या हाल है?"

लिदा जब उसको सारी खबरें दे रही थी, उस वक़्त पावेल अपने थके हुए शरीर को आराम देने के लिए कोच पर लेटा हुआ था।

"परसों राकीतिना को पार्टी का उम्मीदवार सदस्य बना लिया गया। इससे हमारा पोदुब्सी सेल बहुत मज़बूत हो जायगा। राकीतिना अच्छी लड़की है, मैं उसे बहुत पसन्द करती हूँ। यहाँ की उस्तानियाँ अब हमारे संग आने लगी हैं, उनमें से कुछ तो आ भी चुकी हैं।"

कोर्चागिन और पार्टी की जिला कमिटी का नया मन्त्री लिचीकोव, यह दोनों अक्सर शाम को लिसित्सिन के घर पर मिलते थे और फिर तीनों उस बड़ी मेज़ पर बैठे बड़ी रात तक पढ़ते रहते थे।

जिस कमरे में लिसित्सिन की बीबी और बहन सोती थीं, उसका दरवाज़ा कस कर बन्द कर दिया जाता और फिर तीनों किसी छोटी सी किताब पर झुके हुए धीमे-धीमे आपस में बात करते। लिसित्सिन को पढ़ने का वक़्त सिर्फ़ रात को मिलता था। तब भी जब कभी पावेल अपनी अक्सर होने वाली गाँव की यात्राओं से लौटता, तो उसे यह देख कर बड़ी खीझ होती कि उसके साथी बहुत आगे निकल गये हैं।

एक दिन पोदुब्सी के सन्देशवाहक ने यह खबर दी कि न जाने किन लोगों ने अगली रात को ग्रिशुत्का खोरोवोदको की हत्या कर दी थी। पावेल फ़ौरन भागा-

भागा कार्यकारिणी समिति के अस्तबल में गया और अपनी टाँगों के दर्द को भूल कर पागल आदमी की तरह जल्दी-जल्दी एक घोड़े की जीन कसी और उस पर सवार होकर सरपट सरहद की तरफ़ चल दिया।

ग्रिशुत्का गाँव की सोवियत के मकान में सनोबर की शाखों से ढँका एक मेज़ पर पड़ा था और सोवियत का लाल झण्डा उस पर पड़ा हुआ था। एक सरहदी सन्तरी और एक कोमसोमोल दरवाज़े पर खड़े पहरा दे रहे थे और जब तक कि अधिकारी नहीं आ गये, वे किसी को अन्दर नहीं जाने देते थे। कोर्चागिन मकान के अन्दर दाखिल हुआ, मेज़ के पास गया और झण्डे को उलट दिया।

ग्रिशुत्का का चेहरा मोम की तरह पीला था और उसकी आँखें फैली हुई थीं जैसी मौत की यन्त्रणा में हो गई होंगी और उसका सिर एक तरफ़ को लुढ़का हुआ था। सनोबर की एक टहनी सिर के पिछले हिस्से में उस जगह को ढँके हुए थी, जिसे किसी तेज़ हथियार ने काट दिया था।

इस नौजवान की जान किसने ली? विधवा खोरोवोदको के इस इकलौते बेटे की? उस विधवा के बेटे की जिसका पति मिल का मज़दूर था और बाद में ग़रीब किसानों की कमिटी का मेम्बर हो गया था और जिसने क्रान्ति के लिए लड़ते हुए जान दी थी?

अपने बेटे की मृत्यु से बुढ़िया को जो आघात लगा, उससे उसने बिस्तर पकड़ लिया। अभागी मां को पड़ोसी सान्त्वना देने की कोशिश कर रहे थे। और उसका बेटा सर्द और बेजान पड़ा था, अपनी असामयिक मृत्यु के रहस्य को छिपाये हुए।

ग्रिशुत्का के क़त्ल से गांव के सारे लोगों में गुस्सा छा गया। कोमसोमोलों के इस नौजवान नेता और ग़रीब किसानों के हिमायती के गांव में दुश्मनों से कहीं ज़्यादा दोस्त निकले।

राकीतिना को इस खबर से बड़ी सख्त चोट लगी और वह अपने कमरे में बैठी फफक-फफक कर रोती रही। कोर्चागिन कमरे में आया तो उसने आँख उठा कर भी नहीं देखा।

"राकीतिना, तुम्हारा क्या खयाल है, किसने यह हत्या की?" कोर्चागिन ने थकान से बेदम होकर कुर्सी पर बैठते हुए भर्राई हुई आवाज में पूछा।

"यह वही मिल वाले बदमाश होंगे, वही जो चोरी से माल लाते-ले-जाते हैं। ग्रिशा उनके पहलू का कांटा था।"

दो गांव के लोग ग्रिशा खोरोवोदको के जनाज़े में शरीक हुए। कोर्चागिन अपनी बटालियन को ले आया और कोमसोमोल के सभी लोग अपने साथी को अन्तिम श्रद्धांजलि देने के लिए इकट्ठा हुए। गाव्रिलोव ने गांव सोवियत के सामने वाले चौक में ढाई सौ सरहदी सन्तरियों की एक कम्पनी को जमा किया। अर्थी मार्च की मातमी धुनों के बीच लाल झण्डे में लिपटा हुआ ताबूत बाहर लाया गया और चौक में रखा गया। वहाँ गृहयुद्ध में जान देने वाले बोल्शेविक छापेमारों की कब्रों के पास एक नई कब्र खोदी गई थी।

ग्रिशुत्का की मौत ने उन सभी लोगों को एकता की डोर में बांध दिया जिनके हितों के लिए वह बराबर उद्योग करता रहा था। नौजवान खेतिहर मज़दूरों और गरीब किसानों ने कोमसोमोल की मदद करने की शपथ ली और उस मौके पर जितने लोग बोले, उन सबने गुस्से के साथ इस बात की माँग की कि खूनियों का पता लगाया जाय और यहीं इस चौक में इस कब्र के पास उन पर मुकदमा चलाया जाय ताकि हर कोई देख सके कि वे दुश्मन कौन हैं जिन्होंने यह खून किया।

राइफिलें तीन बार गरजीं और सनोबर की ताज़ी टहनियाँ कब्र पर रखी गईं। उसी शाम को सेल ने राकीतिना को अपना नया मन्त्री चुना। खुफ़िया की सरहदी चौकी से कोर्चागिन के पास खबर आई कि वे लोग खूनियों का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं।

एक हफ़्ते बाद जब कस्बे के थियेटर हॉल में ज़िले की सोवियत का दूसरा सम्मेलन शुरू हुआ तो लिसित्सिन ने गम्भीर उल्लास के स्वर में घोषणा की :

" साथियो, मुझे इस सम्मेलन को यह खबर देते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि पिछले एक साल में हमने बहुत सफलताएँ प्राप्त की हैं। इस ज़िले में सोवियत सत्ता मज़बूती से कायम हो गई है, लुटेरों का सफ़ाया कर दिया गया है और चोरी से माल लाने-ले-जाने के व्यापार का भी लगभग खात्मा कर दिया गया है। गांवों में ग़रीब किसानों के मज़बूत संगठन पैदा हो गये हैं, कोमसोमोल के संगठन पहले से दस गुना ज़्यादा मज़बूत हैं और पार्टी के संगठनों में भी विस्तार आया है। पोदुब्सी के कुलकों की उस आखिरी काली करतूत का भी पर्दाफ़ाश कर दिया गया है जिसने हमारे कामरेड खोरोवोदको की जान ली। खूनी पकड़ लिये गए हैं। मिल वाले और उसके दामाद ने यह खून किया था। कुछ ही दिनों में सूबे की अदालत में उन पर मुकदमा चलेगा। गांवों के कई प्रतिनिधि मण्डलों ने मांग की है कि यह सम्मेलन प्रस्ताव पास करे कि इन लुटेरों और खूनियों को मौत की सज़ा दी जाय।"

इस बात के समर्थन में एक तूफ़ान सा उठा जिससे हॉल हिल उठा।

" जरूर-जरूर ! सोवियत सत्ता के दुश्मनों को मौत की सज़ा दी जाय ! "

लिदा पोलेविख पीछे के एक दरवाजे पर दिखाई दी। उसने इशारे से पावेल को बुलाया।

बाहर गलियारे में पहुँच कर उसने पावेल को एक लिफाफा दिया जिस पर "बहुत जरूरी" लिखा हुआ था। पावेल ने लिफाफा खोला और पढ़ा :

"कोमसोमोल की बेरेजदोव जिला कमिटी के नाम। नकल पार्टी की जिला कमिटी को। सूबा कमिटी के फैसले के अनुसार कामरेड कोर्चागिन को जिले से सूबा कमिटी में कोमसोमोल के जिम्मेदार काम के लिए बुलाया जाता है।"

पावेल ने उस जिले से छुट्टी ली जहाँ उसने पिछले साल-भर काम किया था। उसके जाने के ठीक पहले पार्टी की जिला कमिटी की जो आखिरी मीटिंग हुई उसके सामने एजेंडे में ये दो खास बातें थी : (१) कामरेड कोर्चागिन को कम्युनिस्ट पार्टी की मेम्बरी देना; (२) कोमसोमोल की जिला कमिटी के मन्त्री पद से पावेल को मुक्त करते हुए उसके सर्टिफिकेट की तसदीक करना।

विदा होते समय लिसित्सिन और लिदा ने जोर से पावेल से हाथ मिलाया और प्यार से उसे गले लगाया और जब उसका घोड़ा हाते में से निकल कर सड़क पर पहुँचा तो एक दर्जन रिवाल्वरों ने उसको विदा की सलामी दी।

चौदहवाँ अध्याय

ट्राम फ़ुन्दुकलियेव पहाड़ी पर चढ़ते हुए धीरे-धीरे रेंग रही थी और उसका इंजन जैसे थकान से कराह रहा था। ऑपेरा हाउस पर पहुँच कर वह रुक गई और उसमें से कुछ नौजवान लोग निकले। ट्राम फिर चढ़ाई चढ़ने लगी।

पांक्रातोव ने दूसरों को ठेलते हुए कहा, "चलो जरा तेज-तेज चलो, नहीं तो देर हो जायगी।"

ओकुनेव ने थियेटर के दरवाजे पर जाकर पांक्रातोव को पकड़ लिया।

"हम लोग ऐसी ही परिस्थितियों में तीन साल पहले यहाँ आये थे। तुम्हें याद है न गेंका ? यह उस वक्त की बात है जब दुबावा अपना मजदूरों का विरोधी दल लेकर हमारे पास आया था। कैसी शानदार मीटिंग हुई थी ! और आज फिर हमें उसी से मोर्चा लेना है !"

वे अपने पास देकर हॉल में दाखिल हो गये थे जब कि पांकातोव ने जवाब दिया।

"हाँ, इतिहास ठीक उसी जगह पर अपने-आपको दुहरा रहा है।"

हॉल में बैठे हुए दूसरे लोगों ने उन्हें चुप होने के लिए कहा। सम्मेलन का शाम का अधिवेशन शुरू हो गया था और जो भी सीट मिल जाय, उसी पर उन्हें बैठ जाना था। एक नौजवान औरत मंच से बोल रही थी।

पांकातोव ने ओकुनेव की पसली में उँगली गड़ाते हुए धीरे से कहा, "हम लोग बिलकुल ठीक वक्त पर आये हैं। अब चुप बैठो और सुनो बीबी जी क्या कहती हैं।"

"....यह सच है कि हम लोगों ने इस बहस में अपना बहुत वक्त और ताक़त खर्च की है। मगर मेरा खयाल है कि हम सबने इससे बहुत-कुछ सीखा है। आज हमें यह देखकर बड़ी खुशी होती है कि हमारे संगठन में त्रॉत्स्की के अनुयायी हार गये हैं। वे यह शिकायत नहीं कर सकते कि लोगों ने उन्हें सुना नहीं। बात इसकी उलटी है: उन्हें अपना दृष्टिकोण दूसरों के सामने रखने का हर मौका दिया गया है। सच बात यह है कि उनको दी गई आजादी का उन्होंने बेजा इस्तेमाल किया है और पार्टी के अनुशासन को बहुत बार बुरी तरह भंग किया है।"

तालिया बहुत उत्तेजित थी। बोलते समय उसके बालों की जो लट आँखों पर आ जाती थी, उसको पीछे करने के लिए जिस तरह वह सिर को झटक रही थी, उससे यह बात साफ जाहिर थी।

"देहातों के बहुत से साथी यहाँ पर बोले हैं और उन सबके पास त्रॉत्स्की-पंथियों के कारनामों के बारे में कुछ-न-कुछ कहने को रहा है। इस सम्मेलन में काफ़ी त्रॉत्स्की-पंथी भी हैं। देहात के लोगों ने समझ-बूझ कर उनको यहाँ पर भेजा है ताकि हम पार्टी के इस शहर सम्मेलन में उनकी बात को सुनने का एक और मौका पायें। अगर वे इस अवसर का पूरा लाभ नहीं उठा रहे हैं, तो इसमें हमारा कोई दोष नहीं है। देहातों और सेलों में जिस प्रकार वे पूरी तरह पराजित हुए हैं, उससे जरूर उन्होंने कुछ न कुछ सबक लिया है। यही वजह है कि उन्हें इस बात का साहस नहीं हुआ कि जो बातें अभी वे कल तक कह रहे थे, उन्हें आज इस सम्मेलन के सामने कहें।"

हॉल के दाहिने कोने से आती हुई एक करख्त आवाज ने इस जगह पर तालिया को टोंका:

"अभी तक हम अपनी पूरी बात नहीं कह पाये हैं!"

तालिया उस आवाज की तरफ मुड़ी :

" बहुत अच्छा दुबावा, तुम अभी आ जाओ और बोलो, हम तुम्हारी बात सुनेंगे। "

दुबावा ने चिन्ता में डूबे-डूबे उसको देखा और उसके ओंठ क्रोध में ऐंठ गये।

उसने चिल्ला कर कर कहा, " हम भी बोलेंगे, वक्त आने दो ! " खुद अपने इलाके में एक रोज पहले उसे जो करारी हार खानी पड़ी थी, उसका ख़याल दुबावा को आया। उसकी याद अब भी उसके दिल में खटक रही थी।

हॉल में एक धीमी भुनभुनाहट फैल गई। पांक्रातोव अब अपने को बस में नहीं रख सका और चिल्ला उठा :

" फिर पार्टी को उलटने-पुलटने का इरादा है क्या ? "

दुबावा ने आवाज को पहचान लिया, मगर उस ओर मुड़ा नहीं। उसने ओठ भींच लिये और सिर झुका लिया।

तालिया बोली, " त्रात्स्की-पन्थी किस तरह पार्टी-अनुशासन का उल्लंघन कर रहे हैं, खुद दुबावा इसकी बहुत अच्छी मिसाल है। उसने बहुत दिन कोमसोमोल में काम किया है, हममें से बहुत से लोग उसको जानते हैं, और खासकर हथियार कारखाने के मजदूर। वह खारकोव कम्युनिस्ट यूनीवर्सिटी का छात्र है, फिर भी पिछले तीन हफ़्ते से यहाँ पर शुम्स्की के साथ है और हमको यह बात मालूम है। यूनीवर्सिटी खुली हुई है, ऐसे वक्त वह कौन सी चीज है जो इन लोगों को यहाँ पर लाई है ? इस करखे में एक भी देहात नहीं है, जहाँ पर उन्होंने भाषण न दिये हों। यह सही है कि पिछले कुछ दिनों में यह देखने में आया है कि शुम्स्की की अकल ठिकाने पर आ रही है। उसको किसने यहाँ पर भेजा है ? उनके अलावा भिन्न-भिन्न संगठनों के और भी कई त्रात्स्की-पन्थी यहाँ पर उपस्थित हैं। इन सभी ने एक न एक वक्त यहाँ पर काम किया है और अब ये लोग यहाँ पर पार्टी के अन्दर गड़बड़ी फैलाने के लिए आये हैं। उनके पार्टी संगठनों को क्या यह बात मालूम है कि वे कहाँ गये हैं ? बिलकुल नहीं। "

सम्मेलन को यह आशा थी कि त्रात्स्की-पन्थी आगे आकर अपनी ग़लतियों को कबूल कर लेंगे। तालिया को भी यह उम्मीद थी कि वह उनको ऐसा करने के लिए राजी कर लेगी, इसीलिए उसने सच्चे दिल से उनसे इस बात की अपील की। दोस्ताना लहजे में उसने सीधे-सीधे उनको सम्बोधित करते हुए कहा :

" तीन साल पहले इसी हॉल में दुबावा अपने ' मजदूरों के विरोधी दल ' की बात लेकर आया था। याद है ? और उसने क्या कहा था, यह भी

याद है ? तब उसने कहा था : 'हम कभी पार्टी झण्डे को अपने हाथ से गिरने न देंगे।' मगर अभी मुश्किल से तीन साल गुजरे हैं और दुबावा ने फिर वही काम किया है। हाँ, मैं अपनी बात को दुहराती हूँ कि उसने पार्टी झण्डे को गिरा दिया है। वह कहता है, अभी हमने अपनी पूरी बात नहीं कही। इसका मतलब है कि वह और उसके दूसरे सहयोगी त्रात्स्की-पन्थी अभी और भी आगे बढ़ने का इरादा रखते हैं।"

पिछली क़तारों से एक आवाज आई, "तुम्हें हमको बैरोमीटर के बारे में बताए। वही इन लोगों के मौसमी उतार-चढ़ाव का विशेषज्ञ है।"

इसके जवाब में क्रुद्ध आवाजें आईं :

"यह इस तरह के मजाकों का वक़्त नहीं है !"

"ये लोग पार्टी से लड़ना बन्द करेंगे या नहीं ? हमें इस बात का जवाब चाहिए !"

"ये लोग हमको बतायें कि वह पार्टी-विरोधी ऐलान किसने लिखा !"

हॉल के अन्दर गुस्सा तेज़ से और तेज़ होता गया और चेयरमेन ने लोगों को चुप कराने के लिए बार-बार और बड़ी-बड़ी देर तक घंटी बजाई। तालिया की आवाज़ शोर में डूब गई और तूफ़ान के थमने में काफ़ी देर लगी। और तूफ़ान के हलके पड़ने पर ही वह अपनी बात जारी रख सकी।

"दूर-दराज़ के अपने साथियों के जो ख़त हमको मिलते हैं, उनसे पता चलता है कि वे लोग हमारे साथ हैं और इस चीज़ से हमको बहुत बल मिलता है। मैं आपको ऐसे ही एक ख़त का कुछ हिस्सा पढ़ कर सुनाना चाहती हूँ। यह ख़त ओल्गा यूरेनेवा ने भेजा है। आप में से बहुत से लोग उसको जानते हैं। वह कोमसोमोल की एक एरिया कमिटी के संगठन विभाग की इन्चार्ज है।"

तालिया ने अपने सामने पड़े हुए ढेर में से एक काग़ज़ निकाला, उस पर निगाह दौड़ाई और पढ़ना शुरू किया।

"अमली काम की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया गया है। पिछले चार दिन से सारे ब्यूरो मेम्बर देहातों में गये हुए हैं जहाँ त्रात्स्की-पन्थियों ने पहले से भी ज़्यादा ज़हरीला प्रचार शुरू कर दिया है। कल एक ऐसी घटना हुई जिससे संगठन के सभी लोग बहुत बिगड़ उठे हैं। जब विरोधियों को शहर के एक भी सेल में बहुमत नहीं प्राप्त हुआ, तो उन्होंने अपनी सारी शक्ति को जमा करके एरिया फ़ौजी कमिसारियट की सेल में लड़ने का फ़ैसला किया। एरिया फ़ौजी कमिसारियट की सेल में एरिया प्लैनिंग कमीशन और शिक्षा-विभाग में काम करने वाले कम्युनिस्ट भी

शामिल हैं। इस सेल में बयालीस मेम्बर हैं मगर वहाँ के सारे त्रात्स्की-पन्थी एक होकर काम करते हैं। उस मीटिंग में जैसे पार्टी-विरोधी भाषण हुए, वैसे हमने पहले कभी नहीं सुने थे। फ़ौजी कमिसारियट का एक मेम्बर उठ पड़ा और साफ़-साफ़ बोला : 'अगर पार्टी की मशीन हमारी बात नहीं मानती तो हम उसे अपनी ताक़त से तोड़ देंगे।' जब उसने यह बात कही तो विरोधी दलवालों ने खूब तालियाँ बजाईं। तब कोर्चागिन बोलने के लिए उठा। उसने कहा, 'आप कैसे पार्टी मेम्बर हैं जो उस फाशिस्त की बात पर ताली बजा रहे हैं?' मगर उन लोगों ने इतना शोर मचाया, चीखे-चिल्लाये, कुर्सियाँ बजाईं कि कोर्चागिन नहीं बोल सका। विरोधियों के इस बेहूदा आचरण से बिगड़ कर सेल के मेम्बरों ने मांग की कि कोर्चागिन को अपनी बात कहने का मौक़ा दिया जाय। मगर जैसे ही कोर्चागिन ने बोलना शुरू किया कि फिर वही शोर मचा। कोर्चागिन ने उस शोर को अपनी आवाज़ से दबाते हुए और भी चीख कर कहा, 'इसी को आप जनवाद कहते हैं! मगर कोई बात नहीं, इतने पर भी मैं बोलूँगा और जरूर बोलूँगा!' उसी वक़्त कई लोग उस पर टूट पड़े और उसे मन्च से घसीट कर अलग करने लगे। बड़ा हंगामा मचा। पावेल उनका मुक़ाबला करता रहा और बोलता गया, मगर उन्होंने उसे मन्च से घसीट कर, बग़ल के एक दरवाजे से बाहर सीढ़ी के पास ढकेल दिया। किसी बदमाश ने उसके चेहरे पर चाकू मार दिया। उसके बाद लगभग सभी सेल मेम्बर मीटिंग छोड़ कर चले गये। इस घटना ने बहुत से लोगों की आँखें खोल दी·····।"

इसके बाद तालिया मन्च से हट गई।

पार्टी की सूबा कमिटी के प्रचार-आन्दोलन विभाग के काम की देखभाल पिछले दो महीनों से सेगल कर रहा था। सेगल सभापति मंडली में तोकारेव के बग़ल में बैठा हुआ था और बड़े ग़ौर से प्रतिनिधियों के भाषण सुन रहा था। अब तक सम्मेलन में नौजवान लोग ही बोले थे जो अभी कोमसोमोल में ही थे।

सेगल सोच रहा था, "इन पिछले कुछ सालों में इनकी बुद्धि कितनी प्रौढ़ हो गई है!"

उसने तोकारेव से कहा, "विरोधियों को अच्छी मार पड़ रही है और

जब कि अभी बड़ी-बड़ी तोपें तो मैदान में उतारी ही नहीं गईं। अभी तो यह लड़के ही ट्रॉत्स्की-पन्थियों को खदेड़े दे रहे हैं।"

उसी वक़्त तुफ़्ता कूद कर मन्च पर आ गया। उसके आते ही लोगों ने अपनी नापसन्दगी का इज़हार करते हुए भुनभुनाना शुरू किया और एक कहकहा भी पड़ा। तुफ़्ता अपने इस स्वागत का प्रतिवाद करने के लिए सभापति मंडली की तरफ़ मुड़ा, मगर तब तक हॉल में काफ़ी शान्ति छा गई थी।

"किसी ने यहाँ पर मुझको मौसम के उतार-चढ़ाव का विशेषज्ञ कहा है। आप साथियों का यहाँ पर बहुमत है और इस तरह आप मेरे राजनीतिक विचारों का मखौल उड़ाते हैं!" उसने एक साँस में कह डाला।

एक ज़ोर के क़हक़हे से उसके शब्दों का स्वागत हुआ। तुफ़्ता ने बिगड़ कर चेयरमेन से अपील की।

"आप हँस सकते हैं, मगर मैं एक बात फिर आपको बतलाना चाहता हूँ कि युवक बैरोमीटर होते हैं। लेनिन ने बार-बार यह बात कही है।"

पल भर के लिए हाल में शान्ति छा गई।

"लेनिन ने क्या कहा है?" श्रोताओं में से आवाज़ आई।

तुफ़्ता की जान में जान आई।

"जिस वक़्त अक्तूबर क्रान्ति की तैयारियाँ हो रही थीं, लेनिन ने निर्देश किया था कि हिम्मतवर मज़दूर युवकों को जमा करो, उन्हें हथियार दो और सबसे अहम मुक़ामों पर उन्हें जहाज़ियों के साथ-साथ भेजो। क्या आप चाहते हैं कि मैं वह टुकड़ा पढ़ कर आपको सुनाऊँ? मेरे पास सारे उद्धरण यहाँ कार्ड पर लिखे हुए रखे हैं।" कहते हुए तुफ़्ता ने अपने बस्ते में हाथ डाला।

"जाने दो, जाने दो, उसकी ज़रूरत नहीं, हमें मालूम है!"

"मगर यह तो बताओ कि लेनिन ने पार्टी की एकता के बारे में क्या लिखा है?"

"और पार्टी अनुशासन के बारे में?"

"लेनिन ने कब नये लोगों को पुराने बोल्शेविकों के मुक़ाबले में खड़ा किया?"

तुफ़्ता के विचारों की कड़ियां टूट गईं और वह दूसरी ही बात कहने लगा:

"अभी लगुतिना ने यूरेनेवा का एक ख़त पढ़ कर आपको सुनाया। बहस-मुबाहसे के दौरान में अगर कोई ज़्यादतियाँ हो जाती हैं तो हमसे उनका जवाब तलब करने का क्या मतलब है?"

शुम्स्की के बग़ल में बैठे हुए स्वेतायेव ने गुस्से से दाँत पीसते हुए कहा, "गधा····।"

शुम्स्की ने वैसे ही फुसफुसा कर जवाब दिया, "हाँ, यह बेवकूफ़ हमारा काम बिलकुल बिगाड़ देगा।"

तुफ़्ता की तीखी बुलन्द आवाज श्रोताओं के कान में सीसा उँडेलती रही :

"अगर आप बहुमत का दल संगठित कर सकते हैं तो हमको भी अधिकार है कि हम अल्पमत का दल संगठित करें।"

हॉल में शोर मचा।

चारों तरफ़ से लोगों की क्रुद्ध आवाजें तुफ़्ता पर बरसने लगीं :

"यह क्या ? फिर वही बोल्शेविक और मेन्शेविक का झगड़ा !"

"रूसी कम्युनिस्ट पार्टी कोई पार्लियामेन्ट नहीं है !"

"ये लोग म्यासनिकोव से लेकर मार्तोव तक सबका काम कर रहे हैं।"

तुफ़्ता ने इस तरह अपनी बाँहें उठाईं जैसे नदी में कूदने जा रहा हो और जल्दी-जल्दी जवाब देने लगा।

"हाँ, हमको अपना दल बनाने की आजादी मिलनी चाहिए। वरना कैसे हम लोग, जो अलग विचार रखते हैं, अपने मत के लिए एक ऐसे संगठित अनुशासित बहुमत के खिलाफ़ लड़ सकते हैं ?"

शोर बढ़ता गया। पांकातोव उठा और चिल्ला कर बोला :

"उसको बोलने दो। हम सुनें तो कि वह क्या कहना चाहता है। तुफ़्ता में इतनी बात तो अच्छी है कि जिन बातों को दूसरे लोग अपने दिल में रखे हुए हैं, उनको वह उगले दे रहा है।"

हॉल शान्त हो गया। तुफ़्ता ने महसूस किया कि वह हद से गुजरा जा रहा है। शायद उसको यह बात अभी नहीं कहनी चाहिए थी। उसके विचार दूसरी ही ओर मुड़ गये और उसने तेजी से बोलते हुए अपनी बात खतम की :

"आप चाहें तो हमें निकाल कर बाहर फेंक दे सकते हैं। वह चीज शुरू भी हो गई है। आपने मुझे कोमसोमोल की सूबा कमिटी में से निकाल दिया है। मगर कोई बात नहीं, जल्दी ही यह बात साफ़ हो जायगी कि कौन सही था और कौन ग़लत।" यह कहते हुए वह मंच से कूद कर हॉल में आ गया।

स्वेतायेव ने एक पुर्जा लिख कर दुबावा के पास भेजा।

"मितियाई, अब तुम बोलो। मैं जानता हूँ कि इससे बात कुछ खास बदलेगी नहीं। हमें यहाँ बुरी मार पड़ रही है। तुफ़्ता की अक्ल हमें ठीक करनी होगी। वह बिलकुल गधा है और जो जी में आता है, बक डालता है।"

दुबावा ने बोलने की इजाजत माँगी जो उसे फ़ौरन मिल गई।

वह मंच पर चढ़ा तो हॉल में शान्ति छा गई और लोग आतुरता से उसकी बात का इन्तज़ार करने लगे। यह किसी भी भाषण के पहले छाने वाली शान्ति थी, मगर दुबावा को लगा कि जैसे उसमें शत्रुता का भाव मिला हुआ हो। जिस जोश से वह सेल मीटिंगों में बोला करता था, वह जोश अब ठण्डा पड़ गया था। रोज़-बरोज़ उसका उत्साह कम होता जा रहा था और अपने पुराने साथियों के हाथ ऐसी करारी हार खाकर और उनकी उस सख़्त डांट-फटकार से उसकी हालत उस आग जैसी हो रही थी जिस पर पानी डाल दिया गया हो। आग अब नहीं थी और केवल धुआँ रह गया था, उसके आहत अहंकार का तीखा धुआँ जिसका तीखापन इस बात से और भी बढ़ जाता था कि वह अपनी ग़लती मानने से बराबर इनकार किये जा रहा था। उसने सीधे-सीधे अपनी बात कहने का संकल्प किया गोकि वह समझ रहा था कि ऐसा करने से वह बहुमत के लोगों से और भी कट कर दूर जा पड़ेगा। बोलते समय उसकी आवाज में कोई उतार-चढ़ाव नहीं था, मगर आवाज साफ़ थी।

"बराय मेहरबानी मुझको टोकियेगा मत और न बेकार के सवाल पूछ कर मुझको चिढ़ाने की कोशिश कीजिएगा। मैं अपने लोगों का पूरा विचार आपके सामने रखना चाहता हूँ, गोकि मैं पहले से जानता हूँ कि इसका कोई फ़ायदा नहीं है। आप बहुमत में हैं।"

उसने बोलना खतम किया तो ऐसा लगा कि जैसे हॉल में बम फूटा हो। चारों तरफ़ से लोगों की गुस्से से भरी बिफरी हुई आवाजों का तूफ़ान उस पर टूटा और उसको लगा कि जैसे उसके शरीर पर कोड़े पड़ रहे हों।

"शर्म की बात है!"

"फूट डालने वालों का नाश हो!"

"यह कीचड़ उछालना बन्द करो!"

लोग मज़ाक उड़ाते हुए हँस रहे थे और उनकी इस हँसी के बीच दुबावा अपनी सीट पर जाकर बैठ गया और उस हँसी ने ही मानो उसका काम तमाम कर दिया। अगर लोगों ने अपने गुस्से का इज़हार किया होता और बिगड़ कर उस पर हमला किया होता तो उसके मन को सन्तोष होता। मगर यह तो ऐसा था कि जैसे वह कोई निकृष्ट अभिनेता हो, जिसकी आवाज़ ग़लत जगह पर फट गई हो और लोग उसका मज़ाक बना रहे हों।

सभापति ने ऐलान किया, "अब शुम्स्की बोलेगा।"

शुम्स्की ने खड़े होकर कहा, "मैं बोलने से इनकार करता हूँ।"

तब पिछली कतारों में से पांक्रातोव की भारी आवाज गूँजती हुई सुनाई दी।

"मुझको बोलने दो!"

उसकी आवाज से दुबावा जान गया कि पांक्रातोव के दिल में तूफान मचल रहा है। उस मल्लाह की भारी आवाज इसी तरह गूँजती थी जब उसका जबर्दस्त अपमान होता था और दुबावा के मन में तब बड़ी बेचैनी हुई जब उसने लम्बी, कुछ झुकी हुई उस आकृति को जल्दी-जल्दी मन्च की ओर जाते हुए अपनी सचिन्त आँखों से देखा। वह जानता था कि पांक्रातोव क्या कहने जा रहा है। उसे दो रोज पहले सोलोमैंका में अपने पुराने दोस्तों के साथ अपनी मुलाकात की बात याद आई और याद आया कि कैसे उन्होंने उस पर जोर दिया था कि वह विरोधियों से अपना सम्बन्ध तोड़ ले। उसके साथ स्वेतायेव और शुम्स्की भी थे। तोकारेव के घर पर उससे मुलाकात हुई थी। पांक्रातोव, ओकुनेव, तालिया, वोलिन्तसेव, बेलेनोवा, स्तारोवेरोव और आर्त्युखिन भी मौजूद थे। एकता कायम करने की बड़ी कोशिश की गई, लेकिन दुबावा ने उस पर कोई कान न दिया। बहस के बीच में ही वह स्वेतायेव के साथ बाहर निकल गया और इस तरह उसने यह चीज और भी दिखलाई कि अपनी ग़लती मानने के लिए वह कतई तैयार नहीं। शुम्स्की रुक गया था। और अब उसने बोलने से इनकार कर दिया था। "बेदम, बुद्धिजीवी! रीढ़ ही नहीं है! जरूर उन लोगों ने उसको मिला लिया है," दुबावा ने गुस्से के साथ सोचा-विचारा।

इस कठिन संघर्ष में वह एक के बाद दूसरा दोस्त खोता जा रहा था। यूनीवर्सिटी में जार्की के संग उसकी दोस्ती टूट गई थी। जार्की ने पार्टी की ब्यूरो की एक मीटिंग में "छियालिस लोगों" की घोषणा की कड़ी आलोचना की थी। और बाद में जब संघर्ष और तेज हुआ तो उनकी आपस में बोलचाल भी बन्द हो गई थी। उसके बाद जार्की कई बार आना से मिलने उसके घर आया था। दुबावा और आना की शादी हुए एक साल हो चुका था। दोनों अलग-अलग कमरों में रहते थे और दुबावा को इस बात का पक्का यकीन था कि आना के साथ उसके बिगाड़ का कारण यहीं नहीं था कि आना का मत उससे नहीं मिलता था, बल्कि यह भी कि जार्की के बार-बार आने से आना और उसके सम्बन्ध में और भी तनाव आ गया था। यह ईर्ष्या की बात नहीं थी, उसने अपने मन को समझाने की कोशिश की। लेकिन उन हालतों में जार्की के साथ आना की दोस्ती से उसको चिढ़ जरूर मालूम होती थी। इसके बारे में उसने आना से बात की थी, मगर कोई खास नतीजा न निकला, सिर्फ लड़ाई होकर रह गई। आना को बिना यह बतलाये कि वह कहाँ जा रहा है, वह सम्मेलन में चला आया था।

उसके विचार तेजी से उड़े चले जा रहे थे जब कि पांकातोव की बात ने उसको बीच ही में काट दिया।

पांकातोव ने मंच के छोर पर खड़े होते हुए अपनी गूँजती हुई आवाज में कहा, " साथियो ! पिछले नौ दिन से हम विरोधियों की बातें सुनते आ रहे हैं और मैं साफ-साफ कहना चाहता हूँ कि वे लोग वर्गयुद्ध में हमारे साथियों की तरह, संग-संग लड़ने वालों की तरह, क्रान्तिकारियों की तरह नहीं बोल रहे थे। उनकी तकरीरें दुश्मनों जैसी थीं, उनमें उनके मन का मैल था, वे गाली देने के अन्दाज में बात कह रहे थे। हाँ साथियो, गाली देने के अन्दाज में ! उन्होंने हम बोल्शेविकों की ऐसी तसवीर खींची है मानो हम पार्टी के अन्दर लाठी का राज कायम करने की कोशिश कर रहे हों, जैसे हमने अपने वर्ग और क्रान्ति के हितों के साथ विश्वास-घात किया हो। उन्होंने हमारे पुराने बोल्शेविकों को, जो हमारी पार्टी के सबसे तपे हुए और विश्वसनीय लोग हैं उनको, पार्टी तानाशाह कहा है—उन लोगों को जिन्होंने रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण किया है, जिन्होंने ज़ारशाही कैद-खानों में तकलीफें सही हैं, जिन्होंने कामरेड लेनिन के नेतृत्व में दुनिया भर के मेन्शेविकों और त्रॉत्स्की के ख़िलाफ़ निर्मम संघर्ष किया है। क्या दुश्मन के अलावा और कोई इस तरह की बात कह सकता था ? क्या पार्टी और उसके कार्यकर्ता एक सम्पूर्ण इकाई नहीं हैं ? तब मैं यह जानना चाहता हूँ कि ऐसी बातें क्यों कही जा रही हैं ? हम ऐसे लोगों को क्या कहेंगे जो नौजवान लाल सैनिकों को अपने कमांडरों और कमिसारों के खिलाफ और फौजी हेडक्वार्टर के खिलाफ भड़का रहे हैं—और ऐसे समय में जब कि यूनिट दुश्मनों से घिरी हुई है। त्रॉस्की-पन्थियों के अनुसार मैं जब तक मेकेनिक हूँ तब तक ठीक हूँ, लेकिन अगर कल के रोज मैं पार्टी का मन्त्री हो जाऊँ तो 'तानाशाह' और 'कुरसी तोड़ने वाला' हो जाऊँगा। क्या यह बात कुछ अजीब-सी नहीं है साथियो, कि विरोध करने वालों में, जो तानाशाही के ख़िलाफ़ और जनवाद के लिए संघर्ष कर रहे हैं, तुफ्ता जैसे लोग हैं जिसे अभी हाल ही में तानाशाही के जुर्म में अपने काम से अलग किया गया था ? या स्वेतायेव को ही लीजिए जिसे सोलोमेंका के लोग अच्छी तरह जानते हैं कि वह जनवाद का कैसा हामी है, या अफ़ानासियेव को ही लीजिए जिसे सूझा कमिटी ने तीन-तीन बार पोडोल्स्क के इलाक़े में मनमाने ढंग से काम करने के जुर्म में अलग किया है ? देखने में यह आता है कि वे तमाम लोग जिन्हें पार्टी ने सजा दी है, पार्टी से लड़ने के लिए एक हो गये हैं। मैं चाहता हूँ कि हमारे पुराने बोल्शेविक हमें त्रॉत्स्की के बोल्शेविज़्म के बारे में बतलाएँ। नौजवानों के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि कैसे त्रॉत्स्की ने बोल्शेविकों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, कैसे वह

बराबर एक कैम्प से दूसरे कैम्प में पहुँचता रहा। विरोधियों के खिलाफ इस संघर्ष में हमारी एकता बढ़ी है और विचारों की सफाई के खयाल से हमारे नौजवानों का स्तर भी ऊँचा हुआ है। निम्न मध्य-वर्गीय प्रवृत्तियों के खिलाफ बोल्शेविक पार्टी और कोमसोमोल और भी मजबूत हुए हैं। हमारे विरोधी, जो लोगों में घबराहट फैलाना चाहते हैं, यह कह रहे हैं कि हमारा आर्थिक और राजनीतिक सर्वनाश हो जायगा। यह तो हमारा आगामी कल ही बतलाएगा कि इन भविष्य-वाणियों में कोई सार था या नहीं। वे लोग माँग कर रहे हैं कि हम तोकारेव जैसे पुराने बोल्शेविकों को पीछे करके उनकी जगह दुबावा जैसे अवसरवादी को रख दें। उसका यह खयाल है कि पार्टी के खिलाफ वह जो संघर्ष कर रहा है, वह कोई बड़ी बहादुरी का काम है। नहीं साथियो, हम कभी यह बात नहीं मान सकते। पुराने बोल्शेविकों की जगह नये आदमी रखे जायँगे, लेकिन ये नये आदमी उन लोगों में से नहीं आयेंगे जो हर कठिन घड़ी में पार्टी-नीति पर आक्रमण किया करते हैं। हम अपनी महान पार्टी की एकता को भंग नहीं होने देंगे। कभी भी पुराने और नये साथियों के बीच दरार नहीं पड़ने पायेगी। लेनिन के झण्डे के नीचे, हम निम्न मध्य-वर्गीय प्रवृत्तियों के खिलाफ जमकर संघर्ष करते हुए विजय की ओर आगे बढ़ते जायेंगे।"

पांक्रातोव तालियों की जबर्दस्त गड़गड़ाहट के बीच मंच से नीचे उतर आया।

अगले रोज दस लोग तुफ्ता के घर पर मिले।

दुबावा ने कहा, "मैं और शुम्स्की आज खारकोव जा रहे हैं। यहाँ पर अब हमारा कोई काम नहीं। तुम लोग अपनी एकता को बनाये रखने की कोशिश करना। अब हमें सिर्फ यह करना है कि इन्तजार करें और देखें कि क्या होता है। यह बिलकुल जाहिर बात है कि अखिल रूसी सम्मेलन हमारी निन्दा करेगा, मगर मेरा खयाल है कि अभी हमारे खिलाफ़ दमन की कार्रवाइयों का वक्त नहीं आया है। बहुमत वालों ने हमें और एक मौका देने का फैसला किया है। अब इस सम्मेलन के बाद खुलेआम संघर्ष चलाने का मतलब तो यह होगा कि हमें पार्टी में से ठोकर मार कर निकाल दिया जायगा। इसलिए अब खुलेआम लड़ाई चलाना तो हमारी योजना में नहीं है। यह तो कहना मुश्किल है कि भविष्य में क्या होगा। फ़िलहाल मैं समझता हूँ कि कहने की बात इतनी ही है।" यह कह कर दुबावा जाने के लिए उठा।

दुबला-पतला स्तारोवेरोव भी उठा जिसके ओंठ पतले-पतले थे।

उसने कुछ-कुछ हकलाते हुए कहा, "मैं तुम्हारी बात नहीं समझ पाता मितियाई। क्या मैं यह समझूँ कि सम्मेलन के फैसले हमारे ऊपर लागू नहीं होते?"

"जाब्ते के हिसाब से तो होते हैं," स्वेतायेव ने एकाएक बीच में कहा, "वरना तुम्हारा पार्टी-कार्ड छिन जायगा। मगर असल बात यह है कि हम इन्तज़ार करेंगे और हवा का रुख देखेंगे और इस बीच इधर-उधर बिखर जायँगे।"

तुफ्ता अपनी कुर्सी में बेचैनी से हिला। शुम्स्की ज़र्द हो रहा था, उसकी तबियत बुझी हुई थी और उसकी आँखों के नीचे नीले हलके थे। वह खिड़की के पास बैठा दाँत से नाखून काट रहा था। स्वेतायेव की बात को सुन कर उसने नाखून काटना बन्द कर दिया और मीटिंग की तरफ़ मुड़ा।

एकाएक उसने गुस्से से कहा, "मैं इस तरह की कार्रवाइयों के खिलाफ़ हूँ। मेरा निजी खयाल यह है कि सम्मेलन के फैसले हमारे ऊपर लागू होते हैं। हम लोगों ने अपने विश्वासों के लिए संघर्ष किया, लेकिन अब हमें लिये गए फैसलों को मानना चाहिए।"

स्तारोवेरोव ने उसकी ओर समर्थन-सूचक आँखों से देखा।

उसने तुतलाते हुए कहा, "यही बात मैं कहना चाहता था।"

दुबावा ने शुम्स्की को तरेरा और अपनी आवाज़ में व्यंग भर कर कहा:

"यह कौन कह रहा है कि तुम कुछ करो। अब भी तुम्हें सूचा सम्मेलन में पश्चाताप करने का मौका मिलेगा!"

शुम्स्की उछल कर खड़ा हो गया।

"मुझे तुम्हारी बात के स्वर से एतराज़ है दिमित्री! और मैं साफ़-साफ़ कहना चाहता हूँ कि तुम जो बात कह रहे हो, उससे मुझे सख्त नफ़रत होती है और वह मुझे मजबूर कर रही है कि मैं दुबारा अपनी स्थिति पर विचार करूँ।"

दुबावा ने ऐसे हाथ हिलाया जैसे उसकी बात को उड़ा रहा हो।

"मैं ठीक समझ रहा था कि तुम यही बात करने की सोचोगे। भाग कर जाओ और उनके सामने रो-गा आओ, कहीं देर न हो जाय।" यह कह कर दुबावा ने तुफ्ता और दूसरे लोगों से हाथ मिलाया और चला गया। उसके ठीक बाद शुम्स्की और स्तारोवेरोव भी चले गये।

बड़ी सख्त और बेदर्द सर्दी से सन १९२४ की शुरुआत हुई। जनवरी का

बर्फ़ानी पन्जा बर्फ से ढँकी हुई धरती पर जमा हुआ था और महीने के दूसरे पखवारे में आँधी और तूफान का जबर्दस्त जोर था।

दक्षिण-पश्चिमी रेलवे लाइनें बर्फ से ढँकी हुई थीं। आदमी पगलाई हुई प्राकृतिक शक्तियों से लड़ रहे थे। बर्फ़ की सफ़ाई करने वाले फावड़े बर्फ़ को काट-काट कर रेलगाड़ियों के लिए रास्ता बना रहे थे। टेलीग्राफ़ के तार बर्फ के बोझ से आँधी और तूफ़ान के कारण टूटे जा रहे थे और बारह लाइनों में से कुल तीन काम कर रही थीं—एक इंडो-योरोपियन और दो सरकारी लाइनें।

शेपेतोवका स्टेशन के तार घर में तीन आले अनवरत खटखटा रहे थे, मगर उनकी भाषा ऐसी थी जो सिर्फ जानकार आदमी की ही समझ में आ सकती थी।

ऑपरेटर लड़कियाँ अभी जवान थीं, मगर अभी उन्होंने बीस किलोमीटर से ज़्यादा फ़ीता न टपटपाया होगा जब कि उनके बग़ल का बुड्ढा तार बाबू दो सौ किलोमीटर से ज़्यादा कर चुका था। अपने नौजवान साथियों की तरह उस बुड्ढे को तार से भेजा गया सन्देश समझने के लिए उस फ़ीते को पढ़ना नहीं पड़ता था, न वह मुश्किल शब्दों और वाक्यांशों की ही पहेली में उलझता था, और न उसके माथे पर भुर्रियाँ ही पड़ती थीं। उसका ढंग यह था कि शब्द पढ़ता जा रहा था और मशीन उसको टपटपाती जा रही थी। तभी उसके कान में शब्द पड़े, "सब के लिए, सब के लिए, सब के लिए!"

"बर्फ़ साफ़ करने के बारे में कोई दूसरा सरकुलर होगा," बुड्ढे तार बाबू ने उन शब्दों को लिखते हुए अपने मन में कहा। बाहर बर्फ़ का तूफ़ान ज़ोरों से चल रहा था जिससे कड़ी-कड़ी बर्फ़ आकर खिड़की से टकराती थी। तार बाबू ने सोचा कि खिड़की पर कोई दस्तक दे रहा है। उसकी आँखें आवाज़ की ओर मुड़ गईं और वह क्षण-भर के लिए खिड़की के शीशे पर बर्फ़ से बनी हुई आकृतियों को देखने लगा। कोई भी नक़्क़ाश पत्ती की ऐसी अच्छी नक़्क़ाशी न कर सकता था।

उसके विचार इधर-उधर बहने लगे और थोड़ी देर के लिए उसने तार के आले को सुनना बन्द कर दिया। मगर थोड़ी ही देर बाद उसने निगाह नीची की और उन शब्दों को पढ़ने के लिए, जिन्हें उसने बीच में ही छोड़ दिया था, फ़ीते की तरफ़ हाथ बढ़ाया।

तार की मशीन ने ये शब्द लिखे थे :

"२१ जनवरी की शाम को छः बज कर पचास मिनट पर···· "

तार बाबू ने जल्दी-जल्दी ये शब्द लिखे, फ़ीते को नीचे रख दिया और अपने सिर को हाथ पर टिका कर आगे की बात सुनने लगा।

" कल गोर्की में मृत्यु हो गई··· " धीरे-धीरे उसने ये शब्द काग़ज़ पर उतार दिये। अपनी लम्बी जिन्दगी में उसने न जाने कितने सन्देश लिखे थे, खुशी के सन्देश और ग़म के सन्देश; कितनी बार दूसरों के दर्द और दूसरों की खुशी की ख़बर उसी ने सबसे पहले सुनी थी! अपने काम के सिलसिले में उसने न जाने कब से तार के उन छोटे सन्देशों के अर्थ पर ध्यान देना छोड़ दिया था, उसका तो काम बस इतना था कि ध्वनियों को पकड़े और मशीन की तरह उनको काग़ज़ पर उतार दे।

यह भी किसी की मौत की ख़बर थी और किसी को इसकी सूचना दी जा रही थी। तार बाबू को शुरू के वे शब्द " सब के लिए, सब के लिए, सब के लिए " भूल गये। मशीन ने टिक्-टिक् करके " व्लाडीमीर इलिच " लिखा और बुड्ढे तार बाबू ने उसको अक्षरों में उतार दिया। उसके ऊपर कोई असर नहीं हुआ, बस थोड़ी-सी थकान मालूम हुई। व्लाडीमीर इलिच के नाम का आदमी कहीं मर गया था और किसी को दुख की यह ख़बर मिलेगी, दर्द की एक चीख़ किसी के सीने से निकलेगी मगर उसको इससे क्या? मशीन डेश-डॉट-डेश-डॉट बोलती जा रही थी। अपनी उस सुपरिचित ध्वनि में से तार बाबू ने पहला अक्षर पकड़ा और उसे तार के फ़ारम पर लिखा। यह अंगरेज़ी का " एल " था। फिर दूसरा अक्षर आया " ई "। उसके बाद ही उसने लिखा " एन ", फिर जल्दी ही जोड़ा " आई ", फिर आख़िरी अक्षर लिखा " एन "।

इसके बाद मशीन ने विराम दिया और क्षण भर के लिए तार बाबू की आँखें अपने लिखे हुए शब्द " लेनिन " पर ठहर गईं।

मशीन टपटपाती रही मगर अब वह परिचित नाम तार बाबू की चेतना में दाख़िल हुआ। उसने एक बार फिर उस सन्देश के आख़िरी शब्द पर निगाह डाली " लेनिन " क्या? लेनिन? तार की सारी इबारत उसके मन में बिजली की तरह कौंध गई। वह तार के फ़ारम को घूरता हुआ बैठा रहा और अपने काम की बत्तीस बरस की जिन्दगी में वह पहली बार अपने लिखे हुए शब्दों का विश्वास नहीं कर सका।

उसने तीन बार उस लाइन पर जल्दी-जल्दी निगाह दौड़ाई, मगर वे शब्द ज़रा भी नहीं बदले: " व्लाडीमीर इलिच लेनिन की मृत्यु हो गई।" बुड्ढा उछल कर खड़ा हो गया, उसने फ़ीते को उठा लिया और उसको ऐसे घूरने लगा जैसे उसमें छेद कर देगा। जिस बात का विश्वास करने से वह इनकार कर रहा था, उस पर कागज के उस टुकड़े ने तसदीक की मुहर लगा दी थी। उसका चेहरा ऐसा जर्द पड़ गया जैसे उसमें जान ही बाकी न हो। वह अपने दूसरे साथियों की तरफ मुड़ा और उसकी चीख उनके कानों में पड़ी: " लेनिन मर गए! "

इस भयानक मृत्यु की खबर तार घर के खुले हुए दरवाजे में से निकली और आँधी की तरह स्टेशन में फैल गई और तूफ़ान के डैनों पर सवार होकर रेल की पटरियाँ और स्विचों से जाकर टकराई और बर्फ़ के तूफान के साथ-साथ रेलवे वर्कशाप के बर्फ़ से ढँके हुए फाटकों को चीरती हुई अन्दर घुस गई।

मरम्मत करने वाले कुछ मजदूर पहले से ही पिट पर खड़े हुए एक इंजन की मरम्मत कर रहे थे। बूढ़ा पोलेनताव्स्की खुद अपने इंजन के नीचे घुस कर उन जगहों को बतला रहा था जिनमें गड़बड़ी थी। जखार, ब्रुजाख और आर्तेम आविशदान की मुड़ी हुई लोहों की सलाखों को सीधा कर रहे थे। जखार उसको निहाई पर रखे हुए था और आर्तेम हथौड़ा चला रहा था।

जखार अधेड़ हो गया था। पिछले कुछ सालों ने उसके माथे पर गहरी झुर्रियाँ डाल दी थीं और उसकी कनपटी के बाल सफेद हो चले थे। उसकी कमर झुक गई थी और उसकी गढ़े में धंसी हुई आँखों में स्याही थी।

दरवाजे में खड़े हुए किसी आदमी की छायाकृति क्षण-भर के लिए दिखाई दी और फिर रात का अन्धेरा उसको निगल गया। लोहे पर हथौड़ों की चोटों ने उसकी पहली चीख को डुबा दिया, मगर जब वह इंजन पर काम करते हुए आदमियों के पास पहुँचा तो आर्तेम के हाथ का हथौड़ा उठा का उठा रह गया।

"साथियो! लेनिन मर गये!"

हथौड़ा धीरे-धीरे आर्तेम के कन्धे से नीचे आ गया और उसके हाथों ने खामोशी से उसको नीचे कंकरीट के फर्श पर रख दिया।

"क्या हुआ? तुमने क्या कहा?" कहते हुए आर्तेम ने यह भयानक खबर लाने वाले आदमी की चमड़े की जाकट को पागल की तरह झटके से पकड़ लिया।

और उसने हाँफते हुए, बर्फ से ढँके हुए, अपनी धीमी, टूटी हुई आवाज में दुहराया:

"हाँ साथियो, लेनिन मर गये!"

और चूँकि उस आदमी ने बात धीरे से कही थी, इसलिए आर्तेम ने समझ लिया कि यह भयानक खबर जरूर सही होगी। कुछ देर बाद उसने इस आदमी को पहचाना। यह स्थानीय पार्टी-संगठन का मन्त्री था।

इंजन की मरम्मत करने वाले मजदूर पिट में से कूद कर बाहर आये और उन्होंने मौन होकर उस आदमी की मौत की खबर सुनी जिसका नाम सारी दुनिया में गूँज रहा था।

फाटक के बाहर कहीं एक इंजन सीटी दे रहा था, जिसे सुन कर ये लोग

काँप गये। इंजन की इस दर्द में डूबी हुई आवाज़ के बाद वैसी ही आवाज़ दूर पर एक और इंजन ने की, उसके बाद एक और ने। उनकी इस आवाज़ में बिजलीघर के साइरेन ने योग दिया। साइरेन की आवाज़ बुलन्द और बम के उड़ते हुए छर्रों की तरह तेज़ और चुभने वाली थी। फिर ये आवाज़ें ज़रा देर बाद कीव के लिए रवाना होने वाली मुसाफ़िर गाड़ी के खूबसूरत "एस" इंजन की भारी गूँजती हुई आवाज़ में डूब गईं।

खुफ़िया का आदमी चौंक गया जब शेपेतोवका-वार्सा एक्सप्रेस के पोलिश इंजन के ड्राइवर ने इंजनों की इन सीटियों का कारण जानने पर, कान लगा कर उसको सुना और फिर धीरे-धीरे अपना हाथ उठा कर सीटी की रस्सी को खींचा। वह जानता था कि यह आखिरी बार उसको ऐसा करने का मौक़ा मिल रहा है, इसके बाद उसे फिर कभी यह गाड़ी चलाने को न मिलेगी। मगर उसके हाथ ने सीटी के तार को न छोड़ा और उसके इंजन की चीख़ ने पोलिश दूतों और कूट-नीतिज्ञों को चौंका कर उन्हें अपने नरम कोचों से उठा दिया।

रेलवे के हाते में लोगों की भीड़ जमा थी। वे तमाम फाटकों के अन्दर चले आ रहे थे और जब वह विशाल इमारत ठसाठस भर गई, तो शोक सभा निस्तब्ध शान्ति के वातावरण में आरम्भ हुई। पार्टी की शेपेतोवका एरिया कमिटी के मन्त्री, पुराने बोल्शेविक शराब्रिन ने तक़रीर की।

"साथियो! लेनिन, दुनिया भर के मज़दूरों के नेता लेनिन मर गये। पार्टी की अपूरणीय क्षति हुई है क्योंकि वह आदमी उठ गया जिसने बोल्शेविक पार्टी का निर्माण किया और उसको दुश्मनों के प्रति निर्मम होना सिखलाया··· हमारी पार्टी और हमारे वर्ग के नेता की मृत्यु मज़दूर वर्ग की सर्वोत्तम सन्तानों के लिए एक पुकार है कि वे आकर हमारी पार्टी में शामिल हों····।"

शोक संगीत की धुनें गूँज उठीं। वहाँ पर उपस्थित उन सैकड़ों लोगों ने अपनी टोपियाँ उतार लीं और वह आर्तेम जो पन्द्रह बरस से नहीं रोया था, उसको लगा कि जैसे दर्द से उसका गला घुँट रहा है और उसके वे मज़बूत चौड़े कन्धे हिल उठे।

आदमियों की भीड़ के दबाव से रेलवे मज़दूरों के क्लब की दीवारें भी मानो कराह रही थीं। बाहर बड़ी सख़्त सर्दी थी, हॉल के दरवाज़े के पास खड़े हुए दो लम्बे-लम्बे फ़र के दरख़्त बर्फ़ का लबादा पहने खड़े थे। मगर हॉल के अन्दर अँगीठियों और छः सौ लोगों की सांसों के कारण घुटन महसूस हो रही थी। ये छः सौ लोग पार्टी द्वारा बुलाई हुई इस शोक-सभा में आये थे।

हॉल में कहीं बातचीत की भुनभुनाहट नहीं थी। गहरे दर्द ने लोगों की

आवाजें रूँध दी थीं और वे एक-दूसरे से धीरे-धीरे फुस-फुसा कर बातें कर रहे थे और उन तमाम सैकड़ों लोगों की आँखों में दुख और चिन्ता के भाव थे। वे एक ऐसी किश्ती के मल्लाह थे जिसकी पतवार चलाने वाला तूफ़ान में ही उनसे बिछड़ गया था।

ब्यूरो के मेम्बरों ने शान्ति से मंच पर आसन ग्रहण किया। मोटे-तगड़े सिरोतेंको ने सावधानी से घंटी उठाई, धीरे से उसको बजाया और वापिस मेज़ पर रख दिया। इतने ही से हॉल में शान्ति छा गई।

मुख्य भाषण के बाद पार्टी संगठन का मन्त्री सिरोतेंको बोलने के लिए उठा। और यद्यपि उसने जो घोषणा की, वह शोक-सभा के लिए कुछ असाधारण ही थी, मगर किसी को उससे आश्चर्य नहीं हुआ।

उसने कहा, "कई मज़दूरों ने इस सभा से माँग की है कि वह पार्टी मेम्बरी की अर्जी पर विचार करे। इस अर्जी पर सैंतीस साथियों के हस्ताक्षर हैं।" और उसने वह अर्जी पढ़ कर सुना दी :

"दक्षिण-पश्चिम रेलवे शेपेतोवका स्टेशन की बोल्शेविक पार्टी के रेलवे संगठन की सेवा में।

"हमारे नेता की मृत्यु हमारे लिए पुकार है कि हम बोल्शेविक पार्टी में शामिल हों। और हम इस सभा से अनुरोध करते हैं कि वह इस बात पर विचार करे कि हम लेनिन की पार्टी के सदस्य होने के योग्य हैं या नहीं।"

इस छोटे से वक्तव्य पर दो कालम भर कर हस्ताक्षर थे।

सिरोतेंको ने उन्हें पढ़ कर सुना दिया और हर नाम के बाद वह थोड़ी देर के लिए रुक जाता था ताकि श्रोताओं को वह नाम याद हो जाय।

"स्तानिस्लाव ज़िग्मन्डोविच पोलेनताव्स्की, इंजन ड्राइवर, छत्तीस साल की सर्विस।"

हॉल में समर्थन की ध्वनि गूँज गई।

"आर्तेम आन्द्रीएविच कोर्चागिन, मेकेनिक, सत्रह साल की सर्विस।"

"जखार फिलिप्पोविच ब्रुजाक, इंजन ड्राइवर, इक्कीस साल की सर्विस।"

मंच पर बैठा हुआ वह आदमी जैसे-जैसे गठीले हाथों वाले और रेलवे मजदूरों की बिरादरी के पुराने तपे हुए लोगों का नाम पुकारता जाता था, वैसे-वैसे हॉल में शोर बढ़ता जाता था।

मगर फिर शान्ति छा गई जब पोलेनताव्स्की, जिसका नाम सूची में सबसे पहले था, आकर सभा के सामने खड़ा हुआ।

अपनी जिन्दगी की कहानी सुनाते समय उसके मन में जो उद्वेग था, उसको वह बुड्ढा इंजन ड्राइवर छिपा नहीं सका।

"....मैं आपको क्या बतलाऊँ साथियो? आप सभी जानते हैं कि उन दिनों में हम मजदूरों की जिन्दगी कैसी थी। मैंने जिन्दगी भर गुलाम की तरह मेहनत की, फिर भी बुढ़ापे में आकर मैं भिखमंगे का भिखमंगा ही रहा। जब क्रान्ति आई तो मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि मैं अपने को गिरस्ती की परेशानियों के बोझ से दबा हुआ एक बुड्ढा आदमी समझता रहा और पार्टी के अन्दर नहीं आया। और गोकि मैंने कभी दुश्मन का साथ नहीं दिया, फिर भी खुद संघर्ष में मैंने कम ही भाग लिया। १९०५ में मैं वार्सा में मोटर के कारखाने में हड़ताल कमिटी का मेम्बर था और बोल्शेविकों के साथ था। तब मैं जवान था और मुझ में लड़ने की शक्ति थी। मगर अब उन बीती बातों को याद करने से क्या फायदा! इलिच के मरने से मेरे दिल पर भारी धक्का सा लगा है, हमने अपना दोस्त और साथी खो दिया है और आज यह आखिरी बार मैं अपने बुड्ढे होने की बात कह रहा हूँ। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि कैसे अपनी बात कहूँ क्योंकि मुझे कभी भाषण देना नहीं आया। मगर मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि मेरा रास्ता बोल्शेविकों का रास्ता है, दूसरा कोई रास्ता नहीं है।"

उस इंजन ड्राइवर ने अपने पके बालों वाले सर को झटका दिया और उसकी सफेद भवों के नीचे उसकी आँखें श्रोताओं को दृढ़ता से देखती रहीं जैसे उनके फैसले का इन्तजार कर रही हों।

उस छोटे से पके बालों वाले आदमी की अर्जी के खिलाफ विरोध की एक भी आवाज नहीं उठी और सब लोगों ने वोट दिया। इस वोट में गैर-पार्टी लोगों को भी शरीक किया गया।

पोलेनताव्स्की जब सभापति मण्डली की मेज से हटा तो वह कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर था।

हर आदमी समझ रहा था कि कोई ऐतिहासिक बात हो रही है। अब उस इंजन ड्राइवर की जगह विशालकाय आर्तेम खड़ा था। उस मेकेनिक की समझ में नहीं आ रहा था कि अपने हाथों का क्या करे, लिहाजा वह बार-बार अपनी खूब बालों वाली फ़र की टोपी को तान रहा था। उसकी भेड़ की खाल की जाकट, जिसके सिरे एकदम घिस गए थे, खुली हुई थी। मगर उसकी भूरी फौजी वर्दी के गले तक पहुँचने वाले कालर में पीतल के दो बटन लगे हुए थे, जिससे उसकी आकृति

बड़ी चुस्त-दुरुस्त नजर आ रही थी, जैसी छुट्टी के दिन अच्छे-अच्छे कपड़ों के पहनने पर नजर आती है। आर्तेम हॉल की ओर मुड़ा और उसे एक परिचित स्त्री के चेहरे की झलक मिली। यह राजगीर की लड़की गालिना थी जो अपनी दर्जिन साथियों के साथ वहाँ बैठी हुई थी। वह उसे सहानुभूतिपूर्ण मुस्कराहट की आँखों से देख रही थी और उस मुस्कराहट में आर्तेम ने समर्थन पाया, और और भी कुछ जिसे शब्दों में रख सकना उसके लिए सम्भव न था।

उसने सिरोतेंको को कहते सुना, "लोगों को अपने बारे में बतलाओ आर्तेम!"

मगर आर्तेम के लिए अपनी कहानी शुरू करना आसान न था। ऐसी बड़ी सभा में बोलने का वह आदी न था और उसने एकाएक महसूस किया कि जिन्दगी ने जो कुछ उसके अन्दर भर दिया था, उन सबको व्यक्त करना उसकी शक्ति के बाहर था। शब्दों के लिए वह अटक रहा था और अपनी घबराहट के कारण ही बोलने में उसे और भी मुश्किल हो रही थी। इसके पहले उसने कभी ऐसा नहीं महसूस किया था। उसको इस बात की तीक्ष्ण चेतना थी कि वह किसी बड़े परिवर्तन के मोड़ पर खड़ा है, कि वह एक ऐसा कदम उठाने जा रहा है जो उसकी कठोर, ऐंठी हुई, घुटी हुई जिन्दगी में गरमाहट भर देगा और उसकी जिन्दगी फिर बेमानी न रह जायगी।

आर्तेम ने शुरू किया, "हम लोग चार आदमी थे।"

हॉल में शान्ति थी। छः सौ लोग उत्सुकता से इस टेढ़ी नाक वाले लम्बे मजदूर को सुन रहे थे, जिसकी आँखें घनी भवों के नीचे छिपी हुई थीं।

"मेरी माँ अमीर लोगों के घरों में रसोई पकाया करती थी। मुझे अपने बाप की कुछ खास याद नहीं है, उसमें और मेरी माँ में नहीं बनती थी। वह बहुत ज्यादा शराब पीता था। इसलिए मेरी माँ को ही हम बच्चों की देखभाल करनी पड़ती थी। इतने लोगों के खाने का इन्तजाम करना उसके लिए आसान न था। सबेरे से लेकर रात तक वह बैल की तरह काम में जुटी रहती थी और इसके लिए उसे महीने में चार रूबल और खाना मिलता था। मैं इतना खुशकिस्मत था कि मुझे दो साल स्कूल में पढ़ने का मौका मिला। उन्होंने मुझे पढ़ना-लिखना सिखाया। मगर मैं जब नौ साल का हुआ तो मेरी माँ के सामने इसके अलावा कोई रास्ता न था कि मुझे ले जाकर एक कारखाने में भर्ती करा दे। तीन साल तक मैंने सिर्फ खाने पर काम किया''''उस कारखाने का मालिक फेस्टर नाम का एक जर्मन था। पहले वह मुझे लेना न चाहता था क्योंकि मैं बहुत छोटा था। मगर मैं बहुत तगड़ा था और फिर मेरी माँ ने मेरी उम्र दो साल बढ़ा कर बतलाई थी। तीन साल

तक मैंने उस जर्मन के लिए काम किया मगर कोई काम न सीख सका क्योंकि मुझे घर की सेवा-टहल के काम करने पड़ते थे और दौड़-दौड़ कर वोडका लानी पड़ती थी। मेरा मालिक बुरी तरह पीता था····वह मुझे कोयला और लोहा लाने के लिए भी भेजता !····मालकिन ने तो मुझे बिलकुल गुलाम ही बना लिया था : मुझे आलू छीलने पड़ते, बर्तन धोने पड़ते। अक्सर मार पड़ती और खामखाह, क्योंकि उनको मारने की आदत पड़ी हुई थी। अगर मैं अपनी मालकिन को खुश न कर सकता तो वह कस कर मेरे मुँह पर थप्पड़ मारती और उसकी हालत यह थी कि अपने पति के पीने के कारण वह हमेशा गुस्से में भरी बैठी रहती थी। मैं उससे भाग कर सड़क पर पहुँच जाता, मगर कहाँ जाता, किससे शिकायत करता ? मेरी माँ चालीस मील दूर थी और फिर मुझे वह अपने पास रख भी तो नहीं सकती थी···और कारखाने में भी तो हालत कुछ बेहतर न थी। मालिक के भाई उसके इन्चार्ज थे। बड़ा सुअर आदमी था वह। उसे मुझको तंग करने में मजा आता था। कभी वह मुझसे कहता, 'ए छोकरे, वह वाशर तो उठा ला,' और कोने में भट्ठी की तरफ इशारा करता। मैं दौड़ कर जाता और वाशर को उठा लेता और जोर से चीख पड़ता क्योंकि वह ताजा-ताजा भट्टी से निकल कर पड़ा होता, और गोकि जमीन पर पड़ा हुआ वह काला नजर आता, मगर छूते ही आग लग जाती। और तब मैं तो दर्द से चीखता खड़ा होता और उसके पेट में हँसते-हँसते बल पड़े जाते। मैं यह तकलीफ और बर्दाश्त न कर सका और भागकर अपने घर माँ के पास चला गया। मगर वह समझ नहीं पाती थी कि मेरा क्या बन्दोबस्त करे, लिहाजा वह फिर मुझे उसी जर्मन के यहाँ ले गई। मुझे याद है, वह पूरे रास्ते रोती गई। कहीं तीसरे साल जाकर उन्होंने मुझको कुछ-कुछ काम सिखलाना शुरू किया, मगर मार-पीट बदस्तूर चलती रही। मैं फिर भाग गया और इस बार स्तारोकोन्स्तान्तिनोव पहुँचा। वहाँ मुझे एक सॉसेज के कारखाने में काम मिल गया और मैंने डेढ़ साल डब्बे धोने के पीछे बर्बाद किये। फिर हमारे मालिक ने जुए के पीछे कारखाने को तबाह कर दिया, चार महीने तक हमें एक कौड़ी भी न दी और गायब हो गया। इस तरह मैं उस खंदक में से निकला। तब मैंने अमेरिका की गाड़ी पकड़ी और वहाँ काम ढूँढ़ने निकला। संयोग से वहाँ पर मुझे एक रेलवे मजदूर मिला जिसे मुझ पर दया आई। जब मैंने उसको बतलाया कि मैं थोड़ा-बहुत मेकेनिक का काम जानता हूँ, तो वह मुझको अपने मालिक के पास ले गया और बोला कि यह मेरा भतीजा है और मुझे काम देने की सिफारिश की। मेरा डील-डौल ऐसा था कि उन्होंने मुझको सत्रह साल का समझा और इस तरह मुझे एक मेकेनिक के मददगार का काम मिल गया। जहाँ तक मेरे मौजूदा काम का ताल्लुक

है, मैं आठ साल से यहाँ काम कर रहा हूँ। अपनी पिछली जिन्दगी के बारे में इससे ज़्यादा मुझे कुछ नहीं कहना है। यहाँ की मेरी जिन्दगी के बारे में आप सब जानते ही हैं।"

आर्तेम ने अपनी टोपी से माथा पोंछा और एक लम्बी सांस ली। अभी तक उसने खास बात नहीं कही थी। और इसी को कहना सबसे कठिन काम था, मगर कहना तो था ही और कोई वह अनिवार्य सवाल पूछ बैठे, इसके पहले ही कहना था। लिहाज़ा अपनी घनी भवों में बल डालते हुए, उसने अपनी कहानी को जारी रखा :

"तुम सबको मुझसे यह सवाल पूछने का हक़ है कि मैं क्रान्ति के पहले दिनों में बोल्शेविक पार्टी में क्यों नहीं शरीक हुआ? आप मुझसे यह सवाल पूछ सकते हैं। मगर मैं इसका क्या जवाब दूँ? अभी मैं बुड्ढा तो हुआ नहीं, तब नहीं तो अब सही। मगर सवाल यह है कि अब तक मुझे यह रास्ता क्यों नहीं दिखाई दिया? मैं सीधे-सीधे बात करूँगा क्योंकि मेरे पास छिपाने को कुछ नहीं। वह रास्ता हमें दिखाई नहीं दिया और यह हमारी ही ग़लती थी। हमें १९१८ में ही इस रास्ते को पकड़ना चाहिए था जब हमने जर्मनों के खिलाफ़ बग़ावत की थी। मल्लाह ज़ुखराई ने बहुत बार हमसे यही बात कही। १९२० में आकर ही मैंने पहली बार राइफिल उठाई। तूफ़ान के खतम होने पर और श्वेत रूसियों को काले सागर में ढकेल कर हम लोग घर लौट आये। उसके बाद फिर परिवार, बच्चे··· मैं घर-गिरस्ती में एकदम उलझ गया। मगर अब जब कि कामरेड लेनिन नहीं हैं और पार्टी ने हमको पुकारा है, तो मैंने पीछे मुड़ कर अपनी जिन्दगी को देखा है और समझ रहा हूँ कि उसमें किस चीज की कमी थी। अपने राज की हिफ़ाज़त करना ही काफ़ी नहीं है, हमें लेनिन की जगह एक बड़े परिवार की तरह एकता की मज़बूत डोर में बँध कर रहना है ताकि सोवियत राज फ़ौलाद के पहाड़ की तरह मज़बूती से खड़ा रहे और उसे कोई हिला नहीं सके। हमको बोल्शेविक बनना ही है। यही हमारी पार्टी है, या मैं झूठ कहता हूँ?"

इन्हीं सीधे-सादे शब्दों में मगर गहरी ईमानदारी से मेकेनिक आर्तेम ने अपनी बात कही। और जब उसकी बात खतम हुई तो जहाँ उसे थोड़ी-थोड़ी लाज भी लग रही थी कि वह कैसे यों धारा-प्रवाह बोलता गया, वहाँ उसे यह भी महसूस हुआ कि जैसे उसके कन्धे पर से कोई भारी बोझ उतर गया और अच्छी तरह तन कर खड़े होते हुए वह आने वाले सवालों का इन्तज़ार करने लगा।

"कोई सवाल?" सिरोतेंको की आवाज़ ने शान्ति को भंग किया।

उपस्थित लोगों में खलबली-सी मची, मगर किसी ने पहले सभापति की

बात का जवाब नहीं दिया। तब एक फ़ायरमैन, जो सीधे अपने इंजन से चला आ रहा था और कालिख की तरह काला हो रहा था, निश्चयात्मक स्वर में बोला :

" पूछने को क्या है ? हम उसे जानते नहीं क्या ? उसे पार्टी में ले लो और क्या ! "

लुहार गिलियाका का चेहरा गर्मी और आवेश से लाल हो रहा था। उसने अपनी फटी हुई आवाज़ में चिल्ला कर कहा :

" यह बिलकुल ठीक ढंग का कामरेड है, कभी गद्दारी नहीं करेगा। तुम उस पर भरोसा कर सकते हो। वोट ले लो सिरोतेंको ! "

हॉल के पिछले हिस्से में से, जहाँ कोमसोमोल बैठे हुए थे, और जो उस अँधेरे में दिखाई नहीं दे रहा था, कोई उठा और बोला :

" कामरेड कोर्चागिन बतलाएँ कि उन्होंने क्यों किसानी जीवन अपनाया है और कैसे उसका मेल मज़दूर मनोवृत्ति के साथ बिठाते हैं। "

हाल में नाराज़गी की एक हलकी-सी भुनभुनाहट पैदा हुई और किसी ने एतराज़ करते हुए कहा :

" तुम ऐसे क्यों नहीं बोलते जिससे सीधे-सादे लोग भी तुम्हारी बात समझ सकें ? खूब वक्त चुना तुमने भी क़ाबलियत बघारने के लिए····। "

मगर आर्तेम ने जवाब देना शुरू कर दिया था :

" यह बिलकुल ठीक बात उसने पूछी है कामरेड। उसने बिलकुल ठीक कहा है कि मैंने किसानी जीवन अपना लिया है। मगर मैं कहना चाहता हूँ कि मैंने अपने मज़दूर विवेक के साथ विश्वासघात नहीं किया है। बहरहाल आज से वह चीज़ खतम भी हो गई। मैं अपने परिवार को रेलवे यार्ड के और पास ले आ रहा हूँ। यहाँ ज़्यादा अच्छा रहेगा। वह मनहूस खेत बहुत दिन से मेरे गले में फँसता रहा है। "

एक बार फिर आर्तेम का दिल काँपा जब उसने अपने समर्थन में उठे हुए हाथों के उस जंगल को देखा, और सिर ऊँचा करके जब वह आकर अपनी सीट पर बैठा तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उड़ा जा रहा हो। अपने पीछे उसने सिरोतेंको को ऐलान करते सुना : " सर्वसम्मति से पास। "

मंच पर खड़ा होने वाला तीसरा आदमी पोलेनताल्स्की का पहले का मददगार ज़खार ब्रुज़ाक था। यह खामोश तबियत का बुड्ढा आदमी खुद बहुत दिनों से इंजन-ड्राइवर था। उसने जब अपनी मेहनत की ज़िन्दगी का वर्णन खतम किया और कहानी को उस दिन तक ले आया, तो उसकी आवाज़ धीमी पड़ी और वह धीमे-धीमे बोलता रहा, पर इतने धीमे नहीं कि लोग सुन न सकें :

"मेरे बच्चों ने जो चीज शुरू की, उसको पूरा करना मेरा कर्तव्य है। उनको हरगिज यह बात पसन्द न होती कि मैं अपने दर्द को लेकर एक कोने में मुँह छिपाये पड़ा रहूँ। इस चीज के लिए उन्होंने जान नहीं दी। उनके मर जाने से जो कमी हो गई है, अब तक मैंने उस कमी को पूरा करने की कोशिश नहीं की है। मगर हमारे नेता लेनिन की मृत्यु से मेरी आँखें खुल गई हैं। मुझको अपने पिछले जमाने की जवाबदेही करने के लिए न कहो। आज से हमारी नई जिन्दगी शुरू होती है।"

जखार के दिल में दर्द से भरी हुई यादें घुमड़ रही थीं, उसके चेहरे पर मानो बादल-सा छा गया था, मगर उसका चेहरा कठोर था। लेकिन जब उसको पार्टी में लेने के समर्थन में हाथों का एक समुन्दर लहराया तो उसकी आँखें चमकने लगीं और उसका पके बालों वाला सिर गर्व से तन गया।

नये लोगों को पार्टी में लेने की यह कार्रवाई बहुत रात गये तक चलती रही। सबसे अच्छे और ऐसे लोग ही लिये गए, जिन्हें सब लोग जानते थे और जिनकी जिन्दगियों में कहीं कोई धब्बा न था।

लेनिन की मृत्यु ने लाखों मजदूरों को बोल्शेविक बनाया। नेता चल गया मगर पार्टी बदस्तूर क़ायम रही, उसमें कहीं कोई कमजोरी नहीं आई। कोई दरख्त जिसकी विशाल जड़ें धरती में मजबूती के साथ गड़ी होती हैं, उसके सिरे को अगर काट भी दिया जाय, तब भी वह मरता नहीं।

पन्द्रहवाँ अध्याय

होटल के कन्सर्ट हॉल के दरवाजे पर दो आदमी खड़े थे। उनमें लम्बा वाला नाक के ऊपर ठहरा हुआ चश्मा लगाये था और उसकी बाँह में एक लाल फ़ीता बँधा था जिस पर लिखा था "कमांडेंट।"

रिता ने पूछा, "उक्रेन के डेलीगेशन की मीटिंग यहीं हो रही है?"

उस लम्बे आदमी ने सर्द शिष्टाचार के स्वर में जवाब दिया, "हाँ आपको क्या काम है कामरेड?"

वह लम्बा आदमी रास्ते को रोक कर खड़ा हो गया और रिता को ऊपर से लेकर नीचे तक देखने लगा।

"आपके पास डेलीगेट कार्ड है?"

रिता ने अपना कार्ड पेश कर दिया जिस पर सुनहले अक्षरों में लिखा था : "केन्द्रीय समिति की सदस्य।" उसको देखते ही उस आदमी का बर्ताव फ़ौरन बहुत नम्र और मीठा हो गया।

"अन्दर चलिए कामरेड, आपको उधर बाईं तरफ़ कुछ खाली सीटें मिल जायँगी।"

रिता गई और एक खाली सीट पर जाकर बैठ गई।

स्पष्ट ही मीटिंग खतम होने जा रही थी क्योंकि सभापति का अन्तिम भाषण चल रहा था। उसकी आवाज़ रिता को परिचित लगी।

"अखिल रूसी कांग्रेस की कौंसिल का निर्वाचन हो गया। कांग्रेस की कार्रवाई दो घंटे में शुरू होगी। इस बीच में मैं आपकी इजाजत से डेलीगेटों की फ़ेहरिस्त को एक बार फिर दुहरा देना चाहता हूँ।"

यह अकिम था! रिता ध्यानावस्थित होकर सुनती रही और वह फ़ेहरिस्त को जल्दी-जल्दी पढ़ रहा था। हर डेलीगेट अपना नाम पुकारे जाने पर अपना लाल या सफ़ेद पास लेकर हाथ उठाता था।

तभी रिता ने एक परिचित नाम सुना : पांक्रातोव।

एक हाथ तेज़ी से उठा। रिता ने मुड़ कर उसको देखा मगर बीच में इतनी क़तारें थीं कि वह उस मल्लाह का चेहरा न देख सकी। नामों का पढ़ा जाना चलता रहा और फिर रिता ने एक परिचित नाम सुना—ओकुनेव और उसके बाद एक और, जार्की।

डेलीगेटों के चेहरों को ग़ौर से देखते हुए उसकी नज़र जार्की पर पड़ी। वह उससे थोड़ी ही दूर पर बैठा था और उसका चेहरा आधा उसी की तरफ़ मुड़ा हुआ था। हाँ यह वान्या ही था। वह उस चेहरे को लगभग भूल ही गई थी। उसको देखे कई बरस भी तो बीत गये थे।

नाम पुकारे जाते रहे। और तब अकिम ने एक नाम पढ़ा जिसे सुन कर रिता ज़ोर से चौंक पड़ी :

"कोर्चागिन।"

दूर पर सामने की क़तार में एक हाथ उठा और गिरा और अजीब बात थी कि रिता उस्तिनोविच के मन में उस आदमी के चेहरे को देखने की दारुण चाह हुई जिसका नाम वही था जो उसके बिछुड़े हुए साथी का था। वह उस जगह से अपनी आँख अलग न कर सकी, जहाँ से वह हाथ उठा था। मगर पीछे से सामने की क़तार में बैठे हुए सब लोगों के सिर एक-जैसे नज़र आते थे। रिता उठ खड़ी हुई और बीच के रास्ते से सामने वाली क़तारों की तरफ़ बढ़ी। उसी वक़्त अकिम

ने नाम पढ़ना ख़तम किया। लोगों ने ज़ोर से अपनी कुर्सियाँ पीछे खिसकायीं और हॉल आवाज़ों की भुनभुनाहट और नौजवानों की हँसी से भर उठा। इस शोर में अपनी बात लोगों के कानों तक पहुँचाने के लिए अकिम ने चिल्ला कर कहा:

"बोलशोय थियेटर···सात बजे। देरी न हो!"

हॉल से निकलने के अकेले दरवाजे पर डेलीगेटों की भीड़ लग गई। रिता ने देखा कि इस भीड़ में वह अपने एक भी पुराने दोस्त को कभी भी न ढूँढ़ सकेगी। अकिम के जाने के पहले उसी को पकड़ने की कोशिश करनी चाहिए, दूसरों को ढूँढ़ने में उसी से मदद मिलेगी। तभी कुछ डेलीगेट दरवाजे की तरफ़ बढ़ते हुए उसके पास से गुज़रे और उसने किसी को कहते सुना:

"अच्छा कोर्चागिन, अब हम लोगों को भी चलना चाहिए।"

और एक आवाज़ ने, जो इतनी परिचित थी और हमेशा याद रहने वाली, जवाब दिया:

"हाँ, चलो।"

रिता झट से मुड़ी। उसके सामने एक लम्बा दबे रंग का नौजवान खाकी वर्दी और नीली बिर्जिस पहने खड़ा था। उसकी वर्दी में एक पतली सी काकेशियन पेटी लगी हुई थी।

रिता ने आँख फाड़ कर उसको देखा। फिर उसने उसकी बाँहों को अपने गिर्द महसूस किया और उसकी काँपती हुई आवाज़ को धीरे से कहते सुना: "रिता," और वह जान गई कि यह पावेल कोर्चागिन ही था।

"तो अभी तुम ज़िन्दा हो?"

इन शब्दों से पावेल की समझ में सारी बात आ गई। मतलब कि रिता को यह नहीं मालूम हुआ था कि उसकी मौत की ख़बर ग़लत थी।

हॉल बड़ी देर का खाली हो चुका था और त्वेर्स्काया का शोर-शराबा खुली हुई खिड़की में से अन्दर आ रहा था। घड़ी ने छः बजाया मगर उन दोनों को ऐसा लग रहा था कि जैसे अभी क्षण भर पहले मिले हों। मगर घड़ी की आवाज़ सुन कर उनको बोलशोय थियेटर का ख़याल आया। खूब चौड़ी सीढ़ी से नीचे उतर कर रिता ने एक बार और पावेल को ग़ौर से देखा। अब वह उससे काफ़ी ऊँचा हो गया था और ज़्यादा परिपक्व और आत्मसंयमी दीख पड़ता था। इसके अलावा पावेल में कुछ भी नहीं बदला था और वह वही पुराना पावेल था।

रिता ने कहा, "मुझे देखो कि मैंने तुमसे यह भी नहीं पूछा कि कहाँ काम कर रहे हो।"

पावेल ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "मैं कोमसोमोल की एरिया कमिटी का मन्त्री हूँ, दुबावा के शब्दों में क़लम-घिस्सू!"

"तुम उससे मिले हो?"

"हाँ, और उस मुलाकात की मेरी याद बहुत कड़वी है।"

वे सड़क पर निकल आये। मोटरें जूँ-जूँ करती भागी जा रही थीं और शोर करती भीड़ पक्के फुटपाथों पर जमा थी। थियेटर के रास्ते में उनमें आपस में कोई बात नहीं हुई, एक ही से विचार दोनों के दिमाग़ों में भरे हुए थे। उन्होंने जाकर देखा कि थियेटर बहुत से लोगों के एक तूफ़ानी समुन्दर से घिरा हुआ है, जिसकी लहरें थियेटर की इमारत के पत्थरों से आ-आ कर टकरा रही हैं ताकि दरवाज़ों पर पहरा देते हुए लाल सैनिकों के घेरे को तोड़ कर अन्दर घुस जायें। मगर सन्तरी सिर्फ़ डेलीगेटों को अन्दर आने दे रहे थे और वे अपने पास शान से दिखला कर अन्दर चले आते थे।

यह कोमसोमोल का समुन्दर था जो थियेटर को घेरे हुए था, नौजवानों का एक समुन्दर जिन्हें कांग्रेस के उद्घाटन-समारोह का टिकट नहीं मिल पाया था, मगर जो किसी भी कीमत पर अन्दर घुसने पर तुले हुए थे। उनमें से कुछ नौजवान जो ज़्यादा फुर्तीले थे, डेलीगेटों की टोली में पहुँच गये थे और काग़ज़ का कोई लाल टुकड़ा दिखला कर दरवाज़े तक पहुँचने में कामयाब हुए थे।

कुछ थोड़े से वे लोग दरवाज़े के अन्दर घुसने में भी कामयाब हुए थे। मगर अन्दर पहुँच कर उन्हें ड्यूटी पर तैनात केन्द्रीय समिति के आदमी या कमांडेन्ट से डाँट खानी पड़ती थी जो अतिथियों और डेलीगेटों को उनकी नियुक्त जगहें दिखला रहे थे। और फिर उन्हें बाहर निकाल दिया जाता था जिससे उन तमाम लोगों को, जिनके पास टिकट नहीं थे, अपार सन्तोष होता था।

जितने लोग उपस्थित होना चाह रहे थे, उनके दशांश लोगों के लिए भी थियेटर में जगह नहीं थी।

रिता और पावेल बड़ी मुश्किल से हॉल के दरवाज़े तक पहुँचे। डेलीगेट लोग आते रहे, कुछ लोग ट्राम गाड़ी से आये, कुछ लोग मोटर से आये। वे सब दरवाज़े पर इकट्ठा हो गये थे और लाल सैनिक, जो खुद भी कोमसोमोल थे, दीवार से चिपक कर खड़े थे। उसी वक़्त दरवाज़े के पास भीड़ में से एक शोर उठा:

"बाउमान इन्स्टीच्यूट, यह चला!"

"चलो दोस्तो, हमारी जीत हो रही है!"

"हुर्रा!"

पावेल और रिता के साथ ही हॉल में तेज़ आँखों वाला एक लड़का घुसा,

जो कोमसोमोल का बैज लगाये हुए था और कमांडेंट की आँख बचा कर थियेटर के बाहर वाले बड़े कमरे की तरफ़ सीधे लपका। क्षण भर में वह भीड़ में खो गया।

रिता ने पीछे की क़तार में एक कोने की दो सीटों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "आओ यहाँ बैठें।"

बैठने पर रिता ने कहा, "मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहती हूँ। इसका ताल्लुक गुज़रे हुए ज़माने से है, मगर मुझे यक़ीन है कि तुम जवाब देने से इनकार नहीं करोगे। बतलाओ तुमने क्यों उस वक़्त हम लोगों का संग-संग पढ़ना छोड़ दिया और हमारी दोस्ती तोड़ दी?"

और गोकि पावेल बड़ी देर से इस सवाल का इन्तज़ार कर रहा था, जब से रिता मिली थी तभी से, फिर भी इस सवाल से उसे परेशानी हुई। उनकी आँखें मिलीं और पावेल ने देख लिया कि रिता असली कारण जानती है।

"मेरा ख़याल है कि तुम खुद अपने सवाल का जवाब जानती हो रिता। यह चीज़ तीन बरस पहले हुई थी और अब मैं सिर्फ़ यह कह सकता हूँ कि उस बात के लिए पावका की निन्दा करूँ। सच बात यह है कि कोर्चागिन ने अपनी ज़िन्दगी में बहुत-सी छोटी-बड़ी भूलें की हैं। वह भी उन्हीं में से एक है।"

रिता मुस्कराई।

"भूमिका तो बहुत अच्छी है। मगर अब जवाब दो!"

पावेल ने धीमी आवाज़ में शुरू किया, "इसमें दोष अकेले मेरा न था। इसमें गैड-फ्लाई का भी दोष था, उसके क्रान्तिकारी रोमांस का। उन दिनों मुझ पर ऐसी किताबों का बड़ा गहरा असर था, जिनमें तपे हुए साहसी क्रान्तिकारियों का सजीव चित्रण होता था, ऐसे लोगों का जिन्होंने अपने पवित्र लक्ष्य के लिए अपने को न्यौछावर कर दिया। ऐसे लोगों का मुझ पर बड़ा गहरा असर पड़ता था और मैं भी उन्हीं की तरह बनना चाहता था। तुम्हारे प्रति मेरे मन के जो भाव थे, उन पर मैंने उस गैड फ्लाई नाम की किताब का असर पड़ने दिया। अब वह बात बड़ी बेवक़ूफ़ी की मालूम होती है और मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं बतला सकूँ कि मुझे इस चीज़ के लिए कितना खेद है।"

"तो तुमने उस किताब के बारे में अपनी राय बदल दी है?"

"नहीं रिता, बुनियादी तौर पर नहीं, लेकिन हाँ, इतना मैंने ज़रूर किया है कि अपनी इच्छाशक्ति की बार-बार परीक्षा लेने की कष्टदायी प्रक्रिया और उससे पैदा होने वाली अनावश्यक ट्रेजेडी की व्यर्थता को समझ लिया है। मैं अब भी उस किताब की सबसे अहम बातों का हामी हूँ, उसके साहस का, उसकी असीम सहन शक्ति का। मेरे नज़दीक वह एक ऐसे आदमी का रूप है जो अपने दर्द को हर

ऐरे-गैरे को दिखलाये बग़ैर मौन होकर अपनी पीड़ा को झेल सकता है। मैं उस तरह के क्रान्तिकारी होने का समर्थक हूँ जो पूरे समाज की ज़िन्दगी के सामने अपनी निजी ज़िन्दगी को कुछ नहीं समझता हो।"

"कितने अफ़सोस की बात है पावेल कि तीन बरस पहले तुमने मुझे यह बात न बतलाई," रिता ने एक ऐसी मुस्कराहट के साथ कहा जिससे पता चल रहा था कि उसके विचार कहीं दूर भटक रहे हैं।

"अफ़सोस की बात तुम इसीलिए कहती हो न रिता कि मैं तुम्हारे नज़दीक कभी एक कामरेड से ज़्यादा कुछ नहीं था?"

"नहीं पावेल, तुम उससे ज़्यादा कुछ बन सकते थे।"

"मगर वह तो अब भी हो सकता है।"

"नहीं कामरेड गैड-फ्लाई, अब बहुत देर हो गई।"

रिता ने मुस्कराते हुए अपनी बात साफ़ की, "बात यह है कि अब मेरी एक छोटी-सी लड़की है। मैं उसके पिता को बहुत प्यार करती हूँ। हम तीनों में बड़ी दोस्ती है और अभी तो तीनों अविभाज्य हैं।"

उसकी उंगलियाँ पावेल के हाथ को छू रही थीं। पावेल के प्रति सहानुभूति से ही उसने ऐसा किया था, मगर फ़ौरन ही उसने समझ लिया कि इस चीज़ की ज़रूरत नहीं है। हाँ, इन तीन सालों में पावेल परिपक्व हुआ था और शारीरिक रूप से ही नहीं, मानसिक रूप से भी। उसकी आँखों को देख कर रिता ने समझ लिया कि उसकी स्पष्टोक्ति से पावेल को कितनी चोट लगी है। मगर पावेल ने सिर्फ़ यह कहा :

"जो कुछ मैंने अभी-अभी खोया है, उसके मुक़ाबले में जो कुछ अभी मेरे पास बचा हुआ है, वह कहीं बड़ा है, कहीं ज़्यादा।" और रिता ने समझा कि यह कोई खोखले शब्द नहीं हैं जो पावेल ने कहे हैं, यह तो सीधा-सादा सत्य है।

मंच के पास जाकर बैठने का समय हो गया था। वे उठे और उस क़तार की तरफ़ बढ़े जिसमें उक्रेन के डेलीगेशन के लोग बैठे हुए थे। बैण्ड बजने लगा। हॉल में लगी हुई झण्डियों पर लिखा हुआ था, "भविष्य हमारा है!" हज़ारों लोग उस हॉल की सीटों पर बैठे हुए थे। ये हज़ारों लोग मिल कर एक विराट इकाई बन गये थे जिनमें अशेष उत्साह लहरें मार रहा था। देश के औद्योगिक मज़दूरों की बिरादरी की श्रेष्ठतम नई सन्तानें यहाँ पर उपस्थित थीं। हज़ारों आँखों में सामने के भारी पर्दे के इन जलते हुए अक्षरों की प्रतिच्छाया चमक रही थी : "भविष्य हमारा है!" और अब भी लोगों की भीड़ अन्दर चली आ

रही थी। कुछ ही क्षण बाद वह मखमल का भारी पर्दा हट जायगा और फिर रूसी कम्युनिस्ट युवक संघ की केन्द्रीय समिति का मन्त्री इस महान अवसर पर क्षण भर के लिए उद्विग्न होकर घोषणा करेगा :

" अब रूसी कम्युनिस्ट युवक संघ की छठी कांग्रेस की कार्रवाई शुरू होती है। "

इसके पहले कभी पावेल कोर्चागिन को क्रान्ति की महत्ता और शक्ति की ऐसी गहरी मार्मिक चेतना नहीं हुई थी और यह सोच कर उसका मन वर्णनातीत आनन्द और गर्व से भर उठा कि जिन्दगी उसे नौजवान बोल्शेविकों की विराट रैली में ले आई थी, उसको जो खुद भी एक सैनिक और निर्माता था।

भोर से ले लेकर बहुत रात तक उसका सारा समय कांग्रेस में चला जाता था इसलिए कई दिन बाद, जब कांग्रेस खतम होने आ रही थी और उसके आखिरी इजलास हो रहे थे, पावेल की रिता से दुबारा मुलाकात हुई। वह उक्रेनियनों के एक दल के साथ थी।

रिता ने उसको बतलाया, " कांग्रेस खतम होते ही मैं कल चली जाऊँगी। मैं नहीं जानती कि मुझे फिर तुमसे बात करने का मौक़ा मिलेगा या नहीं और इसलिए मैंने अपनी डायरी की दो पुरानी नोटबुकें और एक छोटी-सी चिट्ठी तुम्हारे लिए तैयार की है। उनको पढ़ लेना और पढ़ कर डाक से मुझे वापस भेज देना। वे तुम्हें वह सब कुछ बतला देंगी जो मैं तुम्हें नहीं बतला सकी। "

पावेल ने रिता का हाथ दबाया और बड़ी देर तक उसको देखता रहा जैसे उसके चेहरे को दिमाग़ में पक्की तरह बिठाल रहा हो।

अगले रोज वायदे के अनुसार वे दोनों बड़े दरवाजे पर मिले और रिता ने उसको एक पैकेट और एक बन्द लिफ़ाफ़ा पकड़ा दिया। वे अकेले नहीं थे, उनके आस-पास और लोग थे, इसलिए उन्हें अपने ऊपर संयम रखते हुए एक-दूसरे से विदा होना पड़ा। मगर तब भी पावेल ने रिता की कुछ-कुछ आद्र आँखों में एक गहरे ममत्व को पढ़ा जिसमें दर्द भी मिला हुआ था।

अगले रोज उनकी गाड़ियाँ उन्हें अलग-अलग दिशाओं में लेकर चली गईं। जिस गाड़ी में पावेल सफ़र कर रहा था, उसके कई डब्बों में उक्रेन के डेलीगेशन के लोग थे। उसके कम्पार्टमेन्ट में कीव के कुछ डेलीगेट थे। शाम को जब दूसरे मुसाफ़िर सो गये थे और पास की बर्थ पर ओकुनेव आराम से खर्राटे भर रहा था, पावेल ने लैम्प को पास सरकाया और चिट्ठी को खोला।

" पावेल, मेरे प्यारे पावेल! यह सब बातें मैं तुम्हें उस वक्त बतला सकती थी जब हम साथ थे। मगर इस तरह और अच्छा होगा।

मैं सिर्फ़ एक बात की कामना करती हूँ कि कांग्रेस के पहले हम लोगों ने जो बातें कीं, उनके घाव का कोई निशान तुम्हारी जिन्दगी पर न रहे। मैं जानती हूँ कि तुम मजबूत आदमी हो और मैं यह भी जानती हूँ कि तुमने जो कुछ कहा था, उसको अच्छी तरह समझ-बूझ कर ही कहा था। जीवन के प्रति मेरा कोई बंधा-टका दृष्टिकोण नहीं है। मैं समझती हूँ कि अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों में, चाहे कभी-ही-कभी, अपवाद किये जा सकते हैं बशर्ते कि वे एक सच्चे और गहरे प्यार पर आधारित हों। मैं तुम्हारे लिए यह अपवाद कर सकती थी, मगर मैंने जवानी के उस आवेश को ठुकरा दिया। मैं समझती हूँ कि ऐसा करने से हम दोनों में से किसी को सच्चा सुख नहीं मिलेगा। मगर फिर भी मैं यह कहूँगी पावेल, कि तुम्हें अपने साथ इतना कठोर न होना चाहिए। हमारी जिन्दगी में केवल संघर्ष ही नहीं है, उसमें उस सुख के लिए भी जगह है जो सच्चे प्यार से मिलता है।

"जहाँ तक तुम्हारे जीवन के मूल अभिप्राय, उसके मर्म की बात है, मुझे उसके बारे में किसी तरह की कोई शंका नहीं है। मैं अपने हृदय के समस्त प्यार से तुम्हारे हाथ को अपने हाथ में लेती हूँ।

—"रिता"

पावेल ने अपने विचार में डूबे-डूबे उस चिट्ठी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उसने खिड़की में से हाथ निकाला और हवा उसके हाथ से काग़ज़ के उन टुकड़ों को उड़ा ले गई।

सवेरा होते-होते उसने रिता की डायरी की दोनों नोटबुकें पढ़ ली थी और उन्हें लपेट और बाँध कर डाक में छोड़ने के लिए तैयार कर दिया था। ओकुनेव, पांक्रातोव और दूसरे कुछ डेलीगेटों के साथ वह खारकोव में गाड़ी से उतर पड़ा। ओकुनेव तालिया को ले आने के लिए कीव जा रहा था। तालिया वहाँ पर आना के साथ ठहरी हुई थी। पांक्रातोव उक्रेन की कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति का सदस्य चुना गया था। उसको भी कीव में काम था। पावेल ने उनके साथ कीव जाने और वहाँ जाकर दुबावा और आना से मिलने का फ़ैसला किया।

कीव स्टेशन के डाकघर में रिता के पार्सल को छोड़ कर वह बाहर आया तो उसने देखा कि बाक़ी लोग चले जा चुके थे, इसलिए वह अकेले ही चल पड़ा। ट्राम आना और दुबावा के घर के सामने रुकी। पावेल सीढ़ी चढ़ कर दूसरी मंजिल पर पहुँचा और बाईं तरफ़ आना के कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी। कोई जवाब

नहीं मिला। अभी तो काम पर निकल जाने का समय नहीं हुआ। "ज़रूर सो रही होगी," उसने सोचा। पास के कमरे का दरवाज़ा खुला और आँखों में नींद भरे दुबावा बाहर निकला। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था और उसकी आँख के नीचे नीले हलके धब्बे थे। उसके शरीर से प्याज़ की तेज़ गन्ध आ रही थी। और पावेल की तेज़ नाक को शराब की भी बदबू मिली। आधे खुले हुए दरवाज़े में से पावेल ने बिस्तर पर लेटी हुई किसी औरत की मांसल जाँघों और कन्धों की झलक पाई।

दुबावा ने पावेल को उधर देखते हुए पाकर पैर से धक्का देकर दरवाज़े को बन्द कर दिया।

पावेल की आँखों को बचाते हुए उसने फटी हुई आवाज़ में पूछा, "तुम शायद कामरेड बोहार्ट से मिलने आये हो? अब वह यहाँ नहीं रहती। तुमको यह बात नहीं मालूम थी क्या?"

कोर्चागिन का चेहरा कठोर हो गया था। उसने दुबावा पर अपनी पैनी दृष्टि गड़ाई।

"नहीं, मुझे नहीं मालूम था। कहाँ चली गई?"

अचानक दुबावा के दिमाग़ का पारा गर्म हो गया।

उसने चिल्ला कर कहा, "मैं क्या जानूँ!" उसने डकार ली और दबे हुए द्वेष के स्वर में कहा: "उसे ढाढ़स देने आये हो, है न? तुम ठीक मौक़े से आये हो, जो जगह खाली हुई है, उसको भर सकोगे। अब तुम्हारा मौक़ा है। फ़िक्र न करो, वह इनकार न करेगी। वह मुझे बहुत बार बतला चुकी है कि तुमको वह कितना चाहती है। जाओ जाओ, लोहा जब गरम हो, तभी उस पर घन की चोट मारनी चाहिए। ठीक अर्थों में यही शरीर और आत्मा का मिलन होगा।"

पावेल ने महसूस किया कि उसके चेहरे पर खून उतरा आ रहा है। उसने बड़ी मुश्किल से अपने को वश में किया और मद्धिम आवाज़ में कहा:

"अपनी यह तुम क्या गत बना रहे हो, मितियाई! मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि तुम्हारा ऐसा पतन होगा। एक समय ऐसा भी था जब तुम खासे अच्छे आदमी थे। तुम क्यों अपने-आपको बर्बाद कर रहे हो?"

दुबावा दीवार के सहारे टिक गया। स्पष्ट ही सीमेन्ट का फ़र्श उसके नंगे पैरों को बहुत ठण्डा लग रहा था क्योंकि वह काँप रहा था।

दरवाज़ा खुला और एक औरत का चेहरा दिखाई दिया। उसकी आँखें सूजी हुई और गाल फूले हुए थे।

"अन्दर आ जाओ प्यारे, बाहर खड़े-खड़े क्या कर रहे हो?"

उसके और कुछ कहने के पहले दुबावा ने दरवाजा झटके से बन्द कर दिया और टिक कर खड़ा हो गया।

"अच्छी शुरुआत है," पावेल ने कहा, "जरा देखो कैसे लोगों की संगत तुम कर रहे हो। इस चीज का अन्त कहाँ होगा?"

मगर दुबावा अब और कुछ सुनने को तैयार न था।

उसने चीखते हुए कहा, "अब क्या तुम मुझे यह भी बतलाओगे कि मैं किसके साथ सोऊँ और किसके साथ न सोऊँ? बहुत हो चुका, अब मुझे तुम्हारे और उपदेश की जरूरत नहीं है। जहाँ से आये हो वहीं अब लौट जाओ! भागते हुए जाओ और सबसे जाकर कह दो कि दुबावा शराब पीने लगा है और बदचलन औरतों के साथ सोता है।"

पावेल उसकी ओर बढ़ा और अपने मन के आवेग को दबाते हुए बोला :

"मितियाई, उस औरत को भगा दो। मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ, आखिरी बार····।"

दुबावा का चेहरा काला पड़ गया। वह मुड़ा और बिना एक शब्द बोले अपने कमरे में वापस चला गया।

"सुअर का बच्चा!" पावेल ने कहा और धीरे-धीरे सीढ़ी से नीचे उतरने लगा।

दो साल गुजर गये। समय की निर्बाध गति से दिन और महीने बीतते जा रहे थे, मगर जिन्दगी में रंगों का मेला था जिससे उसकी दीख पड़ने वाली एकरसता में सदा कोई नवीनता रहती थी और कोई दो दिन एक-से न रहते थे। सोलह करोड़ जनता का यह महान राष्ट्र, धनधान्य से भरे अपने विशाल देश के भविष्य को अपने हाथों में लेने वाली संसार की पहली जनता, युद्ध से तहस-नहस आर्थिक व्यवस्था को ठीक करने के विराट काम में लगी हुई थी। देश की शक्ति बढ़ी, उसकी रगों में नया उत्साह बढ़ने लगा और अब कहीं भी ऐसे उजड़े कारखाने नहीं थे जिनसे धुआँ न उठता हो और जिन्हें देख दिल को तकलीफ़ होती हो।

पावेल के लिए वे दो साल अनवरत काम के प्रवाह में तेजी से बीत गये। वह जिन्दगी को आराम से बिताने वाला आदमी नहीं था कि नये दिन का स्वागत इतमीनान की एक जम्हाई से करता और दस का घंटा बजते ही सोने के लिए बिस्तर पर पहुँच जाता। उसकी जिन्दगी की रफ्तार तेज थी और वह न खुद अपने को और न किसी दूसरे को एक भी क्षण बर्बाद करने देता था।

सोने के लिए उसने कम-से-कम वक़्त दिया था। अक्सर उसकी खिड़की की रोशनी बहुत रात गये तक जलती रहती और कमरे के भीतर लोग एक मेज़ के इर्द-गिर्द बैठे हुए पढ़ाई में मशगूल नज़र आते। इन दो सालों में उन्होंने "कैपीटल" के तीसरे खण्ड का गहरा अध्ययन कर लिया था और पूँजीवादी शोषण की सूक्ष्म कार्य-प्रणाली अब उनके सामने बिलकुल स्पष्ट हो गई थी।

जिस इलाक़े में इन दिनों कोर्चागिन काम करता था, उसीमें राज़वालिखिन भी आ गया था। उसको सूबा कमिटी ने इस सिफ़ारिश के साथ वहाँ भेजा था कि उसे देहात के किसी कोमसोमोल संगठन का मन्त्री बना दिया जाय। राज़वालिखिन जब आया तब पावेल कहीं बाहर गया हुआ था और उसकी अनुपस्थिति में ब्यूरो ने राज़वालिखिन को एक देहात में भेज दिया। लौटने पर पावेल को यह खबर मिली और उसे सुन कर वह कुछ नहीं बोला।

महीने भर बाद पावेल एक रोज़ अचानक राज़वालिखिन के देहात में पहुँच गया। वहाँ ज़्यादा कुछ देखने को तो नहीं मिला, मगर जो कुछ मिला वह काफ़ी निन्दनीय था। नया मन्त्री शराब पीता था, उसने अपने इर्द-गिर्द खुशामदी लोगों को जमा कर लिया था और ईमानदार सच्चे सदस्यों की आगे बढ़ कर काम करने की प्रवृत्ति को दबा रहा था। पावेल ने यह चीज़ ब्यूरो के सामने रखी और जब मीटिंग ने यह प्रस्ताव रखा कि राज़वालिखिन को कड़ाई से फटकार सुनाई जाय, तो पावेल ने उठ कर कहा :

"मैं प्रस्ताव करता हूँ कि उसको संगठन से निकाल दिया जाय और यह एक अन्तिम निश्चय हो जिसकी कहीं भी सुनवाई न हो।"

पावेल के इस प्रस्ताव से दूसरे लोग हैरत में आ गये। उनका खयाल था कि यह सज़ा परिस्थिति को देखते हुए ज़रूरत से ज़्यादा कड़ी है। मगर पावेल ने अपनी बात पर जोर दिया।

"उस बदमाश को निकाल देना ही चाहिए। उसे एक अच्छे इन्सान बनने के सारे मौक़े थे, मगर वह कोमसोमोल के अन्दर आज भी एक परदेसी बना हुआ है।" और पावेल ने ब्यूरो को बेरेज़दोव वाली घटना के बारे में बतलाया।

राज़वालिखिन ने चिल्ला कर कहा, "मैं इसका प्रतिवाद करता हूँ। कोर्चागिन व्यक्तिगत झगड़ों के आधार पर ऐसा कह रहा है। उसकी बात में कोई सार नहीं है। उससे कहिए कि अपने अभियोगों के समर्थन में तथ्य पेश करे, कागजात पेश करे। मान लीजिए मैं आपके पास आकर यह कहूँ कि कोर्चागिन चोरी से माल लाता-ले-जाता है तो क्या उसकी बिना पर आप कोर्चागिन को कोमसोमोल से निकाल देंगे? उसे लिखित प्रमाण देना चाहिए।"

कोर्चागिन ने जवाब दिया, " फ़िक्र न करो, मैं सारे जरूरी प्रमाण दूँगा।"

राजवालिखिन कमरे से बाहर चला गया। आध घंटे बाद पावेल ने ब्यूरो को अपनी बात समझा कर इस फ़ैसले के लिए राजी कर लिया था कि राजवालिखिन को कोमसोमोल से निकाल दिया जाय क्योंकि वह कोमसोमोल के भीतर एक विजातीय तत्व है।

गर्मी आई और उसके साथ गर्मी की छुट्टियाँ आईं। पावेल के साथ काम करने वाले एक के बाद दूसरे अपनी छुट्टियाँ बिताने चले गये। ये छुट्टियाँ पाने का उन्हें हक़ था क्योंकि उन्होंने अपने कठिन श्रम से उन्हें अर्जित किया था। जिन लोगों को स्वास्थ्य के खयाल से समुद्र-किनारे जाने की जरूरत थी, वे लोग वहाँ गये और पावेल ने उनको सेनेटोरियम में जगह और रुपये-पैसे दिलाने में उनकी मदद की। वे गये तो पीले और कुम्हलाये हुए थे, मगर छुट्टियों के खयाल से बड़े खुश थे। उनके काम का बोझ पावेल के कन्धों पर आ गया और पावेल ने बिना एक शब्द कहे इस अतिरिक्त बोझ को उठा लिया। कुछ समय बाद वे जीवन और उत्साह से भरकर और धूप में सिककर लौट आये और दूसरे लोग चले गये। गर्मी भर दफ्तर में काम करनेवालों की कमी रही। मगर उससे जीवन की तेज गति में कोई कमी नहीं पड़ी और पावेल एक दिन का भी काम छोड़ने की स्थिति में नहीं था।

गर्मी बीत गई। पावेल को इस खयाल से ही डर मालूम हो रहा था कि अब पतझड़ और उसके बाद जाड़ा आयेगा क्योंकि इन ऋतुओं में उसे बहुत शारीरिक यातना होती थी।

उस साल उसने विशेष उत्सुकता से गर्मी के आने की प्रतीक्षा की थी। क्योंकि चाहे उसे अपने तईं भी यह बात मानने में कितनी ही तकलीफ़ क्यों न होती हो, यह बात सही थी कि वह साल-ब-साल अपनी ताक़त को कम होते महसूस कर रहा था। उसके सामने सिर्फ दो रास्ते थे : या तो वह इस बात को मंजूर कर ले कि उतनी कड़ी मेहनत उसके लिए मुमकिन न थी और अपनी असमर्थता की घोषणा कर दे या जब तक दम-में-दम है, तब तक अपनी चौकी पर मुस्तैदी से जमा रहे। उसने यह बाद वाला रास्ता ही अख्तियार किया।

एक रोज पार्टी की एरिया कमिटी की ब्यूरो मीटिंग में डाक्टर बार्तेलिक उसके पास आकर बैठ गये। वह पार्टी के एक पुराने अंडरग्राउंड कार्यकर्ता थे जो इन दिनों पब्लिक हेल्थ के इंचार्ज थे।

" तुम काफ़ी कमजोर नजर आ रहे हो कोर्चागिन! तुम्हारी सेहत कैसी

है ? मेडिकल बोर्ड ने तुम्हारी जाँच की है ? नहीं ? मेरा भी यही खयाल था मगर दोस्त मैं तो समझता हूँ कि तुम्हें पूरी ओवरहालिंग की जरूरत है। बृहस्पति की शाम को चले आना, हम लोग तुम को देख लेंगे।"

पावेल नहीं गया। वह बहुत व्यस्त था। मगर बार्तेलिक उसे नहीं भूले और कुछ दिन बाद आकर पावेल को जाँच के लिए अपने साथ मेडिकल बोर्ड में ले गये। वहाँ वे न्यूरोपैथालॉजिस्ट की हैसियत से वह काम करते थे। मेडिकल बोर्ड ने पावेल की जाँच करके लिखा : "पावेल कोर्चागिन को फ़ौरन छुट्टी दी जानी चाहिए ताकि वह क्राइमिया जाकर रह सके और अपना इलाज काफ़ी दिनों तक करा सके। उसके बाद उसका बाक़ायदा इलाज होना चाहिए। अगर यह नहीं किया गया तो परिणाम भयंकर हो सकता है।"

मेडिकल बोर्ड की सिफ़ारिश में लेटिन जबान में जिन तमाम बीमारियों की लम्बी फ़ेहरिस्त थी, उनको देख पावेल की समझ में सिर्फ़ इतनी बात आई कि ख़ास बीमारी उसकी टाँगों में नहीं, बल्कि उसकी केन्द्रीय स्नायु व्यवस्था में है जो काफ़ी खराब हो गयी है।

बार्तेलिक ने बोर्ड का फ़ैसला ब्यूरो के सामने रखा और उनके इस प्रस्ताव का किसी ने विरोध नहीं किया कि कोर्चागिन को फ़ौरन काम से छुट्टी दे दी जाय। मगर खुद कोर्चागिन ने जरूर यह बात कही कि उसकी छुट्टी तब तक स्थगित रखी जाय जब तक कि संगठन विभाग का प्रधान स्वितनेव लौट नहीं आता। वह कमिटी को नेतृत्वहीन नहीं छोड़ना चाहता था। ब्यूरो ने उसकी बात मान ली गोकि बार्तेलिक ने इस देरी पर आपत्ति की।

और इस तरह अब तीन हफ्ते बाद पावेल छुट्टी पर चला जायगा जो कि उसकी ज़िन्दगी की पहली छुट्टी थी। योपेतोरिया के सेनेटोरियम में उसके लिए जगह रिजर्व कर दी गई थी और इस आशय का एक काग़ज़ उसकी मेज़ की दराज़ में पड़ा हुआ था।

इस बीच पावेल ने और भी तेजी से काम करना शुरू किया। उसने एरिया कोमसोमोल के सभी सदस्यों की एक मीटिंग की और अपने साथ बेदर्द होते हुए उसने इस बात की जी-जान से कोशिश की कि सभी बिखरे हुए सूत्रों को बटोर ले ताकि वह शान्ति से जा सके।

और उसके जाने के ठीक पहले, जब कि उसे समुद्र की पहली झलक मिलने वाली थी, एक बड़ी घृणित बात हुई जिस पर यों शायद वह विश्वास भी न करता।

उस दिन काम के बाद पावेल पार्टी के प्रचार आन्दोलन विभाग की एक

मीटिंग में गया हुआ था। जब वह पहुँचा तब कमरे में कोई नहीं था और इसलिए वह दूसरे लोगों के आने के इन्तजार में किताबों की आलमारी के पीछे खुली हुई खिड़की पर बैठा हुआ था। थोड़ी ही देर बाद कई लोग अन्दर आ गये। किताब की आलमारी के पीछे से वह उन्हें देख तो न सकता था, मगर एक आवाज पहचानी मालूम हुई। यह फ़ाइलो की आवाज थी। फ़ाइलो एरिया के अर्थविभाग का इंचार्ज था, लम्बा, खूबसूरत, फ़ौजी चाल-ढाल। शराब पीने और औरतों के पीछे भागने के लिए वह बदनाम था।

किसी जमाने में फ़ाइलो छापेमार रहा था और वह अब भी डींग हाँकने का कोई मौक़ा हाथ से जाने न देता था और बहुत हँस-हँस कर बतलाया करता था कि कैसे उसने माखनो डाकू के दर्जनों लोगों के सिर उड़ा दिये। पावेल को इस आदमी से सख़्त नफ़रत थी। एक रोज एक कोमसोमोल लड़की पावेल के पास रोती हुई आई और उसने बतलाया कि फ़ाइलो ने उसे शादी करने का वचन दिया था, मगर एक हफ्ते तक उसे अपने पास रख वह उसे छोड़ कर चला गया था और अब मुलाक़ात होने पर साधारण नमस्कार भी नहीं करता। जब यह मामला कंट्रोल कमीशन के सामने आया तो फ़ाइलो साफ़ बच कर निकल गया क्योंकि वह लड़की कोई प्रमाण न दे सकी। मगर पावेल को उसकी बात का विश्वास हो गया था। अब वह उन लोगों की बात सुन रहा था। वे लोग आपस में खुल कर बातें कर रहे थे और उन्हें पावेल की उपस्थिति का ज्ञान नहीं था।

"कहो फ़ाइलो, क्या हाल-चाल है? इधर तुमने कौन से नये गुल खिलाये?"

यह ग्रिबोव था, फ़ाइलो का लंगोटिया यार। किसी कारण से ग्रिबोव को अच्छा प्रचारक समझा जाता था गोकि वह बिलकुल अनपढ़, संकुचित दिमाग़ का और बेवकूफ़ आदमी था। मगर वह सब जो भी हो, ग्रिबोव को इस बात का गर्व था कि उसे प्रचार कार्यकर्ता कहा जाता है और वह हर मौक़े पर लोगों को इस बात की याद दिला ही देता।

"मुझे बधाई दो दोस्त। कल मैंने एक नई फ़तह की है—कोरोतायेवा की। तुम कहते थे कि कोई नतीजा न निकलेगा। यही तो तुम्हारी ग़लती है यार। जब मैं किसी औरत का पीछा करूँ तो अच्छी तरह समझ लिया करो कि आगे-पीछे मैं उसे जरूर हथिया लूँगा," फ़ाइलो ने घमंड से कहा और उसके साथ एक अश्लील बात कही।

पावेल के अन्दर जब कोई गहरी खलबली मचती तो उसका शरीर बुरी तरह काँपने लगता। इस वक़्त भी उसका यही हाल हो रहा था। कोरोतायेवा

महिलाओं के काम की देखभाल करती थी और उसके साथ ही एरिया कमिटी में आई थी। पावेल जानता था कि कोरोतायेवा एक खुशदिल, लगन वाली पार्टी कार्यकर्त्ता है जो उन औरतों के साथ सहानुभूति का बर्ताव करती है जो उसके पास मदद के लिए और सलाह-मशविरे के लिए आती हैं। पावेल यह भी जानता था कि कमिटी के दूसरे लोग उसको आदर की दृष्टि से देखते थे। पावेल जानता था कि उसकी शादी नहीं हुई है और उसे कोई शक नहीं रहा कि फ़ाइलो उसी की बात कर रहा है।

"सुनाओ फ़ाइलो यह कैसे हुआ! उस औरत के बारे में इस बात पर यक़ीन नहीं आता। लगता है तुम यों ही उड़ा रहे हो।"

"मैं उड़ा रहा हूँ? तुमने मुझे समझा क्या है? मैंने इससे भी बड़े-बड़े मार्के सर किये हैं, यह छोकरी किस खेत की मूली है! सारी बात यह है कि तुमको काम करने का ढंग आना चाहिए। हर लड़की के पास पहुँचने का अलग ढंग होता है और वही मालूम हो जाय तो मामला फ़तह समझो। उनमें से कुछ होती हैं जो फ़ौरन अपने-आपको दे डालती हैं। मगर ऐसी लड़कियाँ किसी काम की नहीं होतीं। कुछ होती हैं जिन्हें पटियाने में पूरा एक महीना लग जाता है। महत्त्व की बात यह है कि उनके मनोविज्ञान को समझ सकना चाहिए। कैसे उन पर हमला किया जाय, यही खास बात है। अरे यार यह तो पूरा विज्ञान है, मगर मैं भी तो आखिर उसका एक पंडित हूँ। सारा विज्ञान घोंके बैठा हूँ। हो-हो-हो।"

फ़ाइलो अपनी ही बात पर बेइन्तहा मगन हो रहा था। उसका श्रोता उसे कुरेद रहा था ताकि वह उसको और भी रसभरी तफसीलें सुनाये।

कोर्चागिन उठ खड़ा हुआ। उसने कस कर अपनी मुट्ठी बन्द कर ली। उसका दिल जोरों से धड़क रहा था।

"मैं जानता था कि साधारण चारे से कोरोतायेवा को पकड़ने की कोई उम्मीद न थी, मगर मैं इस शिकार को छोड़ना न चाहता था, खास कर इसलिए कि मैंने ग्रिबोव से इसी चीज के लिए शराब की एक दर्जन बोतलों की शर्त बदी थी। इसलिए मैंने अन्दरूनी दाँव-पेंच का इस्तेमाल किया। मैं उससे मिलने के लिए एक-दो बार गया, मगर मैंने देखा कि उस पर कोई खास असर नहीं पड़ रहा है। इसके अलावा एक मुसीबत यह भी तो है कि मेरे बारे में दुनिया भर की बातें कही जा रही हैं और उनमें से कुछ बातें उसके कानों में भी पहुँची ही होंगी....। संक्षेप में यह कि जब सीधा वार खाली गया, तो मैंने बग़ल से वार किया। हो-हो! बड़ा मजा आया उसमें! हाँ तो मैंने उसे अपनी करुण कहानी सुनाई कि कैसे

मैं मोर्चे पर लड़ा, दुनिया भर में भटका और ठोकरें खाईं, मगर मुझे अपने मन की स्त्री न मिली और मैं इसी तरह भटक रहा हूँ, एक अकेला आदमी जिसे कोई प्यार करने वाला नहीं···और इसी तरह की बहुत सी बकवास। देखते हो न, मैं उसके मर्म की कमजोर जगह पर चोट कर रहा था। यह तो मुझे मानना ही चाहिए कि उसे फँसाने में काफी मुश्किल हुई। एक वक़्त मैंने यह भी सोचा कि क्या रखा है इसमें, जाने भी दो साली को! मगर अब तो सिद्धान्त की बात आ गई थी और इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं मामले को यों ही अधूरा नहीं छोड़ सकता। कहने का मतलब कि आखिरकार मैंने उसे फतह कर ही लिया और जानते हो? वह कुमारी निकली, अक्षतयोनि कुमारी! हा-हा! बड़ा मजा आया!"

और इसी तरह फाइलो अपनी उस घिनौनी कहानी को सुनाता रहा।

पावेल गुस्से से उबलता हुआ फाइलो के बगल में जा पहुँचा था।

उसने गरज कर कहा, "सुअर!"

"ओह, मैं सुअर हूँ और तुम क्या हो जो चोरी-चोरी दूसरों की बातें सुनते हो?"

पावेल ने जरूर और भी कुछ कहा, क्योंकि फाइलो ने, जो होश में नहीं था, उसकी वर्दी को सामने से पकड़ लिया था।

"मेरा अपमान करने आये हो?" वह चीखा और पावेल पर घूँसा चलाया।

पावेल ने ओक की लकड़ी का बना हुआ एक भारी स्टूल उठा लिया और एक ही चोट में उसे ढेर कर दिया। फ़ाइलो क़िस्मत का धनी था कि उस समय पावेल के पास अपना रिवाल्वर नहीं था नहीं तो वह मर ही गया होता।

मगर वह अजीब बेसिर-पैर का कांड हो ही गया, निदान जिस दिन पावेल क्राइमिया के लिए रवाना होने वाला था, उस दिन वह पार्टी की अदालत के सामने खड़ा था।

पार्टी के सभी लोग कस्बे के थियेटर हॉल में इकट्ठा हो गये थे। इस घटना से सब लोगों के अन्दर बड़ी खलबली मच गई थी और मामले की सुनवाई पार्टी की नैतिकता, उसके आचार-विचार और व्यक्तिगत सम्बन्धों की एक गम्भीर बहस में तब्दील हो गई। इस मामले में जो सिद्धान्त की बातें निहित थीं, उनकी बहस के लिए इस मामले ने सिगनल का काम किया और खुद यह घटना गौण हो गई। फ़ाइलो ने बहुत ही उद्धत ढंग से आचरण किया, बड़ी दुष्टता से मुस्कराया और बोला कि इस मामले को जनता की अदालत के सामने

ले जायगा और कोर्चागिन को उसका सिर फोड़ने के जुर्म में कड़ी मशक्कत की सजा मिलेगी। उसने किसी भी सवाल का जवाब देने से साफ़ इनकार किया।

"तुम मुझे लेकर गप-शप का मसाला पाना चाहते हो? वह नहीं होने का। तुम मुझ पर चाहे जो भी अभियोग लगाओ, मगर सचाई यह है कि यहाँ की औरतें मुझसे खार खाये रहती हैं क्योंकि मैं उनको कुछ समझता ही नहीं। और तुम्हारा यह पूरा मामला तो बिलकुल फ़िजूल की बकवास है। अगर यह १९१८ होता तो मैंने अपने ही तरीक़े से इस पागल कोर्चागिन से अपना झगड़ा सुलझा लिया होता। और अब आप मेरे बिना भी काम चला सकते हैं," यह कहते हुए फाइलो हॉल से निकल गया।

तब चेयरमैन ने पावेल से घटना का विवरण देने के लिए कहा। पावेल ने काफ़ी शान्ति से आरम्भ किया गोकि अपने को संयत रखने में उसे काफ़ी कठिनाई हो रही थी।

"यह सारी घटना इसलिए हुई कि मैं अपने को वश में नहीं रख सका। मगर वे दिन कब के विदा हो गये जब कि मैं अपनी अक्ल की बनिस्बत अपने हाथों से ज़्यादा काम लिया करता था। इस बार जो चीज हुई है वह एक आकस्मिक घटना है। मुझे याद भी नहीं कि मैंने कब और कैसे फाइलो को मार कर गिरा दिया। पिछले कई वर्षों में यह मेरी पहली "छापेमार" कार्रवाई है जिसका मैं दोषी हूँ और जिसकी मैं खुद भी निन्दा करता हूँ, गोकि मैं समझता हूँ कि फाइलो की हरकत इसी के योग्य थी। फाइलो घृणित आदमी है। मैं कभी नहीं समझ सकता और मैं कभी इस बात का विश्वास नहीं करूँगा कि एक क्रान्तिकारी, एक कम्युनिस्ट ऐसा बदमाश और ज़ालिम जानवर भी हो सकता है। इस मामले ने सिर्फ़ एक अच्छी बात की है और वह यह है कि इसने हमारा ध्यान इस बात पर केन्द्रित कर दिया है कि हमारे सहयोगी कम्युनिस्ट कार्यकर्ता अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी में कैसा आचरण करते हैं।"

सदस्यों के एक विशाल बहुमत ने इस प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया कि फ़ाइलो को पार्टी से निकाल दिया जाय। ग्रिगोव को झूठी गवाही देने के जुर्म में कड़ी फटकार मिली और उसे चेतावनी दी गई कि अगर फिर उसने कोई जुर्म किया तो उसे पार्टी से निकाल दिया जायगा। बाक़ी लोगों ने, जो उस दिन की बातचीत में शरीक थे, अपनी ग़लती मान ली और उन्हें डाँट कर छोड़ दिया गया।

तब बार्तेलिक ने सभा को पावेल की स्नायविक स्थिति के बारे में बतलाया। और सभा ने कड़े शब्दों में अपना विरोध व्यक्त किया जब इस मामले की छानबीन के लिए पार्टी की ओर से नियुक्त साथी ने प्रस्ताव रखा कि कोर्चागिन को भी

चेतावनी दी जाय। उस साथी ने अपना प्रस्ताव वापिस ले लिया और पावेल निर्दोष घोषित करके रिहा कर दिया गया।

कुछ रोज बाद पावेल खारकोव के लिए रवाना हो गया। पार्टी की एरिया कमिटी ने आखिरकार उसका यह आग्रह मान लिया था कि उसे अपने मौजूदा काम से छुट्टी देकर उक्रेन के कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति के साथ लगा दिया जाय। अकिम भी केन्द्रीय समिति का एक मन्त्री था। खारकोव पहुँचते ही पावेल उससे मिलने गया और उसे पूरी कहानी सुनाई।

अकिम ने पावेल के सर्टिफिकेट पर नजर डाली। उसमें लिखा था कि वह "पार्टी में असीम श्रद्धा रखता है," मगर साथ ही यह भी लिखा था: "कुल मिला कर वह सन्तुलित बुद्धि का कार्यकर्ता है, मगर कभी-कभी अपना आत्म-संयम खो बैठता है। इसका कारण उसकी स्नायविक बीमारी है।"

अकिम ने कहा, "यह बात लिख कर उन्होंने एक अच्छे टेस्टीमोनियल को खराब कर दिया पावेल। मगर कोई बात नहीं दोस्त, ऐसी चीजें मजबूत से मजबूत आदमियों के साथ भी होती हैं। दक्षिण जाओ और अपनी सेहत बनाओ और जब तुम लौट आओगे तब हम तुम्हारे काम के बारे में बात करेंगे।"

अकिम ने दिल खोल कर बड़ी मुहब्बत से उससे हाथ मिलाया।

केन्द्रीय समिति का कम्युनार्ड सेनेटोरियम। गुलाब की झाड़ियों के बाग़ीचे के बीचोबीच सफ़ेद इमारतें जिन पर लताएँ चढ़ी हुई हैं, और चमकते हुए फ़व्वारे और वहाँ छुट्टियाँ बिताने के लिए आये हुए लोग गर्मी के सफ़ेद कपड़े और नहाने के चुस्त कपड़े पहने हुए। एक नौजवान डाक्टरनी ने उसका नाम रजिस्टर में दर्ज किया और वह कोने वाली इमारत के एक बड़े कमरे में पहुँच गया। हंस के पर जैसे सफ़ेद तकिए और बिस्तर की चादर, चारों ओर अत्यधिक स्वच्छता और शान्ति, पूर्ण शान्ति, कहीं कोई शोर-शराबा नहीं।

वह नहा कर ताजा हुआ और कपड़े बदल जल्दी-जल्दी समुद्र किनारे चला गया।

उसके सामने समुद्र फैला हुआ था, शान्त, अत्यन्त सुन्दर, शानदार मानो पॉलिश किये हुए संगमरमर का नीला-काला विस्तार दूर क्षितिज पर फैला हुआ हो। बहुत दूर पर, जहाँ समुद्र आकाश से मिलता था, नीला-सा कुहासा छाया

हुआ था और उसकी सतह पर सूरज की लाल-लाल चमक फैली हुई थी। सबेरे के उस कुहासे के बीच से एक पर्वत शृंखला की रूपरेखा धुँधली-धुँधली दिखाई दे रही थी। पावेल ने गहरी साँस लेकर ताज़ी समुद्री हवा को अपने फेफड़ों में भरा और उस नीले विस्तार की असीम शान्ति को निर्निमेष देखता रहा।

एक लहर धीरे-धीरे उसके पैरों तक आई और किनारे पर की सुनहली बालू को छू गई।

सोलहवाँ अध्याय

सेंट्रल पोलिक्लिनिक का बागीचा केन्द्रीय समिति के सेनेटोरियम के मैदान से लगा हुआ था; केन्द्रीय समिति के सेनेटोरियम के मरीज समुद्र-किनारे से घर लौटते हुए उस बागीचे में से होकर गुजरते थे क्योंकि उधर से आने से कम चलना पड़ता था। पावेल को एक बड़े से प्लेन के पेड़ की छाया में विश्राम करना बहुत अच्छा लगता था। यह पेड़ चूने के पत्थर की एक ऊँची दीवार के बगल में उगा हुआ था। अपनी इस शान्त जगह से वह बागीचे के रास्ते पर टहलते हुए लोगों को देख सकता था और शाम को बैण्ड का संगीत सुन सकता था; अपने उस कोने में बैठ कर, उस बड़े सेनेटोरियम के मस्त लोगों की भीड़ के धक्के बिना खाये हुए वह संगीत सुन सकता था।

आज भी वह अपनी चुनी हुई जगह पर पहुँच गया था। धूप और समुद्र में नहाने के कारण उसे नींद-सी मालूम हो रही थी और वह इतमीनान से आराम कुर्सी पर लेट गया और तन्द्रा में डूब गया। उसकी तौलिया और वह किताब, जो वह पढ़ रहा था, फुर्मानोव का 'विद्रोह', दोनों चीजें उसकी बग़ल में कुर्सी पर पड़ी हुई थीं। अभी सेनेटोरियम आने के अपने पहले दिनों में तो उसके स्नायुओं को कोई फायदा नहीं पहुँचा था और उसके सिर का दर्द अब भी बदस्तूर चल रहा था। सेनेटोरियम के डाक्टर अब तक उसकी बीमारी को समझ नहीं पा रहे थे और परेशान थे, मगर वे बीमारी की जड़ को पकड़ने की कोशिश जरूर कर रहे थे। बार-बार की डाक्टरी जाँच से पावेल परेशान था। उनसे उसको थकान मालूम होती थी और वह अपने वार्ड की डाक्टर से बचने की हर मुमकिन कोशिश करता था। उसके वार्ड की डाक्टर एक खुशदिल औरत थी; वह पार्टी मेम्बर थी और उसका अजीब-सा नाम था, येरूसालिम्चिक। अपने इस मरीज को खोज निकालने

मैं और उसे इस बात के लिए राजी करने में कि वह कभी एक विशेषज्ञ और कभी किसी दूसरे विशेषज्ञ के यहाँ चले, उसे बहुत कठिनाई होती थी।

पावेल उससे याचना के स्वर में कहता, "मैं तो इस चीज से तंग आ गया हूँ। दिन में पाँच बार मुझे वही कहानी दुहरानी पड़ती है और एक-से-एक बेहूदा सवालों का जवाब देना पड़ता है : क्या तुम्हारी दादी का दिमाग खराब था, क्या तुम्हारे परदादा को गठिया हुआ था? मुझे क्या मालूम कि उन्हें क्या हुआ था, क्या नहीं हुआ था? मैंने तो उन्हें देखा तक नहीं! हर डाक्टर मुझे बहलाने की कोशिश करता है कि मैं मान लूँ कि मुझे सूजाक या उससे भी कोई बुरी बीमारी हुई थी और ऐसे सवाल इतनी देर तक चलते रहते हैं कि मेरा जी होने लगता है कि उनके गंजे सिरों पर कस कर एक धौल जमा दूँ। मुझे आराम करने का मौका दो, मुझे किसी और चीज की जरूरत नहीं, बस आराम की जरूरत है। अगर पूरे छः हफ्ते, जब तक कि मुझे यहाँ रहना है, इसी तरह मेरा रोग-निदान चलता रहा तो मैं निश्चय ही समाज के लिए एक खतरा बन जाऊँगा।"

येरूसालिम्चिक हँसती और उसके साथ मजाक करती, मगर फिर कुछ मिनट बाद बड़ी नर्मी से उसकी बाँह पकड़ती और रास्ते भर बकबक करती हुई उसे सर्जन के पास ले जाती।

मगर आज कोई जाँच नहीं होनी थी और खाने में अभी घंटे भर की देर थी। तभी अपनी तन्द्रा की अवस्था में उसने पास आते कदमों की आहट सुनी। उसने आँखें नहीं खोली, "वे सोचेंगे कि मैं सो रहा हूँ और चले जायँगे," उसने अपने मन में कहा। मगर यह कोरी दुराशा थी! उसने अपने पास की कुर्सी का चरमराना सुना और कोई उस पर बैठा। उसे इत्र की हलकी-सी खुशबू मिली जिससे उसने समझ लिया कि यह कोई औरत है। उसने आँखें खोली। पहली चीज जो उसने देखी वह एक चमचमाती हुई सफेद पोशाक थी। उसके साथ ही उसने नर्म चमड़े की स्लीपर पहने हुए पैर देखे, फिर लड़कों की तरह के कटे हुए बाल, दो बड़ी-बड़ी आँखें और सफेद दाँतों की एक पंक्ति, वैसे दाँत जो चूहे के दाँतों जैसे तेज नजर आते थे। वह स्त्री उसे देख कर कुछ झेंपी और मुस्कराई।

"मेरे यहाँ रहने से आपके आराम में खलल तो नहीं पड़ रही है?"

पावेल ने कोई जवाब नहीं दिया। यह शिष्टाचार के खयाल से कोई अच्छी बात न थी, मगर अब भी पावेल को उम्मीद थी कि वह चली जायगी।

"यह क्या आपकी किताब है?" वह 'विद्रोह' के पन्ने पलट रही थी।

"जी हाँ, मेरी ही है।"

क्षण भर को शान्ति छा गई।

" कम्युनार्ड सेनेटोरियम में हैं न ? "

पावेल बेचैनी से हिला। यह कैसी औरत है कि खामखाह परेशान कर रही है ? वाह रे, यह तो खूब आराम हो रहा है। अभी देखना वह मेरी बीमारी के बारे में सवाल पूछने लग जायगी। कोई चारा नहीं, मुझे यहाँ से जाना ही होगा।

उसने रुखाई से जवाब दिया, " नहीं। "

" मेरा तो खयाल है मैंने आपको वहाँ देखा है। "

पावेल उटने ही वाला था कि उसे अपने पीछे किसी स्त्री की एक गहरी और अच्छी लगने वाली आवाज सुनाई दी।

" क्यों डोरा, तुम यहाँ क्या कर रही हो ? "

एक मोटी-ताजी, धूप से तपे हुए रंग की, सुनहरे बालों वाली लड़की समुद्र किनारे लेटने के कपड़े पहने हुए एक कुर्सी के छोर पर बैठ गई थी। उसने तेजी से कोर्चागिन पर निगाह डाली।

" मैंने तुमको कहीं देखा है कामरेड। तुम खारकोव के हो न ? "

" हाँ। "

" कहाँ काम करते हो ? "

पावेल ने इस बातचीत को खतम करने का फैसला किया।

उसने जवाब दिया, " कूड़े-करकट की सफाई के विभाग में। " उसके इस मजाक पर जो हँसी हुई उससे पावेल चौंक पड़ा।

" तुम्हें कोई यह दोष नहीं दे सकता कामरेड कि तुम जरूरत से ज़्यादा शिष्ट हो ! "

इसी तरह उनकी दोस्ती शुरू हुई। बाद में मालूम हुआ कि डोरा रादकिना खारकोव की पार्टी की शहर कमेटी ब्यूरो की मेम्बर थी और बाद में जब दोनों में दोस्ती हो गई, तो वह अक्सर अपनी पहली मुलाक़ात की इस मजेदार घटना को लेकर पावेल को चिढ़ाया करती।

एक रोज तीसरे पहर थलासा सेनेटोरियम के मैदान की खुली जगह में संगीत का एक आयोजन हुआ और वहाँ पर पावेल की अचानक अपने पुराने दोस्त जार्की से मुलाक़ात हो गई। और अजीब बात थी कि एक नाच के सिलसिले में उनकी मुलाक़ात हुई।

सबसे पहले एक अच्छी, खूबसूरत, भरे जिस्म की स्त्री ने अपनी पतली,

सुरीली और तेज आवाज में, वह दिलफ़रेब गाना 'आह, हमारी वो रंग-रंगीली मद-भरी रातें!' बड़े मार्मिक स्वर में श्रोताओं को सुनाया। उसके बाद एक स्त्री और पुरुष कूद कर स्टेज पर आ गये। पुरुष एकदम नंगा था, बस उसके सिर पर एक लाल टॉप हैट थी और कूल्हों पर कुछ चमकदार सलमा-सितारे, बदन पर एक चमकदार सफ़ेद कमीज का सामने का हिस्सा और गले में बो-टाई, और कुल मिला कर वह आदमी किसी हबशी की नक़ल मालूम हो रहा था। गुड़िये के-से चेहरे वाली उसकी संगिन ढेरों कपड़ों में लिपटी हुई थी। आराम कुर्सियों और खाटों पर सेनेटोरियम के मरीज बैठे थे और उनके पीछे मोटी-मोटी गर्दनों वाले नेपमेनों की भीड़ बेहद मगन होकर तरह-तरह की आवाजें कर रही थी और वह जोड़ा स्टेज पर फ़ाक्स-ट्रॉट की ताल पर चक्कर लगा-लगा कर नाच रहा था। इससे ज़्यादा घृणित दृश्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वह मोटा थुलथुल आदमी घामड़ की तरह टॉप हैट लगाये अपनी संगिन को कस कर अपने शरीर से चिपकाये ऐसी मुद्राओं में नाच रहा था जिनके अन्दर नंगे इशारे छिपे हुए थे। पावेल ने अपनी पीठ पीछे किसी मोटे थुलथुल आदमी की भारी साँस की एक गड़-गड़ाहट सुनी। वह जाने के लिए मुड़ा जब कि सामने की क़तार में बैठा हुआ कोई आदमी उठा और ज़ोर से चिल्लाया :

"यह वेश्यालयों का तमाशा बन्द करो! भाड़ में जाय!"

यह जार्की था।

पियानो बजाने वाले ने बजाना बन्द कर दिया और वायलिन एक पतली चीख़ की आवाज़ करके चुप हो गई। सामने स्टेज पर नाचते हुए जोड़े ने अपना वह नाच बन्द कर दिया जिसे देख कर नर-मादा कीड़ों की किलबिल का आभास मिलता था। पीछे खड़ी हुई भीड़ ने मार-पीट पर उतारू ढंग से शोर मचाना शुरू किया।

"कैसी बदतमीज़ी है, बीच में लेकर नाच को रोक दिया!"

"सारा योरप नाच रहा है, एक इन्हीं को ....।"

"हद हो गई बदतमीज़ी की!"

मगर सर्योजा ज़बानोव ने, जो चेरेपोवेत्स कोमसोमोल का मन्त्री था और कम्युनार्ड सेनेटोरियम में रहता था, अपनी चार उँगलियाँ मुँह में डाली और ज़ोर से सीटी बजाई। दूसरों ने भी उसका अनुकरण किया और देखते देखते वे दोनों नाचने वाले स्टेज से ऐसे ग़ायब हो गये जैसे हवा उन्हें उड़ा ले गई हो। नाचने वाली मंडली के खुशामदी सरदार ने, जो देखने में अर्दली मालूम होता था, ऐलान किया कि मंडली जा रही है।

" चलो ग़लाज़त मिटी, पाप कटा ! " एक लड़के ने, जो सेनेटोरियम के नहाने के कपड़े पहने हुए था, चिल्ला कर कहा और सब लोग उसकी बात सुन हँसने लगे।

पावेल सामने की क़तारों में पहुँचा और वहाँ जार्की से उसकी मुलाक़ात हुई। दोनों दोस्तों में बड़ी देर तक पावेल के कमरे में बातचीत होती रही। जार्की ने पावेल को बतलाया कि वह पार्टी की एक एरिया कमिटी के प्रचार-आन्दोलन विभाग में काम कर रहा है।

जार्की ने कहा, " तुम्हें पता था या नहीं कि मेरी शादी हो गई ? जल्दी ही मेरी बीवी को बच्चा होने वाला है, पता नहीं लड़का है कि लड़की।"

पावेल ने आश्चर्य से कहा, " शादी हो गई ? किससे ? "

जार्की ने अपनी जेब से एक फोटो निकाली और पावेल को दिखाई।

" पहचानते हो ? "

यह उसकी और आना बोर्हार्ट की फोटो थी।

" और दुबावा का क्या हुआ ? " पावेल ने और भी आश्चर्य से पूछा।

" वह मास्को में है। पार्टी से निकाले जाने के बाद उसने यूनीवर्सिटी छोड़ दी। अब वह बाउमान टेकनिकल इन्स्टीच्यूट में है। मैंने सुना है कि उसे फिर पार्टी में ले लिया गया। अगर यह खबर सही है तो कहना होगा कि बहुत बुरा हुआ। वह तो ऊपर से नीचे तक एकदम सड़ गया था''''जानते हो, पांक्रातोव क्या कर रहा है ? वह एक शिपयार्ड का सहायक डाइरेक्टर है। दूसरों के बारे में मुझे कुछ खास नहीं मालूम। इधर हम लोगों का सम्बन्ध टूट-सा गया है। हम सब देश के अलग-अलग कोनों में काम करते हैं। मगर कभी-कभी इस तरह मिल लेने और पुराने दिनों की याद कर लेने से बहुत अच्छा मालूम होता है। "

डोरा अन्दर आई और अपने साथ और भी कई लोगों को लाई। उसने जार्की के जाकेट पर लगे हुए तमग़े को देखा और पावेल से पूछा :

" क्या तुम्हारे यह साथी पार्टी मेम्बर हैं ? कहाँ काम करते हैं ? "

पावेल को कुछ हैरानी हुई, मगर उसने संक्षेप में उस लड़की को जार्की के बारे में बतलाया।

लड़की ने कहा, " अच्छा, तब इनके रहने में कोई बुराई नहीं है। यह साथी अभी-अभी मास्को से आये हैं। यह हमको पार्टी की ताजी खबरें सुनायेंगे। हमने तय किया है कि तुम्हारे कमरे में चल कर एक छोटी-सी पार्टी मीटिंग की जाय, " उसने बात साफ़ की।

पावेल और जार्की को छोड़ बाकी वे सब पुराने बोल्शेविक थे। बार्तोशेव

ने, जो मास्को कन्ट्रोल कमीशन का मेम्बर था, उन लोगों को उस नये विरोधी दल की बात बतलाई जिसके नेता ट्रॉत्स्की, जिनोवियेव और कामेनेव थे।

बार्ताशेव ने अपनी बात खतम करते हुए कहा, "ऐसे संगीन मौके पर हम सबको अपनी-अपनी जगह पर होना चाहिए। मैं कल यहाँ से जा रहा हूँ।"

पावेल के कमरे की इस मीटिंग के तीन दिन बाद सेनेटोरियम एकदम खाली हो गया। पावेल भी कुछ ही रोज़ बाद अपना वक़्त खतम होने के पहले ही वहाँ से चला गया।

कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति ने उसको अपने पास नहीं रोका। उसे कोमसोमोल का मन्त्री बना कर एक औद्योगिक इलाके में भेज दिया गया और हफ्ते भर के अन्दर ही वह फिर अपने स्थानीय संगठन की एक मीटिंग में बोल रहा था।

उसी पतझड़ के आखिरी दिनों में वह मोटर, जिसमें पावेल तथा दो और पार्टी कार्यकर्ता दूर के एक देहात जा रहे थे, एक खाई में जा गिरी और उलट गई।

मोटर में बैठे हुए सभी लोगों को चोटें लगीं। पावेल का दाहिना घुटना पिस गया था। कुछ दिन बाद उसे खारकोव के सर्जिकल इन्स्टीच्यूट में ले जाया गया। जाँच के बाद और ज़ख्मी घुटने को एक्सरे करके मेडिकल बोर्ड ने राय दी कि फ़ौरन ऑपरेशन होना चाहिए।

पावेल ने स्वीकृति दे दी।

"तो फिर कल सवेरे," उस मोटे प्रोफ़ेसर ने कहा जो बोर्ड का प्रधान था। वह उठा और बाक़ी लोग भी उसके पीछे-पीछे चले गये।

एक छोटा खूब रोशनीदार वार्ड था जिसमें सिर्फ एक खाट पड़ी थी। खूब ही सफ़ाई थी और अस्पताल की वह खास गन्ध थी जिसे वह बहुत दिनों से भूला हुआ था। उसने आसपास निगाह डाली। खाट की बग़ल में एक छोटी मेज़ थी जिस पर बर्फ जैसा सफेद मेज़पोश पड़ा हुआ था और उसके पास ही सफेद रोग़न से पुता हुआ एक स्टूल था। और बस।

नर्स उसका खाना लाई। पावेल ने उसे लौटा दिया। अपने बिस्तर पर बैठ कर वह चिट्ठियाँ लिख रहा था। उसके घुटने का दर्द उसके विचार क्रम को भंग कर रहा था और इसी दर्द के कारण उसकी भूख भी ग़ायब हो गई थी।

उसने अपनी चौथी चिट्ठी लिख ली थी, तभी दरवाज़ा धीरे से खुला और सफेद साया पहने और टोपी लगाये एक युवती उसके बिस्तर के पास आई।

उस धुंधलके में पावेल ने उसकी नाजुक भवों और बड़ी-बड़ी आँखों को

देखा जो काली नज़र आ रही थीं। उसके एक हाथ में एक चमड़े का बैग था और दूसरे में एक पन्ना कागज और एक पेनसिल।

युवती ने कहा, "मैं तुम्हारे वार्ड की डाक्टर हूँ। अब मैं तुमसे बहुत से सवाल पूछूँगी और तुम्हें अच्छा लगे चाहे न लगे, मुझको अपने बारे में सब कुछ बतलाना होगा।"

बड़े प्यारे ढंग से वह मुस्कराई और उसकी मुस्कराहट से पावेल के मन से आनेवाली 'जिरह' का डर टूट गया। करीब एक हफ़्ते तक पावेल उसको न सिर्फ अपने बारे में, बल्कि कई पुश्त पीछे तक के अपने तमाम रिश्तेदारों के बारे में बतलाता रहा।

ऑपरेशन थियेटर। लोग नाक पर और मुँह पर बारीक जालियाँ लगाये हुए थे। चमचमाते हुए निकेल के औज़ार, एक लम्बी सँकरी-सी मेज, जिसके नीचे एक बड़ी-सी चिलमची रखी थी।

प्रोफेसर अभी हाथ धो रहा था जब कि पावेल आपरेशन टेबुल पर लेट गया। उसकी पीठ पीछे ऑपरेशन की तैयारियाँ जल्दी-जल्दी की जा रही थीं। उसने उधर को अपना सिर घुमाया। नर्स ऑपरेशन के तमाम औज़ार, नश्तर के चाकू और चिमटियाँ वगैरह निकाल कर रख रही थी।

"इधर मत देखो कामरेड कोर्चागिन," उसकी वार्ड डाक्टर बाज़ानोवा ने उसकी टाँग की पट्टी खोलते हुए कहा," "यह स्नायुओं के लिए अच्छा नहीं पड़ता, खामखाह घबराहट मालूम होने लगती है।"

"किसके स्नायु और कैसी घबराहट, डाक्टर?" पावेल ने मज़ाक के ढंग से मुस्कराते हुए पूछा।

कुछ मिनट बाद उसके चेहरे पर एक भारी मास्क लगा दिया गया और उसने प्रोफेसर साहब की आवाज़ को कहते सुना :

"हम तुम्हें क्लोरोफ़ार्म देने जा रहे हैं। नाक से लम्बी सांस लो और गिनती गिनना शुरू करो।"

"बहुत अच्छा," मास्क के भीतर से एक घुटी हुई शान्त आवाज़ ने जवाब दिया, "बेहोशी की हालत में अगर मैं कोई बहुत भद्दी बात बोल दूँ तो मैं नहीं जानता। मैं पहले से ही उसके लिए माफी मांग लेता हूँ।"

प्रोफेसर बरबस मुस्करा पड़ा।

क्लोरोफार्म की पहली बूंदें। वह दम घोंटनेवाली, घिनावनी गन्ध।

पावेल ने लम्बी सांस ली और जोर लगा कर साफ-साफ बोलते हुए गिनती गिनना शुरू किया। उसके जीवन के दुखान्त नाटक के पहले अंक का पर्दा उठ गया था।

आर्तेम ने लिफ़ाफ़ा फाड़ा और चिट्ठी की परतें खोलीं। पहली कुछ पंक्तियों पर उसने जोर से आँख गड़ाई और बाकी चिट्ठी को जल्दी-जल्दी पढ़ गया।

"आर्तेम! हम लोग एक-दूसरे को कितनी कम चिट्ठियाँ लिखते हैं, साल में मुश्किल से एक-दो बार! मगर कितनी बार लिखते हैं, यह तो मेरी समझ में कोई बड़ी अहम बात नहीं है। तुमने लिखा है कि तुम अपने परिवार को लेकर शेपेतोवका से कजातिन के रेलवे यार्ड में पहुँच गये हो, क्योंकि तुम देहात से अपना सम्बन्ध काटना चाहते हो, वहाँ की ज़मीन से अपनी जड़ों को उखाड़ना चाहते हो। मैं जानता हूँ कि असल में वे जड़ें स्त्योशा और उसके सम्बन्धियों की पिछड़ी हुई, निम्न-पूँजीवादी मनोवृत्ति में हैं। स्त्योशा की तरह के लोगों का पुनर्निर्माण कठिन काम है और मुझे आशंका है कि तुम इसमें भी सफल नहीं होगे। तुमने लिखा है कि अब इस बुढ़ापे में तुम्हें अध्ययन करने में काफ़ी कठिनाई हो रही है, मगर मैं तो सोचता हूँ कि तुम्हारी प्रगति बुरी नहीं है। तुम जो कारख़ाने को छोड़ शहर की सोवियत के चेयरमैन का काम सम्भालने से बराबर इनकार करते जा रहे हो, यह बात ठीक नहीं है। बतलाओ कि क्या तुम इसी मज़दूर राज के लिए लड़े थे या नहीं? तब फिर अब उसे अपने हाथ में क्यों नहीं लेते! कल ही तुम शहर की सोवियत का काम अपने हाथ में ले लो और जुट जाओ!

"अब मैं तुम्हें अपने बारे में बतलाऊँ। मेरे साथ कोई बड़ी गड़-बड़ी हो गई है। मैं बार-बार अस्पताल पहुँचने लगा हूँ। दो बार मेरा ऑपरेशन हो चुका है, काफ़ी खून भी गया है और ताक़त भी और कुछ पता नहीं चलता कि यह चीज़ कब खतम होगी।

"मैं अपने काम से अलग पड़ गया हूँ और अब एक नया ही धन्धा मैंने अपना लिया है और वह धन्धा यह है कि मैं मरीज़ हूँ। मुझे बहुत दर्द सहना पड़ता है और कुल मिला कर इस सब का नतीजा यह है कि मैं अपने दाहिने घुटने को हिला भी नहीं सकता, मेरे शरीर के तमाम अंगों में नश्तर के तमाम घावों के निशान हैं और उसके बाद यह ताज़ी डॉक्टरी

खोज सुनने को मिली है : सात बरस पहले मेरी रीढ़ की हड्डी में चोट लगी थी और अब उन लोगों का कहना है कि यह चोट मेरे लिए बहुत महँगी पड़ सकती है। मगर मैं कुछ भी सहने के लिए तैयार हूँ बशर्ते कि मैं फिर लौट कर अपने मोर्चे पर पहुँच सकूँ।

" ज़िन्दगी में मेरे लिए इससे ज़्यादा भयानक बात कोई नहीं है कि मैं अपनी फ़ौज से कट कर अलग जा पड़ूँ। यह एक ऐसी सम्भावना है जिस पर विचार करने के लिए भी मैं कभी तैयार नहीं हो सकता। और इसलिए वे लोग मेरे साथ जो कुछ भी करना चाहते हैं, मैं सब कुछ उन्हें करने देता हूँ। मगर मेरी हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा है और बादल रोज-ब-रोज और भी काले, और भी घने होते जा रहे हैं। पहले आपरेशन के बाद मैं जैसे ही चलने-फिरने के क़ाबिल हुआ, फ़ौरन अपने काम पर वापिस पहुँच गया। मगर कुछ ही दिन बाद वे लोग फिर मुझे यहाँ ले आये। अब मुझे योपेतोरिया के एक सेनेटोरियम में भेजा जा रहा है। मैं कल यहाँ से चला जाऊँगा। मगर उदास मत हो आर्तेम, तुम जानते हो कि मैं जल्दी हार मानने वाला आसामी नहीं हूँ। मुझ में तीन आदमियों के बराबर प्राण-शक्ति है। मेरे भाई, अभी तुमको और मुझको बहुत काम करना है। अब तुम अपनी सेहत की फ़िक्र करो, बूते से बाहर अपनी ताक़त को खर्च न करो क्योंकि सेहत की मरम्मत की भारी क़ीमत पार्टी को चुकानी पड़ती है। वह सारा तजुर्बा जो हमें काम के दौरान में मिलता है, और ज्ञान जो हमें अध्ययन से मिलता है, बड़ी अनमोल चीजें हैं और उन्हें इस तरह अस्पताल में बन्द रह कर बर्बाद नहीं किया जा सकता। प्यार के साथ ..... " *पावेल* "

जिस वक्त आर्तेम, माथे पर झुर्रियाँ डाले अपने भाई का खत पढ़ रहा था, पावेल अस्पताल में डॉक्टर बाजानोवा से विदा हो रहा था।

युवती ने पावेल के हाथ में अपना हाथ देते हुए कहा, " तो कल तुम क्राइमिया के लिए रवाना हो जाओगे ? बाक़ी दिन भर तुम्हें क्या करना है ? "

पावेल ने जवाब दिया, " कामरेड रादकिना थोड़ी देर में यहाँ आने वाली हैं। वह मुझे अपने परिवारवालों से मिलाने के लिए अपने घर ले जायँगी। रात में वहीं गुज़ारूँगा और कल वही मुझे स्टेशन ले जायँगी। "

बाज़ानोवा डोरा को जानती थी क्योंकि वह पावेल से मिलने कई बार अस्पताल में आई थी।

" मगर कामरेड कोर्चागिन, क्या तुम अपने वादे को भूल गये कि जाने से पहले एक बार मेरे पिता से मिलोगे ? मैंने उनको तुम्हारी बीमारी के बारे में विस्तार से बताया है और मैं चाहती हूँ कि वह एक बार तुम्हारी जाँच कर लें। क्या आज शाम को नहीं हो सकता ? "

पावेल ने फ़ौरन उसकी बात मान ली।

उसी शाम को बाज़ानोवा पावेल को अपने पिता के बड़े और साफ़ सुथरे दफ़्तर में ले गई।

उस मशहूर सर्जन ने बड़ी सावधानी से पावेल की जाँच की। उनकी बेटी क्लिनिक से पावेल के एक्सरे की तमाम तसवीरें और रिपोर्ट लेती आई थी। पावेल ने भी लक्ष्य किया कि जब बाज़ानोवा के पिता ने लैटिन में कोई बात कही, तो उसका चेहरा अचानक पीला पड़ गया। पावेल ने अपने ऊपर झुके हुए प्रोफ़ेसर के बड़े गंजे सिर को बहुत ग़ौर से देखा और उनकी तेज़ आँखों में अपने सवाल का जवाब ढूँढ़ने की कोशिश की। मगर बाज़ानोवा के चेहरे के भाव से उसे कुछ पता न चल सका।

पावेल ने कपड़े पहन लिये तो प्रोफ़ेसर ने बड़ी आजिज़ी से उससे छुट्टी ली और बतलाया कि उन्हें एक सम्मेलन में जाना है और अपनी जाँच का नतीजा पावेल को बतलाने का काम अपनी लड़की पर छोड़ दिया।

पावेल बाज़ानोवा के ख़ूबसूरती से सजे हुए कमरे में कोच पर लेटा हुआ डॉक्टरनी के बोलने का इन्तज़ार कर रहा था। मगर बाज़ानोवा की समझ में नहीं आ रहा था कि बात को कैसे शुरू करे। उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि उसके पिता ने जो कुछ उसे बतलाया था, उसको दुहरा दे—कि दवाइयाँ अब तक पावेल के शरीर में होने वाली घातक सूजन की रोक-थाम नहीं कर सकी थीं। प्रोफ़ेसर साहब ऑपरेशन के हक में नहीं थे। " इस नौजवान को लकवे का ख़तरा है और इस दुखदाई बात को रोकना हमारी ताक़त के बाहर है। "

न तो डाक्टर की हैसियत से और न दोस्त की हैसियत से ही उसने पूरी बात पावेल को बतलाना ठीक समझा। इसलिए थोड़े से शब्दों में उसने पावेल को सचाई का एक अंश ही बतलाया।

" मुझे यक़ीन है कामरेड कोर्चागिन कि योपेतोरिया की गीली मिट्टी से तुम्हें फ़ायदा होगा और पतझड़ आते-आते तुम वापिस अपने काम पर पहुँच सकोगे। "

मगर वह भूल गई थी कि पावेल की तेज़ आँखें उसे पूरे वक़्त ग़ौर से देख रही थीं।

" तुम जो कुछ कह रही हो, बल्कि यों कहूँ कि जो कुछ तुमने नहीं कहा है, उससे मैं समझ रहा हूँ कि मेरी हालत संगीन है। याद करो मैंने तुम से कहा था कि मुझे खोल कर पूरी बात बतला दिया करना। मुझसे कुछ छिपाने की जरूरत नहीं है, मैं बेहोश न हो जाऊँगा और न अपना गला ही काटने की कोशिश करूँगा। मगर यह मैं जरूर जानना चाहता हूँ कि मुझे आगे अभी और क्या भुगतना है।"

बाज़ानोवा जी को खुश करने वाली दिल्लगी की बात कह कर सीधे जवाब को बचा गई और पावेल को उस रात सच्ची बात नहीं मालूम हो सकी।

विदा होते समय डाक्टर ने धीमे से कहा, " मेरी दोस्ती को मत भूल जाना, कामरेड कोर्चागिन। कौन जाने हमारे लिए जिन्दगी में कब क्या होना है। अगर कभी तुम्हें मेरी मदद या मेरे सलाह-मशविरे की जरूरत पड़े तो मुझे लिखना। मैं जो कुछ भी तुम्हारे लिए कर सकूँगी, जरूर करूँगी।"

खिड़की में से उसने उस लम्बी, चमड़े का कोट पहनी हुई, आकृति को छड़ी का सहारा लेकर बहुत दर्द के साथ दरवाजे से बस तक जाते देखा जो उसका इन्तजार करती खड़ी थी।

एक बार फिर योपेतोरिया की गरम दक्खिनी धूप। धूप से संवलाये हुए, शोर मचाते लोग, बेल-बूटेदार टोपियाँ लगाये हुए। मोटर का दस मिनट का सफ़र नये आने वालों को चूने के पत्थर की बनी एक दुमंजिला भूरी इमारत पर ले आया—यह माइनाक सेनेटोरियम था।

ड्यूटी पर तैनात डाक्टर को जब यह मालूम हुआ कि पावेल के रहने की जगह उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने रिजर्व की है, तो वह उसे ग्यारह नम्बर के कमरे में ले गया।

" मैं तुम्हें कामरेड एबनर के साथ रखूँगा। वह जर्मन हैं और उन्होंने अपने कमरे में एक रूसी साथी की माँग की थी," डाक्टर ने दरवाजे पर दस्तक देते हुए बतलाया। भीतर से किसी जर्मन के बोलने की आवाज सुनाई दी, " आ जाओ।"

पावेल ने अपना सफ़री थैला रख दिया और उस सुनहले बालों और चमकती हुई नीली आँखों वाले आदमी की तरफ़ मुड़ा जो बिस्तर पर लेटा हुआ था। उस जर्मन ने मुहब्बत-भरी मुस्कराहट से उसका स्वागत किया।

जर्मन ने पहले अपनी भाषा में उसका अभिवादन किया, मगर फिर अपने को सुधारते हुए रूसी में कहा, " दिन मुबारक हो, " और अपनी लम्बी-लम्बी उँगलियों वाला पीला हाथ पावेल की तरफ़ बढ़ाया।

कुछ क्षण बाद पावेल उसके बिस्तर के पास बैठा हुआ था और दोनों " अन्तर्राष्ट्रीय भाषा " में घुट घुट कर बातें कर रहे थे, उस भाषा में जिसमें शब्दों का महत्त्व गौण होता है और कल्पना, मुद्राएँ और संकेत—अलिखित भाषा के वे सारे माध्यम—शब्दों की कमी को पूरा करते हैं।

पावेल को मालूम हुआ कि एबनर एक जर्मन मजदूर था जिसे १९२३ के हाम्बुर्ग विद्रोह में कूल्हे पर चोट लगी थी। वह पुराना जख्म फिर खुल गया था और इसीलिए वह बिस्तर पकड़ने पर मजबूर हुआ था। वह प्रसन्न चित्त से अपनी सारी यातनाओं को सह रहा था और इसीलिए तत्काल पावेल का मन उसके लिए आदर से भर उठा।

उससे अच्छे साथी की आकांक्षा पावेल नहीं कर सकता था। सबसे अच्छी बात उसमें यही थी कि सुबह से लेकर रात तक वह अपनी तकलीफ़ों और बीमारियों का दुखड़ा न रोयेगा। इसके विपरीत, उसकी संगत में आदमी खुद अपनी तकलीफ को भूल जा सकता था।

" मगर कितनी बुरी बात है कि मुझे जर्मन नहीं आती," पावेल ने खिन्न होते हुए सोचा।

सेनेटोरियम के मैदान के एक कोने में कुछ " भूलने वाली कुर्सियाँ, " बाँस की एक मेज और दो लम्बी आराम कुर्सियाँ रखी हुई थीं। इसी जगह पर ये पाँच मरीज, जिन्हें बाकी लोग " कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कार्यकारिणी " के नाम से पुकारते थे, दिन के इलाज के बाद आकर अपना समय गुजारा करते थे।

एबनर आराम कुर्सी पर अधलेटा पड़ा था। पावेल भी, जिसे टहलने की मुमानियत थी, दूसरी कुर्सी पर लेटा हुआ था। इनके अलावा उस टोली के बाक़ी तीन सदस्य ये लोग थे : वाइमान, जो एस्तोनिया का रहने वाला एक मोटा-तगड़ा मजदूर था, और वाणिज्य-व्यापार की कमसारियट में काम करता था; मार्ता लॉरिन, जो एक नौजवान, भूरी आँखों की, लताविया की रहने वाली स्त्री थी और देखने में अठारह साल की लड़की मालूम होती थी; और लम्बा-तगड़ा साइबेरियन लेदेनेव, जिसकी कनपटी के बाल पक चले थे। इस छोटी-सी टोली में वस्तुतः पाँच भिन्न जातियों के प्रतिनिधि थे—जर्मन, एस्तोनियन, लतावियन, रूसी और उक्रेनियन। मार्ता और वाइमान जर्मन जबान बोलते थे और एबनर उनसे दुभाषिये का काम लेता था। पावेल और एबनर दोस्त थे क्योंकि दोनों एक ही

कमरे में रहते थे; मार्ता, वाइमान और एबनर भी दोस्त थे क्योंकि उनकी जबान एक थी। लेदेनेव और कोर्चागिन के बीच दोस्ती का आधार शतरंज थी।

लेदेनेव के आने से पहले कोर्चागिन सेनेटोरियम में शतरंज का चैम्पियन था। उसने बड़ी कठिन लड़ाई के बाद वाइमान से यह पद जीता था। अपनी हार से उस मोटे एस्तोनियन को काफ़ी धक्का-सा लगा था और बहुत दिन तक वह कोर्चागिन को इस बात के लिए माफ़ नहीं कर सका कि उसने उसको हराया था। मगर एक रोज़ एक लम्बा आदमी सेनेटोरियम में आया जो अपनी पचास बरस की उम्र को देखते हुए बहुत ही नौजवान नज़र आता था और उसने कोर्चागिन से शतरंज की एक बाज़ी खेलने के लिए कहा। पावेल को इस बात का कोई गुमान नहीं था कि कैसे खिलाड़ी से उसका पाला पड़ा है, इसलिए उसने बड़े इतमीनान से एक ऐसी चाल चली जिससे ज़ाहिरा तो उसका वज़ीर कट जाता था, मगर दूसरे खिलाड़ी की मात हो जाती थी। लेदेनेव मँजा खिलाड़ी था, इसलिए वह मज़े में चाल समझ गया और उसका जवाब उसने बीच के पैदलों को आगे बढ़ा कर दिया। चैम्पियन की हैसियत से पावेल को हर नये आने वाले के साथ बाज़ी खेलनी पड़ती थी और खेल में दिलचस्पी रखने वाले बहुत से दर्शक शतरंज की बिसात के इर्द-गिर्द खड़े हो जाते थे। नवीं चाल के बाद पावेल ने महसूस किया कि उसका विरोधी बराबर अपने पैदलों को आगे बढ़ाता हुआ उसके खेल को अपंग करके रखे दे रहा है। अब पावेल की समझ में आया कि खतरनाक खिलाड़ी से उसका पाला पड़ा था और उसे मन में दुख होने लगा कि क्यों वह शुरू में इतनी लापरवाही से खेला।

तीन घंटे तक उनकी लड़ाई चली और इस बीच पावेल ने पूरा ज़ोर लगाया। आख़िरकार उसे हार माननी पड़ी। दर्शकों के बहुत पहले ही उसने इस बात को देख लिया था कि उसकी हार लाज़मी है। उसने अपने विरोधी की ओर नज़र उठाई और देखा कि लेदेनेव विजेता-सुलभ मुस्कराहट से उसकी ओर देख रहा है। स्पष्ट था कि उसने भी देख लिया था कि बाज़ी का क्या अन्त होने वाला है। वह एस्तोनियन भी खेल देख रहा था जिसे पावेल ने हराया था। वह बड़े ग़ौर से खेल को देख रहा था और अपनी इस ख्वाहिश को छिपा भी नहीं रहा था कि कोर्चागिन हार जाय। मगर अभी उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऊँट किस करवट बैठने वाला है।

"मैं हमेशा अपने आख़िरी पैदल तक खेल खेलता हूँ और हार नहीं मानता," पावेल ने कहा और लेदेनेव ने उसका समर्थन करते हुए अपना सिर हिलाया।

पाँच दिन में पावेल लेदेनेव से दस बाजी खेला जिनमें से सात वह हारा, दो जीता और एक में बाजी बराबरी पर छूट गई।

वाइमान बहुत खुश था।

"शुक्रिया, शुक्रिया कामरेड लेदेनेव! उसकी तुमने अच्छी मरम्मत की! उसको इसी की जरूरत थी! उसने हम सब पुराने खिलाड़ियों को हरा कर नाक में दम कर दिया था और आखिरकार उसे एक पुराने खिलाड़ी से हार खानी ही पड़ी। हा···हा!"

पहले के विजयी और अब के हारे हुए पावेल को चिढ़ाते हुए उसने कहा, "कहो, हारने में कैसा लगता है?"

लेदेनेव के आने से पावेल का चैम्पियन का पद तो छिन गया, मगर उसे एक दोस्त जरूर मिल गया जो आगे चल कर उसके लिए बहुत अनमोल साबित हुआ। अब उसकी समझ में आया कि शतरंज में उसकी हार स्वाभाविक ही थी। शतरंज के दांव-पेंच की उसकी जानकारी बहुत उथली थी। और उसने एक ऐसे खिलाड़ी के हाथ हार खाई थी जिसे खेल के सारे राज, खेल के दांव-पेंच का पूरा रहस्य मालूम था।

कोर्चागिन और लेदेनेव को पता चला कि उनकी जिन्दगी में एक तारीख समान थी : पावेल जिस साल पैदा हुआ था, उसी साल लेदेनेव पार्टी में दाखिल हुआ था। दोनों अपनी-अपनी जगह पुराने और नये बोल्शेविकों के ठेठ प्रतिनिधि थे। एक के पीछे गहरे राजनीतिक कामों की, हलचलों की लम्बी जिन्दगी थी, अंडरग्राउंड आन्दोलन में छिप छिप कर कई साल का काम और जारशाही की कैदें और उन सबके बाद महत्त्व का सरकारी काम; दूसरे के पीछे थी उसकी जलती हुई जवानी और सिर्फ़ आठ साल का संघर्ष। मगर ये आठ साल ऐसे थे जो एक पूरी जिन्दगी को जला कर खाक कर देने के लिए काफ़ी थे। और ये दोनों, जिनमें से एक बूढ़ा था और एक नौजवान, जिन्दगी से बेहद प्यार करते थे, मगर उनकी तन्दुरुस्ती टूटी हुई थी।

शाम के वक़्त एवनर और कोर्चागिन का कमरा क्लब जैसा बन जाता था। सारी राजनीतिक खबरें यहीं से शुरू होती थीं। कमरा क़हक़हों और बातचीत से गूँजता रहता। वाइमान अक्सर बातचीत में छोटा-मोटा गन्दा लतीफ़ा घुसेड़ने की कोशिश करता। मगर हमेशा दो तरफ़ से उसके ऊपर हमला होता, मार्ता की तरफ़ से और कोर्चागिन की तरफ़ से। आम तौर पर मार्ता कोई तेज व्यंगपूर्ण बात कह कर उसका मुँह बन्द करने में कामयाब होती। मगर जब उससे काम न चलता तो कोर्चागिन को दखल देना पड़ता।

मार्ता कहती, "वाइमान, तुम्हारे ढंग का मज़ाक हमें कुछ खास पसन्द नहीं आता।"

कोर्चागिन गुस्से में भरते हुए कहता, "मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे मुँह से ऐसी गन्दी बात क्योंकर निकलती है।"

वाइमान अपना मोटा निचला होंठ निकाल कर अपनी छोटी-छोटी आँखों में व्यंग की चमक भर कर लोगों को देखता।

"हमें राजनीतिक शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत एक सदाचार का विभाग भी खोलना पड़ेगा और मैं प्रस्ताव करता हूँ कि कोर्चागिन को उसका चीफ़ इन्स्पेक्टर बनाया जाय। मार्ता क्यों आपत्ति करती है, यह बात मेरी समझ में आ सकती है, क्योंकि वह स्त्री है और विरोध करना उसका धर्म है। मगर कोर्चागिन तो खामखा भोला बनने की कोशिश करता है, जैसे वह कोई नन्हा-सा कोमसोमोल बच्चा हो और जंगल में खो गया हो····इतना ही नहीं, खास आपत्ति तो मुझे इस बात पर है कि अंडा मुर्गी को पाठ पढ़ाने की कोशिश कर रहा है।"

कम्युनिस्ट नैतिकता के सवाल पर गरमागरम बहस हुई और उसके बाद गन्दे मज़ाकों के मसले पर सिद्धान्त की दृष्टि से बहस की गई। लोगों की अलग अलग रायों को मार्ता ने अनुवाद करके एबनर को बतलाया।

एबनर ने कहा, "ये गन्दे लतीफे अच्छे नहीं कहे जा सकते। मैं पावेल से सहमत हूँ।"

वाइमान को मजबूर होकर पीछे हटना पड़ा। उसने भरसक इस मामले को हँस कर उड़ाने की कोशिश की। मगर इतना हुआ कि इसके बाद उसने फिर कभी अपने गन्दे लतीफे नहीं सुनाये।

पावेल ने मार्ता को कोमसोमोल का मेम्बर समझा था क्योंकि उसका खयाल था कि वह उन्नीस से ज़्यादा की न होगी। उसे यह जान कर बड़ा अचरज हुआ कि वह १६१७ से पार्टी में थी, कि उसकी उम्र इकतीस साल की थी और वह लताविया की कम्युनिस्ट पार्टी की बहुत सक्रिय मेम्बर थी। १६१८ में क्रान्ति-विरोधी श्वेत-रूसियों ने उसको गोली से उड़ाने की सजा दी थी, मगर वह बच गई क्योंकि जब कैदियों की अदला-बदली हुई तो कुछ और साथियों के साथ वह सोवियत सरकार के हवाले कर दी गई। इन दिनों वह 'प्रावदा' के सम्पादकीय विभाग में काम कर रही थी और इसके साथ ही यूनीवर्सिटी में पढ़ रही थी। न जाने कब उसके और पावेल के बीच दोस्ती पैदा हो गई और वह छोटी सी लतावियन स्त्री, जो अक्सर एबनर से मिलने आया करती थी, इन पांचों की टोली का एक जरूरी अंग बन गई।

इस मामले को लेकर एग्लिट, जो लताविया का एक अंडरग्राउंड कार्यकर्त्ता था, उसे अक्सर चिढ़ाया करता था, "अब उस बेचारे ओजोल का क्या होगा जो मास्को में घर पर बैठा तुम्हारे लिए आहें भर रहा है? अरे मार्ता, यह तुमने क्या गजब किया?"

एक रोज सुबह को, बिस्तर छोड़ने की घंटी बजने के ठीक पहले, एक मुर्गे ने सेनेटोरियम में जोर से बाँग दी। उसकी आवाज को सुन कर परेशान नौकर इधर-उधर उस चिड़िया की तलाश में दौड़ने लगे जिसने यह गलत काम किया था। उनको इस बात का खयाल भी नहीं आया कि एबनर ने, जो मुर्गे की बाँग की हू-बहू नकल कर लेता था, उनको हैरान करने के लिए ऐसा किया था। कई रोज तक सुबह यही चीज होती रही और एबनर इस चीज का मजा लेता रहा।

सेनेटोरियम में अपने महीने भर के रहने के आखिरी दिनों में पावेल की हालत और खराब हो गई। डाक्टरों ने उसे बिस्तर पर लेटे रहने का आदेश दिया। एबनर को इससे बड़ी बेचैनी हुई। वह इस हिम्मती नौजवान बोल्शेविक से बहुत प्यार करने लगा था, जिसमें इतना जीवन और इतना उत्साह था और जो इतनी कच्ची उम्र में अपनी सेहत खो बैठा था। और जब मार्ता ने एबनर को बतलाया कि कोर्चागिन के भविष्य के बारे में डाक्टर कैसी दर्दनाक बात कहते हैं, तो एबनर को सख्त तकलीफ हुई।

बाकी जितने दिन पावेल सेनेटोरियम में रहा, उसमें वह लगातार बिस्तर पर ही पड़ा रहा। वह अपने आसपास के लोगों से अपनी तकलीफ छिपा लेता था और अकेले मार्ता उसके चेहरे की भयानक जर्दी से भाँप जाती थी कि उसे बहुत दर्द हो रहा है। अपने जाने के एक हफ्ता पहले पावेल को उक्रेनियन केन्द्रीय समिति का खत मिला जिसमें लिखा था कि सेनेटोरियम के डाक्टरों की सलाह के अनुसार उसकी छुट्टी और दो महीना बढ़ाई जाती है क्योंकि उनका कहना है कि वह काम करने के अयोग्य है। खत के साथ ही खर्चे के लिए पैसा आया।

पावेल ने इस पहली चोट को उसी तरह सह लिया जिस तरह उसने बरसों पहले घूंसेबाजी के सबक लेते हुए जुखराई के घूंसे खाये थे। तब भी वह गिर पड़ा था, मगर फ़ौरन ही फिर उठ खड़े होने के लिए।

उसको अपनी मां की एक चिट्ठी मिली जिसमें उसने पावेल को लिखा था कि वह जाकर उसकी एक पुरानी दोस्त से मिल आये। इस दोस्त का नाम अलबिना क्युत्सम था। वह योपेतोरिया के पास ही समुद्र के किनारे एक छोटे से कस्बे में रहती थी। पावेल की मां अपने दोस्त से पन्द्रह साल से नहीं मिली थी और उसने पावेल से बहुत अनुरोध किया था कि जब तक वह क्राइमिया में है, उसी बीच जाकर

उससे मिल ले। इस चिट्ठी ने पावेल की जिन्दगी में आगे चल कर बहुत महत्त्व की भूमिका अदा की।

एक हफ्ते बाद उसके सेनेटोरियम के दोस्तों ने उसे जहाज के घाट पर जाकर बहुत मुहब्बत से विदा किया। एचनर ने भाई की तरह गले से लगाया और चूमा। मार्ता उस वक्त कहीं गई हुई थी और पावेल बिना उससे विदा लिये हुए ही चला गया।

दूसरे रोज सुबह को वहाँ घाट पर पहुँचने पर घोड़ागाड़ी उसे एक छोटे से मकान में ले गई जिसके सामने एक वैसा ही छोटा-सा बागीचा था।

क्युत्सम के परिवार में पाँच लोग थे : मां अलबिना, जो एक अधेड़ स्थूलकाय स्त्री थी और जिसकी आँखें काली और उदास थीं। उसके बूढ़े हो रहे चेहरे पर पुराने सौन्दर्य की निशानियाँ थीं। मां के अलावा उस परिवार में थीं दो बेटियाँ लोला और ताया, लोला का नन्हा-सा बेटा और बूढ़ा क्युत्सम, जो घर का स्वामी था। बूढ़ा क्युत्सम मोटा-सा चिड़चिड़ा आदमी था और देखने में सुअर-जैसा था।

बूढ़ा क्युत्सम को-ऑपरेटिव स्टोर में काम करता था। छोटी लड़की ताया जो भी काम हाथ लग जाय, करती थी और लोला, जो टाइपिस्ट रह चुकी थी, हाल ही में अपने पति से अलग हुई थी। उसका पति शराबी और बदमिजाज आदमी था। लोला अब घर पर रह कर अपने छोटे से लड़के की देखभाल करती थी और घर के काम में अपनी मां का हाथ बटाती थी।

इन दो बेटियों के अलावा घर में एक बेटा भी था जिसका नाम जौर्ज था और जो उस वक्त, जब पावेल वहाँ पहुँचा तब लेनिनग्राद में था।

घरवालों ने पावेल का हार्दिक स्वागत किया। सिर्फ़ बुड्ढे ने अतिथि को सन्देह और शत्रुता की आँखों से देखा।

पावेल ने धैर्यपूर्वक अलबिना को अपने घर के बारे में सारी खबरें बताईं और उसके जवाब में उसे भी क्युत्सम के कुनबे की जिन्दगी के बारे में बहुत कुछ जानने का मौक़ा मिला।

लोला बाईस बरस की थी। वह एक सीधी-सादी लड़की थी जिसके भूरे बाल कटे हुए थे। उसका चौड़ा-सा खुला हुआ चेहरा था और उसने फ़ौरन पावेल को अपना अन्तरंग बना लिया और उसे अपने घर के सारे राज बतला दिये। उसने बतलाया कि बुड्ढा निरंकुश राजा की तरह पूरे परिवार पर शासन करता है और घर के लोगों में किसी भी तरह की स्वतन्त्रता की भावना के आते ही फ़ौरन उसे दबा देता है। वह संकीर्ण बुद्धि का कट्टर और जिद्दी आदमी था और घरवालों को आतंकित करके रखता था। इसकी वजह से घर के सारे बच्चे उससे बहुत चिढ़ते

थे और उसकी बीवी उससे नफ़रत करती थी। उसकी बीवी ने पच्चीस साल तक उसकी निरंकुशता के खिलाफ़ संघर्ष किया मगर कोई नतीजा न निकला। लड़कियाँ हमेशा अपनी माँ का साथ देती थीं। घर में होने वाले उन रोज-रोज के झगड़ों ने उनकी जिन्दगी में जहर घोल दिया था। दिन-के-दिन गुजर जाते थे और झगड़े, गाली-गुफ्ता, तू-तू मैं-मैं खत्म ही न होने आती थी।

लोला ने पावेल को बतलाया कि घर की जिन्दगी का एक और पाप उसका भाई जौर्ज था जो एक बिलकुल नाकारा, जीटियल, घमंडी लड़का था जिसे अच्छे खाने, तेज शराबों और ठाठदार कपड़ों के अलावा और किसी चीज की फ़िक्र न थी। स्कूल की पढ़ाई खतम करने पर अपनी मां के लाड़ले जौर्ज ने ऐलान किया कि वह राजधानी में जा रहा है और उसने अपने इस सफ़र के लिए पैसे माँगे।

"मैं यूनीवर्सिटी में जा रहा हूँ। लोला अपनी अंगूठी बेच सकती है और तुम्हारे पास भी कुछ चीजें हैं जिन्हें गिरवी रख कर तुम पैसे पा सकती हो। मुझे पैसों की जरूरत है और मुझे उससे बहस नहीं कि तुम कहाँ से उन पैसों को लाती हो।"

जौर्ज को अच्छी तरह मालूम था कि उसकी मां कभी किसी चीज के लिए उससे इनकार नहीं करेगी और इसीलिए वह अपने प्रति मां के प्यार का बेजा फ़ायदा उठाता था। अपनी बहनों के साथ उसका बर्ताव ऐसा था जैसे वे उसके सामने कुछ न हों, जैसे वे उसकी बाँदियाँ हों। मां अपने पति से जो भी पैसे खींच-तान कर निकाल पाती थी, उन्हें अपने बेटे के पास भेज देती थी और उसके अलावा ताया जो कुछ कमाती थी वह भी। इस बीच जौर्ज मैट्रिक की परीक्षा में फेल होकर अब लेनिनग्राद में मजे उड़ा रहा था। वह अपने मामा के साथ रहता था और बार-बार तार से पैसे मंगा-मंगा कर अपनी मां को सताया करता था।

पावेल जिस रोज वहाँ पहुँचा उस रोज कहीं रात को जाकर उसकी मुलाक़ात ताया से हुई। उसकी मां अपनी बेटी से मिलने के लिए झट से बाहर हॉल वाले रास्ते में गई और पावेल ने मां को फुसफुसा कर उसके आने की खबर अपनी बेटी को देते सुना। उस लड़की ने शर्माते हुए इस अपरिचित नौजवान से हाथ मिलाया और मारे शर्म के उसका चेहरा लाल हो गया और पावेल काफ़ी देर तक उसके मजबूत घाठीदार हाथ को अपने हाथ में लिये रहा।

ताया उन्नीसवें साल में चल रही थी। वह खूबसूरत न थी, मगर फिर भी उसकी बड़ी-बड़ी भूरी आँखें और उसका मंगोलों-जैसा चेहरा, अच्छी-सी नाक और भरे हुए ताजे-ताजे होंठ, इन सबको मिला कर वह बहुत आकर्षक दीख पड़ती थी। उसकी धारीदार ब्लाउज के नीचे उसकी कसी हुई जवान छातियाँ उभरी हुई थीं।

दोनों बहनों के पास अपनी-अपनी दो छोटी-छोटी कोठरियाँ थीं। ताया के कमरे में लोहे की एक तंग खाट थी, दराजों की एक आलमारी थी जिसमें दुनिया भर की छोटी-मोटी चीजें भरी हुई थीं, एक छोटा-सा आइना था और दीवारों पर दर्जनों फोटो और तसवीरों वाले पोस्टकार्ड थे। खिड़की पर दो गुलदान रखे थे जिनमें लाल जेरेनियम और हलके पीले और गुलाबी ऐस्टर के फूल लगे हुए थे। लैस के पर्दे में एक हल्का नीला फीता टंका हुआ था।

लोला ने अपनी बहन को चिढ़ाते हुए कहा, "आम तौर पर ताया पुरुषों को अपने कमरे में नहीं घुसने देती। तुम्हारे लिए वह इस नियम का अपवाद कर रही है।"

दूसरे रोज शाम को घर के लोग बूढ़े दम्पति के रहने की जगह में चाय पर बैठे हुए थे। क्युत्सम तेजी से अपनी चाय को चला रहा था और बीच-बीच में अपने ठीक सामने बैठे हुए अतिथि पावेल को अपनी ऐनक के ऊपर से देख लेता था।

उसने कहा, "आजकल जो शादी के क़ानून बन रहे हैं, उनको मैं बिलकुल बेकार समझता हूँ। आज शादी हुई और कल के रोज शादी नहीं रही। जो जी चाहे कीजिए। पूरी आजादी है।"

बुड्ढे का गला फंस रहा था और वह बड़बड़ा रहा था। उसकी सांस लौटी तो उसने लोला की तरफ इशारा किया।

"इसको देखो, यह गई और बिना किसी की इजाजत लिए अपने उस आदमी से शादी कर बैठी और फिर उसी तरह बिना किसी से कुछ पूछे-जाँचे उससे अलग भी हो गई। और अब मुझे ही उसके और उसके छोकरे दोनों के खाने का बन्दोबस्त करना पड़ता है। कैसी बेहूदा बात है!"

लोला को बड़ी चोट लगी और वह शर्म से गड़ गई। उसने अपनी नम आँखें पावेल से छिपा लीं।

"तो आपका खयाल है कि उसे उस बदमाश के साथ रहना चाहिए था, क्यों?" पावेल ने पूछा और उसकी आँखों में गुस्से की चमक आ गई।

"उसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए था कि वह किससे शादी कर रही है।"

अलबिना ने बीच-बचाव किया। किसी-न-किसी तरह अपने गुस्से को दबाते हुए उसने तेजी से कहा, "कैसे हो, एक नये आदमी के सामने ऐसी बातों पर बहस कर रहे हो? तुम्हारे पास बात करने के लिये और कुछ नहीं है?"

बुड्ढा मुड़ा और उसी पर झपट पड़ा :

"मैं खूब जानता हूँ कि मैं क्या बात कह रहा हूँ! यह तुम कब से मुझे नसीहत करने लगी कि मुझे क्या कहना चाहिए!"

उस रात को पावेल बड़ी देर तक अपने बिस्तर में जागता पड़ा रहा और क्युत्सम परिवार के बारे में सोचता रहा। संयोग से ही वह यहाँ आ गया था और अनजाने ही इस पारिवारिक नाटक में शरीक हो गया था। उसकी समझ में नहीं आता था कि वह किस तरह मां और बेटियों को इस बन्धन से मुक्त करने में सहायक हो सकता था। खुद उसकी जिन्दगी बिलकुल अव्यवस्थित थी, बहुत से मसले थे जिन्हें अभी हल करना बाकी था और कोई हिम्मत का क़दम उठाना उसके लिए और दिनों से ज़्यादा मुश्किल काम था।

स्पष्ट ही केवल एक रास्ता था : यह कि इस परिवार को तोड़ दिया जाय और मां और बेटियाँ बुड्ढे को छोड़ अलग हो जायँ। मगर यह इतना आसान काम न था। पावेल इस पारिवारिक क्रान्ति का बोझ उठाने की स्थिति में नहीं था क्योंकि उसे कुछ ही दिनों में वहाँ से चला जाना था और मुमकिन है कि फिर कभी उसकी उन लोगों से मुलाक़ात भी न हो। क्या यह ज़्यादा अच्छा न होगा कि वह उस चीज को जैसे-का-तैसा छोड़ दे और जो होना हो, हो? तलैया के इस गन्दे पानी को हिलाने-डुलाने से क्या फ़ायदा? मगर उस बुड्ढे के घिनौने चेहरे की याद उसे चैन न लेने देती। बहुत-सी योजनाएँ पावेल के दिमाग़ में आईं, मगर दुबारा विचार करने पर उसने उन्हें अव्यवहारिक कह कर छोड़ दिया।

अगले दिन इतवार था और जब पावेल टहल कर शहर से वापस आया तो उसने ताया को घर में अकेला पाया। बाक़ी लोग रिश्तेदारों से मिलने बाहर गये हुए थे।

पावेल उसके कमरे में गया और थका हुआ तो था ही, एक कुरसी पर लस्त होकर पड़ गया।

उसने ताया से पूछा, "तुम कभी बाहर क्यों नहीं जातीं और अपनी खुशी का कोई सामान क्यों नहीं करतीं?"

ताया ने धीमे स्वर में जवाब दिया, "मेरा कहीं जाने को जी नहीं चाहता।"

पावेल को अपनी रात की सोची हुई योजनाओं की याद आई और उसने उन्हें ताया के सामने रखने का फ़ैसला किया।

जल्दी-जल्दी बोलते हुए ताकि दूसरों के आने के पहले ही वह अपनी बात खतम कर ले, पावेल सीधे अपनी खास बात पर आ गया।

"सुनो ताया, हम दोनों अच्छे दोस्त हैं। तब फिर हम लोग क्यों एक-दूसरे के साथ झूठा शिष्टाचार बरतें। मैं जल्द ही यहाँ से चला जाऊँगा। बड़े

दुख की बात है कि मैंने तुम्हारे परिवार को ठीक ऐसे समय में जाना जब कि मैं खुद मुसीबत में हूँ, नहीं तो सूरत कुछ दूसरी ही होती। अगर यह चीज साल-भर पहले हुई होती तो हम सब लोग एक साथ यहाँ से चले जा सकते थे। तुम्हारे और लोला जैसे लोगों के लिए चारों तरफ़ तमाम काम-ही-काम है। बुड्ढे को छोड़ो, उसकी बात अलग है, उसकी अक़्ल को ठीक नहीं किया जा सकता। मगर वह तो खैर जो भी है, इस वक़्त कोई रास्ता नहीं है। मैं अभी यही नहीं जानता कि मेरा क्या होगा। इस वक़्त मैं बिलकुल असहाय हूँ। मगर उसका तो खैर कोई इलाज नहीं है। मैं इस बात पर जोर देने जा रहा हूँ कि मुझे वापिस काम पर भेजा जाय। डाक्टरों ने मेरे बारे में पता नहीं क्या-क्या वाहियात बातें लिख दी हैं और साथी लोग मेरा पीछा ही नहीं छोड़ते। उनका कहना है कि मैं क़यामत के रोज तक अपना इलाज कराता बैठा रहूँ। मगर खैर उसके बारे में देखेंगे कि क्या किया जा सकता है। मैं माँ को चिट्ठी लिखूँगा और तुम्हारे यहाँ के झगड़े के बारे में उससे सलाह लूँगा। मैं इस तरह इस चीज को नहीं चलने दे सकता। मगर तुम्हें समझना चाहिए ताया कि इसका मतलब यह होगा कि तुम्हें जबरन अपने को अपनी मौजूदा जिन्दगी से काट कर अलग करना होगा। क्या तुम्हें यह चीज पसन्द होगी और इसकी ताक़त तुम अपने अन्दर पाओगी ?"

ताया ने आँख ऊपर उठा कर देखा।

फिर धीमे से कहा, "मुझे यह चीज जरूर पसन्द होगी और जहाँ तक ताक़त की बात है, मैं नहीं कह सकती।"

पावेल उसके अनिश्चय को समझ गया।

"कोई बात नहीं ताया! अगर तुम्हारे अन्दर इस चीज की चाह है तो सब ठीक हो जायगा। क्या तुम सचमुच अपने परिवार को बहुत चाहती हो?"

इस सवाल ने ताया को थोड़ा परेशानी में डाल दिया क्योंकि वह इसके लिए तैयार न थी और जवाब देने में पल भर को हिचकिचाई।

आखिरकार उसने कहा, "मुझे माँ के लिए बड़ा दुख है। पिताजी ने उसकी जिन्दगी दूभर कर दी है और अब जौर्ज उसको सता रहा है। मुझे उसके लिए सचमुच बेहद दुख होता है गोकि मैं जानती हूँ कि उसने कभी मुझे जौर्ज के बराबर प्यार नहीं किया····।"

दोनों बड़ी देर तक इसी तरह दिल खोल कर बातें करते रहे। घर वालों के लौटने के थोड़ी देर पहले पावेल ने मजाक में कहा :

"बड़े ताज्जुब की बात है कि बुड्ढे ने अब तक तुम्हें किसी के साथ ब्याह नहीं दिया।"

इस विचार से ही डर के मारे ताया ने हाथ फटकारे।

"न बाबा, मैं कभी शादी न करूँगी। मैंने देखा है कि बेचारी लोला को क्या-क्या भुगतना पड़ा है। मैं कभी किसी क़ीमत पर शादी न करूँगी।"

पावेल हँसा।

"अच्छा तो तुमने अपनी पूरी ज़िन्दगी के लिए आख़िरी बार इस मामले का फ़ैसला कर डाला है? और मान लो कोई अच्छा-भला खूबसूरत नौजवान तुम्हारी ज़िन्दगी में आ जाय, तो क्या हो?"

"नहीं, मैं कभी शादी न करूँगी। शादी के पहले सब बड़े अच्छे रहते हैं।"

पावेल ने उसको मनाने के अन्दाज़ में उसके कन्धे पर अपना हाथ रखा।

"बहुत अच्छी बात है ताया। पति के बिना भी तुम बड़े मज़े में चल सकती हो। मगर तुम्हें सभी नौजवानों के बारे में ऐसी बेइन्साफ़ी की बात न कहनी चाहिए। यह अच्छा है कि तुम मुझ पर यह सन्देह नहीं कर रही हो कि मैं तुमसे प्रणय-निवेदन करने की कोशिश कर रहा हूँ, वरना मुसीबत ही थी!" और उसने बड़े भाई के अन्दाज़ में ताया की बाँह को थपथपाया।

ताया ने धीमे से कहा, "तुम्हारी तरह के आदमी किसी और ही तरह की लड़कियों से शादी करते हैं।"

कुछ दिन बाद पावेल खारकोव के लिए रवाना हो गया। ताया, लोला और अपनी बहन रोज़ा के साथ अलबिना उसे विदा करने स्टेशन पर आई। अलबिना ने पावेल से वचन ले लिया कि वह उनकी लड़कियों को न भूलेगा और उन्हें अपनी मौजूदा परेशानी में से निकलने में मदद पहुँचायेगा। उन्होंने पावेल को उसी तरह विदा किया जैसे किसी बहुत सगे और प्यारे आदमी को किया जाता है। उस वक़्त ताया की आँखों में आँसू थे। अपने डब्बे की खिड़की में से पावेल ने लोला की सफ़ेद रूमाल और ताया के धारीदार ब्लाउज़ को बराबर छोटे-से-छोटा होते देखा जब तक कि वे नज़र से ओझल न हो गये।

खारकोव पहुँच कर वह सीधे अपने दोस्त पेत्या नोवीकोव के घर गया क्योंकि वह डोरा को परीशान नहीं करना चाहता था। सफ़र की थकान मिटते ही वह केन्द्रीय समिति में गया। वहाँ उसने अकिम का इन्तज़ार किया और आख़िर

में जब दोनों अकेले रह गये, तो उसने कहा कि उसे फ़ौरन काम पर भेजा जाय। अकिम ने अस्वीकृति में सिर हिलाया।

"यह चीज़ नहीं हो सकती पावेल! हमारे सामने मेडिकल बोर्ड और सेन्ट्रल कमिटी का फ़ैसला है। उसके मुताबिक तुम्हारी तन्दुरुस्ती की संगीन हालत को देखते हुए तुम्हें इलाज के लिए न्यूरो-पैथोलॉजिकल इन्स्टीच्यूट भेजा जाना चाहिए और यह कि किसी हालत में तुम्हें काम नहीं करने देना चाहिए।"

"मुझे खाक परवाह नहीं कि वे लोग क्या कहते हैं अकिम! मैं तुमसे विनती करता हूँ, मुझे काम करने का मौक़ा दो! एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल में जाना मुझे कोई फ़ायदा नहीं पहुँच रहा है।"

अकिम ने इनकार करने की कोशिश की, "हम लोग फ़ैसले के खिलाफ़ नहीं जा सकते। तुम इस बात को नहीं देखते पावलुशा कि यह तुम्हारे फ़ायदे की बात है?" उसने तर्क करते हुए कहा। मगर पावेल ने इतने ज़ोरों से अपनी बात की वकालत की कि आखिर में अकिम को उसकी बात माननी ही पड़ी।

अगले ही रोज़ पावेल केन्द्रीय समिति के सेक्रेटेरियट के विशेष विभाग में काम करने लगा। उसका खयाल था कि काम शुरू करते ही उसकी गई हुई ताक़त लौट आयेगी। मगर जल्दी ही उसने देख लिया कि ऐसा सोचना उसकी भूल थी। वह दोपहर का खाना खाये बग़ैर आठ-आठ घंटे तक मेज़ पर बैठा काम करता रहता था और सिर्फ़ इसलिए कि खाना खाने के लिए तीन-तीन ज़ीना नीचे उतर कर पब्लिक भोजनालय में जाने की ताक़त उसके अन्दर नहीं थी। अक्सर उसके हाथ-पैर अचानक सुन्न पड़ जाते और कभी-कभी उसका पूरा शरीर थोड़ी देर के लिए ऐसा हो जाता जैसे उसे लक़वा मार गया हो। हरारत उसे हमेशा ही बनी रहती। किसी-किसी रोज़ सुबह को वह अपने अन्दर इतनी ताक़त भी न पाता कि बिस्तर से उठ सके और जब तक लक़वे का हमला थमता, तब तक उसे काम पर जाने में एक घंटे की देर हो गई रहती और उसका उसे बहुत दुख होता। आखिरकार वह दिन आया जब उसे काम पर देर से आने के लिए सरकारी तौर पर तम्बीह की गई और तब उसने देखा कि यह उस चीज़ की शुरुआत थी जिससे अपनी जिन्दगी में वह सबसे ज़्यादा डरता था—वह आगे बढ़ने वाले सैनिकों की क़तार में पीछे छूटा जा रहा था।

दो बार अकिम ने उसको दूसरे काम पर लगा कर उसकी मदद की, मगर जो चीज़ अनिवार्य थी वह होकर रही। काम पर लौटने के महीने भर बाद पावेल ने फिर से बिस्तर पकड़ लिया। उस वक़्त उसे विदाई के समय कहे हुए बाजानोवा के शब्द याद आये। उसने उसको चिट्ठी लिखी और वह उसी दिन आ गई। और

आकर उसने पावेल को वह बात बतलाई जिसे वह जानना चाहता था : यह कि अस्पताल में जाना एकदम जरूरी नहीं है।

"तो मेरा हाल इतना अच्छा है कि मुझे इलाज की भी जरूरत नहीं है?" उसने दिल्लगी के स्वर में कहा। मगर वह दिल्लगी का मौक़ा न था, इसलिए मजाक बेमानी होकर रह गया।

जैसे ही उसने अपने भीतर कुछ और ताक़त महसूस की, वह वापिस केन्द्रीय समिति में पहुँच गया। इस बार अकिम ने दृढ़ता से उसका विरोध किया। उसने इस बात पर जोर दिया कि पावेल अस्पताल जाय।

पावेल ने थके हुए स्वर में कहा, "मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ। उससे कोई फ़ायदा नहीं। यह बात मुझे अच्छे-अच्छे डाक्टरों से मालूम हुई है जिन्हें इस चीज के बारे में राय देने का हक़ है। मेरे लिए करने को सिर्फ़ अब एक चीज बची है कि पेन्शन ले लूँ और रिटायर हो जाऊँ। मगर मैं ऐसा नहीं करूँगा! तुम मुझे काम छोड़ने पर मजबूर नहीं कर सकते। मैं अभी सिर्फ़ चौबीस साल का हूँ और मैं बीमार की तरह इस अस्पताल से उस अस्पताल का चक्कर लगाते हुए अपनी जिन्दगी काटने के लिए तैयार नहीं हूँ। मैं यह जानता हूँ कि अस्पताल में जाने से मुझे कोई फ़ायदा नहीं होगा। तुम्हें चाहिए कि मुझे कोई काम दो, ऐसा काम जो मेरी स्थिति के अनुकूल हो। मैं घर पर बैठ कर काम कर सकता हूँ या दफ़्तर में रह सकता हूँ। बस एक दरख्वास्त है कि क्लर्की का ऐसा काम मत दो जिसमें मुझे सिर्फ़ दफ़्तर से बाहर जाने वाले कागजात पर नम्बर दर्ज करना पड़े। मुझे ऐसा काम मिलना चाहिए जिससे मुझे यह सन्तोष हो कि अब भी मेरी कुछ उपयोगिता है।"

भावावेश में पावेल की आवाज बुलन्द से बुलन्द होती गई।

अकिम को पावेल से गहरी सहानुभूति थी। वह समझता था कि इस जोशीले नौजवान की जिन्दगी की यह सबसे बड़ी ट्रैजेडी थी—इस नौजवान की जिसने अपनी छोटी-सी जिन्दगी का एक-एक कण पार्टी को दिया था। पावेल को संघर्ष से मजबूरन अलग होना पड़ रहा था और दूर एक कोने में घुटने तोड़ कर बैठना पड़ रहा था। इस विचार से पावेल को कितनी मानसिक यातना हो रही होगी, यह बात अकिम समझ रहा था। उसने तय किया कि उसकी मदद के लिए जो कुछ बन पड़ेगा, वह जरूर करेगा।

"बहुत अच्छा पावेल, तुम परेशान न हो। कल सेक्रेटेरियट की मीटिंग होगी और मैं तुम्हारे मामले को साथियों के सामने रखूँगा। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मुझ से जो कुछ बन पड़ेगा, मैं तुम्हारे लिए करूँगा।"

पावेल थका हुआ, भारी पैरों से उठा और उसने अकिम का हाथ पकड़ लिया।

"अकिम, क्या तुम सचमुच यह सोचते हो कि जिन्दगी एक कोने में ढकेल कर मुझे कुचल सकती है? जब तक मेरे दिल में यहाँ यह धड़कन बाक़ी है"—कहते हुए उसने अकिम का हाथ अपने सीने पर रख लिया ताकि वह उसके दिल की धड़कन को महसूस कर सके—"जब तक यह धड़कन है, कोई भी मुझे पार्टी से काट कर अलग नहीं कर सकता। सिर्फ़ मौत ही मुझे लड़ने वाले सैनिकों की क़तार से अलग कर सकती है। इस बात को याद रखना, मेरे दोस्त।"

अकिम ने कुछ नहीं कहा। वह जानता था कि यह कोरी लफ़्फ़ाज़ी नहीं है। यह एक ऐसे सिपाही की चीख थी जिसे लड़ाई में सख्त चोट लगी हो। वह जानता था कि कोर्चागिन जैसे लोग इसके सिवा दूसरी किसी तरह बोल नहीं सकते और न महसूस ही कर सकते हैं।

दो दिन बाद अकिम ने पावेल को बतलाया कि उसे एक बड़े अख़बार के कार्यालय में काम करने का अवसर दिया जाने वाला है, बशर्ते उसमें साहित्यिक काम करने की योग्यता हो। सम्पादकीय दफ्तर में पावेल का बहुत अच्छा स्वागत हुआ और सहायक सम्पादिका ने, जो एक पुरानी पार्टी कार्यकर्त्ता और उक्रेन की केन्द्रीय कंट्रोल कमिटी की सभापति मंडली की सदस्या थी, उससे पूछताछ की।

उसने पावेल से पूछा, "तुम्हें क्या शिक्षा मिली है कामरेड?"

"प्राथमिक पाठशाला में तीन साल।"

"क्या तुम पार्टी के किसी सियासी स्कूल में भी रहे हो?"

"नहीं।"

"कोई बात नहीं, कुछ लोग इसके बिना भी अच्छे पत्रकार बनते देखे गये हैं। कामरेड अकिम ने तुम्हारे बारे में हमको बतलाया है। हम तुम्हें ऐसा काम दे सकते हैं जिसे तुम घर बैठे कर सको और मोटे तौर पर हम तुम्हारे लिए ऐसा इन्तज़ाम करने के लिए तैयार हैं कि तुम सहूलियत से काम कर सको। मगर इस तरह के काम में काफ़ी जानकारी की ज़रूरत होती है। ख़ास करके साहित्य और भाषा के क्षेत्र में।"

इस सबसे पावेल को लगा कि इस काम में उसकी हार अवश्यम्भावी है। आध घंटे की उस पूछताछ से उसे पता चल गया कि उसकी जानकारी काफ़ी नहीं है। और उसका इम्तहान लेने के लिए जो लेख उससे लिखाया गया था, वह जब उसके पास लौटा तो उसमें शैली और हिज्जे की तीन दर्जन ग़लतियाँ थीं जिन पर लाल पेंसिल से निशान लगा हुआ था।

सम्पादिका ने कहा, "कामरेड कोर्चागिन, तुममें काफ़ी योग्यता है और अगर कुछ मेहनत करोगे तो काफ़ी अच्छा लिखने लगोगे। मगर इस वक़्त तुमसे व्याकरण की भूलें हो जाती हैं। तुम्हारे लेख से पता चलता है कि तुम अच्छी तरह रूसी भाषा नहीं जानते। यों इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं है क्योंकि तुम्हें पढ़ने का मौक़ा ही नहीं मिला। हमें खेद है कि हम तुम्हारा उपयोग नहीं कर सकते, गोकि जैसा मैंने अभी कहा, तुम्हारे अन्दर योग्यता है। अगर तुम्हारे लेख को सुधारा जाता, बिना उसके विषय-वस्तु को बदले, तो इसमें सन्देह नहीं कि वह बहुत अच्छा हो जाता। मगर बात यह है कि हमें ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो दूसरों के लेखों को सुधार सकें, उनका सम्पादन कर सकें।"

कोर्चागिन अपनी छड़ी का सहारा लेते हुए उठा। उसकी दाहिनी पलक फड़की।

"ठीक है, मैं आपकी बात समझ गया। सचमुच मैं किस काम का पत्रकार होऊँगा? किसी जमाने में मैं बुरा फ़ायरमैन नहीं था और एलेक्ट्रीशियन भी बुरा नहीं था। घुड़सवारी मैं अच्छी करता था और कोमसोमोल के नौजवानों को आन्दोलित करना भी मुझे आता था। लेकिन जहाँ तक आपके मोर्चे की बात है, निश्चय ही मैं उसके लिए किसी काम का साबित नहीं होऊँगा, यह बात मेरी समझ में आ गई।"

उसने हाथ मिलाया और चला गया।

गलियारे के एक मोड़ पर वह लड़खड़ाया और अगर पास से गुज़रती हुई एक औरत ने उसे पकड़ न लिया होता, तो वह गिर पड़ता।

"क्या बात है कामरेड? तुम तो काफ़ी बीमार नज़र आते हो!"

पावेल को होश आने में कुछ क्षण लगे। तब उसने धीरे से उस औरत को एक ओर कर दिया और अपनी छड़ी के सहारे आगे बढ़ गया।

उस दिन के बाद से पावेल ने महसूस किया कि उसकी ज़िन्दगी ढलवान पर है। काम करने का तो अब सवाल ही नहीं उठता था। उसे बार-बार और पहले से कहीं ज्यादा बिस्तर पकड़ना पड़ता। केन्द्रीय समिति ने उसे काम से छुट्टी दे दी और उसकी पेन्शन का प्रबन्ध कर दिया। ठीक समय पर पेन्शन आ गई और उसके साथ-साथ बीमार होने का सर्टीफ़िकेट भी। केन्द्रीय समिति ने उसे पैसा दिया और उसके काग़ज़ात उसके हवाले कर दिये जिनसे उसे हक़ मिल गया कि वह जहाँ चाहे जाय।

मार्ता के पास से उसे एक ख़त मिला जिसमें उसने पावेल को मास्को आने और उसके यहाँ रह कर कुछ दिन आराम करने की दावत दी थी। मास्को जाने का

तो पावेल का इरादा यों भी था क्योंकि उसके मन में अभी यह धुँधली-सी आस बाकी थी कि ऑल यूनियन सेन्ट्रल कमिटी उसे ऐसा कोई काम दे सकेगी जिसमें इधर-उधर दौड़ने-भागने की जरूरत न होगी। मगर मास्को में भी उसे डाक्टरी इलाज लेने की सलाह दी गई और एक अच्छे अस्पताल में जगह देने की बात कही गई। मगर उसने इनकार कर दिया।

उसके उन्नीस दिन तो मार्ता के घर में, जहाँ वह अपने दोस्त नादिया पीटर्सन के साथ रहती थी, जल्दी से बीत गये। पावेल ज़्यादातर घर में अकेला ही रहता क्योंकि दोनों युवतियाँ सवेरे ही घर से काम पर निकल जातीं और शाम को लौटतीं। पावेल मार्ता की अच्छी लाइब्रेरी में से किताबें ले-लेकर पढ़ने में अपना वक़्त गुज़ारता। शामें उन दोनों लड़कियों और उनके दोस्तों की सोहबत में मज़े में कट जातीं।

क्युत्सम परिवार के ख़त आते जिनमें उसे वहाँ बुलाया जाता। वहाँ पर ज़िन्दगी असह्य होती जा रही थी और पावेल की मदद की जरूरत थी।

लिहाज़ा एक रोज़ सवेरे कोर्चागिन ने गुस्यातनिकोव स्ट्रीट का वह खामोश छोटा सा फ्लैट छोड़ दिया। रेलगाड़ी उसे तेज़ी से दक्खिनी समुद्र की तरफ़ ले चली, नम बरसाती पतझड़ से दूर दक्खिनी क्राइमिया के गर्म तट की तरफ़। वह खिड़की पर बैठा तार के खम्भों का तेज़ी से गुज़रना देखता रहा। उसके माथे पर बल पड़े हुए थे और उसकी काली-काली आँखों में हठीली चमक थी।

सत्रहवाँ अध्याय

नीचे समुन्दर की लहरें चट्टान से टकरा कर पछाड़ खा रही थीं। दूर तुर्की से आती हुई तेज़ खुश्क हवा उसके चेहरे को स्पर्श कर रही थी। बन्दरगाह, जिसे सीमेन्ट का एक रास्ता बना कर समुद्र के सीधे हमले से बचाया गया था, टेढ़े-मेढ़े अर्धवृत्त आकार में फैला हुआ था। और उस सबके ऊपर से दीख पड़ रही थीं शहर के छोर पर की छोटी-छोटी सफ़ेद इमारतें जो पहाड़ के ढलवान पर बनी हुई थीं और उनके ठीक नीचे समुद्र का नीला विस्तार था।

शहर के बाहर इस पुराने पार्क में बहुत शान्ति थी। मेपुल के दरख्त की पीली-पीली पत्तियाँ उड़-उड़ कर धीरे-धीरे पार्क के रास्तों पर गिर रही थीं और रास्तों पर घास उगी हुई थी।

वह बूढ़ा ईरानी गाड़ीवान, जो पावेल को शहर से वहाँ ले आया था, पावेल के गाड़ी से उतरने पर यह सवाल पूछ ही बैठा :

" यहाँ क्यों आये हैं ? न यहाँ जवान औरतें हैं न दिल बहलाने का और कोई सामान। यहाँ तो बस गीदड़ हैं····यहाँ क्या करेंगे ? मिस्टर कामरेड, बेहतर हो कि मैं आपको शहर में वापस ले चलूँ ! "

पावेल ने गाड़ी का किराया चुकाया और बूढा गाड़ी लेकर चला गया।

वह पार्क सचमुच एक जंगल था। पावेल को एक पहाड़ी पर खाली बेंच मिल गई और वह उस पर बैठ गया। पावेल ने पतझड़ के हलके सूरज की ओर मुँह उठाया। पहाड़ी समुद्र के किनारे पर थी।

वह इस खामोश जगह में यह सोच कर आया था कि अपनी ज़िन्दगी पर ग़ौर करेगा, उसकी ज़िन्दगी जो राह पकड़ रही थी, उसके बारे में और यह कि अब उसको क्या करना चाहिए। परिस्थिति पर विचार करने और कोई फ़ैसला लेने का वक़्त आ गया था।

दूसरी बार वह क्युत्सम के यहाँ गया तो घर के झगड़े और भी बढ़ गये और ऐसी हालत पैदा हो गई कि उस झगड़े को खतम करने के लिए कोई-न-कोई क़दम उठाना जरूरी जान पड़ने लगा। बुड्ढे को जब उसके आने की बात मालूम हुई तो वह आग-बबूला हो गया और उसने इस चीज़ के खिलाफ़ बड़ा शोर मचाया। स्वभावतः उसका मुक़ाबला करने की जिम्मेदारी कोर्चागिन पर आ गई। बुड्ढे को बड़ा ताज्जुब हुआ जब उसकी बीवी और लड़कियों ने डट कर उसका विरोध किया क्योंकि उसको इस चीज़ की उम्मीद न थी। पावेल के आने के पहले रोज से ही घर दो विरोधी शिविरों में बँट गया। मकान के जिस आधे हिस्से में माँ-बाप रहते थे, उसके दरवाजे में ताला जड़ दिया गया और बग़ल का एक छोटा कमरा कोर्चागिन को किराये पर दे दिया गया। पावेल ने किराया पेशगी दे दिया और इस चीज से बुड्ढे का गुस्सा कुछ कम हुआ। अब उसकी लड़कियाँ उससे अलग हो गई थीं और इसलिए उनके भरण-पोषण की जिम्मेदारी उसकी न रह गई थी।

कूटनीतिक कारणों से अलबिना अपने पति के साथ ही रही। जहाँ तक बुड्ढे की बात थी, तो वह अपने ही हिस्से में रहता था और उस आदमी से मिलना बचाता था जिससे उसको इतनी सख्त नफ़रत थी। मगर बाहर हाते में वह ज़्यादा से ज़्यादा शोर मचाता था ताकि यह बात किसी को भूलने न पाये कि वही घर का मालिक है।

को-आपरेटिव में काम करने के पहले बुड्ढा क्युत्सम जूते बना कर और

बढ़ईगीरी के काम से अपनी जीविका चलाता था और अपने लिए उसने एक छोटी सी वर्कशाप घर के पिछवाड़े के हाते में बना ली थी। अब पावेल को तंग करने के लिए उसने अपने काम करने की बेन्च शेड से हटा कर पावेल की खिड़की के ठीक सामने हाते में जमा ली थी और वहाँ बैठा घंटों तावड़तोड़ हथौड़ी चलाया करता और उसको इस बात से एक ढंग का सन्तोष मिलता कि उसके काम से कोर्चागिन की पढ़ाई में बाधा पड़ रही है।

वह दाँत पीस कर अपने मन में कहता, "रुको बच्चू, मैं ऐसी हालत पैदा कर दूँगा कि सर पर पैर रख कर भागोगे....।"

दूर क्षितिज पर स्टीमर का काला धुआँ पानी पर फैला हुआ था। समुद्री चिड़ियों का झुण्ड अपनी तेज और तीखी आवाज में शोर करता हुआ समुद्र की सतह पर टूटता था।

पावेल हथेली पर अपनी ठुड्डी टिकाये अपने विचारों में डूबा बैठा था। उसकी पूरी जिन्दगी, बचपन से लेकर आज तक, जल्दी-जल्दी उसकी मन की आँखों के आगे घूम गई। उसकी जिन्दगी के चौबीस बरस कैसे बीत गये थे? उसने अपनी जिन्दगी को ठीक से बिताया था या नहीं? उसने साल-के-साल उनके ऊपर दुबारा ग़ौर किया, गम्भीरता से, निष्पक्ष होकर, और तब उसे यह जान कर बड़ा सन्तोष मिला कि उसने जिन्दगी को कुछ यों ही नहीं बिताया था, उसका ठीक ही इस्तेमाल उसने किया था। उसमें ग़लतियाँ जरूर हुई थीं, जवानी की अनुभव-हीनता की ग़लतियाँ और मुख्य रूप से समझदारी की कमी की ग़लतियाँ। मगर सोवियत सत्ता के लिए होने वाले संघर्ष के तूफ़ानी दिनों में वह लड़ाई के तूफ़ान में रहा था और क्रान्ति के लाल झण्डे पर उसके अपने खून की भी कुछ बूँदें जरूर थीं।

जब तक उसकी शक्तियों ने जवाब न दे दिया, वह बराबर लड़ने वालों की क़तार में रहता आया और अब घायल हो जाने पर, जब कि गोली चलाने वालों की क़तार में खड़े रहना उसके लिए मुमकिन न था, इसके सिवा वह और कर भी क्या सकता था कि मैदानी अस्पताल में दिन गुजारे? उसे उस समय की याद आई जब उन लोगों ने वारसा पर हमला किया था और लड़ाई जब अपने शिखर पर थी, तो कैसे एक सिपाही को गोली लगी थी। वह अपने घोड़े की टापों के नीचे जमीन पर गिर पड़ा। उसके साथियों ने जल्दी-जल्दी उसके जख्म पर पट्टी बाँधी, उसे स्ट्रेचर वालों के सिपुर्द किया और दुश्मन का पीछा करते हुए तेजी से आगे निकल गये। एक घायल सैनिक के लिए आगे बढ़ता हुआ दस्ता रुका न था। एक महान लक्ष्य के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई में ऐसा ही हो सकता था और ऐसा ही

हुआ। यह सही है कि उसने ऐसे तोपची भी देखे थे जिनकी टाँगें न थीं और जो तोप को खींचने वाली गाड़ियों पर सवार होकर लड़ाई में जाते थे। ऐसे आदमी दुश्मन को दहला कर रख देते थे, उनकी तोपें चारों तरफ़ मौत और तबाही बिखेर देती थीं और अपनी इस्पाती हिम्मत और कभी न चूकने वाली आँख के कारण वे अपनी टुकड़ियों के गर्व भी होते थे। मगर ऐसे लोग बहुत कम थे।

अब उसे क्या करना था, जब पराजय ने उसे छुा लिया था और लड़ने वालों की क़तार में वापस पहुँचने की कोई उम्मीद न थी? क्या उसने बाज़ानोवा से खोद-खोद कर यह बात न पूछ ली थी कि उसे भविष्य में और भी बड़ी यातनाएँ भुगतनी पड़ेंगी? तो अब क्या किया जाय? यह सवाल, उसके पैरों के पास फैली हुई चौड़ी-सी खाई की तरह, मुँह बाये उसके सामने खड़ा था और इसका कोई जवाब उसके पास न था।

अब वह किस चीज के लिए जीये, जब वही चीज न रही जो उसकी नजर में सबसे अनमोल थी, यानी लड़ सकने की योग्यता? वह क्या कह कर अपने मन को समझाये कि वह आज किस चीज के लिए जी रहा है और कल किस चीज के लिए जीयेगा, जब कहीं कोई खुशी नहीं? किस तरह वह अपनी जिन्दगी के दिनों को गुजारे? जीये सिर्फ़ साँस लेने के लिए, खाने के लिए, पीने के लिए? उसके साथी लड़ते हुए आगे बढ़ रहे हों और वह असहाय दर्शक की तरह खड़ा रहे? एक बोझ बन जाय अपनी फ़ौजी टुकड़ी के लिए? क्या यह बेहतर न होगा कि वह अपने शरीर को खतम कर दे जिसने उसके साथ दग़ा की? सीने में एक गोली— और मामला साफ़, यह बेमतलब जिन्दगी खत्म! एक जिन्दगी जो अच्छी तरह बिताई गई, जिसके लिए आदमी को फ़ख्र हो सकता है, उसका यही मुनासिब अन्त होगा, इसके बाद भी जीना तो लाश को घसीटना होगा। अपनी यन्त्रणा को खतम करने के लिए जिस सिपाही ने अपने-आपको खतम कर दिया, उसकी निन्दा कोई क्यों करेगा?

उसने अपने जेब में पड़ी हुई चपटी ब्राउनिंग पिस्तौल का स्पर्श अनुभव किया। उसके हत्थे पर उसकी उँगलियाँ मजबूती से जम गईं और धीरे-धीरे उसने अपनी पिस्तौल निकाली।

"किसने सोचा था कि तुम्हारा यह अन्त होगा?"

पिस्तौल की नली ठण्डी उपेक्षा से उसकी ओर देख रही थी। उसने पिस्तौल अपने घुटने पर रख ली और अपने-आपको बुरा-भला कहने लगा।

"वीरता का यह प्रदर्शन बहुत सस्ता है दोस्त! खुद को गोली मार कर तुम दिखलाना चाहते हो कि बड़ी बहादुरी का काम कर रहे हो! मगर इसमें क्या

रखा है, कोई भी अपने-आपको गोली मार सकता है, बेवकूफ़-से-बेवकूफ़ आदमी भी। यह तो सबसे आसान रास्ता है, कायर आदमी का रास्ता। जब जिन्दगी भारी हो जाय, तब गोली तो मारी ही जा सकती है। मगर क्या तुमने जिन्दगी से लड़ कर उसे हराने की कोशिश की? क्या तुम विश्वास के साथ यह कह सकते हो कि इस फ़ौलादी घेरे को तोड़ कर निकलने की तुमने हर मुमकिन कोशिश की? क्या तुम नोवोग्राद-वोलिन्स्की की उस लड़ाई को भूल गये जिसमें हमने दिन-भर में सत्रह बार हमले किये और आखिरकार सभी मुश्किलों के बावजूद कामयाबी हासिल की? पिस्तौल को रख दो और कभी इसकी बात किसी से न कहना। जीवन जब असह्य हो उठे, तब भी जीने की कला सीखो। अपने जीवन को उपयोगी बनाओ।"

वह उठ खड़ा हुआ और सड़क पर चलने लगा। उधर से गुज़रते हुए एक पर्वतारोही ने उसे अपनी गाड़ी पर चढ़ा लिया। शहर पहुँच कर वह उतर गया और उसने एक अख़बार खरीदा और देमियान बेदनी क्लब में शहर के पार्टी ग्रुप की एक मीटिंग का ऐलान पढ़ा। उस रात को जब पावेल घर लौटा तो बहुत देर हो गई थी। वह उस मीटिंग में बोला भी था और उसे इस बात का क़तई गुमान न था कि वह अपनी जिन्दगी में आखिरी बार किसी बड़ी आम मीटिंग में बोल रहा है।

वह घर लौटा तो उसने देखा कि ताया अब भी जगी हुई थी। पावेल के इतनी देर तक न आने से वह परेशान हो रही थी। सोच रही थी कि उसके साथ क्या बात हो गई जो वह घर नहीं लौटा। उसे इसलिए और भी परेशानी हो रही थी कि उस सुबह को उसने पावेल की आँखों में एक अजीब कठोर, ठण्डा भाव देखा था, उन आँखों में जो हमेशा जिन्दगी से इतनी भरपूर नज़र आती थीं। उसे अपने बारे में बात करना अच्छा नहीं मालूम होता था। मगर ताया महसूस कर रही थी कि पावेल को कोई गहरी मानसिक परेशानी है।

उसकी माँ के कमरे की दीवाल घड़ी ने जिस वक़्त दो का घंटा बजाया, उसने फाटक के चूँ करने की आवाज़ सुनी और अपनी जाकट चढ़ाती हुई दरवाज़े को खोलने के लिए गई। ताया उसके पास से गुज़री तो लोला, जो अपने कमरे में सो रही थी, बेचैनी से बड़बड़ाई।

"मुझे परेशानी होने लगी थी," ताया ने खुशी और इतमीनान से फुस-फुसा कर उस समय कहा जब कि पावेल हॉल के अन्दर दाखिल हुआ।

पावेल ने भी वैसे ही धीमे से जवाब दिया, "ताया, जब तक मैं जिन्दा

हूँ, मुझे कुछ नहीं हो सकता। लोला सो रही है? किसी वजह से मुझे ज़रा भी नींद नहीं आ रही है। मुझे तुमसे कुछ बात कहनी है। चलो हम लोग तुम्हारे कमरे में चलें ताकि लोला की नींद न ख़राब हो।"

ताया हिचकिचाई। रात बहुत जा चुकी थी। इतनी रात गये वह कैसे पावेल को अपने कमरे में ले जाय? माँ क्या सोचेगी? मगर वह इनकार न कर सकी क्योंकि उसे डर था कि पावेल का जी दुखेगा। उसने अपने मन में कहा, "क्या बात हो सकती है," और उसे अपने कमरे में ले गई।

"बात यह है ताया," पावेल ने धीमी आवाज़ में शुरू किया। कमरे में मद्धिम प्रकाश था और पावेल ताया के ठीक सामने बैठ गया, इतने पास कि ताया उसकी साँस को महसूस कर सकती थी। "ज़िन्दगी कभी-कभी ऐसे अजीब मोड़ ले लेती है कि आदमी हैरान रह जाता है। मेरे पिछले कुछ दिन बहुत ही बुरे गुज़रे हैं। मेरी समझ ही में नहीं आता था कि मैं जीऊँ कैसे। इसके पहले कभी मुझे ज़िन्दगी इतनी अंधेरी न नज़र आई थी। मगर आज मैंने अपने मन के पोलिटिकल ब्यूरो की एक मीटिंग की और उसमें एक बहुत अहम फ़ैसला किया। मैं जो कुछ तुमसे कहने जा रहा हूँ, उसे सुन कर चौंकना मत।"

उसने ताया को वह सब-कुछ बतलाया जो पिछले महीनों उस पर गुज़रा था और बहुत-सी वे बातें भी जो उस दिन पार्क में उसके मन में आई थीं।

"तो यही मेरी परिस्थिति है। अब वह सबसे ज़रूरी बात मैं तुमसे कहना चाहता हूँ। इस घर के अन्दर तूफ़ान अब शुरू ही हो रहा है। हमें इस कुएँ में से जितनी दूर मुमकिन हो सके, बाहर ताज़ी हवा में चले जाना चाहिए। हमें नये सिरे से अपनी ज़िन्दगी शुरू करनी चाहिए। एक बार जब मैंने इस लड़ाई में हिस्सा लिया है तो मैं अन्त तक उसको निभाऊँगा। हम लोगों की, यानी तुम्हारी और मेरी ज़िन्दगी इस वक़्त कुछ बहुत सुखी नहीं है। मैंने फ़ैसला किया है कि इसके अन्दर कुछ नई गरमाहट डालूँगा। क्या तुम जानती हो कि मेरा क्या मतलब है? तुम क्या मेरी जीवन-संगिनी, मेरी पत्नी बनोगी?"

ताया साँस रोक कर उसकी बातों को सुन रही थी और इन अन्तिम शब्दों को सुन कर चौंक पड़ी।

पावेल अपनी बात कहता गया, "मैं आज रात ही तुमसे जवाब देने के लिए नहीं कह रहा हूँ। तुम अच्छी तरह इस चीज़ पर विचार कर लो। मैं समझता हूँ कि तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आ रही है कि पहले बहुत दिन तक प्रेम का क़िस्सा चलाये बिना कैसे यह चीज़ ऐसे लठमार तरीक़े से कही जा सकती है। मगर हमको इस तरह की वाहियात बातों की कोई ज़रूरत नहीं है? यह लो,

मैं तुम्हें अपना हाथ देता हूँ। अगर तुम मुझ पर विश्वास करोगी तो मुझे ग़लत न समझोगी। हम दोनों एक-दूसरे को बहुत कुछ दे सकते हैं। मैंने जो निश्चय किया है वह यह कि हमारा सम्बन्ध तब तक क़ायम रहेगा जब तक कि तुम एक सच्ची इन्सान, एक सच्ची बोल्शेविक नहीं बन जाती। अगर मैं तुम्हारे लिए इतना भी न कर सकूँ तो मेरा मोल कौड़ी के बराबर भी नहीं। तब तक हमें यह सम्बन्ध नहीं तोड़ना होगा। मगर जब तुम बड़ी हो जाओगी, समझदार हो जाओगी, तब तुम्हारे ऊपर किसी क़िस्म की क़ैद नहीं रहेगी। कौन जानता है क्या हो? हो सकता है कि मेरा शरीर बिलकुल टूट जाय और उस हालत में इस बात को याद रखना कि तुम अपने-आपको किसी भी तरह मुझसे बँधा हुआ न समझना।"

कुछ क्षणों के लिए वह ख़ामोश हो गया और फिर प्यार से भरी हुई, नरम आवाज में बोला : "और फिलहाल मैं तुम्हें अपनी दोस्ती और अपना प्यार देना चाहता हूँ।"

उसने ताया का हाथ अपने हाथ में ले लिया और बड़ा इतमीनान महसूस करने लगा मानो ताया अपनी रज़ामन्दी दे चुकी हो।

"तुम वादा करते हो कि मुझे कभी नहीं छोड़ोगे?"

"मैं तुम्हें सिर्फ़ वचन दे सकता हूँ ताया। अब तुम चाहे विश्वास करो चाहे न करो, लेकिन तुम्हें समझना चाहिए कि मेरे जैसे आदमी अपने दोस्तों के साथ दग़ा नहीं करते···इतना बहुत है कि वे मेरे साथ दग़ा न करें," उसने तीखेपन से इतना और जोड़ दिया।

ताया ने जवाब दिया, "मैं आज रात तुमको जवाब नहीं दे सकती। मुझे सोचने का समय दो, यह तो बड़ी अचानक बात हो गई।"

पावेल उठ खड़ा हुआ।

"सो जाओ ताया। सुबह होने में अब देर नहीं है।"

वह अपने कमरे में चला गया और बिना कपड़े उतारे बिस्तर पर लेट गया और इधर उसका सिर तकिये से लगा और उधर वह नींद में डूब गया।

पावेल के कमरे में खिड़की के पास वाली मेज़ पर पार्टी की लाइब्रेरी की किताबों, अख़बारों और कई कापियों का ढेर लगा था जिनमें पावेल ने अपने नोट लिख रखे थे। इसके अलावा उसके कमरे में था एक बिस्तर, दो कुर्सियाँ और चीन का एक बड़ा-सा नक़्शा जिस पर काली और लाल झंडियाँ पिन से खुँसी हुई थीं और जो उसके और ताया के कमरे के बीच के दरवाज़े के ऊपर पिन से जड़ा हुआ था। स्थानीय पार्टी कमिटी के लोगों ने पावेल को उसकी ज़रूरत की किताबें और पत्र-पत्रिकाएँ देना मंजूर कर लिया था और वादा किया था कि शहर की

सबसे बड़ी पब्लिक लाइब्रेरी के मैनेजर से कह देंगे कि पावेल जो-कुछ भी माँगे, वह उसे भेज दिया करे। कुछ ही दिन बाद किताबों के बड़े-बड़े पार्सल आने लगे। लोला को यह देख कर बड़ी हैरानी होती थी कि वह बड़े सबेरे से उठ कर अपनी किताबें लिये बैठा होता और सारा दिन पढ़ता रहता और नोट बनाता रहता और सिर्फ़ नाश्ते और खाने के लिए थोड़ी-थोड़ी देर को उठता। शाम का वक़्त वह दोनों लड़कियों के साथ गुज़ारता था और उन्हें अपनी दिन भर की पढ़ी हुई बातें बतलाया करता।

आधी रात के भी बहुत बाद तक बुड्ढा क्युत्सम अपने इस अवांछित अतिथि, पावेल के कमरे के दरवाज़े की संध में से आती हुई रोशनी की पतली किरणों को देखता। वह पंजे के बल खिड़की तक जाता और दरवाज़े की संध में आँख लगा कर भीतर को झाँकता तो देखता कि पावेल सिर झुकाये मेज पर पढ़ रहा है।

बुड्ढा अपने कमरे में लौटते हुए बड़बड़ाता, "शरीफ़ लोग न जाने कब सो गये मगर इसे देखो कि रात-भर रोशनी जलाता रहता है। समझता है कि जैसे वही यहाँ का मालिक हो। जब से वह यहाँ आया है, लड़कियाँ भी हाथ से बिलकुल निकल गई।"

आठ साल में पहली बार पावेल को खूब अवकाश मिल रहा था और उस पर किसी तरह के काम की कोई ज़िम्मेदारी न थी। उसने अपने वक़्त का अच्छा इस्तेमाल किया और खूब ही उत्साह से पढ़ता रहता, वह उत्साह जो नये जिज्ञासुओं में ही पाया जाता है। वह दिन में अठारह घंटे पढ़ता। कहा नहीं जा सकता कि इस क़दर मेहनत को उसकी सेहत और कितने दिन तक बर्दाश्त कर सकती। मगर एक रोज़ ताया ने यूँ ही एक बात कह दी जिसने सारा नक़्शा ही बदल दिया।

"तुम्हारे कमरे में खुलने वाले दरवाज़े में जो आलमारी अड़ी हुई थी, उसको मैंने अलग कर दिया है। अब अगर कभी तुम्हारी इच्छा मुझसे बात करने की हो तो तुम सीधे मेरे कमरे में आ सकते हो। लोला के कमरे में से होकर आने की कोई जरूरत नहीं।"

आवेग से पावेल का चेहरा तमतमा गया। ताया खुशी से मुस्कराई। उनके सम्बन्ध पर मुहर लग गई।

बुड्ढे को अब कोने वाले कमरे की बन्द खिड़की की संध में से रोशनी

नज़र नहीं आती और ताया की माँ ने भी बेटी की आँखों में एक चमक देखी जो एक ऐसे सुख का पता दे रही थी जिसे वह लड़की छिपा न पाती थी। उसकी आँखों के नीले हलक़े विनिद्र रातों की कहानी कहते थे। अब अक्सर उस छोटे-से घर में ताया के गाने और गिटार के बजने की गूँज सुनाई देती।

मगर ताया का सुख बिना काँटों का नहीं था। उसका जागा हुआ नारीत्व उनके सम्बन्ध की गोपन प्रकृति के ख़िलाफ़ विद्रोह करता था। हर आवाज़ पर वह काँप-काँप जाती थी, क्योंकि उसे लगता था कि जैसे वह अपनी माँ के क़दमों की आहट सुन रही हो। मान लो अगर वे पूछ बैठें कि वह क्यों रात को अपने कमरे की कुंडी चढ़ा लेती है तो? इस ख़याल से उसे तकलीफ़ होती थी। पावेल ने उसके इस भय को लक्ष्य किया और उसे आश्वस्त करने की कोशिश की।

वह बड़ी नरमी से कहता, "तुम्हें किस चीज़ का डर है? हम दोनों ही तो यहाँ के मालिक हैं। इतमीनान से सोओ। कोई हमारी ज़िन्दगी में मदाख़लत न करने पायेगा।"

आश्वस्त होकर वह अपना गाल उसके सीने पर रख लेती और अपने प्रेमी को अपनी बाँहों में भरे हुए सो जाती और वह जागता पड़ा रहता और उसकी निश्चिन्त निर्द्वन्द्व साँसें सुनता रहता। वह ज़रा भी न हिलता-डुलता ताकि ताया की नींद न ख़राब हो और भीतर-बाहर से उसका मन इस लड़की के लिए गहरे प्यार से भर उठता जिसने अपनी ज़िन्दगी उसके हाथों में सौंप दी थी।

ताया की आँखों की चमक का राज़ सबसे पहले लोला ने समझा और उस दिन से दोनों बहनों के बीच एक खाई-सी पड़ गई। जल्दी ही माँ ने भी इस चीज़ का पता पा लिया, या यों कहें कि उसने भाँप लिया। और तब उसे परेशानी हुई। उसे कोर्चागिन से इस चीज़ की उम्मीद न थी।

उसने लोला से कहा, "ताया का इस आदमी के साथ कुछ ठीक जोड़ नहीं बैठता। मैं तो समझ नहीं पा रही हूँ कि इसका क्या नतीजा निकलेगा?"

उसके मन में तरह-तरह की चिन्ताएँ उठीं मगर उसे इतना साहस न हुआ कि कोर्चागिन से कुछ कह सके।

बहुत-से नौजवान पावेल के पास आने लगे और कभी-कभी तो इतने लोग हो जाते कि उस छोटे-से कमरे में उन सबके लिए काफ़ी जगह ही न रहती। मधु-मक्खियों की गुंजार की तरह उन लोगों की आवाज़ें बुड्ढे के कान में पड़तीं और अक्सर वह उन लोगों का कोरस गान सुनता :

गूँज रहा है यह डरावना पागल सागर
गूँज रहा दिन-रात क्रुद्ध भीषण इसका स्वर···

और पावेल का प्रिय गाना :

सारी दुनिया भीज गई आँखों के जल से

यह नौजवान कार्यकर्ताओं का वह स्टडी सर्किल था जिसे पार्टी कमिटी ने पावेल के जिम्मे किया था क्योंकि वह बार-बार माँग कर रहा था कि उसे प्रचार का काम दिया जाय। इसी तरह पावेल के दिन गुज़रते थे।

उसने एक बार फिर अपने दोनों हाथों से मज़बूती से पतवार पकड़ ली थी और उसकी ज़िन्दगी की किश्ती, जो कई बार चट्टानों से टकराते-टकराते बची थी, अब फिर एक नई राह पर आगे बढ़ी जा रही थी। उसका यह सपना कि वह अध्ययन के ज़रिये फिर से लड़ने वाले सैनिकों की क़तार में शरीक हो सकेगा, पूरा होने आ रहा था।

मगर ज़िन्दगी उसकी राह में काँटे बिछाती जा रही थी और वह हर काँटे को बहुत तकलीफ़ और क्षोभ के साथ देखता था क्योंकि उसके कारण उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में देर हो रही थी।

एक रोज़ वह अभागा विद्यार्थी जौर्ज मास्को से आ गया और अपने साथ अपनी बीबी भी लेता आया। वह अपने बैरिस्टर ससुर के घर ठहरा और वहाँ से अपनी माँ को पैसे के लिए परेशान करने लगा।

जौर्ज के आने से क्युत्सम घराने की खाई और चौड़ी हो गई। जौर्ज ने निस्संकोच होकर अपने बाप का साथ दिया और अपनी बीबी के घर वालों की मदद से, जो कुछ-कुछ सोवियत-विरोधी थे, उसने बेजा तरीक़ों का इस्तेमाल करके कोर्चागिन को घर से निकालने की कोशिश की और ताया को बहलाना चाहा कि वह कोर्चागिन से सम्बन्ध-विच्छेद कर ले।

जौर्ज के आने के दो हफ्ते बाद लोला को एक दूसरे शहर में नौकरी मिल गई और वह अपनी माँ और छोटे-से लड़के को लेकर चली गई। उसके कुछ ही रोज़ बाद पावेल और ताया भी दूर के एक शहर में चले गये जो समुद्र के किनारे था।

आर्तेम को अपने भाई के ख़त बहुत कम ही मिलते थे। मगर कभी-कभी जब उसे अपनी परिचित लिखावट का लिफ़ाफ़ा शहर की सोवियत में अपनी मेज़ पर पड़ा मिलता तो वह बड़े आवेग से उसके पन्नों पर नज़र दौड़ाता। यह आवेग आर्तेम के लिए असाधारण चीज़ थी। आज भी जब उसने लिफ़ाफ़ा खोला तो प्यार से भरते हुए सोचा :

"आह पावेल! काश कि तुम मेरे और पास रहा करते। मुझे तुम्हारी सलाह की कितनी जरूरत पड़ती है!"

उसने पढ़ा :

"आर्तेम, मैं आज तुम्हें वह सब-कुछ बतलाने के लिए ख़त लिख रहा हूँ जो पिछले दिनों मुझ पर गुज़रा है। ऐसी बातें मैं तुम्हें छोड़ और किसी को नहीं लिखता। मगर मैं जानता हूँ कि मैं अपनी गुप्त-से-गुप्त बात तुमसे कह सकता हूँ क्योंकि तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो और मेरी बात को समझोगे।

"तन्दुरुस्ती के मोर्चे पर जिन्दगी मुझे बराबर दबाती जा रही है और एक के बाद दूसरी चोट लगा रही है। एक चोट के बाद मैं किसी-किसी तरह अपने पैरों पर खड़ा हो पाता हूँ कि दूसरी चोट, पहली से भी ज़्यादा निर्मम, ज़्यादा कठोर, आकर मुझे ढेर कर देती है। सबसे भयानक बात यह है कि इसका मुक़ाबला करने की ताक़त मेरे अन्दर नहीं है। पहले मेरी बाईं बाँह में लक़वा लगा। और अब जैसे कि उतना ही काफ़ी न हो, मेरी टाँगों ने जवाब दे दिया है। पहले ही मैं मुश्किल से चल-फिर सकता था (यानी अपने कमरे के अन्दर)। मगर अब तो मेरे लिए बिस्तर से मेज़ तक घिसट कर जाना भी मुश्किल हो गया है। और अभी और भी पता नहीं क्या-क्या देखना है। कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा।

"मैं कभी घर से बाहर नहीं जाता और मेरी खिड़की से समुद्र का एक बहुत छोटा-सा टुकड़ा दिखाई देता है। क्या इससे ज़्यादा करुण कोई बात हो सकती है कि एक ही आदमी में ऐसी दो विरोधी चीज़ों का मेल हो जाय—एक दग़ाबाज़ शरीर जिस पर किसी का वश न हो और एक बोल्शेविक का दिल, ऐसे बोल्शेविक का जो काम करने के लिए तरसता है, लड़ने वालों की क़तार में, तुम्हारी बग़ल में आकर खड़ा होना चाहता है, उन लोगों की क़तार में जो आँधी और तूफ़ान में पूरे मोर्चे पर आगे बढ़ रहे हैं!

"मुझे अब भी विश्वास है कि मैं लड़ने वालों की क़तार में शरीक हो सकूँगा और हमला करने वाले दस्तों में मेरी संगीन की भी अपनी जगह होगी। मुझे यह विश्वास करना ही होगा, इस विश्वास को मैं छोड़ दूँ, इसका मुझे अधिकार नहीं है। दस साल तक पार्टी और कोमसोमोल ने मुझे लड़ना सिखाया है और हमारे नेता के शब्द, जो सबको सम्बोधित

करके कहे गये थे, मेरे ऊपर उसी तरह लागू होते हैं : 'ऐसे कोई क़िले नहीं हैं जिन्हें बोल्शेविक नहीं फ़तह कर सकते।'

"मेरी ज़िन्दगी इन दिनों पूरी तरह पढ़ाई में ही गुज़र रही है। किताबें, किताबें और किताबें। मैंने बहुत-कुछ पढ़ लिया है आर्तेम। मैंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की तमाम बुनियादी किताबें अच्छी तरह पढ़ ली है और कम्युनिस्ट यूनीवर्सिटी की पत्रों द्वारा दी गई शिक्षा का पहले साल का इम्तहान पास कर लिया है। शाम को मैं कम्युनिस्ट नौजवानों का स्टडी सर्किल लेता हूँ। ये नौजवान साथी पार्टी-संगठन की अमली ज़िन्दगी के साथ मेरे सम्बन्ध की कड़ी हैं। फिर ताया है जिसकी राजनीतिक शिक्षा और सामान्य ज्ञान को बढ़ाने की मैं भरसक कोशिश कर रहा हूँ। और फिर प्यार तो है ही और मेरी छोटी-सी बीबी की मुहब्बत की बातें। हम दोनों, ताया और मैं, एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त हैं। हमारा घर बड़ी सादगी से चलता है—मेरी बत्तीस रूबल की पेन्शन और ताया की कमाई से हमारा काम काफ़ी अच्छी तरह चल जाता है। ताया उसी रास्ते पर चल रही है जिस रास्ते से मैं पार्टी में पहुँचा : कुछ दिन तक उसने एक घर में नौकरानी का काम किया और अब एक पब्लिक डाइनिंग रूम में (इस क़स्बे में कोई उद्योग-धन्धे नहीं हैं) रकाबी धोने का काम करती है।

"अभी उस रोज़ की बात है कि ताया ने बड़े गर्व से मुझे अपना डेलीगेट का पहला पास दिखलाया जो उसे महिला विभाग ने दिया है। उसके लिए यह कोरी दफ़्ती का एक टुकड़ा नहीं है। उसके अन्दर मैं नई ज़िन्दगी के जन्म को देख रहा हूँ और नये के इस जन्म में मैं उसकी मदद करने की हर मुमकिन कोशिश कर रहा हूँ। इसके बाद का अगला क़दम होगा एक बड़े कारखाने में काम करना। वहाँ मेहनतकशों की एक बड़ी जमात के अंग के रूप में उसके अन्दर धीरे-धीरे राजनीतिक परिपक्वता आयेगी। मगर यहाँ तो जो अकेला रास्ता उसके लिए खुला है, उसी को वह ले रही है।

"ताया की माँ दो बार हमसे मिलने आ चुकी हैं। अपने अनजाने में ही वह इस बात की कोशिश कर रही हैं कि ताया को फिर उन्हीं ओछी बातों की ज़िन्दगी में घसीट लिया जाय, उसी टुच्ची ज़िन्दगी में जो चारों तरफ़ छोटे-मोटे स्वार्थों से घिरी हुई है। मैंने अलबिना को यह समझाने की कोशिश की कि उसे ऐसा कुछ न करना चाहिए जिससे कि उसके पिछले कुत्सित जीवन की छाया उस रास्ते को अंधेरा कर दे जिसे उसकी

लड़की ने अपने लिए चुना है। मगर कोई नतीजा नहीं निकला। मैं महसूस कर रहा हूँ कि एक-न-एक रोज माँ अपनी बेटी के रास्ते में आड़े आयेगी और तब झगड़ा होकर रहेगा। प्यार लो, *तुम्हारा—पावेल।*"

पुराने मत्सेत्सा में सेनेटोरियम नम्बर पाँच····ईंट की एक तिमंजिला इमारत, पहाड़ के कगर पर खड़ी हुई। चारों तरफ़ घना जंगल और एक टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता समुद्र की तरफ़ को। खिड़कियाँ खुली हुई हैं और हवा के साथ गन्धक के सोतों की गन्ध कमरे में आ रही है। पावेल कोर्चागिन कमरे में अकेला है। कल नये मरीज आयेंगे और तब उसे अपने कमरे का साथी मिलेगा। खिड़की के बाहर वह पैरों की आहट और एक परिचित आवाज को सुनता है। कई लोग बात कर रहे हैं। मगर यह गहरी भारी आवाज उसने पहले कहाँ सुनी है? स्मृति के धुँधले पर्दों के पीछे से, जहाँ वह छिपा पड़ा था मगर भूला न था, वह नाम उसके दिमाग़ में आता है: लेदेनेव इन्नोकेंती पावलोविच। वही है और कोई नहीं।"

पावेल ने विश्वास से अपने मित्र को आवाज दी और क्षण-भर बाद लेदेनेव उसके बिस्तर के बग़ल में खड़ा उससे हाथ मिला रहा था।

"तो कोर्चागिन अब भी मजे में चला जा रहा है? हाँ तो तुम्हें अपने बारे में क्या कहना है? मैं यह नहीं सुनना चाहता कि तुमने लम्बी बीमारी का फ़ैसला किया है? नहीं, यह नहीं होने का! तुम्हें मुझसे नसीहत लेनी चाहिए। डाक्टरों ने मुझे भी उठा कर ताक़ पर रखने की कोशिश की, मगर मैं बावजूद उनके मजे में चला जा रहा हूँ।" और लेदेनेव दिल खोल कर हँसा।

मगर पावेल ने उस हँसी के पीछे छिपी हुई सहानुभूति और वेदना को अनुभव किया।

उन्होंने दो घंटे साथ गुजारे। लेदेनेव ने पावेल को मास्को की ताजी-ताजी खबरें सुनाईं। उसी से पावेल को खेती के समूहीकरण और गाँवों की जिन्दगी के पुनर्संगठन के बारे में पार्टी के अहम फ़ैसलों की बात पहले-पहल मालूम हुई और उसने प्यासे की भांति उसके एक-एक शब्द को पी लिया।

लेदेनेव ने कहा, "मैं तो सोच रहा था कि तुम अपने उक्रेन में कुछ हलचल मचा रहे होगे। मगर तुमने तो मुझे निराश कर दिया। पर कोई बात नहीं, मेरी हालत तो तुमसे भी खराब थी। मैं तो सोचता था कि मैंने हमेशा के लिए बिस्तर पकड़ लिया और अब देखो मैं मजे में चल-फिर रहा हूँ। आजकल जिन्दगी में आराम नहीं है। उससे काम ही नहीं चल सकता! मैं अपने दिल का चोर तुमसे कहूँ, मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि कैसा अच्छा हो अगर थोड़ा आराम

कर सकूँ। यही समझो कि चैन से साँस ले सकूँ। यह भूलने से तो काम नहीं चलेगा कि मैं अब पहले की तरह जवान नहीं हूँ और कभी-कभी दिन में दस-बारह घंटे काम करना मेरे लिए मुश्किल हो जाता है। मगर उससे होता क्या है, मैं थोड़ी देर इस विचार से अपने जी को बहला लेता हूँ और अपने बोझ को कम भी करने लग जाता हूँ। मगर उसका नतीजा कुछ खास नहीं निकलता। पता नहीं कब और कैसे फिर से तुम काम के पहाड़ के नीचे दब जाते हो और आधी रात के पहले घर लौटना नसीब होता। जितनी ही ताक़तवर मशीन होती है, उतने ही तेज उसके पहिये दौड़ते हैं और हम लोगों का तो यह हाल है कि हमारी रफ्तार रोज-ब-रोज बढ़ती जाती है, यहाँ तक कि हमारे-जैसे बुड्ढों को भी नौजवान बने रहना पड़ता है।"

लेदेनेव ने अपनी चौड़ी पेशानी पर हाथ फेरा और बड़ी नरमी से बोला :

"और अब तुम मुझे अपने बारे में बतलाओ।"

अपनी पिछली मुलाक़ात से लेकर अब तक पावेल ने लेदेनेव को अपनी जिन्दगी का ब्यौरा दिया और बोलते समय उसने अपने दोस्त की प्यार-भरी निगाहें अपने ऊपर महसूस कीं, मानो वे निगाहें उसकी बात का समर्थन कर रही हों।

चट्टान के एक कोने में पेड़ों की छाया में सेनेटोरियम के कुछ मरीज एक छोटी-सी मेज के चारों तरफ़ बैठे हुए थे। उनमें से एक 'प्रावदा' पढ़ रहा था, उसकी घनी भवों में बल पड़े हुए थे। उसकी काली रूसी कमीज, पुरानी-सी चिंगुड़ी-मिंगुड़ी टोपी, और दाढ़ी बढ़ा हुआ चेहरा, गढ़े में धँसी हुई नीली आँखें—इन सबसे पता चलता था कि वह पुराना खान मजदूर है। खिसांफ़ चेर्नोकोजोव को खान छोड़े और एक महत्वपूर्ण सरकारी पद पर पहुँचे बारह बरस हो चुके थे, मगर उसको देख कर ऐसा लगता था कि जैसे वह अभी-अभी खान में से निकल कर आ रहा हो। उसकी चाल-ढाल, उसका बोलने का तरीका, उसकी हर एक चीज से पता चल जाता था कि वह खान का मजदूर है।

चेर्नोकोजोव पार्टी की इलाक़ाई ब्यूरो का मेम्बर और सरकार का मेम्बर था। एक बहुत तकलीफ़देह बीमारी उसकी ताकत को खाये जा रही थी : चेर्नोकोजोव की टांग में गैंगरीन था जिससे उसे सख्त नफ़रत थी, क्योंकि उसीके कारण वह करीब छः महीने से बिस्तर पर पड़ा हुआ था।

उसके सामने, अपने विचार में डूबी हुई और सिगरेट का कश खींचती

हुई जिगारेवा बैठी थी—अलेक्जांड्रा अलेक्सीयेवना जिगारेवा। उसकी उम्र सैंतीस साल थी और उनमें से उन्नीस साल से वह पार्टी मेम्बर थी। पीटर्सबर्ग के अंडरग्राउंड आन्दोलन के साथी उसे 'धातु मजदूर शुरोचका' पुकारते थे। शुरोचका जब लड़की ही थी, तभी उसे साइबेरिया में निर्वासित किया गया था।

इस टोली का तीसरा सदस्य पांकोव था। उसका खूबसूरत सिर, जो किसी मूर्तिकार की छेनी से तराशा हुआ मालूम होता था, एक जर्मन पत्रिका पर झुका हुआ था और वह बीच-बीच में हाथ उठा कर सींग की डंटी वाली अपनी बड़ी-सी ऐनक को ठीक कर लेता था। कसरती शरीर वाले इस तीस साल के आदमी को अपनी लकवे की मारी टांग को घसीटते देख कर बड़ी तकलीफ़ होती थी। पांकोव सम्पादक और लेखक था और शिक्षा की कमिसारियट में काम करता था। योरप के बारे में उसे बहुत जानकारी थी और उसे कई विदेशी जबानें आती थीं। वह काफ़ी पढ़ा-लिखा आदमी था, और कम बोलनेवाला चेर्नोकोज़ोव तक उसके साथ आदर का बर्ताव करता था।

"तो वही तुम्हारे कमरे का साथी है?" जिगारेवा ने धीमे से चेर्नोकोज़ोव से कहा और उस कुर्सी की तरफ इशारा किया जिस पर पावेल कोर्चागिन बैठा हुआ था।

चेर्नोकोज़ोव ने अखबार पर से निगाह उठाई और उसकी पेशानी की झुर्रियाँ साफ़ हो गईं।

"हां! वह कोर्चागिन है। तुम्हें उसे जानना चाहिए शुरा। बड़ी बुरी बात है, बीमारी ने उसको लंगी मार दी है, नहीं तो वह हमारे बड़े काम का हो सकता था। वह कोमसोमोल की पहली पीढ़ी का आदमी है। मुझे इस बात का यक़ीन है कि अगर हम उसकी मदद करें—और वही करने का मैंने फ़ैसला किया है—तो वह अब भी काम कर सकेगा।"

पांकोव ने भी चेर्नोकोज़ोव की बात सुनी।

"उसे क्या बीमारी है?" शुरा जिमारेवा ने धीमे से पूछा।

"गृह-युद्ध का उपसंहार। उसकी रीढ़ की हड्डी में कोई तकलीफ़ है। मैंने यहाँ के डाक्टर से बात की थी और उसने मुझे बतलाया कि उसके पूरे शरीर में लकवा मार जाने का खतरा है। बेचारा लड़का!"

"मैं जाकर उसे यहाँ ले आती हूँ," शुरा ने कहा।

यही उनकी दोस्ती की शुरुआत थी। पावेल उस समय यह नहीं जानता था कि आगे चल कर उसे जिगारेवा और चेर्नोकोज़ोव से इतना प्यार हो जायगा। और यह कि आगे आने वाले अपने बीमारी के सालों में वे ही उसका सहारा बनेंगे।

ज़िन्दगी बदस्तूर बढ़ती रही। ताया काम करती थी और पावेल पढ़ता था। स्टडी सर्किल के काम को दुबारा शुरू करने के पहले एक और मुसीबत अनचिते में उस पर टूट पड़ी। लक़वे से उसकी दोनों टाँगें बिलकुल बेकार हो गईं। अब उसे सिर्फ़ अपने दाहिने हाथ पर बस रह गया। जब बार-बार कोशिश करने के बाद आखिरकार उसकी समझ में यह बात आ गई कि अपने शरीर पर उसका कोई बस नहीं रहा, तो उसने इतने ज़ोर से दांत अपने होंठ पर गड़ाये कि खून आ गया। ताया को इस बात से बड़ा क्षोभ और बड़ी पीड़ा होती थी कि वह पावेल की कोई मदद करने में असमर्थ थी। मगर उसने बड़ी वीरता से अपने मन के उस भाव को छिपा लिया। लेकिन पावेल ने मुस्करा कर मानो क्षमा मांगते हुए ताया से कहा :

" ताया अब हम दोनों को एक-दूसरे से अलग हो जाना चाहिए। यह चीज़ हमारे इक़रारनामे में नहीं थी। आज मैं इस बारे में ठीक से सोचूंगा। "

ताया ने उसको बोलने नहीं दिया। वह सिसकियाँ लेने लगी और रोते-रोते उसने अपना चेहरा पावेल के सीने में छिपा लिया।

आर्तेम को जब अपने भाई की इस आखिरी बदनसीबी की खबर मालूम हुई तो उसने अपनी मां को खत लिखा। मारिया याकोवलेवना सब कुछ छोड़ कर फ़ौरन अपने बेटे के पास गई। अब तीनों साथ रहने लगे। ताया और पावेल की मां में शुरू से ही बनने लगी।

पावेल सब कुछ के बावजूद अपना अध्ययन चलाता रहा।

जाड़े की एक शाम को ताया ने घर आकर अपनी पहली विजय का समाचार दिया—वह शहर सोवियत के लिए निर्वाचित हुई थी। उसके बाद पावेल की ताया से बहुत कम मुलाक़ात हो पाती। सेनेटोरियम की रसोई में दिन भर काम करने के बाद, और उसका काम रक़ाबियाँ धोना था, ताया सीधे सोवियत में जाती और जब बहुत रात गये घर लौटती तो थकी होती। मगर तमाम खयालात उसके अन्दर भरे होते। कुछ ही रोज़ बाद वह पार्टी मेम्बर की उम्मीदवारी के लिए दरखास्त देगी और वह बड़ी आतुर उत्सुकता से अपने उस चिर-प्रतीक्षित दिन के लिए तैयारी कर रही थी। और तभी दुर्भाग्य ने पावेल पर एक और चोट की। पावेल की बराबर बढ़ती हुई बीमारी अन्दर-ही-अन्दर अपना काम किये जा रही थी। पावेल की दाहिनी आँख में तेज़ जलन और भयानक दर्द हुआ जो तेज़ी से बाईं आँख में भी पहुँच गया। एक काला पर्दा गिर गया और उसके चारों तरफ़ की दुनिया बुझ गई और ज़िन्दगी में पहली बार पावेल ने अन्धे हो जाने की भयानकता को समझा।

एक नई बाधा चुपके-चुपके आकर उसके रास्ते में खड़ी हो गई थी—एक भयंकर, अजेय दीख पड़ने वाली बाधा। उसके कारण ताया और पावेल की माँ को बड़ी निराशा हुई। मगर पावेल बर्फ़ की तरह सर्द और ख़ामोश था। उसने अपने मन में संकल्प करते हुए कहा :

" मुझे इन्तजार करना चाहिए, देखूँ क्या होता है। अगर सचमुच आगे बढ़ने की कोई सम्भावना न हो, अगर लड़ने वालों की क़तार में वापस पहुँचने की मेरी तमाम कोशिशों को यह आँख की रोशनी का चला जाना ख़तम किये दे रहा हो, तो मैं जिन्दगी की कहानी को ही समाप्त कर दूँगा। "

पावेल ने अपने दोस्तों को चिट्ठियाँ लिखीं और उसके दोस्तों ने उसे जवाब देते हुए यह लिखा कि हिम्मत से काम लो और अपनी जिन्दगी की लड़ाई को बुलन्दी से जारी रखो।

कठिन संघर्ष के इन्हीं दिनों में एक रोज़ ताया बहुत खुश-खुश घर आई और उसने ऐलान किया :

" मैं पार्टी की उम्मीदवार हो गई, पावलुशा। "

पावेल ने उस सेल-मीटिंग का वृत्तान्त आवेश में भरी हुई ताया के मुँह से सुना जिसमें उम्मीदवारी की उसकी अर्ज़ी मंजूर हुई थी और उस समय पावेल को अपने वह दिन याद आये जब उसने पार्टी के अन्दर क़दम रखा था।

उसने ताया का हाथ दबाते हुए कहा, " अच्छा तो कामरेड कोर्चागिना, तुम और मैं मिल कर अब एक कम्युनिस्ट फ़ैक्शन बन गये। "

अगले रोज़ उसने पार्टी की जिला कमिटी के मन्त्री को एक ख़त लिखा जिसमें उससे दरख़ास्त की कि वह आकर उससे मिले। उसी शाम को एक कीचड़ में सनी हुई गाड़ी मकान के सामने आकर रुकी और उसके एक मिनट बाद वोलमर पावेल का हाथ ख़ूब जोरों से दबा रहा था। वोलमर एक अधेड़ लताविय़न था और उसकी खूब फैली हुई, कानों तक पहुँचती हुई दाढ़ी थी।

" कहो क्या हाल है ? तुम्हारी इन हरकतों का क्या मतलब है ? फ़ौरन उठ बैठो और हम तुम्हें गाँव में काम करने के लिए भेज देंगे, " उसने हँसते हुए कहा।

वह दो घंटे तक पावेल के पास रहा और उस मीटिंग के बारे में भी भूल गया जिसमें उसे जाना था। वह कमरे में टहलता रहा और पावेल के इस आग्रह-पूर्ण अनुरोध को सुनता रहा कि उसे कोई काम दिया जाय।

पावेल ने जब अपनी बात ख़तम कर ली तो उसने कहा, " स्टडी सर्किलों की बात करना छोड़ दो। तुम्हें आराम करना है। और हमें तुम्हारी आँख की भी

फ़िक्र करनी है। मुमकिन है अब भी कुछ हो सके। कैसा रहे अगर तुम मास्को जाकर अपनी आँख किसी विशेषज्ञ को दिखलाओ ? सोच देखो····।"

मगर पावेल ने उसको बीच में ही टोकते हुए कहा :

"कामरेड वोलमर, मुझे आदमी चाहिए, जीते-जागते रक्त व मांस के आदमी ! आज मुझे उन्हीं की ज़रूरत है और जितनी ज़रूरत आज है, उतनी पहले कभी न थी। मेरे पास लड़कों को भेजिए, उनको जिनके पास सबसे कम अनुभव है। वे यहाँ गाँवों में बहुत उग्र वामपक्षी होते जा रहे हैं, पंचायती खेती से उनकी शक्तियों को काफ़ी निकास नहीं मिलता, वे अपने कम्यून बनाना चाहते हैं। कोमसोमोलों को तो तुम जानते ही हो, अगर उन्हें पीछे न खींचा जाय तो कुछ अजब नहीं कि वे दस्ते के आगे-आगे चलने लगें। मैं खुद भी ऐसा ही था।"

वोलमर टहलता-टहलता रुक गया।

"तुम्हें यह बात कैसे मालूम हुई ? आज ही तो देहात से यह ख़बर मिली है।"

पावेल मुस्कराया।

"मेरी बीबी ने मुझे बतलाया। तुम्हें शायद उसकी याद हो। उसे कल पार्टी के अन्दर ले लिया गया।"

"तुम्हारा मतलब कोर्चागिना से है जो रकाबियाँ धोती है ? अच्छा तो वह तुम्हारी बीबी है ! मुझे नहीं मालूम था !" कुछ देर के लिए वह चुप हो गया। मगर तभी उसे कोई ख़याल आया और उसने अपने माथे पर हाथ मारा। मैं समझ गया कि तुम्हारे पास किसे भेजूँगा—लेव बर्सेनेव को। उससे अच्छे साथी की तुम आकांक्षा नहीं कर सकते। वह बिलकुल तुम्हारे दिल का आदमी है। तुम दोनों में खूब पटेगी—दो हाई फ्रीक्वेन्सी ट्रान्सफार्मरों की तरह। मैं भी कभी बिजली का काम करता था और उसी के शब्द अब तक मुझे याद हैं। लेव तुम्हारे लिए रेडियो तैयार कर देगा। इस काम में वह बहुत उस्ताद है। मैं अक्सर उसके घर पर कान में इयरफ़ोन लगाये दो-दो बजे रात तक बैठा रहता हूँ। मेरी बीबी को तो मुझ पर शक होने लगा। वह जानना चाहती थी कि मैं क्यों इतनी-इतनी देर करके घर लौटता हूँ।"

कोर्चागिन मुस्कराया।

उसने पूछा, "बर्सेनेव कौन है ?"

वोलमर ने टहलना बन्द कर दिया और बैठ गया।

"वह हमारा नाज़िर है, मगर सच पूछो तो उसको यह काम उतना ही आता है जितना मुझे बैले नृत्य करना। अभी हाल तक वह एक महत्वपूर्ण

पद पर था। सन् १९१२ से वह आन्दोलन में है और क्रान्ति के समय से ही पार्टी मेम्बर है। गृहयुद्ध के दिनों में वह दूसरी घुड़सवार फ़ौज की क्रान्तिकारी अदालत में काम कर चुका है। यही वह वक्त था जब ह्वाइट-गार्ड पिस्सुओं की सफाई की जा रही थी। वह जारित्सिन में भी था और दक्खिनी मोर्चे पर भी। फिर कुछ दिनों तक वह सुदूर-पूर्वी प्रजातन्त्र की सर्वोच्च फ़ौजी अदालत का भी सदस्य था। वहाँ उसे बहुत काम करना पड़ता था। और उसके दिन आसान नहीं गुजरते थे। आखिरकार उसे तपेदिक हो गया। तब वह उस सुदूर-पूर्वी इलाके को छोड़ कर यहाँ काकेशस में चला आया। पहले वह वहाँ एक सूबाई अदालत का चेयरमेन और टेरीटोरियल अदालत का नायब चेयरमेन रहा। फिर उसकी फेफड़े की बीमारी ने उसे बिलकुल ही माजूर कर दिया। तब उसके सामने यही रास्ता रह गया कि या तो यहाँ आकर आराम करे या मर जाय। इस तरह हमको इतना अच्छा नाजिर मिला। यह काम भी अच्छा है, इसमें बहुत भाग-दौड़ नहीं करनी पड़ती और उसके लिए ऐसे ही काम की जरूरत भी थी। धीरे-धीरे यहाँ के लोगों ने उसके जिम्मे एक सेल कर दिया। उसके बाद वह जिला कमिटी के अन्दर चुना गया। और फिर देखते-देखते एक राजनीतिक स्कूल का भार उसे सौंप दिया गया और अब वह कन्ट्रोल कमीशन में है। वह ऐसे तमाम महत्वपूर्ण कमीशनों का स्थायी सदस्य है जो कठिन झगड़ों को सुलझाने के लिए बनाये जाते हैं। इसके अलावा उसे शिकार का शौक़ है, उसे रेडियो भी बहुत अच्छा लगता है और गोकि अब उसके पास सिर्फ़ एक फेफड़ा है, लेकिन यह तुम उसको देख कर भांप नहीं सकते। उसके अन्दर शक्ति तो फूटी पड़ती है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उसकी मौत जिला कमिटी और अदालत के रास्ते में ही कहीं होगी।"

पावेल ने उसकी बात को काटा।

तेज स्वर में उसने पूछा, "तुम लोगों ने आखिर क्यों उस पर इतना बोझ लाद दिया है? यहाँ तो वह पहले से भी ज़्यादा काम कर रहा है।"

वोलमर ने उसको मजाक के अन्दाज में देखा और कहा:

"और मान लो मैं तुम्हें कोई स्टडी सर्किल या ऐसा ही कोई काम थमा दूँ तो लेव जरूर यही कहेगा: 'तुम लोगों ने आखिर क्यों उस पर इतना बोझ लाद दिया है?' मगर जहाँ तक उसकी अपनी बात है, वह यही कहता है कि मुझे एक साल तक डट कर काम करना मंजूर है, मगर पाँच साल अस्पताल में पड़े रह कर खटिया तोड़ना नहीं मंजूर है। ऐसा लगता है कि समाजवाद क़ायम होने के पहले हम लोग अपने आदमियों की ठीक देखभाल न कर सकेंगे।"

"यह बात बिलकुल सच है। मुझे खुद जीवन और उत्साह का एक वर्ष, बेकार बैठने के पाँच वर्षों से ज़्यादा पसन्द है। मगर यह भी मानना पड़ेगा कि हम लोग कभी-कभी अपनी शक्तियों को बहुत बुरी तरह बर्बाद भी करते हैं, जिसका हमें कोई हक़ नहीं है। अब मैं इस बात को समझ गया हूँ कि यह चीज़ वीरता का चिन्ह उतना नहीं है, जितना कि अयोग्यता और ग़ैर-जिम्मेदारी का। अब मैं इस बात को समझने लगा हूँ कि मुझे अपनी तन्दुरुस्ती के बारे में इतनी लापरवाही करने का हक नहीं था। अब मैं देख रहा हूँ कि ऐसा करके मैंने कोई बड़ी वीरता का काम नहीं किया। अगर मैंने अपने साथ वे सब फ़िज़ूल सख्तियाँ न की होतीं, तो शायद कुछ और साल चल सकता था। दूसरे शब्दों में, वामपन्थी बालव्याधि ही एक मुख्य खतरा है।"

वोलमर ने सोचा, "अभी तो यह ऐसी बात कह रहा है, मगर ज़रा पैर पर खड़े होने दो और फिर वह सारी बातें भूल जायगा और उसे सिर्फ़ काम की ही याद रह जायगा।" मगर उसने कुछ कहा नहीं।

दूसरे रोज़ शाम को लेव बर्सेनेव आया। आधी रात को वह पावेल के यहाँ से गया तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसे अपना खोया भाई मिल गया हो।

सवेरे के वक़्त लोग कोर्चागिन के घर की छत पर रेडियो का एरियल लगाने लगे और लेव घर में बैठा रेडियो तैयार करने लगा। वह काम करता जाता था और पावेल को अपनी पिछली ज़िन्दगी की दिलचस्प कहानियाँ सुनाता जाता था। पावेल उसको देख नहीं सकता था, मगर उसके बारे में ताया ने पावेल को जो-कुछ बताया था, उसके आधार पर उसने समझ लिया था कि लेव एक लम्बा, सुनहरे बालों और नीली आँखों का नौजवान है जिसकी भाव-भंगिमाओं में हृदय का आवेग भरा होता है। लेव से पहली बार मिलने पर पावेल ने अपने मन में उसकी ठीक यही छवि उतारी थी।

शाम होते-होते कमरे में रेडियो के तीन वॉल्व चमकने लगे। लेव ने गर्व से पावेल को इयरफ़ोन पकड़ाया। तमाम आवाज़ें हवा में भरी हुई थीं। पोर्ट के ट्रान्समिटर चिड़ियों की तरह चूँ-चूँ कर रहे थे और पास ही समुद्र पर किसी जहाज़ का वायरलेस डॉटों और डैशों की लहरें भेज रहा था। मगर इन सब तरह-तरह के शोरों और आवाज़ों के बीच से तार ने एक शान्त और आत्म-विश्वास से भरी हुई आवाज़ को पकड़ लिया :

"यह मास्को है····।"

उस छोटे से वायरलेस ने दुनिया के तमाम हिस्सों के आठ ब्राडकास्टिंग स्टेशन पावेल की पहुँच के भीतर ला दिये। वह ज़िन्दगी, जिससे अब वह वंचित

कर दिया गया था, इयरफ़ोन के अन्दर से अब फिर उसके पास तक पहुँचने लगी और एक बार फिर वह ज़िन्दगी की तेज़ धड़कन को महसूस करने लगा।

पावेल की आँखों में खुशी की चमक देख कर थका हुआ बर्सेनेव सन्तोष से मुस्कराया।

उस बड़े से मकान में चारों ओर निस्तब्धता थी। ताया नींद में बेचैनी से बड़बड़ा रही थी। इन दिनों पावेल की मुलाक़ात अपनी बीवी से बहुत कम ही हो पाती थी। वह बहुत रात गये थकी और सर्दी से काँपती हुई घर लौटती। उसका काम उसका ज़्यादा-से-ज़्यादा समय लेता जा रहा था और शायद ही कभी उसको एक खाली शाम मिलती। इस चीज़ के बारे में बर्सेनेव ने उससे जो-कुछ कहा था, उसकी याद पावेल को आई :

"अगर किसी बोल्शेविक की बीबी भी पार्टी कामरेड हो, तो दोनों में शायद ही कभी भेंट हो पाती है। मगर इसके दो फ़ायदे हैं : एक तो वे कभी एक-दूसरे से ऊबते नहीं और दूसरे झगड़ने का वक़्त भी नहीं मिलता!"

और सचमुच पावेल आपत्ति करता भी तो किस आधार पर? आख़िर इसी चीज़ की तो सम्भावना थी। एक वक़्त था कि ताया की सभी शामें उसी को समर्पित थीं। तब उनके आपसी सम्बन्ध में ज़्यादा गरमाहट, ज़्यादा प्यार और नरमी थी। मगर तब वह केवल उसकी पत्नी थी, अब वह उसकी शिष्या और पार्टी कामरेड थी।

वह जानता था कि ताया में जितनी ही राजनीतिक प्रौढ़ता आयेगी, उतना ही कम वक़्त वह दे सकेगी और उसने इस अनिवार्यता के आगे सिर झुका दिया।

उसे एक स्टडी सर्किल लेने का काम दिया गया और एक बार फिर शाम के वक़्त घर में आवाज़ें गूँजने लगीं। ये घंटे, जो पावेल इन नौजवानों के साथ गुज़ारता था, उसके अन्दर नई शक्ति और नया उत्साह भर देते थे।

बाक़ी वक़्त रेडियो सुनने में निकल जाता था, यहाँ तक कि खाने के वक़्त भी उसकी माँ को उसके हाथ से इयरफ़ोन को छुड़ाने में मुश्किल होती थी।

रेडियो उसे वह चीज़ देता था जो उसके अन्धेपन ने उससे छीन लिया—ज्ञान प्राप्त करने का अवसर। उसके अन्दर ज्ञान प्राप्त करने की यह जो ज़बर्दस्त भूख थी, उसके कारण वह उस दर्द को भूल जाता था जो उसके शरीर को तोड़े डाल रहा था, उस आग को जो उसकी आँखों में सलाखें चुभो रही थी और उन मुसीबतों को जिनका पहाड़ उसके ऊपर टूटा था।

जब पावेल की पीढ़ी के बाद के नौजवान कम्युनिस्टों की सफलताओं की खबर मैगनितोस्त्रोय से रेडियो पर आई तो पावेल को बेहद खुशी हुई।

उसकी सूनी आँखों के आगे उन निर्मम बर्फ़ के तूफ़ानों की तसवीर खिंच गई, यूराल के उस तीखे जाड़े-पाले की जो भूखे भेड़ियों की तरह क्रूर था। उसने हवा का तेज़ सनसनाना सुना और उड़ती हुई बर्फ़ के बीच से, दूसरी पीढ़ी के कोमसोमोलों की एक टुकड़ी को आर्क लैम्पों की रोशनी में एक विशाल कारखाने की इमारत की छत पर, उस कारखाने को बर्फ़ के हमले से बचाने के काम में लगा देखा। इसकी तुलना में जंगल का वह रेल की पटरी बिछाने का काम जिसमें कीव के कोमसोमोलों की पहली पीढ़ी ने प्रकृति के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी थी, कितना छोटा था! देश ने प्रगति की थी और उसके साथ ही जनता ने।

और नीपर नदी पर पानी ने लोहे के बाँधों को तोड़ दिया था और आदमी और मशीनों को बहा ले गया था। और एक बार फिर कोमसोमोल नौजवानों ने उस दरार के बीच अपने को झोंक दिया था और दो दिन तक उस निरंकुश प्रवाह के खिलाफ़ डट कर मोर्चा लेते हुए उस पर क़ाबू पा लिया था। इस महान संघर्ष में कोमसोमोलों की एक नई पीढ़ी आगे-आगे चल रही थी और इन वीरों में पावेल ने गर्व के साथ अपने पुराने साथी इग्नात पांक्रातोव का नाम सुना।

अठारहवाँ अध्याय

मास्को में पहले कुछ दिन वे लोग एक संस्था के पुराने कागजात रखने की जगह में रहे। उसका प्रधान पावेल को एक खास क्लिनिक में ठहराने का बन्दोबस्त कर रहा था।

अब पावेल की समझ में आया कि तब बहादुरी कितनी आसान थी, जब उसके पास अपनी जवानी थी और एक मजबूत जिस्म था। लेकिन अब जब जिन्दगी ने उसे अपने फ़ौलादी पंजे में दबोच लिया था, यह सब उसके लिए इज़्ज़त की बात हो गई थी।

पावेल कौंचागिन को मास्को में आये डेढ़ साल हो गये थे—वर्णनातीत पीड़ा के अठारह महीने।

आँख के क्लिनिक में प्रोफ़ेसर आवरबाक ने पावेल को साफ़-साफ़ बतला दिया था कि उसकी आँख की रोशनी के लौटने की कोई उम्मीद नहीं है। भविष्य

में जब सूजन गायब हो जायगी, तब मुमकिन है आपरेशन हो सके। तब तक उसने सूजन की क्रिया को रोकने के लिए एक आपरेशन की सलाह दी।

पावेल से जब उसकी अनुमति मांगी गई तो उसने डाक्टरों से कहा कि वे जो-कुछ भी जरूरी समझें, करें।

तीन बार उसने मौत के स्याह डैनों के स्पर्श को अनुभव किया जब वह घंटों आपरेशन की मेज पर लेटा रहा था और डाक्टर का चाकू उसके थाइरॉयेड ग्लैन्ड को निकालने के लिए उसके गले में घूमता रहा था। मगर पावेल कस कर ज़िन्दगी को पकड़े हुए था और कई घंटों की अनिश्चय-भरी प्रतीक्षा की यातना के बाद ताया फिर अपने प्रिय पावेल को पा लेती। उसके चेहरे पर मौत सरीखा पीलापन होता, मगर वह हमेशा की तरह सजीव और शान्त और नम्र दिखाई देता :

" घबराओ मत प्यारी, मुझे मारना इतना आसान नहीं है। मैं जिन्दा रहूँगा, अगर और किसी के लिए नहीं तो इसीलिए कि मैं इन विद्वान डाक्टरों की कही हुई तमाम बातों को उलट-पुलट कर रख देना चाहता हूँ। मेरी तन्दुरुस्ती के बारे में वे जो कुछ कहते हैं, सब ठीक है, मगर उनकी सबसे बड़ी गलती इस जगह पर है कि वे मुझे काम के लिए बिलकुल अयोग्य करार देकर घूर पर उठा कर रख देना चाहते हैं। देखूँगा कि वे ऐसा कैसे कर पाते हैं।"

पावेल का संकल्प था कि नई ज़िन्दगी के निर्माताओं की क़तार में अपनी जगह लिये बिना वह नहीं रहेगा। अब उसे मालूम हो गया था कि उसे क्या करना चाहिए।

जाड़ा बीत गया था और खुली खिड़कियों में से बसन्त अन्दर घुस रहा था। पावेल का एक और ऑपरेशन हुआ और वह उससे जिन्दा निकल आया। उसने संकल्प किया कि वह कितना ही कमजोर क्यों न हो, अस्पताल में अब और न रहेगा। इतने महीनों तक लोगों की इतनी पीड़ा के बीच रहना, चारों तरफ़ ऐसे लोगों के रोने-कराहने से घिरे रहना जिन लोगों के बचने की कोई उम्मीद नहीं थी, खुद अपनी तकलीफ़ को सहने से ज़्यादा मुश्किल था।

और इसलिए जब एक और ऑपरेशन का प्रस्ताव किया गया तो उसने रुखाई से जवाब दिया :

" नहीं, अब नहीं। बहुत हो चुका। मैंने विज्ञान के लिए अपना काफ़ी खून दे दिया। अब जो बचा है, उसके लिए मेरे पास दूसरा उपयोग है।"

उसी रोज़ पावेल ने केन्द्रीय समिति को ख़त लिखा जिसमें उसने बतलाया कि चूँकि इलाज की तलाश में अब और भटकना बेकार है, इसलिए वह मास्को में रहना चाहता है जहाँ उसकी बीवी इन दिनों काम करती थी। यह पहला मौक़ा था जब उसने पार्टी से सहायता माँगी थी। उसकी दरख़ास्त मंज़ूर हो गई और मास्को की सोवियत ने उसको रहने की जगह दे दी। वह अस्पताल से चला तो उसके मन में यही कामना थी कि फिर कभी वहाँ लौटना न पड़े।

क्रोपोत्किंस्काया के पास की एक ख़ामोश गली में उसका वह मामूली-सा कमरा उसके लिए शान-शौकत की सबसे ऊँची चोटी था। और अक्सर रात को जागते समय पावेल को यह विश्वास करने में कठिनाई होती कि अब अस्पताल सचमुच उसके लिए बीते दिनों की एक चीज़ हो गया था।

ताया अब तक पूरी पार्टी मेम्बर हो गई थी। वह बहुत अच्छी कार्यकर्ता थी और व्यक्तिगत ज़िन्दगी की दुखद घटनाओं के बावजूद कारखाने के सबसे आगे बढ़े हुए मज़दूरों से किसी मामले में पीछे नहीं रहती थी। उसके साथ के मज़दूरों ने इस शान्त-विनम्र युवती के प्रति अपना सम्मान दिखलाने के लिए उसे कारखाने की ट्रेड यूनियन कमिटी का मेम्बर चुन लिया। पावेल को अपनी पत्नी के लिए गर्व होता था क्योंकि वह धीरे-धीरे एक सच्ची बोल्शेविक बनती जा रही थी और इससे पावेल को खुद अपनी तकलीफ़ को सहने में मदद मिलती थी।

बाज़ानोवा किसी काम से मास्को आई और पावेल से मिलने गई। उन दोनों में बड़ी देर तक बातें हुईं। पावेल जब उसको अपनी योजनाएँ बतलाने लगा कि कैसे वह जल्दी ही नई ज़िन्दगी के निर्माताओं की क़तार में पहुँच जायगा, तो उस वक़्त वह आवेश से चंचल हो उठा।

बाज़ानोवा ने पावेल की कनपटी पर के चाँदी के तारों को देखा और धीमे से कहा :

"साफ़ दिखाई देता है कि तुम्हें बहुत तक़लीफ़ों के बीच से गुज़रना पड़ा है, मगर तब भी तुम्हारा उत्साह ज़रा भी कम नहीं हुआ। तुम्हें और क्या चाहिए ? मुझे ख़ुशी है कि तुमने उस काम को शुरू करने का फ़ैसला किया है जिसके लिए तुम पिछले पाँच सालों से अपने-आपको तैयार करते आ रहे हो। मगर कैसे करोगे ?"

पावेल आत्मविश्वास से मुस्कराया।

"कल मेरे दोस्त मुझे दफ़्ती का एक स्टेंसिल लाकर देंगे जिसकी मदद

से मैं लाइनों को एक-दूसरे पर चढ़ाये बिना सीधे-सीधे लिख सकूँगा। उसके बिना मैं लिख ही नहीं सकता। बहुत सोचने के बाद मुझे यह तदबीर सूझी। होगा यह कि दफ्ती के बड़े सिरे मेरी पेन्सिल को सीधी लाइन से इधर-उधर बहकने न देंगे। इसमें क्या शक कि ऐसे बिना देखे लिखना, और जब कि तुम अपने लिखे हुए को पढ़ भी न सको, बहुत मुश्किल काम है। मगर नामुमकिन नहीं। मैंने उसे करके देखा है और जानता हूँ कि किया जा सकता है। इसका तरीका समझने में मुझे कुछ वक़्त लगा, मगर अब मैंने धीरे-धीरे, हर अक्षर को रुक-रुक कर लिखना सीख लिया है और परिणाम काफ़ी सन्तोषजनक है।"

और इस तरह पावेल ने काम शुरू किया।

उसने वीर कोतोव्स्की डिवीजन के बारे में एक उपन्यास लिखने की बात सोची थी, उसका शीर्षक अपने-आप उसे सूझ गया : *तूफ़ान के बेटे*।

उसकी समूची ज़िन्दगी अब इस उपन्यास के लिखने में ही लगी हुई थी। धीरे-धीरे एक-एक लाइन करके पन्ने निकलने लगे। काम करते वक़्त वह अपनी तसवीरों की दुनिया में पूरी तरह डूबा रहता और उसे अपने आस-पास की किसी चीज़ का ध्यान न रह जाता और जीवन में पहली बार उसे सृजन की पीड़ा की अनुभूति हुई और उसने उस क्षोभ और दर्द को महसूस किया जिसे कलाकार उस वक़्त महसूस करता है जब जीते-जागते, कभी न भूलने वाले दृश्य, जो आँखों के सामने खड़े से नज़र आते हैं, काग़ज़ पर उतरते ही बेजान और पीले हो जाते हैं।

उसे अपना लिखा हुआ एक-एक शब्द याद रखना पड़ता था। ज़रा-सी भी किसी बाधा से उसके विचारों की शृंखला टूट जाती थी और उसका काम रुक जाता था। उसकी माँ अपने बेटे के काम को भय और शंका की दृष्टि से देखती थी।

कभी-कभी उसे पूरे-पूरे सफ़े और यहाँ तक कि अध्याय भी अपनी याद से सुनाने पड़ते थे और ऐसे मौके आते थे जब उसकी माँ को डर लगने लगता था कि पावेल का दिमाग ख़राब हो रहा है। उसके काम करते समय उसके पास जाने का माँ को साहस न होता, मगर फ़र्श पर गिरे हुए कागज़ों को चुनते समय वह डरते-डरते पावेल से कहती :

"मेरी बड़ी इच्छा है पावलुशा कि तुम और कोई काम करो। इस तरह जो तुम हरदम बैठे लिखा करते हो, यह तुम्हारे लिए अच्छी बात नहीं है....।"

पावेल हँस कर उसकी शंकाओं को उड़ा देता और अपनी बुड्ढी माँ को आश्वासन देता कि घबराने की कोई बात नहीं है। अभी उसका दिमाग ठीक है।

उसकी किताब के तीन अध्याय हो गये थे। पावेल ने उन्हें कोतोव्स्की डिवीज़न के अपने पुराने सैनिक साथियों के पास राय के लिए ओदेसा भेजा और थोड़े ही रोज़ बाद उसे एक ख़त मिला जिसमें उसके काम की तारीफ़ की गई थी। मगर उसकी पाण्डुलिपि लौटते समय डाक में खो गई। छः महीनों के काम पर पानी फिर गया। यह उसके लिए एक भयानक आघात था। उसे बहुत क्षोभ हो रहा था कि उसने क्यों अपनी पाण्डुलिपि, जिसकी नक़ल भी उसके पास नहीं थी, बाहर भेजी। लेदेनेव को जब यह बात मालूम हुई तो उसने पावेल को डांटा :

" तुम इतने लापरवाह कैसे हो गये ? मगर कोई बात नहीं, बीती बात को भूल जाओ, उस पर सिर धुनने से कोई लाभ नहीं। अब फिर से शुरू करो।"

" मगर इन्नोकेंती पावलोविच ! मेरी तो छः महीने की मेहनत लुट गई। हर रोज़ मैंने आठ-आठ घंटे काम किया था। जहन्नुम में जायँ सब।"

लेदेनेव ने अपने दोस्त को सांत्वना देने की पूरी कोशिश की।

काम को दुबारा शुरू करने के अलावा कोई चारा न था। लेदेनेव ने उसे काग़ज़ लाकर दिया और पाण्डुलिपि के टाइप कराने में उसकी मदद की। छः हफ्ते बाद पहला अध्याय दुबारा लिख लिया गया था।

कोर्चागिन के घर के ही एक हिस्से में अलेक्सियेव नाम का एक परिवार रहता था। उनका बड़ा लडका अलेक्ज़ांडर कोमसोमोल की एक ज़िला कमिटी का मन्त्री था। उसकी बहन गालिया एक कारख़ाने के ट्रेनिंग स्कूल मे पढ़ती थी। गालिया अठारह साल की एक खुशमिज़ाज लड़की थी। पावेल ने अपनी माँ से कहा कि वह गालिया से बात करे और पता लगाये कि क्या वह पावेल के सेक्रेटरी की हैसियत से उसके काम में मदद करने के लिए तैयार होगी। गालिया फ़ौरन राज़ी हो गई। वह एक रोज़ मुस्कराती हुई आई और उसे बड़ी खुशी हुई जब उसे मालूम हुआ कि पावेल एक उपन्यास लिख रहा है।

उसने कहा, " कामरेड कोर्चागिन, मैं बड़ी खुशी से तुम्हारे काम में हाथ बटाऊँगी। पिता जी की उन उबा देनेवाली गश्ती चिट्ठियों से, जिनमें बतलाया जाता है कि पंचायती घरों में कैसे सफ़ाई रखनी चाहिए, कहीं ज़्यादा मज़ा इस काम में होगा।"

उस दिन से पावेल का काम दुगनी तेज़ी से होने लगा। सचमुच एक महीने में इतना काम हो गया कि पावेल को अचम्भा हुआ। गालिया के प्रसन्न-चित्त सहयोग और सहानुभूति से उसे अपने काम में बड़ी मदद मिलती थी। उसकी पेन्सिल तेज़ी से काग़ज़ पर चलती जाती थी और जब कोई टुकड़ा उसे ख़ास तौर पर अच्छा मालूम होता, तो वह उसे कई-कई बार पढ़ती और पावेल

की सफलता से उसे हार्दिक खुशी होती। उस घर में सम्भवतः वह अकेली व्यक्ति थी जिसे पावेल के काम में विश्वास था, बाकी लोग सोचते थे कि इसका कोई नतीजा न निकलेगा और यह तो पावेल यों ही मजबूर होकर बेकार बैठे रहने की हालत में अपनी सूनी घड़ियों को भरने के लिए कुछ कर रहा है।

लेदेनेव किसी काम से शहर से बाहर गया हुआ था। मास्को लौटने पर उसने पहले के कुछ अध्याय पढ़े और कहा :

"लिखे जाओ दोस्त। मुझे कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारी विजय होगी। कामरेड पावेल, तुम्हारे सामने महान सुख का साम्राज्य बिखरा हुआ है। मुझे पक्का विश्वास है कि तुम्हारा लड़ने वालों की क़तार में वापस पहुँचने का सपना जल्द ही पूरा होगा। उम्मीद मत हारो बेटा!"

वह बुड्ढा पावेल को उतने उत्साह में देख कर जब वहाँ से लौटा तो बहुत सन्तुष्ट था।

गालिया नियमित रूप से आती और उसकी पेन्सिल सफ़ों पर तेज़ी से दौड़ती रहती और अविस्मरणीय अतीत के दृश्य फिर से जी उठते। उन क्षणों में जब पावेल स्मृतियों की बाढ़ में बहता हुआ अपने विचारों में खो जाता, तो गालिया को उसकी बरौनियों का फड़कना दिखाई देता और उसकी आँखों से पता चलता कि विचार कैसी तेज़ी से उसके आगे आ रहे हैं। इस बात पर विश्वास करने को जी न होता कि वे आँखें देख नहीं सकती थीं क्योंकि उसकी साफ़ बेदाग़ पुतलियों में बहुत जान नज़र आती थी।

दिन का काम ख़तम होने पर वह अपना लिखा हुआ पावेल को पढ़ कर सुनाती और पावेल ग़ौर से उसको सुनता और उसकी पेशानी पर झुर्रियाँ पड़ जातीं।

"तुम्हारी त्यौरी में बल क्यों पड़ रहे हैं कामरेड कोर्चागिन? अच्छा नहीं हुआ क्या?"

"नहीं गालिया, बात नहीं बनी।"

जो सफ़े उसे अच्छे न लगते, उन्हें वह फिर से खुद ही लिखता। स्टेन्सिल के उस तंग, संकरे-से टुकड़े के कारण उसे काम में रुकावट होती और वह कभी-कभी झुँझला कर उसे दूर फेंक देता। और फिर जीवन से क्रुद्ध होकर, क्योंकि उसीने उसकी आँख की रोशनी छीन ली थी, वह अपनी पेन्सिल को तोड़ देता और ओठों को चबाने लगता, यहाँ तक कि खून निकल आता।

जैसे-जैसे काम समाप्ति पर आ रहा था, निषिद्ध भावनाएँ उसकी चिर जागरूक इच्छाशक्ति के बन्धनों को तोड़े डाल रही थीं। ये निषिद्ध भावनाएँ थीं—

उदासी और सीधी-सच्ची मानवीय अनुभूतियाँ, प्यार की और दुलार की अनुभूतियाँ, जिनका अधिकार अकेले उसको छोड़ कर दुनिया में सब को था। मगर वह जानता था कि अगर उनमें से किसी एक के सामने भी उसने घुटना टेका, तो उसका परिणाम अत्यन्त करुण होगा।

ताया जब रात को कारख़ाने से काम करके घर लौटती तो उस वक़्त भी पावेल को काम करता पाती और मारिया याकोवलेवना से बहुत धीमे-धीमे दो-एक बात करके, ताकि पावेल के काम में रुकावट न पड़े, वह सोने के लिए चली जाती।

आख़िरकार अन्तिम अध्याय लिखा गया। फिर कुछ दिन तक गालिया पावेल को पूरी किताब पढ़ कर सुनाई।

कल पाण्डुलिपि प्रादेशिक पार्टी कमिटी के सांस्कृतिक विभाग के पास लेनिनग्राद भेजी जायगी। अगर किताब मंज़ूर होती है तो उसे प्रकाशक को दिया जायगा और फिर....।

इस ख़याल से उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। अगर सब-कुछ ठीक-ठाक रहा तो उसकी नई ज़िन्दगी शुरू होगी जिसके लिए उसने बरसों हाड़तोड़ मेहनत की थी, मगर हिम्मत न हारी थी।

किताब की क़िस्मत का फ़ैसला खुद पावेल की किस्मत का फ़ैसला होगा। अगर पाण्डुलिपि अस्वीकृत होती है तो इसका मतलब होगा कि पावेल का जीवन शेष। अगर उसके कुछ अंशों को ही ख़राब पाया जाता है और उसके दोषों को और मेहनत करके दूर किया जा सकता है, तो वह फिर फ़ौरन अपने नये उद्योग में लग जायगा।

उसकी माँ पाण्डुलिपि का पार्सल डाकख़ाने में ले गई। आतुर प्रतीक्षा के दिन शुरू हुए। इसके पहले जीवन में कभी पावेल ने किसी चिट्ठी के लिए ऐसी आतुर प्रतीक्षा न की थी और न कभी उसे इस दुविधा ने इतना सताया था कि पता नहीं कैसी चिट्ठी आये। सबेरे से लेकर शाम तक वह डाक का इन्तज़ार करता रहता मानो यही उसकी ज़िन्दगी का अकेला काम हो। मगर लेनिनग्राद से कोई समाचार न आया।

प्रकाशकों की इस चुप्पी से पावेल को डर मालूम होने लगा। रोज़-ब-रोज़ उसकी यह आशंका बढ़ती गई और पावेल ने इस बात को अपने तईं स्वीकार किया कि किताब के पूरी तरह अस्वीकृत किये जाने के बाद वह जी नहीं सकेगा।

यह चीज़ उसकी सहन-शक्ति के बाहर होगी। तब जीने के लिए उसके पास कोई कारण ही नहीं बचेगा।

ऐसे क्षणों में उसे समुद्र के किनारे वाली पहाड़ी के उस पार्क की याद आती और वह वही सवाल अपने से बार-बार पूछता :

" क्या तुमने इस फ़ौलादी शिकंजे से बाहर निकलने और लड़ने वालों की कतार में वापस पहुँचने की, अपने जीवन को उपयोगी बनाने की हर मुमकिन कोशिश की ? "

और उसे जवाब देना पड़ता : " हाँ, मैं समझता हूँ कि मैंने सब-कुछ किया। "

आखिरकार जब प्रतीक्षा की पीड़ा प्रायः असह्य हो गई तो उसकी माँ, जिसे अपने बेटे के बराबर ही वह पीड़ा हो रही थी, एक रोज़ दौड़ती और चिल्लाती हुई कमरे में आई :

" लेनिनग्राद से खबर आई है ! "

यह प्रादेशिक कमिटी का तार था। तार की संक्षिप्त भाषा में लिखा हुआ था : " उपन्यास बहुत पसन्द किया गया। प्रकाशकों को दे दिया गया। सफलता पर बधाई ! "

उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था। उसका हमेशा-हमेशा का संजोया हुआ सपना पूरा हो रहा था ! वह फ़ौलादी शिकंजा छिन्न-भिन्न पड़ा था और अब एक नये हथियार से लैस होकर पावेल एक बार फिर ज़िन्दगी के मैदान में लड़ने वालों की कतार में वापस आ गया था।

॥ समाप्त ॥

*